श्री शंकरः शं करोतु।

पंचांग-प्रवर्त्तकः

भारतीय एवं पाश्चात्य ज्योतिष के विषयों से अलंकृत

चित्रापक्षीय निरयण दृक्सिद्ध

शोध निबन्ध विशेषांक

अखिल भारतोपयोगी

विक्रम संवत् २०७९, शक संवत् १९४४,
सन् २०२२-२३, जयहिन्द संवत् ७५-७६,

भीमाय व्योमरूपाय शब्दमात्राय ते नमः।
महादेवाय सोमाय अमृताय नमोऽस्तु ते ॥

दैवज्ञरत्न राजज्योतिषी
स्व. पं. श्री मुकुन्दवल्लभ मिश्र, ज्योतिषाचार्य,

श्री मार्त्तण्ड पञ्चांगम्

राजा शनि

मंत्री गुरु

पंचांगप्रवर्त्तक
अनेक ग्रंथों के यशस्वी लेखक स्व. पं. श्री मुकुन्दवल्लभ मिश्र, ज्योतिषाचार्य,

सम्पादक मण्डल

स्व. श्री प्रियव्रत शर्मा, M.A., सिद्धान्तज्योतिषाचार्य (बनारस), साहित्याचार्य, स्वर्ण-रजत पदक प्राप्त,
दृक्सिद्धान्तभास्कर स्व. डॉ. शक्तिधर शर्मा, M.Sc., Ph.D.(Nuclear Physics) (U.S.A.), F.R.A.S. (LONDON), M.A., सिद्धान्तज्योतिषाचार्य (बनारस), तीन स्वर्ण पदक प्राप्त,
ज्योतिर्भूषण श्री इन्दुशेखर शर्मा, शास्त्री, M.A., ज्योतिषाचार्य,

गौरवशाली ९५ वाँ प्रकाशन वर्ष
स्थापित संवत् १९८४

नजदीक चौक, अड्डा टांडा- जालन्धर
फोन नं.:-0181-5001696, 9417021269,

मूल्य 124/-

इस पञ्चांङ्ग के पाठकों के लिए आवश्यक निर्देशन

(I) इस पञ्चांङ्ग का निर्माण चण्डीगढ़ (U.T.) के रेखांश पू. 76° 52', अक्षांश उ. 30° 44' के आधार पर किया गया है। अतः विशेष निर्देश न किया गया हो तो सूर्योदय, सूर्यास्त से हमारा अभिप्राय यहां सर्वत्र इसी स्थल के सूर्योदय, सूर्यास्त से रहता है।

(ii) यहां सूर्योदय, सूर्यास्तकाल किरणवक्रीभवन संस्काररहित (Free from Refraction) है, जो सूर्यबिम्बकेन्द्र का क्रमशः पूर्वापर क्षितिज से वास्तविक सम्पर्कक्षण है। सूर्य के इस उदयास्तकाल को **ज्योतिषशास्त्रीय उदयास्तकाल** कहा जाता है। लग्नादि-साधनार्थ इष्टकालादि-ज्ञान के लिए इसी को प्रयोग में लाया जाता है। इन्हें दृश्य (लोकव्यवहारोपयोगी) बनाने के लिए इनमें (उदय एवं अस्तकाल में) लगभग 3½ मि. क्रमशः घटाने या जोड़ने होंगे।

(iii) भारतीय ज्योतिषानुसार यहां वार की प्रवृत्ति स्थानीय सूर्योदयकाल से मानी गई है, अतः यह जान लेना चाहिए कि- यहां रवि, चन्द्र आदि वार स्थानीय सूर्योदय से प्रारम्भ होकर परवर्ती सूर्योदय पर समाप्त होने वाले वार हैं। भारतीय ज्योतिषशास्त्र एवं धर्मशास्त्र में इसी वार का प्रयोग होता है। **ध्यान रहे**- सामान्य लोकव्यवहार में सर्वत्र प्रयोग में आने वाला वार, जो पाश्चात्त्य ज्योतिषानुसारी है, तो अंग्रेज़ी (Gregorian) तारीख के साथ रात्रि के 24घं 00मि (क्षेत्रीय स्टैं.टा.) पर ही बदल जाता है।

(iv) पंचांगगत सभी गणना ऋषियों, आचार्यों द्वारा अनुमोदित दृक्तुल्यपद्धति से की गई है।

(v) सर्वत्र निरयणगणना है। जहां कहीं सायनगणना का प्रयोग है, वहां इसका निर्देश कर दिया गया है। चित्रापक्षीय स्पष्ट (धूननसंस्कृत) अयनांशों को प्रामाणिक माना गया है।

(vi) यहां प्रयुक्त भा.स्टैं.टा. (I.S.T.) 82° 30' पूर्व रेखांशीय स्थल का स्थानीय मध्यमकाल (L.M.T.) है।

(vii) यहां दी गई दैनिक लग्नसारणियां निरयण लग्नों का समाप्तिकाल बतलाती हैं।

(viii) यहां प्राचीन परम्परानुयायी दैवज्ञों के लिए चैत्र शुक्लादि 24 पक्षों वाला तिथ्यादि पंचांग घटी-पलों में तथा सामान्य जनों के व्यवहारार्थ नवीन प्रणाली वाला **'जनवरी, फरवरी'** आदि मासानुसारी तिथ्यादि पंचांग घंटा-मिनटों (भा.स्टैं.टा.) में दिया गया है। घटी-पलात्मक वाले पंचांगभाग में तिथ्यादि समाप्ति, ग्रहराशि-नक्षत्र प्रवेश आदि सभी काल घटी-पलों में दिए गए हैं, जो चण्डीगढ़ के सूर्योदय से व्यतीत घटी-पलात्मक काल बतलाते हैं। **किञ्च**- घण्टा-मिनटात्मक वाले पंचांगभाग में तिथ्यादि समाप्ति आदि सभी काल भा.स्टैं.टा. में हैं। यहां यह भी स्पष्ट हो जाना चाहिए कि- घण्टा-मिनटात्मक, जो काल रात्रि के 24घं-00मि के बाद पड़ता है, उसे पंचांग में 24 घं. जोड़कर, उसी भारतीय ज्योतिषानुसारी वार में लिखा गया है, जो परवर्ती सूर्योदय तक रहता है। इसलिए ऐसे स्थलों पर दिए गए समय के घण्टा-मिनटों में से 24 घं. घटाकर शेष घं. मि. को सामान्य व्यवहार में प्रचलित (पाश्चात्त्य ज्योतिषानुसारी) परवर्ती वार का काल समझना चाहिए। **जैसे- मान लीजिए**- पंचांगानुसार एकादशी तिथि 10 मई शुक्रवार को 26 घं. 35 मि. (भा.स्टैं.टा.) पर समाप्त हो रही है। **इसका अभिप्राय है**- यह तिथि प्रचलित व्यवहारानुसारी 11 मई, शनिवार को रात्रि के 2 घं. 35 मि. (भा.स्टैं.टा.) पर समाप्त होगी।

(ix) घटी-पलात्मक पंचांगभाग वाले (24 पक्षों वाले) पृष्ठों पर नीचे की ओर बाईं और दाईं ओर लगभग साप्ताहिक (अष्टमी, अमा, पूर्णिमा के आसन्न दिनों के) प्रातः 5 घं. 30 मि. भा.स्टैं.टा. कालिक सूर्यादि स्पष्टग्रह दिए गए हैं। इनके नीचे इनकी कलादि दैनिक गति, इसके नीचे मा. (= मार्गी), व.(= वक्री), इसके नीचे उ. (= उदित), अ.(= अस्त) तथा सबसे नीचे इन ग्रहों के तात्कालिक नक्षत्रचरण निर्दिष्ट हैं।

(x) घटी-पलात्मक पंचांगभाग में करण केवल सूर्योदयव्यापी ही दिए गए हैं। यहां क्षीण तिथि-नक्षत्र-योगों के समाप्तिकाल ही दिए हैं, प्राचीन- पंचांग प्रणाली की तरह इनके पूर्ण भोगकाल नहीं- **यह ध्यान रहे।**

(xi) जहां जिस तिथि-नक्षत्र व योग के आगे घटी-पलात्मक में 60 घ. 00 प. और घण्टा-मिनटात्मक में — (डैश) लिखा गया है, उसकी वहां वृद्धि समझनी चाहिए और उसका घटी-पलात्मक तथा घण्टा-मिनटात्मक समाप्तिकाल परवर्ती वार में देखिए।

(xii) यहां दिए गए ग्रहों के भोगांश तथा शर -भूकेन्द्रिक (Geo-centric) हैं।

इस पञ्चांङ्ग में प्रयुक्त सांकेतिक शब्द

अ. - अस्त।
अं - अंश।
उ. - उदित, उत्तर।
क. - कला।
कृ. - कृष्णपक्ष, कृत्तिका (नक्षत्र)।
क्रां.सा. - क्रान्तिसाम्य (महापात)।
गोधू. - गोधूलि (लग्न)।
ति. - तिथि।
द. - दक्षिण।
दा. - दानपूजन।
दि. - दिन।
दि.ल. - दिन का लग्न।
प्रा. - प्रारम्भ।
भ. - भद्रा।
मा. - मार्गी।
मि. - मिनट।
रा. - राशि।
ल. - लग्न।
व. - वक्री।
वा. - वार।
वि. - विकला।
वै. - वैष्णवों के लिए।
स. - व्रत सबके लिए।
शु. - शुक्लपक्ष, शुक्रवार, शुक्र (ग्रह)।
सं. - संक्रान्ति, संवत्।
सां.का. - साम्पातिक काल।
स्मा. - स्मार्तों के लिए।

इस पंचांग की तिथ्यादि, ग्रहभोगांश, शर, क्रान्ति, राशि-नक्षत्र-नक्षत्रचरणप्रवेश, उदयास्त, लोप-दर्शन तथा ग्रहण आदि की गणित "**प्रो. प्रियव्रत शर्मा, M.A. अभिजित् प्रकाशन, 59/6, P.O पंचकूला (हरियाणा), Pin-134 109** के निर्देशन में सम्पादित Computer Program द्वारा की गई है।

...निवारण पण्डित-मण्डलीड्यम्। त्रिकालदर्शि प्रसरन्मयूख 'मार्त्तण्ड पञ्चांग' मिदं चकास्तु।

श्री शंकरः शं करोतु।

भारतीय एवं पाश्चात्य ज्योतिष के विषयों से अलंकृत

पंचांग-प्रवर्तकः

चित्रापक्षीय निरयण दृक्सिद्ध

शोध निबन्ध विशेषांक

अखिल भारतोपयोगी

विक्रम संवत् २०७९, शक संवत् १९४४,
सन् २०२२-२३, जयहिन्द संवत् ७५-७६,

भीमाय व्योमरूपाय शब्दमात्राय ते नमः।
महादेवाय सोमाय अमृताय नमोऽस्तु ते ॥

दैवज्ञरत्न राजज्योतिषी
स्व. पं. श्री मुकुन्दवल्लभ मिश्र, ज्योतिषाचार्य,

श्री मार्त्तण्ड पञ्चांगम्

राजा शनि
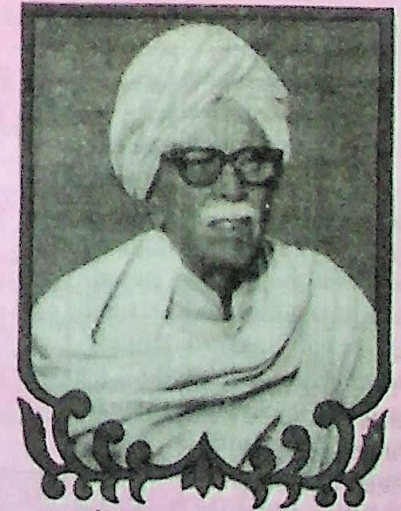
मंत्री गुरु

पंचांगप्रवर्तक

अनेक ग्रंथों के यशस्वी लेखक स्व. पं. श्री मुकुन्दवल्लभ मिश्र, ज्योतिषाचार्य,

सम्पादक मण्डल

स्व. श्री प्रियव्रत शर्मा, M.A., सिद्धान्तज्योतिषाचार्य (बनारस), साहित्याचार्य, स्वर्ण-रजत पदक प्राप्त,

दृक्सिद्धान्तभास्कर स्व. डॉ. शक्तिधर शर्मा, M.Sc., Ph.D.(Nuclear Physics) (U.S.A.), F.R.A.S. (LONDON), M.A., सिद्धान्तज्योतिषाचार्य (बनारस), तीन स्वर्ण पदक प्राप्त,

ज्योतिर्भूषण श्री इन्दुशेखर शर्मा, शास्त्री, M.A., ज्योतिषाचार्य,

गौरवशाली ९५ वाँ प्रकाशन वर्ष
स्थापित संवत् १९८४

अमित पॉकेट बुक्स
नजदीक चौक, अड्डा टांडा- जालन्धर
फोन नं.:-0181-5001696, 9417021269,

मूल्य 124/-

संक्षिप्त विषयसूची (सं. 2079 वि.)

विषय	पृष्ठ
पंचांग में प्रयुक्त सांकेतिक शब्द, आवश्यक निर्देशन	टा. पृ. 2
इनर टाइटल,	1
विषयसूची,	2
प्रमुख-प्रमुख एवं वर्गीकृत व्रतपर्व, सिक्खपर्व, अवकाश, मेले,	3-10
श्रीगणेश चतुर्थी/श्रीकृष्णजन्माष्टमी चन्द्रोदय,	11-12
संदिग्ध व्रतपर्व-व्यवस्था (सं. 2079 वि.)	13-20
गण्डमूल, पंचक,	21
ग्रहण-विवरण	22-31
संवत् 2079 वि. की कुल जन्म-वर्ष-प्रश्न-कुण्डलियां	32-42
शनि-साढेसाती,	43-48
आकाशी कौंसिल (सं. 2079 वि.)	49-61
जनवायु एवं वर्षाविचार	62-66
व्यापारविमर्श (सं. 2079 वि.)	67-82
यंत्र, मंत्र, तंत्र साधनाकाल एवं चमत्कार,	83-89
ज्योतिष/कर्मकाण्ड संबंधी ज्ञानवर्धक प्रश्नोत्तर	90-93
प्रसूति लग्नविचार,	94-104
नक्षत्र-राशिज्ञान चक्र आदि,	105
नवांशराशि बोधक सारणी	106
12 राशियों का मासिकफल (सं. 2079 वि.)	107-118
वर्षराजादि फल (सं. 2079 वि.)	119-128
तिथ्यादि 24 पक्ष (सं. 2079 वि.)	129-152

विषय	पृष्ठ
घण्टा-मिनटात्मक तिथ्यादि (भा.स्टैं.टा.),	153-167
चन्द्रमा का नक्षत्र-चरणप्रवेश (सं. 2079 वि.)	168-172
दैनिक ग्रहस्पष्ट, स्पष्टराहु,	173-187
अक्षांश भेद से चन्द्रदर्शन की तारीखें	188
चण्डीगढ़ में चन्द्रोदयास्त (सं. 2079 वि.)	189-190
यूरेनस आदि के भोगांश, भौमादि ग्रहों के क्रान्तिशर,	191-195
ग्रहों के निरयण राशि-नक्षत्र-चरणचार, वक्र-मार्ग/उदय-अस्त,	196-201
अक्षांशदि सारणी,	202-211
कुछ विदेशी नगरों के अक्षांशादि	212-218
दैनिक लग्नसारिणी (चण्डीगढ़ के लिए),	219-224
प्रमुख-प्रमुख नगरों में लग्नों का समाप्तिकाल,	225
प्राचीन पद्धति से लग्न एवं दशमसाधन आदि,	226-229
सूक्ष्म लग्न एवं दशमलग्न स्पष्ट करने की नई सरल विधि, साम्पातिक काल कोष्ठक आदि,	230-235
विंशोत्तरी दशान्तर्दशा सारणी,	236
सूर्यसिद्धान्तीय एवं सूक्ष्म-शुद्ध वर्षप्रवेश सारणी, ग्रहशील चक्र,	237-239
आवश्यक मुहूर्त्त,	240-242
मेलापक-सारणी देखने की रीति और अष्टकूट-परिहार, मेलापक-सारणी	243-250
लग्न-गण्डान्त, विवाहमुहूर्त्त में दस दोष, दिक्शूलादि विचार, यात्रा मुहूर्त्तादि,	251-264
शुद्ध विवाहमुहूर्त्त (सं. 2079 वि.)	265-271

विषय	पृष्ठ
सं. 2080 में सम्भावित शुद्ध ------------------------विवाहमुहूर्त्त	272
त्रिबलशुद्धि कोष्ठक (सं. 2079 वि.)	273-275
अशुद्ध विवाहमुहूर्त्त (सं. 2079 वि.)	276-277
मुण्डन, उपनयन, देवप्रतिष्ठा आदि मुहूर्त्त,	278-281
श्री गणेश, शिव, गौरी, दुर्गा आदि द्वादश देव प्रतिष्ठा मुहूर्त्त ------	282
सर्वार्थसिद्धि आदि योग	283-285

इसवर्ष की नई विशेष सामग्री

विषय	पृष्ठ
ज्योतिष/कर्मकाण्ड संबंधी ज्ञानवर्धक प्रश्नोत्तर	90-93
कुछ विदेशी नगरों के अक्षांशादि	212-218

शोध निबन्ध विशेषांक *

विषय	पृष्ठ
1. स्वर्णादि धातुओं से नवग्रह-शांतिविधान	289-290
2. भारत में लग्नों का प्रारंभकाल	291-303

'अभिजित् प्रकाशन',
Kothi No. 59, Sector 6,
Panchkula (HARYANA)
की अब तक प्रकाशित पुस्तकों के बारे निर्देश पृष्ठ .... पर देखें।

अनन्त श्रीविभूषित श्रीकांचीकामकोटि-पीठाधिपति, जगद्गुरु श्रीशंकराचार्य जी का शुभाशीर्वाद

(मुद्रा)

श्रीमत्परमहंस-परिव्राजकाचार्यवर्य्य - श्रीमच्छंकर-भगवत्पाद-प्रतिष्ठित - श्रींकांचीकामकोटिपीठाधिप-जगद्गुरु-श्रीमच्चन्द्रशेखरेन्द्र-सरस्वती-श्रीपादैः क्रियते नारायणस्मृतिः।

श्रीसदाशिव आप्टे-महोदयस्य शिष्यैः श्रीमुंकुन्दवल्लभशर्मभिः प्रवर्तितम् अधुना श्रीप्रियव्रतशर्म-श्रीशक्तिधरशर्म-श्रीमदिन्दुशेखर-शास्त्रिभिः तन्त्रद्वारा शुद्ध-स्फुट-गणितरीत्या परिशोध्य स्वीकृतया दृग्गणितपद्धत्या सम्पाद्यते। एतत्पंचांगं धर्मशास्त्रसम्मतैकमात्र-दृग्गणितपद्धत्यनुसारि व्रत-पर्वादि-धार्मिक-कृत्यानुष्ठाने धार्मिकैः प्रयोज्यम्-इति सम्मन्यामहे। एतस्य सम्पादकः डॉ. शक्तिधरशर्मा ज्योतिष-गणितादि-विषयेषु महत्प्रागल्भ्यं भजते, इति अस्माभिः सः सप्रसादं "दृक्सिद्धान्तभास्करः' इति विरुदेन पूर्वमेव सभाजितः। अधुना श्रीमार्त्तण्ड-पंचांगमेतत् स्वर्णजयन्ती-महोत्सवमनुभवत्, अशेषास्तिक-लोकोपकारकं सत् श्रीचन्द्रमौलीश-कृपया प्रचुरं प्रचारं प्राप्नुयादित्याशास्महे।

कांचीक्षेत्रम् नारायणस्मृतिः
'अनल' चैत्रामावस्या
(सन् १९७६ ई.)

आगामी वर्ष (सं. 2080 वि.) में विशेष-अगले वर्ष (सं. 2080 वि.) के 'श्री मार्त्तण्ड पंचांग में भी अनेक ज्ञानवर्धक विषय एवं महत्त्वपूर्ण [illegible] होगा। — संपादक

* इस विशेषांक की विषयसूची के लिए पृष्ठ 287 भी देखें।

पृष्ठ 287 भी देखें।

प्रमुख-प्रमुख व्रत-पर्व (1 जनवरी, सन् 2022 ई. से 21 मार्च, सन् 2023 ई. तक)

(प्रो. प्रियव्रत शर्मा द्वारा रचित पुस्तक "व्रत-पर्व विवेक" पर आधारित)

व्रत-पर्व	तिथि	वार
जनवरी (सन् 2022 ई.)		
इंग्लिश नववर्ष 2022 ई. प्रा.	1 जन.	श.
लोहड़ी (पंजाब, हरियाणा, जम्मू-कश्मीर)	13 जन.	गु.
मकर संक्रान्ति	14 जन.	शु.
पौषी पूर्णिमा	17 जन.	चं.
माघस्नान प्रारम्भ	17 जन.	चं.
श्रीगणेश (संकष्ट) चतुर्थी	21 जन.	श.
फरवरी (सन् 2022 ई.)		
महोदय योग	1 फर.	मं.
मौनी अमावस	1 फर.	मं.
माघ गुप्त नवरात्र प्रारम्भ	2 फर.	बु.
गौरी तृतीया (गोंतरी)	3 फर.	गु.
वरद-तिल-कुन्द चतुर्थी	4 फर.	शु.
श्रीपंचमी, वसन्त पंचमी	5 फर.	श.
लक्ष्मी एवं सरस्वती पूजन	5 फर.	श.
रथसप्तमी/आरोग्य सप्तमी (पूर्वारुणोदय वाली)	7 फर.	चं.
भीष्माष्टमी	8 फर.	मं.
माघ गुप्त नवरात्र समाप्त	10 फर.	गु.
भीष्म द्वादशी	13 फर.	र.
माघी पूर्णिमा	16 फर.	बु.
माघस्नान समाप्त	16 फर.	बु.
मार्च (सन् 2022 ई.)		
श्रीमहाशिवरात्रि व्रत (शिवयोग)	1 मार्च	मं.
होलाष्टक प्रारम्भ	10 मार्च	गु.
गोविन्द द्वादशी	15 मार्च	मं.
होलिकादहन	17 मार्च	गु.
होलाष्टक समाप्त	18 मार्च	शु.
वसन्तोत्सव	19 मार्च	श.
होलामेला श्री आनन्दपुरसा. (पं.)	19 मार्च	श.
महाविषुव दिन	20 मार्च	र.
वारुणी पर्व	30 मार्च	बु.
मेला पिहोवा तीर्थ	30 मार्च	बु.
अप्रैल (सन् 2022 ई.)		
चान्द्र संवत् 2078वि. पूर्ण	1 अप्रै.	शु.
चान्द्र संवत् 2079 वि.प्रा.	2 अप्रै.	श.
वासन्त नवरात्र प्रारम्भ	2 अप्रै.	श.
वर्षफलश्रवण	2 अप्रै.	श.
तैलाभ्यंग/ध्वजारोहण	2 अप्रै.	श.
गौरी तृतीया (गणगौर)	4 अप्रै.	चं.
आन्दोलन तृतीया	4 अप्रै.	चं.
श्री (लक्ष्मी) पंचमी	5 अप्रै.	मं.
हयव्रत	5 अप्रै.	मं.
नागपंचमी	6 अप्रै.	बु.
स्कन्दषष्ठी	7 अप्रै.	गु.
श्रीदुर्गाष्टमी, अशोकाष्टमी	9 अप्रै.	श.
श्रीरामनवमी	10 अप्रै.	र.
वासन्त नवरात्र समाप्त	10 अप्रै.	र.
नवरात्र-व्रतपारणा	11 अप्रै.	चं.
दोलोत्सव	12 अप्रै.	मं.
विष्णुदमनोत्सव	13 अप्रै.	बु.
अनंग त्रयोदशी	14 अप्रै.	गु.
श्रीमहावीर जयन्ती	14 अप्रै.	गु.
वैशाखी (पंजाब)	14 अप्रै.	गु.
शिवदमनोत्सव	15 अप्रै.	शु.
वैशाख स्नान प्रारम्भ	16 अप्रै.	श.
मई (सन् 2022 ई.)		
श्रीपरशुराम जयन्ती	3 मई	मं.
अक्षय तृतीया	3 मई	मं.
श्रीगंगा जन्म	8 मई	र.
श्री जानकी जयन्ती	10 मई	मं.
श्रीनृसिंह जयन्ती	14 मई	श.
श्री कूर्म जयन्ती	15 मई	र.
वैशाखी पूर्णिमा	16 मई	चं.
श्रीबुद्ध जयन्ती, श्रीबुद्ध पूर्णिमा	16 मई	चं.
वैशाख स्नान समाप्त	16 मई	चं.
भद्रकाली एकादशी (पं.)	26 मई	गु.
वटसावित्री व्रत (अमापक्ष)	29 मई	र.
भावुका अमावस	30 मई	चं.
सोमवती अमावस	30 मई	चं.
जून (सन् 2022 ई.)		
रम्भा तृतीया	2 जून	गु.
अरण्यषष्ठी	5 जून	र.
विन्ध्यवासिनी पूजा	5 जून	र.
श्रीगंगा दशहरा	9 जून	गु.
निर्जला एकादशी व्रत (स्मा.)	10 जून	शु.
वटसावित्री व्रत (पूर्णिमापक्ष)	14 जून	मं.
आषाढ़ गुप्त नवरात्र प्रारम्भ	30 जून	गु.
जुलाई (सन् 2022 ई.)		
रथयात्रा (पुरी)	1 जुला.	शु.
कुमार षष्ठी	5 जुला.	मं.
विवस्वत् सप्तमी	6 जुला.	बु.
आषाढ़ गुप्त नवरात्र समाप्त	8 जुला.	शु.
श्रीविष्णुशयनोत्सव	10 जुला.	र.
कोकिला व्रत	13 जुला.	बु.
शिवशयनोत्सव	13 जुला.	बु.
गुरु पूर्णिमा (व्यास पूजा)	13 जुला.	बु.
चातुर्मास्य व्रत-नियमादि प्रा.	13 जुला.	बु.
श्रावण शिवरात्रि	26 जुला.	मं.
हरियाली अमावस	28 जुला.	गु.
मधुस्रवा तृतीया, संधारा तीज.	31 जुला.	र.
अगस्त (सन् 2022 ई.)		
नागपंचमी	2 अग.	मं.
ऋक्-उपाकर्म	2 अग.	मं.
श्रीदुर्गाष्टमी	5 अग.	शु.
रक्षाबन्धन (राखी)	11 अग.	गु.
शुक्ल-कृष्ण-यजु उपाकर्म	11 अग.	गु.
श्रावणी पूर्णिमा	12 अग.	शु.
श्री अमरनाथ यात्रा (ज.क.)	12 अग.	शु.
कज्जली तृतीया	14 अग.	र.
श्रीगणेश (संकष्ट) चतुर्थी	15 अग.	चं.
बहुला चतुर्थी	15 अग.	चं.
श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रत (स्मार्त)	18 अग.	गु.
श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रत (वैष्णव)	19 अग.	शु.
गोकुलाष्टमी (नन्दोत्सव)	19 अग.	शु.
श्रीगुग्गा नवमी	20 अग.	श.
कुशोत्पाटिनी अमावस	27 अग.	श.
पिठोरी अमावस	27 अग.	श.
साम उपाकर्म	30 अग.	मं.
गौरी तृतीया	30 अग.	मं.
हरितालिका तृतीया	30 अग.	मं.
कलंक चतुर्थी	30 अग.	मं.
सिद्धिविनायक व्रत	31 अग.	बु.
सितम्बर (सन् 2022 ई.)		
ऋषि पंचमी	1 सितं.	गु.
सूर्यषष्ठी व्रत	2 सितं.	शु.
मुक्ताभरण सप्तमी	3 सितं.	श.
श्रीराधाष्टमी	3 सितं.	श.
श्रीमहालक्ष्मी व्रत प्रारम्भ	3 सितं.	श.
दूर्वाष्टमी व्रत	3 सितं.	श.
श्रीचन्द नवमी	5 सितं.	चं.
श्रीवामन जयन्ती	7 सितं.	बु.
श्रीअनन्त चतुर्दशी	9 सितं.	शु.
प्रोष्ठपदी श्राद्ध	10 सितं.	श.
पूर्णिमा श्राद्ध	10 सितं.	श.
महालय प्रारम्भ	10 सितं.	श.

प्रमुख-प्रमुख व्रत-पर्व (1 जनवरी, सन् 2022 ई. से 21 मार्च, सन् 2023 ई. तक)

व्रत-पर्व	तारीख	वार
पितृपक्ष प्रारम्भ	10 सितं.	श.
चन्द्रषष्ठी व्रत	15 सितं.	गु.
श्रीमहालक्ष्मी व्रत समाप्त	17 सितं.	श.
महालय/श्राद्ध समाप्त	25 सितं.	र.
शारद नवरात्र प्रारम्भ	26 सितं.	चं.
उपाङ्गललिता व्रत	30 सितं.	शु.
अक्तूबर (सन् 2022 ई.)		
सरस्वती आवाहन	2 अक्तू.	र.
सरस्वती पूजन	3 अक्तू.	चं.
श्रीदुर्गाष्टमी, महाष्टमी	3 अक्तू.	चं.
महानवमी (पूजा, उपवास के लिए)	3 अक्तू.	चं.
सरस्वती के लिए बलिदान	4 अक्तू.	मं.
महानवमी (बलिदान के लिए)	4 अक्तू.	मं.
नवरात्र समाप्त	4 अक्तू.	मं.
सरस्वती विसर्जन	5 अक्तू.	बु.
नवरात्रपारणा	5 अक्तू.	बु.
विजयादशमी (दशहरा)	5 अक्तू.	बु.
भरतमिलाप	6 अक्तू.	गु.
कोजागर व्रत	9 अक्तू.	र.
शरत् पूर्णिमा	9 अक्तू.	र.
महर्षि वाल्मीकि जयन्ती	9 अक्तू.	र.
कार्तिकस्नान प्रारम्भ	9 अक्तू.	र.
करक चतुर्थी (करवा चौथ)	13 अक्तू.	गु.
अहोई अष्टमी (पंजाब)	17 अक्तू.	चं.
गोवत्स द्वादशी	22 अक्तू.	श.
धन त्रयोदशी	23 अक्तू.	र.
यम-प्रीत्यर्थ दीपदान	23 अक्तू.	र.
श्रीहनुमान् जयन्ती (उ.भा.)	23 अक्तू.	र.
नरक चतुर्दशी (पूर्वरुणोदय वाली)	24 अक्तू.	चं.
दीपावली, श्रीमहालक्ष्मीपूजा	24 अक्तू.	चं.
खण्डग्रास सूर्यग्रहण	25 अक्तू.	मं.
गोवर्धन पूजा, बलिपूजा	26 अक्तू.	बु.

व्रत-पर्व	तारीख	वार
अन्नकूट, गोक्रीड़ा	26 अक्तू.	बु.
यमद्वितीया, भाईदूज	26 अक्तू.	बु.
श्रीविश्वकर्मा पूजा	27 अक्तू.	गु.
सूर्यषष्ठी (बिहार)	30 अक्तू.	र.
नवंबर (सन् 2022 ई.)		
गोपाष्टमी	1 नवं.	मं.
अक्षय नवमी	2 नवं.	बु.
कृष्माण्ड नवमी	2 नवं.	बु.
भीष्म पंचक प्रारम्भ	4 नवं.	शु.
हरिप्रबोधोत्सव	4 नवं.	शु.
तुलसी विवाह	5 नवं.	श.
चातुर्मास्य व्रत-नियमादि समाप्त	5 नवं.	श.
वैकुण्ठ चतुर्दशी	6 नवं.	र.
त्रिपुरोत्सव	7 नवं.	चं.
श्रीगुरुनानक जयन्ती	8 नवं.	मं.
कार्तिकस्नान समाप्त	8 नवं.	मं.
कार्तिक पूर्णिमा	8 नवं.	मं.
भीष्म पंचक समाप्त	8 नवं.	मं.
खग्रास चन्द्रग्रहण	8 नवं.	मं.
श्रीकालाष्टमी (भैरवाष्टमी)	16 नवं.	बु.
स्कन्द, गुहषष्ठी	28 नवं.	चं.
चम्पा षष्ठी	29 नवं.	मं.
मित्र सप्तमी	29 नवं.	मं.
दिसम्बर (सन् 2022 ई.)		
श्रीगीता जयन्ती	3 दिसं.	श.
श्रीदत्त जयन्ती	7 दिसं.	बु.
जनवरी (सन् 2023 ई.)		
इंग्लिश नववर्ष 2023 ई. प्रा.	1 जन.	र.
पौषी पूर्णिमा	6 जन.	श.

व्रत-पर्व	तारीख	वार
माघस्नान प्रारम्भ	6 जन.	शु.
श्रीगणेश (संकष्ट) चतुर्थी	10 जन.	मं.
लोहड़ी (पं., हरि., ज.क.)	13 जन.	शु.
मकर संक्रांति	14 जन.	श.
मौनी अमावस	21 जन.	श.
माघ गुप्त नवरात्र प्रारम्भ	22 जन.	र.
गौरी तृतीया (गोंतरी)	24 जन.	मं.
वरद्-तिल-कुन्द चतुर्थी	24 जन.	मं.
श्रीपंचमी, वसन्त पंचमी	26 जन.	गु.
लक्ष्मी-सरस्वती पूजन	26 जन.	गु.
रथसप्तमी (पूर्वारुणोदय वाली)	28 जन.	श.
आरोग्य सप्तमी	28 जन.	श.
भीष्माष्टमी	28 जन.	श.
माघ गुप्त नवरात्र समाप्त	30 जन.	चं.
फरवरी (सन् 2023 ई.)		
भीष्म द्वादशी	1 फर.	बु.
माघी पूर्णिमा	5 फर.	र.
माघस्नान समाप्त	5 फर.	र.
श्रीमहाशिवरात्रि व्रत	18 फर.	श.
सोमवती अमा.	20 फर.	चं.
होलाष्टक प्रारम्भ	27 फर.	चं.
मार्च (सन् 2023 ई.)		
गोविन्द द्वादशी	3 मार्च	शु.
होलिकादहन	6 मार्च	चं.
होलाष्टक समाप्त	7 मार्च	मं.
वसन्तोत्सव	8 मार्च	बु.
होलामेला श्री आनन्दपुर सा. (पं.)	8 मार्च	बु.
महाविषुव दिन	20 मार्च	चं.
मेला पिहोवा तीर्थ (हरि.)	20 मार्च	चं.
चान्द्र संवत् 2079 वि.पूर्ण	21 मार्च	मं.

आगामी वर्ष (वि. सं. 2080) के लिए प्रमुख-प्रमुख व्रत-पर्व

नाम मेला/पर्व	तारीख
(सन् 2023 ई.)	
नवरात्र प्रारम्भ	22 मार्च
श्रीदुर्गाष्टमी	29 मार्च
श्रीरामनवमी	30 मार्च
श्रीमहावीर जयन्ती (जैन)	4 अप्रै.
मेष संक्रान्ति (वैशाखी)	14 अप्रै.
श्रीपरशुराम जयन्ती	22 अप्रै.
श्री बुद्ध जयन्ती	5 मई
श्री गंगा दशहरा	30 मई
गुरु पूर्णिमा	3 जुला.
रक्षाबन्धन	30 अग.
संकष्ट चतुर्थी	2 सितं.
श्रीकृष्ण जन्माष्टमी (स्मा.)	6 सितं.
श्रीकृष्ण जन्माष्टमी (वै.)	7 सितं.
श्राद्ध प्रारम्भ	29 सितं.
शारद नवरात्र प्रारम्भ	15 अक्तू.
श्रीदुर्गाष्टमी	22 अक्तू.
दशहरा (विजयादशमी)	24 अक्तू.
शरत् पूर्णिमा	28 अक्तू.
श्रीवाल्मीकि जयन्ती	28 अक्तू.
करक चतुर्थी (करवा चौथ)	1 नवं.
दीपावली	12 नवं.
भाईदूज	15 नवं.
श्रीगुरु नानक जयन्ती	27 नवं.
श्रीभैरवाष्टमी	5 दिसं.
(सन् 2024 ई.)	
मकर संक्रान्ति	14 जन.
वसन्त पंचमी	14 फर.
श्रीगुरु रविदास जयन्ती	24 फर.
श्रीमहाशिवरात्रि व्रत	8 मार्च

वर्गीकृत व्रत-पर्व (1 जनवरी, सन् 2022 ई. से 21 मार्च, सन् 2023 ई. तक)

एकादशी व्रत

(सन् 2022 ई.)	
पौष शुक्ल	13 जन.
माघ कृष्ण	28 जन.
माघ शुक्ल	12 फर.
फाल्गुन कृष्ण (स्मा.)	26 फर.
फाल्गुन शुक्ल	14 मार्च
चैत्र कृष्ण	28 मार्च
चैत्र शुक्ल (स्मा.)	12 अप्रै.
वैशाख कृष्ण	26 अप्रै.
वैशाख शुक्ल	12 मई
ज्येष्ठ कृष्ण	26 मई
ज्येष्ठ शुक्ल (स्मा.)	10 जून
आषाढ़ कृष्ण	24 जून
आषाढ़ शुक्ल	10 जुला.
श्रावण कृष्ण	24 जुला.
श्रावण शुक्ल	8 अग.
भाद्रपद कृष्ण	23 अग.
भाद्रपद शुक्ल (स्मा.)	6 सितं.
आश्विन कृष्ण	21 सितं.
आश्विन शुक्ल	6 अक्तू.
कार्त्तिक कृष्ण	21 अक्तू.
कार्त्तिक शुक्ल	4 नवं.
मार्गशीर्ष कृष्ण	20 नवं.
मार्गशीर्ष शुक्ल (स्मा.)	3 दिसं.
पौष कृष्ण	19 दिसं.

(सन् 2023 ई.)	
पौष शुक्ल	2 जन.
माघ कृष्ण	18 जन.
माघ शुक्ल	1 फर.
फाल्गुन कृष्ण (स्मा.)	16 फर.
फाल्गुन शुक्ल	3 मार्च
चैत्र कृष्ण	18 मार्च

(स्मा. = स्मार्तों का व्रत)
वैष्णवों का व्रत स्मार्तों के व्रत के दिन से दूसरे दिन होता है। जिसके आगे "स्मा." नहीं लिखा है, वह व्रततिथि स्मार्त और वैष्णव दोनों के लिए है।

पक्षों का प्रारम्भ

(सन् 2022 ई.)	
पौष शुक्ल	3 जन.
माघ कृष्ण	18 जन.
माघ शुक्ल	2 फर.
फाल्गुन कृष्ण	17 फर.
फाल्गुन शुक्ल	3 मार्च
चैत्र कृष्ण	19 मार्च
चैत्र शुक्ल	2 अप्रै.
वैशाख कृष्ण	17 अप्रै.
वैशाख शुक्ल	1 मई
ज्येष्ठ कृष्ण	17 मई
ज्येष्ठ शुक्ल	31 मई
आषाढ़ कृष्ण	15 जून
आषाढ़ शुक्ल	30 जून
श्रावण कृष्ण	14 जुला.
श्रावण शुक्ल	29 जुला.
भाद्रपद कृष्ण	12 अग.
भाद्रपद शुक्ल	28 अग.
आश्विन कृष्ण	11 सितं.
आश्विन शुक्ल	26 सितं.
कार्त्तिक कृष्ण	10 अक्तू.
कार्त्तिक शुक्ल	26 अक्तू.
मार्गशीर्ष कृष्ण	9 नवं.
मार्गशीर्ष शुक्ल	24 नवं.
पौष कृष्ण	9 दिसं.
पौष शुक्ल	24 दिसं.

(सन् 2023 ई.)	
माघ कृष्ण	7 जन.
माघ शुक्ल	22 जन.
फाल्गुन कृष्ण	6 फर.
फाल्गुल शुक्ल	21 फर.
चैत्र कृष्ण	8 मार्च

उत्तरी भारत में कृष्णादि एवं दक्षिणी भारत में शुक्लादि मासों का प्रचार है। ऊपर दिए गए पक्ष कृष्णादि हैं।

श्रीसत्यनारायण व्रत

(सन् 2022 ई.)	
पौष	17 जन.
माघ	16 फर.
फाल्गुन	17 मार्च
चैत्र	16 अप्रै.
वैशाख	15 मई
ज्येष्ठ	13 जून
आषाढ़	13 जुला.
श्रावण	11 अग.
भाद्रपद	9 सितं.
आश्विन	9 अक्तू.
कार्त्तिक	7 नवं.
मार्गशीर्ष	7 दिसं.

(सन् 2023 ई.)	
पौष	6 जन.
माघ	5 फर.
फाल्गुन	6 मार्च

दशावतार जयन्तियां

(सन् 2022 ई.)	
श्री मत्स्य जयन्ती	4 अप्रै.
श्रीरामनवमी	10 अप्रै.
श्रीपरशुराम जयन्ती	3 मई
श्रीनृसिंह जयन्ती	14 मई
श्रीकूर्म जयन्ती	15 मई
श्रीबुद्ध जयन्ती	16 मई
श्रीकल्कि जयन्ती	3 अग.
*श्रीकृष्ण जन्माष्टमी	18 अग.
श्रीवराह जयन्ती	30 अग.
श्रीवामन जयन्ती	7 सितं.

* अर्धरात्रिव्यापिनी अष्टमी के दिन ही श्रीकृष्णजन्माष्टमी का व्रत करना चाहिए। श्रीमद्भागवत एवं स्कन्द-विष्णु पुराण आदि इसी का समर्थन करते हैं।

श्रीगणेशचतुर्थी व्रत

(सन् 2022 ई.)	
माघ (संकष्ट चतुर्थी)	21 जन.
फाल्गुन	20 फर.
चैत्र	21 मार्च
वैशाख	19 अप्रै.
ज्येष्ठ	19 मई
आषाढ़	17 जून
श्रावण	16 जुला.
भाद्रपद (संकष्ट चतुर्थी)	15 अग.
आश्विन	13 सितं.
कार्त्तिक	13 अक्तू.
मार्गशीर्ष	12 नवं.
पौष	11 दिसं.

(सन् 2023 ई.)	
माघ (संकष्ट चतुर्थी)	10 जन.
फाल्गुन	9 फर.
चैत्र	11 मार्च

श्रीसिद्धिविनायक चतुर्थी व्रत

(सन् 2022 ई.)	
पौष	6 जन.
माघ	4 फर.
फाल्गुन	6 मार्च
चैत्र	5 अप्रै.
वैशाख	4 मई
ज्येष्ठ	3 जून
आषाढ़	3 जुला.
श्रावण	1 अग.
भाद्रपद	31 अग.
आश्विन	29 सितं.
कार्त्तिक	28 अक्तू.
मार्गशीर्ष	27 नवं.
पौष	26 दिसं.

(सन् 2023 ई.)	
माघ	25 जन.
फाल्गुन	23 फर.

प्रदोष व्रत

(सन् 2022 ई.)	
पौष शुक्ल (शनि)	15 जन.
माघ कृष्ण	30 जन.
माघ शुक्ल (सोम)	14 फर.
फाल्गुन कृष्ण (सोम)	28 फर.
फाल्गुन शुक्ल (भौम)	15 मार्च
चैत्र कृष्ण (भौम)	29 मार्च
चैत्र शुक्ल	14 अप्रै.
वैशाख कृष्ण	28 अप्रै.
वैशाख शुक्ल	13 मई
ज्येष्ठ कृष्ण	27 मई
ज्येष्ठ शुक्ल	12 जून
आषाढ़ कृष्ण	26 जून
आषाढ़ शुक्ल (सोम)	11 जुला.
श्रावण कृष्ण (सोम)	25 जुला.
श्रावण शुक्ल (भौम)	9 अग.
भाद्रपद कृष्ण	24 अग.
भाद्रपद शुक्ल	8 सितं.
आश्विन कृष्ण	23 सितं.
आश्विन शुक्ल	7 अक्तू.
कार्त्तिक कृष्ण	23 अक्तू.
कार्त्तिक शुक्ल (शनि)	5 नवं.
मार्गशीर्ष कृष्ण (सोम)	21 नवं.
मार्गशीर्ष शुक्ल (सोम)	5 दिसं.
पौष कृष्ण	21 दिसं.

(सन् 2023 ई.)	
पौष शुक्ल	4 जन.
माघ कृष्ण	19 जन.
माघ शुक्ल	3 फर.
फाल्गुन कृष्ण (शनि)	18 फर.
फाल्गुन शुक्ल (शनि)	4 मार्च
चैत्र कृष्ण	19 मार्च

वर्गीकृत व्रत-पर्व (1 जनवरी, सन् 2022 ई. से 21 मार्च, सन् 2023 ई. तक)

मासिक शिवरात्रिव्रत (सन् 2022 ई.)

मास	तिथि
पौष	1 जन.
माघ	30 जन.
फाल्गुन (श्रीमहाशिवरात्रि)	1 मार्च
चैत्र	30 मार्च
वैशाख	29 अप्रै.
ज्येष्ठ	28 मई
आषाढ़	27 जून
श्रावण	26 जुला.
भाद्रपद	25 अग.
आश्विन	24 सितं.
कार्त्तिक	23 अक्तू.
मार्गशीर्ष	22 नवं.
पौष	21 दिसं.
(सन् 2023 ई.)	
माघ	20 जन.
फाल्गुन (श्रीमहाशिवरात्रि)	18 फर.
चैत्र	20 मार्च

पूर्णिमा व्रत (सन् 2022 ई.)
(स्नान-दानार्थ, उदयव्यापिनी पूर्णिमा में)

मास	तिथि
पौष	17 जन.
माघ	16 फर.
फाल्गुन	18 मार्च
चैत्र	16 अप्रै.
वैशाख	16 मई
ज्येष्ठ	14 जून
आषाढ़	13 जुला.
श्रावण	12 अग.
भाद्रपद	10 सितं.
आश्विन	9 अक्तू.
कार्त्तिक	8 नवं.
मार्गशीर्ष	8 दिसं.
(सन् 2023 ई.)	
पौष	6 जन.
माघ	5 फर.
फाल्गुन	7 मार्च

संक्रान्तियां (सन् 2022 ई.)

मास	तिथि
माघ	14 जन.
फाल्गुन	12 फर.
चैत्र	14 मार्च
वैशाख	14 अप्रै.
ज्येष्ठ	14 मई
आषाढ़	15 जून
श्रावण	16 जुला.
भाद्रपद	17 अग.
आश्विन	17 सितं.
कार्त्तिक	17 अक्तू.
मार्गशीर्ष	16 नवं.
पौष	16 दिसं.
(सन् 2023 ई.)	
माघ	14 जन.
फाल्गुन	13 फर.
चैत्र	14 मार्च

अमावस्याएं (स्नान–दानार्थ) (सन् 2022 ई.)

मास	तिथि
पौष	2 जन.
माघ (भौमवती)	1 फर.
फाल्गुन	2 मार्च
चैत्र	1 अप्रै.
वैशाख (शनैश्चरी)	30 अप्रै.
ज्येष्ठ (सोमवती)	30 मई
आषाढ़	29 जून
श्रावण	28 जुला.
भाद्रपद (शनैश्चरी)	27 अग.
आश्विन	25 सितं.
कार्तिक (भौमवती)	25 अक्तू.
मार्गशीर्ष	23 नवं.
पौष	23 दिसं.
(सन् 2023 ई.)	
माघ (शनैश्चरी)	21 जन.
फाल्गुन (सोमवती)	20 फर.
चैत्र (भौमवती)	21 मार्च

मासिक श्रीदुर्गाष्टमी व्रत (सन् 2022 ई.)

मास	तिथि
पौष	10 जन.
माघ	8 फर.
फाल्गुन	10 मार्च
चैत्र	9 अप्रै.
वैशाख	9 मई
ज्येष्ठ	8 जून
आषाढ़	7 जुला.
श्रावण	5 अग.
भाद्रपद	4 सितं.
आश्विन	3 अक्तू.
कार्त्तिक	1 नवं.
मार्गशीर्ष	30 नवं.
पौष	30 दिसं.
(सन् 2023 ई.)	
माघ	28 जन.
फाल्गुन	27 फर.

मासिक कालाष्टमी व्रत (सन् 2022 ई.)

मास	तिथि
माघ	25 जन.
फाल्गुन	23 फर.
चैत्र	25 मार्च
वैशाख	23 अप्रै.
ज्येष्ठ	22 मई
आषाढ़	21 जून
श्रावण	20 जुला.
भाद्रपद	19 अग.
आश्विन	17 सितं.
कार्त्तिक	17 अक्तू.
मार्गशीर्ष (श्रीभैरवाष्टमी)	16 नवं.
पौष	16 दिसं.
(सन् 2023 ई.)	
माघ	15 जन.
फाल्गुन	13 फर.
चैत्र	15 मार्च

अरुणाय त्रयोदशी

श्रीसंगमेश्वर महादेव, अरुणाय (पिहोवा) के शिवत्रयोदशी पर्व (उदयव्यापिनी कृष्ण त्रयोदशी)

मास	तिथि
(2022 ई.)	
माघ	30 जन.
फाल्गुन	28 फर.
चैत्र	30 मार्च
वैशाख	28 अप्रै.
ज्येष्ठ	28 मई
आषाढ़	26 जून
श्रावण	26 जुला.
भाद्रपद	25 अग.
आश्विन	23 सितं.
कार्त्तिक	23 अक्तू.
मार्गशीर्ष	22 नवं.
पौष	21 दिसं.
(सन् 2023 ई.)	
माघ	20 जन.
फाल्गुन	18 फर.
चैत्र	19 मार्च

आश्विन कृष्णपक्ष के श्राद्ध (सन् 2022 ई.)

श्राद्ध	तिथि
प्रोष्ठपदी / ⊙पूर्णिमा	10 सितं.
प्रतिपदा	10 सितं.
द्वितीया	11 सितं.
तृतीया	12 सितं.
चतुर्थी	13 सितं.
पंचमी	14 सितं.
भरणी श्राद्ध	14 सितं.
षष्ठी	15 सितं.
सप्तमी	16 सितं.
अष्टमी	18 सितं.
★ नवमी	19 सितं.
दशमी	20 सितं.
एकादशी	21 सितं.
*द्वादशी/संन्यासियों का श्राद्ध	22 सितं.
त्रयोदशी	23 सितं.
मघा श्राद्ध	23 सितं.
✧ चतुर्दशी	24 सितं.
सर्वपितृ, अमावस, पूर्णिमा एवं अज्ञात मृत्युतिथि वालों का महालय श्राद्ध	25 सितं.
नाना / नानी का श्राद्ध	26 सितं.

⊙"जिनकी मृत्युतिथि पूर्णिमा हो, उनका महालय श्राद्ध प्रोष्ठपदी पूर्णिमा को करना चाहिए"–यह शास्त्रीय मत है। लेकिन पंजाब, हरियाणा आदि प्रदेशों में पूर्णिमा मृत्युतिथि वालों का महालय सर्वपितृ अमावस्या को करने की लोक-परम्परा है।

★ सौभाग्यवती स्त्रियों का श्राद्ध सर्वदा नवमी में ही किया जाता है, भले ही उनकी मृत्युतिथि कोई भी हो।
* संन्यासियों का श्राद्ध हमेशा द्वादशी में ही किया जाता है, भले ही उनकी मृत्युतिथि कोई भी क्यों न हो।

✧ शस्त्र-विष आदि से मृतों (अमृत्यु वालों) का श्राद्ध चतुर्दशी के दिन होता है, भले ही उनकी मृत्युतिथि कोई भी हो। चतुर्दशी में सामान्य मृत्यु वालों का महालय श्राद्ध अमावस्या में करना चाहिए।

वर्गीकृत व्रत-पर्व (1 जनवरी, सन् 2022 ई. से 21 मार्च, सन् 2023 ई. तक)

जैन व्रतपर्व (सन् 2022 ई.)

व्रतपर्व	तिथि
श्रीमेरुत्रयोदशी	30 जन.
मर्यादा महोत्सव	7 फर.
आचार्य भिक्षु अभिनिष्क्रमण	10 अप्रै.
श्री महावीर जयन्ती	14 अप्रै.
श्रीमहावीर केवलज्ञान दिवस	11 मई
श्रीमहावीर च्यवन दिवस	5 जुला.
तेरापन्थ स्थापना दिवस	13 जुला.
चातुर्मास्य व्रत-नियम आदि प्रारम्भ	13 जुला.
श्रीजयाचार्य निर्वाण-दिवस	24 अग.
पर्युषण पर्व प्रारम्भ	25 अग.
संवत्सरी महापर्व	1 सितं.
श्रीकालू निर्वाण-दिवस	2 सितं.
आचार्य श्रीतुलसी पट्टारोहण	5 सितं.
आचार्य भिक्षु निर्वाण-दिवस	8 सितं.
श्रीमहावीर निर्वाण-दिवस	25 अक्तू.
आचार्य श्रीतुलसी-जन्म	27 अक्तू.
ज्ञानपंचमी	29 अक्तू.
चातुर्मास्य व्रत-नियमादि-समाप्त	8 नवं.
श्रीमहावीर-दीक्षादिवस	19 नवं.
आचार्य श्रीतुलसी-दीक्षादिवस	13 दिसं.
जन्म श्रीपार्श्वनाथ जी	18 दिसं.
(सन् 2023 ई.)	
श्रीमेरुत्रयोदशी	20 जन.
मर्यादा महोत्सव	28 जन.

महापुरुषों के जन्मदिन (सन् 2022 ई.)

महापुरुष	तिथि
नेता जी श्रीसुभाषचन्द्र बोस	23 जन.
स्वामी विवेकानन्द	25 जन.
श्रीरामानन्दाचार्य	25 जन.
लाला लाजपतराय	28 जन.
योगिराज बा. श्रीलालदयाल	2 फर.
श्रीगुरु रविदास जी	16 फर.
महर्षि दयानन्द सरस्वती	26 फर.
श्रीरामकृष्ण परमहंस	4 मार्च
श्रीचैतन्य महाप्रभु	18 मार्च
डॉ. अम्बेड़कर जयन्ती	14 अप्रै.
श्रीवल्लभाचार्य	26 अप्रै.
श्रीछत्रपति शिवाजी	2 मई
आद्य जगद्गुरु श्रीशंकराचार्य	6 मई
श्रीरामानुजाचार्य (उ.भा.)	7 मई
श्रीरवीन्द्रनाथ टैगोर	7 मई
श्रीमहाराणाप्रताप	2 जून
लो. मा. बालगंगाधर तिलक	23 जुला.
गोस्वामी तुलसीदास जी	4 अग.
स्वामी शिवानन्द जी	8 सितं.
महाराजा अग्रसेन जी	26 सितं.
श्रीमहात्मा गांधी	2 अक्तू.
श्रीलालबहादुर शास्त्री	2 अक्तू.
श्रीमाध्वाचार्य	5 अक्तू.
स्वामी रामतीर्थ	22 अक्तू.
श्रीवीर वैरागी	6 नवं.
श्रीजवाहर लाल नेहरु	14 नवं.
भगवान् श्रीसत्यसाईं बाबा	23 नवं.
(सन् 2023 ई.)	
श्रीरामानन्दाचार्य	14 जन.
स्वामी विवेकानन्द	14 जन.
योगिराज बा. श्रीलालदयाल	23 जन.
नेता जी श्रीसुभाषचन्द्र बोस	23 जन.
लाला लाजपतराय	28 जन.
श्रीगुरु रविदास जी	5 फर.
महर्षि दयानन्द सरस्वती	15 फर.
श्रीरामकृष्ण परमहंस	21 फर.
श्रीचैतन्य महाप्रभु	7 मार्च

मुस्लिम त्योहार (सन् 2022-23 ई.)

त्योहार	तिथि
जन्म श्री हजरत अली	15 फर.
शब-ए-मिराज	1 मार्च
शब-ए-बरात	19 मार्च
रमज़ान का पहला दिन	3 अप्रै.
शहादत-ए-हज़रत अली	23 अप्रै.
जमतुल विदा	29 अप्रै.
शब-ए-कद्र	29 अप्रै.
ईद-उल-फित्र	3 मई
इदुलजुहा	11 जून
मुहर्रम (ताजिया)	9 अग.
चेहल्म	18 सितं.
आखिरी चहार शम्बा	21 सितं.
शहादत-ए-इमाम हसन	26 सितं.
ईद-ए-मिलाद	9 अक्तू.
ईद-ए-मौलाद	14 अक्तू.
फातिहायज़दहुम	7 नवं.
जन्मदिन श्री हजरत अली	5 फर.
शब-ए-मिराज	19 फर.
शब-ए-बारात	8 मार्च

सूचना—सभी मुस्लिम त्योहार चन्द्रदर्शन (नया चाँद दिखाई देने) पर ही निर्भर करते हैं। कई बार स्थानभेद या आकाशीय वातावरण के कारण चन्द्रदर्शन की तारीख आगे-पीछे हो जाने पर इन मुस्लिम त्योहारों के दिन में एक दिन का अन्तर संभव है। इसकी सूचना T.V. आदि द्वारा प्रसारित कर दी जाती है।

क्रिश्चियन त्योहार (सन् 2022-23 ई.)

त्योहार	तिथि
इंग्लिश नया साल प्रारम्भ	1 जन.
पाम सण्डे	10 अप्रै.
गुड फ्राईडे	15 अप्रै.
ईस्टर सण्डे	17 अप्रै.
क्रिस्मस डे	25 दिसं.
इंग्लिश नया साल प्रारम्भ	1 जन.

क्या किससे पूछें ?

'श्रीमार्त्तण्ड पंचांग' गत विषयों से सम्बद्ध अपनी शंकाओं का समाधान ऐसे प्राप्त करें।

'श्रीमार्त्तण्ड पंचांग' में सिद्धान्त, गणित, फलित, मुहूर्त्त, व्रतपर्व, तेज़ी-मन्दी आदि अनेक विषयों का समावेश रहता है। इन विषयों से सम्बद्ध शंकाएं हमारे जिज्ञासु पाठकों के मस्तिष्क में कई बार उत्पन्न होती हैं, जिनके समाधानार्थ वे ठीक से समझ नहीं पाते कि-किससे सम्पर्क साधा जाए। किस विषय की शंका के समाधानार्थ किससे सम्पर्क करना उचित है- यह हम यहां स्पष्ट किए देते हैं—

(i) तिथ्यादि पंचांग, ग्रहभोगांश, शर, क्रान्ति, राशि-नक्षत्र/नक्षत्र-चरणप्रवेश, वक्रता-मार्गिता, उदयास्त, लोप-दर्शन, ग्रहण, ग्रहयुति आदि खगोलीय चमत्कार, अयनांश, अक्षांश, रेखांश, लग्न, सन्दिग्ध व्रतपर्व-निर्णय, विवाहादि मुहूर्त्त तथा अन्य सभी सिद्धान्त-गणित-फलित-सम्बन्धी जिज्ञासाओं के शान्त्यर्थ निम्नांकित पते पर सम्पर्क करें।

(ii) राष्ट्रीय-अन्तर्राष्ट्रीय घटनाचक्र, राजनैतिक दलों के चुनावचक्र में जय-पराजय, राजनेताओं का उत्त्थान-पतन; पाक्षिक-मासिक-वार्षिक फलादेश, यन्त्र-मन्त्र-तन्त्र-रहस्य, वृष्टि, वायुमण्डल, अतिवृष्टि, अनावृष्टि, बाढ़, भूकम्प आदि दैवीय एवं प्राकृतिक आपदा तथा विश्वशान्ति-विप्लव आदि से सम्बद्ध पंचांगगत भविष्यवाणियों के विषय में तथा जन्मकुण्डली, टेवा, प्रश्नलग्न आदि के निर्माण एवं इनकी फीस वगैरह की जानकारी एवम् वायदा-हाज़र बाज़ार के चांस, सोना, चांदी, कॉपर आदि मैटल्स, चना, गेहूं, ग्वार आदि अनाज; तिल, सरसों, बिनौला आदि तिलहन तथा रुई, कपास, ऊन आदि जिन्स की पंचांग में प्रकाशित वार्षिक-मासिक-पाक्षिक-दैनिक तेज़ी-मन्दी-सम्बन्धी पूछताछ के लिए हमसे सम्पर्क कीजिए—

पं. इन्दुशेखर शर्मा, शास्त्री, M.A., ज्योतिषाचार्य,
पं. संयमी शर्मा, M.A., ज्योतिषाचार्य, धर्मशास्त्राचार्य,
श्रीमार्त्तण्ड ज्योतिष कार्यालय, कुराली,
ज़िला मोहाली (पंजाब), PIN : 140103,
Phone : 0160-2641277, 09988407010

उत्तर के लिए हमें जवाबी पत्र या Postal Stamps आदि न भेजें। आपकी उचित शंकाओं का निवारण हम अपने व्यय से ही करेंगे। लेकिन हम इसके लिए किसी भी तरह से बाधित नहीं हैं—यह ध्यान में रखें।

—सम्पादक मण्डल

सिक्ख पर्व (सं. 2079 वि.) (2 अप्रैल, 2022 ई. से 21 मार्च, 2023 ई. तक)

नाम श्रीगुरु साहिबान	पुरातन परम्परा [विक्रमी कैलेण्डर (तिथियों)] के अनुसार						नानकशाही कैलेण्डर अनुसार (ग्रेगोरियन तारीखों के अनुसार स्थिर)		
	प्रकाश दिवस		गुरयाई मिली		जोतीजोत समाए		प्रकाश दिवस	गुरयाई मिली	जोतीजोत समाए
	तिथि	तारीख	तिथि	तारीख	तिथि	तारीख	तारीख	तारीख	तारीख
श्री गुरु नानकदेव जी	कार्तिक शु. 15	8 नवं.	अवतार दिन से	-------	आश्वि. कृ. 10	20 सितं.	8 नवं.	अवतार दिन से	22 सितं.
श्री गुरु अंगददेव जी	वैशाख शु. 1	1 मई	आश्वि. कृ. 5	15 सितं.	चैत्र शु. 4	5 अप्रै.	18 अप्रैल	18 सितं.	16 अप्रैल
श्री गुरु अमरदास जी	वैशाख शु. 14	15 मई	चैत्र शु. 1	2 अप्रैल	भाद्र. शु. 15	10 सितं.	23 मई	16 अप्रैल	16 सितं.
श्री गुरु रामदास जी	कार्त्तिक कृ. 2	11 अक्तू.	भाद्र. शु. 13	8 सितं.	भाद्र. शु. 3	30 अग.	9 अक्तू.	16 सितं.	16 सितं.
श्री गुरु अर्जुनदेव जी	वैशाख कृ. 7	23 अप्रैल	भाद्र. शु. 2	29 अग.	ज्ये. शु. 4	3 जून	2 मई	16 सितं.	16 जून
श्री गुरु हरगोबिन्द जी	आषाढ़ कृ. 1	15 जून	ज्ये. कृ. 8	23 मई	चैत्र शु. 5	6 अप्रैल	5 जुलाई	11 जून	19 मार्च
श्री गुरु हरराय जी	माघ शु. 13	3 फर. '23	चैत्र कृ. 13	19 मार्च '23	कार्त्ति. कृ. 9	19 अक्तू.	31 जन.	14 मार्च	20 अक्तू.
श्री गुरु हरकिशन जी	श्राव. कृ. 9	22 जुला.	कार्त्ति. कृ. 9	19 अक्तू.	चैत्र शु. 14	15 अप्रैल	23 जुलाई	20 अक्तू.	16 अप्रैल
श्री गुरु तेगबहादुर जी	वैशाख कृ. 5	21 अप्रैल	चैत्र शु. 14	15 अप्रैल	मार्ग. शु. 5	28 नवं.	18 अप्रैल	16 अप्रैल	24 नवं.
श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी	पौष शु. 7	29 दिसं.	मार्ग. शु. 3	26 नवं.	कार्त्ति. शु. 5	29 अक्तू.	5 जन.	24 नवं.	21 अक्तू.

ध्यान दें

'नानकशाही कैलेण्डर', जिसके अनुसार सभी सिक्खपर्वों का निर्णय अंग्रेजी तारीखों के आधार पर किया गया है, सन् 2003 ई. में लागू किया गया। चूंकि, सभी सिक्खपर्व विगत शताब्दियों से पुरातन परम्परा (विक्रमी कैलेण्डर/तिथियों) के अनुसार ही मनाये जाते रहे हैं, अतः कई सिक्ख सम्प्रदाय एवं पटना, नांदेड़ आदि गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटियां भी सिक्खपर्वों को 'पुरातन परम्परा वाले विक्रमी कैलेण्डर' के अनुसार ही मनाने के पक्ष में हैं। इस प्रकार इस विषय में उत्पन्न मतभेद को शान्त करने के लिए सिक्ख-धर्म की सर्वोच्च संस्था S.G.P.C. (शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्ध कमेटी) अमृतसर द्वारा पर्वों के निर्णय के लिए अब पुनः विक्रमी कैलेण्डर को ही मान्यता दी गयी है–यह ध्यान देने योग्य है।

पुरातन परम्परा के अनुसार इस वर्ष (सं. 2079 वि.) की संक्रान्तियां–वैशा. 14-4-22, ज्ये. 14-5-22, आषाढ़ 15-6-22, श्रावण 16-7-22 भाद्र. 17-8-22, आश्वि. 17-9-22, कार्तिक– 17-10-22, मार्ग. 16-11-22, पौष 16-12-22, माघ 14-1-23, फाल्गुन 13-2-23, चैत्र 14-3-23.

नानकशाही कैलेण्डर के अनुसार संक्रान्तियां (सं. 2079वि.)–इस कैलेण्डर के अनुसार चैत्र की संक्रान्ति हमेशा 14 मार्च को होती है, चैत्र से श्रावण तक के पांच महीने हमेशा 31-31 दिनों के और शेष 6महीने हमेशा 30-30 दिनों के होते हैं, लीप इयर में फाल्गुन मास के 32 दिन माने गये हैं।

भारत सरकार के अवकाश (1 जनवरी, सन् 2022 ई. से 21 मार्च, सन् 2023 ई. तक)

(ध्यान दें–अवकाश की इस सूची को भारत सरकार के गजट की सूची से अवश्य मिला लें।)

(सन् 2022 ई.)		श्रीमहावीर जयन्ती (जैन)	14 अप्रै.	भारतस्वतन्त्रता दिवस	15 अग.	बलिदानदिन गुरु तेगबहादुर जी	28 नवं.
इंग्लिश नववर्ष प्रारम्भ	1 जन.	वैशाखी (पंजाब)	14 अप्रै.	श्रीकृष्ण जन्माष्टमी (वै.)	19 अग.	क्रिसमस डे	25 दिसं.
जन्मदिन श्रीगुरु गोबिन्दसिंह जी	9 जन.	विशु (केरल)	14 अप्रै.	ओणम (केरल)	8 सितं.	जन्मदिन श्री गुरुगोबिन्द सिंह जी	29 दिसं.
मकर संक्रान्ति (बंगाल)	14 जन.	गुड फ्राईडे	15 अप्रै.	जन्मदिन श्रीमहात्मा गांधी	2 अक्तू.	(सन् 2023 ई.)	
पोंगल	14 जन.	जमतुल विदा	29 अप्रै.	श्रीदुर्गाष्टमी	3 अक्तू.	इंग्लिश नववर्ष प्रारम्भ	1 जन.
भारतगणतन्त्र दिवस	26 जन.	इदुल-फित्र	3 मई	दशहरा	5 अक्तू.	मकर संक्रान्ति (बंगाल)	14 जन.
जन्म श्री हजरत अली	15 फर.	श्रीबुद्ध जयन्ती	16 मई	श्रीवाल्मीकि जयन्ती	9 अक्तू.	पोंगल	14 जन.
जन्मदिन श्रीगुरु रविदास जी	16 फर.	इदुलजुहा	11 जून	ईद-ए-मिलाद	9 अक्तू.	भारतगणतन्त्र दिवस	26 जन.
श्रीमहाशिवरात्रि व्रत	1 मार्च	रथयात्रा (पुरी)	1 जुला.	दीपावली	24 अक्तू.	जन्मदिन श्रीगुरु रविदास जी	5 फर.
होला, वसन्तोत्सव	19 मार्च	मुहर्रम (ताजिया)	9 अग.	भाईदूज	26 अक्तू.	जन्म श्रीहजरत अली	5 फर.
गुड़ी पड़वा	2 अप्रै.	रक्षाबन्धन (राखी)	11 अग.	श्री गुरुनानक जयन्ती	8 नवं.	श्रीमहाशिवरात्रि व्रत	18 फर.
श्रीरामनवमी	10 अप्रै.	श्रीगणेश चतुर्थी	15 अग.			होला, वसन्तोत्सव	8 मार्च

पंजाब, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, जम्मू-कश्मीर व उ.प्र. के मेले (1 जनवरी, सन् 2022 ई. से 21 मार्च, सन् 2023 ई. तक)

नाम मेला/पर्व (सन् 2022 ई.)	तारीख
जनवरी सन् 2022 ई.	
लोहड़ी दाऊं (मोहाली) (पं.)	14 जन.
लोहड़ी बिंदरख (रोपड़) (पं.)	14 जन.
मुक्तसर (पंजाब)	14 जन.
ब. सं. बा. अतर सिंह जी (रेरु साहिब) प्रा.	20 जन.
ब. सं. बा. बख्शीश सिंह जी	26 जन.
ब. सं. बा. अतर सिंह जी, (मस्तुआणां) (पं.) प्रा.	30 जन.
फरवरी 2022 ई.	
वसन्तपंचमी	5 फर.
बलिदान दिवस बाबा दीप सिंह जी शहीद सोलखियां (रोपड़–पं.)	10 फर.
ज. दि. गुरु हरराय जी, सिंहपुरा–कुराली (पं.)	14 फर.
मार्च 2022 ई.	
श्रीमहाशिवरात्रि (मण्डी, हि.प्र.) प्रारम्भ	1 मार्च
नीलकण्ठ महादेव (पौड़ी–गढ़वाल)	1 मार्च
ज. दि. सं. बा. अतरसिंह जी, (नानकसर चीमा) प्रा.	15 मार्च
मेला पीर भीखनशाह (घड़ाम) पटि. प्रा.	15 मार्च
होला श्री आनन्दपुर साहिब (पं.)	19 मार्च
श्री गुरु रामराय (देहरादून)	22 मार्च
श्री वीरमदास, बधौछी (पटियाला)	22 मार्च
शीतला माता (कुराली) पं.	24 मार्च
ज. दि. सं. बा. निधानसिंह जी (श्री हजूर साहिब वाले) ढींडसा (लुधि.)	25 मार्च
पिहोवा तीर्थ (हरियाणा)	30 मार्च

नाम मेला/पर्व (सन् 2022 ई.)	तारीख
अप्रैल 2022 ई.	
माईसर खाना (पंजाब)	7 अप्रै.
ज्वालामुखी (हरचोवाल–गुरदासपुर)	9 अप्रै.
मेला माता कांसादेवी (कांसल, मोहाली) प्रा.	14 अप्रै.
मेला माता नैनादेवी, दाचर (करनाल)	15 अप्रै.
देवी मेला हथीहरा (कुरुक्षेत्र)	15 अप्रै.
कशाधा नहयाणी सह (कुल्लू) प्रा.	16 अप्रै.
ज. दि. भाई दित्तसिंह ज्ञानी	21 अप्रै.
पीपल जातर (कुल्लू) प्रा.	29 अप्रै.
पिंजौर (हरि.)	30 अप्रै.
मई 2022 ई.	
आनी आऊटर सिराज (कुल्लू) प्रा.	7 मई
समागम (8दिन) हरिहरघाट, मणिकर्ण (हि.प्र.) प्रा.	10 मई
ढूंगरी जातर (मनाली) प्रा.	14 मई
बंजार (कुल्लू) प्रा.	14 मई
ज. दि. सं. बा. तेजासिंह जी, बदरीपुर, पांवटा सा. (हि.प्र.) प्रा.	14 मई
साढ़ी जातर, नगर (हि.प्र.) प्रा.	18 मई
जून 2022 ई.	
पुण्यतिथि सत्गुरु साईं टेऊँराम जी सप्तसरोवर भूपतवाला, हरिद्वार	6 जून
क्षीर भवानी (जम्मू-कश्मीर)	8 जून
श्री गंगा दशहरा	9 जून
सपोर यात्रा–धारलदा (उधमपुर)	10 जून
नमाणी एकादशी, नौवें गुरु, बरहे (बठि.) पं.	10 जून

नाम मेला/पर्व (सन् 2022 ई.)	तारीख
पीपलू, ऊना (हि.प्र.)	10 जून
शुद्ध महादेव यात्रा (उधमपुर)	14 जून
पाण्डवों का बाड़ी मेला (सरयांझ) सोलन	15 जून
भून्तर (कुल्लू) प्रा.	15 जून
उर्स माणकपुर शरीफ (मोहाली) प्रारम्भ	15 जून
यादगारी दिवस बीबी शरणकौर जी, गु. श्रीअमरगढ़ साहिब, श्रीचमकौर साहिब	29 जून
जुलाई 2022 ई.	
ब. सं. बा. तेजासिंह जी, नानकसर चीमा (पं.)/बड़ साहिब (हि.प्र.) प्रा.	1 जुला.
जयन्ती सत्गुरु साईं टेऊँराम जी सप्तसरोवर भूपतवाला, हरिद्वार	5 जुला.
शरीक भवानी (जम्मू-कश्मीर)	8 जुला.
ब.बा. सन्तोखसिंह जी/भा. दर्शनसिंह गु. जन्मस्थान नानकसर चीमा प्रा.	9 जुला.
गुरु पूर्णिमा, नदीपार आश्रम (कुराली) पं.	13 जुला.
मुड़िया पूनौ (गोवर्धन), मथुरा (उ.प्र.)	13 जुला.
धाटा गोशयन मेला (मण्डी, हि.प्र.) प्रा.	16 जुला.
गाड़ा गोशयन मेला (मण्डी, हि.प्र.) प्रा.	30 जुला.
अगस्त 2022 ई.	
नागपंचमी (जैत), मथुरा (उ.प्र.)	2 अग.
ब. सं. बा. निधानसिंह जी, ढींडसा (लुधि.)	4 अग.
श्रीनयना देवी (हि.प्र.)	5 अग.
श्री चिन्तपूर्णी (हि.प्र.)	5 अग.
ज. दि. सं. बा. ईशरसिंह जी (राड़ा सा. वाले), आलोवाल, पटियाला	5 अग.

पंजाब, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, जम्मू-कश्मीर व उ.प्र. के मेले (1 जनवरी, सन् 2022 ई. से 21 मार्च, सन् 2023 ई. तक)

नाम मेला/पर्व (सन् 2022 ई.)	तारीख
बरसी सं. बाबा प्यारासिंह जी गु. श्री अमरगढ़साहिब, चमकौरसाहिब प्रा.	5 अग.
श्री अमरनाथ यात्रा (कश्मीर)	12 अग.
श्रीकृष्णजन्माष्टमी, मथुरा (उ.प्र.)	19 अग.
ब. सं. बा. हरचन्दसिंह लौंगोवाल	20 अग.
कैलाशयात्रा (कश्मीर) प्रा.	25 अग.
ब. सं. बा. ईशरसिंह जी (राड़ा सा. वाले) प्रा.	24 अग.
श्रीगोसाईआणां, कुराली (पंजाब)	29 अग.
श्रीगणेशोत्सव (मण्डी, ऊना) हि.प्र. प्रारम्भ	31 अग.
सितम्बर 2022 ई.	
मेला पट्ट (कश्मीर) प्रारम्भ	1 सितं.
श्रीगर्गाचार्य जयन्ती	1 सितं.
मेला श्रीबलदेव छठ, पलवल, हरियाणा	2 सितं.
गरुणोविन्द (छटीकारा, मथुरा) (उ.प्र.)	4 सितं.
ब. भा. दित्तसिंह ज्ञानी, नन्दपुर-कलौड़ (पं.)	6 सितं.
श्रीवामन द्वादशी (अम्बाला, पटियाला)	7 सितं.
बाबा सोढल (जालन्धर)	9 सितं.
छपार (पं.)	9 सितं.
श्रीगोईंदवाल साहिब (तरनतारन) पं.	10 सितं.
श्री आशापति यात्रा (कश्मीर) प्रा.	24 सितं.
अक्तूबर 2022 ई.	
श्रीज्वालामुखी (हि.प्र.)	3 अक्तू.
श्रीतारादेवी (हि.प्र.)	3 अक्तू.
ज्वालामुखी (हरचोवाल, गुरदासपुर) पं.	3 अक्तू.
दशहरा (कुल्लू) प्रा.	5 अक्तू.
श्रीशाकम्भरी देवी (उ.प्र.)	8 अक्तू.
मेला माता नयनादेवी, दाचर (करनाल)	8 अक्तू.
देवीमेला हथीहरा (कुरुक्षेत्र)	8 अक्तू.

नाम मेला/पर्व (सन् 2022 ई.)	तारीख
पर्वत मेला (मण्डी-हि.प्र.)	18 अक्तू.
भण्डारा श्री हरिओम् जी (माणकपुर शरीफ)	20 अक्तू.
ब. सं. बा. गुरुचरण सिंह जी, गु. अमरगढ़साहिब, श्रीचमकौरसाहिब	24 अक्तू.
दीपावली (अमृतसर)	24 अक्तू.
नवंबर 2022 ई.	
रेणुका (नाहन) हि.प्र.	4 नवं.
बाबा रुद्रानन्द, नारी (ऊना, हि.प्र.) प्रा.	4 नवं.
धनेश्वर मेला, सिरमौर (हि.प्र.)	4 नवं.
ज. दि. श्रीवीर वैरागी (नकोदर) (पं.)	6 नवं.
मेला बग्गीदेहरी कुण्डे लालोवाल (गुरदासपुर) प्रा.	7 नवं.
श्रीरामतीर्थ (अमृतसर-पं.)	8 नवं.
कपालमोचन (हरि.)	8 नवं.
श्रीपुष्करराज (राज.)	8 नवं.
बाल मेला	14 नवं.
पुरमण्डल, देविकास्नान (जम्मू)	22 नवं.
दिसम्बर 2022 ई.	
ब. सं. बा. रामसिंह / बूटासिंह, नानकसर चीमा	2 दिसं.
ब. सं. बा. विसाखासिंह, दुदेहर साहिब (तरनतारन)	5 दिसं.
ब. बीबी तेजकौर जी, मानपुर, फतेहगढ़ सा.	24 दिसं.
ज. दि. सं. बा. किशनसिंह जी (राड़ा सा. वाले), मसीतां (सिरसा-हरि.)	24 दिसं.
जोड़मेला श्री फतेहगढ़ साहिब, (पं.) प्रा.	26 दिसं.

नाम मेला/पर्व (सन् 2022 ई.)	तारीख
संगीत मेला बाबा हरवल्लभ (जालन्धर) प्रा.	28 दिसं.
ब. सं. बा. किशनसिंह जी, गु. कर्मसरसाहिब, राड़ासाहिब (लुधि.) प्रा.	30 दिसं.
जनवरी सन् 2023 ई.	
लोहड़ी दाऊं (मोहाली) (पं.)	14 जन.
लोहड़ी बिंदरख (रोपड़) (पं.)	14 जन.
मुक्तसर (पंजाब)	14 जन.
ब. सं. बा. अतरसिंह जी (रेरु साहिब) प्रा.	20 जन.
वसन्तपंचमी	26 जन.
ब. सं. बा. बख्शीशसिंह जी	26 जन.
ब. सं. बा. अतरसिंह जी, (मस्तुआणी) (पं.) प्रा.	30 जन.
फरवरी 2023 ई.	
ज. दि. गुरु हरराय जी, सिंहपुरा–कुराली (पं.)	3 फर.
बलिदान दिवस बाबा दीपसिंह जी शहीद सोलखियां (रोपड़-पं.)	10 फर.
श्रीमहाशिवरात्रि (मण्डी, हि.प्र.) प्रारम्भ	18 फर.
नीलकण्ठ महादेव (पौड़ी–गढ़वाल)	18 फर.
मार्च, 2023 ई.	
होला श्री आनन्दपुर साहिब (पं.)	8 मार्च
श्री गुरु रामराय (देहरादून)	12 मार्च
श्री वीरमदास, बधौछी (पटियाला)	14 मार्च
ज. दि. सं. बा. अतरसिंह जी (नानकसर चीमा) प्रा.	15 मार्च
शीतला माता (कुराली) पं.	16 मार्च
पिहोवा तीर्थ (हरियाणा)	20 मार्च

चंद्रोदय श्री गणेश-चतुर्थी एवं श्रीकृष्णजन्माष्टमी व्रत
भारत के कुछ प्रसिद्ध नगरों के लिए चंद्रोदय (सं. 2079 वि.), (भा. स्टैं. टा.)

नगर	श्री गणेशचतुर्थी																								श्रीकृष्ण-जन्माष्टमी स्मार्त्त	
	19 अप्रैल 2022 ई.		19 मई 2022 ई.		17 जून 2022 ई.		16 जुलाई 2022 ई.		15 अगस्त 2022 ई.		13 सितं 2022 ई.		13 अक्तू 2022 ई.		12 नवंबर 2022 ई.		11 दिसं 2022 ई.		10 जन. 2023 ई.		9 फर. 2023 ई.		11 मार्च 2023 ई.		18 अगस्त 2022 ई.	
	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
अजमेर	21	57	23	02	22	39	21	58	21	38	20	40	20	25	20	38	20	17	20	55	21	29	22	11	23	18
अमृतसर	22	08	23	16	22	30	22	04	21	36	20	33	20	12	20	22	20	03	20	46	21	28	22	18	23	08
अलवर	21	51	22	57	22	33	21	51	21	30	20	31	20	15	20	27	20	06	20	45	21	21	22	05	23	09
अलीगढ़	21	50	22	55	22	32	22	29	21	32	20	34	20	21	20	33	20	13	20	50	21	24	22	05	23	13
अहमदाबाद	21	58	23	02	22	40	22	02	21	47	20	52	20	41	20	56	20	34	21	09	21	39	22	15	23	33
अयोध्या	21	56	22	31	22	09	21	27	21	07	20	08	19	53	20	06	19	45	20	23	20	58	21	40	22	47
आगरा	21	44	22	50	22	26	21	45	21	24	20	25	20	10	20	22	20	01	20	40	21	51	21	58	23	03
इन्दौर	21	44	22	47	22	26	21	48	21	34	20	39	20	29	20	43	20	22	20	56	21	25	22	01	23	20
इलाहाबाद	21	24	22	29	22	07	21	27	21	09	20	11	19	58	20	11	19	50	20	27	21	00	21	40	22	51
उज्जैन	21	45	22	49	22	28	21	49	21	34	20	39	20	28	20	43	20	21	20	56	21	26	22	02	23	20
उदयपुर (राज.)	21	56	23	02	22	38	21	56	21	34	20	35	20	19	20	31	20	11	20	50	21	26	22	09	23	13
ऊना	22	02	23	10	22	44	21	58	21	31	20	28	20	07	20	16	19	57	20	41	21	22	22	12	23	03
कपूरथला	22	06	23	13	22	47	22	01	21	34	20	32	20	11	20	20	20	01	20	44	21	26	22	15	23	07
करनाल	21	55	23	01	22	36	21	52	21	28	20	27	20	08	20	19	19	59	20	40	21	20	22	06	23	03
कांगड़ा	22	04	23	11	22	45	21	59	21	30	20	27	20	05	20	15	19	55	20	40	21	22	22	13	23	02
कानपुर	21	33	22	38	22	15	21	34	21	15	20	16	20	02	20	14	19	54	20	31	21	06	21	47	22	55
कुरुक्षेत्र	21	56	23	03	22	38	21	54	21	29	20	27	20	08	20	19	19	59	20	41	21	20	22	07	23	03
कुल्लू	22	00	23	07	22	42	21	55	21	27	20	24	20	02	20	12	19	52	20	36	21	19	22	09	22	59
कोटा	21	49	22	53	22	31	21	51	21	33	20	36	20	23	20	37	20	16	20	52	21	25	22	05	23	16
कोलकाता	20	51	21	54	21	34	20	56	20	42	19	47	19	37	19	52	19	30	20	04	20	33	21	09	22	29
गुरदासपुर	22	07	23	15	22	49	22	02	21	34	20	31	20	09	20	18	19	59	20	43	21	26	22	16	23	05
ग्वालियर	21	42	22	47	22	24	21	43	21	24	20	26	20	11	20	24	20	04	20	41	21	15	21	56	23	05
चण्डीगढ़	21	58	23	05	22	39	21	54	21	28	20	26	20	06	20	16	19	57	20	39	21	20	22	08	23	02
चम्बा	22	06	23	13	22	47	22	00	21	31	20	27	20	05	20	14	19	55	20	40	21	23	22	14	23	01
चूरू	22	00	23	06	22	42	21	59	21	36	20	36	20	20	20	31	20	11	20	51	21	28	22	12	23	14
चेन्नई	21	06	22	06	21	50	21	18	21	17	20	29	20	29	20	48	20	25	20	50	21	08	21	31	23	16
जम्मू	22	11	23	19	22	52	22	06	21	36	20	32	20	10	20	18	19	59	20	44	21	28	22	20	23	06
जयपुर	21	53	22	58	22	35	21	53	21	33	20	34	20	19	20	32	20	11	20	50	21	25	22	07	23	13
जालन्धर	22	06	23	13	22	47	22	02	21	35	20	32	20	11	20	21	20	02	20	45	21	27	22	16	23	07
जैसलमेर	22	13	23	19	22	55	22	14	21	53	20	55	20	40	20	52	20	32	21	10	21	45	22	27	23	33
जोधपुर	22	03	23	08	22	45	22	04	21	45	20	46	20	32	20	45	20	25	21	02	21	36	22	18	23	25
दरभंगा	21	09	22	14	21	52	21	11	20	52	19	54	19	40	19	52	19	31	20	09	20	43	21	24	22	33
दिल्ली	21	51	22	57	22	33	21	50	21	27	20	07	20	10	20	21	20	01	20	41	21	19	22	04	23	04

चंद्रोदय श्री गणेश-चतुर्थी एवं श्रीकृष्णजन्माष्टमी व्रत
भारत के कुछ प्रसिद्ध नगरों के लिए चंद्रोदय (सं. 2079 वि.), (भा. स्टैं. टा.)

श्री गणेशचतुर्थी — श्री कृष्ण-जन्माष्टमी (स्मार्त)

नगर	19 अप्रैल 2022 ई.		19 मई 2022 ई.		17 जून 2022 ई.		16 जुलाई 2022 ई.		15 अगस्त 2022 ई.		13 सितं 2022 ई.		13 अक्तू 2022 ई.		12 नवंबर 2022 ई.		11 दिसं 2022 ई.		10 जन. 2023 ई.		9 फर. 2023 ई.		11 मार्च 2023 ई.		18 अगस्त 2022 ई. (स्मार्त)	
	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
देहरादून	21	52	22	59	22	34	21	50	21	23	20	22	20	02	20	13	19	53	20	35	21	15	22	03	22	58
नाहन	21	55	23	02	22	37	21	52	21	26	20	25	20	05	20	15	19	55	20	38	21	18	22	06	23	00
पटना	21	11	22	16	21	54	21	13	20	55	19	57	19	44	19	57	19	36	20	13	20	46	21	26	22	37
पटियाला	21	59	23	05	22	40	21	56	21	30	20	29	20	09	20	20	20	00	20	42	21	22	22	10	23	04
पठानकोट	22	07	23	14	22	48	22	02	21	33	20	29	20	07	20	16	19	57	20	42	21	25	22	16	23	04
पुणे	21	43	22	45	22	26	21	51	21	42	20	50	20	45	21	02	20	33	21	09	21	33	22	04	23	34
फगवाड़ा	22	04	23	11	22	45	22	00	21	33	20	30	20	10	20	00	20	00	20	43	21	25	22	14	23	05
फिरोजपुर	22	08	23	14	22	49	22	04	21	37	20	35	20	15	20	25	20	06	20	48	21	19	22	18	23	11
बंगलौर	21	17	22	17	22	01	21	29	21	28	20	40	20	40	20	59	20	36	21	01	21	19	21	42	23	27
बरेली	21	41	22	47	22	23	21	41	21	18	20	18	20	01	20	13	19	53	20	33	21	10	21	54	22	56
बिलासपुर (हि.प्र.)	22	00	23	07	22	41	21	56	21	29	20	26	20	05	20	15	19	56	20	39	21	21	22	10	23	01
बीकानेर	22	06	23	12	22	48	22	05	21	43	20	43	20	27	20	39	20	19	20	58	21	35	22	19	23	21
बूंदी	21	50	22	55	22	33	21	52	21	34	20	37	20	23	20	37	20	16	20	53	21	26	22	06	23	16
भटिंडा	22	05	23	11	22	46	22	02	21	36	20	35	20	16	20	26	20	06	20	48	21	28	22	16	23	11
भरतपुर	21	47	22	52	22	09	21	47	21	26	20	27	20	27	20	24	20	04	20	42	21	18	22	01	23	06
भोपाल	21	37	22	41	22	20	21	42	21	26	20	31	20	20	20	35	20	13	20	48	21	18	21	55	23	12
मण्डी (हि.प्र.)	22	00	23	07	22	41	21	56	21	28	20	25	20	04	20	13	19	54	20	37	21	20	22	09	23	00
मथुरा	21	46	22	52	22	29	21	47	21	26	20	26	20	11	20	23	20	02	20	41	21	17	22	00	23	04
मुंबई	21	48	22	50	22	31	21	56	21	46	20	54	20	48	21	05	20	43	21	13	21	38	22	09	23	38
रोपड़	22	00	23	07	22	41	21	56	21	30	20	27	20	07	20	17	19	58	20	41	21	21	22	10	23	03
रोहतक	21	54	23	00	22	36	21	53	21	30	20	29	20	12	20	23	20	03	20	43	21	21	22	07	23	06
लखनऊ	21	31	22	37	22	14	21	33	21	12	20	14	19	59	20	11	19	51	20	29	21	04	21	46	22	52
लुधियाना	22	02	23	09	22	44	21	59	21	32	20	30	20	10	20	20	20	00	20	43	21	24	22	13	23	06
वाराणसी	21	19	22	24	22	02	21	22	21	04	20	07	19	54	20	07	19	46	20	22	20	55	21	35	22	46
शिमला	21	57	23	04	22	39	21	54	21	27	20	24	20	04	20	14	19	54	20	37	21	19	22	07	23	00
श्रीनगर (क.)	22	15	23	24	22	56	22	08	21	36	20	31	20	06	20	14	19	55	20	42	21	28	22	22	23	04
संगरूर	22	01	23	07	22	42	21	58	21	32	20	31	20	12	20	22	20	02	20	44	21	24	22	12	23	02
सहारनपुर	21	54	23	00	22	36	22	27	21	26	20	25	20	06	20	17	19	57	20	39	21	18	21	18	23	01
सीकर	21	57	23	03	22	39	21	57	21	35	20	36	20	20	20	32	20	12	20	51	21	27	22	10	23	14
हरिद्वार	21	50	22	57	22	32	21	48	21	23	20	22	20	03	20	13	19	53	20	35	21	15	22	02	22	58
हिसार	21	59	23	05	22	40	21	57	21	33	20	32	20	15	20	26	20	06	20	47	21	25	22	11	23	09
होशियारपुर	22	03	23	10	22	45	21	59	21	32	20	29	20	09	20	18	19	58	20	42	21	24	22	13	23	04

संदिग्ध व्रतपर्व-व्यवस्था (सं. 2079 वि.)

(संवत्सर 2079 वि. में संदिग्ध कुछेक व्रत-पर्वों की तिथियों का शास्त्रसम्मत निर्णय)

(सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)

1. श्री(लक्ष्मी)पंचमी (चैत्र शुक्ल पंचमी)

यह व्रत चतुर्थीविद्धा चैत्र शुक्ल पंचमी को किया जाता है। धर्मशास्त्र का निर्णय है कि-स्कन्दव्रत के अतिरिक्त सभी व्रतों में पंचमी चतुर्थीविद्धा ही ली जाए-"**सा (पंचमी) च स्कन्दोपवासातिरिक्तोपवासे पूर्व(चतुर्थी)विद्धा ग्राह्या।।**"

इस वर्ष यह पंचमी 5 अप्रैल, 2022 ई. को सायं 15 घं. 45 मि. (I.S.T.) तक विद्यमान है और चंडीगढ़ एवं इसके पार्श्ववर्ती स्थलों पर यह इसके बाद करीब-करीब 2 घ. 55 मि. तक (त्रिमुहूर्त्ताधिक) प्राप्त हो रही है। **स्पष्ट है**-यह पंचमी इसी दिन, यहां चतुर्थी से विद्धा है। **अतः हमने यह 'श्री(लक्ष्मी)पंचमी व्रत' 5 अप्रैल, 2022 ई. को लिखा है।**

नोट कर लें कि-भारत के अधिकतर भागों में जहां पंचमी 5 अप्रैल, 2022 ई. को त्रिमुहूर्त्तल्प होगी या यूं कहिए कि-जिन चण्डीगढ़ से सुदूरवर्ती प्रदेशों में सूर्यास्त 18घं. 09 मि. से पूर्व ही हो जाएगा, वहां यह पंचमी त्रिमुहूर्त्तल्पा यानी छः घड़ी से कम होने से चतुर्थीविद्धा न होने के कारण 5 अप्रैल, 2022 को नहीं मनाई जा सकती। इस स्थिति में यह **श्री(लक्ष्मी)पंचमी वहां 6 अप्रैल, 2022 को होगी—यह स्पष्ट है।**

2. कामदा एकादशी व्रत (स्मार्त्त) (चैत्र शुक्ल एकादशी)

इस वर्ष चण्डीगढ़ एवं इसके समीपवर्ती स्थलों पर यह एकादशी 12 अप्रैल, 2022 ई. को अरुणोदय में दशमीद्वारा विद्ध है। **इस स्थिति में यहां स्मार्त्तों द्वारा इसी दिन (12 अप्रैल, 2022 को) और वैष्णवों द्वारा अगले दिन (13 अप्रैल, 2022 ई.) को यह एकादशी मनाई जाएगी**, क्योंकि स्मार्त्तों को अरुणोदय में दशमीवेध त्याज्य नहीं है, जबकि वैष्णवों द्वारा यह वेध त्याज्य है।

हालांकि चण्डीगढ़ से पश्चिमवर्त्ती प्रदेशों/नगरों में जहां अरुणोदय में दशमीद्वारा एकादशी वेध न होगा, वहां यह एकादशी व्रत स्मार्त्त एवम् वैष्णव-दोनों सम्प्रदायों के लोगों द्वारा 13 अप्रैल, 2022 को ही मनाया जाएगा। **स्पष्ट है**—चण्डीगढ़ से कुछ दूरवर्ती प्रदेशों/नगरों पंजाब के कुछेक शहरों को छोड़ लगभग सभी स्थलों/नगरों व राजस्थान, जम्मू-कश्मीर आदि के अधिकतर भागों में यह एकादशी 13 अप्रैल, 2022 को-दोनों (स्मार्त्त एवं वैष्णव) सम्प्रदायों के लोगों द्वारा मनाई जाएगी। जबकि कोलकाता, विशाखापट्टनम्, मद्रास आदि में और अरुणाचल, आसाम, मेघालय, मणिपुर आदि राज्यों में यह पर्व स्मार्त्तों द्वारा 12 अप्रैल, 2022 को और वैष्णवों द्वारा 13 अप्रैल, 2022 को मनाया जाएगा।

स्पष्ट कर दें कि-हरियाणा, दिल्ली, उत्तर प्रदेश के कुछ भागों में 12 अप्रैल को स्मार्त्तों और 13 अप्रैल को वैष्णवों द्वारा व्रत वाली स्थिति (चण्डीगढ़ जैसी स्थिति) रहेगी, जबकि इन प्रदेशों के कुछ भागों में भी यह व्रत 13 अप्रैल, 2022 को ही दोनों (स्मार्त्त-वैष्णव) सम्प्रदायों के लोगों को मनाना होगा।

3. वृषार्क-प्रवेश (सूर्य का वृषराशि में प्रवेश)

सूर्य की यह वृष संक्रांति इस वर्ष 15 मई, 2022 ई. को 5 घं. 29 मि. भा. स्टैं. टा. पर लग रही है। चण्डीगढ़ में क्योंकि इस दिन सूर्योदय 5 घ. 32 मि. पर है। **अतः यह संक्रांति पिछली तारीख (14 मई, 2022 ई.) में 29 घं. 29 मि. पर दिखानी पड़ी।** क्योंकि पंजाब, हरियाणा, हि.प्र., दिल्ली आदि में परम्परा है कि-सूर्योदय से यत्किंचित् (थोड़ा-सा) पूर्व भी यदि संक्रान्ति प्रवेशकाल हो तो उसे पूर्ववर्ती तारीख में ही प्रदर्शित किया जाता है।

ध्यान रहे—चण्डीगढ़ के समीपवर्ती राज्यों दिल्ली, राजस्थान, हि.प्र., हरियाणा, ज. क. आदि में भी यह संक्रांति 14 मई को ही होगी। जबकि उत्तर प्रदेश, बंगाल, मेघालय, मणिपुर, मिजोरम आदि में यह 15 मई, 2022 को लिखी जाएगी। **सामान्य बात यह है कि**-15 मई, 2022 ई. को जिन प्रदेशों में सूर्योदय 5 घं. 29 मि. पर या इससे भी पहले होगा, उन प्रदेशों में यह संक्रांति 15-5-'22 को और जिन नगरों में सूर्योदय 5 घं. 29 मि. के बाद होगा, वहां यह संक्रांति 14-5-'22 ई. को होगी। **स्पष्ट है**—ऐसी

स्थिति में सौरमास ज्येष्ठ की तारीखों (प्रविष्टों) में भारत के विभिन्न प्रदेशों में अन्तर देखने को मिलेगा, जिससे अनेकदा मुहूर्त्तादि भी प्रभावित (अंतरित) होते देखे जा सकते हैं।

यहां यह भी बता देना ठीक समझते हैं कि-दक्षिण भारतीय प्रदेशों में यह संक्रान्ति जिस तारीख में होती है, उसी तारीख में लिखी जाती है। वहां इसे पिछली तारीख में लिखने की परम्परा नहीं है।

4. श्रीगंगा दशहरा (ज्येष्ठ शुक्ल दशमी)

पूर्वाह्णव्यापिनी ज्येष्ठ शुक्ल दशमी के दिन **गंगादशहरा** मनाया जाता है। इसवर्ष 10 जून, 2022 ई. को दशमी केवल 7 घं. 26मि. तक ही विद्यमान है और 9 जून, '22 को यह दशमी 8घं. 22 मि. बाद सारा दिन विद्यमान रहेगी। **स्पष्ट है**-पहले दिन यानी 9 जून, '22 ई. को यह पूर्ण पूर्वाह्ण को व्याप्त करेगी। **इस दिन इस पर्व के निर्णायक 10 योगों की अधिकायत भी है। इन दस योगों में से ज्येष्ठ मास, शुक्ल पक्ष, दशमी तिथि, हस्त नक्षत्र, व्यतीपात योग, कन्यास्थ चन्द्र और वृषस्थ रवि-ये इस पर्व के निर्णायक सात योग 9 जून, '22 ई. को मिल रहे हैं। स्पष्ट है—यह पर्व (श्रीगंगादशहरा) सम्पूर्ण भारत में 9 जून, 2022 ई. को ही मनाया जाएगा।**

5. निर्जला एकादशीव्रत स्मार्त्त (ज्येष्ठ शुक्ल एकादशी)

इस वर्ष 10 जून, 2022 ई. को एकादशी दशमीविद्धा है और अगले दिन यानी 11 जून, 2022 ई. को एकादशी द्वादशीयुता है। इसदिन द्वादशी का क्षय भी है। अत: त्रयोदशी का योग भी बन रहा है।

द्वादशी का क्षय हो जाने पर स्मार्त्तों को सूर्योदय-वेधवती दशमी के दिन एवम् वैष्णवों को द्वादशी/त्रयोदशीयुता एकादशी के दिन यह व्रत करना चाहिए, ऐसा शास्त्र-निर्णय है–

"एकादशी द्वादशी च रात्रिशेषे त्रयोदशी।
त्र्यहःस्पृक् तदहोरात्रं नोपोष्यं तत्सुतार्थिभिः।।"

स्पष्ट है—इस नियम अनुसार स्मार्त्त लोग दशमीयुता एकादशी के दिन 10 जून, 2022 ई. को और वैष्णव लोग द्वादशी-त्रयोदशीयुता एकादशी के दिन 11 जून, 2022 ई. को यह (निर्जला एकादशी) व्रत करेंगे।

6. श्रीसत्यनारायण व्रत (ज्येष्ठ शुक्ल)

यह व्रत प्रत्येक चान्द्रमास के शुक्लपक्ष की प्रदोषव्यापिनी पूर्णिमा में किया जाता है हालांकि कोई भी व्यक्ति इसे स्वेच्छया अन्य किसी भी दिन, किसी भी प्रदोषव्यापिनी तिथि में कर सकता है-ऐसा भी पुराणवाक्य है। लेकिन अधिकतर लोग इस व्रत को परम्परया प्रदोषव्यापिनी पूर्णिमा वाले दिन ही करते हैं।

यह नक्त व्रत है। अत: इसकी तिथि का निर्णय नक्तव्रत के समान ही किया जाएगा। इस वर्ष ज्येष्ठ शुक्ल पूर्णिमा 13 जून, 2022 ई. को ही आंशिक रूप से प्रदोषव्यापिनी है। इस दिन चण्डीगढ़ में प्रदोष 19 घं. 22 मि. से 21 घं. 22 मि. तक है। 13 जून, 2022 ई. को 21 घं. 3 मि. बाद प्रदोष में यह पूर्णिमा केवल 19 मिनट के लिए हमारे पंचांगस्थल चण्डीगढ़ में मिल रही है। **अत: हमने यह श्री सत्यनारायण व्रत 13 जून, 2022 ई. को लिखा है, जोकि पूर्णत: शास्त्रसम्पत है।**

पंजाब, हरि., हि.प्र., ज. क. आदि प्रदेशों में यह व्रत 13 जून, 2022 ई. को ही होगा, जबकि जिन सुदूरवर्ती प्रदेशों में प्रदोष 21 घं. 3 मि. से पूर्व ही समाप्त हो जाएगा, वहां यह व्रत दूसरे दिन यानी 14 जून, 2022 ई. को सायाह्नव्यापिनी प्रदोषकालिक (गौण प्रदोषकालीन) पूर्णिमा में ही होगा–यह स्पष्ट है।

7. अशून्य शयन व्रत (श्रावण कृष्ण द्वितीया)

चन्द्रोदयव्यापिनी श्रावणकृष्ण द्वितीया को यह (अशून्य शयन) व्रत होता है। 14 जुला., 2022 ई. को यह (द्वितीया) तिथि चन्द्रोदयव्यापिनी है, जबकि 15 जुला., 2022 को यह तिथि चन्द्रोदय से पहले (दिन में) ही 16घं. 39 मि. पर समाप्त हो जाती है। **अत: यह व्रत हमने 14 जुला., 2022 ई. को लिखा है, जोकि सर्वथा शास्त्रसम्मत है।**

8. ऋक् उपाकर्म (श्रावणी पूर्णिमा)

ऋग्वेदियों के इस उपाकर्म (ऋक् उपाकर्म) के तीन काल हैं–

(i) श्रावण शुक्ल में श्रवण नक्षत्र।

(ii) श्रावण शुक्ल पंचमी।

(iii) श्रावण शुक्लान्तर्गत हस्त नक्षत्र।

इनमें श्रवण नक्षत्र इनके उपाकर्म का मुख्यकाल है। श्रवण नक्षत्र उत्तराषाढ़ा से

अविद्ध (अस्पृष्ट) हो, संक्रान्ति/ग्रहण से अदूषित हो, पूर्वाह्ण में हो, तब यह उपाकर्म किया जाता है।

इस वर्ष श्रावण पूर्णिमा 12 अगस्त को अल्पकालिनी है अर्थात् इसदिन यह त्रिमुहूर्त्ता नहीं है। भले ही यहां इसदिन धनिष्ठायोग है, जो इस उपाकर्म का प्रशस्त्याधायक भी माना गया है, लेकिन इसके लिए त्रिमुहूर्त्त श्रवण भी यहां होना चाहिए, जोकि इस दिन नहीं है। अत: इस दिन यह उपाकर्म नहीं हो सकता।

11 अग. को श्रवण उ. षा. से विद्धा (स्पृष्ट) है। अत: इस दिन भी यह उपाकर्म सम्भव नहीं।

अब श्रावण शुक्ल पंचमी, जो 2 अग. 2022 को पूर्ण पूर्वाह्ण को व्याप्त कर रही है, सर्वथा निर्दोष है और इस उपाकर्म के लिए उपयुक्त काल है। **अत: हमने यह उपाकर्म (ऋक् उपाकर्म) इसीदिन (2 अग., 2022 ई. को ही) लिखा है।**

हालांकि 3 अग., 2022 ई. को पूर्वाह्णव्यापी हस्त में भी यह उपाकर्म किया जा सकता है। अत: अपनी-अपनी सुविधानुसार 2 एवं 3 अग. 2022 ई. को आप किसी भी दिन '**ऋक् उपाकर्म**' नि:शंक कर सकते हैं।

9. शुक्ल-कृष्ण-यजु उपाकर्म

सभी (शुक्ल एवम् कृष्ण) यजुर्वेदियों के उपाकर्म के तीन काल हैं- (i) श्रावण पूर्णिमा, (ii) श्रावण शुक्ल पंचमी, (iii) श्रावण शुक्ल में हस्त नक्षत्र।

इनमें भी इनके उपाकर्म का मुख्य काल श्रावणी पूर्णिमा है, बशर्ते कि वह पूर्णिमा ग्रहण-संक्रान्ति से सर्वथा अदूषित हो।

पूर्णिमा यदि कुछ मुहूर्त्त बाद प्रारम्भ होकर दूसरे दिन छ: घटीव्यापिनी (त्रिमुहूर्त्ता) हो तो सभी (शुक्ल एवं कृष्ण) यजुर्वेदियों का उपाकर्म दूसरे ही दिन होता है। पूर्णिमा जब शुद्धाधिका होकर दोनों दिन सूर्योदयव्यापिनी हो तो सभी यजुर्वेदी उपाकर्म पहले दिन करते हैं। यदि पूर्णिमा पहले दिन एक मुहूर्त्त या इससे अधिक काल बाद प्रारम्भ होकर दूसरे दिन 3 मुहूर्त्त से अधिक और 6मुहूर्त्त से कम हो तो कृष्ण यजुर्वेदी दूसरे दिन और शुक्ल यजुर्वेदी पहले दिन इस उपाकर्म को करते हैं। यदि पहले दिन कुछ मुहूर्त्त बाद पूर्णिमा प्रारम्भ होकर दूसरे दिन तीन मुहूर्त्त से कम हो अथवा इसका क्षय हो जाने पर दूसरे दिन को स्पर्श ही न करे तो सभी यजुर्वेदियों का उपाकर्म पहले ही दिन होता है।

इस वर्ष पूर्णिमा पहले दिन (11 अग., 2022 ई. को) कुछ मुहूर्त्त बाद शुरु हो रही है और दूसरे दिन यानी 12 अग., 2022 ई. को यह त्रिमुहूर्त्ताल्पा है। **अत: उपरोक्त नियमानुसार सभी (शुक्ल एवं कृष्ण) यजुर्वेदियों का यह उपाकर्म (शुक्ल-कृष्ण यजु उपाकर्म) पहले दिन यानी 11 अग., 2022 ई. को ही होगा-यह स्पष्ट है।**

10. रक्षाबन्धन (श्रावणी पूर्णिमा)

अपराह्णव्यापिनी श्रावण पूर्णिमा में रक्षाबन्धन किया जाता है। भद्रा में यह नहीं होता-''भद्रायां द्वे न कर्त्तव्ये श्रावणी फाल्गुनी तथा।''

जब पहले दिन अपराह्ण में भद्रा हो, दूसरे दिन पूर्णिमा मुहूर्त्तत्रयव्यापिनी हो और भले ही वह अपराह्ण से पूर्व ही समाप्त हो जाए, तब रक्षाबन्धन दूसरे ही दिन अपराह्ण में करना चाहिए, क्योंकि उस समय वहां साकल्यापादित पूर्णिमा का अस्तित्व होता ही है। इस बारे 'पुरुषार्थचिन्तामणिकार' का यह वचन विशेष प्रमाण है-**''यदा द्वितीयापराह्णात् पूर्वं समाप्ता, तदापि 'भद्रायां द्वे न कर्त्तव्ये' .... इति भद्रायां निषेधादुत्तरैव। तत्र तिथ्यनुरोधेन अपराह्णात्पूर्वम् अनुष्ठाने अपराहणस्य सर्वथा बाधापत्तेः, अपराह्णे ज्योतिश्शास्त्रप्रसिद्ध-तिथ्यभावेऽपि साकल्य-बोधित-तिथि-सत्त्वात्तत्रैव अनुष्ठानम्।''**

जब दूसरे दिन पूर्णिमा मुहूर्त्तत्रयव्यापिनी नहीं होगी, तब अपराह्न में साकल्यापादित पूर्णिमा भी नहीं होगी-यह स्पष्ट है। **ऐसी स्थिति में पहले ही दिन प्रदोष के उत्तरार्ध में अथवा भद्रा की समाप्ति पर रक्षाबन्धन करना चाहिए-यही शास्त्रादेश है। इस बारे 'पुरुषार्थ चिन्तामणि' का यह वाक्य देखिए-''यदा तूत्तरत्र मुहूर्तद्वय (त्रय) मध्ये किंचित् न्यूना पौर्णमासी तदापराह्णे सर्वथा तदभावात्, प्रदोष-पश्चिमौ-यामौ दिनवत् कर्म चाचरेत्, इति पराशरात् भद्रान्ते प्रदोषयामेऽनुष्ठानम्।''**

पंजाब आदि अनेक प्रान्तों में परम्परया रक्षाबन्धन के लिए अपराह्न को स्वीकार नहीं किया जाता और मध्याह्न से पूर्व ही (विशेषतया प्रात:काल ही) रक्षाबन्धन कर लिया जाता है। लेकिन यह शास्त्रानुमोदित नहीं है और भद्रा में तो रक्षाबन्धन शास्त्रों द्वारा वर्जित माना गया है।

ध्यान रहे-ग्रहणवेध (सूतक) तथा संक्रान्तिदिन में यह निर्बाध मनाया जाता है।

इस वर्ष 11 अग., 2022 ई. को अपराह्नव्यापिनी श्रावण पूर्णिमा भद्रा से दूषित है।

इस वर्ष इस दिन (11-8-'22 को) प्रातः 10 घं. 39 मि. तक चतुर्दशी है। चतुर्दशी में रक्षाबन्धन नहीं होता। तदनन्तर इसदिन भद्रा 10 घं. 39 मि. से 20 घं. 52 मि. तक है। दूसरे दिन 12 अग., 2022 ई. को पूर्णिमा त्रिमुहूर्त्ताल्पा है। अतः 12 अग., 2022 ई. को रक्षाबन्धन किसी भी स्थिति में नहीं हो सकता।

स्पष्ट है—पहले दिन 11 अग., 2022 को ही प्रदोषोतरार्ध में अथवा भद्रोपरान्त रक्षाबन्धन होगा। इस दिन (11 अग., 2022 ई. को) प्रदोषकाल चंडीगढ़ व आस-पास के प्रदेशों/नगरों में लगभग 19 घं. 05 मि. से 21 गं. 14 मि. तक है। प्रदोष-उत्तरार्ध इस दिन 20 घं. 09 मि. बाद होगा। इसके बाद ही रक्षाबन्धन किया जाए। अथवा भद्रोपरान्त यानी 20 घं. 52 मि. के बाद ही रक्षाबन्धन करें। लेकिन ध्यान रहे-इसे निशीथ से पूर्व अवश्य ही कर लें।

11. अजा एकादशी व्रत (स.) (भाद्र. कृष्ण एकादशी)

इस वर्ष भाद्र. कृष्ण एकादशी की वृद्धि है। एकादशी की वृद्धि होने पर स्मार्त्त एवं वैष्णव-दोनों संप्रदायों के लोग षष्टिघट्यात्मक एकादशी को भी छोड़कर द्वादशीयुता एकादशी के दिन व्रत करते हैं। **इस नियमानुसार इस वर्ष हमने यह अजा एकादशी व्रत दोनों स्मार्त्त एवम् वैष्णव संप्रदाय के लोगों के लिए 23 अगस्त, 2022 ई. को लिखा है, जोकि पूर्णतः शास्त्रसम्मत है।**

12. दूर्वाष्टमी व्रत (भाद्र. शुक्ल अष्टमी)

यह व्रत स्त्रियों द्वारा रौहिण (दिन के नवम) मुहूर्त्त में भाद्र. शुक्ल अष्टमी के दिन किया जाता है। ध्यान रहे—रौहिण मुहूर्त्त के समय ज्येष्ठा/मूल नक्षत्र न हों। हालांकि इन दोनों नक्षत्रों का वर्जन कर पाना यदि असम्भव हो तो इनके सम्पर्क में भी यह व्रत किया जा सकता है। अगस्त्य तारा के उदय (रात्रि में दृश्य) हो जाने पर इस व्रत का सर्वथा निषेध है। कन्यार्क में भी यह व्रत नहीं होता। सिंहस्थ सूर्य के काल में इस व्रत के अनुष्ठान को शास्त्रकारों ने महत्त्व दिया है—

> ''शुक्ले भाद्रपदे मासि दूर्वा-संज्ञा तु साष्टमी।
> सिंहार्के एव कर्त्तव्या न कन्यार्के कदाचन।।
> सिंहस्थे सोत्तमा सूर्येऽनुदिते मुनिसतमे।''
>
> —(स्कन्द)

यदि भाद्र. शुक्ल अष्टमी से पहले ही अगस्त्य दृश्य हो जाए, अर्थात् रात्रि के समय आकाश में दिखाई देने लगे तो शास्त्रकारों का कथन है कि-ऐसी स्थिति में भाद्रपद शुक्ल से निरन्तर पूर्ववर्त्ती ऐसी अन्य रौहिणव्यापिनी किसी भी कृष्ण या शुक्लपक्ष की अष्टमी के दिन यह व्रत करना चाहिए, जबकि अगस्त्य तारा अस्त (अदृश्य) हो। यह भी ध्यान रखने की जरूरत है कि-शुक्लाष्टमी हालांकि परविद्धा ली जाती है, लेकिन इस (दूर्वाष्टमी) व्रत में इसे पूर्वविद्धा ही लेने का निर्देश है—

> **''श्रावणी दुर्गनवमी तथा दूर्वाष्टमी तिथिः।
> पूर्वविद्धैव कर्त्तव्या शिवरात्रिर्बलेर्दिनम्।।''**
>
> —(पद्मपुराण)

'कालमधवकार' भी इसी मत का समर्थन करते हैं—''दूर्वाष्टमी तु शुक्लाऽपि पूर्वविद्धा विधीयते।''

इस वर्ष 3 सितं., 2022 ई. को भाद्र. शुक्ल अष्टमी दिन में रौहिण (नवम) मुहूर्त्तव्यापिनी है और इस दिन अगस्त्य तारा अस्त है। यह अगस्त्य तारा 30°–30′ से 37° उत्तर अक्षांशीय स्थलों पर 3 सितं., 2022 ई. से या इसके बाद रात्रि में आकाश में दिखाई देना प्रारम्भ होगा। इस दिन 3 सितं., 2022 ई. को (भाद्र. शुक्लाष्टमी के दिन) दिन में चंडीगढ़ व इसके पार्श्ववर्त्ती स्थलों पर अगस्त्य तारा अदृश्य रहेगा और इसदिन ज्येष्ठा/मूल नक्षत्र एवम् कन्यार्क का भी पूर्णतः अभाव है। **अतः 3 सितं., 2022 ई. को इस वर्ष हमने 'दूर्वाष्टमी' व्रत लिखा है, जोकि पूर्णतः शास्त्रसम्मत है।**

मैं यहां यह भी बता देना उचित समझता हूँ कि-30°–30′ उत्तर अक्षांशीय स्थलों एवम् इससे पर(उत्तर)वर्त्ती (बाद वाले) 37° उत्तर अक्षांश तक बसे सभी स्थलों/नगरों में अगस्त्य उदय, जहां 3 सितं., 2022 ई. को या इसके बाद होगा, वहां **दूर्वाष्टमी व्रत 3 सितं., 2022 को ही होगा**। जबकि 23°–30′ से 30° उत्तर अक्षांशीय स्थलों/नगरों में, जहां अगस्त्य उदय 2 सितं., '22 को या इससे भी पहले हो जाएगा, वहां यह दूर्वाष्टमी व्रत 19 अग., '22 ई. को होगा। 16°–30′ से 23° उत्तर अक्षांशीय स्थलों पर, जहां अगस्त्योदय 18अगस्त को या इससे भी पहले हो जाएगा, वहां यह व्रत यह 5 अग., 2022 ई. को होगा। ठीक इसी तरह 8° से 16° उत्तर-अक्षांशीय स्थलों पर, जहां अगस्त्य उदय 4 अग. को या इससे भी पूर्व हो जाएगा, वहां यह **'दूर्वाष्टमी व्रत'** 20 जुलाई, 2022 ई. को होगा।

भारत के किन-किन अक्षांशस्थलों पर दूर्वाष्टमी व्रत इस वर्ष किस-किस तारीख को होगा, एक ही नज़र में इस तरह जानिए–

अक्षांश	दूर्वाष्टमी व्रत–तारीख
8° से 16° उत्तर	20 जुला., 2022 ई.
16°-30′ से 23° उत्तर	5 अग., 2022 ई.
23°-30′ से 30° उत्तर	19 अग., 2022 ई.
30°-30′ से 37° उत्तर	3 सितं., 2022 ई.

ध्यान रहे–मध्य एवं दक्षिण भारत के अधिकतर स्थलों पर अगस्त्यास्त के समय सूर्य कर्कस्थ होता है। इन स्थलों पर 'दूर्वाष्टमी व्रत' के लिए केवल 'अगस्त्यास्त-काल' को ही निर्णायक माना जाता है। वहां सिंहस्थ सूर्य उपेक्ष्य है, क्योंकि इस व्रत का निर्णायक वस्तुतः अगस्यास्त ही है, सिंहस्थ सूर्य तो महत्त्वाधायक मात्र है।

13. श्रीराधाष्टमी (भाद्र. शुक्ल अष्टमी)

मध्याह्नव्यापिनी भाद्र. शुक्ल अष्टमी के दिन '**राधाष्टमी व्रत**' किया जाता है। इस वर्ष यह अष्टमी 3 सितं., 2022 ई. को 12 घं. 28 मि. से 4 सितं., 2022 ई. को 10 घं. 40 मि. तक विद्यमान है।

क्योंकि 4 सितं. 2022 ई. को यह अष्टमी मध्याह्नारम्भ से पूर्व ही समाप्त हो जाती है और 3 सितं., 2022 ई. को यह पूर्ण मध्याह्नव्यापिनी है। इस दिन मध्याह्न 11 घं. 7 मि. से 13 घं. 38मि. तक है।

स्पष्ट है–यह व्रत 3 सितं., '22 ई. को ही होगा।

14. प्रतिपदा का श्राद्ध (आश्विन कृष्ण प्रतिपदा)

आश्विन कृष्णपक्ष पितृपक्ष कहलाता है। दिवंगत व्यक्तियों की मृत्युतिथियों के अनुसार इस पक्ष में उनका श्राद्ध पार्वणपद्धति से किया जाता है। पार्वणपद्धति से किए जाने वाले सभी श्राद्ध अपराह्णव्यापिनी मृत्युतिथि में किए जाएं, यही शास्त्रनिर्णय है।

इस वर्ष 11 सितं., '22 ई. को प्रतिपदा अपराह्णारम्भ से पूर्व 13 घं. 15 मि. पर ही समाप्त हो जाती है, अतः इसदिन यह श्राद्ध नहीं हो सकता। 10 सितं., 2022 ई. को 13 घं. 34 मि. से 16घं. 2 मि. तक अपराह्णकाल रहेगा और इसी दिन यानी 10 सितं., 2022 ई. को यह प्रतिपदा-तिथि अपराह्णकाल को व्याप्त कर रही है। **स्पष्ट है–इस वर्ष यह 'प्रतिपदा का श्राद्ध' 10 सितं., 2022 ई. को ही होगा।**

15. अष्टमी का श्राद्ध (आश्विन कृष्ण अष्टमी)

इस वर्ष आश्विन कृष्ण अष्टमी 17 और 18 सितं., 2022 ई. को दोनों दिन अपराह्णव्यापिनी है। 17 सितं., 2022 ई. को 13 घं. 29 मि. से 15 घं. 56मि. तक अपराह्णकाल है और इसदिन यह तिथि 14 घं. 14 मि. के बाद प्रारम्भ होकर अपराह्ण को व्याप्त करेगी। लेकिन अगले दिन 18 सितं., 2022 ई. को यह अष्टमी-तिथि पूर्ण अपराह्णव्यापिनी है। 18 सितं., 2022 को अपराह्णकाल 13 घं. 29 मि. से 15 घं. 55 मि. तक है।

दोनों दिन यह तिथि असमानान्तर से अपराह्णव्यापिनी होने से अधिक (पूर्ण) व्याप्ति वाले दिन यानी **18 सितं. 2022 ई. को हमने यह 'अष्टमी का श्राद्ध' लिखा है।**

[नोट–क्योंकि 17 सितं. 2022 ई. को कोई भी तिथि (न सप्तमी और न ही अष्टमी) श्राद्ध-नियमानुसार पर्याप्त अपराह्णव्यापिनी नहीं है, अतः इसदिन कोई भी तिथिश्राद्ध नहीं होगा।]

16. दशहरा(विजयादशमी) (आश्विन शुक्ल दशमी)

अपराह्णव्यापिनी आश्विन शुक्ल दशमी के दिन '**विजयादशमी**' (**दशहरा**) मनाई जाती है। अपराह्ण में श्रवण नक्षत्र इसकी तिथि के निर्णय का प्रमुख प्रयोजक है। इस वर्ष दशमी 4 अक्तू., 2022 ई. को अपराह्णव्यापिनी है और 5 अक्तू. को दशमी अपराह्ण से पहले ही 12 घं. 0 मि. पर समाप्त हो जाती है और इस दिन अपराह्ण 13 घं. 20 मि. के बाद पड़ता है। यहां श्रवण नक्षत्र केवल 5 अक्तू., 2022 ई. को ही अपराह्ण में विद्यमान है।

इस स्थिति में कि यदि दशमी पहले दिन अपराह्णव्यापिनी हो और दूसरे दिन वह कम से कम त्रिमुहूर्त्त को व्याप्त करे एवम् केवल दूसरे दिन ही श्रवण अपराह्ण में हो तो विजयादशमी दूसरे दिन ही मनाई जाए–ऐसा शास्त्रनिर्णय है।

अतः उपरोक्त इस नियम अनुसार हमने इस वर्ष 'विजयादशमी' 5 अक्तू., 2022 ई. को लिखी है, जोकि सर्वथा शास्त्रसम्मत है।

17. प्रदोषव्रत (कार्त्तिक कृष्णपक्ष)

यह नक्तव्रत है। प्रत्येक चान्द्रमास के प्रत्येक पक्ष की प्रदोषव्यापिनी त्रयोदशी में यह व्रत किया जाता है। इसवर्ष 22 एवम् 23 अक्तू., 2022 ई. को दोनों दिन यह त्रयोदशी तिथि प्रदोषव्यापिनी है।

दोनों दिन प्रदोष में त्रयोदशी की आंशिक या सम्पूर्ण व्याप्ति अथवा अव्याप्ति की स्थिति में यह व्रत दूसरे ही दिन होता है। **इस बारे 'कालमाधवकार' का यह वचन देखिए–**

''प्रदोषव्यापिनी नक्ते तिथिः व्याप्तिर्दिनद्वये।
अत्याप्तिर्वाथवांशेन व्याप्तिः स्यात्सर्वथोत्तरा।।''

अतः इस उपरोक्त नियमानुसार हमने कार्त्तिक कृष्णपक्ष का यह प्रदोषव्रत 23 अक्तू., 2022 ई. को लिखा है, जोकि सर्वथा शास्त्रसम्मत है।

18. दीपावली

प्रदोष(सूर्यास्त के बाद त्रिमुहूर्त्त)व्यापिनी कार्त्तिक अमा के दिन '**दीपावली**' मनाने की शास्त्राज्ञा है। इसदिन प्रदोष में लोग '**श्रीमहालक्ष्मीपूजन**' करते हैं।

इसवर्ष अमा 24 और 25 अक्तू., 2022 ई. को दो दिन विद्यमान है। लेकिन 25 अक्तू. को यह अमा प्रदोषारम्भ (17 घं. 37 मि.) से पूर्व ही 16घं. 18मि. पर (दिन में ही) समाप्त हो रही है, जबकि 24 अक्तू., 2022 ई. को यह अमा पूर्ण प्रदोषव्यापिनी है। **अतः इसी दिन हमने 'दीपावली महापर्व' मनाने का निर्देश किया है।**

यहां मैं यह बता देना चाहता हूँ कि कुछ तथाकथित ज्योतिर्विद प्रातःकालीन चतुर्दशी देखकर उपहास करते देखे गए हैं। वे कहते हैं कि देखिए–ये बड़े पंचांगकार हैं, इन्होंने चतुर्दशी में ही दीवाली लगाई है। मैं बता दूं कि ऐसे आलोचक कर्मकाल का महत्त्व तो क्या जानेंगे ? इसके बारे में शायद जानते भी नहीं। ऐसा विगत वर्षों में हुआ है, इसलिए कहना पड़ रहा है। प्रदोषकालीन अमा को देखने की वे कोशिश ही नहीं करते।

क्योंकि हर व्रत/पर्व का निर्णायक अपना एक कर्मकाल और कुछेक विशेष नियम होते हैं। अतः सभी को इन नियमों का अच्छे से विचारकर ही किसी व्रत/पर्व का निर्णय करना चाहिए। **पुनः बता देते हैं कि–जैसाकि ऊपर लिख आए हैं, दीपावली प्रदोषव्यापिनी अमा के दिन ही मनाई जाती है, भले ही वहां दिन में चतुर्दशी ही क्यों न हो।**

ऐसी और भी अनेक बाते हैं। कई बार कई स्वयं-निर्धारित मर्मज्ञ पण्डित बिना सिर-पैर के प्रश्न कर वृथा सवाल उठाते देखे हैं। किसी की आलोचना करना हमारा ध्येय नहीं। हां, अच्छे से पठन, मनन, चिन्तन कर ही प्रश्न करें–यही बताने का प्रयास है। ऐसा करने पर शायद प्रश्न करने की ज़रूरत ही नहीं पड़ेगी और स्वयं की विशेष ज्ञानोपलब्धि भी अवश्य हो ही जाएगी–यही परामर्श है।

19. भाई दूज (कार्त्तिक शुक्ल द्वितीया)

धर्मशास्त्रानुसार अपराह्णव्यापिनी कार्त्तिक शुक्ल द्वितीया के दिन '**भाई दूज**' मनाई जाती है। क्योंकि यमुना ने इसदिन अपने भाई यम को अपने घर बुलाकर भोजन खिलाया था। अतः उसी दिन से यह भाई दूज नामक पर्व जो '**यम द्वितीया**' के नाम से भी प्रसिद्ध है, मनाया जाने लगा। **स्पष्ट है**–यम द्वितीया और भाई दूज-ये भिन्न न होकर एक ही हैं और यमद्वितीया-निर्धारक नियमों के अनुसार भाई दूज पर्व अपराह्णव्यापिनी कार्त्तिक शुक्ल द्वितीया में ही मनाया जाए, यही शास्त्राज्ञा है –

''ऊर्जे शुक्लद्वितीयायामपराह्णेऽर्चयेद् यमम्।'' –(स्कन्दपुराण)

इसवर्ष 26और 27 अक्तू., 2022 ई. को दो दिन द्वितीया विद्यमान है। इन दिनों अपराह्ण लगभग 13 घं. 11 मि. से 15 घं. 24 मि. तक रहेगा। 27 अक्तू., 2022 ई. को द्वितीया अपराह्णारम्भ (13 घ. 11 मि.) से पूर्व ही 12 घं. 45 मि. पर समाप्त हो जाती है और 26अक्तू., 2022 ई. को यह 14 घं. 42 मि. के बाद समस्त अपराह्णकाल को व्याप्त कर रही है। **स्पष्ट है–यह 'भाईदूज' नामक पर्व 26अक्तू., 2022 ई. को ही होगा।**

20. श्रीविश्वकर्मा पूजा

कार्त्तिक शुक्ल द्वितीया (दूज) को '**श्रीविश्वकर्मा पूजन**' होता है। लेकिन अक्सर कुछ लोग परम्परया दीवाली के दूसरे दिन ही इस पर्व को मनाने लगे हैं। **इस वर्ष यह पर्व 27 अक्तू., 2022 ई. को होगा।**

21. मोक्षदा एकादशीव्रत (स्मार्त्त) (मार्ग. शुक्ल पक्ष)

सभी धर्मिष्ठ सज्जन जानते हैं कि–प्रत्येक चान्द्रमास के प्रत्येक पक्ष की एकादशी के दिन एकादशीव्रत किया जाता है।

इसवर्ष मार्गशीर्ष शुक्लपक्ष की इस एकादशी का 3 दिसं., 2022 ई. को अरुणोदय में दशमीद्वारा वेध है। इस स्थिति में जैसा कि–हम पहले भी लिख आए हैं, स्मार्त्त लोग अरुणोदय में दशमीविद्धा एकादशी के दिन व्रत करेंगे और वैष्णव लोग दूसरे दिन त्रयोदशीयुता द्वादशी के दिन यह व्रत करेंगे, क्योंकि स्मार्त्तों द्वारा अरुणोदय में दशमीवेध त्याज्य नहीं है, जबकि वैष्णव लोग अरुणोदय में दशमी के वेध को त्याज्य मानते हैं।

इस उपरोक्त नियम अनुसार इसवर्ष स्मार्त्तों का यह 'मोक्षदा एकादशी व्रत' 3 दिसं.,'22 ई. को और वैष्णवों का 4 दिसं.,'22 ई. को होगा।

22. श्रीगणेशचतुर्थी व्रत (पौष कृष्ण)

यह व्रत प्रत्येक मास के कृष्ण पक्ष की चन्द्रोदयव्यापिनी चतुर्थी में किया जाता है। यदि चतुर्थी दो दिन चन्द्रोदयव्यापिनी हो तो इसे पहले दिन (तृतीयायुता चतुर्थी में) मनाया जाता है। चतुर्थी यदि दो दिन चन्द्रोदयव्यापिनी न हो तब यह व्रत दूसरे दिन होता है।

इस वर्ष 11 और 12 दिसं., 2022 ई. को दो दिन यह चतुर्थी चन्द्रोदयव्यापिनी है। अतः उपरोक्त नियमानुसार यह श्रीगणेशचतुर्थी व्रत 11 दिसं., 2022 ई. को ही होगा, क्योंकि इसी दिन यह चतुर्थी पूर्व(तृतीया)युता है–

''उभयदिने चन्द्रोदयव्यापित्वे तृतीयायुतैव ग्राह्या।''

23. प्रदोषव्रत (माघ शुक्ल)

जैसा कि हम पीछे भी लिख आए हैं कि–यह व्रत नक्त व्रत है, अतः इस व्रत का निर्णय नक्तव्रत के समान ही होगा।

प्रत्येक चान्द्रमास के प्रत्येक पक्ष की प्रदोषव्यापिनी त्रयोदशी में यह (प्रदोष)व्रत किया जाता है।

दो दिन प्रदोष में त्रयोदशी की आंशिक या सम्पूर्ण व्याप्ति या अव्याप्ति की स्थिति में यह व्रत दूसरे दिन ही होगा–यही शास्त्रनिर्णय है। **इस बारे 'कालमाधवकार' का यह वचन देखिए–**

''प्रदोषव्यापिनी नक्ते तिथिः व्याप्तिर्दिनद्वये।
अत्याप्तिर्वाथवांशेन व्यप्तिः स्यात्सर्वथोत्तरा।।''

हालांकि '**धर्मसिन्धुकार**' इस तिथिव्रत (प्रदोष) के निर्णय बारे इससे कुछ विपरीत व्यवस्था देते हैं। वे कहते हैं कि–त्रयोदशी दोनों दिन असमानरूप से प्रदोष में यदि व्याप्त हो तो प्रदोषव्रत उस दिन किया जाए, जिस दिन प्रदोष को वह तिथि अधिक व्याप्त करे, बशर्ते कि वहां देवपूजा, भोजनादि के लिए समय पर्याप्त हो, अन्यथा उनके अनुसार वहां भी व्रत दूसरे ही दिन किया जाए। लेकिन यह नियम तर्कसंगत नहीं है, क्योंकि देवपूजादि के लिए पर्याप्त काल कितना होना चाहिए–यह निश्चित नहीं किया जा सकता। अतः उपरोक्त '**कालमाधवकार**' का मत ही यहां इस (प्रदोष) व्रतनिर्णय में मान्य है।

इस वर्ष 2 फर., 2023 ई. को 16घं. 26मि. बाद त्रयोदशी है और यह अगले दिन यानी 3 फर., 2023 ई. को 18 घं. 58 मि. तक रहेगी। क्योंकि यहां यह त्रयोदशी दोनों दिन प्रदोषव्यापिनी है, **अतः उपरोक्त नियमानुसार माघ शुक्ल का यह प्रदोष व्रत इस वर्ष हमने 3 फर., 2023 ई. को लिखा है, जोकि सर्वथा शास्त्रसम्मत है।**

24. विजया एकादशी व्रत (स्मार्त्त) (फाल्गुन कृष्ण पक्ष)

यह एकादशी इस वर्ष 16फर., 2023 ई. को अरुणोदय में दशमी द्वारा विद्ध है। जैसा कि हम पहले भी लिख आए हैं कि–दशमीद्वारा अरुणोदय में वेधवती एकादशी में स्मार्त्त लोग एकादशीव्रत कर लेते हैं, उन्हें यह त्याज्य नहीं है, जबकि वैष्णव लोग इसे हमेशा वर्ज्य मानते हैं। वे इस स्थिति में त्रयोदशीयुता द्वादशी के दिन व्रत करते हैं। इस वर्ष इस व्रत में यहां यही स्थिति आ पड़ी है। **अतः शास्त्रोक्त नियमानुसार यह 'विजया एकादशी व्रत' स्मार्त्तों द्वारा 16फर., 2023 को और वैष्णवों द्वारा 17 फर., 2023 को किया जाएगा।**

25. आमलकी एकादशी व्रत (फाल्गुन शुक्ल पक्ष)

जैसा कि सभी जानते हैं–यह व्रत प्रत्येक पक्ष की एकादशी को किया जाता है। इस वर्ष फाल्गुन शुक्लपक्ष में एकादशी की वृद्धि है। एकादशी की वृद्धि होने पर स्मार्त्त एवम् वैष्णव दोनों सम्प्रदायों के लोग षष्टिघट्यात्मक एकादशी को भी छोड़कर द्वादशीयुता एकादशी के दिन व्रत करते हैं। **इस बारे नारद का यह वचन देखिए–**

''सम्पूर्णैकादशी यत्र प्रभाते पुनरेव सा।
सर्वैरेवोत्तरा कार्या परतो द्वादशी यदि।।''

इस अनुसार हमने यह आमलकी एकादशीव्रत इस वर्ष दोनों (स्मार्त्त/वैष्णव) संप्रदायों के लोगों के लिए द्वादशीयुता एकादशी के दिन 3 मार्च, 2023 ई. को लिखा है, जोकि सर्वथा शास्त्रसम्मत है।

26. होलिकादहन

भद्रारहित प्रदोषकालव्यापिनी फाल्गुन पूर्णिमा में '**होलिकादहन**' किया जाता है। यदि दो दिन पूर्णिमा प्रदोषव्यापिनी हो अथवा दूसरे दिन वह प्रदोष के एकदेश को व्याप्त करे तो पहले दिन भद्रादोष के कारण होलिकादहन दूसरे दिन ही किया जाता है। यदि दूसरे दिन प्रदोष का वह स्पर्श ही न करे और पहले दिन प्रदोष में भद्रा विद्यमान हो, किंच-दूसरे दिन पूर्णिमा साढ़े तीन प्रहर तक अथवा उससे ज्यादा हो एवम् अगले दिन प्रतिपदा वृद्धिगामिनी (पूर्णिमा से अधिक मान वाली) हो तब दूसरे दिन ही प्रदोषव्यापिनी प्रतिपदा में होलिकादहन होता है। यदि वहां प्रतिपदा ह्रासगामिनी (पूर्णिमा से कम मान वाली) हो तब पहले दिन भद्रा के पुच्छ में अथवा भद्रा के मुख को छोड़कर भद्रा में ही **होलिकादहन** किया जाता है। दूसरे दिन पूर्णिमा प्रदोष को स्पर्श ही न करे और पहले दिन निशीथ से पहले ही भद्रा समाप्त हो जाए तो वहां भद्रा-समाप्ति पर होलिकादहन किया जाए। यदि यहां भद्रा निशीथ के बाद समाप्त हो रही हो तो भद्रामुख को छोड़कर भद्रा में हो '**होलिकादीपन**' होना चाहिए। यदि प्रदोष में भद्रामुख हो तो भद्रा के बाद अथवा प्रदोष के बाद होलिकादहन किया जाए। दोनों दिन यदि पूर्णिमा प्रदोष को स्पर्श न करे तो पहले ही दिन भद्रापुच्छ में होली जलाई जाए। यदि वहां भद्रापुच्छ भी न मिले तो भद्रा में ही प्रदोष के अनन्तर होलिकादीपन करे। ये विभिन्न स्थितियाँ 'होलिकादहन' के लिए शास्त्रों में प्रतिपादित है।

इस वर्ष (सं. 2079 वि. में) पूर्णिमा 6मार्च, 2023 ई. को 16घं. 17 मि. बाद प्रारम्भ होकर 7 मार्च, 2023 ई. को 18घं. 10 मि. तक रहेगी। **स्पष्ट है**-6मार्च, 2023 ई. को यह पूर्णिमा पूर्ण प्रदोषव्यापिनी है। हालांकि 7 मार्च, 2023 ई. को भी पूर्णिमा भारत के कुछ भागों में प्रदोषव्यापिनी रहेगी। पहले दिन यानी 6मार्च, 2023 ई. को 16घं. 17 मि. से 29 घं. 13 मि. तक भद्रा रहेगी। अतः इस दिन पूरा का पूरा प्रदोष भद्रा से दूषित है। 7 मार्च, 2023 ई. को पूर्णिमा साढ़े तीन प्रहर से भी अधिक (चौथे प्रहर के काफी भाग तक) है और प्रतिपदा यहां पूर्णिमा के मान से कम होने पर ह्रासगामिनी है। पहले दिन भद्रा यहां निशीथ के काफी बाद तक है। ऐसी स्थिति में पहले ही दिन भद्रामुख को छोड़कर भद्रापुच्छ में अथवा भद्रापुच्छ भी समय से न मिले तो भद्रा में ही '**होलिकादहन**' किया जाएगा। 6मार्च, 2023 ई. को भद्रामुख अर्धरात्रि के बाद 25 घं. 59 मि. से 26घं. 41 मि. तक रहेगा। इस दिन भद्रापुच्छ भी काफी देरी से अर्धरात्रि बाद ही 24 घं. 41 मि. से 25 घं. 59 मि. तक प्राप्त हो रहा है। **अतः ऐसी स्थिति में भद्रा में ही प्रदोष के समय होलिकादहन 6मार्च, 2023 ई. को निःशंक किया जाए-यह स्पष्ट है।** इसी का शास्त्रकार पुरजोर समर्थन करते हैं और यह तर्कसंगत भी है।

क्योंकि भारत के कुछ पूर्वी प्रदेशों में दूसरे दिन यानी 7 मार्च, 2023 ई. को भी पूर्णिमा प्रदोष को स्पर्श कर रही है और वहां भद्रा का पूर्णतः अभाव भी है। **अतः उन पूर्वी प्रदेशों में, जहां सूर्यास्त 18घं. 10 मि. से पहले होगा। वहां (उन प्रदेशों में) यह 'होलिकादहन' 7 मार्च, 2023 ई. को ही प्रदोष में होगा-यह भी स्पष्ट है।**

27. मीनार्क-प्रवेश (सूर्य का मीन राशि में प्रवेश)

15 मार्च, 2023 ई. को सूर्य 6घं. 34 मि. भा. स्टैं. टा. पर मीन राशि में प्रवेश करेगा। इस दिन चण्डीगढ़ में सूर्योदय 6घं. 37 मि. पर है। **स्पष्ट है**-सूर्य की यह मीन संक्रांति पिछले दिन यानी 14 मार्च, 2023 ई. को 30 घं. 34 मि. पर लिखी जाएगी। यह पंजाब, दिल्ली, राजस्थान, हरियाणा, हि.प्र. में 14 मार्च, '23 ई. को ही होगी और उ.प्र., बंगाल आदि में यह 15 मार्च, '23 ई. को होगी। जहां सूर्योदय 15 मार्च, '23 को 6घं. 34 मि. पर या इससे पहले होगा, वहां यह संक्रांति 15 मार्च को और जहां-जहां सूर्योदय 6घं. 34 मि. के बाद होगा, वहां-वहां यह संक्रांति 14 मार्च, 2023 ई. को होगी। **स्पष्ट है**-चण्डीगढ़ आदि में चैत्र मासारम्भ 14 मार्च, 2023 को और बंगालादि में यह चैत्रमासारम्भ 15 मार्च, 2023 ई. को होगा। इस तरह भारत के विभिन्न भागों में इस मास के प्रारम्भ/समाप्ति के दिनों/तारीखों/प्रविष्टों में अन्तर देखने को मिलेगा-यह स्पष्ट है।

गण्डमूल नक्षत्रों का प्रारम्भ एवम् समाप्तिकाल (भा. स्टैं. टा.)

(1 जनवरी, सन् 2022 से 21 मार्च, सन् 2023 ई. तक)

प्रारम्भ			समाप्त			प्रारम्भ			समाप्त			प्रारम्भ			समाप्त			प्रारम्भ			समाप्त		
2022 ई.	घं.	मि.	2022 ई.	घं.	मि.	2022 ई.	घं.	मि.	2022 ई.	घं.	मि.	2022 ई.	घं.	मि.	2022 ई.	घं.	मि.	2022-23 ई.	घं.	मि.	2022-23 ई.	घं.	मि.
---	--	--	2 जनवरी	16	23	28 अप्रैल	17	40	30 अप्रैल	20	12	25 अगस्त	16	16	27 अगस्त	20	26	22 दिसंबर	6	33	24 दिसंबर	1	13
9 जनवरी	7	10	11 जनवरी	11	9	8 मई	14	57	10 मई	18	39	3 सितंबर	22	57	5 सितंबर	20	5	30 दिसंबर	11	24	1 जनवरी	12	48
19 जनवरी	6	42	21 जनवरी	9	42	17 मई	10	46	19 मई	5	37	12 सितंबर	6	59	14 सितंबर	6	57	9 जनवरी	6	5	11 जनवरी	11	50
28 जनवरी	7	10	30 जनवरी	2	49	25 मई	23	19	28 मई	2	26	21 सितंबर	23	46	24 सितंबर	3	50	18 जनवरी	17	22	20 जनवरी	12	40
5 फरवरी	16	8	7 फरवरी	18	58	4 जून	21	54	7 जून	2	25	1 अक्तूबर	4	18	3 अक्तूबर	1	52	26 जनवरी	18	56	28 जनवरी	19	5
15 फरवरी	13	48	17 फरवरी	16	10	13 जून	21	24	15 जून	15	32	9 अक्तूबर	16	20	11 अक्तूबर	16	17	5 फरवरी	12	12	7 फरवरी	17	45
24 फरवरी	13	30	26 फरवरी	10	32	22 जून	5	3	24 जून	8	3	19 अक्तूबर	8	1	21 अक्तूबर	12	28	15 फरवरी	2	1	16 फरवरी	22	52
5 मार्च	1	51	7 मार्च	3	50	2 जुलाई	3	56	4 जुलाई	8	43	28 अक्तूबर	10	42	30 अक्तूबर	7	25	23 फरवरी	4	49	25 फरवरी	3	26
14 मार्च	22	7	17 मार्च	0	20	11 जुलाई	7	49	13 जुलाई	2	21	5 नवंबर	23	56	8 नवंबर	0	37	4 मार्च	18	41	7 मार्च	0	4
23 मार्च	18	52	25 मार्च	16	7	19 जुलाई	12	11	21 जुलाई	14	17	15 नवंबर	16	12	17 नवंबर	21	20	14 मार्च	8	12	16 मार्च	6	24
1 अप्रैल	10	39	3 अप्रैल	12	37	29 जुलाई	9	46	31 जुलाई	14	20	24 नवंबर	19	37	26 नवंबर	14	58						
11 अप्रैल	6	51	13 अप्रैल	9	36	7 अगस्त	16	30	9 अगस्त	12	17	3 दिसंबर	5	45	5 दिसंबर	7	14						
20 अप्रैल	1	39	21 अप्रैल	21	51	15 अगस्त	21	6	17 अगस्त	21	57	12 दिसंबर	23	35	15 दिसंबर	5	15						

पंचकों का प्रारम्भ एवम् समाप्तिकाल (भा. स्टैं. टा.)

(1 जनवरी, सन् 2022 से 21 मार्च, सन् 2023 ई. तक)

प्रारम्भ			समाप्त			प्रारम्भ			समाप्त			प्रारम्भ			समाप्त			प्रारम्भ			समाप्त		
2022 ई.	घं.	मि.	2022 ई.	घं.	मि.	2022 ई.	घं.	मि.	2022 ई.	घं.	मि.	2022 ई.	घं.	मि.	2022 ई.	घं.	मि.	2023 ई.	घं.	मि.	2023 ई.	घं.	मि.
5 जनवरी	19	53	10 जनवरी	8	49	22 मई	11	12	27 मई	0	38	6 अक्तूबर	8	27	10 अक्तूबर	16	1	23 जनवरी	13	51	27 जनवरी	18	36
2 फरवरी	6	45	6 फरवरी	17	9	18 जून	18	42	23 जून	6	14	2 नवंबर	14	16	7 नवंबर	0	3	20 फरवरी	1	14	24 फरवरी	3	44
1 मार्च	16	31	6 मार्च	2	29	16 जुलाई	4	17	20 जुलाई	12	50	29 नवंबर	19	51	4 दिसंबर	6	16	19 मार्च	11	17	--- --	-	-
28 मार्च	23	54	2 अप्रैल	11	21	12 अगस्त	14	49	16 अगस्त	21	6	27 दिसंबर	3	30	31 दिसंबर	11	46						
25 अप्रैल	5	29	29 अप्रैल	18	42	9 सितंबर	0	39	13 सितंबर	6	35												

रविवार कैलेण्डर (1 जनवरी, सन् 2022 से 21 मार्च, सन् 2023 ई. तक)

2022 ई.	रविवार की तारीखें					2022 ई.	रविवार की तारीखें					2022 ई.	रविवार की तारीखें					2023 ई.	रविवार की तारीखें				
जनवरी	2	9	16	23	30	मई	1	8	15	22	29	सितंबर	4	11	18	25	--	जनवरी	1	8	15	22	29
फरवरी	6	13	20	27	--	जून	5	12	19	26	--	अक्तूबर	2	9	16	23	30	फरवरी	5	12	19	26	--
मार्च	6	13	20	27	--	जुलाई	3	10	17	24	31	नवंबर	6	13	20	27	--	मार्च	5	12	19	26	--
अप्रैल	3	10	17	24	--	अगस्त	7	14	21	28	--	दिसंबर	4	11	18	25	--						

ग्रहण-विवरण (सं. 2079 वि.)

वि.सं. 2079 में ये चार ग्रहण धरामण्डल पर दृश्य होंगे :–

(i) खण्डग्रास सूर्यग्रहण (30 अप्रैल/1 मई, 2022 ई.)

(ii) खग्रास चन्द्रग्रहण (16 मई, 2022 ई.)

(iii) खण्डग्रास सूर्यग्रहण (25 अक्तू., 2022 ई.)

(iv) खग्रास चंद्रग्रहण (8 नवं., 2022 ई.)

इन ग्रहणों में से केवल दो 25 अक्तू., 2022 ई. वाला खण्डग्रास सूर्यग्रहण और 8 नवं., 2022 ई. वाला खग्रास चन्द्रग्रहण ही भारत में दिखाई देंगे। शेष दोनों ग्रहण भारत में अदृश्य हैं।

भारत में अदृश्य (दिखाई न देने वाले) ग्रहणों का संक्षिप्त विवरण–

(i) खण्डग्रास सूर्यग्रहण (30 अप्रैल/1 मई, 2022 ई.)

वैशाख कृष्ण अमा, शनिवार को 30 अप्रैल और 1 मई, 2022 ई. की मध्यरात्रि में भा. स्टैं. टा. अनुसार यह ग्रहण 24 घं. 15 मि. पर प्रारंभ होकर 28 घं. 08 मि. पर समाप्त हो जाएगा। यह ग्रहण (खण्डग्रास सूर्यग्रहण) पेसेफिक / अटलांटिक सागर तथा दक्षिणीय दक्षिण अमेरिका और अंटार्कटिका के कुछ भागों में दिखाई देगा। फॉकलैंड अर्जेण्टाईना, चिल्ली, उरुगाय, पैरागाय व बोल्विया में यह ग्रहण खण्डग्रास आकृति में दिखाई देगा। **भारतभूमि पर यह ग्रहण कहीं भी दृश्य नहीं है।**

इस ग्रहण के स्पर्शादि भा. स्टैं. टा. में इस प्रकार हैं–

		घं.	मि.	से.		
ग्रहण-स्पर्श	=	24	15	19	(प्रारंभ)	1 मई 2022 ई.
ग्रहणमध्य	=	26	12	26		
ग्रहण समाप्त	=	28	08	01	(मोक्ष)	
पर्वकाल	=	3	52	42		
ग्रहणग्रासमान	=	0.64				

(ii) खग्रास चंद्रग्रहण (16मई, 2022 ई.)

वैशाख शुक्ल पूर्णिमा चंद्रवार तदनुसार 16 मई, 2022 ई. को यह ग्रहण खग्रासरूप में दृश्य होगा। भा. स्टैं. टा. अनुसार यह ग्रहण 7 घं. 58मि. से शुरु होगा और 11 घं. 25 मि. पर इसकी समाप्ति होगी। यह ग्रहण (खग्रास चंद्रग्रहण) उत्तरी-दक्षिणी अमेरिका, यूरोप तथा द. अफ्रीका व एशिया महाद्वीप के भागों में दिखाई देगा। इटली, बेल्ज़ियम, इंग्लैंड, फ्रांस, क्यूबा, नाइजीरिया, स्पेन, चिल्ली, गोटेमाला, ब्राज़ील, मेक्सिको, अर्जेंटाईना, पोर्टूगल में यह ग्रहण खग्रास (पूर्ण) रूप में दीखेगा।

ध्यान रहे–टर्की, इजिप्ट, हंगरी, ग्रीस व यू.एस. के हवाई आदि कुछ भागों में यह ग्रहण खण्डग्रास रूप में भी दिखाई देगा। भारत में यह कहीं भी दिखाई नहीं देगा।

इस ग्रहण के स्पर्शादि भा. स्टैं. टा. में इस प्रकार हैं–

		घं.	मि.	से.		
ग्रहण-प्रारम्भ	=	7	57	54	(स्पर्श)	
ग्रहण-मध्य	=	9	41	3		16 मई 2022 ई.
ग्रहण-समाप्ति	=	11	25	10	(मोक्ष)	
पर्वकाल	=	03	27	16		
ग्रहण-ग्रासमान	=	1.41				

भारत में दृश्य ग्रहणों का विस्तृत विवरण

(i) खण्डग्रास सूर्यग्रहण (25 अक्तू., 2022 ई.)

यह ग्रहण कार्त्तिक कृष्ण अमा, मंगलवार, तदनुसार 25 अक्तू. 2022 ई. को यूरोप के अधिकतर देशों, उत्तरी-पूर्वी अफ्रीका और एशिया महाद्वीप के मध्य-पूर्वी/पश्चिमी भागों में खण्डग्रास (आंशिक) आकृति के रूप में दिखाई पड़ेगा। यह ग्रहण स्वीडन, फिन्लैंड, एस्टोनिया, बेलारूस, यूक्रेन, रशिया, जॉर्जिया, अरमीनिया, कज़ाकिस्तान, अज़रबैजान, इराक, ईरान, तुर्कमीनिस्तान, उज्बेकिस्तान, किर्गिस्तान, तज़ीकिस्तान, अफ़गानिस्तान, कज़ाखस्तान, पाक और भारत में खण्डग्रासरूप में दीखेगा।

भारत में यह ग्रहण पूर्वी भारत के कुछ प्रदेशों को छोड़कर लगभग सम्पूर्ण भारत में खण्डग्रासरूप में दिखाई देगा। क्योंकि यह ग्रहण भारत में सर्वत्र ग्रस्तास्त होगा अर्थात् ग्रहणारंभ सूर्यास्त से पूर्व ही हो जाएगा या यूं कह सकते हैं कि-सूर्य की ग्रस्तस्थिति में ही सर्वत्र सूर्यास्त होगा, अत: ग्रहणारंभ तो सर्वत्र दीखेगा, लेकिन कुछ स्थलों/नगरों में ग्रहणमध्य नहीं दीखेगा और ग्रहण-समाप्ति तो भारत में कहीं भी दृष्टिगोचर नहीं होगी। हां, कुछेक (गिने-चुने) प्रदेशों / नगरों में ग्रहणारंभ और मध्य जरूर दीखेगा। आगे पृष्ठ 27 से 29 पर दिए कोष्ठक [कोष्ठक (1)] में भारत के प्रसिद्ध-प्रसिद्ध लगभग 250 नगरों की सूची दी गई है। साथ ही इस सूची में भारत के पड़ोसी देशों के कुछ नगर भी दे दिए हैं। इससे आप अपने नगर अथवा समीपवर्ती शहर में ग्रहणस्थिति (ग्रहणारंभ, मध्य, समाप्ति और ग्रासमान) के बारे में तुरन्त जान सकते हैं।

यहां आपको यह भी स्पष्ट कर देते हैं कि-क्योंकि यह ग्रहण ग्रस्तास्त है, अत: अपने-अपने नगर/शहर के ग्रहण-स्पर्शकाल से सूर्यास्त तक के काल को ही इस ग्रहण का पर्व (पुण्य) काल माना जाए, भले ही ग्रहणसमाप्ति सूर्यास्तानन्तर है। [इस ग्रहण के आकृतिबोधक चित्र पृष्ठ 30 पर देखिए।]

इस ग्रहण के प्रारंभादि के काल भा. स्टैं. टा. में इस तरह हैं–

	घं.	मि.	से.	
ग्रहण-स्पर्श	= 14	28	20 (प्रारंभ)	[25 अक्तू. 2022 ई.]
ग्रहण-मध्य	= 16	30	09	
ग्रहण समाप्त	= 18	32	16 (मोक्ष)	
पर्वकाल	= 04	03	56	
ग्रहण-ग्रासमान	= 0.86			

ग्रहण-सूतक–क्योंकि यह ग्रहण ग्रस्तास्त है, अत: इसका सूतक 25 अक्तूबर, 2022 ई. को सूर्योदय से पूर्व (पूर्वरात्रि में 2 घं. 30 मि. पर) ही प्रारंभ हो जाएगा।

ग्रहण का राशिफल–यह ग्रहण कार्त्तिक अमा, मंगलवार को स्वाती नक्षत्र एवम् तुला राशि में घटित हो रहा है, अत: विशेषत: स्वाती नक्षत्र व तुला राशि वाले व्यक्तियों के लिए यह ग्रहण विशेष अशुभ एवं कष्टप्रद रहेगा।

विभिन्न राशि वाले व्यक्तियों के लिए तुला राशि में घटित हो रहे इस ग्रहण का फल नीचे कोष्ठक में दिया जा रहा है। देखिए–

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन
फल	स्त्री व पतिकष्ट	सुख	चिन्ता	कष्ट	धनलाभ	हानि	घात	हानि	लाभ	सुख	अपमान	महाकष्ट

ग्रहण का अन्य फल–

"तुलाधरेऽवन्त्यपरान्त्यसाधन-वणिक् दशार्णान् मरु-कच्छपांश्च।
अलिन्यथोदुम्बर-मद्र-चोलान् द्रुमान् सयौधेय-विलषायुधीयान्।।"

अर्थात्–उज्जयिनी एवं समीपवर्ती देश, सज्जन-व्यापारी वर्ग या किरात देश, दशार्ण देश, रेगिस्तान व कच्छ में प्राकृतिक प्रकोप से कष्ट व हानि संभव है।

अयनफल–यह ग्रहण दक्षिणायन में घटित होगा, अतः वैश्य वर्ग, व्यापारी वर्ग एवं शूद्र वर्ग के लिए यह ग्रहण हितनाशक है।

मासफल–यह ग्रहण कार्त्तिक मास में है, अतः तीसरे, पांचवें एवं नवम मास में अनाज के व्यापारी लाभान्वित होंगे।

वारफल–मंगलवार को ग्रहण होने से "**भौमवारे ग्रहे इन्दोः.....**"–अनुसार कपास, सण, सूत आदि में भारी तेजी आती है।

नक्षत्रफल–स्वाती नक्षत्र में ग्रहण होने से "**स्वातौ लाभस्तथा तथा....**" अनुसार व्यापारी वर्ग एवं सोना चांदी के व्यापारी लाभ लेंगे।

ग्रस्तास्त ग्रहणफल–यह ग्रहण ग्रस्तास्त होने से धान्य एवं शासकों के लिए नेष्टफलप्रद है–

"ग्रस्तोदितौ च ग्रस्तास्तौ धान्य-भूपालनाशकौ।"

(ii) खग्रास चंद्रग्रहण (8 नवं., 2022 ई.)

यह ग्रहण कार्त्तिक पूर्णिमा, मंगलवार, तदनुसार 8 नवं., 2022 ई. को उत्तर-पूर्वी यूरोप, एशिया, उत्तरी/दक्षिणी अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया तथा पेसिफिक सागर में खग्रासरूप में दिखाई देगा। यह ग्रहण थाईलैंड, गोटेमाला, इंडोनेशिया, द. कोरिया, फिलीपीन्स, जापान, मेक्सिको, चाईना, म्यांमार और भारत के अधिकतर भागों में पूर्ण(खग्रास)रूप में दिखाई देगा। **ध्यान दें**–यह ग्रहण ब्राजील, अर्जेण्टाईना, चिल्ली और भारत के कुछ नगरों में खण्डग्रास (आंशिक) रूप में भी देखने को मिलेगा। भारत में यह ग्रहण ग्रस्तोदय होगा। **भा. स्टैं. टा. के अनुसार यह ग्रहण 14 घं. 39 मि. पर प्रारम्भ होकर 18घं. 19 मि. तक चलेगा।**

क्योंकि यह ग्रहण ग्रस्तोदय है, अतः लगभग सम्पूर्ण भारत में चंद्रमा इस दिन ग्रस्त ही उदित होगा। **स्पष्ट है**–भारत में कहीं भी इस ग्रहण का स्पर्श (प्रारंभ) दिखाई नहीं देगा। पूर्वी भारत के कुछ हिस्सों में यह ग्रहण खग्रासरूप में दीखेगा, लेकिन महाराष्ट्र और देश के अन्य काफ़ी हिस्सों में इसका खण्डग्रासरूप ही देखने को मिलेगा। ग्रस्तोदय होने के कारण इस ग्रहण का पर्व(पुण्य)काल आपके अपने नगर/ग्राम के सूर्यास्त से ग्रहण-मोक्षकाल तक रहेगा–यह स्पष्ट है। अथवा जहां चन्द्रोदय सूर्यास्तानंतर होगा, वहां यह चंद्रोदय के बाद ही दीखेगा।

इस ग्रहण के प्रारंभादि के काल भा. स्टैं. टा. में इस प्रकार हैं–

	घं. मि. से.	
ग्रहण-प्रारंभ	= 14 39 15 (स्पर्श)	08 नवंबर 2022 ई.
ग्रहण-मध्य	= 16 29 09	
ग्रहण-समाप्ति	= 18 19 03 (मोक्ष)	
खग्रासावधि	= 1 25 00	
पर्वकाल	= 3 39 48	
ग्रहण-ग्रासमान	= 1.36	

जैसा कि हम ऊपर लिख आए हैं कि–यह चंद्रग्रहण ग्रस्तोदय है, अतः इसके प्रारंभ के क्षण आप भारत में कहीं भी नहीं देख सकेंगे। ग्रहणमध्य भी आप बहुत ही कम (गिने-चुने दो-चार) नगरों/शहरों में ही देख पाएंगे। इस ग्रहण की समाप्ति आप भारत के सभी नगरों में अवश्य देख सकेंगे।

कोरिया, फिलीपीन्स, जापान, मैक्सिको, चाइना, म्यांमार और भारत के अधिकतर | समाप्ति आप भारत के सभी नगरों में अवश्य देख सकेंगे।

यहां स्पष्ट कर देते हैं कि–चंद्रग्रहण के प्रारंभ, मध्य और मोक्ष के काल सभी स्थलों के लिए समान होते हैं। हां, इस वर्ष क्योंकि यह ग्रहण ग्रस्तोदय है, अत: पूर्वी भारतीय कुछ प्रदेशों को छोड़ यह ग्रहण चंद्रोदय के पश्चात् ही भारत में सर्वत्र दीखेगा।

सामने वाले कॉलम में दिए कोष्ठक में कुछेक भारतीय नगरों/शहरों के इस ग्रहण के दिन चन्द्रोदयकाल दिए गए हैं। इस ग्रहण से सम्बन्धित चित्र पृष्ठ 31 पर दिए हैं, वहां देखिए।

ऊपर दिए इस चंद्रग्रहण के प्रारंभ, मध्य, समाप्ति आदि के क्षण पूरे भारत के लिए एक समान हैं। यह उपरोक्त विवेचन से स्पष्ट है, लेकिन क्योंकि यह ग्रहण ग्रस्तोदय है, अत: भारत के उन पूर्वी प्रदेशों में जहां चंद्रोदय सूर्यास्त से पहले हो जाएगा, वहां यह ग्रहण सूर्यास्त से दिखना शुरु होगा और ठीक इसी तरह भारत के उन प्रदेशों/नगरों में, जहां चंद्रोदय सूर्यास्त के बाद होगा, वहां यह ग्रहण चंद्रोदय से ही दिखाई देना प्रारंभ होगा, यह स्पष्ट है।

ग्रहण-सूतक–इस ग्रहण का सूतक 8 नवं., 2022 ई. को प्रात: 5 घं. 30 मि. (भा. स्टैं. टा.) से ही प्रारम्भ हो जाएगा।

ग्रहण का राशिफल–कार्तिक शुक्ल पूर्णिमा, मंगलवार को यह ग्रहण **भरणी नक्षत्र** एवं **मेष राशि** में घटित होगा, अत: विशेषकर भरणी नक्षत्र व मेष राशि के व्यक्तियों के लिए विशेष अशुभ एवं नेष्ट फलप्रद रहेगा।

विभिन्न राशि वाले व्यक्तियों के लिए इस ग्रहण का फल नीचे कोष्ठक में दे रहे हैं। देखिए–

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
फल	महान् कष्ट	हानि	लाभ	सुख	अपमान	महाकष्ट	स्त्री/पति-कष्ट	सुख	चिन्ता	कष्ट	धन-लाभ	हानि

यहां नीचे भारतीय कुछेक नगरों के चंद्रोदयकाल (भा. स्टैं. टा.) में दिए जा रहे हैं। देखिए–

नगर	चंद्रोदयकाल घं.	मि.	नगर	चंद्रोदयकाल घं.	मि.
अहमदाबाद	18	00	नागपुर	17	36
अमृतसर	17	37	नासिक	17	59
अयोध्या	17	15	पटियाला	17	33
इन्दौर	17	47	पटना	17	05
इम्फाल	16	30	पठानकोट	17	33
उज्जैन	17	47	पंचकूला	17	30
कानपुर	17	23	फरीदाबाद	17	32
कांगड़ा	17	30	बम्बई	18	05
कुरुक्षेत्र	17	32	बीकानेर	17	49
कोचीन	18	03	बंगलौर	17	53
कोलकाता	16	56	भावनगर	18	04
गंगटोक	16	48	भुवनेश्वर	17	10
गोरखपुर	17	10	भोपाल	17	40
गोवाहटी	16	37	मण्डी (हि.प्र.)	17	28
गुड़गांव	17	33	मेरठ	17	30
चंडीगढ़	17	31	मैसूर	17	58
चेन्नई	17	42	रोहतक	17	33
जयपुर	17	41	लखनऊ	17	20
जम्मू	17	35	लुधियाना	17	34
जालंधर	17	35	वाराणसी	17	14
जगन्नाथपुरी	17	10	विशाखापट्टनम्	17	14
जोधपुर	17	53	सहारनपुर	17	29
जैसलमेर	18	01	सूरत	18	02
तिरुवनन्तपुरम्	18	02	सोलन	17	29
द्वारिका	18	16	शिमला	17	28
दार्जिलिंग	16	49	श्रीनगर	17	33
दिल्ली	17	32	हरिद्वार	17	26
देहरादून	17	26	हैदराबाद	17	44

ग्रहण का अन्य फल–रुई, कपास, सण, सूत आदि के व्यापार में तेजी से लाभ मिलेगा।

भरणी नक्षत्र में ग्रहणफल–

"भरिण्यां श्वेत-वस्त्रेभ्यो लाभो मासत्रये भवेत्।"

सूत-कपास-रुई एवं सफेद रंग के वस्त्रों के व्यापारी तीन मास में उत्तम लाभ ले सकेंगे।

ग्रहणकाल में कर्त्तव्य/अकर्त्तव्य

ग्रहणारंभ से पूर्व स्नानादि करें। तत्पश्चात् देवस्नान, पूजनार्चन, जाप आदि सम्पन्न करें। ग्रहण के पर्वकाल में देवपूजा, तर्पण, श्राद्ध, जप, होम, दान आदि का अनन्त फल शास्त्रकारों ने पदे-पदे प्रतिपादित किया है। गुरुमुख से प्राप्त मंत्र का पुरुश्चरण इस समय (ग्रहणवेला में) सश्रद्ध करना चाहिए। ग्रहणमोक्ष के बाद पुनः स्नान कर, पुनः देवार्चनादि कृत्यों का संपादन करना चाहिए।

ग्रहण में स्नान-विषयक निर्देश–ग्रहणवेला में सभी जलों का महत्त्व गंगाजल-समान माना गया है। जो गंगा, यमुना आदि पवित्रस्थलों व तीर्थादि में न जा सकें, वे अपने गृह पर ही गंगा आदि के स्मरणपूर्वक स्नान कर, अन्य पूजादि धर्मकृत्यों को सम्पन्न करें। प्रवाहित (बहता हुआ) जल, सरोवर, वापी, कूप, नदी, महानदी, गंगादि के पवित्र प्रदेशों/संगमों अथवा समुद्रजल से स्नान करना उत्तरोत्तर शुभ एवं श्रेष्ठ/पुण्यकारक माना है। सूर्यग्रहण में कुरुक्षेत्र/नर्मदास्नान का विशेष महत्त्व है। यदि यह संभव न हो सके तो नर्मदा/गंगा आदि के स्मरणपूर्वक घर पर ही स्नान कर लेना चाहिए।

भोजनसंबंधी निर्देश–ग्रहणमोक्ष के अनन्तर ही स्नान / पूजा / दान आदि से निवृत्त होकर भोजन करें। केवल बाल, अशक्त, बीमार (रोगी), वृद्ध आदि को भोजनग्रहण में (विवशता की स्थिति में) छूट है अर्थात् वे भोजन कर सकते हैं।

– – – –

आगामी वर्ष (सं. 2080 वि.) में घटित होने वाले ग्रहण :–

अगले वर्ष (सं. 2080 वि.में.) भूगोल पर ये निम्नलिखित 4 ग्रहण घटित होंगेः–

(i) खग्रास सूर्यग्रहण (20 अप्रैल, 2023 ई.) (भारत में अदृश्य)।

(ii) कंकण सूर्यग्रहण (14 अक्तूबर, 2023 ई.) (भारत में अदृश्य)।

(iii) खण्डग्रास चंद्रग्रहण (28/29 अक्तूबर, 2023 ई.) (भारत में दृश्य)।

(iv) खग्रास सूर्यग्रहण (8अप्रैल, 2024 ई.) (भारत में अदृश्य)।

इनके अतिरिक्त–5/6मई, 2023 ई. को एक उपच्छाया (Penumbral) चंद्रग्रहण होगा। यह ग्रहण भारत में दृश्य है। लेकिन शास्त्रों द्वारा ऐसे उपच्छाया ग्रहणों को अनादेश्य लिखा है। ठीक, इसी प्रकार 25 मार्च, 2024 ई. को भी इस वर्ष (2080 वि. में) चंद्रमा का उपच्छाया ग्रहण होगा, जो भारत में अक्षरशः अदृश्य है।

खण्डग्रास सूर्यग्रहण 25-10-2022 (भा. स्टैं. टा.)

कोष्ठक (1) (भाग i)

नगर	ग्रहणारंभ		ग्रहण-मध्य		ग्रहण समाप्त		ग्रासमान	नगर	ग्रहणारंभ		ग्रहण-मध्य		ग्रहण समाप्त		ग्रासमान
	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.			घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	
आबू	16	34	17	35	18	30•	0.483	बीकानेर	16	27	17	30	18	27•	0.546
आरा (बिहार)	16	42	17	36•	18	25•	0.450	बिलासपुर (हि.प्र.)	16	22	17	26	18	24•	0.595
अगरतला	–	–	–	–	–	–	– –	बिलासपुर (म.प्र.)	16	49	17	40•	18	28•	0.388
आगरा	16	33	17	33	18	27•	0.514	बृन्दावन	16	32	17	32	18	27•	0.522
अहमदाबाद	16	38	17	37	18	30•	0.450	बुलन्दशहर	16	30	17	31	18	26•	0.538
ऐजावल	–	–	–	–	–	–	– –	बूंदी	16	35	17	35	18	29•	0.489
आजमगढ़	16	40	17	35•	18	26•	0.468	केपकोमोरिन	17	33	17	56	18	18•	0.068
अजमेर	16	32	17	33	18	28•	0.512	चम्बा	16	19	17	24	18	22•	0.617
अकोला	16	49	17	42	18	30•	0.383	चण्डीगढ़	16	24	17	27	18	24•	0.585
अलीगढ़	16	31	17	32	18	26•	0.528	चेन्नई	17	14	17	51•	18	25•	0.183
इलाहाबाद	16	40	17	36•	18	27•	0.462	चेरापूंजी	–	–	–	–	–	–	– –
अलमोड़ा	16	29	17	30•	18	25•	0.554	छपरा	16	42	17	36•	18	25•	0.454
अलवर	16	31	17	32	18	27•	0.527	छतरपुर	16	40	17	36	18	28•	0.461
अम्बाला	16	25	17	28	18	24•	0.578	चित्तौड़गढ़	16	36	17	35	18	29•	0.482
अमेठी (उ.प्र.)	16	39	17	35•	18	26•	0.476	चिटगांव (बं.दे.)	–	–	–	–	–	–	– –
अमरावती (म.प्र.)	16	49	17	41	18	30•	0.384	चूरू	16	28	17	30	18	27•	0.547
अमृतसर	16	20	17	25	18	23•	0.606	कोचीन	17	22	17	54	18	24•	0.126
अमरोहा (उ.प्र.)	16	30	17	30	18	26•	0.545	कोयम्बटूर	17	19	17	53	18	25•	0.149
अनन्तनाग (क.)	16	16	17	21	18	21•	0.639	कोलम्बो (श्रीलंका)	17	43	17	56•	18	10•	0.024
अनूपशहर (उ.प्र.)	16	31	17	31	18	26•	0.536	कटक	16	56	17	42•	18	26•	0.329
अर्की (हि.प्र.)	16	23	17	26	18	24•	0.591	ढाका (बं.दे.)	16	50	17	38•	18	22•	0.373
अयोध्या	16	38	17	34•	18	26•	0.488	दरभंगा	16	41	17	35•	18	24•	0.454
बदायूं	16	32	17	32	18	26•	0.526	दार्जीलिंग	16	41	17	34•	18	23•	0.459
बलिया	16	42	17	36•	18	26•	0.455	दतिया	16	37	17	35	18	28•	0.482
बालोरघाट (बं.दे.)	16	46	17	36•	18	23•	0.417	देहरादून	16	26	17	28	18	24•	0.573
बंगलौर	17	12	17	51	18	27•	0.195	दिल्ली	16	29	17	30	18	26•	0.545
बांसवाड़ा	16	39	17	37	18	30•	0.454	देवरिया	16	39	17	35•	18	25•	0.475
बाड़मेर	16	30	17	33	18	29•	0.509	देवास	16	42	17	38	18	30•	0.436
बट्टीकलोआ (श्रीलंका)	17	40	17	56•	18	11•	0.034	देवबन्द	16	27	17	29	18	25•	0.563
भागलपुर	16	44	17	36•	18	24•	0.429	देवप्रयाग	16	27	17	28	18	24•	0.568
भरतपुर	16	32	17	32	18	27•	0.518	धनबाद	16	48	17	38•	18	25•	0.400
बठिण्डा	16	23	17	27	18	25•	0.581	धनकुटा (नेपाल)	16	40	17	34•	18	23•	0.463
भीनमाल	16	33	17	34	18	29•	0.491	धर्मशाला	16	20	17	24	18	23•	0.612
भिवानी	16	28	17	30	18	26•	0.551	धूरी	16	24	17	27	18	25•	0.581
भोपाल	16	42	17	38	18	29•	0.437	डिब्रूगढ़	–	–	–	–	–	–	– –
भुवनेश्वर	16	56	17	43•	18	26•	0.324	डीडवाना	16	29	17	31	18	27•	0.531
भुज	16	34	17	35	18	30•	0.463	डूंगरपुर	16	37	17	36	18	30•	0.463
भूसावल	16	47	17	41	18	30•	0.395	द्वारिका	16	36	17	37	18	31•	0.444
बीजापुर	16	58	17	46	18	30•	0.299	एटा	16	33	17	32	18	26•	0.519
बिजनौर	16	28	17	30	18	25•	0.555	इटावा	16	35	17	34	18	27•	0.502

नोट : जिन नगरों में ग्रहण-मध्य और ग्रहण-समाप्ति के आगे **Black dot** (•) दिया गया है, उन नगरों में ग्रहणमध्य व ग्रहणसमाप्ति से पूर्व ही सूर्यास्त हो जाएगा। इसी प्रकार जिन नगरों के आगे ग्रहणारंभ, ग्रहण-मध्य और ग्रहण-समाप्ति के काल नहीं दिए हैं, वहां ग्रहणारंभ से पहले ही सूर्यास्त हो जाएगा।

खण्डग्रास सूर्यग्रहण 25-10-2022 (भा. स्टैं. टा.)

कोष्ठक (1) (भाग ii)

नगर	ग्रहणारंभ		ग्रहण-मध्य		ग्रहण समाप्त		ग्रासमान	नगर	ग्रहणारंभ		ग्रहण-मध्य		ग्रहण समाप्त		ग्रासमान
	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.			घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	
फरीदाबाद	16	30	17	31	18	26•	0.541	झांसी	16	38	17	35	18	28•	0.477
फरीदकोट	16	22	17	26	18	24•	0.591	झरिया	16	48	17	38•	18	25•	0.401
फाज़िल्का	16	22	17	26	18	25•	0.588	झुंझुनु	16	29	17	31	18	27•	0.541
फिरोज़पुर	16	21	17	26	18	24•	0.595	जीन्द	16	27	17	29	18	25•	0.561
गाले (श्रीलंका)	–	–	–	–	–	–	– –	जोधपुर	16	31	17	32	18	28•	0.515
गंगटोक	16	40	17	34•	18	22•	0.462	जोरहाट	–	–	–	–	–	–	– –
गया	16	44	17	37•	18	25•	0.431	कैथल	16	26	17	28	18	25•	0.569
गाजियाबाद	16	29	17	30	18	26•	0.545	कालका	16	24	17	27	18	24•	0.586
गोरखपुर	16	38	17	34•	18	25•	0.481	कांचीपुरम्	17	14	17	51•	18	25•	0.180
गुंटकल	17	5	17	48	18	29•	0.252	कैंडी (श्रीलंका)	17	41	17	56•	18	11•	0.030
गुरदासपुर	16	19	17	24	18	23•	0.611	कांगड़ा	16	20	17	25	18	23•	0.610
गुरुग्राम	16	29	17	30	18	26•	0.542	कन्नौज	16	35	17	33•	18	26•	0.503
गुआहाटी	–	–	–	–	–	–	– –	कानपुर	16	37	17	34•	18	27•	0.489
ग्वालियर	16	35	17	34	18	28•	0.495	कपूरथला	16	21	17	25	18	24•	0.601
हांसी	16	27	17	29	18	26•	0.558	कारगिल	16	15	17	20	18	20•	0.649
हमीरपुर (हि.प्र.)	16	21	17	25	18	23•	0.602	करनाल	16	26	17	29	18	25•	0.565
हमीरपुर (उ.प्र.)	16	38	17	35•	18	27•	0.481	काठियावाड़	16	39	17	38	18	31•	0.434
हापुड़	16	29	17	30	18	26•	0.544	काठमाण्डू (नेपाल)	16	37	17	33•	18	24•	0.490
हरिद्वार	16	27	17	29	18	25•	0.566	कठुआ (क.)	16	19	17	24	18	23•	0.615
हाथरस	16	32	17	32	18	27•	0.522	कटनी	16	43	17	38•	18	28•	0.435
हिसार	16	26	17	29	18	26•	0.560	खन्ना	16	23	17	27	18	24•	0.586
होशंगाबाद	16	44	17	39	18	29•	0.425	खुर्जा	16	30	17	31	18	26•	0.535
होशियारपुर	16	21	17	25	18	23•	0.601	किशनगढ़ (राज.)	16	24	17	29	18	27•	0.551
हैदराबाद	16	59	17	46•	18	29•	0.298	कोडैकनाल	17	22	17	53	18	23•	0.12[illegible]
इम्फाल	–	–	–	–	–	–	– –	कोहिमा	–	–	–	–	–	–	– –
इन्दौर	16	42	17	39	18	30•	0.432	कोटखाई	16	24	17	26	18	24•	0.58[illegible]
इटानगर	–	–	–	–	–	–	– –	कोलकाता	16	52	17	40•	18	24•	0.36[illegible]
इटारसी	16	44	17	39	18	29•	0.421	कोटा	16	36	17	35	18	29•	0.48[illegible]
जबलपुर	16	45	17	39•	18	28•	0.423	कुल्लू	16	21	17	25	18	23•	0.60[illegible]
जाफ़ना (श्रीलंका)	17	27	17	54•	18	20•	0.097	कुराली (पं.)	16	23	17	27	18	24•	0.587
जयपुर	16	32	17	32	18	28•	0.517	कुरुक्षेत्र	16	25	17	28	18	25•	0.57[illegible]
जैसलमेर	16	27	17	30	18	28•	0.532	लखनऊ	16	36	17	34•	18	26•	0.49[illegible]
जालन्धर	16	21	17	25	18	24•	0.599	लुधियाना	16	22	17	26	18	24•	0.59[illegible]
जालौर	16	32	17	34	18	29•	0.497	मदुरै	17	24	17	54	18	22•	0.11[illegible]
जम्मू	16	17	17	23	18	22•	0.625	महेन्द्रगढ़	16	29	17	31	18	26•	0.54[illegible]
जामनगर	16	37	17	37	18	31•	0.445	मालेरकोटला	16	23	17	27	18	24•	0.58[illegible]
जमशेदपुर	16	50	17	40•	18	25•	0.381	मन्दसौर	16	38	17	36	18	29•	0.46[illegible]
जासौर (बं.दे.)	16	50	17	39•	18	23•	0.372	मण्डी (हि.प्र.)	16	22	17	25	18	23•	0.60[illegible]
झालावाड़	16	36	17	35	18	29•	0.477	मानेसर	16	26	17	28	18	25•	0.57[illegible]
झालरापाटन	16	38	17	36	18	29•	0.468	मंगलोर	17	10	17	50	18	28•	0.20[illegible]

खण्डग्रास सूर्यग्रहण 25-10-2022 (भा. स्टैं. टा.)

कोष्ठक (1) (भाग iii)

नगर	ग्रहणारंभ		ग्रहण-मध्य		ग्रहण समाप्त		ग्रासमान	नगर	ग्रहणारंभ		ग्रहण-मध्य		ग्रहण समाप्त		ग्रासमान
	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.			घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	
मारवाड़ (जं.)	16	33	17	34	18	29•	0.501	रामेछाप (नेपाल)	16	39	17	34•	18	24•	0.478
मथुरा	16	32	17	32	18	27•	0.521	रामेश्वरम्	17	28	17	54•	18	19•	0.090
मेरठ	16	29	17	30	18	25•	0.550	रामपुरबुशहर	16	23	17	26	18	23•	0.594
मिर्जापुर	16	42	17	36•	18	26•	0.406	रांची	16	48	17	39•	18	26•	0.397
मोगा	16	22	17	26	18	24•	0.591	रतनगढ़	16	28	17	30	18	27•	0.544
मुम्बई	16	49	17	43	18	31•	0.362	रतलाम	16	40	17	37	18	30•	0.448
मुंगेर	16	44	17	36•	18	24•	0.435	रीवां	16	42	17	37•	18	27•	0.445
मुरादाबाद	16	30	17	30	18	25•	0.543	रेवाड़ी	16	29	17	31	18	26•	0.539
मंसूरी	16	26	17	28	18	24•	0.575	रोहतक	16	28	17	30	18	26•	0.552
मुजफ्फरनगर	16	28	17	29	18	25•	0.559	रोपड़	16	23	17	26	18	24•	0.590
मैसूर	17	14	17	51	18	27•	0.184	सागर	16	42	17	38	18	29•	0.443
नाभा	16	24	17	27	18	24•	0.581	सहारनपुर	16	26	17	28	18	25•	0.568
नागौर	16	29	17	31	18	28•	0.530	सांगानेर	16	32	17	33	18	28•	0.516
नागपुर	16	49	17	41•	18	29•	0.383	संगरूर	16	24	17	27	18	25•	0.578
नाहन	16	25	17	27	18	24•	0.580	सरहिन्द	16	24	17	27	18	24•	0.584
नैनीताल	16	29	17	30•	18	25•	0.550	सेहोर (बं.दे.)	16	51	17	39•	18	23•	0.369
नालागढ़	16	23	17	26	18	24•	0.591	शाहदरा	16	29	17	30	18	26•	0.545
नरैना	16	30	17	32	18	28•	0.521	शिलांग	-	-	-	-	-	-	- -
नारनौल	16	29	17	31	18	27•	0.537	शिमला	16	23	17	26	18	24•	0.590
नासिक	16	47	17	42	18	31•	0.381	शोलापुर	16	56	17	45	18	30•	0.318
नाथद्वारा	16	35	17	35	18	29•	0.485	श्रीनगर (क.)	16	14	17	21	18	21•	0.647
नवलगढ़	16	29	17	31	18	27•	0.537	सीकर	16	29	17	31	18	27•	0.533
नीमच	16	37	17	36	18	29•	0.472	सिलीगुड़ी	16	42	17	34•	18	23•	0.451
पालमपुर	16	20	17	25	18	23•	0.609	सिरसा	16	25	17	28	18	25•	0.569
पाली	16	32	17	33	18	29•	0.503	सोलन	16	24	17	27	18	24•	0.587
पणजी	17	1	17	47	18	30•	0.276	सूरत	16	43	17	40	18	31•	0.411
पंचकूला	16	24	17	27	18	24•	0.585	सूरतगढ़	16	24	17	28	18	26•	0.568
पानीपत	16	27	17	29	18	25•	0.560	सिलहट (बं.दे.)	-	-	-	-	-	-	- -
पठानकोट	16	19	17	24	18	23•	0.615	तंजावर	17	22	17	53•	18	23•	0.131
पटियाला	16	24	17	27	18	25•	0.579	थानेसर	16	25	17	28	18	25•	0.571
पटना	16	42	17	36•	18	25•	0.447	थिम्फू (भूटान)	16	41	17	33•	18	22•	0.459
फुलेरा	16	31	17	32	18	28•	0.519	तिरुपति	17	11	17	50•	18	27•	0.204
पिलानी	16	28	17	30	18	26•	0.546	टोंक	16	34	17	34	18	28•	0.503
पोखरा (नेपाल)	16	35	17	32•	18	24•	0.507	त्रिवेन्द्रम्	17	30	17	55	18	20•	0.083
पाण्डिचेरी	17	18	17	52•	18	24•	0.157	टूटीकोरिन	17	29	17	55	18	19•	0.084
पुंछ	16	14	17	21	18	21•	0.644	उदयपुर (राज.)	16	35	17	35	18	29•	0.479
पोरबन्दर	16	39	17	38	18	31•	0.429	उधमपुर (क.)	16	17	17	23	18	22•	0.627
पोर्टब्लेयर	-	-	-	-	-	-	- -	उज्जैन	16	41	17	38	18	30•	0.441
प्रतापगढ़ (उ.प्र.)	16	39	17	35•	18	26•	0.471	ऊना	16	21	17	25	18	23•	0.601
पुना	16	52	17	44	18	31•	0.346	उन्नाव	16	37	17	34•	18	27•	0.491
पुरनिया	16	43	17	36•	18	24•	0.438	वड़ोदरा	16	41	17	38	18	31•	0.433
पुरी	16	58	17	43•	18	25•	0.314	वाराणसी	16	42	17	36•	18	26•	0.453
रायपुर (छ.ग.)	16	51	17	42•	18	28•	0.372	वेरावल (गुज.)	16	42	17	39	18	32•	0.411
राजकोट	16	38	17	37	18	31•	0.441	विजयवाड़ा	17	3	17	47•	18	28•	0.268
राजशाही (बं.दे.)	16	48	17	37•	18	31•	0.400	विशाखापट्टनम्	17	2	17	46•	18	27•	0.280

सूर्यग्रहण-आकृतियां 25-10-2022 ई. (खण्डग्रास सूर्यग्रहण)

चण्डीगढ़

ग्रहण-प्रारम्भ 16 घं. 24 मि.
ग्रहण-समाप्ति 18 घं. 24 मि.

कुरुक्षेत्र
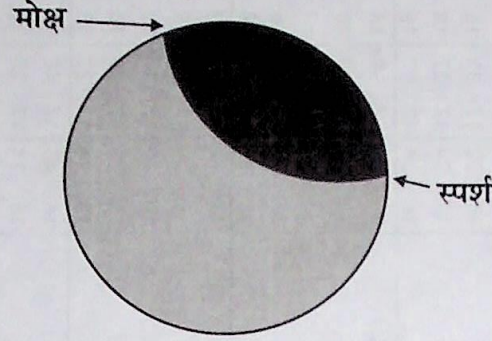
ग्रहण-प्रारम्भ 16 घं. 25 मि.
ग्रहण-समाप्ति 18 घं. 25 मि.

वाराणसी
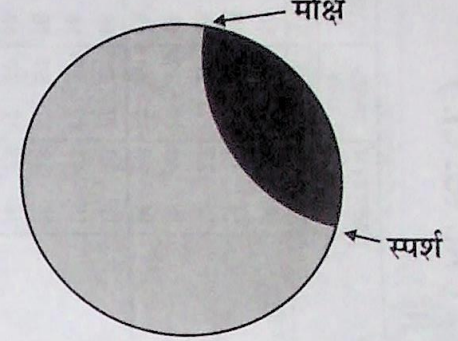
ग्रहण-प्रारम्भ 16 घं. 42 मि.
ग्रहण-समाप्ति 18 घं. 26 मि.

उज्जैन
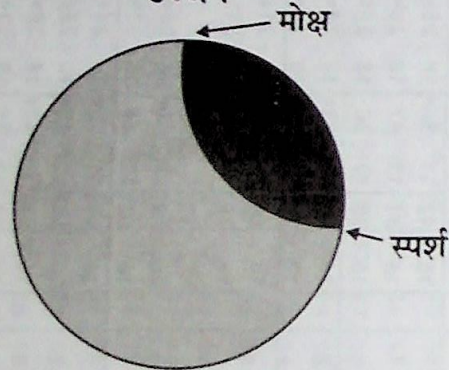
ग्रहण-प्रारम्भ 16 घं. 41 मि.
ग्रहण-समाप्ति 18 घं. 30 मि.

पटना

मोक्ष
स्पर्श
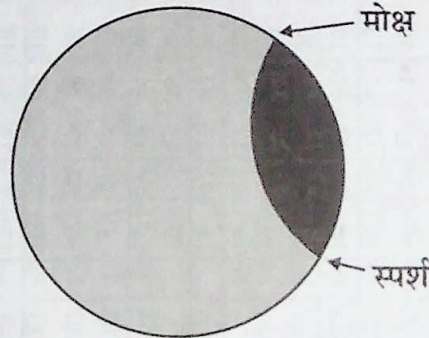
ग्रहण-प्रारम्भ 16 घं. 42 मि.
ग्रहण-समाप्ति 18 घं. 25 मि.

कोलकाता

मोक्ष
स्पर्श
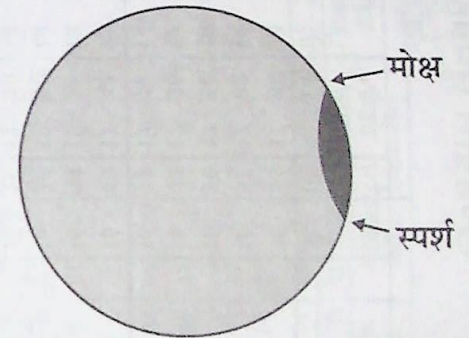
ग्रहण-प्रारम्भ 16 घं. 52 मि.
ग्रहण-समाप्ति 18 घं. 24 मि.

चन्द्रग्रहण-आकृतियां 08-11-2022 ई. (खग्रास चन्द्रग्रहण)

चण्डीगढ़
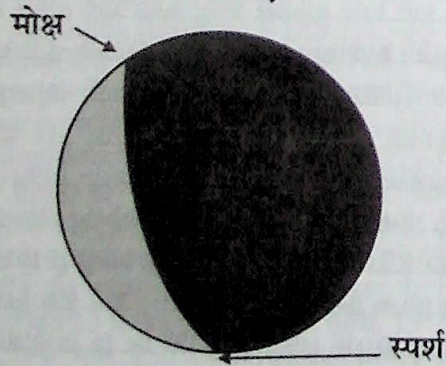
ग्रहण-प्रारम्भ 17 घं. 31 मि.
ग्रहण-समाप्ति 18 घं. 19 मि.

कुरुक्षेत्र
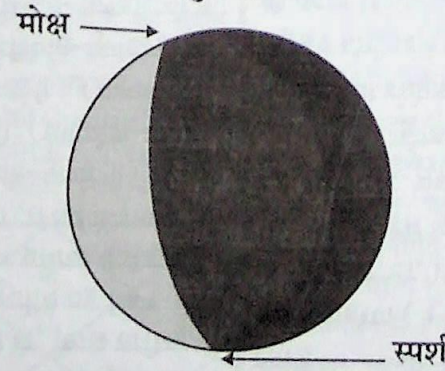
ग्रहण-प्रारम्भ 17 घं. 32 मि.
ग्रहण-समाप्ति 18 घं. 19 मि.

दिल्ली
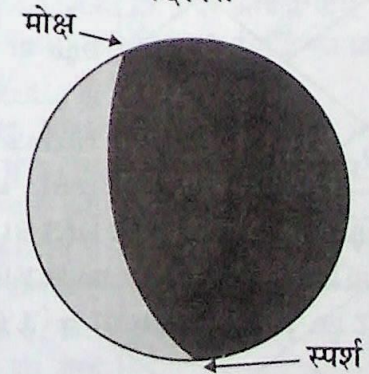
ग्रहण-प्रारम्भ 17 घं. 32 मि.
ग्रहण-समाप्ति 18 घं. 19 मि.

इम्फाल
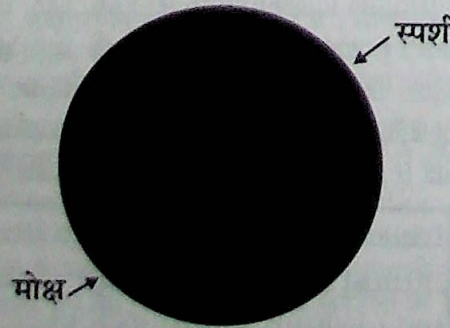
ग्रहण-प्रारम्भ 16 घं. 30 मि.
ग्रहण-समाप्ति 18 घं. 19 मि.

नासिक
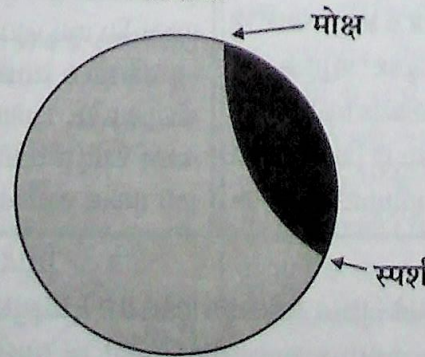
ग्रहण-प्रारम्भ 17 घं. 59 मि.
ग्रहण-समाप्ति 18 घं. 19 मि.

गंगटोक
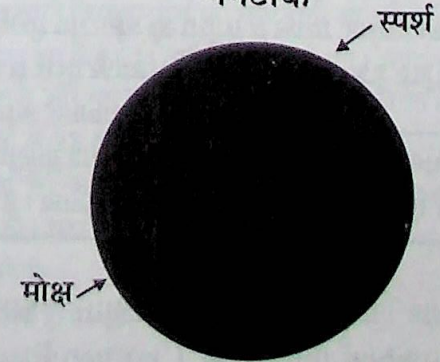
ग्रहण-प्रारम्भ 16 घं. 48 मि.
ग्रहण-समाप्ति 18 घं. 19 मि.

संवत् 2079 वि. की कुल जन्म-वर्ष-प्रश्न-मुहूर्त्त-कुण्डलियां

इन कुण्डलियों के श्रमसाध्य निर्माण में पूर्ण सहयोग के लिए ''श्रीमार्त्तण्ड ज्योतिष कार्यालय''-कुराली (पं.) के अनुभवी कार्यकर्त्ता **ग्राम सुन्हाड़-सौर, सोलन (हि.प्र.) निवासी प्रबुद्ध ज्योतिर्विद्वान् आचार्य श्रीकृष्ण शर्मा, शास्त्री, M.A., साहित्याचार्य, वेदाचार्य** को आशीर्वाद पुरस्सर धन्यवाद दिये बिना मैं नहीं रह सकता।-**प्रियव्रत शर्मा**

यद्यपि जातकपद्धति एवं ताजिक ग्रन्थों में द्वादश-भाव-साधनपूर्वक बनायी गयी भावकुण्डली द्वारा भावफलादेश कहने का निर्देश है, तथापि लगभग सभी दैवज्ञ जातक की जन्मकालिक, प्रश्नकालिक, वर्षप्रवेश-कालिक तथा विवाहादि मुहूर्त्तकालिक आदि राशि-कुण्डलियों को ही फलादेशार्थ प्रयुक्त करने की परम्परा बनाये हुए हैं। जन्म, प्रश्न, वर्षप्रवेश या मुहूर्त्तकालीन लग्नराशि को प्रथम भावराशि तथा तदुत्तरवर्ती राशियों को क्रमशः द्वितीय आदि भावों की राशियां मानकर बनायी गयी जन्मकुण्डली द्वारा ही समस्त फलादेश कहने का बहुत बड़ा सम्प्रदाय फलित ज्योतिष में व्यापक प्रभाव बनाये हुए हैं। **सच बात तो यह है**-फलित में भावचक्र तो केवल सिद्धान्तरूप में ही दिखाई पड़ता है, इसका प्रयोगात्मक-रूप तो लगभग लुप्त-सा ही हो गया है। **इसे दृष्टि में रखते हुए यहां सं. 2079 वि. में बनने वाली सभी (कुल 209) कुण्डलियां दी जा रही हैं। ''किस तारीख के कितने बजे से, किस तारीख के कितने बजे तक''-कौन-सी कुण्डली बनती है (यानी सूर्यादि ग्रह किन-किन राशियों में स्थित हैं), यह भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम अनुसार प्रत्येक कुण्डली के ऊपर यहां निर्दिष्ट है।** इन कुण्डलियों के आधार पर दैवज्ञ लोग इस वर्ष में उत्पन्न होने वाले किसी भी जातक की जन्मकुण्डली (जन्मकालिक ग्रहस्थिति-कुण्डली), इस वर्ष घटित होने वाले वर्षप्रवेश-कालानुसारी वर्षप्रवेश-कुण्डली (वर्षप्रवेश-कालिक ग्रहस्थिति-कुण्डली) तथा अभीष्टकालिक प्रश्नकुण्डली (प्रश्नकालिक ग्रहस्थिति-कुण्डली) एवं अभीष्ट विवाहादि मुहूर्त्तकालिक ग्रहस्थिति-कुण्डली तुरन्त जान सकेंगे और तात्कालिक स्थानीय लग्न ज्ञात कर इन ग्रहस्थिति-कुण्डलियों को लग्नकुण्डलियां अनायास ही बना सकेंगे।

ध्यान दें-यहां दी गयीं ये कुण्डलियां विवाहादि-मुहूर्त्तकालिक लग्नों के निर्णय में भी अत्यन्त उपयोगी सिद्ध हुई हैं। लग्ननिर्णयार्थ अपेक्षित ग्रहस्थितियों को ध्यान में रखते हुए यहां दी गयीं इन कुण्डलियों द्वारा दैवज्ञ स्वयं भी लग्न की शुद्धि-अशुद्धि का यथार्थ निर्णय अत्यन्त आसानीपूर्वक अनायास ही कर सकते हैं।

क्योंकि, आगे दी जा रही ये सभी कुण्डलियां भारतीय स्टैण्डर्ड टाईमानुसार हैं, अतः भारत में इन्हें बिना किसी परिवर्तन के प्रयोग में लाया जायेगा। यदि इन्हें भारत से अन्य किसी भी देश के लिए प्रयोग में लाना हो, तब उस देश के स्थानीय स्टैण्डर्ड टाइम को केवल भारतीय स्टैण्डर्ड टाइम में बदलकर इन्हें तुरन्त प्रयोग में लाइये।

स्पष्टता के लिए आगे उदाहरण दे रहे हैं। यहां पहले भारतस्थलीय उदाहरण लेते हैं-

उदाहरण (1)-चण्डीगढ़ (U.T.) में 20 अप्रैल, 2022 ई. को 20 घं. 10 मि. (भा.स्टैं. टा.) पर उत्पन्न होने वाले जातक की जन्मकुण्डली ज्ञात करनी है?

क्योंकि, इस जातक का जन्म ''18 अप्रैल 22 घं. 08 मि. से 20 अप्रैल 23 घं. 40 मि.'' के मध्य हुआ है, अतः इसकी जन्मकालिक कुण्डली (ग्रहस्थिति-कुण्डली) यहां दी गयी इसी कालावधि वाली कुण्डली के अनुरूप होगी। **किंच**-चण्डीगढ़ में 20 अप्रैल को 20 घं. 10 मि. (भा.स्टैं.टा.) पर तुला लग्न है। अतः इस जातक की जन्मलग्न-कुण्डली यह

अब भारतेतर देश का उदाहरण लेते हैं–

उदाहरण (2)–21 जून, 2022 ई. को Hamilton (Canada) में 16घं. 40 मि. पर पैदा होने वाले जातक की जन्मलग्नकुण्डली ज्ञात करनी है?

Hamilton (Canada) में D.S.T. (ग्रीष्मकालीन समय) चलता है, जो क्षेत्रीय स्टैं. टा. से एक घण्टा आगे रहता है। इन दिनों (गर्मियों में) यह लागू है। **स्पष्ट है**–इस जातक का यह जन्मसमय D.S.T. अनुसार है। अतः स्टैं.टा. अनुसार इस समय इस जातक का जन्मकाल 15 घं. 40 मि. होगा। क्योंकि Canada की Ontario State में पड़ने वाली यह Hamilton City E.S.T. Zone में आती है और E.S.T. (Eastern St. time) से भा.स्टैं.टा. 10 घं. 30 मि. आगे रहता है, अतः इस जातक की जन्मकालिक भारतीय तारीख 22 जून, 2022 ई. और जन्मकाल 2 घं. 10 मि. (भा.स्टैं.टा.) बने। क्योंकि इस जातक का जन्म भा.स्टैं.टा. अनुसार **''20 जून 22 घं. 35 मि. से 23 जून 06घं. 13 मि.''** के मध्य हुआ है, अतः इसकी जन्म-कालिक-कुण्डली (ग्रहस्थिति-कुण्डली) यहां दी गयी इसी कालावधि वाली कुण्डली के अनुरूप होगी। **किंच**–Hamilton में इसके जन्म के समय लग्न तुला होगा। तदनुसार इसकी कुण्डली यह बनेगी–

अब वर्षकुण्डली का उदाहरण ले रहे हैं–

उदाहरण (3)–भारत, हि.प्र., सोलन में 15 अगस्त, 1974 ई. (गुरुवार) को 11 घं. 14 मि. (भा.स्टैं.टा.) पर जन्मे एवं सम्प्रति मोहाली (पं.) में रहने वाले जातक की ई. सन् 2022-23 की वर्षकुण्डली जाननी है ?

इस जातक के गताब्द यहां 48मिले और 49वां वर्षप्रवेश 15 अगस्त, 2022 ई. (चंद्रवार) को 18घं. 34 मि. (भा.स्टैं.टा.) पर होगा।

क्योंकि, इस जातक का वर्षप्रवेश **''14 अगस्त 16घं. 15 मि. से 16अगस्त 21 घं. 05 मि.''** के मध्य हुआ है, अतः इसकी वर्षकुण्डली (49वें वर्ष की) यहां दी गई इसी कुण्डली के अनुरूप होगी। **किंच**–इस जातक के निवासस्थान मोहाली (पं.) में वर्षप्रवेश के समय (15 अगस्त, 2022 ई. को 18घं. 34 मि.) पर मकर लग्न है, अतः इस जातक की वर्षकुण्डली यह बनेगी–

अब प्रश्नकुण्डली का उदाहरण भी ले लेते हैं–

उदाहरण (4)–मान लें-2 अप्रैल, 2022 ई. को (नव संवत्सर 2079 वि. के प्रथम दिवस पर) 12 घं. 50 मि. (भा.स्टैं.टा.) पर आपके पास चण्डीगढ़ (U.T.), भारत में आकर कोई प्रश्नकर्त्ता कार्यसिद्धि/असिद्धि का प्रश्न करता है। इसकी प्रश्नकुण्डली जाननी है ?

यहां प्रश्नकालिक तारीख 2 अप्रैल, 2022 ई. और प्रश्नकाल 12 घं. 50 मि. आगे इस स्तम्भ में दिये गये **''2 अप्रैल 11 घं. 21 मि. से 4 अप्रैल 21 घं. 00 मि.''** के मध्य पड़ता है, अतः यहां यह प्रश्न-कुण्डली इसी अवधि के अन्तर्गत आने वाली इस कुण्डली के अनुरूप होगी। **किंच**–यहां प्रश्नस्थल (चण्डीगढ़) में इस समय लग्न कर्क है, अतः यहां इस प्रश्नकर्त्ता की कुण्डली इस तरह बनेगी–

आगे मुहूर्त्तकुण्डली का उदाहरण ले रहे हैं–

उदाहरण (5)–हमारे इस पंचांग (श्रीमार्त्तण्ड) में 21 अप्रैल, 2022 ई. को पृष्ठ 266 पर दिये मिथुन लग्न वाले विवाहमुहूर्त्त की कुण्डली जाननी है ?

इस लग्न (मिथुन) का काल इस दिन (21 अप्रैल, 2022 ई. को) चण्डीगढ़ में 08 घं. 59 मि. से 11 घं. 13 मि. तक है और यह लग्नकाल इस स्तम्भ के अन्तर्गत दिये गये **''20 अप्रै. 23 घं. 41 मि. से 23 अप्रै. 1 घ. 51 मि.''** के मध्य पड़ता है, अतः यह मुहूर्त्त-कुण्डली (मिथुन लग्न की) यहां दी इसी कुण्डली के अनुरूप इस तरह बनेगी–

इस प्रकार पाठक समझ गये होंगे–जन्म, वर्षप्रवेश, प्रश्न, मुहूर्त्त आदि कालिक लग्नकुण्डलियां बनाना अत्यन्त सरल है।

ध्यान रहे–कुण्डली की ग्रहस्थिति (ग्रहों की राशि आदि) स्थानभेद से बिल्कुल नहीं बदलती, केवल लग्न ही बदला करता है।

2 अप्रैल से 7 मई, सन् 2022 ई. (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)

अवधि	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
2 अप्रैल 6 घं. 15 मि. से 2 अप्रैल 11 घं. 20 मि.		रा.						के.		श. मं.	शु. गु.	बु. सू. चं.
2 अप्रैल 11 घं. 21 मि. से 4 अप्रैल 21 घं. 0 मि.	चं.	रा.						के.		श. मं.	शु. गु.	बु. सू.
4 अप्रैल 21 घं. 1 मि. से 7 अप्रैल 9 घं. 8 मि.		रा. चं.						के.		श. मं.	शु. गु.	बु. सू.
7 अप्रैल 9 घं. 9 मि. से 7 अप्रैल 15 घं. 16 मि.		रा.	चं.					के.		श. मं.	शु. गु.	बु. सू.
7 अप्रैल 15 घं. 17 मि. से 8 अप्रैल 11 घं. 58 मि.		रा.	चं.					के.		श.	शु. गु. मं.	बु. सू.
8 अप्रैल 11 घं. 59 मि. से 9 अप्रैल 21 घं. 49 मि.	बु.	रा.	चं.					के.		श.	शु. गु. मं.	सू.
9 अप्रैल 21 घं. 50 मि. से 12 अप्रैल 8 घं. 33 मि.	बु.	रा.		चं.				के.		श.	शु. गु. मं.	सू.
12 अप्रैल 8 घं. 34 मि. से 12 अप्रैल 15 घं. 29 मि.	बु.	रा.			चं.			के.		श.	शु. गु. मं.	सू.
12 अप्रैल 15 घं. 30 मि. से 13 अप्रैल 15 घं. 45 मि.	बु. रा.				चं.		के.			श.	शु. गु. मं.	सू.
13 अप्रैल 15 घं. 46 मि. से 14 अप्रैल 8 घं. 40 मि.	बु. रा.				चं.		के.			श.	शु. मं.	गु. सू.
14 अप्रैल 8 घं. 41 मि. से 14 अप्रैल 15 घं. 53 मि.	सू. बु. रा.				चं.		के.			श.	शु. मं.	गु.
14 अप्रैल 15 घं. 54 मि. से 16 अप्रैल 20 घं. 0 मि.	सू. बु. रा.					चं.	के.			श.	शु. मं.	गु.
16 अप्रैल 20 घं. 1 मि. से 18 अप्रैल 22 घं. 7 मि.	सू. बु. रा.						के. चं.			श.	शु. मं.	गु.
18 अप्रैल 22 घं. 8 मि. से 20 अप्रैल 23 घं. 40 मि.	सू. बु. रा.						के.	चं.		श.	शु. मं.	गु.
20 अप्रैल 23 घं. 41 मि. से 23 अप्रैल 1 घं. 51 मि.	सू. बु. रा.						के.		चं.	श.	शु. मं.	गु.
23 अप्रैल 1 घं. 52 मि. से 25 अप्रैल 0 घं. 20 मि.	सू. बु. रा.						के.			श. चं.	शु. मं.	गु.
25 अप्रैल 0 घं. 21 मि. से 25 अप्रैल 5 घं. 28 मि.	सू. रा.	बु.					के.			श. चं.	शु. मं.	गु.
25 अप्रैल 5 घं. 29 मि. से 27 अप्रैल 10 घं. 59 मि.	सू. रा.	बु.					के.			श.	शु. मं. चं.	गु.
27 अप्रैल 11 घं. 0 मि. से 27 अप्रैल 18 घं. 16 मि.	सू. रा.	बु.					के.			श.	शु. मं.	चं. गु.
27 अप्रैल 18 घं. 17 मि. से 29 अप्रैल 7 घं. 52 मि.	सू. रा.	बु.					के.			श.	मं.	गु. चं. शु.
29 अप्रैल 7 घं. 53 मि. से 29 अप्रैल 18 घं. 41 मि.	सू. रा.	बु.					के.				मं. श.	गु. चं. शु.
29 अप्रैल 18 घं. 42 मि. से 2 मई 4 घं. 42 मि.	सू. रा. चं.	बु.					के.				मं. श.	गु. शु.
2 मई 4 घं. 43 मि. से 4 मई 16 घं. 44 मि.	सू. रा.	चं. बु.					के.				मं. श.	गु. शु.
4 मई 16 घं. 45 मि. से 7 मई 5 घं. 33 मि.	सू. रा.	बु.	चं.				के.				मं. श.	गु. शु.

7 मई से 18 जून, सन् 2022 ई. (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)

18 जून से 30 जुलाई, सन् 2022 ई. (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)

30 जुलाई से 9 सितम्बर, सन् 2022 ई. (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)

30 जुला. 12 घं. 12 मि. से 1 अग. 3 घं. 43 मि.
2 | 12 गु.
3 शु. | रा. 1 मं. | 11
सू. 4 बु. | 10 श.
5 चं. | 7 के. | 9
6 | 8

1 अग. 3 घं. 44 मि. से 1 अग. 22 घं. 28 मि.
2 | 12 गु.
3 | रा. 1 मं. | 11
सू. 4 | 10 श.
चं. 5 बु. | 7 के. | 9
6 | 8

1 अग. 22 घं. 29 मि. से 4 अग. 6 घं. 38 मि.
2 | 12 गु.
3 शु. | रा. 1 मं. | 11
सू. 4 | श. 10
5 बु. | 7 के. | 9
6 चं. | 8

4 अग. 6 घं. 39 मि. से 6 अग. 12 घं. 5 मि.
2 | 12 गु.
3 शु. | रा. 1 मं. | 11
सू. 4 | श. 10
5 बु. | चं. 7 के. | 9
6 | 8

6 अग. 12 घं. 6 मि. से 7 अग. 5 घं. 19 मि.
2 | 12 गु.
3 शु. | रा. 1 मं. | 11
सू. 4 | 10 श.
5 बु. | 7 के. | 9
6 | 8 चं.

7 अग. 5 घं. 20 मि. से 8 अग. 14 घं. 36 मि.
2 | 12 गु.
3 | रा. 1 मं. | 11
सू. 4 | 10 श.
5 बु. | 7 के. | 9
6 | 8 चं.

8 अग. 14 घं. 37 मि. से 10 अग. 14 घं. 57 मि.
2 | 12 गु.
3 | रा. 1 मं. | 11
सू. 4 शु. | श. 10
5 बु. | 7 के. | 9 चं.
6 | 8

10 अग. 14 घं. 58 मि. से 10 अग. 21 घं. 7 मि.
2 | 12 गु.
3 | रा. 1 मं. | 11
सू. 4 शु. | श. 10 चं.
5 बु. | 7 के. | 9
6 | 8

10 अग. 21 घं. 8 मि. से 12 अग. 14 घं. 48 मि.
2 मं. | 12 गु.
3 | रा. 1 | 11
सू. 4 शु. | चं. 10 श.
5 बु. | 7 के. | 9
6 | 8

12 अग. 14 घं. 49 मि. से 14 अग. 16 घं. 14 मि.
2 मं. | 12 गु.
3 | रा. 1 | 11 चं.
सू. 4 शु. | श. 10
5 बु. | 7 के. | 9
6 | 8

14 अग. 16 घं. 15 मि. से 16 अग. 21 घं. 5 मि.
2 मं. | 12 गु. चं.
3 | रा. 1 | 11
सू. 4 शु. | श. 10
5 बु. | 7 के. | 9
6 | 8

16 अग. 21 घं. 6 मि. से 17 अग. 7 घं. 22 मि.
2 मं. | 12 गु.
3 | रा. 1 चं. | 11
सू. 4 शु. | श. 10
5 बु. | 7 के. | 9
6 | 8

17 अग. 7 घं. 23 मि. से 19 अग. 6 घं. 5 मि.
मं. 2 | 12 गु.
3 | चं. 1 रा. | 11
शु. 4 | श. 10
सू. 5 बु. | 7 के. | 9
6 | 8

19 अग. 6 घं. 6 मि. से 21 अग. 2 घं. 5 मि.
चं. 2 | 12 गु.
3 | रा. 1 | 11
शु. 4 | श. 10
सू. 5 बु. | 7 के. | 9
6 | 8

21 अग. 2 घं. 6 मि. से 21 अग. 18 घं. 8 मि.
चं. 2 मं. | 12 गु.
3 | रा. 1 | 11
4 शु. | श. 10
5 सू. | 7 के. | 9
6 बु. | 8

21 अग. 18 घं. 9 मि. से 24 अग. 6 घं. 55 मि.
2 मं. | 12 गु.
3 चं. | रा. 1 | 11
4 शु. | श. 10
5 सू. | 7 के. | 9
6 बु. | 8

24 अग. 6 घं. 56 मि. से 26 अग. 18 घं. 31 मि.
2 मं. | 12 गु.
3 | रा. 1 | 11
शु. 4 चं. | श. 10
5 सू. | 7 के. | 9
6 बु. | 8

26 अग. 18 घं. 32 मि. से 29 अग. 4 घं. 14 मि.
2 मं. | 12 गु.
3 | रा. 1 | 11
4 शु. | श. 10
5 सू. चं. | 7 के. | 9
6 बु. | 8

29 अग. 4 घं. 15 मि. से 31 अग. 12 घं. 2 मि.
2 मं. | 12 गु.
3 | रा. 1 | 11
शु. 4 | श. 10
5 सू. | 7 के. | 9
बु. 6 चं. | 8

31 अग. 12 घं. 3 मि. से 31 अग. 16 घं. 17 मि.
2 मं. | 12 गु.
3 | रा. 1 | 11
शु. 4 | श. 10
5 सू. | चं. 7 के. | 9
6 बु. | 8

31 अग. 16 घं. 18 मि. से 2 सितं. 17 घं. 54 मि.
2 मं. | 12 गु.
3 | रा. 1 | 11
4 | श. 10
सू. 5 शु. | चं. 7 के. | 9
6 बु. | 8

2 सितं. 17 घं. 55 मि. से 4 सितं. 21 घं. 41 मि.
मं. 2 | 12 गु.
3 | रा. 1 | 11
4 | श. 10
5 सू. शु. | 7 के. | 9
6 बु. | 8 चं.

4 सितं. 21 घं. 42 मि. से 6 सितं. 23 घं. 37 मि.
मं. 2 | 12 गु.
3 | रा. 1 | 11
4 | श. 10
5 सू. शु. | 7 के. | 9 चं.
6 बु. | 8

6 सितं. 23 घं. 38 मि. से 9 सितं. 0 घं. 38 मि.
2 मं. | 12 गु.
3 | रा. 1 | 11
4 | श. 10 चं.
5 सू. शु. | 7 के. | 9
6 बु. | 8

9 सितम्बर से 22 अक्तूबर, सन् 2022 ई. (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)

22 अक्तूबर से 3 दिसम्बर, सन् 2022 ई. (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
22 अक्तू. 20 घं. 4 मि. से 25 अक्तू. 2 घं. 31 मि.
25 अक्तू. 2 घं. 32 मि. से 26 अक्तू. 13 घं. 47 मि.
26 अक्तू. 13 घं. 48 मि. से 27 अक्तू. 6 घं. 29 मि.
27 अक्तू. 6 घं. 30 मि. से 29 अक्तू. 9 घं. 4 मि.
29 अक्तू. 9 घं. 5 मि. से 31 अक्तू. 11 घं. 22 मि.
31 अक्तू. 11 घं. 23 मि. से 2 नवं. 14 घं. 15 मि.
2 नवं. 14 घं. 16 मि. से 4 नवं. 18 घं. 18 मि.
4 नवं. 18 घं. 19 मि. से 7 नवं. 0 घं. 2 मि.
7 नवं. 0 घं. 3 मि. से 9 नवं. 7 घं. 57 मि.
9 नवं. 7 घं. 58 मि. से 11 नवं. 18 घं. 16 मि.
11 नवं. 18 घं. 17 मि. से 11 नवं. 20 घं. 8 मि.
11 नवं. 20 घं. 9 मि. से 13 नवं. 20 घं. 47 मि.
13 नवं. 20 घं. 48 मि. से 13 नवं. 21 घं. 19 मि.
13 नवं. 21 घं. 20 मि. से 14 नवं. 6 घं. 28 मि.
14 नवं. 6 घं. 29 मि. से 16 नवं. 18 घं. 57 मि.
16 नवं. 18 घं. 58 मि. से 16 नवं. 19 घं. 14 मि.
16 नवं. 19 घं. 15 मि. से 19 नवं. 5 घं. 27 मि.
19 नवं. 5 घं. 28 मि. से 21 नवं. 12 घं. 29 मि.
21 नवं. 12 घं. 30 मि. से 23 नवं. 16 घं. 2 मि.
23 नवं. 16 घं. 3 मि. से 25 नवं. 17 घं. 20 मि.
25 नवं. 17 घं. 21 मि. से 27 नवं. 18 घं. 3 मि.
27 नवं. 18 घं. 4 मि. से 29 नवं. 19 घं. 50 मि.
29 नवं. 19 घं. 51 मि. से 1 दिसं. 23 घं. 46 मि.
1 दिसं. 23 घं. 47 मि. से 3 दिसं. 6 घं. 47 मि.

3 दिसम्बर, 2022 ई. से 14 जनवरी, 2023 ई. (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
3 दिसं. 6 घं. 48 मि. से 4 दिसं. 6 घं. 15 मि.
4 दिसं. 6 घं. 16 मि. से 5 दिसं. 17 घं. 56 मि.
5 दिसं. 17 घं. 57 मि. से 6 दिसं. 15 घं. 1 मि.
6 दिसं. 15 घं. 2 मि. से 9 दिसं. 1 घं. 42 मि.
9 दिसं. 1 घं. 43 मि. से 11 दिसं. 13 घं. 50 मि.
11 दिसं. 13 घं. 51 मि. से 14 दिसं. 2 घं. 31 मि.
14 दिसं. 2 घं 32 मि. से 16 दिसं. 9 घं. 57 मि.
16 दिसं. 9 घं 58 मि. से 16 दिसं. 14 घं. 3 मि.
16 दिसं. 14 घं 4 मि. से 18 दिसं. 22 घं. 29 मि.
18 दिसं. 22 घं 30 मि. से 21 दिसं. 2 घं. 56 मि.
21 दिसं. 2 घं 57 मि. से 23 दिसं. 4 घं. 1 मि.
23 दिसं. 4 घं 2 मि. से 25 दिसं. 3 घं. 30 मि.
25 दिसं. 3 घं 31 मि. से 27 दिसं. 3 घं. 29 मि.
27 दिसं. 3 घं 30 मि. से 28 दिसं. 5 घं. 9 मि.
28 दिसं. 5 घं 10 मि. से 29 दिसं. 5 घं. 54 मि.
29 दिसं. 5 घं 55 मि. से 29 दिसं. 16 घं. 2 मि.
29 दिसं. 16 घं 3 मि. से 30 दिसं. 22 घं. 7 मि.
30 दिसं. 22 घं 8 मि. से 31 दिसं. 11 घं. 45 मि.
31 दिसं. 11 घं 46 मि. से 2 जन. 20 घं. 50 मि.
2 जन. 20 घं 51 मि. से 5 जन. 8 घं. 4 मि.
5 जन. 8 घं 5 मि. से 7 जन. 20 घं. 22 मि.
7 जन. 20 घं 23 मि. से 10 जन. 9 घं. 0 मि.
10 जन. 9 घं 1 मि. से 12 जन. 20 घं. 58 मि.
12 जन. 20 घं 59 मि. से 14 जन. 20 घं. 44 मि.

14 जनवरी से 24 फरवरी, सन् 2023 ई. (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)

14 जन. 20 घं. 45 मि. से 15 जन. 6 घं. 47 मि.	15 जन. 6 घं. 48 मि. से 17 जन. 12 घं. 58 मि.	17 जन. 12 घं. 59 मि. से 17 जन. 18 घं. 2 मि.	17 जन. 18 घं. 3 मि. से 19 जन. 15 घं. 16 मि.	19 जन. 15 घं. 17 मि. से 21 जन. 14 घं. 51 मि.	21 जन. 14 घं. 52 मि. से 22 जन. 15 घं. 52 मि.
मं.2, 12 गु., 3, रा.1, 11, 4, सू.10 श. शु., 5, 7 के., 9 बु., 6 चं., 8	मं.2, 12 गु., 3, रा.1, 11, 4, शु.10 श. सू., 5, चं.7 के., 9 बु., 6, 8	मं.2, 12 गु., 3, रा.1, 11, 4, श.10 शु. सू. बु., 5, 7 के., 9, 6, 8 चं.	2 मं., 12 गु., 3, रा.1, 11 श., 4, शु.10 सू., 5, 7 के., 9 बु., 6, 8 चं.	2 मं., 12 गु., 3, रा.1, 11 श., 4, शु.10 सू., 5, 7 के., 9 चं. बु., 6, 8	2 मं., 12 गु., 3, रा.1, 11 श., 4, सू.10 शु. चं., 5, 7 के., 9 बु., 6, 8
22 जन. 15 घं. 53 मि. से 23 जन. 13 घं. 50 मि.	23 जन. 13 घं. 51 मि. से 25 जन. 14 घं. 28 मि.	25 जन. 14 घं. 29 मि. से 27 जन. 18 घं. 35 मि.	27 जन. 18 घं. 36 मि. से 30 जन. 2 घं. 45 मि.	30 जन. 2 घं. 46 मि. से 1 फर. 13 घं. 58 मि.	1 फर. 13 घं. 59 मि. से 4 फर. 2 घं. 30 मि.
2 मं., 12 गु., 3, रा.1, 11 श. शु., 4, चं.10 सू., 5, 7 के., 9 बु., 6, 8	2 मं., 12 गु., 3, रा.1, 11 श. शु. चं., 4, 10 सू., 5, 7 के., 9 बु., 6, 8	2 मं., चं.12 गु., 3, रा.1, 11 श. शु., 4, सू.10, 5, 7 के., 9 बु., 6, 8	2 मं., 12 गु., 3, रा.1 चं., 11 श. शु., 4, सू.10, 5, 7 के., 9 बु., 6, 8	चं.2 मं., 12 गु., 3, रा.1, 11 श. शु., 4, सू.10, 5, 7 के., 9 बु., 6, 8	2 मं., 12 गु., 3 चं., रा.1, 11 श. शु., 4, सू.10, 5, 7 के., 9 बु., 6, 8
4 फर. 2 घं. 31 मि. से 6 फर. 15 घं. 2 मि.	6 फर. 15 घं. 3 मि. से 7 फर. 7 घं. 28 मि.	7 फर. 7 घं. 29 मि. से 9 फर. 2 घं. 48 मि.	9 फर. 2 घं. 49 मि. से 11 फर. 13 घं. 1 मि.	11 फर. 13 घं. 2 मि. से 13 फर. 9 घं. 43 मि.	13 फर. 9 घं. 44 मि. से 13 फर. 20 घं. 36 मि.
मं.2, 12 गु., 3, 1 रा., 11 श. शु., 4 चं., सू.10, 5, 7 के., 9 बु., 6, 8	2 मं., 12 गु., 3, रा.1, 11 श. शु., 4, सू.10, 5 चं., 7 के., 9 बु., 6, 8	2 मं., 12 गु., 3, रा.1, 11 श. शु., 4, बु.10 सू., 5 चं., 7 के., 9, 6, 8	2 मं., 12 गु., 3, रा.1, 11 श. शु., 4, बु.10 सू., 5, 7 के., 9, चं. 6, 8	2 मं., 12 गु., 3, रा.1, 11 श. शु., 4, सू.10 बु., 5, चं. 7 के., 9, 6, 8	2 मं., 12 गु., 3, रा.1, 11 श. शु. सू., 4, 10 बु., 5, चं. 7 के., 9, 6, 8
13 फर. 20 घं. 37 मि. से 15 फर. 20 घं. 1 मि.	15 फर. 20 घं. 2 मि. से 16 फर. 0 घं. 45 मि.	16 फर. 0 घं. 46 मि. से 18 फर. 1 घं. 47 मि.	18 फर. 1 घं. 48 मि. से 20 फर. 1 घं. 13 मि.	20 फर. 1 घं. 14 मि. से 22 फर. 1 घं. 10 मि.	22 फर. 1 घं. 11 मि. से 24 फर. 3 घं. 43 मि.
2 मं., 12 गु., 3, रा.1, 11 श. शु. सू., 4, 10 बु., 5, 7 के., 9, 6, 8 चं.	2 मं., शु.12 गु., 3, रा.1, 11 श. सू., 4, बु.10, 5, 7 के., 9, 6, 8 चं.	2 मं., शु.12 गु., 3, रा.1, 11 श. सू., 4, बु.10, 5, 7 के., 9 चं., 6, 8	मं.2, शु.12 गु., 3, रा.1, 11 श. सू., 4, चं.10 बु., 5, 7 के., 9, 6, 8	मं.2, शु.12 गु., 3, रा.1, 11 श. सू. चं., 4, 10 बु., 5, 7 के., 9, 6, 8	2 मं., चं.12 गु. शु., 3, रा.1, 11 श. सू., 4, बु.10, 5, 7 के., 9, 6, 8

24 फरवरी से 22 मार्च, सन् 2023 ई. (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)

24 फर. 3 घं. 44 मि. से 26 फर. 10 घं. 13 मि.

मं. 2 | शु. 12 गु. | 3 | रा. 1 चं. | 11 श. सू. | 4 | बु. 10 | 5 | 7 के. | 9 | 6 | 8

26 फर. 10 घं. 14 मि. से 27 फर. 16 घं. 45 मि.

मं. 2 चं. | शु. 12 गु. | 3 | रा. 1 | 11 सू. श. | 4 | बु. 10 | 5 | 7 के. | 9 | 6 | 8

27 फर. 16 घं. 46 मि. से 28 फर. 20 घं. 31 मि.

मं. 2 चं. | शु. 12 गु. | 3 | रा. 1 | 11 श. सू. बु. | 4 | 10 | 5 | 7 के. | 9 | 6 | 8

28 फर. 20 घं. 32 मि. से 3 मार्च 8 घं. 57 मि.

2 मं. | शु. 12 गु. | 3 चं. | रा. 1 | 11 सू. श. बु. | 4 | 10 | 5 | 7 के. | 9 | 6 | 8

3 मार्च 8 घं. 58 मि. से 5 मार्च 21 घं. 29 मि.

2 मं. | शु. 12 गु. | 3 | रा. 1 | 11 सू. श. बु. | 4 चं. | 10 | 5 | 7 के. | 9 | 6 | 8

5 मार्च 21 घं. 30 मि. से 8 मार्च 8 घं. 52 मि.

2 मं. | शु. 12 गु. | 3 | रा. 1 | 11 श. सू. बु. | 4 | 10 | 5 चं. | 7 के. | 9 | 6 | 8

8 मार्च 8 घं. 53 मि. से 10 मार्च 18 घं. 35 मि.

2 मं. | शु. 12 गु. | 3 | रा. 1 | 11 श. सू. बु. | 4 | 10 | 5 | 7 के. | 9 | चं. 6 | 8

10 मार्च 18 घं. 36 मि. से 12 मार्च 8 घं. 26 मि.

2 मं. | शु. 12 गु. | 3 | रा. 1 | 11 श. सू. बु. | 4 | 10 | 5 | चं. 7 के. | 9 | 6 | 8

12 मार्च 8 घं. 27 मि. से 13 मार्च 2 घं. 17 मि.

2 मं. | 12 गु. | 3 | रा. 1 शु. | 11 श. सू. बु. | 4 | 10 | 5 | चं. 7 के. | 9 | 6 | 8

13 मार्च 2 घं. 18 मि. से 13 मार्च 5 घं. 1 मि.

2 मं. | 12 गु. | 3 | रा. 1 शु. | 11 श. सू. बु. | 4 | 10 | 5 | 7 के. | 9 | 6 | चं. 8

13 मार्च 5 घं. 2 मि. से 15 मार्च 6 घं. 33 मि.

2 | 12 गु. | 3 मं. | रा. 1 शु. | 11 श. सू. बु. | 4 | 10 | 5 | 7 के. | 9 | 6 | 8 चं.

15 मार्च 6 घं. 34 मि. से 15 मार्च 7 घं. 32 मि.

2 | सू. 12 गु. | 3 मं. | रा. 1 शु. | 11 श. बु. | 4 | 10 | 5 | 7 के. | 9 | 6 | 8 चं.

15 मार्च 7 घं. 33 मि. से 16 मार्च 10 घं. 46 मि.

2 | सू. 12 गु. | 3 मं. | शु. 1 रा. | 11 श. बु. | 4 | 10 | 5 | 7 के. | 9 चं. | 6 | 8

16 मार्च 10 घं. 47 मि. से 17 मार्च 10 घं. 17 मि.

2 | बु. 12 गु. सू. | 3 मं. | रा. 1 शु. | 11 श. | 4 | 10 | 5 | 7 के. | 9 चं. | 6 | 8

17 मार्च 10 घं. 18 मि. से 19 मार्च 11 घं. 16 मि.

2 | बु. 12 गु. सू. | 3 मं. | रा. 1 शु. | 11 श. | 4 | चं. 10 | 5 | 7 के. | 9 | 6 | 8

19 मार्च 11 घं. 17 मि. से 21 मार्च 11 घं. 56 मि.

2 | सू. 12 गु. बु. | 3 मं. | रा. 1 शु. | 11 श. चं. | 4 | 10 | 5 | 7 के. | 9 | 6 | 8

21 मार्च 11 घं. 57 मि. से 22 मार्च 6 घं. 27 मि.

2 | सू. 12 बु. गु. चं. | 3 मं. | रा. 1 शु. | 11 श. | 4 | 10 | 5 | 7 के. | 9 | 6 | 8

2 | 12 | 3 | 1 | 11 | 4 | 10 | 5 | 7 | 9 | 6 | 8

2 | 12 | 3 | 1 | 11 | 4 | 10 | 5 | 7 | 9

2 | 12 | 3 | 1 | 11 | 4 | 10 | 5 | 7 | 9

2 | 12 | 3 | 1 | 11 | 4 | 10 | 5 | 7 | 9

2 | 12 | 3 | 1 | 11 | 4 | 10 | 5 | 7 | 9

2 | 12 | 3 | रा. 1 | 11 | 4 | 10 | 5 | 7 | 9

2 | 12 | 3 | 1 | 11 | 4 | 10 | 5 | 7 | 9

शनि की साढेसाती, ढैय्या एवं सुवर्णादि पादविचार और गुरु-राहु का गोचरफल (सं. 2079 वि.)

लेखक–इन्दुशेखर शर्मा, संयमी शर्मा,

जन्मकुण्डली में शनैश्चर का शुभ ग्रह से सम्बन्ध हो अथवा महादशा का अन्तर शुभ चल रहा हो तो ढैय्या और साढेसाती का अशुभ फल कम होता है। यदि चन्द्र, शनि जन्म में अशुभ ग्रहों से युक्त हों तो साढेसाती व ढैय्या महान् अशुभ, चिन्ता, अवनति, धनहानि, झगड़ा, कार्य में विघ्न, रोजगार में कमी, व्यर्थ कलह एवं रोग, पशु-पीड़ा आदि का कारण बनती है। यदि जन्मकुण्डली में शनि अष्टमेश या मारकेश हो तो भी ढैय्या, साढेसाती विशेष अनिष्ट फलप्रद होती है। यदि **जन्म में शनि लग्नेश, पंचमेश, नवमेश होकर 3, 6, 11 में स्थित हो तो सुख-सम्पत्ति मिलती है, व्यापारादि में लाभ होता है।** शनि के अष्टकवर्ग में अधिक रेखाएं हों तो शुभ; कम रेखाएं हों तो अशुभ फल निश्चित होता है।

शनि की साढेसाती किसे कहते हैं ? शनि की गोचर स्थिति को ध्यान में रखते हुए जब किसी व्यक्तिविशेष की **जन्मराशि किंवा नामराशि** से पहले, दूसरे या बारहवें स्थान में शनि हो तो गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार जातक '**साढेसाती**' के प्रभाव में रहता है, अर्थात् उस व्यक्ति पर साढेसाती चल रही होती है–

''द्वादशे जन्मगे राशौ द्वितीये च शनैश्चरः।
सार्धानि सप्तवर्षाणि तदा दुःखैर्युतो भवेत्।।''

व्यक्तिविशेष के लिए साढेसाती का फल इसप्रकार लिखा है–

''राशौ द्वादशे मूर्ध्नि जन्महृदये पादौ द्वितीये शनिः।
नानाक्लेशकरो हि दुर्जनभयं पुत्रान् पशून् पीडयेत्।।''

''शनि की ढैय्या'' किसे कहते हैं ? यह भी जान लें–गोचर अनुसार किसी व्यक्तिविशेष की जन्मराशि किंवा नामराशि से जब शनिदेव चौथे या आठवें स्थान पर हों तो उस व्यक्तिविशेष पर **''शनि की ढैय्या''** चल रही है, ऐसा जानें। ढैय्या का फल इस प्रकार है–

''ढैय्या तु प्रददाति वै रविसुतश्चेद्राशेश्चतुर्थाष्टमे।
व्याधिं बन्धुविरोध-विदेशगमनं क्लेशं च चिन्ताधिकम्।।''

ध्यान दें–शुभ एवं क्रूरग्रहविचार में गुरु-शुक्र स्थितिविशेष-विचार से शुभ एवं शनि-मंगल अशुभ फलप्रद माने गये हैं–

''तेषामतीव शुभदौ गुरु-दानवेज्यौ।
क्रूरौ दिवाकरसुत-क्षितिभौ भवेताम्।।''

–(फलितमार्त्तण्ड)

शनि के लगभग अढाई वर्ष तक एक ही राशि में संचार करने के कारण इसे '**मन्द**' किंवा '**शनैश्चरति इति शनिः**' की संज्ञा दी गयी है। लेकिन शनि वक्र एवं मार्गी गति के कारण अनेकदा अपने अढाई वर्ष के काल में न्यूनाधिकता भी कर देता है। कभी-कभी शनि अपनी वक्र-मार्ग गति एवं अतिचार के कारण एक वर्ष में दो राशियों को भी स्पर्श कर लेता है, जोकि मेदिनी ज्योतिष के अनुसार तत्तद्राशि के व्यक्ति एवं देश के लिए कठिन परिस्थितियों को जन्म देता है।

अनेकदा शनि-मंगल दोनों क्रूर ग्रह वर्ष में वक्रगति से चलें या दोनों में से कोई एक वक्रगति से चलकर एकराशि-सम्बन्ध बना लें तो अधिक नेष्ट फलप्रद हो जाते हैं। ऐसी स्थिति में जातकविशेष को साढेसाती किंवा ढैय्या शारीरिक कष्ट, वायु-रक्त-पित्त-विकार, त्वचारोग, आर्थिक संकट, शत्रुपक्ष से मानसिक परेशानी, दुर्घटना से हानि आदि फल करते हैं। देशविशेष के लिए राजनीतिज्ञों में विरोध, सत्तासंघर्ष, प्रतिष्ठित व्यक्ति की मृत्यु, आर्थिक/सामाजिक अव्यवस्था, असन्तोष, भूकम्प, तूफान, दुर्भिक्ष आदि प्राकृतिक प्रकोप, सीमाप्रान्तों पर अशान्ति आदि आपदाएं उपस्थित करता है–**''क्रूराः वक्राः महाक्रूराः।''**

शनि-पादविचार

"जन्मांग-रुद्रेषु सुवर्णपादं द्विपञ्चनन्दे रजतस्य पादम्।
त्रि-सप्त-दिक् ताम्रपादं वदन्ति शेषेषु राशिष्विह लौहपादम्।।"

पादफल-विचार–

"लौहे धनविनाशः स्यात् सर्वं दुःखं च काञ्चने।
ताम्रे च समता ज्ञेया सौभाग्यं च राजते भवेत्।।"

शनि के राशिपरिवर्तन के समय यदि चन्द्र 1, 6, 11 स्थान में हो तो स्वर्णपाद; 2, 5, 9 स्थान में हो तो रजतपाद; 3, 7, 10 स्थान में चन्द्र हो तो ताम्रपाद। यदि शनि के राशि-परिवर्तन के समय चन्द्र 4, 8, 12 में हो तो लौहपाद होता है। स्वर्णपाद सभी प्रकार के दुःखों को देने वाला, रजतपाद सुख-सौभाग्यप्रद, ताम्रपाद मध्यम फलद एवं लौहपाद धन-धान्य का नाशक होता है।

मकर राशिस्थ शनि की साढेसाती एवं ढैय्या का विचार

संवत् 2076वि. में 24 जनवरी, सन् 2020 ई. को उ.षा. नक्षत्र एवं मकरस्थ चन्द्र के समय 9 घं. 52 मि. पर शनिदेव मकर राशि में प्रविष्ट होकर सं. 2079 वि. में 28अप्रैल, सन् 2022 ई. तक मकर राशि में ही रहेंगे।

मकरराशिस्थ शनि की साढेसाती एवं ढैय्या का फल

(सवत् 2079 वि. के प्रारंभ से 28 अप्रैल, सन् 2022 ई. तक के लिए)

राशि	ढैय्या या साढेसाती	पाद	साढेसाती		शुभाशुभ फल
			किस अंग पर	चढ़ती या उतरती	
मिथुन	ढैय्या	लौहपाद	–	–	शरीरपीड़ा, रक्तविकार, स्त्री-कष्ट, पुत्र किंवा पशुपीड़ा, व्यापार में हानि एवं आर्थिक संकट का सामना करना पड़े।
तुला	ढैय्या	लौहपाद	–	–	शरीरकष्ट, रक्तविकार, स्त्री-पुत्र-कष्ट, व्यापार में हानि, आर्थिक संकट एवं पशुपीड़ा हो।
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	व्यापार में प्रगति, [illegible]

राशि	ढैय्या या साढेसाती	पाद	साढेसाती		शुभाशुभ फल
			किस अंग पर	चढ़ती या उतरती	
मकर	साढेसाती	सुवर्णपाद	हृदय	–	शत्रुप्रबल, निज-जन-विरोध, रोगभय, परिवार में क्लेश, धनहानि हो, चिन्ता आदि से कष्टप्रद समय।
कुम्भ	साढेसाती	लौहपाद	मस्तक	चढ़ती	शरीरपीड़ा, रक्तविकार, स्त्री-पुत्र-पशु-पीड़ा, व्यापार में हानि, राजपक्ष से भय-कष्ट, आर्थिक संकट भी रहे।

मकरस्थ शनि में–मिथुन, तुला ये दोनों राशियां शनि की ढैय्या के प्रभाव में एवं धनु मकर एवं कुम्भ राशियां साढेसाती के प्रभाव में रहेंगी। धनु राशि पर साढेसाती पैरों पर उतरती हुई है। **मकर राशि** के हृदय पर साढेसाती रहेगी और **कुम्भ राशि** के मस्तक पर साढेसाती रहेगी।

मकरस्थ शनि का मेषादि राशियों के लिए सुवर्णादि पादफलविचार–

1. मेष, कर्क एवं वृश्चिक राशियों पर ताम्रपाद होने से शुभफलप्रद रहेगा, धन-धान्यसमृद्धि रहेगी। उच्चपदस्थ लोगों के साथ सम्बन्ध रहें। शिक्षा-व्यवसाय में सफलता, सन्तान, आरोग्य किंवा वाहन आदि सुविधाओं से सुखप्राप्ति, देशविदेश-यात्रा से लाभ रहे।

"अनन्त-लक्ष्मीं प्रकरोति लाभं कलत्र-पुत्रैः सुख-सम्पदाप्तिम्।
लाभोदयं चैव करोति सौख्यं, शरीर-सौख्यं खलु ताम्रपादे।।"

2. वृष-कन्या तथा धनु राशियों पर शनि रजतपाद में है। यह शुभफलप्रद रहेगा। व्यापार किंवा नौकरी में उन्नति, प्रभावक्षेत्र बढ़े, राजकीय कार्यों में सम्मान मिले, सुख-सम्पदा से लाभ, घर में मांगलिककृत्य हों। **यथा–**

"व्यापार उग्रो धन-धान्यसंपत् महाप्रतापः खलु राजमानः।
तद्वर्षमध्ये खलु सम्पदाप्तिः स्यान्मंगलं वै यदि रौप्यपादे।।"

3. मिथुन, तुला, कुम्भ राशियों पर शनि का लौहपाद होने से आर्थिक-सामाजिक किंवा व्यवसायिक परेशानियों का सामना करना पड़ता है। शरीर में रुधिर-[illegible] पार में भयंकर हानि, राजपक्ष से भय आदि चिन्ताजनक

"शरीरपीड़ा रुधिरप्रकोपः कलत्रपीड़ा पशु-पुत्रहानिः।
व्यापारनाशो नृपतेः भयं च लौहस्य पादे खलु निर्धनत्वम्।।"

4. **सिंह-मकर-मीन राशियों पर शनि का सुवर्णपाद होने से** पारिवारिक कलह, क्लेश, शारीरिक व्याधियों से परेशानी रहे व हमेशा मानसिक-शारीरिक परेशानी से व्यथा रहे, अकारण धनधान्यहानि से भी व्यापारक्षेत्र की चिन्ता रहे। **यथा–**

"कुटुम्बवैरं बहुरोगयुक्तं क्लेशोदयं चैव करोति नित्यम्।
द्रव्यार्थनाशं बहुलं करोति सुवर्णपादे स्वजनैर्विरोधम्।।"

शनि कुम्भ में

29 अप्रैल, सन् 2022 ई. को रेवती नक्षत्र, विष्कम्भ योग एवं मीनस्थ चन्द्र के समय **शनिदेव कुम्भ राशि** में प्रविष्ट होकर **11 जुलाई, 2022 ई. तक** कुम्भ राशि में ही रहेंगे।

कुम्भ राशिस्थ शनि की साढेसाती एवं ढैय्या का विचार

कुम्भस्थ शनि में कर्क, वृश्चिक राशि वाले जातक ढैय्या के प्रभावक्षेत्र में हैं। पाद रजत रहेगा।

फल– व्यापार में प्रगति, धन-धान्य-समृद्धि, सुख-सम्पदालाभ, प्रभावक्षेत्र बढ़े, घर में मंगलकृत्य हों, राजपक्ष से सम्मान मिले।

मकर-राशि वाले जातक साढेसाती के प्रभावक्षेत्र में हैं। साढेसाती पैरों पर उतरती है। ताम्र पाद प्रभावी है।

फल– अचानक धनलाभ, स्त्री, पुत्रसुख, सम्पत्तिलाभ, सेहत ठीक, प्रगति के मार्ग प्रशस्त हों।

कुम्भ राशि को साढेसाती हृदय पर रहेगी। रजत पाद प्रभावी है।

फल– व्यापार में प्रगति, धन-धान्य-समृद्धि, सुख-सम्पदालाभ, प्रभावक्षेत्र बढ़े, घर में मंगलकृत्य हों, राजपक्ष से सम्मान मिले।

मीन राशि को साढेसाती चढ़ती मस्तक पर प्रभावी रहेगी। सुवर्ण पाद है।

फल– शत्रु प्रबल, निज-जन-विरोध, रोगभय, परिवार में क्लेश, धनहानि हो, चिन्ता आदि से कष्टप्रद समय।

1. मेष सिंह, धनु राशियों पर लौहपाद होने से इन राशियों के व्यक्तियों को शरीर-पीड़ा, रक्तविकार, स्त्री-पुत्र-पशुपीड़ा, व्यापार में हानि और आर्थिक संकट का सामना करना पड़े।

2. वृष, तुला, मीन राशि वालों को सुवर्ण पाद होने से शत्रुप्रबल, निजीजन-विरोध, रोगभय, परिवार में क्लेश, धनहानि, चिन्ता आदि से कष्ट रहे।

3. मिथुन, कन्या, मकर राशि वालों को ताम्रपाद होने से अचानक अर्थलाभ, स्त्री-पुत्रसुख, सम्पत्तिलाभ, सेहत ठीक और प्रगति के मार्ग प्रशस्त होंगे।

4. कर्क, वृश्चिक, कुम्भ राशि वालों को रजतपाद होने से व्यापार में प्रगति, धन-धान्यवृद्धि, सुख-सम्पत्तिलाभ, प्रभावक्षेत्र-वृद्धि, घर में मंगलकृत्य हों और राजपक्ष से सम्मान मिले।

शनि मकर में

12 जुलाई, सन् 2022 ई. को वक्रगति से मूल नक्षत्र, ब्रह्मयोग एवं धनुःस्थ चन्द्र के समय शनिदेव पुनः मकर राशि में प्रविष्ट होकर 16जनवरी, सन् 2023 ई. तक मकरराशि में ही रहेंगे।

मकरराशिस्थ शनि की साढ़ेसाती एवं ढैय्या का फल

(12 जुलाई, सन् 2022 ई. से 16जनवरी, सन् 2023 ई. तक के लिए)

राशि	ढैय्या या साढेसाती	पाद	साढेसाती		शुभाशुभ का फल
			किस अंग पर	चढ़ती या उतरती	
मिथुन	ढैय्या	ताम्र	–	–	अचानक धनलाभ, स्त्री/पुत्र-सुख, सम्पत्ति-लाभ, सेहत ठीक, प्रगति के मार्ग बनें।
तुला	ढैय्या	ताम्र	–	–	अचानक धनलाभ, स्त्री/पुत्र-सुख, सम्पत्ति-लाभ, सेहत ठीक, प्रगति के मार्ग बनें।
धनु	साढेसाती	सुवर्ण	पाद	उतरती	शत्रु प्रबल, निज-जन-विरोध, रोगभय, परिवार में क्लेश, धनहानि हो, चिन्ता आदि से कष्टप्रद समय।
मकर	साढेसाती	लौह	हृदय	–	शरीरपीड़ा, रक्तविकार, स्त्री-पुत्र-पशु-पीड़ा, व्यापार में हानि, राजपक्ष से भय-कष्ट, आर्थिक संकट भी रहे।
कुम्भ	साढेसाती	सुवर्ण	मस्तक	चढ़ती	शत्रु प्रबल, निज-जन-विरोध, रोगभय, परिवार में क्लेश, धनहानि हो, चिन्ता आदि से कष्टप्रद समय।

संक्षेपत: मकरस्थ शनि की साढेसाती एवं ढैय्या का विचार–

1. मकरस्थ शनि की समयावधि में धनु-मकर-कुम्भ राशि वाले व्यक्ति साढ़ेसाती के प्रभावक्षेत्र में रहेंगे और मिथुन व तुला वाले ढैय्या के प्रभाव में।

2. धनुराशि वाले जातक-जातिकाओं को साढेसाती पैरों पर उतरती हुई (अन्तिमावस्था में) रहेगी।

3. मकर राशि वालों को शनि की साढेसाती हृदय पर (प्रभावी अवस्था) में रहेगी।

4. कुम्भ राशि वालों को शनि की साढेसाती प्रारम्भिक अवस्था में (सिर पर चढ़ती हुई) होगी।

मकरस्थ शनि में ढैय्या-विचार–मिथुन किंवा तुला राशि वाले जातकों को शनि की ढैय्या का प्रभाव रहेगा।

1. मेष, सिंह, वृश्चिक राशि वालों को रजतपाद होने से व्यापार में प्रगति, धन-धान्यवृद्धि, सुख-सम्पत्तिलाभ, प्रभाववृद्धि, घर में मंगलकृत्य हों, राजपक्ष से सम्मान मिले।

2. वृष, कन्या, मकर राशि वालों को लौहपाद होने से शरीरकष्ट, रक्तविकार, स्त्री/पुत्रकष्ट, व्यापार में हानि, आर्थिक संकट व पशुपीड़ा रहे।

3. मिथुन, तुला, मीन को ताम्रपाद होने से अचानक धनलाभ, स्त्री/पुत्र से सुख, सम्पत्तिवृद्धि, स्वास्थ्य ठीक, प्रगति के मार्ग प्रशस्त हों।

4. कर्क, धनु, कुम्भ को सुवर्णपाद होने से शत्रुप्रबल, निजीजन-विरोध, रोगभय, परिवार में क्लेश, धनहानि हो व चिन्ता बढ़े।

शनि पुन: कुम्भ में

17 जनवरी, सन् 2023 ई. को विशाखा नक्षत्र, गण्ड योग, वृश्चिकस्थ चन्द्र के समय शनिदेव कुम्भ राशि में प्रविष्ट होकर संवत् 2079 वि. के अन्त तक कुम्भ राशि में ही रहेंगे।

कुम्भस्थ शनि की साढेसाती एवं ढैय्या का विचार–

कुम्भ-साढेसाती-हृदय पर, पाद ताम्र। **फल**–अचानक धनलाभ, स्त्री/पुत्रसुख, सम्पत्तिलाभ, सेहत ठीक, प्रगति के मार्ग बनें।

मकर–साढेसाती–पैरों पर उतरती, सुवर्णपाद। **फल**–शत्रु प्रबल, निज-जन-

मीन–साढेसाती–मस्तक पर चढ़ती, पाद रजत। **फल**–व्यापार में प्रगति, धन-धान्य-समृद्धि, सुख-सम्पदालाभ, प्रभावक्षेत्र बढ़े, घर में मंगलकृत्य हों, राजपक्ष से सम्मान।

कुम्भस्थ शनि में कर्क/वृश्चिक राशि के व्यक्ति ढैय्या के प्रभाव में रहेंगे।

1. मेष, सिंह, धनु को लौहपाद होने से शरीरपीड़ा, स्त्री/पुत्र/पशु-पीड़ा, व्यापार में हानि व आर्थिक संकट रहे।

2. वृष, कन्या, कुम्भ को ताम्रपाद होने से अचानक धनलाभ, स्त्रीपुत्र-सुख, सम्पत्तिलाभ, सेहत ठीक, प्रगति के मार्ग बनें।

3. मिथुन, वृश्चिक, मकर को सुवर्णपाद होने से शत्रुप्रबल, निजीजन-विरोध, रोगभय, पारिवारिक क्लेश, धनहानि व चिन्ता आदि से कष्ट रहे।

4. कर्क, तुला, मीन को रजतपाद होने से व्यापार में प्रगति, धन-धान्यसमृद्धि, सुख-सम्पदालाभ, प्रभावक्षेत्र-वृद्धि, घर में मंगलकार्य हों, राजपक्ष से सम्मान मिले।

साढेसाती में प्रत्येक राशि के लिए शनि का सामान्यतया अशुभ फल कब होगा–

मेष राशि वालों के बीच के अढाई वर्ष खराब हैं। वृष को पहले अढाई वर्ष, मिथुन को अन्त के अढाई वर्ष, कर्क को बीच के अढाई वर्ष, सिंह को पहले 5 वर्ष, उनमें भी मध्य के अढाई वर्ष खराब हैं। कन्या को पहले 5 वर्ष, उनमें भी मध्य के अढाई वर्ष विशेष अशुभ हैं। तुला को आखिर के अढाई वर्ष, वृश्चिक को अन्तिम 5 वर्ष नेष्ट हैं, उनमें भी मध्य के अढाई वर्ष विशेष अशुभ हैं। धनु को प्रारम्भ के अढाई वर्ष, मकर को पहले 5 वर्ष, उनमें भी पहिले अढाई वर्ष विशेष खराब हैं। कुम्भ को आदि एवं अन्त के पांच वर्ष, विशेषत: अन्त के अढाई वर्ष अधिक अशुभ हैं। मीन को पूरे साढेसात वर्ष नेष्ट हैं, उनमें भी अन्त के अढाई वर्ष विशेष अशुभ फल देने वाले होते हैं।

शनिजन्य नेष्टफल–शान्त्यर्थ शास्त्रीय उपाय

शनि की साढेसाती/ढैय्या के नेष्टफल की शान्ति के लिए शनि के बीजमन्त्र या वैदिक मन्त्र का 23,000 की संख्या में विधिपूर्वक जाप करें। तदुपरान्त दशांश हवनादि करें। शनिवार के दिन सतनाजा-दान, लौहपात्र में तैलदान, शनिस्तोत्र का पाठ करना/कराना श्रेयस्कर रहता है। इसके अतिरिक्त शुभ वेला में 'नीलम' रत्न एवं

करने से पूर्व शनि के अंशादि का अध्ययन करवाकर किसी दैवज्ञ का परामर्श ले लेना श्रेयस्कर होगा।

शनि का बीज मन्त्र–"ॐ प्रां प्रीं प्रौं स: शनये नम:।"

प्रतिदिन 3 माला मन्त्रजाप करें। मन्त्रजाप से पहले "**अमुक मासे, अमुक पक्षे, अमुक तिथौ, शनैश्चर-नेष्टफलशान्त्यर्थम् शनि-मन्त्रजापमहं करोमि**"–इस प्रकार संकल्प करके शनि-मन्त्रजाप करें।

शनिवारी अमावस वाले दिन सूर्यास्तसमय (गोधूलिवेला में) शनि-मन्त्रजाप, स्तोत्रपाठ करें एवं तेल में मुंह देखकर, उसमें एक लौंग डालकर दान करें और सायंकाल पीपल के नीचे दीपक जलायें।

मन्त्रजाप की विधि–अनुष्ठान शनिवार को करें। सूर्यास्त-समय स्नान करके कम्बलासन पर बैठकर, पश्चिमाभिमुख होकर (पश्चिम की तरफ मुंह करके) लोहे के खुले बर्तन में जौ, लौंग एवं काले तिल प्रत्येक 200 ग्राम लेकर एक अंजलिभर चावल और 7 सुपारी रखें। मौली, धूप, लाल चन्दन, दो अपूप (पूड़े) भी सामने रख लें। मिट्टी के बर्तन में तेल का दीपक प्रज्वलित करें एवं एक स्टील का लोटा तेल से भरकर सामने रखकर "**ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनये नम:**"–इस मन्त्र का कुल 23 हज़ार जाप करें। मन्त्रजाप पूर्ण होने के बाद सारी सामग्री, जो सामने रखी थी, को जलप्रवाह कर दें। तेलभरी गड़वी (लोटा) में लौंग डालकर शनि वाले डकौत को दें। सामग्री को जलप्रवाह करते समय निम्नांकित मन्त्र का उच्चारण करें–

"ॐ नम: कृष्णाय नीलाय शिति-कण्ठनिभाय च।
नम: कालाग्नि-रूपाय कृतान्ताय च ते नम:।।"

इस मन्त्रोच्चारण के बाद "**दूर जाते हुए शनि को पृष्ठभाग**" से नमस्कार करके घर को जायें। किसी अच्छे विद्वान् दैवज्ञ के परामर्श से (कुण्डली दिखाकर) '**नीली**' या '**नीलम**' नग धारण करना भी ठीक रहेगा।

'नीलम' रत्न का काम देने वाली वनौषधि

शनिदोष-निवारण के लिए अनेक व्यक्ति '**नीलम**' धारण करते हैं, परन्तु सबको अनुकूल बैठने वाला शुद्ध '**नीलम**' रत्न बहुत कम मिलता है। उसकी भले-बुरे की परीक्षा भी कठिन है और यह रत्न बहुमूल्य (महंगा) होता है। अत: सर्वसाधारण मनुष्य खरीद नहीं सकते। ऐसे व्यक्ति नीलम के अभाव में '**बिच्छू बूटी**' की जड़ का प्रयोग करें। बिच्छू-बूटी हिमाचल प्रदेश में बहुत होती है। कोमल कांटेदार पत्तों को स्पर्श करने से वृश्चिकदंश जैसी पीड़ा होने लगती है। अत: इसका नाम बिच्छू-बूटी है। शुक्लपक्ष शनिवार को प्रात:(यदि पुष्य नक्षत्र भी मिल जाये तो अत्युत्तम) बिच्छू-बूटी की जड़ उखाड़कर ले आयें। पहले दिन शुक्रवार की सन्ध्या को निमन्त्रण दे आयें। इस जड़ के टुकड़े को चांदी के ताबीज में भरकर शनिमन्त्र से धारण करें। यह हर व्यक्ति का शनिदोष निवारण करती है।

शनिजन्य नेष्टफल-शान्त्यर्थ वैदिक मन्त्र

"ॐ शं नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये, शंय्योरभिस्रवन्तु न:।शं शनये नम: ॐ।।"

शनिजन्य नेष्टफल-शान्त्यर्थ शनैश्चर-स्तोत्र

पिप्पलाद उवाच–

"ॐ नमस्ते कोणसंस्थाय पिंगलाय नमोऽस्तु ते।।
नमस्ते बभ्रुरूपाय कृष्णाय च नमोऽस्तु ते।।
नमस्ते रौद्रदेहाय नमस्ते चांतकाय च।
नमस्ते यमसंज्ञाय नमस्ते सौरये विभो।।
नमस्ते मन्दसंज्ञाय शनैश्चर नमोऽस्तु ते।
प्रसादं कुरु देवेश दीनस्य प्रणतस्य च।।"

इस स्तोत्र का पाठ शनिवार को पीपल के नीचे बैठकर एवं अन्य दिनों में भगवान् शंकर से प्रार्थनापूर्वक शिवमन्दिर या घर में भी बैठकर प्रात: करने से साढेसाती व ढैय्या की दु:खद पीड़ा नहीं होती है, अनुभूत है।

शनिजन्य नेष्टफल–परिहारार्थ तुलादान करायें–

विधि–शनि ग्रह से पीड़ित व्यक्ति अपने जन्मदिन पर या शनैश्चरी अमावस/ शनिवार को दिन में लगभग 11/12 बजे गेहूं, काले चने, चावल, बाजरा, कालीदाल (माह), जौ, मूंग आदि (सात) अनाजों से अपने वजन के बराबर तौल कर दान (तुलादान) करें। साथ ही तेल में मुंह देखकर दक्षिणासहित शनि का दान लेने वाले (ढौंसी) को दे दें। बाद में तुलादान के समय पहने हुए कपड़े भी स्नान करके, दान कर दें।

नोट–तुलादान से पहले यदि कोई बहुमूल्य आभूषण आदि शरीर पर धारण किया हुआ हो, वह भी पहले ही उतार दें, अन्यथा वह भी दान करना होगा।

संवत् 2079 वि. के प्रारम्भ में कुम्भस्थ गुरु

संवत् 2077वि. में 6 अप्रैल, सन् 2021 ई. को 0 घं. 25 मि. पर उ.षा. नक्षत्र, सिद्धयोग एवं **मकरस्थ चन्द्र** के समय गुरुदेव कुम्भ राशि में प्रविष्ट होकर सं. 2079 वि. में 12 अप्रैल, सन् 2022 ई. तक **कुम्भ राशि** में ही रहेंगे।

कुम्भस्थ गुरु का प्रत्येक राशि के लिए शुभाशुभ फल

(संवत् 2079 वि. के प्रारम्भ से 12 अप्रैल, 2022 ई. तक के लिए)

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
फल	प्रगति	धनहानि	धनलाभ	धननाश	सम्मान	रोग	सुख	धनहानि	शरीरकष्ट	धनलाभ	भय	आधि-व्याधि

मीनराशिस्थ गुरु का विचार

13 अप्रैल, सन् 2022 ई. को 15 घं. 45 मि. पर पू.फा. नक्षत्र, वृद्धि योग एवं **सिहंस्थ चन्द्र** के समय गुरुदेव मीन राशि में आकर संवत् 2079 वि. के अन्त तक **मीन राशि** में ही रहेंगे।

मीनस्थ गुरु का प्रत्येक राशि के लिए शुभाशुभ फल

(13 अप्रैल, सन् 2022 ई. से सं. 2079 वि. के अन्त तक के लिए)

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
फल	आधि-व्याधि	प्रगति	धनहानि	धनलाभ	धनहानि	सम्मान-प्राप्ति	रोग	सुखलाभ	धनलाभ होकर हानि	शरीरकष्ट	धनलाभ	राज व शत्रुभय

गुरुजन्य नेष्टफल-शान्त्यर्थ उपाय

गुरुग्रह जन्मांग या गोचर में नेष्टफलप्रद हो तो–गुरुवार को (विशेषतः फल, हल्दी) को पीले कपड़े में बांधकर दान करें। सोना, गुड़, शर्करा, लड्डू आदि द्वारा वृद्ध ब्राह्मण का यथाशक्ति सम्मान करें। गुरु ग्रह के बीजमन्त्र का 19 हज़ार जाप करें। **गुरु का जपनीय बीजमन्त्र यह है–'' ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः।''** केसर किंवा हल्दी का तिलक धारण करें। पीला 'पुखराज' 5/7 रत्ती पुरुष दाएं और स्त्रियां बाएं हाथ की तर्जनी अंगुली में धारण करें।

संवत् 2079 वि. में गोचरस्थ राहु का विचार

संवत् 2079 वि. के प्रारम्भ में 11 अप्रैल, सन् 2022 ई. तक राहु वृष राशि में संचार करेगा।

वृष राशिस्थ राहु का प्रत्येक राशि के लिए शुभाशुभ फल

(संवत् 2079 वि. के प्रारंभ से 11 अप्रैल, 2022 ई. तक के लिए)

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
फल	कलह	भय	विनाश	धनलाभ	कलह	दुःख	धननाश	राजभय	सुख	धनहानि	अपमान	सौभाग्य

12 अप्रैल, सन् 2022 ई. को 14 घं. 55 मि. पर मघानक्षत्र, गण्डयोग एवं सिंहस्थ चन्द्र के समय राहु मेष राशि में आकर संवत् 2079 वि. के अन्त तक मेष राशि में ही रहेगा।

मेष राशिस्थ राहु का प्रत्येक राशि के लिए शुभाशुभ फल–

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
फल	भय	विनाश	धनलाभ	कलह	दुःख	धनहानि	राजभय	महासुख	धनक्षय	अपमान	सौभाग्य	कलह

राहु जन्मांग या गोचर में नेष्टफलप्रद हो तो–कम्बल, तिल-तैल, नारियल, लौंग एवं काले या भूरे रंग के वस्त्र में सतनाजा बांधकर दक्षिणासहित सायंकाल के समय दान करें। साथ ही कम्बलासन पर बैठकर राहु के **बीजमन्त्र (ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः)** का 18 हजार की संख्या में जाप करें। शान्ति रहेगी। दैवज्ञ के परामर्श से

गुरुजन्य नेष्टफल-शान्त्यर्थ उपाय

गुरुग्रह जन्मांग या गोचर में नेष्टफलप्रद हो तो–गुरुवार को (विशेषत:

नम:) का 18हजार की संख्या में जाप करें। शान्ति रहेगी। दैवज्ञ के परामर्श से राहुशान्त्यर्थ 'गोमेद' नग 5/7 रत्ती भी धारण कर लेना हितकर रहेगा।

आकाशी कौंसिल का विचार (सं. 2079 वि.)

(संसार की सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक स्थिति का ग्रहगोचर के अनुसार सर्वेक्षण)

1. इस 'नल' नामक संवत्सर में देश के कुछ प्रांतों में भयंकर प्राकृतिक आपदा का संकेत मिलता है।
2. इस संवत् में राजनीतिज्ञों में वैमत्य किंवा महामारी आदि से भारत की जनता परेशान रहे। विश्व की अर्थव्यवस्था अनेकत्र चिन्तनीय रहे।
3. सस्येश शनि होने से अनेकत्र युद्धपरक वातावरण से अशान्ति रहे।
4. कोरिया, पाक, चीन, रूस, इरान आदि में कहीं आन्तरिकक्रांति, कहीं युद्धात्मक परिस्थिति से विश्वशान्ति भंग हो।
5. मार्च 2022 ई. से अगस्त के मध्य देश के सीमाप्रान्तों में कहीं भयंकर प्राकृतिक उत्पात, कहीं उग्रवादियों द्वारा जनधनहानि के योग बनते हैं, सेना को सतर्क रहना होगा।
6. इस वर्ष शनि के धनेश होने से देश में भयंकर रोग विशेष (महामारी) से देश को भारी विषम अर्थव्यवस्था का सामना करना होगा।
7. जून 2022 ई. के लगभग श. रा. मं. की स्थिति देश के लिए शत्रु देश की गतिविधि से चिन्तनीय है।
8. 17 जनवरी सन् 2023 ई. तक मकरस्थ शनि अनेकत्र अग्निकाण्ड, भूकम्प एवं जलादि-प्रहार से हानि के योग बनाता है।
9. 5 नवंबर से संवत् के अंत तक भारत में राजनैतिक उथल-पुथल के योग हैं।

विगत वर्षों में कुछ सत्यसिद्ध भविष्यवाणियां यहां प्रस्तुत कर देना चाहते हैं। देखिये–

1A. भारत के अन्तरिक्ष विज्ञान में आश्चर्यजनक प्रगति की भविष्यवाणी–सं. 2075 वि. के पंचांग, पृष्ठ 52, कॉलम 1/2 पर की गयी थी कि–

''गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार भारत इस वर्ष किंवा आगामी वर्षों में अन्तरिक्ष विज्ञान (Space-Science) में आश्चर्यजनक प्रगति करेगा, जिसमें अन्य कुछ देश भी सहायकरूप में मददगार रहेंगे।''

1B. इस संवत् 2077 का सेनाधिपति (दुर्गेश) सूर्य होने से भारत सैन्यबल को सुसमृद्ध करके सर्वोपरि प्राथमिकता-सम्पन्न सशक्त देश बनेगा। देश अन्तरिक्ष विज्ञान में भी आश्चर्यजनक चमत्कारों से नवीन शस्त्रास्त्रों के परीक्षण से आश्चर्यजनक प्रगति करेगा।

इन भविष्यवाणियों की सत्यता को समाचारपत्रों ने इस प्रकार प्रसारित किया–

ISRO continues to make India proud

It was yet another year of jubilation for Indian Space Research Organisation (ISRO) for it achieved a historic feat of having launched a massive 104 satellites using its Polar Satellite Launch Vehicle (PSLV).

इसके अतिरिक्त भारत की अन्तरिक्ष विज्ञान में प्रगति से चीन एवं पाक भी प्रभावित हुए हैं।

2. 12 अप्रैल, सन् 2018 ई. को हरिकोटा में I.R.N.S.S.-I आई. का परीक्षण सफल, सदमे में चीन-पाक (पंजाब केसरी 13/4/18)

Space-Science की इस सफलता की भविष्यवाणी श्रीमार्त्तण्ड पंचांग में 4 जून, 2017 ई. को की गयी थी, जोकि आश्चर्यजनक-रूप से सत्य सिद्ध हुई।

१२—द्वादशज्योतिर्लिङ्गानि

सौराष्ट्रे सोमनाथं च श्रीशैले मल्लिकार्जुनम्।
उज्जयिन्यां महाकालमोङ्कारममलेश्वरम् ॥ १ ॥
परल्यां वैद्यनाथं च डाकिन्यां भीमशङ्करम्।
सेतुबन्धे तु रामेशं नागेशं दारुकावने ॥ २ ॥

(१) सौराष्ट्रप्रदेश (काठियावाड़) में श्रीसोमनाथ,[1] (२) श्रीशैलपर श्रीमल्लिकार्जुन, (३) उज्जयिनी (उज्जैन) में श्रीमहाकाल[3], (४) ॐकारेश्वर[4] अथवा अमलेश्वर ॥ १ ॥ (५) परलीमें वैद्यनाथ[5], (६) डाकिनी नामक स्थानमें श्रीभीमशङ्कर[6], (७) सेतुबन्धपर

१. श्रीसोमनाथ काठियावाड़ प्रदेशके अन्तर्गत प्रभासक्षेत्रमें विराजमान है। २. यह ...त मद्रास प्रान्तके कृष्णा जिलेमें कृष्णा नदीके तटपर है, इसे दक्षिणका कैलास कहते हैं। ... श्रीमहाकालेश्वर मालवा प्रदेशमें क्षिप्रा नदीके तटपर उज्जैननगरमें विराजमान है, उज्जैनको ...न्तिकापुरी भी कहते हैं। ४. ॐकारेश्वरका स्थान मालवा प्रान्तमें नर्मदा नदीके तटपर है। ...नसे खण्डवा जानेवाली रेलवे लाइनपर मोरटक्का नामक स्टेशन है, वहाँसे यह स्थान १० ...मी॰ मील दूर है। यहाँ ॐकारेश्वर और अमलेश्वरके दो पृथक्-पृथक् लिङ्ग हैं, परन्तु ये एक ही ...के दो स्वरूप हैं। ५. आन्ध्र प्रदेशके हैदराबाद नगरसे पहले परभनी नामक जंकशन है, वहाँसे परलीतक एक ब्रांच लाइन गयी है, इस परली स्टेशनसे थोड़ी दूरपर परली ग्रामके निकट श्रीवैद्यनाथ नामक ज्योतिर्लिङ्ग है। शिवपुराणमें 'वैद्यनाथं चिताभूमौ' ऐसा पाठ है, इसके अनुसार संथाल परगनेमें ई॰ आई॰ रेलवेके जैसीडीह स्टेशनके पासवाला वैद्यनाथ-शिवलिङ्ग ही वास्तविक वैद्यनाथज्योतिर्लिङ्ग सिद्ध होता है; क्योंकि यही चिताभूमि है। ६. श्रीभीमशङ्करका स्थान बम्बईसे पूर्व और पूनासे उत्तर भीमा नदीके किनारे सह्यपर्वतपर है। यह स्थान लारीके रास्तेसे नासिकसे लगभग १२० मील दूर है। सह्यपर्वतके एक शिखरका नाम डाकिनी है। इससे अनुमान होता है कि कभी यहाँ डाकिनी और भूतोंका निवास था। शिवपुराणकी एक कथाके आधारपर भीमशङ्कर ज्योतिर्लिङ्ग आसामके कामरूप जिलेमें ए॰ बी॰ रेलवेपर गोहाटीके पास ब्रह्म... पहाड़ीपर स्थित बतलाया जाता है। कुछ लोग कहते हैं कि नैनीताल जिलेके उज्जन...

3. श्रीमार्त्तण्ड पंचांग सं. 2076वि., पृ. 55 पर जगत् लग्नेश कुण्डली के आधार पर स्पष्ट भविष्यवाणी इस प्रकार की गयी थी–

वर्षेश लग्न में राहु एवं शनि की परिधि में ही सभी प्रभावी ग्रह हैं। अत: कुछ राष्ट्रों में प्राकृतिक आपदा (प्राकृतिक प्रकोप), अग्निकाण्ड, भयंकर तूफान, भूकम्प आदि से मई 2019 तक भारी जनधनहानि के योग बन रहे हैं।

तदनुसार अनेक राष्ट्रों एवं प्रान्तों में भयंकर समुद्री तूफान, जलप्रलय किंवा भयंकर प्राकृतिक आपदा का सामना करना पड़ा।

4. कोरोना माहामारी से सन् 2020 ई. का पूर्वार्द्ध व इससे आगे आने वाला समय और भी भयंकर रहेगा–यह भविष्यवाणी सं. 2077 वि. के पंचांग में पृ. 50 पर, कॉलम 1 में स्पष्ट की गयी है, पढ़ें:

''अग. सन् 2020 ई. के लगभग से शनि-मंगल की दृष्टि और दशम-चतुर्थ-सम्बन्ध होने से भारत में हरियाणा, हिमाचल, उत्तराखण्ड आदि प्रान्तों में भयंकर प्राकृतिक आपदा (महामारी कोरोना) से जनधनहानि सम्भव है, भगवान् रक्षा करें।''

5. भारत सरकार द्वारा पुरातन एवं देशहित के विपरीत परिस्थितियों को दूर करने के लिए मुस्लिम-विवाहप्रथा के दोष एवं विदेशी व्यक्तियों के बहिर्गमन की नीति (CAA) से भारत सरकार को देशव्यापी उपद्रवों एवं शाहीनबाग आदि पर भारी संकटों का सामना करना पड़ा है–इस भविष्यवाणी को सं. 2077 वि. के पंचांग में पृ. 50 पर निम्नांकित शब्दों में लिखा गया था–

''कर्क लग्न पर शनि एवं मंगल की पूर्ण दृष्टि भी है। यह दृष्टिसम्बन्ध लगभग 3 मई तक प्रभावी रहेगा। यह समय देश की पुरातन एवं देशहित के विपरीत नयी परिस्थितियों को दूर करने के लिए कठिन परिस्थितियों का संकेत देता है।''

6. सं. 2077 वि. में चीन-अमेरिका एवं कुछ अन्य देशों के साथ कोरोना महामारी के कारण अघोषित युद्ध जैसी स्थिति रही है। इस भविष्यवाणी को सं. 2077 वि. के श्रीमार्त्तण्ड पंचांग में निम्नांकित शब्दों में लिखा गया था, पढ़ें पृ. 51, कॉलम 1 पर–

सकती है, भारतीय सैन्यबल सशक्त सिद्ध होगा। वर्षप्रवेश-कुण्डली में शनि की सूर्य एवं मंगल पर दृष्टि पाक में आन्तरिक क्रान्ति किंवा विभाजन का संकेत देता है।''

7. सं. 2077 वि. में 'भाजपा शीर्षक' के अन्तर्गत पृ. 52, कॉलम 1 पर स्पष्ट रूप से भाजपा के लिए भारी समस्याओं वाला लिखा था; तदनुसार भाजपा-नेतृत्व को देश की सुधारात्मक नीति के कारण दिल्ली आदि में हिन्दु-मुस्लिम-उपद्रव एवं जामिया, J.N.U. आदि में होने वाली विषम परिस्थितियों का सामना करना पड़ा है। पंचांग पृ. 52 पर सत्यापित भविष्यवाणी यह थी, पढ़ें–

''अब आगामी गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार धनु:स्थ गुरु एवं मकरस्थ शनि भी भाजपा के सामने परीक्षा की घड़ी उपस्थित करेगा। क्योंकि समय-समय पर शनि-मंगल किंवा शनि-राहु का एक साथ रहना भारी समस्याओं को उपस्थित करेगा। इस समयावधि में प्रधान नेताओं की सुरक्षा-व्यवस्था को सुदृढ़ रखना होगा।''

8. प्रधानमन्त्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के बारे में सं. 2077 वि. में जो अंकित किया था, वह अक्षरश: सत्य सिद्ध हुआ है, पढ़ें पृ. 52, कॉलम 2 पर, इन पंक्तियों में–

''चतुर्थ-भाव (सहयोगी वर्ग) में मौजूद गुरु की मदद से अनेक समस्याओं को हल करने का श्रेय भी मोदी को अवश्य मिलेगा। ताकतवर देशों से सन्तुलन साधने की क्षमता से श्री मोदी को गौरव प्राप्त होगा। अपने शपथग्रहण में 'बिम्सटेक देशों' को न्योता विश्व में भारत की धाक जमाने का प्रथम चरण है, जो देश को यश-मान देकर प्रतिष्ठित देशों की श्रेणी में स्थापित करेगा। श्री मोदी की विदेश नीति से भारत गौरवान्वित एवं प्रगतिपथ पर अग्रसर रहेगा; इसमें सन्देह नहीं।

श्री मोदी की 30 मई को सायं 7 बजे शपथ-ग्रहणकालीन ग्रहस्थिति के निरीक्षण से स्पष्ट है कि–वृश्चिक लग्नस्थ गुरु की मीनस्थ चन्द्र एवं कर्मेश सूर्य पर विशेष दृष्टि है। अत: श्री मोदी महाभाग को देश की आन्तरिक एवं बाह्य समस्याओं को हल करने के लिए आश्चर्यजनक सफलता मिलेगी। देश प्रतिष्ठित देशों की श्रेणी में आर्थिक एवं राजनैतिक दृष्टि से श्रेय प्राप्त करेगा।''

तीन तलाक का निरस्तीकरण, धारा 370/35A का जम्मू-कश्मीर से हटा

वाराणस्यां तु विश्वेशं त्र्यम्बकं गौतमीतटे ।
हिमालये तु केदारं घुश्मेशं च शिवालये ॥ ३ ॥
एतानि ज्योतिर्लिङ्गानि सायं प्रातः पठेन्नरः ।
सप्तजन्मकृतं पापं स्मरणेन विनश्यति ॥ ४ ॥

★

श्रीरामेश्वर[१], (८) दारुकावनमें श्रीनागेश्वर[२] ॥ २ ॥ (९) वाराणसी (काशी) में श्रीविश्वनाथ[३], (१०) गौतमी (गोदावरी) के तटपर श्रीत्र्यम्बकेश्वर,[४] (११) हिमालयपर केदारखण्डमें श्रीकेदारनाथ[५] और (१२) शिवालयमें श्रीघुश्मेश्वरको[६] स्मरण करे ॥ ३ ॥ जो मनुष्य प्रतिदिन प्रातःकाल और सन्ध्याके समय इन बारह ज्योतिर्लिङ्गोंका नाम लेता है, उसके सात जन्मोंका किया हुआ पाप इन लिङ्गोंके स्मरणमात्रसे मिट जाता है ॥ ४ ॥

★

नामक स्थानमें एक विशाल शिवमन्दिर है, वही भीमशङ्करका स्थान है। १. श्रीरामेश्वर तीर्थ प्रसिद्ध है, यह तमिलनाडु (मद्रास) प्रान्तके रामनद जिलेमें है। २. यह स्थान बड़ौदा राज्यान्तर्गत गोमतीद्वारकासे ईशानकोणमें बारह-तेरह मीलकी दूरीपर है। कोई-कोई निजाम हैदराबाद राज्यके अन्तर्गत औढ़ाग्राममें स्थित शिवलिङ्गको ही 'नागेश्वर' ज्योतिर्लिङ्ग मानते हैं। कुछ लोगोंके मतसे अल्मोड़ासे १७ मील उत्तर-पूर्वमें यागेश (जागेश्वर) शिवलिङ्ग ही नागेश ज्योतिर्लिङ्ग है। ३. काशीके श्रीविश्वनाथजी प्रसिद्ध ही हैं। ४. यह ज्योतिर्लिङ्ग महाराष्ट्र प्रान्तके नासिक जिलेमें नासिक-पञ्चवटीसे (जहाँ शूर्पणखाकी नाक कटी थी) १८ मीलकी दूरीपर ब्रह्मगिरिके निकट गोदावरीके किनारे है। ५. श्रीकेदारनाथ हिमालयके केदार नामक शृङ्गपर स्थित हैं। शिखरके पूर्वकी ओर अलकनन्दाके तटपर श्रीबदरीनाथ अवस्थित हैं और पश्चिममें मन्दाकिनीके किनारे श्रीकेदारनाथ विराजमान हैं। यह स्थान हरद्वारसे १५० मील और ऋषिकेशसे १३२ मील दूर है। ६. श्रीघुश्मेश्वरको घुसृणेश्वर या घृष्णेश्वर भी कहते हैं। इनका स्थान दौलताबाद स्टेशनसे बारह मील दूर बेरूल गाँवके पास है।

9. यूरोपीय देशों के बारे में सं. 2077 वि. के पंचांग में पृ. 46, कॉलम 1 पर की गयी भविष्यवाणी भी कम आश्चर्यजनक नहीं। पढ़ें-यूरोपीय देशों की कुण्डली नं. (1)–

''अणुशस्त्र, सीमाविवाद, शस्त्रास्त्रों की मारकक्षमताजन्य उन्माद एवं शक्ति-सम्पन्नता-प्रदर्शन से हालात बिगड़ेंगे। यूरोप के देशों में विचार-वैमनस्य से द्विधाविभक्त किंवा विशेष ध्रुवीकरण की प्रवृत्ति घातक रहेगी, इससे विश्वशान्ति को भी खतरा पैदा हो सकता है।''

उ.कोरिया, चीन एवं यू.एस.ए. आदि शस्त्रास्त्र-परीक्षण करके विश्वशान्ति को चुनौती देते रहे हैं।

10. 'जम्मू-कश्मीर' शीर्षक के अन्तर्गत सं. 2077 वि. में अंकित निम्नांकित पंक्तियों की सत्यता स्वतः सिद्ध है। पढ़ें-पृ. 54, कॉलम 1 पर–

''संवत् 2077 वि. की गोचर ग्रहस्थिति कश्मीर की राशि पर मंगलयुत 'शनि की दृष्टि' होने से कश्मीर-समस्या का हल सहज सम्भव नहीं। इस जलते सीमाप्रान्त पर पाक की कुदृष्टि इस संवत् में भयावह स्थिति को जन्म दे सकती है। ग्रहस्थिति से संकेत मिलता है कि–तिब्बत, कश्मीर एवं अन्य सीमान्त-प्रदेशों में भारत के साथ पाक-चीन, जिस स्थिति को जन्म दे रहे हैं, वह भारत एवं विश्वजनीन शान्ति के लिए भयावह सिद्ध होगी।''

कश्मीर में प्रतिदिन उग्रवादजन्य अपराध एवं सैन्यसंघर्ष प्रायः होते रहते हैं तथा तिब्बत-लद्दाख-मिजोरम आदि में चीन का दखल भी जगजाहिर है। अभी 13 मई के पंजाब केसरी समाचार पत्र में समाचार था-**''पूर्वी लद्दाख में दिखे चीनी हैलीकॉप्टर'' जवाब में भारतीय वायुसेना के लड़ाकू विमानों ने भी वायुसीमा में उड़ान भरी।''** इसप्रकार उल्लिखित सं. 2077 वि. की पंक्तियों की सत्यता स्पष्ट हो गयी है।

हालांकि चाईना द्वारा किये इस युद्धोन्माद में स्वयं चीन ही सर्वत्र घिरा दिखा और विश्व के अधिकतरदेश भारत के समर्थन में दिखाई दिये। यह सभी जानते ही हैं।

पाठको! स्थानाभाव के कारण इस वर्ष की सभी सफल भविष्यवाणियों की चर्चा नहीं कर पा रहे हैं, विद्वान् पाठक स्वयं ही मूल्यांकन करें।

श्रीमार्त्तण्ड पंचांग के माध्यम से की गयीं या की जा रहीं भविष्यवाणियों की सफलता का श्रेय जो आप हमें दे रहे हैं, वह सब पूर्वाचार्यों एवं ज्योतिषशास्त्र के मर्मज्ञ गुरुचरणों की कृपा ही है या जनता-जनार्दन के सौहार्द का परिणाम। हम उन पाठकों के आभारी हैं, जो विभिन्न प्रान्तों किंवा विदेशों से पत्राचार/Telephone द्वारा भविष्यवाणियों की सफलता पर बधाई भेजकर हमें भावी वर्षों में ग्रहगतिजन्य संकेतों के आधार पर कुछ न कुछ लिखने के लिए प्रेरित करते रहते हैं।

''विमृश्य ग्रह-संस्थितिं मुनिवचः सिद्धान्तयित्वा स्फुटम्।
शास्त्रं शाकुनकं विचार्य नितरामालोच्य सत्संहिताः।।
राष्ट्रे राज-समाज-धर्मविषये ह्युद्भाविनी या स्थितिः।
सा शम्भोः कृपया यथामति मया प्रगेव निर्णीयते।।''

''मनुष्य जीवन अनन्त आकाशव्यापी सौरजगत् की एक क्षुद्र प्रतिकृति है''–यह तथ्य भारतीय ही नहीं, पाश्चात्य विद्वान् भी स्वीकार करते हैं। मानव-जीवन एवं सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड का सौर जगत् के साथ एकत्व-सम्बन्ध होने से सौर जगत् के आकर्षण-विकर्षण, सिद्धान्त के अनुसार समय-समय पर मानव-जीवन एवं विश्वजनीन परिवर्तन स्वाभाविक एवं युक्तियुक्त हैं। ग्रहों की **'आकर्षण-विकर्षण'** रूपी दो अदृश्य शक्तियों द्वारा प्रकृति एवं जन-जीवन की मानसिक प्रवृत्ति में परिवर्तन से सम्पूर्ण विश्व का घटनाचक्र चलता ही रहता है। इस खोज में ऋषियों ने अथाह चिन्तन एवं सम्पूर्ण जीवन लगाकर ग्रहों एवं प्रकृति का गहन अध्ययन करके **'ज्योतिष शास्त्र'** का आविष्कार किया, जोकि आज भी अनुसन्धान का विषय है।

''संसार का प्रत्येक परमाणु एक निर्धारित नियम से विलग नहीं हो सकता। एक सूक्ष्मतम परमाणु में यदि तनिक भी अव्यवस्था किंवा अनुशासनहीनता आ जाये तो विराट् ब्रह्माण्ड एकक्षण के लिए भी न टिक सके। एक क्षणिक विस्फोट से अनन्त प्रकृति अग्निज्वालाओं से अतिरिक्त कुछ न रहे''–यह नियामक विधान किसी अदृश्य सत्ता के अस्तित्व को प्रमाणित करता है। इसी प्रकार यह सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड प्रभु के एक निश्चित विधान के अनुसार ही चल रहा है। इस विधान का साक्षात्कृत् धर्मा ऋषियों ने जो अध्ययन व चिन्तन किया है, उसका परिणाम ही **'ज्योतिष'** है।

यह वेदांगरूप ज्योतिष गुरु-शिष्यपरम्परा आज तक जीवित है। इसका प्रमाण वेदांग 'निरुक्त' में स्पष्ट है–

"साक्षात्कृत्धर्माणो वै ऋषयो बभूवुः। तेऽवरेभ्योऽसाक्षात्कृत्धर्मभ्य उपदेशेन मन्त्रान् सम्प्रददुः। उपदेशाय ग्लायन्तोऽवरे बिल्मग्रहणायेमं ग्रन्थं समाम्नासिषुर्वेदं वेदांगानि च।।"
—(यास्काचार्य)

प्रत्येक ग्रह जब अपनी गति-स्थिति में अन्तर लाता है, तभी विश्व का घटनाचक्र प्रभावित होता देखा गया है। इस पृथ्वी पर जो कुछ भी घटित होता अनुभव करते हैं, वह सब ग्रहों के वक्र-मार्ग आदि के ही परिणाम हैं। इस ग्रहगतिजन्य संकेत के आधार पर ही अपनी मति के अनुसार विश्व में जो भी प्रतिवर्ष घटित होता है, "**श्रीमार्त्तण्ड पंचांग**" के माध्यम से अपने प्रिय पाठकों के समक्ष उपस्थित कर देते हैं और यह इस प्रकाशन का 95वां गौरवपूर्ण वर्ष प्रारम्भ हो रहा है।

श्री वि. संवत् 2079 की ग्रहस्थिति के अनुसार विश्वजनीन घटनाओं की भविष्यवाणी प्रस्तुत करने से पहले हम अपने विद्वान्, प्रबुद्ध पाठकों का आभार व्यक्त कर देना उचित समझते हैं, जिन्होंने लगातार 94 वर्षों तक हमारी भविष्यवाणियों का सही मूल्यांकन करके हमें आज 95वें वर्षप्रवेश पर भी इस बारे में कुछ लिखने को प्रोत्साहित किया है। पाठको! आपका यह पंचांग अपनी सर्वांगशुद्ध गणित एवं आश्चर्यजनक भविष्यवाणियों के लिए भारत में ही नहीं, विदेशों में भी विश्रुत हो चुका है।

संवत् 2079 वि. की ग्रहपरिषद् के अधिकारियों का विश्व का प्रभाव

विज्ञान '**कार्य-कारण के सिद्धान्त**' को ही प्राथमिकता प्रदान करता है। परन्तु असंख्य घटनाएं ऐसी हैं, जिनका कारण समझने एवं समझाने में चोटी के वैज्ञानिक भी अपने-आपको सर्वथा असमर्थ पा रहे हैं। अत: सिद्धान्तों के व्यभिचारमात्र से ज्योतिष शास्त्र की वैज्ञानिकता का प्रतिवाद नहीं किया जा सकता। ज्योतिष चिरन्तन सत्यसिद्धान्तों पर आधारित एक विज्ञान है, जिसमें अभी अत्यधिक अनुसन्धान की आवश्यकता है।

जिस तरह पृथ्वी पर 'लोकतान्त्रिक राज्य' की स्थापना के लिए प्रधानमन्त्री आदि के चुनाव होते हैं और उन निर्वाचित व्यक्तियों के गुण-कर्म-स्वभाव-योग्यता का प्रभाव उनके अधिकृत क्षेत्रों और शासनतन्त्र पर पड़ता है, उसी प्रकार परिषद् में संसारचक्र को चलाने के लिए प्रतिवर्ष दिव्य एवं अद्भुत शक्तिमती 'आकाशी कौंसिल' का निर्माण होता है। इस आकाशीय कौंसिल में ग्रहों की शुभाशुभ प्रकृति के अनुरूप संसार में जो उलट-फेर एवं अघटित घटनाएं घटित होती हैं; इस घटनाचक्र को त्रिकालज्ञ दैवज्ञों द्वारा निर्दिष्ट संकेतों के आधार पर एवं वि. सं. 2079 की गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार कुछ आगामी घटनाओं के बारे में यहां लिखने की चेष्टा कर रहे हैं।

संवत् 2079 वि. के प्रारम्भ में बार्हस्पत्यमान से 'नल' नामक संवत्सर है।

'बृहत्संहिता' के अनुसार 'नल' नामक संवत्सर का फल इस प्रकार लिखा है—

"दुर्भिक्षं जायते घोरं राज्ञां दुर्मतिजं भयम्।।
बालहानिश्च रोगेभ्यो नले ज्ञेया समन्ततः।।"

अवर्षणादि से गर्मी की फसलें सूखेंगी। प्राकृतिक प्रकोप, भयंकर अग्निकाण्ड एवं भयंकर महामारी आदि से युवा-किशोर एवं बच्चों के असामयिक बीमारी व निधन से चिन्ताजनक स्थिति बनेगी। उ. खण्ड, आसाम, बिहार किंवा मुस्लिम देशों में अग्निकांड, उपद्रव किंवा सांप्रदायिक दंगों से शासनतन्त्र चिन्तित रहे।

'**मेघमहोदय**' के अनुसार नल संवत्सर का शनि स्वामी है। वर्षा कम नेत्ररोग एवं बच्चों के भयंकर रोगविशेष से हड़कम्प मचेगा। समुद्री किंवा **वायुवेगजन्य तूफानों से भयंकर जनधनहानि हो** एवं शासनतन्त्र की ग़लत नीति से अनेकत्र साम्प्रदायिक स्थिति बिगड़ने का भय भी है।

इस संवत् का राजा शनि है। संवत् के आरम्भ में शनि कुम्भस्थ है। तत्पश्चात् लगभग 12 जुलाई, सन् 2022 ई. को शनि मकर राशि में आकर 17 जन., सन् 2023 ई. तक मकर राशि में ही रहेगा। तत्पश्चात् संवत् के अंत तक शनि कुम्भ राशि में ही रहेगा।

शनि की इस ग्रहचाल का प्रभाव अनेकत्र अग्निकाण्ड, भूकम्प एवं देश में जलवायु-परिवर्तन भविष्य में बड़ी चुनौती का संकेतक है।

इस संवत् का मन्त्री गुरु होने से सत्तारूढ़ दल को सुधारात्मक पग उठाने होंगे।

29 अप्रैल को शनि कुम्भ राशि में आएगा। लगभग 17 मई तक शनि-मंगल का

आदि के चुनाव होते हैं और उन निर्वाचित व्यक्तियों के गुण-कर्म-स्वभाव
योग्यता का प्रभाव उनके अधिकृत क्षेत्रों और शासनतन्त्र पर पड़ता है, उसी प्रकार

29 अप्रैल को शनि कुम्भ राशि में आएगा। लगभग 17 मई तक शनि-मंगल का
एकराशि-सम्बन्ध ताइवान-चीन, पाक-कश्मीर में कहीं कत्लेआम की घटनाएं करे।

थाईलैण्ड आदि में कहीं शासनतन्त्र के विरुद्ध आवाज़ उठे-

"युद्धदौ शनि-माहेयौ तथा दुर्भिक्ष-कारकौ।"

ग्रहगोचर के अनुसार देश में कहीं तूफान किंवा कहीं दुर्भिक्ष की स्थिति का सामना भी करना पड़ेगा।

संवत् 2079 वि. की गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार संभावित घटनाचक्र पर एक नज़र

इस वर्ष वृष लग्न में जगत् लग्न का उदय हुआ है। लग्नेश शुक्र शनि के क्षेत्र में मंगल के साथ है। **गतवर्ष के पंचांग में जगत् लग्न कुण्डली के विश्लेषण में स्पष्ट लिखा था-**

"यह वर्ष विश्व की जीवनशैली में आश्चर्यजनक परिवर्तन करने वाला है। गतवर्ष के पंचांग में पृ. 48 पर, जो घोषणा की गई थी, वह भी आश्चर्यजनकरूप से सत्य सिद्ध हुई :- "भारत की प्रभावराशि मकर में शनि की स्थिति काफी विश्वजनीन कठिन परिस्थितियों को उपस्थित करेगी। संवत् 2078 वि. के शुरु से 13 मई तक गुरु के वक्रत्वकाल में लगभग अग., 2021 ई. तक देश में कलह किंवा महामारी से सावधान रहना चाहिए।

वर्षेश(जगत्)लग्न-कुण्डली
(संवत् 2079 वि.)

2
3
बु. 1 सू. रा.
4
12 गु.
चं. 5
मं. 11 शु.
6
8
श. 10
7 के.
9

14 अप्रै., 2022 ई.,
8 घं. 40 मि. (A.M.)

इस वर्ष वर्षेश-कुण्डली में राहु सूर्य-बुध के साथ होकर केतु से दृष्ट है। अत: कुछ राष्ट्र-प्रान्त भयंकर तूफान, अग्निकाण्ड एवं महामारी किंवा प्राकृतिक प्रकोप से जनधन हानि की चपेट में आएंगे। यह स्थिति संवत् 2079 वि. में विशेष चिन्तनीय रहेगी।

संवत् 2079 वि. में वर्षेश-कुण्डली के अनुसार तुर्की, इराक, ईरान, रूस, अमेरिका, चीन, पाक-अधिकृत कश्मीर, गिलगित, सिन्ध, अफ़गानिस्तान आदि में कहीं आन्तरिक क्रान्ति, सिविल वार का रूप ले सकती है।

इस वर्ष चीन की नामराशि मीन में गुरु की स्थिति एवं इस पर शनि की विशेष दृष्टि चीन की विस्तारवादी नीतियों एवं संहारक गतिविधियों से अशान्ति का कारण बन सकती है। अमेरिका एवं उ. कोरिया आदि की स्वच्छन्दता वाली नीति से विश्व में कहीं '**अघोषित युद्ध**' जैसी स्थिति बन सकती है।

गतवर्ष सं. 2078वि. के पंचांग में पृ. 49, कालम 1 पर, जो भविष्यवाणी की गई थी, वह ज्योतिष-शास्त्र की सत्यता को प्रमाणित करती है, देखें-"वर्ष लग्न सं. 2078वि. की कुण्डली के अनुसार वैशाख, आषाढ़ से आश्विन के मध्य तथा फाल्गुन में कहीं महामारी, भूकम्प, भयंकर बाढ़ (सुनामी) आदि से जनधनहानि के योग भी बनते हैं।"

तदनुसार 7 जून को-

(i) पश्चिम बंगाल में कहर बनकर टूटी आकाशीय बिजली, 20 की मौत, (पंजाब केसरी)

(ii) ओडिशा-बंगाल में तबाही का तूफान (1 करोड़ लोग प्रभावित, 3 लाख मकान क्षतिग्रस्त)।

इस साल सं. 2079 वि. में शनि की दृष्टि-

इस संवत् में शनि मकर-कुम्भ में विचरण करेगा। अत: शनि की दृष्टि उत्तर दिशा की तरफ रहेगी। उत्तरी गोलार्द्ध में भूकम्प, तूफान, उग्रवाद, राजनैतिक हत्याकाण्ड आदि घटनाएं चिन्ता का कारण रहेंगी-

"शनैश्चरः क्रमात् पश्यन् तत्तद्देशान् प्रपीड़येत्।
दुर्भिक्ष-देश-भङ्गाद्यैर्विग्रहो राजविड्वरैः।।"

सं. 2079 वि. की ग्रहस्थिति का यूरोपीय देशों पर प्रभाव (एक संक्षिप्त सर्वेक्षण)

यूरोपीय देशों की कुण्डली नं. 1 की ग्रहस्थिति का अनुशीलन करने से स्पष्ट ज्ञात होता है कि-लग्नेश एवं कर्मेश बुध शनि के क्षेत्र में शनि के साथ है। अत: यूरोपीय इटली, फ्रांस, जर्मनी आदि समर्थ देश भी आर्थिक मन्दी की गिरफ्त में आ सकते हैं। 19 दिसं., सन् 2021 ई. को धनेश एवं नवमेश शुक्र वक्रगति से चलने लगेगा, साथ ही लग्नेश-कर्मेश बुध के भी लगभग 14 जनवरी, सन् 2022 ई. को वक्री होने से यूरोपीय देशों के लिए भारी युद्धात्मक किंवा विपदात्मक स्थिति बन सकती है। गोचर ग्रहस्थिति

के अनुसार सूर्य-शनि की स्थिति जनवरी, 2022 ई. से आगे संवत् 2078वि. के अन्त किंवा आगे तक 6 से 8 महीने की ग्रहस्थिति के अनुसार मिथुन प्रभावराशि देश अमेरिका के प्रभुत्व को क्षीण करे एवं **महाशक्ति की होड़ में ब्रिटेन, जर्मनी, फ्रांस, अमेरिका, उ. कोरिया, रूस के साथ चीन द्वारा विकसित शस्त्रास्त्रों के विरुद्ध आवाज उठेगी।** परिणाम संघर्षात्मक स्थिति को जन्म देंगे। चीन, रूस, जर्मनी किंवा जापान आदि में परस्पर शस्त्रास्त्रों की होड़ में विश्वशान्ति भंग हो सकती है।

यूरोपीय देशों की कुण्डली नं. 1
1 जन. से 31 दिसं., 2022 ई.

7 | 5 | मं. के. 8 | 6 | 4 | चं. 9 सू. बु. शु. | 3 | 10 श. | 12 | 2 रा. | 11 गु. | 1

लगभग 26फर., 2022 ई. के बाद 7 अप्रैल, सन् 2022 ई. तक शनि-मंगल का मकर राशि में योग यूरोपीय देशों की नीति विश्वव्यापी अशान्ति किंवा अघोषित युद्ध का वातावरण बना सकती हैं। गुरु, शुक्र एवं शनि, मंगल की स्थिति इस संवत् 2078वि. में कहीं भयंकर प्राकृतिक आपदा, भूकम्प, तूफान, किंवा अग्निकाण्ड आदि से अप्रत्याशित जनधनहानि के योग बनाती है।

यूरोपीय देशों की कुण्डली नं. 2 में लग्नेश बुध क्षीण है। राहु-केतु के अर्धवलय में सभी क्रूरग्रह हैं। श.शु. का पंचमस्थ होना। कुछ भयावह वातावरण बना सकेगा। सशक्त यूरोपीय देशों की अस्मिता कहीं युद्धात्मक स्थिति बनाएगी, जिससे विश्वशान्ति भंग होने का भय है। इस कुण्डली में गुरु के क्षेत्र में **बुधादित्य-योग** एवं शनि-शुक्र की मकर राशि में स्थिति उग्रवाद, नक्सलवाद से भयावह वातावरण से कुछ समीपस्थ देशों को क्षुब्ध करेगी।

यूरोपीय देशों की कुण्डली नं. 2 (1 जन., 2023 ई. से सं. 2079 वि. के अन्त तक) (मध्यरात्रि 0 घं. 00 मि.)

ध्यान दें– कुछ यूरोपीय देश भीषण शस्त्रास्त्रों के परीक्षण एवं कुछ विरोधी राष्ट्रों को नतमस्तक करने के उद्देश्य से इस वर्ष भयावह अशान्ति का कारण बनेंगे।

14 जनवरी, 2023 ई. के बाद की ग्रहस्थिति (शनि, सूर्य ...

होना) यूरोप के कुछ देशों की नीति विश्वव्यापी अशान्ति किंवा अघोषित युद्ध जैसा वातावरण बना सकती है।

यूरोपीय ग्रहस्थिति की कुंडली नं. 2 से स्पष्ट ज्ञात होता है कि-इस वर्ष समुद्रतटवर्ती भूभाग पर भयंकर तूफान एवं भूकम्प आदि प्राकृतिक प्रकोप, भयंकर अग्निकाण्ड आदि से जन-धन को भयंकर क्षति होगी।

15 फर., सन् 2023 ई. के लगभग से शु. गु. की कुम्भ राशि में स्थिति कहीं यूरोप में युद्ध की चिंगारी किंवा नए शस्त्रास्त्रों के परीक्षण की होड़ से हानि का संकेत देती है एवं कहीं अकालिक वर्षा किंवा प्राकृतिक प्रकोप से भी हानि का भय है:–

**''गुरु-शुक्रौ यदैकस्थौ नरयुद्धं तदा भवेत्।
अकाले वा भवेद्वृष्टिर्जगत्यां नात्र संशयः।।''**

संवत् 2979 वि. में मुस्लिमराष्ट्रों के हालात

मुस्लिम देशों की कुण्डली (नं. 1)-10 अगस्त को मंगलवार वाले दिन 1 मुहर्रम को 1443 संवत् प्रारम्भ होगा। इस हिजरी सन् का राजा मंगल मुस्लिम देशों की शासनसत्ता एवं जनजीवन में भारी उलटफेर करने वाला है। क्योंकि मुस्लिम कुण्डली नं. 1 में **मकरस्थ शनि का सूर्य, बुध के साथ समसप्तक एवं शुक्र-मंगल का शनि के साथ षडष्टक यहां के प्रधान नेता के लिए परीक्षा की घड़ी सिद्ध करेगा,** क्योंकि 10 अग. (हिजरी सन् के प्रारम्भ) से ही शुक्र-शनि वक्रगति से चल रहे हैं और 14 अग. के लगभग क्रूर शनि के साथ गुरु भी वक्रगति से मकर राशि में ही मेल करता है। इस प्रकार सूर्य-बुध का नीच गुरु व शनि के साथ समसप्तक बनता है। अतः

मुस्लिम देशों की कुण्डली नं. 1 हिज़री सन् 1443 (1 मुहर्रम)

10 अगस्त, सन् 2021 ई., मंगलवार, 19 घं. 24 मि. (सूर्यास्तसमय) (I.S.T.)

''क्रूराणां सह सौम्यैश्च यदि स्यात् समसप्तकम्।

बनेंगे।

14 जनवरी, 2023 ई. के बाद की ग्रहस्थिति (शनि-सूर्य-शुक्र का एक साथ

[illegible] सह सौम्यैश्च यदि स्यात् समसप्तकम्।
अनावृष्टिस्तदा ज्ञेया लोकपीड़ा महत्यपि।।''

इस वर्ष की गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार लगभग 5 सितं. को मंगल पाक की प्रभावराशि कन्या में आयेगा। अत: अक्तूबर 2022 ई. तक पाक के ब्लूचिस्तान, सिन्ध एवं कुछ अन्य प्रान्तों में भयंकर अराजकता के परिणामस्वरूप सिविलवार सम्भव है और इस दौरान प्रधान शासक को अपना पदत्याग करने को बाध्य भी होना पड़ सकता है। सैन्यसंघर्ष आन्तरिक अशान्ति को शान्त नहीं कर सकेगा। **POK**, बलूचिस्तान, सिन्ध आदि में सैनिक अत्याचार एवं अनाचार पाक के विखण्डन का कारण बन जायें तो कोई आश्चर्य नहीं। हां, सबसे कठिन परिस्थिति तो 21 अक्तूबर से 4 दिसम्बर, सन् 2022 ई. के लगभग तक है। इसमें मुस्लिम राष्ट्रों को (विशेषत: पाक को) भारी आर्थिक संकट का सामना करना पड़ेगा। पाकिस्तान में सत्तापरिवर्तन किंवा पाक में राष्ट्रपतिप्रणाली लागू होने के योग हैं। चीन की विस्तारवादी नीति पाक पर अपना प्रभुत्व स्थापित करने में सफल रहेगी। परिणामस्वरूप, चीनी भाषा का अध्ययन यहां पाक के कुछ प्रान्तों में अनिवार्य होगा।

पाक की इस संवत् 2079 वि. की ग्रहस्थिति की विषमता से संकेत मिलता है, कि–इस वर्ष '**पाक-अधिकृत कश्मीर**' पाक से विलग हो सकता है। परिणामस्वरूप, पाक को चीन आदि कुछ देश अपनी स्वार्थपरक नीति से छद्म युद्ध के लिए प्रेरित कर सकते हैं, जोकि पाक के लिए हानिकारक रहेगा।

मुस्लिम देशों की कुण्डली नं. 2

11 | 9
गु. 12 | 10 श. | 8
मं. 1 रा. | 7 के.
2 | बु. 4 सू. | 6
3 शु. | 5 चं.

31 जुलाई रविवार, हिजरी सन् 1444 (1 मुहर्रम) (सूर्यास्त समय) 19 घं. 14 मि. (I.S.T.)

कुण्डली नं. 2 में मेषस्थ राहुयुत मंगल कुछ राष्ट्रों में चिन्तनीय स्थिति बनाएगा। लेकिन लग्नस्थ मकर राशि के शनि की सूर्य-बुध पर दृष्टि होने से कोरिया, पाक, चीन, रूस, इरान तथा ईराक आदि में किसी देशविशेष के प्रभुत्व को क्षीण करने के लिए ब्रिटेन, फ्रांस, जर्मनी, उ. कोरिया एवं चीन आदि द्वारा सुदूर मारक शस्त्रास्त्रों के परीक्षण से वातावरण को युद्धात्मक बना सकती है। लेकिन इस विक्षुब्ध वातावरण में भारत की भूमिका प्रशंसनीय रहेगी।

इस हिजरी सन् का मालिक सूर्य है, अनेकत्र वायुवेग से हानि हो। सूर्य-शनि का समसप्तक अनेकत्र अग्निकाण्ड से जनधनहानि का संकेत देता है। मुस्लिमराष्ट्र-विशेष में आन्तरिक अशान्ति रहे एवं अन्य राष्ट्रविशेष में आकस्मिक सत्तापरिवर्तन के भी योग बन रहे हैं।

पाक में प्रांतीय विभाजन से स्थिति विषम होती नजर आएगी।

इस वर्ष मंगल-राहु, शनि-सूर्य-बुध की स्थिति के अनुसार चीन की विस्तारवादी नीति एवं पाक में उग्रवाद एवं उ. कोरिया आदि की स्वतन्त्रता से सीमा-प्रान्तों पर विशेष सतर्क रहना होगा। कश्मीर में पाकजन्य उग्रवाद एवं पाक-अधिकृत कश्मीर आदि में पाक का कुचालचक्र भारत के सीमाप्रान्तों को अशान्त कर सकता है।

यह वर्ष कहीं युद्धात्मक स्थिति, प्राकृतिक प्रकोप, भूकम्प, अग्निकाण्ड, तूफान व अन्यविध प्राकृतिक प्रकोप से यूरोप में जनधनहानि करे, ऐसी ग्रहस्थिति दृष्टिगोचर हो रही है।

संवत् 2079 वि. की गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार भारत एवं भारत-सरकार में घटित होने वाले घटनाचक्र का आकलन

सभी शुभाशुभ घटनाएं मनुष्य की पहुंच से बाहर समझी जाती हैं, लेकिन जो रहस्य साधारणत: इन्द्रियों की पहुंच से बाहर हैं अथवा भूत-भविष्य के गर्भ में निहित हैं, वे ज्योतिषशास्त्र-द्वारा प्रत्यक्ष जान लिये जाते हैं। हमारे ऋषियों ने वेदचक्षु इस ज्योतिषशास्त्र की रचना की है, जोकि भारत के लिए गौरव की बात है–

''ज्योतिषामयनं साक्षाद् यत्तद्ज्ञानमतीन्द्रियम्।
प्रणीतं भवता येन पुमान् वेद परावरम्।।''

–(श्रीमद्भागवतपुराण)

इस प्रकार जगत्पिता की अदृश्य, अलौकिक शक्ति ग्रहों के आकर्षण-विकर्षण के आधार पर ब्रह्माण्ड को प्रभावित करती है, संचालित करती है। ग्रहगतिजन्य इस परिणाम को हम ''**भवितव्यता**'' किंवा ''**ईश्वरेच्छा**'' कहकर स्वीकार करते हैं।

स्वतन्त्र भारत का 75वां वर्ष

(14 अगस्त, सन् 2021 ई. से 14 अगस्त, 2022 ई. तक)

स्वतन्त्र भारत के 75वें वर्ष की ग्रहस्थिति का परिशीलन करने से स्पष्ट है कि–**शनि-सूर्य का समसप्तक यहां की जनता एवं प्रशासक वर्ग के लिए भारी उलझनों वाला सिद्ध होगा।** देश में आन्तरिक, साम्प्रदायिक उलझनों में विदेशी हाथ होने से कुछ प्रान्तों में संकटापन्न स्थिति बनेगी।

स्वतन्त्र भारत का 75वां वर्ष

रा. 2, 12, 3, 1, 11 गु., सू. 4, 10 श., मं. बु. 5, 7 चं., 9, 6 शु., 8 के.

14 अगस्त, 2021 ई.
23 घं. 18 मि. (I.S.T.)

क्योंकि भारत की प्रभावराशि मकर है, शनि-गुरु लगभग अक्तूबर-मध्य तक वक्रगति से चलेंगे, गुरु शनि की राशि कुम्भ में है। इस स्थिति में शुभ मन्त्रणा देने वाला देश भी सहायक सिद्ध न होगा, विदेशनीति में निजीदेश के विपक्षी नेता ही देश के लिए विपरीत परामर्श एवं अविमृश्यकारिता का परिचय देंगे। अपि च – शनि सारा साल मकर राशि में ही रहेगा, गुरु-शुक्र के वक्रत्वकाल में अक्तूबर-मध्य के लगभग तक देश में भयंकर महामारी से जनता परेशान रहेगी। पड़ोसी देश चीन, पाक एवं कुछ अरब देश भी देश के सीमाप्रान्तों पर युद्धात्मक नीति से भारी चिन्तनीय स्थिति बना सकते हैं:–

''पृथ्वीशा: क्रोधपूर्णा: भवति पथिभयं सर्वरोगाद् विनाश:।
चिन्तास्थानं नृपाणां भवति सति पथे सूर्यपुत्रे मृगस्थे।।''

14 सितं. को वक्रगति से गुरु मकर राशि में आकर शनि के साथ एकराशिसम्बन्ध बनायेगा। इस समय शनि भी वक्री ही है। मंगल, सूर्य, बुध के साथ शनि-गुरु का नवपंचम-सम्बन्ध कहीं भयंकर बाढ़, अग्निकाण्ड एवं तूफान आदि से हानि के योग बनायेगा।

21 अक्तूबर को मंगल तुला राशि में आकर 4 दिसं. तक शनि के साथ परस्पर दृष्टिसम्बन्ध बनायेगा। 26फर., 2022 ई. से संवत् 2078वि. के अन्त तक शनि-मंगल दोनों मकर राशि में एक साथ चलेंगे। **स्पष्ट है कि** – 21 [illegible]

चीन, तिब्बत, मिजोरम एवं अन्य सीमावर्ती समस्याओं से चीन की विस्तारवादी नीति से युद्ध जैसी स्थिति से अशान्त रहेगा। **इस वर्ष पाक, चीन, नेपाल–ये तीनों देश भारत के लिए समस्यात्मक रहेंगे।**

स्वतन्त्र भारत का 76वां वर्ष

(15 अगस्त, सन् 2022 ई. से संवत् 2079 वि. के अन्त तक)

स्वतन्त्र भारत के 76वें वर्ष की ग्रहस्थिति का वेरवा इस प्रकार है–

इस वर्ष कुण्डली में सूर्य-शुक्र का मकरस्थ शनि के साथ समसप्तकयोग यहां की जनता एवं राजनीतिक-पर्टियों के लिए संघर्षपूर्ण रहेगा। कुछ राजनैतिक दल देश में साम्प्रदायिक उलझनों को हवा देंगे एवं कुछ विदेशी तत्त्व भी वातावरण को क्षुब्ध कर सकते हैं।

15 अग. 2022 ई.,
5 घं. 27 मि. A.M.

भारत की प्रभावराशि मकर में स्थित शनि का गुरु से सितम्बर से दृष्टिसम्बन्ध बन रहा है और जनवरी, 2023 ई. में शनि एवं सूर्य का मेल किसी अघटित घटना को जन्म देगा।

देश के प्रान्तीय शासनतन्त्र में राजनैतिक हलचल ज़ोर पकड़ेगी और राजनीतिज्ञ दल सत्तासंघर्ष के लिए उद्यत होंगे।

जनवरी से मार्च, 2023 ई. तक देश के कुछ प्रान्तों में भयंकर प्राकृतिक आपदा, भूकम्प, तूफान, अग्निकाण्ड, जलप्रलय आदि से जनधनहानि के योग भी बनते हैं।

28 जुलाई, 2022 ई. से गुरु वक्री होकर वक्री शनि के साथ 22 अक्तूबर तक दृष्टिसम्बन्ध बनाएगा, जोकि कश्मीर, महाराष्ट्र, छत्तीसगढ़ आदि में नक्सली हमलों से जनधनहानि का संकेत देता है।

16अक्तू. से मिथुनस्थ मंगल की शनि पर दृष्टि 13 नवं. तक देश में कहीं दुर्भिक्ष [illegible] करेगी एवं इस दौर में किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति के निधन से

भारतीय गणतन्त्र का 73वां वर्ष

26 जन., 2022 ई., 21 घं. 20 मि. (I.S.T.)

इस कुण्डली में नीचाकांक्षी चन्द्र को छोड़कर सारे ग्रह राहु एवं केतु से आक्रान्त हैं। ग्रहस्थिति विषम समस्याओं को लेकर आ रही है। **आश्विन तृतीया मंगलकारी एवं सप्तमी शनिवारी होने, साथ ही शनि-सूर्य के एकत्र होने से कहीं भयंकर अग्निकाण्ड से हानि एवं पाक आदि में ब्लूचिस्तान किंवा गिलगित आदि में चिन्तनीय स्थिति बनेगी :–**

> **''आश्विने हि तृतीयायां भौमवारो यदा भवेत्।**
> **तदा त्वग्निभयं ज्ञेयं जगतो नाशकारणम्।।''**

29 अप्रै., 2022 ई. से मई के पूर्वार्ध तक शनि-मंगल के कुम्भस्थ रहने पर कहीं सीमा-प्रान्तों पर युद्धात्मक स्थिति से निपटने के लिए सचेष्ट रहना होगा।

गणतन्त्र कुण्डली में सूर्य-शनि के मकरस्थ होने से रोगविशेष से जनता में विशेष कष्ट रहे। पाक, चीन एवं कुछ अन्य देश भारत के साथ उलझनपूर्ण स्थिति बना सकते हैं। मकरस्थ शनि का फल इसप्रकार है–

> **''पृथ्वीशाः क्रोधपूर्णाः भवति पथिभयं सर्वरोगाद् विनाशः।**
> **चिन्तास्थानं नृपाणां भवति सति बले सूर्यपुत्रे मृगस्थे।।''**

मकर राशि में शनि 17 जन., 2023 तक चलेगा। 12 जन., 2023 ई. से शनि-सूर्य और 29 फरवरी, 2023 से कुछ दिनों के लिए शनि-शुक्र का एकत्र होना भी शुभ संकेत नहीं है।

इस समयावधि में कहीं व्यापक युद्ध की आहट सुनाई देने लगेगी और अनेकत्र प्राकृतिक प्रकोप, उग्रवादजन्य अशान्ति, भूकम्प किंवा दुर्भिक्ष आदि से जनता स्थानान्तरण करने को विवश होगी।

संवत् 2079 वि. की गोचर ग्रहस्थिति का भारत पर प्रभाव

पाठको! ग्रहगतिजन्य प्रभाव से प्रताड़ित समस्त ब्रह्माण्ड, देश-समाज एवं व्यक्ति की स्थिति ठीक उस तिनके की भांति ही अनुभव की गयी है, जो वायुवेग से प्रताड़ित होकर अपने अस्तित्व को खोकर इधर-उधर भागता फिरता है। 'नैषधचरित' में स्पष्ट लिखा है–

> ''अवश्य भव्येष्वनवग्रह ग्रहा यया दिशा धावति वेधसः स्पृहा।
> तृणेन वात्येव तयानुगम्यते लोकस्य चित्तेन भृशाऽवशात्मना।।''
>
> –(नैषधचरित)

यह बात भी नितान्त सत्य है कि–ग्रहों की प्राकृतिक व्यवस्था में तनिक भी रूपान्तरण होने से दिग्दाह, उल्कापात, भूकम्प, अतिवृष्टि, अनावृष्टि, युद्ध, महामारी, अराजकता आदि उपद्रवों से संसार त्रस्त हो जाता है। अतः स्पष्ट है कि–आकाशीय पिण्डों (ग्रहों) का विश्वजनीन घटनाचक्र से कुछ सम्बन्ध अवश्य है–इस तथ्य को वैज्ञानिक, विचारक एवं बुद्धिजीवियों का एक बड़ा वर्ग स्पष्ट स्वीकार करता है।

ग्रहगतिजन्य संकेतों का अध्ययन करके हम मनीषी महर्षियों के द्वारा निर्दिष्ट सिद्धान्तों के अनुसार भारत की राजनीति एवं अन्य पड़ोसी देशों के साथ सम्बन्धों पर अपने विचार लिखने की चेष्टा कर रहे हैं। **विद्वज्जनों के आशीर्वाद की याचना है, क्योंकि ग्रहगतिजन्य संकेतों को ठीक-ठीक पकड़ने में अनेकदा चूक भी हो सकती है। विद्वज्जन स्वयं संकेत को सुधार कर हमें आशीर्वाद दें–प्रार्थना है।**

चैत्र कृ. अमावस,
1 अप्रैल, सन् 2022 ई.,
11 घं. 54 मि. A.M. (I.S.T.)

चैत्र कृष्ण अमावस, शुक्रवार, तदनुसार 1 अप्रैल, 2022 ई. को 11 घं. 54 मि. (I.S.T.) पर मीनस्थ चन्द्र के समय मिथुन लग्न में सं. 2079 वि. (नववर्ष) का प्रवेश हुआ है।

कुण्डलीगत ग्रहस्थिति के अनुसार वृषस्थ राहु एवं वृश्चिकस्थ केतु के मध्य (कालसर्पयोग की

स्थिति) में नववर्ष का आगाज़ (शुभारंभ) अनेक राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं को लेकर उपस्थित हो रहा है।

संवत् के प्रारम्भ में ही भारत की प्रभावराशि मकर में शनि-मंगल की स्थिति एवं शनि की सूर्य-बुध-चंद्र पर दृष्टि होने से यह वर्ष कश्मीर, चीन, बंगलादेश एवं पाक की नीति से सीमाप्रान्तों पर भयावह स्थिति का संकेत देता है।

आगे 29 अप्रैल से लगभग 17 मई, सन् 2022 ई. तक शनि-मंगल के कुम्भ राशि में होने से भारत के प्रान्तीय शासनतन्त्र एवं राजनैतिक दलों में सत्तासंघर्ष के लिए भारी जोर-शोर रहेगा। शनि-मंगल की स्थिति इन दिनों कहीं साम्प्रदायिक उपद्रव, अग्निकाण्ड आदि प्राकृतिक प्रकोप से देहली, उ.प्र., राजस्थान, मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़ आदि में भयावह स्थिति भी बना सकती है।

आगे 27 जून, 2022 ई. से एवं 12 जुलाई को वक्री शनि के पुनः मकर में आने पर शनि-मंगल की प्रखरता राजनीतिज्ञों के लिए कहीं अनिष्ट घटना से भयकारक है; **भगवान् शान्ति का दान दे, यही प्रार्थना है।** क्योंकि संवत में लगभग 4 जून से 23 अक्तूबर तक शनि का वक्रत्वकाल एवं नीच मंगल एवं सूर्य-शुक्रादि ग्रहों की स्थिति इस संवत् में अघटित घटनाओं का आह्वान करती है।

लगभग 14 जनवरी, सन् 2023 ई. से शनि-सूर्य एवं शुक्रादि ग्रहों की स्थिति-दृष्टि से सीमाप्रान्तों पर भयंकर स्थिति से सावधान रहना होगा। **पाक, अमेरिका, रूस, चीन, ताइवान, कोरिया आदि देशों में परमाणु-परीक्षण की होड़ कहीं अघोषित युद्ध का भयावह वातावरण बना सकती है, जिससे विश्वशान्ति क्षुब्ध हो सकती है।**

इस संवत् में नेपाल, पाक आदि में चीन की विस्तारवादी नीति कुछ देशों की सत्ता को क्षीण करेगी। समुद्री क्षेत्रों में चीन का वर्चस्व क्षेत्रीय युद्ध का कारण बनेगा। भारत को पाक की गतिविधि से सीमाप्रान्तों पर सावधान रहना होगा।

इस वर्ष का राजा शनि एवं मन्त्री गुरु होने के कारण भारत अपने यश एवं वर्चस्व को महिमामण्डित रखेगा।

भारत के प्रमुख राजनैतिक दल

भारतीय जनता-पार्टी

सं. 2079 वि. की ग्रहस्थिति के अनुसार भाजपा की स्थापना-कुण्डली में गोचरस्थ (धनस्थानस्थ) कर्क राशि देश की आर्थिक स्थिति को सुव्यवस्थित करने के लिए प्रधान शासकों को नए कानून एवम् अन्य मित्र देशों के साथ औद्योगिक नीति निर्धारित करके देशहित में आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करेगी।

कुण्डली भारतीय जनता पार्टी

भाव	ग्रह
3	
4	
5	रा. श. मं. गु.
6	
7	
8	चं.
9	
10	
11	के. बु.
12	सू.
1	
2	शु.

ध्यान रहे—देश की आर्थिक, सामाजिक एवम् सामरिक स्थिति और देश को गरिमा प्रदान करने में सरकार जनवरी 2022 ई. के लगभग समर्थ होगी, क्योंकि शनि कुम्भ राशि में आकर भाजपा के भाग्यस्थान कुम्भ को पुष्ट कर लगभग दो-अढ़ाई वर्ष तक भारतगणतन्त्र को महिमामण्डित करेगा–**''स्थानवृद्धिकरः शनिः।''** इस समयावधि में तथा आगे भी भारतीय जनता पार्टी के लिए महिमामण्डित रहने का योग है।

इस संवत् 2079 की प्रवेशकालीन कुण्डली एवं भाजपाकुण्डली में मिथुन लग्न से दोनों का उदय हो रहा है। संवत् प्रवेश कुंडली के अनुसार भाजपा-जन्माङ्ग में कर्क राशि पर शनि-मंगल की पूर्ण दृष्टि रहेगी, जोकि देश को भारी आर्थिक संकट से जूझने का महासंकट भाजपा के सामने उपस्थित करेगी। लेकिन इस वर्ष सं. 2079 वि. में शनि-मंगल-राहु-सूर्य एवं शनि-सूर्य का ऐक्य एवं दृष्टिसम्बन्ध संकेत देता है कि-उ.प्र. आदि प्रान्तों में भाजपा-नेतृत्व के शेष बचे समय में अपनी पार्टी और राज्य की स्थिति सुधारने के लिए ठोस पग तो उठाने ही होंगे अथवा आगामी विधान-सभाई चुनावों में निराशाजनक स्थिति का सामना करना पड़ सकता है।

कांग्रेस पार्टी

कांग्रेस-स्थापनाकालीन ग्रहस्थिति

स्थापनाकालीन कुण्डली में मंगल एवं शनि का राशिव्यत्यय इस पार्टी को संघर्षपूर्ण स्थिति में भी परस्पर विवादों को सुलझाने में सफलता देगा।

29 अप्रैल, 2022 के बाद कुम्भस्थ शनि की मंगल के साथ सन्निधि होने से प्रधान नेतृत्व की चर्चा भी विवाद का विषय रहेगा, लेकिन इस विवाद का हल गुरु के मीन में आने पर संभव है। लगभग 13 अप्रैल, 2022 के बाद अग., 2022 ई. तक एवं सुदूरवर्त्ती लगभग सन् 2030 ई. के मध्य कांग्रेस पार्टी पुनः प्रभावी रहेगी। पार्टी को अभी सुचिर मन्थन की आवश्यकता तो है ही।

सितम्बर, 2022 ई. के लगभग सूर्य-बुध (स्थापनाकुण्डली के भाग्येश-कर्मेश) का सम्बन्ध इस पार्टी को अक्तूबर, 2022 ई. तक प्रभावक्षेत्र की वृद्धि प्रदान करेगा।

आम आदमी पार्टी

गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार इस संवत् में शनि-मंगल का ऐक्य एवं अन्य ग्रहस्थिति विशेष प्रगतिप्रद तो नहीं, लेकिन पार्टी की स्थापनाकालीन ग्रहस्थिति के अनुसार नवमेश-दशमेश शनि लगभग 29 अप्रै. से 16मई, सन् 2022 ई. के मध्य राजनैतिक गतिविधि एवं प्रशासनिक दृष्टि से संघर्षमय रहेगा, विशेष उपलब्धिपूर्ण समय का आभास है। पुनरपि, कुछ प्रान्तों में पार्टी अपना अच्छा खाता खोलकर प्रगतिपथ पर रहेगी।

कुछ प्रतिष्ठित राजनीतिज्ञ

जन्माङ्गकालिक ग्रहस्थिति श्रीनरेन्द्रमोदी

श्रीनरेन्द्र मोदी महाभाग–श्रीनरेन्द्रमोदी जी का जन्म 17 सितं., सन् 1950 में गुजरात स्थित वाडनगर (Vad Nagar) (मेहसाना) में 11 घं. 00 मि. A.M. पर हुआ। इनकी जन्मकालिक ग्रहस्थिति इस प्रकार है–

इस समय चन्द्र में शुक्रान्तर 3-5-2021 ई. तक चलेगा, जोकि देश में व्याप्त अनेक आपदाओं से परेशान रखेगा, लेकिन भाग्येश चन्द्र लग्न में नीच होकर स्वराशिस्थ मंगल के साथ योग करता है। मंगल जोकि 'रुचक योग' बनाता है, चन्द्रयुति में विशेष प्रभावी नहीं, फिर भी इस समय देश में व्याप्त सभी कठिनाइयों के बावजूद यह योग "शास्त्री–मन्त्र जपाधिकार-कुशलो राजोऽथवा तत्समः"–प्रमाणानुसार श्रीमोदी जी को 27-4-2022 ई. के बाद 20-4-2024 ई. तक का समय सात्त्विक धर्मात्मा होने से भारत को दूरदर्शिता से आत्मनिर्भर, लोकतन्त्र को नयी दिशा देने वाला एवं उपलब्धियों से गौरवान्वित करने वाला सिद्ध होगा। इनके संरक्षण में देश विश्वबन्धुत्व एवं सर्व-समर्थ देशों में अग्रणी स्थान प्राप्त कर सकेगा। इस समय मंगल में मंगलान्तर 27-4-2022 ई. से शुरु होगा। 29 अप्रै., 2022 ई. से शनि-मंगल का योग एवं 12 जून, 2022 ई. से शनि का वक्रत्वकाल एवं मकर में शनि की स्थिति भी मोदी जी के लिए कठिन परिस्थितियों वाली है। स्वास्थ्य-सुरक्षा की दृष्टि से सावधान रहना चाहिए। सन् 2023 ई. के शुरु से संवत् के अंत तक कठिन राजनैतिक परिस्थितियों वाला समय है।

जन्माङ्ग श्रीमती सोनिया

श्रीमती सोनिया गांधी–29 अप्रैल, 2022 ई. से 17 मई तक शनि-मंगल का सम्बन्ध श्रीमती गांधी के लिए शारीरिक स्वास्थ्य के लिए चिन्तनीय है।

17 मई से गुरु-मंगल का मीन में रहना लगभग जून, 2022 ई. तक अनेकत्र कांग्रेस पार्टी को नई दिशा एवं कई प्रान्तों में सफलता प्रदान करेगा। 12 जुलाई से शनि का वक्रत्वकाल आगे स्वास्थ्य एवं राजनैतिक दृष्टि से कठिन परिस्थितियों वाला है।

श्रीराहुल गांधी–जन्मकालिक ग्रहस्थिति के अनुसार मंगल की महादशा में बुधांतर 24-4-2022 ई. तक प्रभावी रहेगा।

नीचस्थ शनि व्ययस्थान में एवं नीचाकांक्षी क्षीण मंगल द्वितीय भाव में होने से पार्टीप्रमुख किंवा पार्टी के प्रभुत्व की कल्पना का कुछ व्यक्ति विरोध करेंगे। **अतः गोचर ग्रहस्थिति अनुसार संवत् 2079 वि. में शनि-मंगल की स्थिति एवं सू.-बु.-रा. की स्थिति राजनैतिक संघर्ष एवं परेशानी कारक रहेगी।**

श्रीराहुल गांधी जी की जन्माङ्गकालिक ग्रहस्थिति से स्पष्ट है कि-मंगल (सप्तमेश) की महादशा में बुध एवं केतु का अंतर 21-9- '22 ई. तक प्रभावी रहेगा। जन्माङ्ग में मंगल क्षीण किंवा नीचाकांक्षी है, अत: कांग्रेस पार्टी को ही विरोधी दलों का सामना करना पड़ेगा। लेकिन कांग्रेस पार्टी अपनी सत्ता एवं प्रभुत्व को बचा अनेक प्रान्तों में इन नेताओं के संरक्षण में सत्ताप्राप्ति की ओर बढ़ सकती है।

श्रीमती प्रियंका वाड्रा-श्रीमती प्रियंका वाड्रा की जन्मकालिक ग्रहस्थिति के अनुसार इस समय शुक्र की महादशा में बुधान्तर 12-1-2023 तक प्रभावी रहेगा। शुक्र भाग्यस्थान में शनि के क्षेत्र में एवं शनि व्ययस्थान में शुक्र के क्षेत्र में है। सप्तम भाव में बृहस्पति के क्षेत्र में **बुधादित्य योग** गुरु की सन्निधि में है। यह ग्रहस्थिति श्रीमती प्रियंका को कांग्रेस पार्टी में पुन: जागृति कराने वाली है एवं इन्हें विशेष प्रभाव-क्षेत्र में पदार्पण करा सकती है। 29 अप्रैल से 16 मई, 2022 ई. तक शनि-मंगल का कुम्भराशि में मेल कठिन परिस्थितियों वाला है। लेकिन भाग्येश शनि एवं कर्मेश गुरु के वक्रत्वकाल में भी स्व-स्वभाव में स्थिति राजनैतिक जीवन एवं प्रभावक्षेत्र में वृद्धि का संकेत देती है।

भारत के कुछ प्रान्त

पंजाब–इस संवत् में **मीन राशीश गुरु 28 जुलाई, 2022 ई. से 25 नवं. 2022 ई. तक वक्री रहेगा। संकेत मिलता है कि**-यहां की शासनसत्ता में कुछ उठापटक रहे और राजनैतिक स्थिति में पार्टीप्रधान को हस्तक्षेप करना पड़ेगा। लेकिन कांग्रेस पार्टी को शासन करने का अवसर मिलेगा। प्रधान नेतृत्व में कुछ परिवर्तन संभव हैं।

हिमाचल प्रदेश–प्रभावराशि मीन है। 29 अप्रैल, 2022 ई. से 17 मई तक राजनैतिक गतिविधि में काफ़ी ज़ोरदार कठिन स्थिति बनेगी।

4 जून, 2022 ई. से शनि के वक्री होने पर 23 अक्तू., सन् 2022 ई. तक यहां प्राकृतिक प्रकोप से जनधनहानि के योग बनते हैं। यहाँ भाजपा-नेतृत्व का प्रभाव रहे एवं प्रान्त की आर्थिक एवं सामाजिक स्थिति में सुधार होगा।

हरियाणा–इस प्रांत की प्रभावराशि मीन एवं नामराशि मिथुन है। इस वर्ष 13 अप्रै., 2022 ई. से संवतान्त तक गुरु मीन राशि में ही रहेगा, जोकि इस क्षेत्र में भाजपा को समर्थ एवं आगे शासन करने का सामर्थ्य प्रदान कर सकता है, लेकिन कांग्रेस पार्टी भी अपना वर्चस्व बढ़ाने में समर्थ अनुभव करेगी। इस प्रान्त में कृषि एवं व्यापारिक क्षेत्र में विशेष प्रगति होगी।

उत्तर प्रदेश–इस प्रान्त की नामराशि वृष एवं प्रभावराशि धनु है। प्रभाव राशीश गुरु संवत् के आरम्भ में मीन राशि में आकर दूरगामी प्रभाव बनाता है। लेकिन 28 जुलाई, 2022 ई. के बाद लगभग नवम्बर तक गुरु के वक्री होने पर इस प्रान्त में अप्रत्याशित उलट फेर होंगे। कुछ विरोधी राजनीतिज्ञ यहां की प्रगतिप्रद योजनाओं में रुकावट पैदा करके शासनसत्ता में परिवर्तन चाहेंगे। इस प्रान्त में भाजपा का प्रभाव क्षीण होगा और अन्य दल + कांग्रेस अपने प्रभावक्षेत्र का विस्तार करने में सक्षम रहेंगे। बसपा आदि पार्टियों के विधायक अन्य पार्टियों से मिलकर यहां राजनैतिक दृश्य को बदलने में सक्षम हो सकते हैं।

जम्मू-कश्मीर–संवत् 2079 वि. की गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार कश्मीर की **नामराशि तुला पर रा. के. की स्थिति एवं नामराशि-मकर पर 29 अप्रै., 2022 ई. से 17 मई, 2022 ई. के मध्य मकर में शनि-मंगल के ऐक्य तथा 4 मई से 23 अक्तू., 2022 ई. के मध्य शनि के वक्रत्वकाल में कश्मीर-समस्या गम्भीर रूप धारण करेगी।** इस जलते सीमाप्रान्त पर पाक की दृष्टि तिब्बत, मिजोरम एवं अन्य सीमान्त क्षेत्रों पर भारत के साथ पाक-चीन जिस स्थिति को जन्म दे रहे हैं-यह भारत एवं विश्वजनीन शान्ति के लिए भयावह सिद्ध हो सकती है। यहां क्षेत्रीय निर्वाचन भी विवाद का विषय रहेगा।

दिल्ली–इस प्रान्त की प्रभावराशि मकर एवं नामराशि मीन है। संवत् के प्रारम्भिक मासों में लगभग मई 2022 ई. तक शनि-मंगल के मकर राशि में रहने से यहां कुछ साम्प्रदायिक तत्त्व किंवा उग्रवादी वातावरण को खराब कर सकते हैं। *आगे मीनस्थ गुरु* [illegible] *स्थिति को कंट्रोल करने में समर्थ रहेंगे।*

आगामी विधानसभा-निर्वाचन

सन् 2022 ई. के प्रारम्भिक मासों में गोवा, उत्तराखण्ड, उ. प्रदेश, पंजाब एवं मणिपुर में विधानसभाओं के चुनाव होंगे। गोचर ग्रहस्थिति के कारण अप्रैल से जून, 2022 ई. में अनेकत्र साम्प्रदायिक उपद्रवों का खतरा है। भाजपा अपनी सत्ता को बचाने में प्रयस्त रहेगी एवं अन्य दल भी सत्ता को बचाने के लिए मतदाताओं को सुविधाएं देने की घोषणाएं करेंगे।

गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार पंजाब में कांग्रेस एवं गोवा में पूर्ववत् पार्टी प्रबल रहे। उ. खण्ड एवं उ.प्र. में सत्तापरिवर्तन की स्थिति संभव है। श्रीराम मन्दिर आदि की कृपा से सत्ताप्राप्ति का प्रयास एवं उ. खण्ड के लिए चारधामयात्रा-सुविधा भी अधिक बलवती नहीं रहे-ऐसी ग्रह स्थिति है। शेष भगवान् जाने।

देशहितार्थ "भारत की राजनीति पर पुनः सुयोग्य राजनीतिज्ञों का वरद हाथ रहेगा। जनता राजनीतिक वंशवाद से विमुख होती नजर आयेगी और भारत को चहुंमुखी प्रगति की ओर ले जाने वाला नेतृत्व उभरकर देशहित में काम करेगा।"

पाठको! प्रभुकृपा से भूत-भविष्य में जो कुछ ग्रहगोचरवश अनुभव किया, आपके सामने रख दिया है। जो घटित हो चुका, वह आपने देख लिया। जो भविष्य है, उस पर आप भूतानुसन्धान के आधार पर विश्वास करें-

"समस्तमेतद् गतमागतं तथा भविष्यमप्यक्षरशो यथोत्तरम्।
निबोधितं शास्त्र-परम्परावशाद् भवादृशां भारतवासिनां पुरः॥"

लेख पूर्ण होने की तिथि-
20 जून, 2021 ई.
(श्रीगंगादशहरा-दिन)

शुभचिन्तक-
पं. इन्दुशेखर शर्मा,
संयमी शर्मा,

संवत् 2079 वि. में भारत की जलवायु एवं वर्षाविचार

वायुप्रदूषण, जलसंरक्षण का अभाव, प्राकृतिक संसाधनों का दोहन—ये सब पूरे भारत के लिए संकट की आहट हैं, धरती पर मानवजाति को बचाना है तो हमें इन समस्याओं का हल ढूँढना होगा, अन्यथा प्राकृतिक प्रकोप एवं पर्यावरणविचार से समय कठिन परिस्थिति को लेकर आ रहा है।

—संयमी शर्मा

जलवायु एवं वर्षाविचार के मूलभूत सिद्धान्तों, मानवीय भूलों, प्रबन्धन की अदूरदर्शिता, प्राकृतिक स्रोतों के दोहन एवं प्राकृतिक रहस्यों की उपेक्षा विश्व के लिए जल्दी ही भयावह सिद्ध होगी—इसे जनता, नेतागण एवं देश की प्रबन्धन-समितियों को गम्भीरता से अतिशीघ्र लेना होगा, अन्यथा **''यद्भावी न तद्भावी भावी चेन्न तदन्यथा''**—(जो होना है, वह होना ही है)—यह सोचकर कब तक प्राकृतिक आपदाओं का सामना कर पाएंगे—यह तो भगवान् ही जानें। लेकिन ग्रहचाल के अनुसार प्राकृतिक आपदाओं के भयंकर दुष्परिणाम शीघ्र ही स्थावर-जंगम जगत् को विनाश के कगार पर ले जाने वाले मालूम होते हैं। जलवायु/वर्षा-विचार के साथ इस लेख में एतत्-सम्बन्धित आधारभूत रहस्यों की चर्चा भी सूक्ष्म रूप से की गयी है।

जल, वायु, अनाज किंवा अन्य कृषि उत्पादन—ये जीवनाधायिका-चतुष्टयी ही संवत्सर के फल की दिशा व दशा को निर्धारित करती है। यदि वर्ष के ये चार स्तम्भ सुदृढ़ हों तो वर्ष सुदृढ़, जनजीवन स्वस्थ एवं समृद्ध रहेगा—ऐसी मान्यता है। लेकिन **''जल एवं वायु''**—ये संवत् के प्रमुख स्तम्भों में से है। इन्हीं के आधार पर **''अन्नस्तम्भ''** की कल्पना की जा सकती है। जलवायु के बिना प्राणियों के जीवनाधायक अन्न की भी उपज सम्भव नहीं। अत: सं. 2079 वि. के जलवायु का ग्रहयोग के आधार पर यहां संक्षिप्त निर्देश नीचे दे रहे हैं। **आशा करते हैं कि—यह संक्षिप्त लेख किसानों/बागवानों के लिए** [illegible]

गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार उत्तरी एवं दक्षिणी ध्रुव, जोकि समस्त विश्व के मौसम को स्थिर रखने में सर्वोच्च भूमिका निभाते हैं, 'ग्लोबल वार्मिंग' के कारण उत्तरी ध्रुव में बढ़ रहा तापमान आगे आने वाले लगभग 15/16वर्षों की ग्रहस्थिति के अनुसार मंगल, शनि, राहु एवं केतु कुछ वर्षों में ही विश्व के लिए खतरे की घण्टी बजा सकते हैं। **कहने का तात्पर्य यह है कि—''ग्लोबल वार्मिंग'' विश्व के जलवायु के लिए भयंकर किंवा विपरीत परिस्थितियां बनाएगी, जिससे ध्रुवों के आसपास के देशों को ही नहीं, बल्कि पूरी दुनिया को ही दुष्परिणाम झेलने पड़ेंगे। अनेकत्र 'ऋतु-विपर्यय' अनुभव होने से वैश्विक तापमान किंवा प्रकृति में महानद और अन्य जलस्रोत सूखने लगेंगे। समुद्र एवं महानदों के तटों पर प्रलयंकारी दृश्य उपस्थित होंगे। वृक्षों से ऑक्सीजन कम प्राप्त होने लगेगी—इत्यादि आश्चर्यजनक परिवर्तन होंगे, जिससे रोग बढ़ेंगे।** मौसम में इस प्रकार के उतार-चढ़ाव प्रकृति के साथ चल रहे खिलवाड़ के कारण जारी हैं। प्रकृति में हो रहे असामान्य किंवा अप्राकृतिक परिवर्तन को समझने में तो आधुनिक वैज्ञानिक भी सकते में हैं। मौसम की अनिश्चितता से कृषिक्षेत्र में सम्भावित जोखिम कम करने के लिए सरकार को व्यापक रणनीति बनानी होगी।

सभी समुदायों के धार्मिक ग्रन्थों में पर्यावरण-हितैषी बनने के लिए कहा गया है। ''मनुस्मृति में एक वृक्ष को दस पुत्रों के बराबर की संज्ञा दी गयी है। कुरान कहती है कि—जल ही जीवन है। 'वेद' पानी के महत्त्व की [illegible] समुदाय में भी प्रकृति-प्रेम को श्रेष्ठता प्रदान

की गयी है।'' इस वर्ष की गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार '**अलनीनो**' गर्मी को बढ़ायेगा, परिणामस्वरूप कहीं सूखा, कहीं भयंकर बाढ़ से जनधनहानि का संकेत मिलता है। '**अलनीनो**' ऐसी प्राकृतिक घटना है, जिससे प्रशान्त महासागर का गर्म पानी उत्तर एवं दक्षिणी अमेरिका की ओर फैलता है। परिणामस्वरूप, पूरी दुनिया का तापमान बढ़ेगा। मौसम का सामान्य जलवायु-चक्र बिगड़ जायेगा, कहीं विनाशकारी बाढ़, कहीं सूखे के हालात बनेंगे। **अमेरिका, चीन एवं भारत आदि में विगत कई वर्षों से बाढ़ एवं उत्तरी भारत में सूखा भी इन्हीं कारणों से सम्भव हुआ है।**

आगे बर्फ के पिघलने से विश्व में समुद्री-तूफान आदि विनाशकारी लीलाएं देखने को भी मिलेंगी। आर्द्राप्रवेश-कालीन ग्रहगति के अनुसार जम्मू-कश्मीर, गुजरात, बिहार, उत्तर प्रदेश, उत्तराखण्ड, उड़ीसा, राजस्थान, मिजोरम आदि में इस वर्ष प्राकृतिक प्रकोप से हानि होगी। महाराष्ट्र (मुम्बई) में भी प्राकृतिक प्रकोप दिखाई देगा।

समुद्रतटवर्ती महानगरों एवं विश्व के देशों में इस वर्ष (सं. 2079 वि.) से ही विशेष प्राकृतिक प्रकोप से हानि के योग स्पष्ट रूप से ग्रहस्थिति संकेत देती है।

भारत में वर्षा एवं वायु के योग

जब सूर्य आर्द्रा नक्षत्र में प्रवेश करता है, लगभग उसी समय से भारत के प्रान्तों में वर्षा का आगमन ग्रहगोचर के अनुसार माना गया है। ज्योतिष-शास्त्रानुसार वर्षा, वायुमण्डल, समुद्री तूफान एवं चक्रवात आदि प्राकृतिक उत्पातों का विचार भी सूर्य के आर्द्राप्रवेश, रोहिणीवास, चतुर्मेघविचार एवं गोचर ग्रहस्थिति पर निर्भर करता है। अतः सर्वप्रथम सूर्य की आर्द्रा-प्रवेशकालीन कुण्डली के आधार पर विचार करते हैं।

संवत् 2079 वि. में आषाढ़ कृष्ण नवमी बुधवार, तदनुसार 22 जून, सन् 2022 ई. को तात्कालिक नक्षत्र रेवती एवं शोभन योग वाले दिन 11 बजकर 41 मि. पर सूर्यदेव मीनस्थ चन्द्र के समय आर्द्रा नक्षत्र में सिंह लग्न में प्रविष्ट होंगे।

सूर्य की आर्द्रा नक्षत्र-प्रवेशकालीन-ग्रहस्थिति इस प्रकार है–

सूर्य-आर्द्रा-प्रवेशकुण्डली

आर्द्रा-प्रवेश के समय स्वस्थ गुरु के साथ चन्द्र-मंगल का योग है। शनि सप्तमभाव में स्वराशिस्थ होकर राहु पर दृष्टिपात कर रहा है और शुक्र निजराशि में बुध के साथ मेल कर रहा है। अतः जून से अक्तूबरमध्य तक अनेक-प्रान्तों में भयंकर बाढ़-वर्षा से जनधनहानि के योग बन रहे हैं, लेकिन अनेक प्रान्तों में पेयजल की समस्या एवं वर्षा के अभाव से दुर्भिक्ष की स्थिति भी बनेगी, क्योंकि सूर्य का आर्द्रा नक्षत्र में प्रवेश दिन में 11 बजकर 41 मि. पर हो रहा है, अतः **''दिवार्द्रां याति चेद्भानुर्जल-भक्षणकारकः।''**

किञ्च–सूर्य का आर्द्रानक्षत्र में प्रवेश नवमी तिथि को होने से किसी विशेष महामारी आदि से जनता को भारी आपदा का सामना करना पड़ेगा–

''वह्नि-वेदाष्ट-नन्देन्द्रा एतत् संख्यासु भास्करः।
तिथिष्वार्द्रां यदा याति कष्टदः शेषके शुभः।।''

आर्द्राप्रवेशकालीन ग्रहस्थिति के अनुसार शनि की मेषस्थ राहु एवं मंगल की मिथुनस्थ सूर्य पर विशेष दृष्टि होने से सरकार को पर्यावरण-कन्ट्रोल करने एवं जन-जीवनोपयोगी वस्तुओं की उपलब्धता के लिए विशेष प्रयास करने होंगे।

गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार विश्व के कुछ भूभाग में विशेषतः भारत के बिहार, महाराष्ट्र, उ.खण्ड आदि में जुलाई से अक्तू. के मध्य तक भूकम्प, तूफान किंवा जलप्रलय से हानि के योग हैं। यह संवत् देश की जलवायु एवं प्राकृतिक प्रकोप से चिन्तनीय ही है।

इस वर्ष शनि की दृष्टि (शनि के मकर-कुम्भ में रहने से) उत्तर दिशा की तरफ ही रहेगी। फलस्वरूप, संवत् 2079 वि. में **उत्तरी गोलार्द्ध में जलाप्लाव,**

तूफान, भूकम्प, हिंसा, साम्प्रदायिक दंगे किंवा राजनैतिक हत्याकाण्डों से अनेकत्र दुर्भिक्ष की स्थिति से जनजीवन क्षुब्ध रहे। गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार **1 अप्रैल, सन् 2022 ई. से जुलाई, सन् 2022 ई. तक शनि-मंगल की स्थिति** विश्व में भयंकर प्राकृतिक आपदाओं का कारण बनेगी। इन दिनों भूकम्प, समुद्री तूफान, बाढ़ किंवा आकाशीय बिजली के गिरने से अनेकत्र हानि होगी।

इस संवत् में 'रोहिणी का वास' पर्वत पर होने से कुछ प्रान्तों में असामयिक वर्षा किंवा वर्षा की कमी या अभाव से भयंकर अकाल (दुर्भिक्ष) की स्थिति बनेगी। खड़ी फसलें सूख जाएंगी-

''रोहिणीनाम नक्षत्रं पर्वतस्थं यदा भवेत्।
वृष्टिहानिस्तदा ज्ञेया सर्वसस्य-विनाशनम्।।''

शरत्-सस्यजातक कुण्डली में सूर्य से द्वादशस्थ राहु एवं शनियुत मंगल की सूर्य पर दृष्टि होने से भी कुछ प्रान्त अतिवर्षण किंवा अवर्षण से ग्रस्त रहें। शनि-मंगल की स्थिति पर विचार करने से भान होता है कि-पश्चिमी एवं दक्षिणी प्रान्तों में अग्निकाण्ड आदि प्राकृतिक आपदाओं से हानि हो।

ग्रीष्म-सस्यजातक ग्रहस्थिति के अनुसार मकरस्थ शनि का चन्द्र के साथ षडष्टक एवं मंगल की चन्द्र पर विशेष दृष्टि कहीं बाढ़-वर्षा, पर्वतीय भूभाग पर अग्निकाण्ड आदि प्राकृतिक आपदा का संकेत देती है।

संवत् प्रवेशकालीन ग्रहस्थिति के अनुसार-गुरु-शुक्र दोनों विरुद्ध प्रकृति के ग्रह कुम्भस्थ होने से इस वर्ष वर्षा से हानि के योग भी हैं-

''एकत्र गुरु-शुक्रौ वा तदा वृष्टिः रणोऽथवा।''

किञ्च-संवत् प्रवेश के समय शनि-मंगल का 1 मई से जुलाई 2022 ई. तक कुम्भस्थ होना भी इस वर्ष जलवायु एवं प्राकृतिक आपदा (तूफ़ान, बवंडर, भयंकर बर्फबारी, भूकम्प, भयंकर अग्निकाण्ड [illegible]

इस **संवत् का राजा शनि** होने से भयंकर तूफान (वायुवेग) से हानिकारक भी रहेगा। इस संवत् का **मेघेश बुध** शुभ है, विदेशों से व्यापारिक सम्बन्ध बढ़ेंगे। **नवमेघविचार से 'तम' नामक मेघ होने से अनेकत्र वर्षा-पानी पर्याप्त न होने से खाद्यान्न पर्याप्त मात्रा में न होंगे। सप्तवायु-विचार से इस वर्ष वायुवेग से आकाशीय बिजली, भयंकर बवंडर या समुद्री तूफानों से मई से सितम्बर के मध्य किसी प्रान्तविशेष एवं किसी देशविशेष में भारी हानि के योग हैं, क्योंकि 'अतिवह' नामक वायु हानिप्रद है।**

इस संवत् में **'महापद्म'** नामक अष्टनाग एवं **'नन्दसारी'** नामक नाग भी महावृष्टि एवं कुछ प्रान्तों में दुर्भिक्ष का कारण बनेगा-**''महापद्मे महावृष्टिर्यत्र-तत्र दुर्भिक्षकम्।''**

किंच-

''यत्र वर्षे नागराजो नन्दसार्यभिधानकः।
तस्मिन् वर्षे महावृष्टिं कुरुते नात्र संशयः।''

इस संवत का वाहन **'भैंसा'** होने से अनेकत्र पेयजल की समस्या सरकार के सामने प्रश्नचिह्न खड़ा करेगी-

''..........वृष्टिनाशो महर्घता।
भूमिकम्पो भयं घोरं ....।।''

अतः भूकम्प किंवा वर्षा के अभाव आदि से जनता कुछ प्रांतों में परेशान रहेगी।

संवत् 2079 में जलस्तम्भ एवं वायुस्तम्भ भी महत्त्वपूर्ण हैं। इस वर्ष जलस्तम्भ 97.4 प्रतिशत है, अतः बिहार, उत्तराखण्ड, बंगाल, केरल, असम, महाराष्ट्र एवं उ.प्रदेश के कुछ भागों में कहीं भयंकर वर्षा (बाढ़), समुद्री तूफान, आदि प्राकृतिक आपदाओं से जनधनहानि संभव है। सामान्य से अतिशय वर्षा भी हानिकारक रहे- ऐसा जलस्तम्भविचार से मालूम होता है। इस जलस्तम्भ-चिन्तन [illegible] भारतेतर देश भी प्रभावित हो सकते हैं।

बवंडर, भयंकर बर्फबारी, भूकम्प, भयंकर अग्निकाण्ड आदि से कष्टप्रद रहेगा। ... से भूटान, नेपाल, चीन आदि भारतेतर देश भी प्रभावित हो सकते हैं।

वायुस्तम्भ–संवत् 2079 वि. में वायुस्तम्भ 35.3 प्रतिशत होने से क्षीण है, अतः वायुप्रदूषण पूरे देश में संकट की आहट का संकेत देता है। कहीं भारी वायुवेग से, कहीं कोयले के प्रयोग से, उद्योगों के कारण कहीं बायोमास जलाने से, कहीं जमीन के मरुस्थल में बदलने से संकट सामने आएगा।

इन सभी आपदाओं से बचने के लिए वेदों एवं अन्य शास्त्रों में इस प्रकार के उपाय बताएं हैं; जोकि बहुत ही सुगम एवं महत्त्वपूर्ण हैं।

मानव-समाज प्राचीन काल से ही वृक्षों की पूजा करता आया है। बरगद, पीपल, आम, नीम, तुलसी, हरड़, बहेड़ा, आंवला आदि का प्रयोग सदियों से औषधरूप में भारत में प्रचलित है। इनका रोपण एवं वनों के संरक्षण से वर्षा/वायु की विशुद्धि एवं सुचारु प्रयोग से हम पर्यावरण की रक्षा एवं जीवन्त रहने का स्वप्न साकार कर सकते हैं। शास्त्रों में लिखा है–

''तुलसी-गन्धमादाय यत्र गच्छति मारुतः।
दिशा-दशश्च पूताः स्युर्भूत-ग्रामश्चतुर्विधः।।''

अतः तुलसी की पवित्र सुगन्धि एवं इसी प्रकार अन्य वृक्षों के संरक्षण से हम वर्षा-वायु का नियन्त्रण करके जीवन को सुरक्षित रख सकते हैं, अन्यथा अनियन्त्रित वर्षा किंवा गर्म हवाओं का प्रकोप संसार के लिए भारी पड़ सकता है।

गर्म हवाओं का प्रकोप आज की ही समस्या नहीं, लेकिन इसके दूरगामी प्रभावों के प्रति हमें सावधान अभी से रहना होगा। ग्रहगोचर के अनुसार आगामी वर्षों में तापमान दो से चार डिग्री सैल्सियस तक बढ़ सकता है। यह मानवता एवं जीवन्त सृष्टिमात्र के लिए बड़ी चुनौती है। वैज्ञानिकों को इस बारे में सावधान कर देना उचित समझते हैं।

अब संवत् 2079 वि. की ग्रहस्थिति के अनुसार भारत में प्रत्येक मास का वर्षाविचार संक्षेप से लिखना उचित समझते हैं–

''वृष्टिमूला कृषिः सर्वा वृष्टिमूलं च जीवनम्।
तस्मादादौ प्रयत्नेन वृष्टिज्ञानं समाचरेत्।।''

–(कृषि-पराशर)

अप्रैल (सन् 2022 ई.) – 7, 8 एवं 11 से 16 व 18, 22, 24, 27, 28एवं 30 अप्रैल के लगभग मुंबई, आसाम, उड़ीसा एवं उ.प्र. के कुछ प्रान्तों में किञ्च पश्चिमी राजस्थान एवं हि.प्र. के कुछ भागों में बादलचाल और वायुवेग के साथ खण्डवृष्टि होगी। इन दिनों उत्तरी भारत में मौसम में बदलाव एवं तापमान बढ़ने लगेगा।

मई–4, 6, 9, 10, 11, 12 से 16मई एवं 23, 24, 25, 30 मई को महाराष्ट्र, भूटान, उड़ीसा, शिलांग, काठमाण्डु, उ.प्र., उत्तराखण्ड, जम्मू-कश्मीर, उ.प्र. के कुछ भागों, बिहार एवं हि.प्र. में वायुवेग एवं मेघगर्जना के साथ अच्छी वर्षा के योग हैं। 18, 19 मई के लगभग कहीं बाढ़ जैसी संभावना भी बनती है। **नोट**–1 मई से शनि-मंगल का योग भयंकर जलवायु के प्रकोप से कहीं बाढ़ व कहीं सूखा से हानिप्रद रहे-**''युद्धदौ शनि-माहेयौ तथा दुर्भिक्षकारकौ।''**

जून–3, 5, 6, 8, 9, 13, 14 से 19 जून व 22, 23 एवं 26से 30 जून के मध्य पंजाब, हरियाणा, हि.प्र., चण्डीगढ़, देहली, उ.खण्ड, उ.प्र., महाराष्ट्र, उड़ीसा, केरल, आसाम, जम्मू-कश्मीर एवं बंगाल में ज़ोरदार वर्षा के योग हैं। इन दिनों कुछ प्रान्त बाढ़ की चपेट में भी रहेंगे। श. मं. रा. की स्थिति कुछ प्रान्तों में सूखा कर दुर्भिक्ष की स्थिति भी बनाएगी।

जुलाई–2, 5, 6, 9, 10 एवं 13 से 20 जुलाई, किञ्च 24, 27, 28, 29 एवं 31 जुलाई के मध्य भारत के राजस्थान, उड़ीसा, आसाम, उ.खण्ड, हि.प्र., बिहार, महाराष्ट्र एवं अन्य समुद्रतटवर्ती इलाकों में कहीं तूफान, बाढ़ आदि प्राकृतिक प्रकोप से जनधनहानि भी संभव है।

ध्यान दें–2, 5, 9, 10 एवं 13 जुलाई को कुछ प्रान्तों में भारी बाढ़ एवं आकाशीय बिजली गिरने से हानि संभव है।

अगस्त—अगस्त 3, 5, 6, 8, 9, 11, 15, 17, 18, 20, 21, 25 एवं 27 से 31 अगस्त तक पंजाब, हि.प्र., उ.खण्ड, उ.प्र., महाराष्ट्र, कश्मीर, हि.प्र., नेपाल, बिहार, दार्जीलिंग एवं आसाम में जोरदार वर्षा के योग हैं। **कहीं भयंकर जोरदार वर्षा/बाढ़, तूफान आदि प्राकृतिक प्रकोप किंवा आकाशीय बिजली गिरने से जनधनहानि के योग हैं। शनि-गुरु का वक्रत्वकाल कहीं दुर्भिक्ष की स्थिति भी बनाएगा।**

सितम्बर—सितम्बर 8 से 11, 13, 16, 17, 19, 21, 23, 24 एवं 27, 30 सितम्बर के लगभग भारत के उत्तर-पश्चिमी क्षेत्रों में बादलचाल एवं वायुवेग के साथ अनेकत्र खण्डवृष्टि होगी। हि.प्र., कश्मीर एवं उत्तराखण्ड के उन्नत शृंगों पर कहीं हिमपात के समाचार मिलेंगे।

शनि-मंगल का नवमपंचम एवं शु.बु.गु. के वक्रत्वकाल में शीत का प्रभाव बढ़ेगा एवं प्राकृतिक आपदा व जलवायुविकार से हानि का भय है।

अक्तूबर—अक्तू. 1, 2, 9, 10, 15, विशेषत: 12 से 24 अक्तूबर एवं 26, 27, 30 अक्तूबर को श्रीलंका, आसाम, बंगाल, उ. प्रदेश, कश्मीर, हि.प्र., बंगाल एवं उत्तराखण्ड आदि में बादलचाल एवं वर्षा के योग हैं। उत्तरी भारत में शरद् ऋतु का प्रभाव बढ़ेगा, हिमाचली इलाकों में कहीं बर्फबारी भी होगी।

लगभग 18अक्तू. के बाद सू. शु. के. पर शनि एवं राहु की दृष्टि कहीं भूकम्प, अग्निकाण्ड एवं कहीं दुर्भिक्ष की स्थिति का संकेत देती है।

नवम्बर—नवंबर 3, 5, 6 एवं 8से 16नवं. तक व 16, 17, 19, 20, किञ्च 24 से 26नवं. के मध्य उत्तरी भारत भयंकर शीत लहर की चपेट में रहेगा। हि.प्र., उत्तराखण्ड, कश्मीर आदि में जोरदार हिमपात से यातायात अवरुद्ध रहेगा एवं मैदानी इलाकों में धुन्ध के कारण यानदुर्घटनाएं भी संभव हैं। **नोट**—5 नवं. के लगभग मंगल वक्री होगा। कार्त्तिक में शुक्र-सूर्य विशाखा नक्षत्र में आ रहे हैं, 8नवं. को ग्रस्तोदित चन्द्रग्रहण भी घटित होगा। ये सभी आकाशीय घटनाएं इस मास में किसी प्राकृतिक प्रकोप भयंकर वायुवेग किंवा [illegible]

दिसम्बर—दिसम्बर 2, 4, 5, 6, 11 एवं 16से 19 दिसम्बर तक, किञ्च 22, 23, 24 दिसम्बर तथा 26से 30 दिसम्बर के मध्य उ. भारत में ज़ोरदार शीत लहर रहेगी। पर्वतीय भूभाग भारी बर्फबारी के कारण हिमाच्छादित रहें। धुन्ध से यातायात बाधित हो एवं कुछ भागों में वायुवेग से खण्डवृष्टि भी संभव है।

जनवरी (सन् 2023 ई.)—शुक्र-शनि मकर राशि में हैं। जन. के पूर्वार्ध में शनि-सूर्य एवं शुक्र का मकर में रहना कहीं दुर्भिक्ष का कारण बनेगा। कहीं अतिवर्षण किंवा वर्षा के अभाव से अथवा भयंकर वायुवेग (तूफान) से हानि के योग भी हैं। जनवरी के उत्तरार्ध में 18जन. के लगभग कुम्भस्थ शनि की राहु पर दृष्टि प्राकृतिक प्रकोप से हानिकारक रहे।

जन. 1 से 6 तक एवं 10, 11, 13, 14, 15, 16, 18 व 19 से 21 जन. के लगभग, किंवा 22, 23, 24, 27 एवं 30 जनवरी के लगभग भारत में शीत, पर्वतीय प्रान्तों एवं उ. भा. में भी कहीं बादलचाल, वायुवेग से खण्डवृष्टि भी हो।

फरवरी (सन् 2023 ई.)—फर. 4 से 8 एवं 13 से 20 फरवरी तक हवा का जोर रहेगा। 23, 24, 27 फरवरी के मध्य श्रीलंका के पूर्वी छोर, शिलांग व कुछ अन्य भागों में बादलचाल व बूंदाबांदी होगी। उत्तरी भारत में हवा का जोर रहेगा। वसन्त ऋतु के आगमन से मौसम में परिवर्तन अनुभव होगा। जलवायु-विचार से मौसम सुहावना रहेगा।

15 फर. के लगभग गुरु-शुक्र का मीन राशि में योग अकालिक वर्षा किंवा कहीं राजनैतिक/साम्प्रदायिक उपद्रव करे-

"गुरु-शुक्रौ यदैकस्थौ नरयुद्धं तदा भवेत्।
अकाले का भवेद्वृष्टिर्जगत्यां नात्र संशयः।।"

मार्च (सन् 2023 ई.)—1 से 6एवं 10 से 18मार्च तक म.प्र., बंगाल एवं आसाम आदि में कहीं बादलचाल व बूंदाबांदी होगी। उत्तरी भारत में वायुवेग के साथ गर्मी अनुभव होने लगेगी। मार्च में शनि-सूर्य-बुध-ये तीनों मकर में होने से [illegible] विशेष से जनधनहानि संभव है।

व्यापार-विमर्श (संवत् 2079 वि.)

(संवत् 2079 वि. की ग्रहस्थिति के आधार पर व्यापारिक वस्तुओं एवं शेयर बाज़ारों में आने वाली तेज़ी एवं मन्दी का मासिक विवरण)

लेखक—इन्दुशेखर शर्मा, संयमी शर्मा,

संसार के सभी पदार्थों पर ग्रहों का नियन्त्रण है और सभी पदार्थों का समावेश बारह राशियों में है। जब ग्रह भ्रमण करता हुआ राशिभोग करता है, तो उस राशि में समाहित सभी व्यापारिक वस्तुएं ग्रहविशेष की प्रकृति के अनुसार प्रभावित होती रहती हैं। प्रभावित वस्तुओं में परिवर्तन आते हैं और इन्हीं परिवर्तनों से बाज़ारों में घटाबढ़ी होती है, जिसे हम 'तेज़ी-मन्दी' कहते हैं।

हम यहां **'व्यापार विमर्श'** में ग्रहों का पूर्ण अध्ययन करके तेज़ी-मन्दी का मशवरा अपने ग्राहकों को देते हैं। व्यापारियो! निराश न हों। हमसे प्रत्यक्ष मिलें, आपकी उलझी हुई व्यापारिक समस्या का समाधान हम करेंगे।

व्यापारी सज्जनो! 1 जनवरी, सन् 2022 ई. से यदि आप प्रतिमास किसी भी जिन्स की दैनिक तेजी-मन्दी की रिपोर्ट या वायदा/हाजर बाज़ार का चांस अर्थात् सोना, चांदी, कॉपर आदि मैटल्स, चना, ग्वार आदि अनाज; तिल, तेल, सरसों किंवा बिनौला आदि तिलहन; जीरा, धनिया, हल्दी, लाल-कालीमिर्च, रुई एवं कपास में से किसी भी जिन्स की मासिक लिखित रिपोर्ट चाहते हैं तो फीस Rs. 5100/- (इक्यावन सौ रुपये) प्रतिमास प्रतिजिन्स के हिसाब से Advance भेजकर Report प्राप्त करें। एक वर्ष की प्रतिजिन्स फीस Rs. 51,000/- (इक्यावन हज़ार रुपये) है।

Note : व्यापारियों से निवेदन है कि वे अपनी ग्रहचाल के अनुकूल होने पर ही व्यापार करें। व्यापार में किसी प्रकार की हानि के लिए सम्पादक/लेखक जिम्मेदार न होंगे।

संवत् 2079 वि. में ग्रहस्थिति के अनुसार तेज़ी-मन्दी का आकलन

संवत् 2079 वि. में तेज़ी-मन्दी का विस्तृत विवरण देने से पहले हम इस संवत् के नाम, वर्ष के राजा, मन्त्री, सस्येश, धान्येश, मेघेश आदि ग्रहपरिषद् का व्यापार पर क्या प्रभाव पड़ेगा ? इसका संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत कर देना प्रासंगिक समझते हैं, जोकि निम्नांकित है—

संवत् 2079 वि. का राजा 'शनि' एवं मन्त्री 'गुरु' है। इन दोनों में अधिक ऐकमत्य न होने से व्यापारक्षेत्र में इस वर्ष भारी उलटफेर होंगे। कुछ देशों से व्यापारिक सम्बन्धों का नवीकरण होगा, कुछ देश व्यापारिक दृष्टि से अपने सम्बन्धों को निराकृत करेंगे।

संवत् 2077 में हमने स्पष्ट घोषणा की थी कि—**राजनैतिक परिप्रेक्ष्य से इस वर्ष में चीन, पाक, साऊदी अरब आदि देशों से व्यापारिक सम्बन्ध विशेषरूप से कमजोर होने वाली ग्रहस्थिति का संकेत मिलता है।** तदनुसार चीन, पाक आदि के साथ व्यापारिक सम्बन्ध क्षीण हुए हैं। अत: व्यापारिक बन्धुओं से अनुरोध है कि—तेल, कॉटन, बादाम, किशमिश, दालों एवं नमक आदि के व्यापारी बाजार के रुख को देखकर ही काम करें। लेकिन इस वर्ष का राजा बुध इस वर्ष का धनेश भी है, अत: यह वर्ष बहुत नये आयाम एवं नयी योजनाओं के साथ भारत देश को आर्थिक दृष्टि से समृद्ध एवं महाशक्ति-सम्पन्न देशों की कोटि में मान्यता दे सकेगा।

इसके फलीभूत होने पर हमें अनेकों पत्र मिले, जो वस्तुतः सचमुच गौरव की बात है।

इस संवत्सर (2079 वि.) में शनि को चार पद प्राप्त हैं, जिनमें सस्येश, नीरसेश एवं धनेश प्रमुख हैं, अतः विश्व के कुछ प्रतिष्ठित एवं कुछ यावनदेश भयंकर युद्धाग्नि से त्रस्त रहेंगे, जिससे शेयर बाज़ार एवं सभी तरह के व्यापारिक क्षेत्र प्रभावित होंगे। **इस वर्ष मेघेश बुध खड़ी फसलों को हानि पहुंचायेगा। कहीं अकालिक वर्षा, कहीं सूखा पड़ने से दुर्भिक्ष की स्थिति बनने की संभावना है।**

इस संवत्सर में '**चतुर्मेघों**' में '**पुष्कर**' नामक मेघ है। अतः अनेकत्र असामयिक वर्षा, कहीं वर्षा की कमी किंवा वर्षा के अभाव से दुर्भिक्ष की स्थिति बनेगी, जिससे व्यापारक्षेत्र प्रभावित होगा। विशेषतः दक्षिणी क्षेत्र एवं उत्तरी क्षेत्र प्रभावित होंगे।

इस वर्ष '**नवमेघ-विचार**' से '**तम**' नामक मेघ है। अतः देश में कहीं **भयंकर महामारी से जनजीवन परेशान रहेगा किञ्च वर्षा की कमी से अनेकत्र धान की फसल प्रभावित होगी एवं अनेक प्रांतों में पेयजल की समस्या भी शासन के लिए सिरदर्द बनेगी।**

व्यापारी ध्यान दें—संवत् 2079 वि. में ग्रहों के वक्र/मार्ग, युति/प्रतियुति के अनुसार इस वर्ष चावल, गेहूं, चना, ग्वार आदि अनाज; गुड़, दालवाना, विशेषतः रुई, कपास, नरमा, मैंथा, तेल एवं सरसो आदि तिलहन; लाल-कालीमिर्च, जीरा, लौंग, सोना, चांदी में तेजी-मन्दी के भयंकर रिएक्शन्ज आएंगे। **दूर-दराज से आने वाले व्यापारी टेलीफोन से समय निश्चित करके आयें। आने की असमर्थता में सोना, चांदी, कॉपर आदि मैटल्स में से किसी भी धातु, अनाज, दालवाना, गुड़, शेयर बाज़ार या तिलहन की लिखित रिपोर्ट प्राप्त करने के लिए एक मास की फीस Rs. 5100/- (इक्यावन सौ रुपये) प्रतिजिन्स/प्रतिधातु के हिसाब से भेजकर आगामी**

सं. 2079 वि. के प्रारम्भ से 7 अप्रैल 2022 ई. तक श. मं. का मकरराशि में मेल होगा एवं लगभग 1 मई से 16मई तक श. मं. कुम्भ राशि में रहेंगे। 3 जून के लगभग से शनि वक्रगति से चलेगा एवं 27 जून को मंगल-राहु का मेषराशि में योग किञ्च शनि की मं. रा. पर दृष्टि भी व्यापारिक जगत् में भारी उथल-पुथल मचाने वाली है। **ध्यान दें कि**—लगभग 2 जुलाई, 2022 ई. से 17 जन., 2023 ई. तक वक्र शनि मकर राशि में, तत्पश्चात् शनि संवत् के अन्त तक कुम्भ राशि में रहेगा।

लगभग **13 अप्रैल, 2022 ई. से गुरु मीन राशि में प्रविष्ट होकर संवत् के अंत तक मीन राशि में ही रहेगा। व्यापारी सावधान—इस वर्ष गुरु ग्रह लगभग 27 जुलाई से वक्रगति से चलने लगेगा। लगभग 24 नवं. तक गुरु वक्रगति से ही चलेगा। अतः रुई, नरमा के व्यापारी इस वर्ष हमारे साथ परामर्श करके करोड़ों रुपये का लाभ ले सकते हैं; यह योग लगभग 12 वर्ष बाद आता है।**

इस संवत् में शनि-मंगल-शुक्र-गुरु आदि की युति एवं वक्रत्व किंवा ग्रहों का षडष्टक व दृष्टिसंबंध व्यापारिक क्षेत्र एवं **विश्व के राष्ट्रों के साथ व्यापारिक सम्बन्धों में भारी उल्टफेर वाला रहेगा।** इस समयावधि में व्यापारिक मशवरा लें, उत्तम लाभ मिलेगा।

सं. 2079 वि. में व्यापारिक क्षेत्र में विशेष उतार-चढ़ावों का सांकेतिक विवरण आगे प्रतिमास लिखने का प्रयास करेंगे। आशा है-व्यापारी जन पूर्ण लाभ उठा सकेंगे।

अप्रैल (सन् 2022 ई.)

मासारम्भ में शनिवारी चन्द्रदर्शन सूत, चांदी, सोना, अलसी आदि में तेजी का झटका देगा। घी, तेल में कुछ मन्दा रहे। *लेकिन प्रायः सभी व्यापारिक*

6अप्रैल को **शतभिषक्-नक्षत्र का शुक्र** गेहूं, गुड़, खाण्ड, चावल, घी, सरसों, रुई, सोना-चांदी में **तेजी का ही इशारा करता है।**

7 अप्रैल (सन् 2022 ई.) के लगभग क्रूरग्रह किंवा फसलों में परिपक्वता देने वाला ग्रह मंगल शत्रुक्षेत्र (कुंभराशि) में आकर शुक्र के साथ मेल करेगा। यह योग अकालिक वर्षा से कुछ प्रान्तों में खड़ी फसलों को हानि पहुंचाएगा। परिणामस्वरूप रुई, चांदी में काफी घटा-बढ़ी चले। गेहूं आदि अनाज, गुड़, खाण्ड एवं सोना आदि धातुओं में तेजी के व्यापारी लाभ उठाएंगे।

8अप्रैल को बुध मेष राशि में आकर शनि की दृष्टि में आ जाता है। क्रूरग्रह के साथ बुध का प्रभाव तेजीकारक हो जाता है। अत: गेहूं, ज्वार, बाजरा, जौ, चना, अलसी, मूंग, मोठ आदि दालवाना में तेजी आएगी। घी, गुड़, खाण्ड, शक्कर, सरसों, तेल, तिलहन में 9 दिन में उठापटक रहे, लेकिन मन्दी प्रधान रहे। **इन दिनों चांदी में जोरदार तेजी या मन्दी का झटका आएगा—सावधान रहें।** मेथी, लौंग, इलायची में तेजी एवं रुई में पहले मन्दी बाद में तेजी रहे। **ध्यान दें—**मेषराशि का बुध मन्दीकारक होता है, फिर भी ताजा मशवरा लें।

आगे व्यापारी सावधान रहें—11 अप्रैल को **राहु कृत्तिका के प्रथम चरण अर्थात् मेषराशि में दाखिल होकर संवत् 2079 के अन्त तक मेष राशि में ही रहेगा। लेकिन ग्रहयुति, दृष्टिसम्बन्ध आदि से चामत्कारिक ढंग से तेजी-मन्दी के झटके देगा, सावधान रहें।** इस समय सोना-चांदी, तांबा आदि धातुएं तेज रहेंगी। अनाज (गेहूं, चावल आदि) के व्यापारी ज़ोरदार तेजी के झटके से लाभ ले सकेंगे।

विशेष ध्यान दें—13 अप्रैल को गुरु लगभग 12 वर्ष बाद मीनराशि में दाखिल होगा। सोना, चांदी, सण, सूत, रुई में झटके की तेजी। रुई में 6मास में 75 से 100 टका के करीब तेजी आकर मन्दी आती है—ऐसा अनुभव किया है। घी, तिल, तेल, सरसों, रुई में पहले 5, 6मास में मन्दी के झटके आएंगे, बाद में तेजी बने। गुड़, खाण्ड, शक्कर, उड़द, मूंग, मोठ, सुपारी, नारियल, कपूर, नमक तेज रहेंगे।

नोट करें— यदि मीनराशि-प्रवेश की अवधि में रुई, घी, गुड़, खाण्ड, तेल, तिलहन में मन्दी रहे, तो भरपूर स्टॉक करें, आगे गुरु के वक्री होने पर भयंकर तेजी से भरपूर लाभ मिलेगा। इस समय कपास, रुई के व्यापारी उत्तम लाभ लेंगे।

14 अप्रैल को **सूर्य अश्विनी नक्षत्र एवं मेष राशि** में आकर राहु एवं बुध के साथ मेल करेगा। सूर्य रुई, सूत, अलसी, मूंगफली, अनाज, सोना, चांदी, हल्दी, कालीमिर्च एवं शेयर बाजारों को प्रभावित करता है।

[अप्रै. 7. 8, 11, 13 एवं 14 अप्रैल को शेयर बाज़ारों में ज़ोरदार उठापटक चलेगी—सावधान रहें, हमारे विचार से जोरदार तेजी से लाभ मिलेगा।]

ध्यान दें—मेषराशि का सूर्य गेहूं, चावल, उड़द, चना, जौ आदि में यद्यपि मन्दी करता है, लेकिन मौजूदा ग्रहचाल तेजी का ही संकेत देती है।

15 अप्रैल को बुध की स्थिति बाजार की लाईन को बदल सकती है-**सावधान रहें।** 15 से 18अप्रैल के मध्य बाजारों में उठापटक रहेगी। इन दिनों रुई में तेजी एवं अनाज मन्दे रहें। यह पोजीशन 21 अप्रैल तक रह सकती है।

22 अप्रैल को बुध की पोजीशन आगामी 8दिन में चाँदी और अफीम में जोरदार घटाबढ़ी करेगी। अनाजों, दालों एवं रुई में अच्छी तेजी संभव है। 23 अप्रैल तक तेजी से लाभ लें।

24 अप्रैल को बुध वृषराशि में आकर मंगल की दृष्टि में आ जाएगा। परिणामस्वरूप 15 दिन में बाजारों में कुछ मन्दी के बाद तेजी आएगी। लेकिन जौ, चना, चावल, मटर, रुई, कपास, सूत, अफीम, तिल, तेल आदि में 26अप्रै. तक अच्छी तेजी की संभावना है।

27 अप्रैल के लगभग भरणी नक्षत्र का सूर्य रुई, अलसी में मन्दी एवं सोना, चांदी, तांबा, पीतल, गेहूं, जौ, चना, चावल, मोठ, अलसी, रुई, सरसों, गुड़, खाण्ड, घी में तेजी का वातावरण करेगा।

ध्यान दें–27 अप्रैल को ही शुक्र मीन राशि में आकर गुरु के साथ मेल करेगा। इस समय शुक्र-गुरु पर मासान्त तक शनि की दृष्टि भी रहेगी। **ध्यान दें**–यद्यपि मीन राशि में अकेला शुक्र तो चांदी, अनाज, तेल-तिलहन, गुड़, खाण्ड में मन्दी करता है, परन्तु ग्रहचाल के मुताबिक यहां चांदी, सोने में तेजी का उछाला दे सकता है। अकालिक वर्षा से भी अनाजों एवं व्यापारिक क्षेत्र प्रभावित होंगे–"**गुरु-शुक्रौ यदैकस्थौ....अकाले वा भवेद्वृष्टिः।**"

निष्कर्ष यह है कि–रुई में पहले मन्दी, फिर तेजी रहे। चांदी में धमाके की तेजी से तुरन्त लाभ लें।

28/29 अप्रैल को उ.भा. नक्षत्र का गुरु चांदी में मन्दी; सोना, रुई, गेहूं आदि अनाजों में तेजी करे।

30 अप्रैल को उ. भा. नक्षत्र का शुक्र गुरु के साथ एकनक्षत्रसम्बन्ध बनाएगा, चांदी, चन्दन, केसर, कुसुम्भ एवं अनाज तेज रहेंगे।

नोट करें-30 अप्रैल शनिवार वाले दिन शनि कुम्भराशि में प्रविष्ट होगा। शुक्र-गुरु का मेल एवं इन पर शनि की दृष्टि विशेष महत्त्वपूर्ण है। यहां तेल, तिलहन, सोना, चांदी में जोरदार मन्दी के Reactions आएंगे, यहां रुई के व्यापारी स्टॉक करें, घी तेल तिलहन में भी मन्दी के व्यापारी आगे तेजी से लाभ ले सकेंगे।

मई (सन् 2022 ई.)

मई के प्रारम्भ में तेल-तिलहन एवं सोना-चांदी के व्यापारी बाजार का रुख देखकर व्यापार बढ़ावें। क्योंकि मई के प्रथम सप्ताह में 4 मई को मंगल पू. भा. नक्षत्र में आएगा एवं कुंभस्थ शनि के साथ इसने एकराशिसम्बन्ध तो बना ही सूत, कपास, सोना-चांदी, गुड़, खाण्ड, चावल तेज होंगे। यह तेजी उत्तम-मध्यम तौर पर 11 मई तक चलेगी।

ध्यान दें–6मई को **बुध रोहिणी नक्षत्र** में आएगा। **9 मई को बुध वक्रगति से चलने लगेगा, इस समय बुध पर शनियुत-मंगल की दृष्टि भी रहेगी। 11 मई को राहुयुत सूर्य कृत्तिका नक्षत्र में दाखिल होगा।** इसलिए घी, सोना-चांदी, रुई, अलसी, एरण्ड, गेहूं, जौ, चना, मूंग, मोठ, चावल एवं राई, सरसों आदि तिलहन तेज रहेंगे।

नोट–12 मई को शुक्र रेवती नक्षत्र में आएगा एवं लगभग इसी दिन बुध पश्चिम में अस्त भी हो रहा है। अतः इन दिनों में रुई, कपास, चांदी, चना, गुड़, खाण्ड, शक्कर में मन्दी का झटका आ सकता है। बाजार के रुख को देखकर काम करें।

14 मई को सूर्य वृष राशि में प्रविष्ट होकर बुध के साथ मेल करेगा। जब भी सूर्य बुध के साथ मेल करता है तो बाजारों में तेजी का तूफान आता है। इसी दिन वक्री बुध कृत्तिका नक्षत्र में आ रहा है। अतः 14 मई के लगभग सोना, गुड़, खाण्ड, शक्कर, कपास, रुई, सूत, बादाम, सुपारी, नारियल, तिल, तेल, सरसों में तेजी का तूफान आ सकता है। चांदी में घटाबढ़ी के बाद तेजी बनेगी। **4 से 14 मई के मध्य शेयर बाज़ारों में जोरदार तेजी के रिएक्शन्ज आएंगे।**

गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार 16जून तक बाजार उत्तम-मध्यम तौर पर तेजी में रहेंगे।

17 जून मंगलवार को मंगल मीनराशि में आकर बृहस्पति के साथ मेल करेगा। **मंगल रुई, कपास, जूट, चांदी, सोना तथा शेयर बाजारों पर अपना विशेष प्रभाव रखता है। जब यह मीनराशि में गुरु के साथ मेल करता है तो सोना, चांदी, रुई एवं तेल, *तिलहन में मन्दी का प्रसार करता***

21 मई को मंगल उ. भा. में एवं 23 मई को शुक्र अश्विनी नक्षत्र में प्रवेश करके गोचरस्थ राहु के साथ मेष राशि में एकराशिसम्बन्ध बना लेगा। एक मास में चन्दन, कपूर आदि सुगन्धित पदार्थ, सोना-चांदी, रुई, गेहूं, जौ, चना, गुड़, खाण्ड, घी में तेजी से लाभ मिलेगा। इन दिनों सोना-चांदी में विशेष तेजी का झटका आएगा। ऊन, तिल, तेल, सरसों एवं अलसी आदि में कुछ मन्दी रहे।

नोट – 17 एवं 24 मई के लगभग शेयर बाज़ारों में अच्छी उठापटक के बाद तेजी प्रधान रहेगी।

25 मई को सूर्य रोहिणी नक्षत्र में दाखिल होगा। इस समय सूर्य-बुध एक साथ हैं। शु. रा. का भी मेष राशि में संगम है एवं इन पर शनि की दृष्टि भी है। अत: तिल, तेल, अलसी, सरसों, गुड़, खाण्ड, घी, गेहूं, जौ, चना, बाजरा, ज्वार, ऊन, सूत, वस्त्र, सण, सुपारी, मिर्च एवं रुई में तेजी रहे। चांदी में मन्दी का झटका आ सकता है। इस प्रकार व्यापारिक जगत् में 23, 25 मई को वायदा व्यापार में तेजी से अच्छा लाभ मिलेगा।

मासान्त में 31 मई के लगभग बुध के पूर्व में उदित होने पर एवं इसी दिन यानी 31 मई मंगलवार को ही चन्द्रदर्शन होने से सरसों आदि तिलहन, गुड़, खाण्ड, चावल, गेहूं, जौ, चना तेज रहेंगे। कहीं अतिवृष्टि/अफवाहों से बाजार तेजी की तरफ बढ़ेंगे।

जून (2022 ई.)

मासारम्भ के लगभग ही 3 जून को शुक्र भरणी नक्षत्र में प्रवेश करता है, साथ ही गुरु उ. भा. नक्षत्र में दाखिल होगा। **ध्यान रहे**-इस समय **शुक्र राहु के साथ एवं शनि की नज़र में है और गुरु मंगल के साथ है। हमारे अनुभव के अनुसार जब शुक्र क्रूर ग्रह के साथ मेल व दृष्टिसम्बन्ध करता है तो रुई, चांदी, सोना एवं दालवाना में विशेष तेजी का झटका लाता है।**

इस समय Export कोटे का भी ऐलान संभव है। **इस समय गुरु-मंगल का राशिसम्बन्ध** भी घी, रुई, कपास, तेलवाना, गुड़, खाण्ड, सोना-चांदी, तांबा, दालवाना एवं सोया आयल में अच्छी तेजी का संकेत देता है।

5 जून को व्यापारी नोट कर लें-इस दिन के लगभग **बुध मार्गी होगा एवं साथ ही 5 जून को कुम्भ राशिस्थ शनि वक्री भी हो रहा है।** शनि का वक्रत्व तेलवाना, करयाणा, कालीमिर्च, सुपारी, सोना-चांदी, गुड़-खाण्ड, घी **में जोरदार तेजी या मन्दी का झटका देगा। हमारे विचार से तेजी के व्यापारी लाभ में रहेंगे।** 7 जून तक सावधानी से बाजार के रुख को देखकर काम करें।

8जून को सूर्य मृगशिरा में एवं मंगल रेवती नक्षत्र में दाखिल होगा। इस समय सूर्य बुध के साथ वृष राशि में है, सूर्य का बुध के साथ मेल होने से बाज़ार तेजी की तरफ बढ़ते हैं। लेकिन इसी दिन मंगल बृहस्पति के साथ गुरु की ही राशि में है, अत: विचारपूर्वक काम करें। हमारे अनुभव के अनुसार ऐसी ग्रह स्थिति में रुई, सूत, सण, सोना, चांदी, उड़द, मूंगफली आदि तिलहन, शेयर बाजार, हल्दी एवं कालीमिर्च तेज रहेगी। **लेकिन रेवती नक्षत्र का मंगल बाज़ारों में मन्दीकारक है, अत: 'नक्षत्रप्रवेशकाल' को ध्यान में रखकर 12 जून तक व्यापार बढ़ावें।**

13 जून को राहु भरणी नक्षत्र में आएगा। इस समय राहु पर वक्री शनि की दृष्टि भी है, अत: रुई, कपास, गुड़, खाण्ड, घी एवं सोया आदि तेल तेज रहेंगे, क्योंकि वर्षाविचार से तेल, तिलहन में तेजी रहेगी। यह तेजी उत्तम-मध्यमरूप से आगे तक चल सकती है।

15 जून को **सूर्य मिथुन राशि में आकर 26जून तक मंगल की दृष्टि में ही रहेगा। इसी दिन शुक्र कृत्तिका नक्षत्र में दाखिल होगा। 17 जून के लगभग तक शुक्र मेष में राहु एवं शनि की नज़र में रहेगा।** अत: रुई, सूत, कपास, सरसों, तेलवाना, गुड़, खाण्ड, शक्कर, चीनी, घी, चावल, गेहूं, दालों एवं सोना, चांदी में तेजी का रुख रहेगा।

[जून 5, 8, 15 को शेयरबाज़ारों में तेजी बनेगी।]

18जून को बुध रोहिणी में आएगा एवं शुक्र वृषराशि में बुध के साथ एकराशिसम्बन्ध बना लेगा।

इस समय रुई, कपास में जोरदार घटाबढ़ी चलेगी। सोना-चांदी में घटाबढ़ी के बाद तेजी आने के योग हैं। बुध-शुक्र का संयोग अनाजों में मन्दे की उम्मीद होने पर भी तेजी करे।

नोट करें—18 से 21 जून तक सोच-विचार से काम करें, क्योंकि बाजार अचानक टूट भी सकते हैं।

22 जून को सूर्य के आर्द्रा नक्षत्र में आने पर मौसम खराब होने से बाजारों में तेजी हो सकती है। रुई, सूत, कपास, खल, अलसी, एरण्ड, गेहूं, चावल, चना, जौ एवं सोना-चांदी में तेजी से लाभ लें। लेकिन **26जून को शुक्र रोहिणी में आकर अचानक बाजारों में उथल-पुथल कर सकता है।** संभव है-बाजारों में मन्दी प्रधान रहे।

चांदी, सोना आदि धातु, अलसी, एरण्ड, सरसों आदि तिलहन, घी, तेल, गुड़, खाण्ड, दाख, छुहारा, सुफारी एवं नारियल में मन्दी रहे। **27 जून को मंगल मेष राशि में आकर राहु के साथ मेल करेगा। शनि की इस पर नज़र भी है।** यह योग मन्दे की उम्मीद होने पर भी तेजी प्रधान रहेगा। गेहूं आदि अनाज, सोना, चांदी, तांबा आदि धातु, रुई, कपास, पाट, वारदाना, गुड़, खाण्ड, शक्कर, घी एवं तेल, तिलहन में तेजी रहे।

28जून को बुध मृगशिरा नक्षत्र में आएगा। मासान्त तक रुई में तेजीं, चांदी में घटाबढ़ी के बाद मन्दीं, गेहूं, तिल, सरसों, उड़द एवं तेल-तिलहन में मन्दे का रुख रहेगा। गेहूं, जौ, चना में 30 जून के लगभग तेजी संभव है।

जुलाई (2022 ई.)

1 जुलाई को शुक्र उ. भा. में आ जाता है। इस समय चावल, कपूर, चांदी, नमक, खाण्ड, रुई, कपास आदि में मन्दी का रुख रहेगा। **2 जुलाई शनिवार को बुध मिथुन राशि में आकर सूर्य के साथ मेल करेगा।** हमारा अनुभव है लगते हैं। इस समय रुई, सोना, चांदी, सरसों, तारामीरा आदि तिलहन में अच्छी तेजी का झटका आएगा, तुरन्त लाभ लें, अन्यथा हानि में रहेंगे। यह तेजी 4 जुलाई तक चल सकती है।

5 जुलाई को बुध आर्द्रा नक्षत्र में आएगा एवं पूर्व में अस्त होगा। ऐसी स्थिति में गेहूं, तिल, उड़द, जौ, चना, मूंग, मोठ आदि अनाज, घी, तिलहन मन्दे होंगे। रुई में मन्दी तेजी के झटके आएंगे। पाट, हैसियन और शेयर बाजार मन्दे रहेंगे। लेकिन चांदी में तेजी का रुख होगा।

2 से 4 जुलाई को शेयर बाजार तेज रहेंगे, लेकिन 5 जुलाई के लगभग शेयर बाजार नीचे गिरेंगे।

6जुलाई को सूर्य पुनर्वसु में एवं 7 जुलाई को शुक्र मृगशिरा नक्षत्र में आकर बाजारों को तेजी की तरफ ले जाएंगे। रुई, सोना, चांदी, गुड़, खाण्ड, घी, कपास, बिनौला, एरण्ड, अलसी, सरसों, लाख, तिल, ज्वार, सोंठ, बाजरा, उड़द, चावल एवं नमक आदि करयाणा तेज रहें। गेहूं, चना, ज्वार मन्दे रहेंगे।

9 जुलाई के लगभग की तारीख व्यापारी नोट कर लें— इसदिन वक्री शनि धनिष्ठा के दूसरे चरण एवं अपनी राशि मकर में दाखिल होगा। लगभग 17 जनवरी, सन् 2023 ई. तक यह मकर राशि में ही प्रभावी रहेगा। यह तेजी प्रधान ग्रहस्थिति है। राजनैतिक दृष्टि से भी यह समय प्रधान-नेतृत्व के लिए शुभ नहीं, जिसका प्रभाव व्यापार पर अवश्य पड़ेगा। इस समय राई, जौ, गेहूं, मोठ, चना, चावल, मूंग, उड़द, मसूर, बाजरा, ज्वार में तेजी रहेगी। **रुई, चांदी, सोना, तांबा आदि धातु, कपास, सूत एवं गेहूं आदि में भी जोरदार तेजी का झटका आ सकता है।** शक्कर, गुड़, खाण्ड के व्यापारी बाजार का रुख देखकर काम करें, अचानक मन्दा आ सकता है। 11 जुलाई तक बाजारों में तेजी प्रधान रहेगी।

9 से 11 जुलाई के मध्य शेयर बाजार तेज रहें, बाद में मन्दी रहे।

सूर्य-बुध के साथ मेल करेगा। इस समय गेहूं, जौ, चना, चावल एवं दालवाना में अच्छी तेजी से लाभ मिलेगा। चांदी, रुई, कपास, सूत, वारदाना, एरण्ड, तिल, तेल, सरसों, अरहर, ग्वार आदि में **जोरदार मन्दी एवं जोरदार तेजी के झटके आएंगे।** बाजार के रुख को देखकर काम करें। अलसी, गुड़, घी में घटाबढ़ी रहेगी।

16जुलाई को सूर्य कर्क राशि में दाखिल होगा। इस समय यह वक्री शनि के साथ समसप्तकयोग भी बना रहा है। सूर्य का असर रुई, एरण्ड, अलसी, मूंगफली, तेल, सरसों, कपास, सोना-चांदी, शेयर बाज़ार, हल्दी, कालीमिर्च, घी पर विशेषरूप से अनुभव किया गया है। हमारे विचार से वक्त रुई, सूत, बादाम, सुपारी, गुड़, खाण्ड, शक्कर, तिलहन, विशेषतः सोना, चांदी एवं **शेयर बाजार** पर तेजीकारक रहेगा। गेहूं आदि अनाज एवं रुई में भी तेजी संभव है। **ध्यान दें–17 जुलाई को बुध कर्क राशि में सूर्य के साथ मेल करेगा,** अतः 16/17 जुलाई को उल्लिखित चीजों में ज़ोरदार तेजी से ही लाभ मिलेगा। **आगे 18/19 जुलाई को सावधानी से काम करें। क्योंकि 18जुलाई को बुध पुष्य एवं शुक्र आर्द्रा नक्षत्र में** आकर सोना, चांदी, रुई, ऊन, अनाज एवं दालवाना में अचानक मन्दी कर सकता है। **20 जुलाई को सूर्य भी पुष्य नक्षत्र में आकर बुध के साथ एकनक्षत्र-सम्बन्ध बना लेगा।** 14 दिनों में तिल, तेल, सरसों, गुड़, खाण्ड, चावल, गेहूं, जौ, ज्वार, बाजरा, सुपारी, सोंठ, गुग्गुल, हींग, हल्दी, लाख, सण, ऊनी वस्त्र, सिक्का, सोना, चांदी तेज रहेंगे। बाजारों में तेजी का वातावरण रहेगा।

24 जुलाई को **बुध** आश्लेषा नक्षत्र में आकर **तेजीकारक** ही मालूम देता है। तेल, सरसों, गुड़, खाण्ड, उड़द, मूंग एवं मूंगफली में यह तेजी करेगा।

व्यापारी नोट कर लें कि-27 जुलाई को मीन राशिस्थ गुरु वक्रगति से चलने लगेगा। इस समय गेहूं, जौ, चना एवं चावल आदि अनाज, अलसी व घी में मन्दी की उम्मीद होने पर भी गुरु पर वक्र शनि की दृष्टि होने से तेजी ही रहेगी।

विशेष नोट–पुराने अनुभव से पता चलता है कि-जब भी मीन राशि में गुरु वक्री हुआ है तो कपास (रुई/नरमा) के भावों में भयंकर तेजी आई है; व्यापारियों ने भरपूर लाभ उठाया है, अतः हमारे विचार में रुई में जोरदार तेजी बनेगी–

''मीनराशिं गतो जीवः वक्रतामुपयाति चेत्।
कार्पासस्यार्घ-सम्प्राप्तिः लाभस्तेषां चतुर्गुणः।।''

28 जुलाई को बुध पश्चिम में उदित होकर रुई एवं शेयर बाजारों में कुछ मन्दी कर सकता है।

29/30 जुलाई को पुनर्वसु का शुक्र अनाज, बिनौला, रुई, सूत, सोना, चांदी में तेजी का झटका लाएगा।

31 जुलाई को बुध मघा नक्षत्र एवं सिंह राशि में आकर सोना चांदी, सूत, रुई, ऊन, गेहूं, जौ, चना में तेजी करे। गुड़, खाण्ड आदि रसपदार्थ मन्दे हो सकते हैं।

अगस्त (2022 ई.)

मासारम्भ में ही सूर्य-शनि का समसप्तक एवं राहुयुत मंगल की सूर्य पर विशेष दृष्टि होने से सोना, चांदी, रुई, बिनौला, गेहूं, चावल, उड़द, चना, गुड़, शक्कर, घी, तिल, तेल, सरसों, खाण्ड, अलसी, मिर्च का भाव तेज रहेगा।

5 अगस्त के लगभग मंगल कृत्तिका नक्षत्र में आकर गेहूं, मूंग, मोठ, चावल, राई, अरहर आदि दालों, तेल, तिलहन, घी एवं चांदी में तेजी का रुख करेगा। रुई में पहले तेजी बाद में मन्दी आएगी।

6अगस्त के दिन शुक्र कर्क राशि में **आकर सूर्य के साथ मेल करके शनि के साथ समसप्तक बनाएगा, जोकि देश के कुछ प्रान्तों में अनावृष्टि से दुर्भिक्ष की स्थिति करे, जिससे व्यापार प्रभावित होगा–**

''क्रूराणां सह सौम्यैश्च यदि स्यात् समसप्तकम्।
अनावृष्टिस्तदा ज्ञेया लोकपीड़ा महत्यपि।।''

इस समय रुई में पहले अच्छी मन्दी आकर तेजी बनेगी। अलसी, एरण्ड, तेल, घी, गुड़, खाण्ड, शक्कर तेज रहें। चान्दी, जौ, चना, मटर, अरहर मन्दे हों। 8अग. तक बाजारों का रुख मन्दे की तरफ रहेगा।

9 अगस्त को शुक्र पुष्य **में दाखिल होगा। इन दिनों रुई, सूत, सण, ऊन व धान्य में तेजी का व्यापार करें, लेकिन हींग, गुड़, खाण्ड, शक्कर, घी, तेल, तिलहन का रुख मन्दे की तरफ रहे। 10 अगस्त तक बाजार का रुख देखकर काम करें।**

11 अगस्त को मंगल के वृष राशि में आने पर एक मास में **सोना आदि पीली एवं अन्य लाल रंग की चीजें, सभी अनाज, रुई, कपास, सूत, केसर, तेल, सोना, चाँदी, तांबा, जस्ता आदि धातुएं एवं शेयर बाजार तेज रहें। यह तेजी उत्तम-मध्यम तौर पर 15 अगस्त तक चलेगी।**

17 अग. को सूर्य मघा नक्षत्र एवं सिंह राशि में प्रवेश करके बुध के साथ मेल करेगा। इस समय सूर्य-बुध पर मंगल की विशेष दृष्टि भी रहेगी। **15 दिन में रुई, चांदी, सोना, दालवाना, तेल, तिलहन एवं घी, गुड़, खाण्ड, शक्कर तेज रहेंगे। इन दिनों कहीं अतिवृष्टि किंवा अनावृष्टि से खेती नष्ट होगी, व्यापार प्रभावित होगा। 18/19 अगस्त के लगभग दालवाना तेज रहेंगे एवं रुई में घटाबढ़ी के बाद मन्दी एवं चांदी भी मन्दी रहेगी।**

20 अगस्त को बुध कन्या राशि में एवं 20 अग. को ही शुक्र आश्लेषा में प्रविष्ट होगा। इस समय बुध पर गुरु की दृष्टि भी रहेगी। **परिणामस्वरूप रुई, चांदी, दालवाना में मन्दी, गेहूं, जौ, चना, चावल, गुड़, शक्कर, खाण्ड एवं हल्दी में भी मन्दी का ही रुख रहेगा।**

17, 18अगस्त को शेयर बाजार मन्दे रहेंगे।

25 अगस्त को वक्री गुरु उ. भा. में एवं 27 अगस्त को वक्री शनि धनिष्ठा में आएगा। इस समय गुरु पर शनि की दृष्टि है एवं शनि-शुक्र का समसप्तक भी चल रहा है। **सोना, चांदी, राई, जौ, गेहूं, मोठ, चना, चावल, मूंग,**

उड़द, मसूर, बाजरा एवं ज्वार में अच्छी तेजी से लाभ मिलेगा। गुड़, शक्कर, खाण्ड के बाज़ार मन्दे या स्थिर रहें।

28अगस्त को मंगल रोहिणी में आएगा एवं इसी दिन चन्द्रदर्शन होने से सोना, चांदी, कपास, सूतीवस्त्र, सरसों, तिल, तेल, लाल मिर्च, हींग एवं शेयर बाजार तेज रहें। रुई में घटाबढ़ी रहेगी। 29 अग. को हस्त नक्षत्र का बुध गेहूं, जौ, चना, चावल आदि अनाजों में मन्दे का रुख बनाएगा।

30 अगस्त को सूर्य पू. फा. नक्षत्र में प्रविष्ट होगा। 14 दिन में जीरा, सोना, गुड़, खाण्ड, सरसों, तिल, तेल, घी, गेहूं, ज्वार, चावल, ऊन, रुई, सूत तेज रहें। चांदी में घटा-बढ़ी चलेगी।

31 अगस्त को शुक्र मघा नक्षत्र एवं सिंह राशि में आकर सिंहस्थ सूर्य के साथ एक-राशि-सम्बन्ध बनाएगा। **सोना, चांदी, तांबा, चना, जौ, मक्का, गेहूं आदि अनाज, लाल चन्दन, मजीठ, लाल मिर्च, काली मिर्च, सौंफ, अजवायन, घी, गुड़, खाण्ड एवं शक्कर में तेजी का रुख रहेगा। चांदी में पहले 4 दिन में 2/3 टका की मन्दी, रुई में पहले 8/10 दिन मन्दी के बाद तेजी की तरफ बाज़ारों का रुख रहेगा।**

सितम्बर (2022 ई.)

मासारम्भ में जनता में खरीदशक्ति में अधिक उत्साह दिखाई देगा। अनाज, दालवाना, सोना-चांदी, बर्तन, घी, गुड़, खाण्ड में तेजी से व्यापारी लाभ लेंगे।

8 सितम्बर को कन्याराशिस्थ बुध वक्री होगा। श.गु. भी वक्रगति से चल रहे हैं। बुध पर गुरु की पूर्ण दृष्टि है, अत: सभी व्यापारिक वस्तुओं में मन्दी रहेगी। **सोना-चांदी, गुड़, खाण्ड, घी एवं दालवाना में भी मन्दा रहेगा। 10 सितम्बर से श्राद्ध पक्ष शुरु होगा, इसका प्रभाव बाजारों में मन्दी का रहेगा।**

11 सितम्बर को शुक्र पू. फा. में आकर ***गेहूं, जौ, ज्वार, बाजरा, मूंग एवं***

रहेगा। **लेकिन** 13 सितम्बर मंगलवार वाले दिन सूर्य उ. फा. में आकर 15 दिन में **रुई, कपास, रेशम, सूत, सोना, चांदी, लोहा, घी, तेल, अलसी, सरसों, एरण्ड, चावल, उड़द, ज्वार, सुपारी, नारियल, मूंग, बांस तथा नील में तेजी करेगी।** यह तेजी उत्तम-मध्यमरूप से लगभग 15 सितम्बर तक चलेगी।

16 सितम्बर को बुध पश्चिम में अस्त होकर व्यापारिक लाईन को बदल सकता है, सावधानी से काम करें। **रुई में शीघ्र ही 15/20 टका की मन्दी हो, साथ ही पाट-हैसियन और शेयरों में मन्दे का रुख रहेगा, लेकिन चांदी में कुछ तेजी संभव है।**

इस मास में 8, 11, 16, 17 सितम्बर को वायदा बाजारों में मन्दी और तेजी का जोरदार झटका आएगा, सावधान रहें। हमारा विचार मन्दी का है।

17 सितम्बर शनिवार को सूर्य कन्या राशि में आकर बुध के साथ मेल करेगा। सूर्य-बुध का मेल जब भी होता है तो बाज़ारों में तेजी का प्रसार होता है, लेकिन इस समय सूर्य-बुध पर गुरु की दृष्टि भी है, अत: विशेष तेजी की संभावना नहीं। **रुई, नारियल, सुपारी, तिल, तेल, मजीठ, घी एवं सोना में तेजी संभव है। चांदी व शेयर मन्दे रहेंगे।**

19 सितम्बर का वक्री बुध उ.फा. में **7 दिन में उड़द, मूंग, मोठ, मसूर, अरहर में तेजी करता है। रुई, चांदी में घटाबढ़ी के बाद मन्दी का रुख रहेगा।**

21 सितम्बर को शुक्र भी उ.फा. में आकर बुध के साथ एकनक्षत्रसम्बन्ध बना लेगा। **इस स्थिति में 12 दिन में गेहूं आदि अनाज व रुई में तेजी बनेगी। सोना-चांदी में घटाबढ़ी चलेगी।**

ध्यान रहे-इस मास में 13 से 21 सितम्बर तक जोरदार तेजी और मन्दी के झटके आएंगे, सावधानी से काम करें।

23 सितम्बर को वक्री गुरु उ. भा. 2 में आ जाता है, इस समय चांदी में मन्दी आएगीं, सोना, रुई, गेहूं आदि अनाज तेज रहेंगे।

24 सितम्बर को शुक्र कन्या में आकर सूर्य-बुध के साथ एकराशिसम्बन्ध बना लेगा। **चांदी में घटाबढ़ी के बाद तेजी से लाभ मिलेगा। इन दिनों गेहूं आदि सभी अनाज, दालवाना, गुड़, खाण्ड, घी, तेल, ऊनी/रेशमी वस्त्र तेजी में रहेंगे। चावलों में इन दिनों विशेष तेजी का झटका आएगा, तुरन्त लाभ लें। यहां से तेजी का वातावरण मासान्त तक चलेगा।**

27 सितम्बर को सूर्य हस्त नक्षत्र में आएगा एवं मंगलवारी चन्द्रदर्शन होने से **गेहूं, जौ, ज्वार, गुड़, खाण्ड, कपास, सूत, जूट, नमक, हरड़, हींग, धनिया, हल्दी, सण एवं क्षार वस्तुएं तेज रहेंगी।** इन दिनों वायदा व्यापार में तेजी रहेगी। रुई और चांदी में घटाबढ़ी के बाद तेजी रहे।

30 सितम्बर को पूर्व दिशा में बुध का उदय होने से **इस समय रुई में पहले मन्दे का रिएक्शन आकर 20/25 दिनों में 15 टका के करीब तेजी आएगी। गेहूं, चना आदि अनाजों में 40 दिन के अन्दर तेजी होगी। घी, तिल, लालमिर्च एवं तेलों में भी तेजी का वातावरण रहेगा।**

अक्तूबर (2022 ई.)

मासारम्भ में (1 अक्तूबर के लगभग) शुक्र पूर्व में अस्त होगा, अत: बाजारों में तेजी का रुख रहेगा। इस समय रुई में मन्दी; चांदी में घटाबढ़ी के बाद तेजी; अनाजों में एक मास में तेजी होकर मन्दी बने। सोना, तांबा, पीतल, जस्ता, सोना-मक्खी, हींग, पारा, केसर तेज रहें। यह तेजी शुक्र के सूर्य एवं बुध के साथ रहने से बनेगी।

2 अक्तूबर को बुध मार्गी होगा। **ध्यान रहे**-बाजारों की लाईन अचानक बदल सकती है; सावधान रहें। अलसी, एरण्ड, गुड़, बिनौला, मूंगफली, कपूर, चन्दन, अगर आदि सुगन्धित वस्तुएं अचानक मन्दी हों। 8 दिनों में रुई और चांदी में घटाबढ़ी के बाद तेजी रहे। चावल, अलसी, सरसों, चना, चावल, गेहूं एवं जौ तेज रहें।

2 अक्तूबर को ही शुक्र हस्त नक्षत्र में दाखिल होगा। इस समय यदि रुई, चावल मन्दे हों तो स्टॉक करें, आगे लाभ रहेगा। गुड़, खाण्ड, शक्कर में घटाबढ़ी रहे। लेकिन सोना, चांदी कुछ तेज रहेंगे।

लगभग 9 अक्तूबर तक बाजार ऊपर-नीचे (अस्थिर) रहेंगे।

10 अक्तूबर को सूर्य चित्रा नक्षत्र में एवं 13 अक्तूबर को शुक्र भी चित्रा नक्षत्र में आएगा। यह योग 14 अक्तूबर तक रुई, सूत, सोना, चांदी, गुड़, खाण्ड, शक्कर, गेहूं, चना, तिल, नारियल, सण, केसर, कपूर एवं अनाजों, दालवाना आदि में तेजी करेगा, लेकिन 14 अक्तू. के लगभग गेहूं आदि अनाजों में बुध के हस्त में आने पर मन्दी संभव है।

15 अक्तूबर को मंगल मिथुन राशि में आकर रुई, गुड़, खाण्ड, शक्कर, अलसी, अफीम, तांबा, कुसुम्भ, मजीठ तथा अन्य लाल रंग की चीजों में अच्छी तेजी से लाभ देगा। इस दिन सोना भी तेज रहेगा एवं चांदी में घटाबढ़ी रहे।

अब आगे व्यापारी ध्यान दें, तेजी से उत्तम लाभ मिलेगा।

17 अक्तूबर को सूर्य तुला में, राहु भरणी 2 में एवं इसी दिन केतु स्वाती 4 में प्रविष्ट होगा। यह वायदा बाजार एवं दैनिक बाजारों में अच्छी तेजी का योग है, **क्योंकि इस समय सूर्य-शुक्र-केतु पर शनि की विशेष दृष्टि भी है।** गेहूं, जौ, चना, अलसी, सोना, तांबा, लाल चन्दन, मजीठ, श्रीफल, सुपारी, कपास, गुड़, खाण्ड, घी, काली मिर्च, रुई, चांदी एवं तिल्हन में तेजी से लाभ मिलेगा।

18अक्तूबर को शुक्र अपनी राशि तुला में दाखिल होगा। इस समय शुक्र-सूर्य-केतु तुला राशि में ही हैं एवं इन पर राहु एवं शनि की विशेष दृष्टि भी है। एक मास में रुई, चांदी, अफीम में पहले तेजी; पीछे मन्दी रहेगी। सोना, चांदी में 2/3 टका की घटाबढ़ी रहे। गुड़, खाण्ड, घी, तेल, तिलहन में अच्छी तेजी संभव है।

20 अक्तूबर को वक्री गुरु उ. भा.-1 में प्रविष्ट होगा। इस समय गुरु पर शनि की विशेष दृष्टि भी है। साथ ही 20 अक्तूबर के लगभग कन्या राशि में बुध पूर्व में अस्त भी हो रहा है। सोना, रुई, चांदी, गेहूं आदि अनाज, तेल, घी, तिलहन एवं करयाणा में तेजी रहे।

22 अक्तूबर को बुध चित्रा नक्षत्र में आएगा, साथ ही **इसी दिन मकरस्थ शनि मार्गी भी हो रहा है।** रुई, चांदी में घटाबढ़ी के बाद तेजी रहे। अनाज भी कुछ तेज रहें। लेकिन **शनि के मार्गी होने से प्रायः सभी व्यापारिक वस्तुओं के भावों में उठापटक रहे।**

23 अक्तूबर को शुक्र स्वाती में एवं 24 अक्तूबर को सूर्य भी स्वाती नक्षत्र में दाखिल होगा। 15 दिन में रुई, सूत, सण, रेशम, कपड़ा, सोना, चांदी, गुड़, शक्कर, बिनौला, सुपारी, मिर्च, अलसी, सरसों, राई, हींग, गुग्गुल तेज होंगे।

25 अक्तूबर की ग्रहस्थिति एवं मंगलकारी सूर्यग्रहण का प्रभाव भी वायदा बाजारों पर तेजीकारक ही रहेगा।

26अक्तूबर को बुध तुला राशि में आएगा। इस समय सूर्य-शुक्र एवं केतु के साथ बुध का मेल होगा। तुला राशिस्थ इन ग्रहों पर शनि की दृष्टि रहेगी एवं शनि पर मंगल की दृष्टि भी है। अतः यह योग वायदा एवं हाजर बाजारों में अच्छी तेज़ी का झटका लाएगा।

रुई, गुड़, खाण्ड, सूत, ऊनी वस्त्र, सरसों आदि तिलहन, घी तेज रहें।

30 अक्तूबर को स्वाती नक्षत्र का बुध मासान्त में रुई, सोना, चांदी, गुड़, खाण्ड में मन्दी का झटका ला सकता है।

नवम्बर (2022 ई.)

नवम्बर के प्रारम्भ में बाजारों में उठापटक रहेगी। **3 नवम्बर को विशाखा नक्षत्र में शुक्र दाखिल होगा। इस समय शुक्र सूर्य-बुध-केतु के साथ ही है। शनि की इन पर विशेष दृष्टि भी है।** [illegible]

रहा है। अत: इस समय व्यापारी मन्दी की धारणा को भूल जावें। **यह ग्रहस्थिति सभी बाजारों में तेजी का संकेत देती है।** रुई, दालवाना, चीनी, घी, चांदी आदि में तेजी का झटका आएगा।

5 नवम्बर को मिथुनस्थ मंगल वक्रगति से चलने लगेगा एवं 6 नवम्बर को सूर्य विशाखा नक्षत्र में शुक्र के साथ एकनक्षत्रसम्बन्ध बनाएगा। गेहूं, चना, जौ, रुई, सूत, चावल, दालों, गुड़, खाण्ड, सरसों आदि तिलहन में अच्छी तेजी बनेगी। चीनी में घटा-बढ़ी के बाद तेजी संभव है।

8 नवम्बर को '**खग्रास चन्द्रग्रहण**' का प्रभाव राजनैतिक स्थिति के लिए भारी है एवं हाजर/वायदा बाजार भी तेज रहेंगे।

11 नवम्बर को शुक्र वृश्चिक राशि में दाखिल होगा एवं इसी दिन मंगल वक्री होकर वृष राशि में प्रविष्ट होगा। इस समय वक्री मंगल की शुक्र पर पूर्ण दृष्टि भी रहेगी। एक मास में लाल चीजें, सभी अनाज, रुई, कपास, सूत, चन्दन, कपूर, केसर, तेल, घी, सोना, चांदी, तांबा, जस्ता एवं **शेयर बाज़ारों** में तेजी रहेगी।

13 नवम्बर को बुध वृश्चिक राशि में दाखिल होगा। घी, तेल, सरसों, रुई, चांदी में तेजी बनेगी। सोना भी तेज रहे।

14 नवम्बर को शुक्र एवं 15 नवं. को बुध भी अनुराधा नक्षत्र में प्रविष्ट होगा। सूत, सण, गुड़, खाण्ड, नमक, रुई, सोना, चाँदी एवं अनाजों में मंदी का झटका आकर कुछ तेजी बनेगी।

16 नवम्बर को सूर्य वृश्चिक राशि में शुक्र-बुध के साथ मेल करेगा एवं वक्री मंगल के साथ समसप्तकयोग भी बनाएगा। रुई, तांबा, चांदी, सोना, जौ, चना, दालवाना, ऊन, घी, तेल, मिर्च, गुड़, खाण्ड में तेजी रहेगी। 19 नवम्बर तक यह तेजी उत्तम-मध्यमरूप से चलेगी। 20 से 23 नवं. के मध्य चांदी एवं सोने में मन्दे का झटका आ सकता है।

लगभग 24 नवम्बर को बुध एवं शुक्र-ये दोनों ज्येष्ठा नक्षत्र में आ रहे हैं। इसी दिन के लगभग शुक्र पश्चिम में उदित भी हो रहा है। ऐसी ग्रहस्थिति **वायदा** एवं हाजर बाजारों में **तेजी से लाभ** देगी, व्यापारी नोट कर लें। घी, गुड़, खाण्ड, चावल, रुई, सूत, सण, सोना, चांदी, तिल, तेल तेज रहें। **ध्यान दें**—24 नवम्बर के लगभग हाजर बाजार में कुछ मन्दी आने का भी योग है, अत: सावधानी से काम करें।

25 नवम्बर को मीनस्थ गुरु मार्गी हो जाता है। वायदा एवं हाजर बाजार की लाईन बदल जाएगी—व्यापारी सावधान रहें। गुड़, खाण्ड, रुई, एरण्ड, सरसों, वारदाना, घी, तेल, चावल, चना आदि अनाज मन्दे रहेंगे। रुई, चांदी में घटाबढ़ी के बाद तेजी आएगी।

नोट—30 नवम्बर तक तेल, तिलहन, सोना, चांदी, घी, गुड़, खाण्ड आदि में प्राय: मन्दे का रुख रहे; सावधानी से व्यापार बढ़ावें।

दिसम्बर (2022 ई.)

2 दिसम्बर को सूर्य ज्येष्ठा में दाखिल होगा। इस समय बुध भी ज्येष्ठा में ही है। अत: बुध-सूर्य का मेल अच्छी तेजी का संकेत देता है। लेकिन बुध इसी दिन मूल नक्षत्र एवं धनुराशि में आ रहा है एवं बुध पश्चिम में उदित भी हो रहा है। अत: सोना, चांदी, चावल, गेहूं, जौ, चना, अलसी, सरसों, एरण्ड, हींग, गुग्गुल, पारा, गुड़, खाण्ड, घी, तेल के व्यापार में जोरदार तेजी के बाद मन्दी रहे, क्योंकि **वक्री मंगल की दृष्टि तेजीकारक है।** इस समय रुई के व्यापारी तेजी में ही रहें तो लाभ में रहेंगे।

नोट—इन दिनों किसी प्रान्त-विशेष में प्राकृतिक आपदा से जनधनहानि किंवा खेती को हानि पहुंचने से व्यापारक्षेत्र प्रभावित होगा।

4 दिसंबर को **वक्री मंगल रोहिणी नक्षत्र में दाखिल होगा एवं 5 दिसम्बर को शुक्र मूल/धनु में प्रविष्ट होगा। ध्यान दें**—इस समय बुध के साथ शुक्र का एकराशि एवं एकनक्षत्रसम्बन्ध बन रहा है, अत: वायदा एवं हाजर के व्यापारी तेजी से लाभ लेंगे। हमारे विचार से 4/5 दिसम्बर को रेशम,

सरसों, तिल, तेल, लाल मिर्च, हींग, चना, चावल आदि अनाज, चांदी, सोना, तांबा आदि धातु एवं **शेयर बाजार** तेज रहेंगे। रुई, सूत, कपास में पहले मन्दी होकर बाद में तेजी रहेगी। 10 दिसम्बर तक बाजारों में तेजी से लाभ लें।

11 दिसम्बर को बुध पू. षा. नक्षत्र में दाखिल होगा। इन दिनों अनाजों एवं सोना-चांदी में जोरदार मंदी का झटका आएगा-सावधानी से व्यापार बढ़ावें।

15 दिसम्बर तक उत्तम-मध्यमरूप से मन्दी प्रधान रहे, बीच-बीच में तेजी के रिएक्शन्ज़ भी आ सकते हैं।

16दिसम्बर को सूर्य मूल नक्षत्र एवं धनुराशि में आ जाता है। इस समय सूर्य बुध-शुक्र के साथ मेल करेगा एवं इन पर मंगल की विशेष दृष्टि भी रहेगी। एवं 16दिसं. को शुक्र पू. षा. नक्षत्र में आ जाता है। अत: कहीं पेयजल की समस्या से जनता परेशान रहे एवं दुर्भिक्ष से भी व्यापार प्रभावित होगा। 15 दिन में रुई, कपास, सूत, सोना, चांदी, अलसी आदि तिलहन में जोरदार मन्दी या तेजी का संचार होगा। बहुत ही सावधानी का समय है। इन दिनों मूंग, मोठ, उड़द, तिल, तेल, सरसों एवं नमक में मन्दी रहे।

व्यापारी ध्यान दें-16 दिसंबर को ही शनि धनिष्ठा के दूसरे चरण में आएगा। गेहूं, जौ, राई, मोठ, चना, चावल, मूंग, उड़द, मसूर, बाजरा, ज्वार में तेजी रहे। गुड़, खाण्ड, शक्कर में मन्दी रहे।

नोट-16 दिसम्बर से 15 दिन में जोरदार तेजी-मन्दी के झटके आएंगे, अत: सावधानी से व्यापार करें।

19 दिसंबर को राहु भरणी के प्रथम चरण में आएगा; इस समय कपास, गुड़, खाण्ड, घी, तेल, गेहूं, चावल में 21 दिसम्बर तक उत्तम-मध्यम तौर पर तेजी का रुख रहेगा।

22 दिसं. को बुध उ. षा. नक्षत्र में आकर अनाजों में मन्दी करे।

25 दिसम्बर को [illegible] होने एवं 26 दिसम्बर को शुक्र [illegible] नक्षत्र में आने पर गुड़, खाण्ड, सोना, चांदी, अलसी, एरण्ड आदि तिलहन एवं अनाजों में कुछ तेजी रहे। रुई में घटाबढ़ी के बाद तेजी रहेगी। इस समय शुक्र-बुध का मेल तेजी का संकेत देता है।

27 दिसम्बर का दिन विशेष महत्त्वपूर्ण है। इस समय **बुध मकर राशि में शनि के साथ शनि की राशि में आता है।** इस समय रुई, सोना, चांदी एवं अनाजों के भाव ऊपर-नीचे रहेंगे।

28दिसं. को गुरु उ. भा. के दूसरे चरण में आकर बाजारों को मन्दा करेगा। चांदी, सोना, रुई, गेहूं आदि अनाज मन्दे रहें।

29 दिसंबर को सूर्य पू. षा. में आएगा। इसी दिन शुक्र मकर राशि में दाखिल होकर शनि के साथ एवं वक्री बुध के साथ मेल करेगा। इस प्रकार शनि व बुध एवं शुक्र एक साथ मकरराशि में बैठे हैं। यह योग व्यापारिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है। इस योग का प्रभाव 31 दिसम्बर तक तेल, घी, सरसों, बिनौला आदि तिलहन, गुड़, खाण्ड, हल्दी, ऊनी वस्त्र, गेहूं, चना आदि सारे अनाज तेज रहेंगे। रुई एवं चांदी में घटाबढ़ी के बाद तेजी रहेगी। इस समय ताजा मशवरा करके उत्तम लाभ प्राप्त कर सकेंगे।

जनवरी (सन् 2023 ई.)

मासारम्भ में रुई में 15/20 टका की शीघ्र ही मन्दी आएगी। पाट, हैसियन एवं शेयर बाजार मन्दे रहेंगे, लेकिन चांदी में कुछ तेजी का झटका आएगा।

2 जनवरी को बुध वक्रगति से धनु राशि में प्रवेश करके सूर्य के साथ मेल करेगा। **ध्यान रहे-जब भी बुध का योग सूर्य के साथ होता है तो बुध में तेजी की ताकत बढ़ जाती है।** इस समय बुध पर मंगल की दृष्टि भी है। अत: इन दिनों बाजार तेजी की तरफ बढ़ेंगे। 4 जनवरी को बुध पू. षा. नक्षत्र में दाखिल होगा। रुई, कपास, चांदी, बिनौला, अनाज, तेजी की तरफ बढ़ेंगे।

6जनवरी को शुक्र श्रवण नक्षत्र में प्रविष्ट होगा। **स्पष्ट है कि-इस समय शुक्र का मेल शनि के साथ है।** अत: चांदी, सोना, गुड़, खाण्ड, शक्कर, मूंग, [illegible]

आकर तेजी बनेगी। इस प्रकार 10 जनवरी तक बाजारों में कभी तेजी एवं मन्दी बनेगी, लेकिन तेजी ही प्रधान रहेगी।

11 जनवरी को **सूर्य उ.षा. नक्षत्र में** आएगा। आगामी 14 दिनों के अन्दर उड़द, मूंग, चावल, चना, गेहूं, गुड़, खाण्ड, शक्कर, कपास, पिप्पलामूल, चमड़ा, सरसों, मूंग, घी एवं तेलों में तेजी का माहौल रहेगा। **13 जनवरी के लगभग बुध पूर्व में उदित होकर** रुई में पहले कुछ मन्दी, पीछे तेजी करे। गेहूं, चना आदि अनाजों, घी, तिल, पाट, हैसियन एवं लाल-मिर्च में आने वाले कुछ दिनों में अच्छी तेजी का संचार रहे।

14 जनवरी को सूर्य मकर राशि में आकर शनि एवं शुक्र के साथ मेल करेगा। इस ग्रहस्थिति के साथ इसी दिन मंगल मार्गी हो रहा है। घी, तेल, अलसी, गुड़, खाण्ड, शक्कर, रुई, गेहूं आदि अनाजों में **जोरदार तेजी और मन्दी के Reactions आएंगे**। व्यापारी बाजार के रुख को देखकर व्यापार को बढ़ावें। **हमारे विचार से इन दिनों घी, तेल, असली, गुड़, खाण्ड, शक्कर एवं रुई के व्यापारी तेजी से लाभ ले सकेंगे।**

16जनवरी को शुक्र धनिष्ठा नक्षत्र में आएगा। सूर्य शुक्र के साथ मकर राशि में ही है। यह योग बाजारों में तेजीकारक है। चावल, मूंग, मोठ, उड़द, ज्वार, बाजरा, चांदी, सोना, रुई, कपास, शक्कर-गुड़-खाण्ड भी तेज रहें।

18जनवरी को शनि धनिष्ठा 3 कुंभ राशि में दाखिल होकर मेष राशिस्थ राहु को प्रभावित करेगा। रुई, जौ, गेहूं, मोठ, चना, चावल, उड़द, मसूर, बाजरा, ज्वार, तेल, तिलहन, घी, गुड़, खाण्ड, शक्कर, चांदी, सभी अनाज व शेयर बाजार तेज रहें।

19 जनवरी के लगभग, धनु:स्थ **बुध मार्गी** होगा। रुई में पहले मन्दी, फिर तेजी बनेगी। चांदी में भी घटाबढ़ी के बाद तेजी रहेगी। 8दिन में गेहूं, जौ, चना, अनाज तेज रहें। लेकिन रेशम, अलसी, एरण्ड, गुड़, बिनौला, मूंगफली, कपूर, चन्दन एवं अगर आदि सुगन्धित वस्तुएं मन्दी रहेंगी।

21 जनवरी को गुरु उ.भा. में आकर चांदी में मन्दी; सोना, रुई व गेहूं आदि अनाजों में तेजी करे।

22 जनवरी को शुक्र कुम्भ राशि में आकर शनि के साथ मेल करेगा। क्रूर-ग्रहयोग होने से यह समय तेजी का ही मालूम देता है। रुई, चांदी, गुड़, खाण्ड, गेहूं, चना, जौ, मूंग, ज्वार, बाजरा, तेल, घी में मन्दे की उम्मीद होने पर भी तेजी रहे, ऐसा विचार है, फिर भी बाजार के रुख को ध्यान में रखकर काम करें। सोना, चांदी आदि धातु, गुड़, खाण्ड, रुई में मन्दी का झटका आ सकता है।

24 जनवरी को **सूर्य श्रवण नक्षत्र** में आकर 14 दिन में गेहूं, जौ, चना, चावल, रुई, सूत, सण, सोना, चांदी, गुड़, खाण्ड, अलसी, सुपारी एवं लौंग आदि मसाले तेज करेगा।

27 जनवरी को कुम्भस्थ शुक्र शतभिषा नक्षत्र में शनि के साथ है। अत: गेहूं, गुड़, खाण्ड, चावल, तेल, घी, सरसों, रुई, सोना, चांदी तेज रहेंगे।

मासान्त में 30/31 जनवरी को शनि कुम्भराशि में अस्त होगा। इस समय रुई, बारदाना, पाट, गुड़-खाण्ड, शक्कर, तेल, तिलहन में अच्छी तेजी का योग है। इन दिनों अन्य व्यापारिक वस्तुओं में भारी घटाबढ़ी के बाद तेजी चल सकती है।

नोट–24 जन. से मासान्त तक बाजारों में तेजी प्रधान रहेगी।

वायदा बाजार भी इन दिनों तेजी में ही रहेंगे–ऐसे योग हैं।

फरवरी (सन् 2023 ई.)

मासारम्भ में व्यापारिक वस्तुओं में कुछ अस्थिरता का दौर रहेगा। लेकिन 3 फरवरी तक प्राय: उठापटक के साथ तेजी प्रधान रहेगी।

4 फरवरी शनिवार को **बुध उ.षा. नक्षत्र** में आएगा, मंगल की बुध पर दृष्टि भी है। तेल, तिलहन, गुड़, घी तेज होंगे, लेकिन अनाजों का भाव मन्दा रह सकता है।

6फरवरी को सूर्य धनिष्ठा नक्षत्र में आकर व्यापारियों को अच्छी तेजी से लाभ देगा। 15 दिन में सोना, चांदी, मूंग, मसूर, गेहूं आदि अनाज, अलसी, रुई, घी आदि में तेजी करेगा।

7 फरवरी को मकर राशि में बुध आता है। जब मकर राशि में अकेला बुध प्रसार करता है तो प्रायः मन्दी के व्यापार से लाभ देता है। हमारे अनुभव के अनुसार यहां रुई, सोना, चांदी में मकरस्थ बुध तेजी करेगा। सभी अनाजों का भाव कुछ तेजी के बाद स्थिर रहेगा। इसी दिन अर्थात् 7 फरवरी को ही शुक्र पू. भा. में आकर चांदी और रुई में तेजी और अनाजों में मन्दी करेगा।

8 फरवरी को गुरु उ. भा. के चतुर्थ चरण में आकर सोना, रुई व गेहूं आदि अनाजों में तेजी करेगा। यह तेजी उत्तम-मध्यम रूप से 12 फरवरी तक चलेगी। चांदी में कुछ मन्दी का झटका आएगा।

13 फरवरी को सूर्य कुम्भ राशि में आकर शनि के साथ मेल करेगा। यह योग अच्छी तेजी का है। घी, तेल,सरसों, मूंगफली आदि तिलहन, नमक एवं राई में अच्छी तेजी रहे। चावल, चीनी, गुड़, शक्कर, खाण्ड में भी तेजी से लाभ मिलेगा।

14 फरवरी को बुध श्रवण नक्षत्र में आकर बाजारों में चल रही तेजी को ही बल देगा। श्रवण का बुध गुड़, खाण्ड, अलसी आदि तिलहन, घी, चना, चावल आदि अनाजों को तेजी की तरफ ले जाएगा।

15 फरवरी को शुक्र मीन राशि में आकर बृहस्पति के साथ मेल करेगा। 15 फर. को शनि धनिष्ठा 4 में भी आ रहा है। अनाज, सरसों, तेल, तिलहन, अलसी, एरण्ड, गुड़, खाण्ड, घी, रुई में तेजी प्रधान रहे, तेजी से पहले कुछ मन्दी भी आ सकती है, लेकिन तेजी प्रधान रहेगी। चांदी में जोरदार मन्दी संभव है, सोना तेज रहे।

18 फरवरी को शुक्र उ.भा. नक्षत्र में आकर चाँदी, चावल, नमक, खाण्ड, [illegible]

19 फरवरी को सूर्य शतभिषा नक्षत्र में आ जाता है। सूर्य-शनि एकत्र हैं। अतः 14 दिन में सोना, चांदी, रुई, सूत, सण, कपड़ा, तिल, तेल, एरण्ड सरसों, हींग, दाख, छुहारा, सोंठ, हल्दी, गेहूं एवं गुड़ में तेजी का प्रभाव रहेगा। यह तेजी लगभग 22 फरवरी तक (गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार) चल सकती है।

20 फरवरी को राहु अश्विनी 4 में आएगा। गुड़, लाख, कांसी, रुई, चांदी, कपास, तिलहन, कालीमिर्च, घी एवं मूंगफली आदि में तेजी ही रहेगी।

21 फरवरी को रुई, गुड़, कपास एवं पशमीना तेज रहेंगे। सोने में घटाबढ़ी के बाद तेजी रहे।

23 फरवरी को बुध धनिष्ठा में एवं मंगल मृगशिरा नक्षत्र में दाखिल होंगे। बुध का योग सूर्य-शनि के साथ है। चावल, स्वांक, तिल, चांदी, दालवाना, गुड़, सोना तेज रहे। रुई एवं अन्य व्यापारिक वस्तुओं में घटाबढ़ी रहे।

24 फरवरी को गुरु रेवती नक्षत्र में आकर रुई, चांदी, तेल, तिलहन और घी में जोरदार तेजी-मन्दी के झटके लाएगा। मन्दी प्रधान रहेगी।

27 फरवरी को बुध कुम्भ राशि में आकर शनि एवं सूर्य के साथ मेल करेगा। हमारे अनुभव के अनुसार जब भी बालग्रह बुध का क्रूरग्रहों के साथ मेल होता है, तो बाजारों में जोरदार तेजी आती है, तेजी से व्यापारी लाभान्वित होते हैं। इन दिनों मासान्त तक अलसी, रुई, चांदी में कुछ मन्दी आकर अच्छी तेजी बनेगी। घी, तेल, तिलहन, गुड़, खाण्ड, चावल, दालें, चना आदि अनाज एवं सोना, चांदी तेज रहेंगे।

मार्च (2023 ई.)

मासारम्भ में (1 मार्च के लगभग) ही शनि एवं सूर्य की सन्निधि में स्थित बुध पूर्व में अस्त हो रहा है एवं इसी दिन शुक्र रेवती नक्षत्र में आएगा, शुक्र पहले [illegible] शुक्र मन्दीकारक है एवं बुध तेजी-मन्दी के झटके

लगभग 10/15 दिन में अनाज, घी, रुई, चांदी, कपास, चावल, चन्दन, कपूर, गुड़, खाण्ड, शक्कर में मन्दे का रुख रहेगा। इन दिनों रुई, चांदी एवं सोने में जोरदार घटाबढ़ी के रिएक्शन्ज़ आएंगे, लेकिन अन्ततः तेजी प्रधान रहेगी।

3 मार्च को बुध शतभिषक् नक्षत्र में आकर चांदी-सोना में क्षणिक तेजी एवं सभी अनाजों में तेजी करेगा।

4 मार्च को शनि की राशि में शनि-बुध के साथ स्थित सूर्य पू. भा. नक्षत्र में आएगा। यह योग वायदा एवं हाजर बाजारों में तेजी प्रधान रहेगा। 14 दिन में रेशम, सोना, चांदी, गेहूं, चना, उड़द, चावल, ज्वार, बाजरा, घी, सरसों, तिल तैल, गुड़, खाण्ड, गुग्गुल, रुई एवं पिप्पलामूल में तेजी रहेगी। आगे 5 मार्च को ध्यानपूर्वक व्यापार बढ़ावें।

ध्यान दें– 5 मार्च को शनि का उदय 8 दिनों में रुई, शेयर बाजार, अलसी, एरण्ड, बिनौला एवं मूंगफली आदि तिलहन, घी, तेलों में कुछ मन्दी का झटका जरूर देगा–सावधान रहें। **इन दिनों लोहा, जस्ता, सीसा आदि धातु एवं लहसुन, चावल, गुड़, खाण्ड आदि में अच्छी तेजी से लाभ ले सकेंगे।**

10 मार्च को बुध पू. भा. नक्षत्र में आएगा। ध्यान दें–इस समय सूर्य भी पू. भा. नक्षत्र में ही रहेगा। इस समय सोना, चांदी, तांबा, लोहा एवं सभी छोटे-मोटे अनाज मन्दे की उम्मीद होने पर भी तेज रहेंगे। रुई में घटाबढ़ी रहेगी।

11 मार्च को गुरु रेवती के दूसरे चरण में प्रविष्ट होगा। इस समय शुक्र भी रेवती नक्षत्र में ही है। यहां बाजार मन्दी प्रधान रहेंगे। **रुई में जोरदार मन्दी का झटका आएगा। चांदी में पहले मन्दी; फिर तेजी; अनाजों में भी मन्दी का प्रभाव रहेगा।**

12 मार्च को शुक्र अश्विनी नक्षत्र एवं मेष राशि में दाखिल होकर राहु के साथ मेल करेगा और इस समय राहु एवं शुक्र पर शनि की विशेष दृष्टि भी रहेगी। यह योग जोरदार तेजी-मन्दी के झटके देगा। 10 दिन में अलसी मन्दी; गुड़, खाण्ड, तिल, तेल, सरसों, रुई, ऊन, सोंठ, जौ, चना, गेहूं, उड़द, अरहर, मूंग, मोठ में तेजी रहे। घी, सोना, चांदी में जोरदार तेजी बन सकती है। गुड़, शक्कर, पाट, बारदाना में घटाबढ़ी के बाद तेजी रहेगी। शुक्र तेल, तिलहन में कदाचित् मन्दी भी कर सकता है–सावधान रहें।

ध्यान दें–12 मार्च को मंगल मिथुन राशि में आएगा। रुई, गुड़, खाण्ड, शक्कर, अलसी, अफीम, तांबा, सोना, कुसुम्भ, मजीठ, लाल मिर्च में जोरदार तेजी आएगी। चांदी में घटाबढ़ी रह सकती है।

14 मार्च को सूर्य मीन राशि में मंगलवार को दाखिल होगा। इस समय सूर्य का योग बृहस्पति के साथ होगा। तिल, तेल, अलसी, सरसों, गुड़, खाण्ड, शक्कर, रुई एवं सोना में सामान्यतया तेजी रहे। प्रत्येक जाति के अनाज पहले कुछ तेज; बाद में मन्दे रहें। चांदी में 1-2 टका की मन्दी रहेगी।

15 मार्च को शनि शतभिषा के प्रथम चरण में आकर अनाजों में मन्दी; गुड़, खाण्ड, चावल, घी एवं करयाणा में कुछ तेजी कर सकता है।

16मार्च को बुध मीन राशि में आकर सूर्य एवं गुरु के साथ एकराशि-सम्बन्ध बनाएगा। इन दिनों गुड़, खाण्ड, शक्कर मन्दे रहें। रुई, चांदी में घटाबढ़ी के बाद पहले तेजी, फिर उतनी ही मन्दी बनेगी। घी, तिल, तेल, सरसों में पहले 5/6मास तक मन्दी आकर जोरदार मन्दी और तेजी के योग बनेंगे। गेहूं, गुड़, शक्कर, खाण्ड, उड़द, मोठ, सुपारी, नारियल, कपूर, नमक तेज रहेंगे।

नोट–यहां गुरु के मीनस्थ होने व कुंभस्थ शनि-संचरण के कारण घी, तिल, तेल, सरसों में मन्दी न आकर तेजी ही रहेगी। फिर भी बाजार को नज़रअन्दाज़ न करें।

17 मार्च को बुध उ.भा. में एवं 18मार्च को सूर्य भी उ.भा. में आकर एकराशि एवं एकनक्षत्रसम्बन्ध बनाएंगे। रुई, गुड़, खाण्ड, चावल, गेहूं आदि अनाज, तेल तिलहन एवं सोना-चांदी के बाजारों में तेजी का ही रुख रहेगा।

(शेष 2080 वि. में देखें।)

-व्यापारियों के लिए विशेष सुविधा-

तेज़ी-मन्दी की प्रतिमास लिखित Advance Report

अर्थात् आगामी माह की दैनिक तेज़ी-मन्दी की लिखित रिपोर्ट

व्यापारी सज्जनो! 1 जनवरी, सन् 2022 ई. से यदि आप प्रतिमास किसी भी जिन्स की दैनिक तेजी-मन्दी की रिपोर्ट या वायदा/हाजर बाज़ार का चांस अर्थात् सोना, चांदी, कॉपर आदि मैटल्स, चना, ग्वार आदि अनाज; तिल, तेल, सरसों किंवा बिनौला आदि तिलहन; जीरा, धनिया, हल्दी, लाल-कालीमिर्च, रुई एवं कपास में से किसी भी जिन्स की मासिक लिखित रिपोर्ट चाहते हैं तो फीस Rs. 5100/- (इक्यावन सौ रुपये) प्रतिमास प्रतिजिन्स के हिसाब से Advance भेजकर Report प्राप्त करें। एक वर्ष की प्रतिजिन्स फीस Rs. 51,000/- (इक्यावन हज़ार रुपये) है।

ध्यान दें-यदि आप लिखित Report के अतिरिक्त प्रतिदिन Telephone से तेज़ी-मन्दी का विचार करना चाहते हैं तो उसकी फीस अलग से होगी।

नोट-पहली बार यदि प्रत्यक्ष मिलें तो अधिक सन्तोषजनक जानकारी मिल सकेगी। दूर से आने वाले व्यक्ति आने से पहले टेलिफोन करके आने का समय निश्चित कर लें।

यदि आप कार्यलय आने में किसी भी तरह से असमर्थ हैं तो अपने किसी भी कार्य की फीस 9988407010 नंबर पर 'Google Pay' कर सकते हैं। और अपने कार्य का विवरण भी इसी नंबर पर Phone/WhatsApp अवश्य करें।

पत्र या M.O. फार्म पर अपना नाम, पता एवम् फोन नं. साफ-साफ लिखें एवम् धनादेश किस जिन्स की तेज़ी-मन्दी जानने के लिए भेज रहे हैं-यह अवश्य लिखें। M.O. या D.D. भेजने के बाद आप अपना रजिस्ट्रेशन नंबर टेलिफोन से अवश्य प्राप्त करें।

Payment Advance आने पर ही अगले माह की रिपोर्ट भेजी जाएगी। D.D. या M.O. नीचे लिखे पते पर भेजें-

PHONE : 0160-2641 277
Mob. 0 99 88 40 7010

संयमी शर्मा, M.A., ज्योतिषाचार्य, धर्मशास्त्राचार्य,
सुपुत्र पं. इन्दुशेखर शर्मा, शास्त्री, M.A., ज्योतिषाचार्य,
श्री मार्त्तण्ड ज्योतिष कार्यालय, कुराली - PIN 140 103
(मोहाली) पंजाब।

यन्त्र-मन्त्र-तन्त्र-साधना के लिए महत्त्वपूर्ण काल (1 जनवरी, सन् 2022 ई. से 21 मार्च, सन् 2023 ई. तक)

जप एवं यन्त्र-मन्त्र आदि की साधना के लिए शास्त्रों द्वारा बारह सायन संक्रान्तियों के पुण्यकाल तथा सूर्य-चन्द्र के क्रान्तिसाम्य (महापात) के काल को ठीक सूर्य-चन्द्रग्रहण के समान ही महत्त्वपूर्ण माना गया है। संहिता और ज्योतिषग्रन्थों में इस विषय के अनेक वचन उपलब्ध हैं। क्रान्तिसाम्य को तन्त्रादि की सिद्धि के लिए ऋषियों ने स्पष्टरूप से फलप्रद माना है। आचार्य भास्कर ने भी 'सिद्धान्तशिरोमणि' में कहा है कि-क्रांतिसाम्य के काल में विवाहादि मंगलकृत्य करना तो निषिद्ध है, लेकिन यदि इस समय जप, अनुष्ठानादि किया जाए तो उसकी वृद्धि होती है-''पातस्थितिकालान्तर्गतमंगलकृत्यं न शस्यते तज्ज्ञैः। स्नान-जप-होपदानादिकमत्रोपैति खलु वृद्धिम्।।'' यन्त्र-मन्त्र-तन्त्रों की साधना में विशेष रुचि रखने वाले पाठकों के लिए हम नीचे 1 जनवरी, 2022 ई. से 21 मार्च, सन् 2023 ई. तक की सायन संक्रान्तियों के पुण्यकाल तथा क्रान्तिसाम्य के प्रारंभ और समाप्तिकाल (भा.स्टैं.टा.) दे रहे हैं। इन कालों में यंत्र-तंत्रों के निर्माण एवम् मंत्रजाप से वे अभीष्ट सिद्धि प्राप्त कर सकेंगे।

सूर्य और चन्द्रमा के ग्रहण के पर्वकाल को भी मन्त्रादि-साधना के लिए साधकों को उपयोग में लाना चाहिए। सायन संक्रान्तिपुण्यकाल, क्रान्तिसाम्य और सूर्य-चन्द्रग्रहण के पर्वकाल के अलावा मन्त्रादि-साधनां के लिए अर्धोदय, महोदय, महामहा-वारुणीपर्व, महावारुणीपर्व और वारुणीपर्व भी महत्त्वपूर्ण माने गए हैं। ये अर्धोदय आदि योग कभी-कभी ही आते हैं।

सावधान-यंत्र-मंत्र-तंत्रों के प्रयोग को प्रभावशाली रूप में सद्यः फलप्रद बनाने के लिए शास्त्रविहित काल में साधना कीजिए, अन्यथा आगमशास्त्र पर साधक की निराधार अनास्था होने की पूर्ण आशंका है।

सायनसंक्रान्ति-पुण्यकाल (भा. स्टैं.टा.)

प्रारम्भ तारीख	घं.	मि.	समाप्त तारीख	घं.	मि.
सन् 2022 ई.					
20 जनवरी	1	45	20 जनवरी	14	33
18 फरवरी	15	49	19 फरवरी	4	37
20 मार्च	14	40	21 मार्च	3	28
20 अप्रैल	1	32	20 अप्रैल	14	19
21 मई	0	29	21 मई	13	17
21 जून	8	20	21 जून	21	8
22 जुलाई	19	13	23 जुलाई	8	1
23 अगस्त	2	24	23 अगस्त	15	12
23 सितंबर	0	10	23 सितंबर	12	58
23 अक्तूबर	9	42	23 अक्तूबर	22	30
22 नवंबर	7	27	22 नवंबर	20	15
21 दिसंबर	20	55	22 दिसंबर	9	43
सन् 2023 ई.					
20 जनवरी	7	36	20 जनवरी	20	24
18 फरवरी	14	13	19 फरवरी	3	1
20 मार्च	20	31	21 मार्च	9	19

क्रान्तिसाम्य का प्रारम्भ और समाप्तिकाल (भा. स्टैं.टा.)

प्रारम्भ तारीख	घं.	मि.	समाप्त तारीख	घं.	मि.
सन् 2022 ई.					
13 जनवरी	14	30	13 जनवरी	21	53
27 जनवरी	1	31	27 जनवरी	6	34
8 फरवरी	6	4	8 फरवरी	11	10
21 फरवरी	17	10	21 फरवरी	21	16
5 मार्च	19	49	5 मार्च	23	55
19 मार्च	8	22	19 मार्च	11	54
31 मार्च	11	24	31 मार्च	15	19
14 अप्रैल	1	51	14 अप्रैल	5	58
26 अप्रैल	2	59	26 अप्रैल	7	20
9 मई	19	48	10 मई	1	6
21 मई	22	37	22 मई	4	4
4 जून	17	45	5 जून	1	23
17 जून	10	47	17 जून	17	49
26 जून	19	1	27 जून	3	39
10 जुलाई	18	16	11 जुलाई	0	20
23 जुलाई	1	50	23 जुलाई	8	3
सन् 2022-23 ई.					
5 अगस्त	21	24	6 अगस्त	2	5
17 अगस्त	19	57	18 अगस्त	0	30
31 अगस्त	13	50	31 अगस्त	17	53
12 सितंबर	14	24	12 सितंबर	18	11
8 अक्तूबर	9	45	8 अक्तूबर	13	29
21 अक्तूबर	20	59	22 अक्तूबर	1	18
3 नवंबर	3	32	3 नवंबर	7	48
16 नवंबर	13	38	16 नवंबर	19	14
29 नवंबर	1	9	29 नवंबर	6	40
12 दिसंबर	14	53	12 दिसंबर	22	42
3 जनवरी	12	23	3 जनवरी	19	40
17 जनवरी	14	16	17 जनवरी	19	40
29 जनवरी	12	19	29 जनवरी	17	26
12 फरवरी	10	32	12 फरवरी	14	56
24 फरवरी	6	27	24 फरवरी	10	20
9 मार्च	23	23	10 मार्च	3	23

वारुणी पर्व (सन् 2022 ई.) (भा. स्टैं.टा.)

प्रारम्भ तारीख	घं. मि.	समाप्त तारीख	घं.	मि.
30 मार्च	सू. उ.	30 मार्च	10	48

महोदययोग (सन् 2022 ई.) (भा. स्टैं.टा.)

प्रारम्भ तारीख	घं. मि.	समाप्त तारीख	घं.	मि.
1 फरवरी	सू. उ.	1 फरवरी	11	15

निरयण संक्रान्तियों के पुण्यकाल

सायन संक्रान्तियों के पुण्यकाल की भान्ति निरयण संक्रान्तियों के पुण्यकाल में भी यंत्र-मंत्रादि की साधना की जा सकती है, लेकिन सायन संक्रान्तियों का पुण्यकाल इसके विशेष महत्त्व रखता है।

सूक्ष्म क्रान्तिसाम्य

सूर्य-चन्द्र की राशियों के अनुसार निर्धारित किये जाने वाले क्रान्तिसाम्य का प्रारम्भ-समाप्ति काल नितान्त स्थूल होता है। यहां दिया गया क्रान्तिसाम्य का प्रारम्भ-समाप्तिकाल महापातगणित द्वारा स्पष्ट किया गया है। यह सर्वथा सूक्ष्म है। विवाहादि मुहूर्तों में इसी सूक्ष्म क्रान्तिसाम्य के काल को ही वर्जित किया गया है।

सूर्य-चन्द्रग्रहण

ऊपर लिखे अनुसार यन्त्र-मन्त्र-तन्त्र-साधना के लिए सूर्य एवं चन्द्रग्रहणों का पर्वकाल विशेष महत्त्व रखता है। एतदर्थ पृष्ठ 22 देखिये।

ध्यान रहे-मन्त्रसाधना में उच्चारणादि की शुद्धि परमावश्यक है। उच्चारणादि की अशुद्धि साधक के लिए सुफलप्रद कदापि नहीं होती। मन्त्रोच्चारणादि की अशुद्धि व अनभिज्ञता स्पष्टरूप से वज्रपात-सम घातक (विनाश-कारी) मानी गई है-

''मन्त्रो हीनः स्वरतो वर्णतो वा
मिथ्या प्रयुक्तो न तमर्थमाह।
स वाग्वज्रो यजमानं हिनस्ति
यथेन्द्रशत्रुः स्वरतोऽपराधात्।।''

यन्त्र-मन्त्र एवम् तन्त्रों का चमत्कार

इस स्तम्भ के अन्तर्गत अनुभूत यन्त्र–मन्त्र–तन्त्र गतवर्षों से देते आ रहे हैं। इस स्तम्भ के अन्तर्गत दिए गए मन्त्रों को शुभमुहूर्त्त में गुरुमुख से प्राप्त करके ग्रहणवेला, क्रान्तिसाम्य या सायन–संक्रान्तियों के पुण्यकाल में दृढ़–निश्चयपूर्वक अनुष्ठान करके सिद्ध कर लेना चाहिए। **ध्यान रहे–** दीपमाला के समय एवं महाशिवरात्रि की महत्त्वपूर्ण रात्रियों में किंवा **'यन्त्र–मन्त्र–तन्त्रों के लिए साधनाकाल'** में उल्लिखित समयावधियों में इन मन्त्र–तन्त्रों को सिद्ध करके, इनका चमत्कार आप अविलम्ब देख सकेंगे। यन्त्र–मन्त्रों के बल पर ही दैवज्ञ अपने वैदुष्य से अक्षुण्ण यश प्राप्त कर सकता है,–**"सिद्धिर्भूषयते विद्याम्।"**

मन्त्र ऐसे दिव्यशब्दों का समूह है, जिसे दृढ़ इच्छाशक्तिपूर्वक उच्चारण एवं मनन से ही हम अलौकिक काम कर सकते हैं। चुने हुए गुप्त शब्द ही मन्त्र हैं। इनमें शब्दों को ऐसा क्रम दिया जाता है, कि उनके मौन या अमौन अवस्था में उच्चारणमात्र से शून्य–महाकाश में एक विचित्र कम्पन उत्पन्न होती है, जिसमें अभीप्सित कार्यसिद्धि एवं रचनात्मक प्रबल–प्रच्छन्न शक्ति होती है–

" मननात् त्रायते यस्मात्तस्मात् मन्त्रः प्रकीर्तितः। जपात् सिद्धिर्जपात् सिद्धिर्जपात् सिद्धिर्न संशयः।।"

मन्त्रशास्त्र के अनुसार वेदमन्त्रों को ब्रह्मा ने शक्ति प्रदान की थी। तान्त्रिक प्रयोगों को भगवान् शिव ने शक्तिसम्पन्न किया। इसी प्रकार कलियुग में शिवावतार श्री शाबरनाथ जी ने शाबरमन्त्रों को अदभुत् शक्ति प्रदान की। शाबरमन्त्र अनमिल बेजोड़ शब्दों का एक समूह होता है, जो कि अर्थहीन मालूम देते हैं, परन्तु भगवान् शंकर जी के प्रताप से ये मन्त्र अवन्ध्य प्रभाव रखते हैं– **" अनमिल आखर अर्थ न जापू। प्रकट प्रभाव महेश प्रतापू।।"** अतः शाबरमन्त्रों को यथावत् उच्चारण करें, किसी प्रकार से इनमें न्यूनाधिकता न करें। **नोटः–** मन्त्र का पुरश्चरण गुरु की देखरेख में गुप्तरूप से करें। प्रकट होने पर पुरश्चरण अर्थहीन हो जाता है– **" गोपनीयं गोपनीयं गोपनीयं प्रयत्नतः।"**

शत्रुकृत् पीड़ा से मुक्ति हेतु मन्त्र

यदि विरोधी (शत्रु) अत्यधिक परेशान करे, भय बना रहे तो निम्नांकित दुर्गामन्त्र को रात्रि में अथवा प्रातःकाल 41 दिन तक पाठ करें। 5 माला प्रतिदिन भगवती का ध्यान करके कम्बलासन पर बैठकर मन्त्रजाप करें। शत्रु शान्त रहेगा। मुकद्दमे में आपकी विजय होगी।

मन्त्रः– " ॐ क्लीम् सर्वस्वरूपे सर्वेशे सर्वशक्ति–समन्विते।
भयेभ्यस्त्राहि नो देवि दुर्गे देवि नमोऽस्तुते क्लीम् ॐ।।"

ग्रहण में या दीवाली की रात्रि में इस मन्त्र का जाप करें तो समय पर तुरन्त फलप्रद रहता है–यह अनुभव है।

सर्वविध संकट से मुक्ति पाने के लिए भगवान् शिवद्वारा प्रतिपादित [illegible]

रात्रि में त्र्यम्बक भगवान् शंकर जी का ध्यान करके सिद्ध करें। संकटग्रस्त व्यक्ति प्रतिदिन एकमाला मन्त्रजाप करके भगवान् शंकर पर चढ़ाए हुए पुष्प या बिल्वपत्र को लाल कपड़े में बांधकर अपने पास रखे– सर्वविध संकटों से सद्यः मुक्ति प्राप्त हो जाएगी।

मन्त्रः– "ॐ सर्वेश्वराय सर्वविघ्नविनाशिने मधुसूदनाय स्वाहा।"

प्रज्ञावर्धन–स्तोत्र

आजकल के प्रगतिशील युग में विज्ञानक्षेत्र किंवा अन्य क्षेत्रों में विद्यार्थियों की भारी दौड़ में हतोत्साह कई युवक आत्महत्या तक कर लेते है। उनके मनोबल एवं बुद्धिबल को प्रगति प्रदान करने के लिए हम यहां 'प्रज्ञावर्धन स्तोत्र' का विधिपूर्वक उल्लेख कर रहे है। इस स्तोत्र के पाठ से निश्चय ही विद्यार्थियों को आश्चर्यजनक सफलता प्राप्त होगी, अनुभव [illegible]

[illegible] ॐ अस्य श्री प्रज्ञावर्धन–स्तोत्रस्य भगवान् [illegible]

(जल लेकर) ॐ अस्य प्रज्ञाविवर्धन–स्तोत्रस्य भगवान् शिव–ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, स्कन्द–कुमारो देवता, प्रज्ञासिद्ध्यर्थं जपे विनियोगः।

-(यहां जल का त्याग करें।)

स्तोत्र

ॐ योगेश्वरो महासेनः कार्तिकेयोऽग्निनन्दनः। स्कन्दः कुमार : सेनानीः स्वामी शंकरसंभव :।१।।

गाङ्गेयस्ताम्रचूड़श्च ब्रह्मचारी शिखिध्वजः। तारकारिरुमापुत्रः क्रौंचारिश्च षडाननः ।।२।।

शब्दब्रह्मसमूहश्च सिद्धः सारस्वतो गुह :। सनत्कुमारो भगवान् भोग–मोक्षप्रदः प्रभुः ।। ३।।

शरजन्मा गणाधीशः पूर्वजो मुक्तिमार्गकृत्। सर्वागम–प्रणेता च वांछितार्थप्रदर्शकः ।। ४।।

अष्टाविंशति नामानि मदीयानीति यः पठेत्। प्रत्यूषे श्रद्धया युक्तो मूको वाचस्पतिर्भवेत्।। ५।।

महामन्त्रमयानीति मम नामानि कीर्तयेत् । महाप्रज्ञामवाप्नोति नात्र कार्या विचारणा।। ६।।

पुष्यनक्षत्रमारभ्य पुनः पुष्ये समाप्य च । अश्वत्थमूले प्रतिदिनं दशवारं तु सम्पठेत्।। ७।।

।। सप्तविंश–दिनैरेकं पुरश्चरणकं भवेत् ।।

।। प्रज्ञावर्धनस्तोत्रं सम्पूर्णम् ।।

सम्पुटमन्त्र :– पाठ के प्रारम्भ और समाप्ति पर इस मन्त्र की एक माला जपें–

'' ॐ या देवी स्तूयते नित्यं विबुधैः वेद–पारगैः।
सा मे वसतु जिह्वाग्रे ब्रह्मरूपा सरस्वती।।''

प्रतिदिन उषाकाल में, शौच–स्नाानदि के अनन्तर मयूरवाहिनी श्रीसरस्वती अथवा मयूरवाहन श्रीस्कंद (अथवा दोनों की) मूर्ति या चित्र का पंचोपचारपूजन करके ससम्पुट इस स्तोत्र के प्रतिदिन 10 पाठ करें। सम्पुट उभयथा संभव है, प्रतिपाठ सम्पुट अथवा प्रथम माला जप, फिर 10 स्तोत्र पाठ, ततः सम्पुटमन्त्र जाप। अनुष्ठानप्रारम्भ पुष्य नक्षत्र से करें और दशांश हवनादि भी पुष्य पर ही सम्पन्न करें। इस प्रकार 27 दिन के जपपाठ तथा हवन से पुरश्चरण पूर्ण होगा। जपकाल में ब्रह्मचर्य, भूशयन, हविष्यान्न ग्रहण या सात्विक एकाशन सहित पीपल वृक्ष के नीचे बैठकर साधना करने से शीघ्र सिद्धिलाभ होगा। हवन में अश्वत्थसमिधा लें। ब्रह्मी का सेवन चमत्कारी होगा।

व्यवसाय में प्रगति एवं आर्थिक समृद्धि के लिए दो तान्त्रिक प्रयोग

(1) जब किसी पूर्णिमा को सोमवार हो तो उस दिन यह प्रयोग करे– कहीं से नागकेसर के फूल प्राप्त करें। किसी भी शिवमन्दिर में शिवलिंग पर पांच विल्वपत्रों के साथ ये फूल भी श्रद्धा से चढ़ा दें। इससे पूर्व शिवलिंग को कच्चे दूध, गंगाजल, शहद, दही से धोकर पवित्र कर लें। यह क्रिया अर्थात् पांच बिल्वपत्र तथा नागकेसर के फूल (संख्या प्रत्येक बार एक सी ही हो) अगली पूर्णिमा (लगभग एक माह) तक निरन्तर चढ़ाते रहें। इस पूजा में एक दिन का भी नागा नहीं होना चाहिए। ऐसा होने पर पूजा खण्डित हो जाएगी। आपको यह फिर किसी पूर्णिमा के दिन पड़ने वाले सोमवार को प्रारम्भ करने तक प्रतीक्षा करनी पड़ेगी। इस एक माह के लगभग जैसी भी श्रद्धाभाव से पूजा–अर्चना बन पड़े, करते रहें। भगवान् को चढ़ाए प्रसाद के ग्रहण करने के उपरान्त ही कुछ खाएं। अन्तिम दिन चढ़ाए हुए फूल तथा बिल्वपत्रों में से एक अपने साथ श्रद्धाभाव से घर ले आएं। इसे घर, दुकान, फैक्ट्री अथवा कहीं भी पवित्र जगह अथवा पैसा रखने के स्थान में शुद्धता से रख लें। धन–सम्पदा अर्जित करने में नागकेसर के पुष्प चमत्कारी प्रभाव दिखलाते हैं।

(2) व्यापार में यदि निरन्तर घाटा हो रहा हो तो किसी भी बुधवार के दिन यह प्रयोग करें। एकबार के प्रयोग से यदि फ़ायदा न दिखाई दे तो नियमित रूप से पांच बुधवार तक यह दोहराते रहें। आपको आशातीत लाभ दिखाई देने लगेगा।

प्रयोग– एक पीली बड़ी सी कौड़ी बाज़ार से खरीद लाएं। बुध के ही दिन एक–एक जोड़ा लौंग तथा इलायची और एक चुटकी, दुकान, फैक्ट्री आदि की मिट्टी के साथ कौड़ी को जलाकर सबकी राख बना लें। इस राख को एक पान के पत्ते पर एक छेद वाले तांबे के सिक्के के साथ रखकर कहीं बहते हुए पानी, तालाब अथवा कुएं में छोड़ दें। यदि छेद वाला पैसा न मिल सके तो तांबे की चादर में से पैसे के आकार का टुकड़ा काट कर उसमें स्वयं ही छेद करके कार्य चला लें।

जिस बुधवार को प्रयोग करें, उस दिन प्रयोग पूर्ण होने तक निराहार व्रत कर सकें तो अधिक शुभ है। प्रयोगकाल में **' ॐ नमो नारायणाय'** मन्त्र निरन्तर जपते रहें। प्रयोग पूर्ण होने के पश्चात् किसी भूखे व्यक्ति को कुछ खिलाकर ही स्वयं कुछ ग्रहण करें। अन्तिम अर्थात् पांचवें बुधवार को अपने इष्ट देवता को यथाशक्ति फल, फूल, नैवेद्य आदि से प्रसन्न करें। तदनंतर प्रसाद स्वयं ग्रहण करें और फिर घर–बाहर के अन्य लोगों को बांट दें।

इस प्रकार लक्ष्मी माता की अपार कृपा आप पर बनी रहेगी। घर में सुख–समृद्धि रहेगी। ये प्रयोग अज्ञात तान्त्रिक द्वारा अनुभूत हैं।

कुछ चमत्कारी यन्त्रप्रयोग

पुत्रदाता यन्त्र

विधि– इस यन्त्र को भोजपत्र पर शुभ मुहूर्त्त में कुंकुम, कस्तूरी, कपूर, गोरोचन की स्याही बनाकर लिखें। इसका विधिवत् सन्तानगोपाल मन्त्र या दुर्गामन्त्र से पूजन करके चान्दी के ताबीज़ में मढ़ाकर स्वर्ण–चान्दी की चेन या लाल धागे में स्त्री के गले में डाल दें। श्रीभगवान् जी की कृपा से स्त्री के गर्भ से पुत्रप्राप्ति ही होगी।

पुत्रदाता यन्त्र
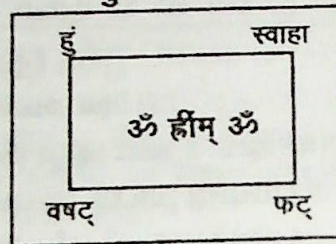
मनोकामनापूर्ण यन्त्र

विधि– इस यन्त्र को सन्ध्या–वन्दन करने के बाद भोजपत्र पर शुभ मुहूर्त्त में अष्टगन्ध से लिखें। हर समय शुद्धिपूर्वक इसे अपने पास रखें। मनोकामना पूर्ण

मनोकामना पूर्ण यन्त्र			
९६	१०	२	८
७	३	९७	९०
५०	४५	९	१
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

[illegible]धाकर सोने–चान्दी की चेनी या लाल धागे में गले में डालें। व्यापार में

व्यापारवृद्धि–यन्त्र

विधि :– इस यन्त्र को बड़े भोजपत्र पर अष्टगन्ध से लिखकर यथाविधि पूजन कर यन्त्र को शीशे में जड़वाकर अपनी दुकान पर पूजास्थल में रखें। व्यापार में खूब वृद्धि होगी।

व्यापारवृद्धि यन्त्र			
९६	८२	८१	८६
८१	७५	७६	८१
७४	७८	७५	७१
८४	७२	७२	७६

विद्या–बुद्धि–प्राप्ति के लिए यन्त्र

विधि :– गायत्री मन्त्रजाप करके महासरस्वती का निम्नांकित मन्त्रजाप करें–

"ॐ ह्रीं ऐं ह्रीं ॐ वाग्देव्यै नमः।"

मन्त्रजाप करके इस यन्त्र को भोजपत्र पर लिखकर पूजास्थल में रखें। विद्या–बुद्धि में प्रखरता अनुभव करेंगे।

विद्या–बुद्धि प्राप्तियन्त्र			
८	११	१२	१७
१३	२	७	६
११	१६	९	१४
१०	५	४	५

व्यापारवर्धक यन्त्र

विधि :–रविपुष्यामृत योग में इस यन्त्र को लिखना शुरु करें। 2100 यन्त्र लिखें। यन्त्रों का धूप–दीप से लक्ष्मीमन्त्र से पूजन करके शुद्ध जलयुक्त नदी में प्रवाहित करें। पूजन के समय लाल या पीत वस्त्र पहिनें। लाल कम्बल का आसन प्रयोग में लाएं। 31 दिन में निम्नांकित मन्त्र का सवा लाख जाप करें–

व्यापारवर्धक यन्त्र			
१६	९	४	५
३	६	१५	१०
१३	१२	१	८
२	७	१४	११

मन्त्र :–"ॐ ऐं ह्रीं क्लीं सौं जगत्प्रसूत्यै नमः।"

सवालाख जाप के बाद घृत, खीर एवं कमलगट्टा से दशांश हवन करें। अनुष्ठान पूर्ण होने तक एक समय भोजन करें एवं यति–सती रहें।

तत्पश्चात् उल्लिखित यन्त्र को अष्टगन्ध से दो बार भोजपत्र पर [illegible] का पूजन करके अपनी दुकान के गल्ले में रखें।

में अष्टगन्ध से लिखें। हर समय शुद्धिपूर्वक ... इसे अपने पास रखें। मनोकामना पूर्ण ... तत्पश्चात् उल्लिखित यन्त्र को अष्टगन्ध से दो बार ... करके अपनी दुकान के गल्ले में रखें

...धाकर सोने–चान्दी की चेनी या लाल धागे में गले में डालें। व्यापार में आश्चर्यजनक वृद्धि होगी और लक्ष्मी का वास आपके घर में हमेशा रहेगा। इस यन्त्र को विधिपूर्वक किसी कर्मकाण्डी विद्वान् पण्डित से तैयार कराएं।

विवाहकारक यन्त्र

विधि :– इस यन्त्र की सिद्धि हेतु पुष्य, शतभिषा, अश्विनी तथा रोहिणी नक्षत्र में अनुष्ठान प्रारम्भ करें। रात्रि में पूर्व की तरफ मुंह करके मां भगवती का पंचोपचारपूजन करें। सफेद कागज़ पर अनार की कलम द्वारा केसर की स्याही से इस यन्त्र को लिखें। तत्पश्चात् 5 हल्दी की गांठें पीले वस्त्र में लपेटकर माता जगदम्बा की प्रतिमा या फोटो के सामने एवं लिखे गए यन्त्र पर रख दें। फिर **''ॐ क्लीम् वं पं क्षं डं लं नं क्षौं क्लीम्''** – इस मन्त्र की 11 माला जाप करें। यह जाप प्रतिदिन 11 माला 21 दिन तक करें। जाप के समय पीत या लाल वस्त्र पहिनें; घी का दीपक जलाएं। अनुष्ठान पूरा होने पर यन्त्र एवं मन्त्र को कागज़ पर लाल स्याही से लिखकर जलप्रवाह करें। जो यन्त्र अनुष्ठान प्रारम्भ करने से पहिले मां जगदम्बा की मूर्ति के सामने रखा था, उसे चान्दी के ताबीज़ में मढ़ाकर विवाहयोग्य लड़का/लड़की को पहिना दें; शीघ्र ही विवाह सम्पन्न होगा।– **[ये यन्त्र बीकानेर के पं. गिरवर प्रसाद विस्सा शास्त्री जी द्वारा अनुभूत हैं।]**

विवाहकारक यन्त्र			
९	२१	११	८
२३	१	९	१९
३७	५	३	२७
४	३४	३५	७

अखण्ड भण्डार हेतु तान्त्रिक प्रयोग

दीपावली के दिन या कृष्ण पक्ष की अष्टमी, चतुर्दशी या पुष्यनक्षत्र में मयूरशिखा (जंगलीजड़ी) लाकर **''ॐ ह्रीं मयूरशिखामहासुखसर्वकाय साधय साधय स्वाहा।''** – मन्त्र 108 बार पढ़कर जड़ी पर सिन्दूर, कपूर, कस्तूरी का तिलक लगाएं। धूप देकर सिद्धजड़ी को तिजोरी में रखे तो भण्डार अखण्ड रहे। देश के बड़े–बड़े उद्योगपतियों, सेठों, व्यापारियों के यहां इस प्रकार की सिद्धजड़ी तिजोरी में स्थापित रहती है।

प्रत्येक कार्य में सफलता मिले

व्यापार, विवाह या किसी कार्य में यदि बारम्बार असफलता मिले तो निम्नांकित टोटका प्रयोग में लाएं;–

सरसों के तेल में सिके हुए गेहूं के आटे से बने या पुराने गुड़ से तैयार सात पूये (पूड़े), सात आक (मंदार) के फूल, सिन्दूर, आटे से तैयार सरसों के तेल में रुई की बत्ती से जलता दीपक– ये सब पत्तल या एरण्डी के पत्ते पर रखकर शनिवार की रात्रि में किसी चौराहे पर रख दें। रखते समय यह कहें;– **'' हे मेरे दुर्भाग्य तुझे यहीं छोड़े जा रहा हूं, कृपा करके मेरा पीछा न करना।''**– इस प्रकार उच्चारण करके वापिस घर चले आएं, पीछे मुड़कर न देखें, किसी से चर्चा न करें। सभी बाधाएं दूर होकर शीघ्र ही सफलता मिलेगी।

मिर्गी रोग से मुक्ति मिले

मिर्गी के रोगी को एक तोला असली हींग ताबीज़ की भान्ति नए सफेद कपड़े में सीकर धागे में बांधकर गले में पहिना देने से मिर्गी का दौरा रुक जाता है।

गाय के बाएं सींग की अंगूठी बनवाकर रोगी व्यक्ति के बाएं हाथ की कनिष्ठका अंगूली में धारण करने से मिर्गी का दौरा नहीं पड़ता।

आधसीसी रोग से मुक्ति मिले

रविवार के दिन सूर्योदय से पूर्व ही पानी वाले कच्चे नारियल का पानी निकालकर खड़े–खड़े ही चार घूंट पीवें, थोड़ा सा अपने सिर पर डालें तथा नासिका के दोनों छिद्रों (नथुनों) के द्वारा चार–चार बार थोड़ा–सा पानी ऊपर को खींचकर (सुड़ककर) एक घण्टे तक टहलें। यह क्रिया पूर्व दिशा की ओर मुख करके करनी चाहिए; अवश्य लाभ होगा।

सर्ववशीकरण तिलक

प्रयोग–शुद्ध सिन्दूर, शुद्ध केसर, शुद्ध गोलोचन (गोरोचन)–सब बराबर मात्रा में पीसकर डिबिया में रखें। इसका तिलक लगाने से सब मोहित हों।

श्रीमहाकाली स्तोत्र

यह स्तोत्र बहुत गुह्य एवं आश्चर्यजनक प्रभावयुक्त है। इस स्तोत्र का पाठ करने से भक्तजनों को सर्वविध संकट व घर में दुख–दारिद्र्य से मुक्ति मिलती है। इस स्तोत्र का पाठ करने से सुख–समृद्धि प्राप्त होती है। भूत–प्रेतजन्य कष्ट उस घर में नहीं रहता जहां इस स्तोत्र का पाठ होता है– *सम्पादक*।

स्तोत्र

ॐ प्राग्देहस्थो यदाहं तव चरणयुगं नाश्रितो नार्चितोऽहम्
तेनाद्धा कीर्तिवर्जं जठरज–दहनैर्बाध्यमानो बलिष्ठैः।
क्षिप्त्वा जन्मान्तरान्नः पुनरिह भविता क्वाश्रयः क्वापि सेवा
क्षन्तव्यो मेऽपराधः प्रकटित – वदने कामरूपे कराले।।१।।

बाल्ये बालाभिलापैर्जड़ित–जड़मतिर्बाललीला प्रसक्तो
न त्वां जानामि मातः कलिकलुषहरां भोग–मोक्ष प्रदात्रीम्।
नाचारो नैव पूजा न च यजनकथा न स्मृतिर्नैव सेवा
क्षन्तव्यो मेऽपराधः प्रकटित – वदने कामरूपे कराले।। २।।

प्राप्तोऽहं यौवनं चेद् विषधर–सदृशैरिन्द्रियैर्नष्टगात्रो
नष्टप्रज्ञः परस्त्री–परधरहरणे सर्वदा साभिलाषः।
त्वत्पादाम्भोजयुग्मं क्षणमपि मनसा न स्मृतं तत्कदापि
क्षन्तव्यो मेऽपराधः प्रकटित–वदने कामरूपे कराले।। ३।।

प्रौढे शिक्षाभिलाषी सुत–दुहितृ–कलत्रार्थमन्नादिचेष्टः
क्व प्राश्ये कुत्र यामीत्यनुदिनमनिशं चिन्तया मग्नदेहः।
नो ते ध्यानं न चास्था न च भजनविधिर्नामसंकीर्तनं वा
क्षन्तव्यो मेऽपराधः प्रकटित–वदने कामरूपे कराले।। ४।।

वृद्धत्वे बुद्धिहीनः कृश–विवश–तनुः श्वास–कासातिसारैः

पश्चात्तापेन दग्धो मरणमनुदिनं ध्येयमात्रं न चान्यत्
क्षन्तव्यो मेऽपराधः प्रकटित–वदने कामरूपे कराले।। ५।।

कृत्वा स्नानं दिनादौ क्वचिदपि सलिलं नाहृतं नैव पुष्पम्
नो नैवेद्यादिकं ते क्वचिदपि विहितं नापि भावो न भक्तिः।
न न्यासो वै न चैवं तव गुणकथनं नापि चर्चा कृता ते
क्षन्तव्यो मेऽपराधः प्रकटित – वदने कामरूपे कराले।।६।।

जानामि त्वां न चाहं भवभयहरणे सर्वसिद्धिप्रदात्रीम्
नित्यानन्दोदयाढ्यां त्रितयगुणमयीं नित्यशुद्धोदयाढ्याम्।
मिथ्या कर्माभिलाषैरनुदिनमभितः पीड़ितो दुःखसंघैः
क्षन्तव्यो मेऽपराधः प्रकटित –वदने कामरूपे कराले।।७।।

कालाभ्र–श्यामलांगीं विगलितचिकुरां खड्ग–मुण्डाभिरामाम्
त्रास–त्राणेष्टदात्रीं कुणपगणशिरो मालिनीं दीर्घनेत्राम्।
संसारस्यैकसारां भवजननहरां भावितो भावनाभिः
क्षन्तव्यो मेऽपराधः प्रकटित –वदने कामरूपे कराले।।८।।

ब्रह्मा–विष्णुस्तथेशः परिणमति सदा त्वत्पदाम्भोजयुग्मम्
भाग्याभावान्न चाहं भव–जननि–भवत्पादयुग्मं भजामि।
नित्यं लोभ–प्रलोभैः कृत–विवशमतिः कामुकस्त्वां प्रयाचे
क्षन्तव्यो मेऽपराधः प्रकटित – वदने कामरूपे कराले।।९।।

रागद्वेषैः प्रमत्तः कलुषयुत–तनुः कामना भोग–लुब्धः
कार्याकार्याविचारी कुलमतिरहितः कौलसंघैर्विहीनः।
क्व ध्यानं ते क्व चर्चा क्व च मनुजपनं नैव किञ्चित् कृतं हि
क्षन्तव्यो मेऽपराधः प्रकटित–वदने कामरूपे कराले।।१०।।

रोगी दुःखी दरिद्रः परवश–कृपणः पांशुलः पापचेता
निद्रालस्य– प्रसक्तः सुजठरमरणे व्याकुलः कल्पितात्मा।
किं ते पूजा–विधानं त्वयि क्व च नु मतिः क्वानुरागः क्व चास्था

मिथ्या व्यामोहरागैः परिवृत- मनसः क्लेशसंघान्वितस्य
क्षुन्निद्रौघान्वितस्य स्मरसुविहरिणः पापकर्मप्रवृत्तः।
दारिद्र्यस्य क्व धर्मः क्व च जननरुचिः क्व स्थितिः साधुसंघैः
क्षन्तव्यो मेऽपराधः प्रकटित-वदने कामरूपे कराले॥१२॥

मातस्तातस्य देहाज्जननि-जठरगः संस्थितस्त्वद्वशोऽहम्
त्वं हर्त्री कारयित्री करणगुणमयी कर्महेतु- स्वरूपा।
त्वं बुद्धिश्चित्तसंस्थाप्यहमति भवती सर्वमेतत् क्षमस्व
क्षन्तव्यो मेऽपराधः प्रकटित-वदने कामरूपे कराले॥ १३॥

त्वं भूमिस्त्वं जलं च त्वमसि हुतवहस्त्वं जगद्वायुरूपा
त्वं चाकाशं मनश्च प्रकृतिरसि महत्-पूर्विका-पूर्वपूर्वा।
आत्मा त्वं चासि मातः परमसि भवती त्वत्परं नैव किञ्चित्
क्षन्तव्यो मेऽपराधः प्रकटित -वदने कामरूपे कराले॥ १४॥

त्वं काली त्वं च तारा त्वमसि गिरिसुता सुन्दरी भैरवी त्वम्
त्वं दुर्गा छिन्नमस्ता त्वमसि च भुवना त्वं हि लक्ष्मीः शिवा त्वम्।
धूमा मातङ्गिनी त्वं त्वमसि च बगला मंगलादि स्तवाख्या
क्षन्तव्यो मेऽपराधः प्रकटित- वदने कामरूपे कराले॥'१३॥

स्तोत्रमहिमा-

स्तोत्रेणानेन देवीं परिणमति जनो यः सदा भक्तियुक्तो
दुष्कृत्या दुर्गसंघं परितरति शतं विघ्नतानाशेमेति।
नाधि-व्याधी कदाचिद् भवति यदि पुनः सर्वदा सापराधः
सर्वं तत्कामरूपे त्रिभुवनजननि क्षम्यतां पुत्रबुद्ध्या॥ १६॥

ज्ञाता वक्ता कवीशो भवति धनपतिर्दानशीलो दयात्मा
निष्पापी निष्कलंकी कुलपतिकुशलः सत्यवाग् धार्मिकश्च।
नित्यानन्दो दयाढ्यः पशुगण-विमुखः सत्पथाचारशीलः
संसाराब्धिं सुखेन प्रतरति गिरिजा-पादयुग्मावलम्बात्॥ १७॥

॥श्रीकालिका स्तोत्रं सम्पूर्णम्॥

यात्रासिद्धि के लिए तान्त्रिक प्रयोग

आज की भागदौड़ की ज़िन्दगी में यात्रा में अनेक प्रकार के कष्ट होते हैं। जब तक सकुशल घर लौटकर वापिस न आ जाएं तब तक घर में चिन्ता बनी रहती है। नीचे लिखे मन्त्र को पढ़ने मात्र से यात्रा मंगलमय होती है।

मन्त्रः-'' ॐ गच्छ गौतम शीघ्र त्वं ग्रामेषु नगरेषु च।
आसनं भोजनं शय्यां कल्पयस्व ममाग्रतः॥''

विधिः- यात्रा में जब नगर/ग्राम से चलने लगें, तब सात बार यह मन्त्र पढ़ें और कहें कि " **गौतम ऋषि का न्योता है।**"

फिर घास-दूब (दूर्बा) को जेब में रखकर नगर में अथवा ग्राम में प्रवेश करे तो सर्वसुख उपलब्ध हों एवं मार्ग में बाधा न आए।

समाज में प्रतिष्ठा बढ़े।

मयूरशिखा (मोरपंख का चन्दोवा) यदि रवि-पुष्यामृत योग के समय उपलब्ध हो जाए तो शुद्धिपूर्वक अपने पास रखें। समाज में मान-सम्मान बढ़ेगा।

दुकान में बिक्री बढ़ाने के लिए अनुभूत प्रयोग

अनेक बार ऐसा होता है कि भली प्रकर से चलती दुकान में रुकावट आ जाती है। दुकान पर ग्राहकों की भीड़ को देखकर किसी की कुदृष्टि लग जाने से होती हुई बिक्री मन्द पड़ जाती है। इसका प्रभाव दूर करने के लिए इस मन्त्र का प्रयोग हम पहले भी पंचांगों में दे चुके हैं, लेकिन जनता के अनुरोध पर पुनः लिख रहे हैं।

मन्त्र-''भंवर वीर तू चेला मेरा, खोल दुकान कहाकर मेरा।
उठै जो डंडी बिकै जो माल, भंवरवीर सोखे नहीं जाए॥"

विधि- इस मन्त्र को दिवाली की रात को पढ़कर सिद्ध कर लें। फिर आवश्यकता पड़ने पर रविवार के दिन काले उड़द लेकर 21 बार इन उड़दों पर इस मन्त्र को पढ़कर अभिमन्त्रित कर लें एवम् दुकान में इधर-उधर उक्त मन्त्र पढ़ते हुए डाल दें। दूसरे दिन इन्हें बुहार कर काले कपड़े में एकत्र करके काले धागे से उस कपड़े का मुख बांधकर किसी चौराहे पर डाल दें। यह प्रक्रिया स्वयं करें, किसी से मत कराएं। आगामी तीन-चार रविवारों में ही बिक्री आश्चर्यजनक रूप से बढ़ेगी।

*****

ज्योतिष एवं कर्मकाण्ड से सम्बन्धित कुछ ज्ञानवर्धक प्रश्नोत्तर

यह स्तम्भ विभिन्न विद्वानों की कुछ समस्याओं के समाधानार्थ ज्योतिषशास्त्र एवं कर्मकाण्ड के प्रकाण्ड पण्डितों के अनुभव के आधार पर यहां प्रस्तुत कर रहे हैं। आशा है–यह स्तम्भ सर्वसाधारण पण्डितों की जिज्ञासा के अनुरूप एवं ज्ञानवर्धक रहेगा।–सम्पादक

1. गण्डमूलशान्ति 27वें दिन ही करने का विधान है या यह केवल चलनमात्र है ?

उत्तर–(i) गण्डमूलशान्ति के बाद ही पिता को बालक का मुख देखने की परम्परा है। शास्त्रकारों ने जन्मकालिक सूतक समाप्त होते ही गण्डमूलशान्ति का उल्लेख किया है।

(ii) बच्चे के नामकरण के समय बच्चे के माता-पिता की उपस्थिति अनिवार्य है, अत: नामकरण से पहले गडमूल-नक्षत्र शान्तिविधान कराना चाहिए–ऐसा विधान है। इस दिन ग्रहण, भद्रा, गुरु-शुक्रास्तादि अशुभ बातों का विचार नहीं करना चाहिए।

(iii) यदि उस दिन गण्डमूलशान्ति संभव न हो सके तो उसके बाद आने वाले जन्मकालिकनक्षत्र में शान्ति कराने का विधान है। यही कारण है कि–लगभग 27वें दिन ही गण्डमूलशान्ति कराने की परम्परा प्रचलित है, क्योंकि जन्मनक्षत्र सर्वप्रथम उसी दिन आता है।

(iv) यदि 27वें दिन ठीक शुभ मुहूर्त्त न बनें तो एक साल के भीतर कभी भी जन्मकालिक नक्षत्र में या किसी अन्य दिन शुभ मुहूर्त्त में शान्ति करा देने का विधान भी है।

2. गण्डमूल-शान्त्यर्थ पण्डित लोग कुछ चीज़ें 27 की संख्या में लाने का आग्रह करते हैं– इसमें क्या तर्क है ?

उत्तर–गण्डमूल-शान्त्यर्थ शान्तिविधान के प्रवर्त्तक गर्गादि आचार्यों ने **शतौषधि, सप्तमृत्तिका, तीर्थजल** एवं **पंचामृत** से स्नान का विधान लिखा है। अत: 27 चीज़ों की बात अज्ञानतामूलक ही है।

पंचामृत में दूध, दही, शहद, घी एवं शर्करा का ग्रहण है। सप्तमृत्तिका में घुड़साल, राजदरबार, हाथीशाला, गौशाला, नदीसंगम, दीमक की बाम्बी एवं तालाब की मिट्टी शामिल है। इसके विकल्प के तौर पर गंगाजल और गंगा के किनारे की मिट्टी लेने से संगम और सात नदियों का जलनियम पूरा हो जाता है।

शतौषधि में तो सैकड़ों जड़ी-बूटियां शामिल हैं। लेकिन **शतौषध-संग्रह** में कठिनाई हो तो हल्दी, सरसों, आंवला, कमलगट्टा, सोंठ, शतावर, तुलसी, अगर-तगर आदि में सर्वौषधि-परिकल्पना करके विधि करते हैं–

''शतौषधीनामभावे तु गृह्णीयात् सर्वमौषधम्।''

नक्षत्रशान्ति-विधान के बाद ब्राह्मणभोज हेतु बहुवचन का प्रयोग किया गया है। केवल **ज्योतिर्निबन्ध** में ज्येष्ठा नक्षत्रशान्ति में 108ब्राह्मणों को भोजन कराने की चर्चा की गई है। अत: कम से कम 12 एवं अधिकतम 108विप्रसंख्या तक किंवा अपनी सामर्थ्यानुसार ब्राह्मण-भोजन करावें या उसके मूल्यानुसार संकल्प करें। नक्षत्रसंख्या 27 होने से यहां 27 अंकों की परिकल्पना कर इस विधान की चर्चा की है। वस्तुत: इसका कोई शास्त्रीय आधार नहीं।

3. नामकरण-संस्कार के दिन यदि ग्रहण हो तो क्या करें ?

उत्तर–जन्मकालिक सूतक-निवृत्ति के बाद ही **नामकरण** का विधान है। निश्चित कालावधि पर आधारित कार्य सदा निर्धारित समय पर ही होते हैं। **यथा**–ब्राह्मणों के दसवें दिन, क्षत्रियों के बारहवें दिन, वैश्यों के पन्द्रहवें दिन एवं *अन्य वर्णों के तीसवें दिन सूतक की समाप्ति मानी गई है। अत: उल्लिखित वर्णों*

में क्रमशः 11वें, 13वें, 16वें एवं 31वें दिन यदि नामकरण करते हैं तो ग्रहणादि का विचार निरस्त कर सकते हैं, तब मुहूर्त्त विचार्य नहीं है। यदि उक्त समय पर नामकरण नहीं हो पाए और कभी बाद में कर रहे हों तो ग्रहणादि के अशुभ समय को छोड़कर नामकरण शुभ मुहूर्त्त में ही करना चाहिए।

'सारसंग्रह' के अनुसार–

''एकादशेऽह्नि विप्राणां क्षत्रियाणां त्रयोदशे।
वैश्यानां षोडशे नाम मासान्ते शूद्रजन्मनः।।''

4. ग्रहणावधि में मन्दिर क्यों बन्द रहते हैं ?

उत्तर–ग्रहणावधि विशेषतः ग्रहण के आदि–अन्त में स्नान–जप, पूजा–विधान, दान, तप एवं दैवदर्शन शास्त्रसम्मत हैं। ग्रहण के समय किया गए जप–दान का फल अत्यधिक लिखा है– **''बहुफलं जप–दान–हुतादिके स्मृति–पुराणविदः प्रवदन्ति हि।''**

नोट करें कि–दक्षिण भारत एवं अन्य सभी तीर्थस्थानों के मन्दिरों के द्वार ग्रहण में भी खुले ही रखे जाते हैं। हाँ, **ग्रहणावधि में मूर्ति का स्पर्श वर्जित है।** शिवजी को छोड़ कर, अन्य कोई देवता नहीं, जिसके गर्भगृह में दर्शनार्थी प्रवेश करके मूर्ति का स्पर्श कर सकते हैं? ग्रहणसमय देवदर्शनार्थ मन्दिर खुले ही रहने चाहिएं। मन्दिर बन्द रखने की परम्परा पुजारियों द्वारा प्रचारित अशास्त्रीय परम्परा है। **गर्ग ऋषि के मतानुसार ग्रहणारम्भ पर स्नान, ग्रहण के समय हवन, जप–पूजन, ग्रहणमोक्ष पर दान एवं ग्रहणपूर्णता पर पुनः स्नान करना चाहिए–**

''स्पर्शे स्नानं भवेद्होमो ग्रस्तयोर्मुच्यमानयोः।
दानं स्यान्मुक्तये स्नानं ग्रहे चन्द्रार्कयोर्विधिः।।''

ग्रहण के समय जप–दान–पूजादि में समय का सदुपयोग करते हुए अपने इष्टदेव की पूजा और नमस्कार करके ग्रहणमोक्ष पर स्नान करके पुनः देवदर्शन का विधान है–

''ततोऽतिवाहयेद् वेलामुपरागानुगामिनीम्।
प्राङ्मुखं पूजयित्वा तु नत्वा स्वाभीभष्ट–देवताम्।।''

5. 'हिन्दूविवाह' प्रथा में सात फेरे लिखे हैं, लेकिन देखने में चार ही क्यों ?

उत्तर–चार फेरे कराना कर्मकाण्डी विद्वानों की अज्ञानता ही है। विवाहादि संस्कारों के प्रतिपादक ग्रन्थों का निर्देश है कि–विवाह में अग्नि की सात परिक्रमाएं या फेरे होते हैं। **पारस्करादि गृह्यसूत्रों का वाक्य है :– ''पश्चादग्निं पर्याणीयेति। प्रदक्षिणं पर्याणीय–इत्येके।''**

अर्थात्–''फिर अग्नि की परिक्रमा करके 'पर्याणीय' शब्द का अर्थ अग्नि को शास्त्र–विहित संख्या में प्रदक्षिणा करना है।'' **अतः कहा गया है–**

''अग्नेः प्रदक्षिणाः सप्त विवाहे तु सदा मताः।
सर्वत्र युगपत् कुर्यात् विवाहे तु यथाक्रमम्।।''

'अग्निदेव की सात परिक्रमाएं अन्य कार्यों में सदा करते हैं, लेकिन विवाह में विवाह में **बताए गए क्रमानुसार** की जाती हैं।'

यह विशेष क्रम क्या है ? कन्यादान के बाद हवन शुरु होने से पहले 3 परिक्रमाएं बिना मन्त्र बोले, फिर लाजाहोम की तीन परिक्रमाएं मन्त्र बोलते हुए और अन्त में सातवीं परिक्रमा **'भगाय स्वाहा'** बोलकर की जाती है। **इस बारे स्पष्ट कथन है–**

''होमात् पूर्वं तु स्युस्तिस्रः तिस्रो होमे समन्त्रक्ताः।
एका भगाय स्वाहेति सप्तैताः स्युः प्रदक्षिणाः।।''

होम से पहले वाली त्रिप्रदक्षिणा का अज्ञान ही विवाह–फेरों में मूल कारण है। 'विवाहपद्धति' में हवन से पूर्व लिखे गए वाक्य **''तातोऽग्निं प्रदक्षिणी–कृत्वा''** अर्थ भी पण्डितों को अवश्य समझ लेना चाहिए।

6. भाग्यरत्न कौन सी अंगुली में धारण करें ?

उत्तर–कोई भी एक अंगूठी पहननी हो तो **'अनामिका' (Ring Finger)** सबसे उपयुक्त है। क्योंकि हमारी **'रेड़ियल एवं अल्नर'** – इन दोनों नाड़ियों से सीधा सम्बन्ध होने से अनामिका में रत्न पहनने का प्रभाव सर्वाधिक है। यदि दो नग पहनने हों तो दूसरा नग **'मध्यमा'** में पहनना उपयुक्त रहेगा। यह बात Medical Science से भी सही सिद्ध होती है।

नवग्रहों के नवरत्नों को हाथ की चार अंगुलियों में ग्रहों के पर्वतों के अनुसार बांट कर रत्नधारण करने की आज्ञा नहीं।

7. रत्न का वजन कितना हो ?

पुरातन ग्रन्थों के अनुसार धारणीय रत्नों के बारे में 3, 4, 5, 7, 8, 10, 12 रत्ती वजन का उल्लेख है। अपकी सामर्थ्य एवं उपलब्धता के अनुसार रत्न का चयन करें।

8. किस धातु में रत्न पहनें ?

अपनी सामर्थ्य के अनुसार सोना, चांदी, तांबा, लोहा आदि धातु रत्न की अंगूठी बनाने में प्रयोग में ला सकते हैं।

सोना, चांदी, तांबा किंवा लोहे से बनी सुंदर अंगूठी को सर्वप्रथम शुद्ध जल से धोकर पहन लें। अंगूठी को दूध, गंगाजल, दही आदि से सारी रात भिगोकर रखने के बाद रत्नजड़ित अंगूठी को पहनें तो सर्वोत्तम रहेगा।

राजा एवं धनाढ्य लोग नीलम, पुखराज, माणिक, पन्ना आदि रत्नों को सोने में ही पहनें–ऐसा भोजराज का वचन है–

''वज्राण्येतानि सर्वाणि धार्याण्येव महीभृता।
सुवर्ण-प्रतिबद्धानि जयारोग्य-विवर्धये।।''

9. यदि वायुयान किंवा समुद्रीपोत में प्रसव हो तो जातक का जन्मस्थान कैसे तय होगा ?

उत्तर–जिस अक्षांश/रेखांश पर आकाश में वायुयान किंवा समुद्रपोत चल रहा होगा, तदनुसार ही जन्मस्थान मानकर लग्नादि साधन करना होगा। वायुयान एवं जल-पोत में G.P.S. (Global Positioning System) लगे होते हैं। प्रसव होने पर G.P.S. ज्ञानार्थ पायलट या कैप्टन से सम्पर्क करके अक्षांश/रेखांश जान लेने चाहिएं।

10. क्या 'गुरुपुष्य' योग सभी कार्यों में शुभ माना गया है ?

उत्तर–गुरुवार एवं पुष्य नक्षत्र के संयोग से उत्पन्न गुरुपुष्य को विवाह में, मंगलवार व अश्विनी नक्षत्र से उत्पन्न सिद्धियोग को गृहप्रवेश में एवं शनिवार-रोहिणी नक्षत्रयोग-जन्य सिद्धियोग को यात्रा में सदा छोड़ दें, अन्य कर्त्यों में ये योग शुभ हैं–

''भौमाश्विनीं प्रवेशे च प्रयाणे शनि-रोहिणीम्।
गुरु-पुष्यं विवाहे च सर्वथा परिवर्जयेत्।।''

11. क्या सिंह या मकरस्थ गुरु में विवाह पूर्ण वर्जित है ?

उत्तर–सिंह एवं मकर राशिस्थ गुरु की अवधि में बहुत से आचार्यों ने विवाहादि शुभ कार्य वर्जित किए हैं। लेकिन सिंहस्थ गुरु में केवल सिंह-नवांशगत गुरु के काल में ही विवाहादि शुभ कार्य वर्जित माने हैं, यही बहुमत है– **''सिंहे सिंहांशकस्त्याज्यः''** मकरराशिगत गुरु का केवल 5वां अंश ही शास्त्रकारों द्वारा वर्ज्य माना है। गुरुशुद्धि विवाह में कन्या के लिए ही देखी जाती है और आजकल कन्याओं की शादी बड़ी उम्र में होने से सिंह/मकर का पूरा काल वर्जन स्वीकार्य नहीं – **''रजस्वलायां कन्यायां गुरुशुद्धिं न चिन्तयेत्।''** हां, मनस्तोष के लिए ऐसी स्थिति में गुरु का त्रिगुणित पूजन-दान करके विवाह निःसंकोच कर सकते हैं। ***लिखा भी है–''विवाहस्त्रिगुणार्चनात्।''***

ज्योतिष के कुछ योग एवं प्रश्नविचार

1. विवाह होगा या नहीं ?

यदि लग्न से 2, 3, 6, 7, 10, 11 स्थानों (भावों) में चन्द्र गुरुदृष्ट हो तो विवाह होगा। यदि चन्द्र के साथ पापी ग्रह हों या पापी ग्रहों की दृष्टि हो तो विवाह नहीं होगा। यदि लग्न से 3, 5, 6, 7 एवं एकादश स्थान में चन्द्र को सूर्य, बुध, गुरु- इनमें से कोई देखे अथवा व्ययेश सप्तमस्थान में हो और सप्तमेश लग्न में हो अथवा 2, 4, 7-इन राशियों में से किसी एक राशि में चन्द्र या शुक्र हो तो विवाह अवश्य होगा।

अंक-प्रश्न तथा फलवर्णन

प्रश्नकर्त्ता के मुख से 108अंक के भीतर कोई एक अंक कहलाएं या लिखवाएं, उनमें 12 का भाग देकर, यदि 1, 7, 9 शेष बचें तो देर से कार्यसिद्धि हो। यदि 4, 5, 8, 10 बचें तो बनते काम में विघ्न हों, यदि 11 बचें तो कार्यसिद्धि हो, 2 बचें तो कार्यवृद्धि हो, 3, 6, 12 या शून्य बचें तो शीघ्र ही कार्यसिद्धि हो।

पुत्रलाभ होगा कि नहीं ?

तात्कालीन तिथि की संख्या को 4 से गुणाकर, 1 जोड़ना, तदनन्तर वार तथा योग की संख्या युक्त करके 2 से भाग देना, जो लब्धि आवे, उसको तीन से गुणा करके, 4 से भाग दें, जो शेष बचे उससे फल कहें। 1 शेष बचे तो विलम्ब से पुत्र सन्तान होगी। चिरंजीविता के लिये पार्थिव शिवपूजन करना चाहिए। शेष 2 बचें तो पूर्व जन्म के पाप के कारण सन्तानसुख न होगा, गयायात्रा तथा हरिवंशपुराण का नवाह्न सुनने तथा सन्तानगोपाल के सवालक्ष-जाप से सम्भव है कि-ईश्वर कृपा करे, 3 शेष रहे तो पुत्रलाभ होगा, किसी गरीब की कन्या का विवाह करा दें या कन्या-विवाह में गुप्तदान से मदद करें। ऐसा करने से होने वाले पुत्र का पूर्ण सुख होगा, 4, 1, 0 शेष बचे तो सन्तान शीघ्र होगी।

मूकयोग –

''क्रूरैर्गृहसन्धिगतैः शशिनि वृषे भौमसौररविदृष्टे।
मूकः सौम्यैर्दृष्टे वाचं कालान्तरे वदति।।''

पापग्रह राशियों की सन्धि में गए हों, वृष राशि में चन्द्रमा पर मंगल, शनि, सूर्य की दृष्टि हो तो बालक गूंगा होता है।

यदि उक्त चन्द्रमा पर शुभग्रहों की दृष्टि हो तो देर से बोलता है।

यहां राशिसन्धि से तात्पर्य 4, 8, 12 राशियों की सन्धि अर्थात् गण्डान्त समझना अधिक उपयुक्त है।

नेत्रविकार-रोगयोग –

''वक्रो वा सौरो वा द्वादशसंस्थो नयनहन्ता।।
दक्षिणनयनं सौरो वाममथाङ्गारको हन्यात्।।
युगपच्चन्द्रादित्यौ द्वादशभे निष्ठितौ ग्रहौ स्याताम्।
कुरुतः प्रसूतमन्धं पापः षष्ठेऽथवा निधने।।''

(i) द्वादशभाव में मंगल या शनि नेत्रनाशक होते हैं। शनि दायीं आँख तथा मंगल बायीं आँख नष्ट करता है।

(ii) सूर्य व चन्द्रमा साथ-साथ बारहवें भाव में हों तो बालक जन्म से ही अन्धा हो। साथ ही 6, 9वें भी पाप ग्रह होना आवश्यक है।

जन्म से पहले पिता की मृत्युयोग –

''यत्रस्थस्तत्रस्थः स्वपुत्ररुधिरांगसंगतः सूर्यः।
प्राग्जन्मनो निवृत्तं कथयति पितरं प्रसूतस्य।।

किसी भी राशि में सूर्य का मंगल व शनि से योग हो तो बालक का पिता उसके जन्म से पूर्व ही मर चुका होता है।

....

प्रसूति-लग्न विचार

मेष–जन्मसमय मेष लग्न हो, तो माता का पूर्व या पश्चिम में सिर, उपसूतिका दो या तीन, प्रसव में माता को कष्ट अधिक, पाद से प्रसव, भूमि में घर के पूर्व भाग में जन्म हुआ, बालक जन्मोपरान्त दीर्घ शब्द से रोया। माता ने लाल एवम् मीठा भोजन किया था। वस्त्र लाल, मलिन थे। ४। ११। १६। ४४। ५८ वर्षों में बालक कष्ट पावे; इन वर्षों के प्रारम्भ में तुलादान, गोदान, मृत्युञ्जय जप कराना श्रेष्ठ है। इन वर्षों से बचे, तो १०० वर्ष जीवे।

वृष– माता का दक्षिण में सिर, उपसूतिका ३ या ४, जन्मोपरान्त दो और आई, जन्मते ही बालक दीर्घ शब्द से रोया, गौरवर्ण, अधोमुख, पाद से प्रसव, घर से पूर्व में सूतिका–स्थान, श्वेत स्वच्छ वस्त्र, जन्म से पहले माता ने शुष्क शाकादि भोजन किया। १। २८। ३३। ४४। ६१ वर्षों में बालक कष्ट पावे। इन वर्षों के प्रारम्भ में महामृत्युञ्जय का जाप और ब्राह्मणभोजन करवाना श्रेष्ठ है। इन वर्षों से बचे, तो ९० वर्ष जीवे।

मिथुन– माता का सिर पश्चिम में, उपसूतिका ३ या ५, माता का हरा या जीर्ण वस्त्र, सिर से प्रसव, मुख ऊपर को, जन्मते ही दीर्घ शब्द किया, नाल छूटा था, घर के आग्नेय भाग में जन्म, माता ने पहले लवणयुक्त विचित्राल्प भोजन किया, दूध कम उतरे। ४। १०। १४। ३८। ५८ वर्षों में बालक कष्ट पावे। इन वर्षों के आरम्भ में शिवार्चन और मृत्युञ्जय का जप करवाएं। यदि इन वर्षों से बचे, तो ८६ वर्ष जीवे।

कर्क–माता का उत्तर में सिर, उपसूतिका ५ या ४, बालक जन्मते ही छींका, नाल छूटा, भूमि पर जन्म, घर के दक्षिण भाग में प्रसवस्थान, माता के वस्त्र श्वेत व लाल, माता ने प्रसव से पहले मधुर व शीतल भोजन किया था, दीपक उठाया गया, बालक के वामांग में लहसुन आदि का चिह्न, देर से रोया। ५। २५। ४०। ५८। ६२– इन वर्षों में बालक कष्ट पावे। इनसे बचे तो १०० वर्ष जीवे। कष्टकारक वर्षों के प्रवेश के समय तुलादान, छायादान और मृतसञ्जीवनी मन्त्र का जाप करवाना कल्याणप्रद है।

सिंह– माता का पश्चिम या पूर्व में सिर, मलिन या लाल वस्त्र, शुष्क कसैला या खट्टा भोजन किया था, जन्मसमय स्त्री ३, पीछे से १ आई, दीपक स्थिर रहा, बालक जन्मते ही तुरन्त रोया, घर के दक्षिण भाग में प्रसवस्थान। ५। १३। २८। ३६। ४८– इन वर्षों में बालक कष्ट पावे। इनसे बचे तो ६७ वर्ष जीवे। कष्टकारक वर्षों के प्रवेश होते ही श्रीसूर्यनारायण के मन्त्र का जाप या आदित्यहृदय का पाठ और ब्राह्मणों को मीठा भोजन करावे तो कल्याण होगा।

कन्या–माता का दक्षिण में सिर, रक्त जीर्ण वस्त्र, मिष्ठान्न बासी चीज या बड़े आदि का भोजन, जन्मसमय स्त्री ३ या ५, दीपक हाथ में उठाया गया, बालक ने जन्मते अर्द्ध शब्द किया, घर के नैर्ऋत्यकोण में सूतिका–स्थान। ४। १६। २३। ३६। ५५– वर्ष कष्टकारक हैं। यदि इन वर्षों से बचे तो १०० वर्ष जीवे।

तुला– माता का सिर पश्चिम या पूर्व को, श्वेत जीर्ण वस्त्र, भुना हुआ अन्न, डा जल या कोई मामूली चीज क्रोधपूर्वक खाई थी। जन्मसमय स्त्री ३ या ६, वहां क कन्या भी हो, दीपक उठाया गया, बालक जन्मसमय कुछ ठहरकर अर्धशब्द करके या, घर के पश्चिमभाग में सूतिकास्थान। ८। १५। ३१। ३५। ६२। ६४– इन कष्टकारक वर्षों के प्रारम्भ में नवग्रहों का दान, हवन, जप करवाना श्रेष्ठ है। यदि इन वर्षों से बचे तो ७५ वर्ष जीवे।

वृश्चिक–माता का दक्षिण या उत्तर में सिर, रक्त या दग्ध वस्त्र, कष्ट अधिक, अमधुर मामूली क्रोधपूर्वक भोजन, जन्मसमय स्त्री २ या ३, पीछे से भी २ आईं, दीपक स्वस्थान में टिका रहा, बालक जन्मोत्तर देरी से रोया। छींक भी किया, दीर्घ केश, घर के पश्चिमभाग में प्रसवस्थान। ११। २८। ३८। ५२। ६२– इन कष्टकारक वर्षों के प्रारम्भ में मृत्युञ्जय जप और तुलादान कराना श्रेष्ठ है। यदि इन वर्षों से बचे तो १०० वर्ष जीवे।

धनु–माता का सिर पश्चिम या पूर्व को, पीत या रक्त वस्त्र, पक्वान्नादि भोजन, जन्मसमय स्त्री १ या ५, दीपक हाथ में उठाया गया, बालक जन्मोत्तर तत्काल दीर्घ शब्द से रोया और छींक भी किया, घर के वायव्यकोण में सूतिकास्थान। २। १०। १८। ३१। ३८। ४२। ६७– इन वर्षों के आरम्भ में शिवार्चन, महामृत्युञ्जय जप, ब्राह्मणभोजन श्रेष्ठ है। यदि इन वर्षों से बचे तो ८१ वर्ष जीवे।

मकर– माता का सिर दक्षिण में, ऊपर काला व जीर्ण कमजोर वस्त्र; गुड़, दुग्ध, कसैला भोजन, ठण्डा जलपान किया था। जन्मसमय स्त्रियां २, पीछे से एक आई। दीपक हाथ में उठाया गया। बालक जन्मोत्तर अर्धशब्द से रोया और छींक भी किया, घर के उत्तरभाग में पुराना सूतिकास्थान। ५। १३। २७। ३६। ५७। ६३। ८७– इन कष्टकारक वर्षों से बचे, तो ९५ वर्ष जीवे। कष्टकारक वर्षों के शुरु में शिवार्चन, मृतसंजीवनी आदि का जाप रखे।

कुम्भ–माता का सिर पश्चिम को; जीर्ण, धुम्रवर्ण वा कुरूप वस्त्र, मधुर–शीत शाकादि का भोजन, कष्ट अधिक, जन्मसमय पास स्त्रियां ४, दो स्त्री पीछे से आईं, उन में एक स्त्री गर्भिणी भी हो, दीपक स्वास्थान में टिका रहा, बालक जन्मोत्तर अर्द्धशब्द से रोया, वामांग में कोई चिह्न भी हो, घर के उत्तरभाग में सूतिका–गृह। २। २८। ३३। ४८। ६४– इन कष्टकारक वर्षों के प्रारम्भ में तुलादान, गोदान, मृत्युञ्जयजप हितकारक है। इन वर्षों से बचे तो ९० वर्ष जीवे।

मीन– माता का सिर उत्तर में, पीत या मलिन वस्त्र, विचित्र अल्प भोजन, जन्मसमय स्त्री २ या ५, दीपक हाथ में उठाया व जलाया गया था, बालक जन्मोत्तर देरी से रोया, घर के ईशान में सूतिका–स्थान। १। ८। १३। ३६। ४८– इन कष्टकारक वर्षों के प्रारम्भ में ग्रह–शान्ति–हवन, मृतसञ्जीवनीमन्त्र का जप कराना श्रेष्ठ है। यदि इन वर्षों से बचे तो ८३ वर्ष जीवे। स्मरण रहे–अधिकांश जिस लग्न के लक्षण मिलें – वही बालक का जन्मलग्न जानना चाहिए, क्योंकि यह साधारण लग्न के फल बलाबल के कारण सभी नहीं मिल सकते।

पितृपरोक्ष जन्मज्ञान– (१) जन्मलग्न को चन्द्रमा न देखे, (२) बुध–शुक्र के मध्य में चन्द्रमा हो, (३) लग्न में शनि चन्द्रमा से अदृष्ट हो, (४) भौम सप्तम, चन्द्रमा लग्न को न देखता हो– इन चारों योगों में से एक भी योग में उत्पन्न हुए बालक का पिता के परोक्ष में जन्म कहना चाहिए।

जन्मकुण्डली में दिशाज्ञान– *प्रथम भाव पूर्व, द्वितीय–तृतीय ईशान, चतुर्थ उत्तर, पञ्चम–षष्ठ वायव्य, सप्तम पश्चिम, अष्टम–नवम नैर्ऋत्य, दशम दक्षिण, एकादश तथा द्वादश भाव को आग्नेय समझना चाहिए।*

प्रसूतिस्थान से पाकशालादि का विचार

जन्मकुण्डली में सूर्य, मंगल जिस दिशा में हों, वहां अग्निस्थान (पाकगृह) जानना चाहिए। इसी तरह चन्द्रमा से जलस्थान, बुध से भण्डार, गुरु से धनस्थान, शुक्र से देवस्थान और शनि से अशुभ मैला स्थान जानना चाहिए। दोहा– लग्ननाथ जो केन्द्र में तीन दिशा को द्वार। वा लग्न दिशि जानिए कहत बुद्धि आगार।। केन्द्र (१।४।७।१०) स्थान में एक से अधिक ग्रह हों तो उनमें, जो बली (स्वराशि, मित्रोच्च, व मूलत्रिकोण राशि का) केन्द्रस्थान में स्वमित्र, शुभ के नवांश में स्थित ग्रह हो, उसकी दिशा में अथवा लग्नपति की दिशा में सूतिकागृह का द्वार होता है।

ग्रहों की दिशा–सूर्य की पूर्व, चन्द्र की वायव्य, भौम की दक्षिण, बुध की उत्तर, गुरु की ईशान, शुक्र की आग्नेय, शनि की पश्चिम और राहु, केतु की नैर्ऋत्य।

चन्द्रात्तैलज्ञानम्– चन्द्रमा से दीप के तैल का ज्ञान होता है, जैसे रात्रि का जन्म है और जन्मकाल पर चन्द्रमा के कम अंश व्यतीत हुए हैं, तो दीपक में तैल ज़्यादा कहना। यदि चन्द्रमा आधी राशि भोग कर चुका हो, तो दीपक में आधा तैल कहें। यदि चन्द्रमा शीघ्र ही दूसरी राशि पर बदलने वाला हो तो बहुत ही कम तैल कहना।

सो०– तनुस्थान शशि जाई, वा शशि षष्ठे भवन में, शिशुजन्म तब आई, तब कही दीपकतैल नहीं। सित–शनि दशमें धाम, पंचम तनुपै चन्द्रमा, शिशुजन्म में तब वाम, दीपकतैल सौं युक्त कहि।

लग्नाद्दीपवर्तिज्ञानम्– जन्मलग्न के कम अंश हों तो बड़ी बत्ती कहें, अधिक अंश हों तो छोटी कहें।

चन्द्रलग्नांतर्गतैर्ग्रहैःस्युरुपसूतिकाः– यदि लग्न की निर्बलता के कारण लग्न फलानुसार उपसूतिका का पूरा पता न लगे तो जन्मकाल में लग्न से चन्द्रपर्यन्त जितने ग्रह हों, उतनी ही उपसूतिका कहना। परन्तु जब कोई ग्रह चन्द्रमा के साथ हो तो उसके अंश देखें। यदि उसके अंश चन्द्रमा से कम हों तो उसकी गणना करें, अन्यथा उसे नहीं जोड़ें। इस प्रकार जो ग्रह लग्न में हो और उसके अंश लग्न से अधिक हों तब ही उसकी संख्या जोड़ें, अन्यथा नहीं जोड़ें। लग्न–चन्द्रांतर्गत कोई ग्रह वक्र या उच्च का हो तो तीन गुणा करें और स्वराशि, स्वनवमांश, स्वद्रेष्काण में हो तो द्विगुण करें, इसी प्रकार जितने ग्रह नीच राशि के, अस्त होवें, उनका आधा करके उपसूतिकाओं में जोड़ने से ठीक उपसूतिका स्त्रियों की संख्या का ज्ञान होगा। इसमें भी विशेष यह ध्यान रखने योग्य है, कि– वह लग्न, चन्द्रांतर्गत ग्रह लग्न के भोगांश से सप्तमभावपर्यन्त होवे तो सूतिकागृह से बाहर समीप में, और सप्तमभाव से लग्न के भुक्तांशपर्यन्त हों तो सूतिका के समीप में अन्दर जानना चाहिए। उन ग्रहों में जो शुभ ग्रह वहां हों तो, धर्मशील, सौभाग्यवती स्त्रियां कहें, अशुभ ग्रहों से विधवा, दुश्चरित्रा कहें।

शय्या–शिर व पादविचार

"लग्नदिशि शय्या शिरस्त्रिषट्क्रान्त्येषु पादाः।" लग्न की दिशा की तरफ पलंग का सिरहाना कहें। अर्थात् १। २ लग्न में पूर्व, ३ में अग्निकोण, ४। ५ में दक्षिण, ६ में नैर्ऋत्य, ७। ८ में पश्चिम, ९ में वायव्यकोण, १०। ११ में उत्तर और १२ लग्न में ईशान कोण की तरफ जानें। तीसरा, छठा, नौवां, बारहवां स्थान पाये जानना चाहिए। इन स्थानों में से जिन स्थानों में पाप ग्रह हों, वहां सूतिका के पलंग का पावा फटा, टूटा समझना चाहिए।

दो०– मीन–मिथुन–सिंह–तुला–मेष होय तत्काल।
अन्तरिक्ष भयो बालक, शेषे भूमि विशाल।।

अथचिह्नज्ञानम्– दोहा–षट्त्रिकोण वा लग्न रवि बुध भाषे घरि ध्यान। वामे कुछ लहसन अहै गर्गवचन परमाण।। भानु तथा सौरी तनधन कुंज कण्टक चन्द। बालक के षट् अंगुली भाषत कविकुलवृन्द। तनु स्थान में शुक्र हो अष्टम जावे राहु। वामकर्ण वा मस्तके अवश चिह्न दरशाह।। सुहृद भाव में कवि तव भौम वा सौरी लग्न। वामपाद के चिह्न को भाषत ज्योतिषमग्न।। नौमे पांचे भृगु बसे तनु व चौथे मन्द। मृत्यु जावे बुध गुरु उदरे चिह्न भणंद।"

प्रसवकष्ट दूर हो– प्रसवकाल से पहले शुक्लपक्ष की चतुर्दशी को प्रातः सूर्योदय से पहले सहदेवी या अपामार्ग (पुठकण्डा) की जड़ें लाकर, घृतयुक्त गुग्गुल की धूनी देकर कटि में बांधे और साथ ही "ॐ मुक्ताः आशा विपाशाश्च मुक्ताः सूर्येण रश्मयः। मुक्ताः सार्वभयाद् गर्भमेहि माचिर–माचिर स्वाहा।।"– इस मन्त्र से सात बार शुद्ध जल अभिमन्त्रित करके गर्भिणी स्त्री को पिलावे तो सुख से शीघ्र ही प्रसव होगा। अगर तीस का यंत्र भी अनार की कलम से कांसे की थाली में लिख, धोकर पिला देवें तो गर्भिणी को कोई भय न होवे, बच्चा बिना कष्ट पैदा होवे। स्मरण रहे कि– पहले उपरोक्त मंत्र तथा यन्त्र ग्रहण के समय या दीपमाला की रात्रि को मन्त्र का जाप करके तथा यन्त्र को लिखकर सिद्ध कर लें, तब कष्ट को मिटाता है।

बालक के लिए अरिष्ट

दो॰– "घूनाष्टमतनु पाप खग, बरहै शशि जो खीन। कण्टक शुभ खग ना बसै, वेगि ताहियमलीन।। बसैचन्द्रा द्वादसे अष्टभवन दो पाप। एक मास में शिशु मरे मातु–पिता संताप।। लग्नाष्टम शशि राहुयुत जन्मसमय जो पाप। एक मास में शिशु मरे मातु–पिता संताप।। लग्नाष्टम शशि राहुयुत जन्मसमय जो पाव। बालक दशवासर जिये कहत बुद्धि गुण भाव।।"

अथकाणयोगः– "तनु धन व्ययपतियुक्त भृगु आई बसै त्रिकधाम। वा शशि धन कवि पाप युत, ताहि नेत्र बेकाम। सार्कशुक्र तनुनाथयुक्त भवन बसै त्रिक जाय। जन्म अन्ध यह योग है भाषत बुध समुदाय।। तात मात भ्राता तनय मातुल त्रिकघर नाथ।। चन्द्र भौम जो द्वादशे वाम नैन की हान।। भानु राहु दहनों नयन, बुधजन कहत बखान।।"

मूक योगः– "पञ्चमेश गुरुयुक्त त्रिक मूक बाल तब होय। जौ न भौमपतियुक्त गुरु त्रिकहि मूक कहि सोय।। शुक्र त्रिके गुरु सिंह अज दशम भानु कुज वास। मूक होय संशय नहीं बुधजन करत प्रकाश।।"

दुःखदयोग–रिपु मृत्यु द्वादश गेह में पापयुक्त लग्नेश। जन्मसमय जाके परे ताको अंग कलेश।। पापयुक्त तनुभवन में रिपु मृत्युप के ईश। यथा जोग जाके परे तनु मुख विश्वाबीस।। पापग्रहयुत लग्नपति परै लग्न में आय। वीर्यहीन नर होय तो अधिक व्याधि रुजताय।।

बन्धनयोग– क्रूर रहै धन नवम व्यय और पञ्चम आगार। सो नर सूर कसूर करि निवसै कारागार।।

सर्पवेष्टितयोग– यदि अष्टमेश लग्न में राहुसहित हो तो बालक सर्पवेष्टित अर्थात् सर्प जैसे नाल से वेष्टित पैदा होता है।

यमल जन्मयोग–चतुष्पद राशि (मेष, वृष, सिंह, मकर का पूर्वार्द्ध और धनु के

उत्तरार्द्ध) का सूर्य होवे, शेष ग्रह बलवान् होकर द्विस्वभावराशि के लग्न में स्थित हों तो यमल अर्थात् दो बच्चों का इकट्ठा जन्म कहें। अथवा आधानलग्न (गर्भ वाले दिन का लग्न) का स्वामी लग्न में हो तो यमल का जन्म होता है।

माता बच्चे को त्याग दे– शनि, मंगल से ५/७/९ स्थान में चन्द्रमा हो तो माता बालक को त्याग दे, यदि गुरु देखता हो तो त्याग देने पर भी दीर्घायु हो।

मृत्यु–समय–विचार – जिन अरिष्ट योगों में मरणकाल नहीं कहा गया, उन अरिष्ट योगकारक ग्रहों में जो ग्रह बली हो, वह जन्मकाल में जिस राशि में स्थित हो उस राशि में जब चन्द्रमा आता है, तब मृत्यु कहें। अथवा– जन्मकाल में जिस राशि में चन्द्रमा स्थित हो, जब फिर उसी राशि में चन्द्रमा आता है, तब मृत्यु होनी बताएं। अथवा चन्द्रमा जब लग्नराशि में आता है, तब मृत्यु का होना कहें। अथवा वर्ष के भीतर जब जिस योगयुक्त स्थान में जाकर चन्द्रमा बली हो और पापग्रहों द्वारा देखा जाता हो, तब मृत्यु कहनी चाहिए। किन्तु जब तक आयु का विचार न हो सके, तब तक अन्य विचार करना निरर्थक है, इसलिए आयु का प्रथम विचार करें, फिर मृत्यु कहें।

सुखदयोग – अंगधीश निज लग्न में बुध गुरु कवि के संग। या केन्द्र गृह दो परे तो जानो सुख संग।। जन्मलग्न में उच्च ग्रह जो काहु के होय। मित्रदृष्टि ता पर परे सर्वसुखी नर होय।।

क्लीब (नपुंसक) योगः – दशम भवन भृगु मन्द दोउ क्लीब योग तब जान। शुक्रभवन से रिष्फ षट् मन्द बसे क्लिब भान।।

कुष्ठयोग :– लग्नप बुध कुज शशियुते राहुयुक्त या केतु। श्वेतकुष्ठ को योग यह वरणत गुणी सचेतु।। भौम भास्कर मन्दयुक्त रक्तकृष्ण कह कुष्ठ। लग्नाधिप रविसाथ त्रिक तापगण्ड अतिरुष्ट।। जलजगंडयुत, चन्द जो ग्रन्थिगंड कुजसाथ। पित्त रोग तब जानियो बुध त्रिकयुत तनुनाथ। आमरोग गुरुयुक्त त्रिक क्षयोरोग भगसून। यमतम शिखि वा युक्त त्रिक, दिन प्रति रुजि कहि दून।।

केमद्रुम योग :– आगे–पीछे चन्द्र के जो ना परै ग्रह कोय। केमद्रुम यह योग है सब धन डारे खोय।। उच्च चन्द्र शुभयुक्त दृग् केन्द्रधाम में होय। तब केमद्रुम शुभ कहे दोष न मानो कोय।।

स्त्रीजातक

क्रूरलग्नयुक्त क्रूर जो, स्वामी दृष्टि नहीं होय। सो कन्या कुल गरल है मूलि न व्याहेउ कोय।। जाके कुज दशम बसै ऋणी होय पति तासु। लग्न राहु शनि सातवें पति जीवे नहीं जासु। क्रूरयुक्त लग्नेश जो पापग्रहों के बीच। सो कन्या व्यभिचारिणी बुधवर कहै कुज नीच। राहु शुक्र जो लग्न में कन्या को पति और। पापदृष्टि शनि सातवें कन्या वास कुठौर। लग्न बीच शनि कुज तमसि निर्धन स्वेच्छाचारि। सप्तम कुज राण्ड कहै पति को तजि तमारि। छटे आठवें चन्द्र जो क्रूर पर निज अङ्ग। भौम आठवें भवन में सो पति करै है भंग।। राहु सातवें लग्न कुज कंटक शुभ सो हीन। ताको पति जीवित रहे वर्ष दो या तीन।। द्वादशाष्ट कुज क्रूरयुत राहु बसै त्रिकधाम। राण्ड होय कुछ दिवस में कहत गणक गुणग्राम।। पापग्रहों के बीच में लग्न होय वा चन्द। सो त्रिय नासे कुलो दुवो भाषत कविकुलवृन्द।। सप्तम भृगु जाके बसै सो कुल दोषी नारि। रूपवती तनु भृग बसै बुधजन कहत विचारि।

वैधव्य–विषकन्यायोग :– चौ.–रविवार द्वितीया जो होय। आश्लेषा ताहि दिन में जोय।। १ ।। कृत्तिका होय शनिश्चर वार–साते तिथि को करो विचार ।। २ ।। होय शतमिषा मंगलवार। कहो द्वादशी तिथि निर्धार।। ३।। इन योगन में कन्या होय। निश्चय विधवा जान सोय।।४।। जन्मलग्न द्वै शुभग्रह होय। एक पाप ग्रह नभ (१०) में जोय ।।५।। शत्रु क्षेत्र में द्वै ग्रैह मानो। ता कन्या को विधवा जानो।। ६।। अश्लेषा द्वितीया को होय। मंदवारयुत लीजो जोय।।७।। परे शतमिषा मंगलवार। साते तिथि लीजो निर्धार ।। ८।। रविवार द्वादशी जो होय। नक्षत्र विशाखा जानो होय ।। ९।। ऐसो योग लखी जो परै। तो कन्या को विधवा करै ।। १०।। दो0– धर्मसदन में भूमिसुत जन्मसदन शनि जान। सूर्य होत सुतसदन में कन्या विधवा मान।। ११।।

वैधव्य–विषकन्याभंगयोग :– जन्मलग्न या चन्द्र ते शुभग्रह सप्तम होय। अथवा सप्तम लग्नपति सुभगा कन्या होय।।

काकवन्ध्यादि योग :– ज्ञे अष्टमे काकबन्ध्यामन्दार्कावष्टमे बन्ध्या। अष्टमे जीवे वा शुक्रे नष्टगर्भा वा मृतापत्या।।

स्त्रीणां राजयोगाः – चौपाई– केन्द्रधाम नभगा शुभ होई नरतनु पाय कलत्र समोई। रानी होय बहुत धन ताके मन प्रसन्न होई है सुत वाके–चन्द्रज तुग बसे तनु जाई लाभ धन गुरु आवे धाई। सो तिय होय नृपति की नारी जन विख्यात होय सुकुमारी। जो षड्वर्ग शुद्ध गुरु होई शशि दृग् केन्द्र में भवन में होई।। ऐसे योग जन्म सुकुमारी रानी होय सदन धनभारी।। **दोहा–** कर्क चन्द्रमा सातवें जीवदृष्टि परिपूर। पुत्र पौत्र धन भूरयुत ताकौ पति नृप शूर।। लाभभवन सित चन्द्र जो सोमज सप्तम भौम। सुरगुर परिपूर्ण लखे रानी होई है तौन।।

स्त्रीणां पुत्रभावविचार :– पञ्चमे शुभदृष्टे च पञ्चमाधिपतावपि। केन्द्रकोणे तदा नारी बहुपुत्रवती भवेत्।।

अशुभ प्रसवमास :– कार्तिक में स्त्री, भाद्रपद में गौ, मार्गशीर्ष में हथनी, श्रावण में गधी व घोड़ी, माघ में भैंस, ज्येष्ठ में बिल्ली, वैशाख में ऊँटनी, पौष में बकरी, चैत्र में कुतिया के बच्चे जन्में तो 6 मास में पिता व घरवाले की मृत्यु अथवा महाभय होता है। माघ में बुधवार को भैंस, श्रावण में दिन के समय घोड़ी प्रसूति हो तो महाभय शीघ्र हो। स्मरण रहे कि– यहां सर्वत्र सौरमासग्रहण है। प्रसूता गौ आदि का तत्क्षण दानकर, व्याहृतिमन्त्रों से घृतयुक्त श्वेत सरसों का हवन करें, बच्या जन्मे तो कार्तिकशान्ति करने से शुभ होता है।

त्रिखलजन्मफल :– यदि तीन कन्याओं के पश्चात् पुत्रोत्पत्ति हो अथवा तीन पुत्रों के पश्चात कन्या का जन्म हो तो त्रिखल नामक दोष के कारण कन्या माता को, लड़का पिता को भय, धनहानि आदि कष्टप्रद होते हैं। कृपणता छोड़कर, त्रिखलशान्ति करें तो शुभ होता है। तीन अन्न, तीन वस्त्र, तीन धातु (सोना, चान्दी, तांबा) दान करें।

बालक की दन्तोत्पत्ति का फल

बालक के जन्मते ही दान्त निकले हों तो माता–पिता को अरिष्ट, ऊपर की पंक्ति में दांत से युक्त जन्म ले तो अधिक अरिष्ट, प्रथम–बार ऊपर की पंक्ति में दांत निकले तो मातृपक्ष को भय हो, मामा शान्ति करे। पहले मास में दांत निकले तो शरीर नष्ट, द्वितीय में छोटा भ्राता नष्ट, तृतीय में भगिनी नष्ट, चतुर्थ में भाई नष्ट, पाचवें में ज्येष्ठबन्धु नष्ट, छठे में बहुभोग, सातवें में पितृसुख, आठवें में पुष्टि, ९वें में धनी, १०वें में सुख, ११वें में सुख, १२वें में निकले तो धनी हो।

अथैकनक्षत्रजनन–फलम् :– वृद्धगर्ग कहते हैं, कि यदि भ्राताओं व पिता–पुत्र, माता वा कन्या का एक नक्षत्र हो तो दोनों की अथवा एक की अवश्य मृत्यु होती है। यहां स्वर्णदान से कल्याण होता है।

मास अथवा २७ दिन तक पिता को दर्शन नहीं करना

मे जोय।। १ ।। कृत्तिका होय शनिश्चर वार—साते तिथि को करो विचार ।। २ ।। होय शतभिषा | यहां स्वर्णदान से कल्याण होता है।

जन्मकुण्डली से विशेष विचार

लघुभ्राता का जन्मसमय जानना :– (१) जन्मलग्न स्पष्ट में दशम भाव का स्पष्ट जोड़ें, जो राशि हो उस पर जब गोचर में गुरु आए तो भाई या बहन का जन्म होता है। (२) यदि भ्रातृ–प्रतिबन्धक योग न हो तो तृतीयेश, तृतयस्थ ग्रह की दशा में छोटे भ्राता का जन्म होता है।

भ्राता के कष्ट (खतरे) का समय जानना

(१) जन्मलग्न के स्पष्ट में से तृतीयेश के स्पष्ट को घटाएं, शेष राश्यादि का जो नक्षत्र हो उस नक्षत्र पर जब गोचर में शनि आता है, तब भाई या बहन को कष्ट होता है।

(२) लग्नेशस्पष्ट में से तृतीयेशस्पष्ट घटाएं, शेष में से दशमेशस्पष्ट और मंगल स्पष्ट घटाएं– शेष राशि में जब गोचर का शनि आता है तब, भ्रातृकष्ट होता है।

(३) लग्नेश, तृतीयेश, दशमेश, भौम– इन चारों स्पष्टों को जोड़कर, जो राश्यादि हो उसके नवांश राशि में जब गोचर का शनि होता है, उस काल में भ्रातृकष्ट होता है।

(४) लग्नेश, तृतीयेश, दशमेश और भौम को जोड़कर, जो राश्यादि हो उसके द्रेष्काणराशि में जब गोचर का गुरु होता है, तब भ्रातृकष्ट जानिए।

माता की मृत्यु का समय जानना :– जन्म के सूर्य में से चन्द्रस्पष्ट को घटाएं, शेष की राशि में या त्रिकोणराशि में या उस शेष राशि के नवांशराशि में जब गोचर का शनि व गुरु होगा, तब माता की मृत्यु का समय जानें।

अथ कन्याजन्मनि मूलचक्रम्

स्थानम	शीर्षे	मुखे	कण्ठे	हृदये	बाह्वोः	हस्ते	गुह्योः	जंघाः	जान्वोः	पादे
घटी	४	६	५	५	५	४	९	४	४	१०
फलम्	पशुना.	धनना.	धनला.	कुटिला	धनला.	दयावती	कामिनी	मातृना.	भ्रातृना.	वैधव्य

अथ कन्याजन्मनि नक्षत्रफलम्

जन्म नक्षत्र	मूल (१/२/३ च.)	आश्लेषा (२/३/४ च.)	ज्येष्ठा	विशाखा (४ च.)
फलम्	ससुरहानिः	सासनाशः	ज्येष्ठनाशः	देवरनाशः

सुतः सुता वा नियतं श्वशुरं हन्ति मूलजः। तदन्त्यपादजो नैव तथाश्लेषाद्यपादजः।।

तिथिगण्डान्त– पूर्णा तिथियों के अन्त की ७ घड़ी, नन्दा तिथियों की शुरू की दो–दो घड़ी तिथिगण्डान्त होता है। यह गण्डान्त जन्म, यात्रा, विवाह में भयप्रद होता है।

अथ गण्डमूलनक्षत्राणि

अश्विनी	आश्लेषा	मघा	ज्येष्ठा	मूल	रेवती

कोष्ठकोक्त ये छः नक्षत्र गण्डमूल कहलाते हैं। इन नक्षत्रों में उत्पन्न होने वाला बालक अथवा बालिका माता, पिता, कुल और अपने शरीर का नाश करने वाला होता है। यदि अपना शरीर नष्ट होने से बच जाए, तो धन तथा घोड़ों का स्वामी होता है। गण्डमूल में उत्पन्न पुत्र का छः मास अथवा २७ दिन तक पिता को दर्शन नहीं करना चाहिए; तत्पश्चात् शान्ति करके विधि से मुख देखना कल्याणप्रद है।

मूल और आश्लेषा नक्षत्र के चरणों में जन्मफल

मूल पाद	फल	आश्लेषा पाद	फल
१	पितृनाश	४	पितृनाश
२	मातृनाश	३	मातृनाश
३	धननाश	२	धननाश
४	शान्ति से सुख	१	शान्ति से सुख

अथ मूल पुरुषचक्रम्

स्थानं	मूर्ध्नि	मुखे	स्कन्धे	बाह्वोः	हस्ते	हृदये	नाभौ	गुह्योः	जान्वोः	पादयोः
घटी	५	७	४	८	४	९	२	१०	६	६
फलम्	राजा	पि. मृ.	बली	बली	दानी	मन्त्री	ज्ञानी	कामी	मतिमा.	मतिमा.

मूलजनने वृक्षविभागफलम्

विभाग	मूल	स्तम्भ	त्वचा	शाखा	पत्र	पुष्प	फल	शिखा
घटी	७	८	१०	११	१२	५	४	३
फल	मूलनाश	वंशनाश	मातृ–क्लेश	मातुल–नाश	मन्त्री–पद	मन्त्री–पद	विपुल–लाभ	अल्प–जीवन

अथ मूलनिवासचक्रम्

जन्ममासानुसारेण	वै. ज्ये. मार्ग. फा.	चैत्र, श्रा. का. पौ.	आषा. आश्वि. मा. मा.
जन्मलग्नानुसारेण	२/५/८/११	३/६/९/१२	१/४/७/१०
मूलनिवासस्थानम्	पाताले	भूमौ	स्वर्गे
फलम्	शुभम्	कुलनाशः	शुभम्

मूल का निवास मास व लग्नानुसार– दोनों प्रकार से भूमि पर आए तो महाभयप्रद होता है। यहां अन्य एक प्रकार से स्वल्पभय होता है। तृतीया, दशमी, षष्ठी–शनि–भौम–समन्विता। शुक्ला चतुर्दशी मूले जातःसंहरते कुलम्।। यत्र गण्डे क्रूरयुते महादोषकरो भवेत्। शुभग्रहसमायोगे ईषच्छुभकरं भवेत्।। दिनक्षये व्यतीपाते व्याघाते विष्टिवैधृतौ। शूले गण्डातिगंडे च परिघे यमघण्टके।। ब्रह्मदण्डे मृत्युयोगे प्राप्ते गंडदिने शिशुः। जातो हन्ति कुलं सर्वं तस्मात् कुर्वीत शान्तिकम्।। यथा सर्पविषं चैव मन्त्रश्रवणाद्विलीयते। तथैव गंडदोषोऽपि विधानेन विलीयते।। रत्नैः शतौषधीमूलैः सप्तमृद्भिः प्रपूर्यते। शतच्छिद्रं घटं तस्मान्निसृतेन जलेन हि।। बालकस्यापि तत्स्नाने विप्रैः सम्पादिते सति। जपहोमप्रदानेन कृते स्यान्मंगलं ध्रुवम्।। विरुद्धावयवे मूले विधिरेव स्मृतो बुधैः। मुनीनां वचनं सत्यं मन्तव्यं क्षेममीप्सुभिः।।

अथाभुक्तमूलविचारः– ज्येष्ठा नक्षत्र की अन्तिम चार घटी (किसी के मत से एक घटी) एवं मूल नक्षत्र की आदि की चार घटी विशेष आधी, अभुक्तमूल कहलाता है।

इस समय जो बच्चा जन्म ले, उसका परित्याग कर दें या आठ वर्ष; असमर्थ हों तो ६ मास अथवा २७ दिन तक पिता मुख न देखे।

धनगंडे दरिद्रोऽपि शांतिं कुर्यात्स्वशक्तितः। अंन्यथा नाशमाप्नोति चामुक्तर्क्षे विशेषतः।।

गण्डमूलोत्पन्न बालक का जन्मकाल फल

समय	प्रातः	दिन में	रात्रि में	सन्ध्या में
नक्षत्र	सभी गण्डमूल नक्षत्र	मूल, ज्ये.	मघा, आश्ले.	रे. अश्वि.
फल	पशु हानि	पिता को भय	माता को भय	शरीर को भय

अथ पुरुष जन्मकुण्डल्यां भावस्थ–ग्रह फलानि

भाव		सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
तनु	1	अंगपीड़ा	कान्तिसुख	रक्तकोप	सुखी	विद्वान्	सुखी	दुःखी	रोगी	सकाम
धन	2	धननाश	सम्पत्तिवान्	ऋणी	धनी,गुणी	धनागम	धनी	धनहानि	निर्धन	खल
सहज	3	नीरोगी	कीर्तिमान्	विक्रमी	अरिमर्दन	पापी	पापी	पराक्रमी	विक्रमी	शूर
सुहृत्	4	दुःखी	सुखभोगी	दुःखी	सुखी	सुखी	सुखी	दुःखी	मातृहानि	दुःखी
सुत	5	सुतहानि	धनी,पुत्रवान्	पुत्रहीन	अल्पपुत्र	प्रतापी	धीमान्	पुत्रहीन	कुमति	मूर्ख
शत्रु	6	शत्रुनाश	अल्पायु	शत्रुनाश	रोगी	कामी	रोगी	शत्रुजित्	सबल	सबल
स्त्री	7	स्त्रीदुष्टा	सुभार्यावान्	स्त्रीनाश	धर्मज्ञ	सुभार्या	कामी	स्त्रीकुलटा	स्त्रीरोगी	स्त्रीहानि
मृत्यु	8	अल्पायु	योगी	शरीरपीड़ा	गुणी	नीचस्व	नीच	नेत्ररोगी	रोगी	क्लेशयुक्त
धर्म	9	दुष्टमति	धर्मात्मा	पापरत	सुखी	धार्मिक	तपस्वी	दुष्टबुद्धि	दैन्ययुक्त	पापी
कर्म	10	शूर	तेजयुक्त	तेजस्वी	कीर्तिमान्	सम्पत्तिवान्	संपत्ति	पराक्रमी	मानी	पितृहीन
लाभ	11	धनी	धनी	धनी	धनी	सुलाभ	सुमति	धनवान्	सुख्यात	धनी
व्यय	12	दुष्टस्वभाव	कामी	पतितदार	दरिद्र	खल	रोगी	दुःखी	पतित	दुर्जन

अथ स्त्रीजन्मकुण्डल्यां भावस्थ–ग्रहफलानि

भाव		सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
तनु	1	क्रोधिनी	गतायु	विधवा	सौभाग्या	सती	ससुखा	बन्ध्या	पुत्रहीना	दुःखिनी
धन	2	दरिद्रा	बहुधना	बन्ध्या	धनाढ्या	धनाढ्या	सुभगा	दुःखिनी	दरिद्रा	दुःखार्ता
सहज	3	सुसुता	सुखिनी	विसहजा	पुत्रवती	सुसहजा	धनाढ्या	सुदक्षा	सवित्ता	रोगिणी
सुहृत्	4	सपीड़ा	दुर्भगा	दुःखार्ता	सुगृहा	सुखिनी	सुखिनी	हृद्रोगा	रोगार्त्ता	मातृहानि
सुत	5	विपुत्रा	ससुखा	विपुत्रा	धीकांतियुता	सुगुणा	पुत्रवती	विपुत्रा	विपुत्रा	अपुत्रा
शत्रु	6	सुखिनी	सरोगा	अरोगा	सकोपा	सापदा	दरिद्रा	गुणज्ञा	सधना	धनयुता
पति	7	दुःखार्ता	पतिप्रिया	विधवा	पतिव्रता	कीर्तियुता	पतिप्रिया	विधवा	दुःखिता	विधवा
मृत्यु	8	विधवा	रोगिणी	विधर्मा	कृतघ्ना	सरोगा	विसुखा	दुःखिनी	विधवा	दुःखिनी
धर्म	9	धर्मज्ञा	सुखिनी	दुःखिनी	सुभोगा	पुत्राढ्या	धर्मरता	बन्ध्या	बन्ध्या	शोकयुक्ता
कर्म	10	सुकर्मा	धर्मज्ञा	कुपुत्रा	सत्कर्मा	साधवी	सधना	पापिनी	दुष्कर्मा	पापिनी
लाभ	11	सधना	गुणज्ञा	सुलाभा	पतिव्रता	सुपुत्रा	सुपुत्रा	सुलाभा	नीरोगा	सुभगा
व्यय	12	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

अश्विनीजातस्य फलम्–अश्विनी नक्षत्र के प्रथम चरण में जन्म हो तो पिता को भय, द्वितीय में सुखैश्वर्य, तृतीय में मन्त्रीतुल्य, चतुर्थ में नृपतिसमान होता है।

मघाफलम्– मघा के प्रथमचरण में जन्म हो तो माता या मातृपक्ष को हानि, दूसरे में पिता को भय, तीसरे में सुख, चतुर्थ चरण में धन, विद्यालाभ होंगे।

ज्येष्ठापादफलम्– प्रथम चरण में बड़े भाई को नेष्ट, द्वितीय में छोटे का नाश, तृतीय में माता का नाश, चतुर्थ में अपने बाप का नाश होता है। " ज्येष्ठाद्यपादःजो ज्येष्ठं हन्ति बालो न बालिका। न बालिका तु मूलर्क्षे मातरं पितरं तथा।"

रेवतीपादफलम् –रेवती के प्रथम चरण में जन्म हो तो नृपसमान, दूसरे में मंत्री या मुख्तार, तीसरे में सुख–सम्पत्तियुक्त, चतुर्थ चरण में अनेक कष्ट हों।

अथ मातृसुखनाश–योग– (१) पाप ग्रहयुक्त चन्द्रमा सातवें भाव में हो, (२) चन्द्रमा से सातवें पापयुक्त शुक्र हो, (३) पापग्रहों के बीच चन्द्रमा हो अथवा चन्द्रमा से चौथे–सातवें पापग्रह हो, (४) तीसरे अथवा सातवें स्थान में सूर्य और लग्न में मंगल हो, (५) चौथे भाव में शनि पापग्रहों से ही दृष्ट हो– इन पांचों में से एक भी योग मिले तो माता को भय हो, जप–दान करना चाहिए।

पितृनाशयोग– (१) सूर्य, मंगल दसवें वा नवम में गए हों, (२) दशमेश रवि, मंगल से युक्त हो, (३) शत्रुराशि का मंगल १०वें हो, (४) पापग्रह से युक्त सूर्य सातवें हो– इन चार योगों में से एक भी योग हो तो पिता को भय हो।

भ्रातृनाशयोग– भ्रातृ गृह को ईश जो भौम संग त्रिक होय। जाके ऐसे योग है भ्रातृहीन नर होय।।

सन्तानसुखनाशयोग– गुरु ते पंचम गेहपति, जाय परे त्रिकभाव। ऐसा योग जो लखि परे ताकि पुत्र अभाव। पुत्र धर्म अरु लग्नपति जाय परे त्रिकधाम। जन्म समय या योग ते सदा पुत्र की हान।

रोगिणी स्त्रीयोग– शुक्र और सूर्य सप्तम, पंचम और नवम में हों तो स्त्री प्रायः रोगयुक्त रहती है।

नीचयोग – सहज सप्तम धनसदन में क्रूर बसे खग आई। भवन पांचवें गुरु बसै नीच जाति मनसाई।। सिंहलग्न जन्मे शिशु सप्तम शनि विकराल। म्लेच्छ होय कुछ दिवस में यदपि ब्रह्म को बाल। जिनके बुध भग राहुसंग सप्तमभाव विराज। लहे सर्वदा राजसुख [illegible]

गोचरग्रहाणां द्वादशभाव–फलबोध–चक्रम्

भाव→ ग्रह↓	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
सूर्य	स्थाननाश	भय	श्रीप्राप्ति	मानभंग	दैन्य	विजय	यात्रा	पीड़ा	सुकृतिनाश	सिद्धि	धनलाभ	द्रव्यनाश
चन्द्र	अन्नलाभ	धननाश	सुख	रोग	कार्यनाश	धनलाभ	स्त्रीलाभ	रोग	धर्मलाभ	सुख	धनलाभ	धननाश
मंगल	शत्रुभीति	धननाश	धनलाभ	शत्रुभय	धननाश	धनलाभ	द्रव्यनाश	शत्रुभय	शत्रुभय	शोक	धनलाभ	धननाश
बुध	बन्धन	धनलाभ	शत्रुभय	पशुलाभ	सुख	स्थानलाभ	पीड़ा	धनलाभ	पीड़ा	सुख	धनलाभ	धननाश
गुरु	भय	धनलाभ	क्लेश	धननाश	सुख	शोक	राजमान	पीड़ा	सुख	दैन्य	धनलाभ	पीड़ा
शुक्र	शत्रुनाश	धनलाभ	सुख	धनलाभ	पुत्रलाभ	शत्रुभय	शोक	धनलाभ	वस्त्रलाभ	दुःख	धनलाभ	धनलाभ
शनि	भय	धननाश	ऐश्वर्य	शत्रुभय	पुत्रनाश	धनलाभ	दोष	पीड़ा	धर्मनाश	दौर्मनस्य	धनलाभ	धननाश
राहु	हानि	धननाश	धनलाभ	वैर	शोक	श्रीप्राप्ति	कलह	मृत्यु	दुःख	वैर	सुख	शोक
केतु	रोग	वैर	सुख	भय	सुख	धनलाभ	कलह	रोग	पाप	शोक	कीर्ति	शत्रुभय

अथग्रहाणामेक भोगफल–समयादि ज्ञानम्

ग्रहाः	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा. के.
एकार्थभोग	मास 1	दिन 2¼	मास 1½	मास 1	मास 12	मास 1	मास 30	मास 18
फलसमयः	आदौ	अन्ते	आदौ	सदा	मध्ये	मध्ये	अन्ते	अन्ते
गंतव्यराशेः प्राक्फलम्	मास 5	घटी 3	दिन 8	दिन 7	मास 2	दिन 7	मास 6	मास 3

अथ ग्रहतुष्ट्यर्थ धारणाय मणयः

सु.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
माणिक्यम्	मुक्ताफलम्	प्रवालम्	पन्ना	पुष्परागः	हीरा	नीलमः	गोमेदम्	रौप्यम्
विद्रुमम्	रौप्यम्	विद्रुमम्	सुवर्णम्	मुक्ताफलम्	लोहम्	वैडूर्यम्	लाजवर्तः	लाजवर्तः

जारजयोग भानुचन्द्रतनु ना लखै लग्नप लखै न लग्न। सो शिशु है पर पुरुष को भाषत ज्योतिषमग्न।। रवि कुज गुरु तिथि अष्टमी चौथ चतुर्दशी सार। तीन उत्तर जन्म में तब शिशु कहो परार।।

पूतनाग्रस्तलक्षण एवं शान्ति– बहुत मैले बिछौने पर अकेली जगह में छोटे बच्चे को सुला देने से पूतना नाम राक्षसी का उसमें प्रवेश होने से बच्चा बीमार हो जाता है। तब पूतना की बलि निकालने से अच्छा होता है। जब कभी बच्चा बैठे–बैठे गिर पड़े, या यूं मालूम हो कि–किसी के पीटने से गिरा है और मूर्छा आ गई है अथवा एकाएक कोई रोग हो गया है तब जानो, कि– उसे महा पूतना ने ग्रसा है। यदि कोई लाभादि के वश में आकर वनदेवता या नागदेवता का तिरस्कार कर दे तो उसके बालक में ऊर्ध्वपूतना प्रवेश कर लेती है। यदि कोई मनुष्य अपनी ऋतुस्नाता स्त्री का गमन करने के पश्चात् स्नान न करे या बिना ऋतु के संगम करके हाथ मुंह न धोवे और माता अपवित्र अवस्था में ही बालक के साथ सो जावे तो बालक्रांता नाम की राक्षसी का दोष होगा। बच्चे को इतर फुलेल और फूलमाला पहिनाकर बाहिर जाने से रेवती ग्रही का दोष होता है। सिर खुले, जूठे बाल को संध्या के समय सोने से भी रेवती का आवेश हो जाता है। संध्या के समय जमीन पर सोने से अथवा खेलने से बालक को पुष्य रेवती का दोष होता है। कदाचित् बालक खेलता–खेलता गिर जाए अथवा उसे उल्टी हो या हाथ–पांव नहीं धुले हों तब उसे शुष्क रेवती का आवेश होता है। जूठा खाने और देवता के स्थान पर मल–मूत्र करने से शकुनी ग्रही बालक को पकड़ लेती है। जो नित्यकर्म संध्या–वंदनादि नहीं करते या जो लोग पक्षियों को पालते हैं, जन्मान्तर में उनके बालकों पर शिशुमुण्डिका राक्षसी का दोष हो जाता है। फिर उसका पूजन और बलि, धूपादि दान करने से शान्ति होती है।

उद्वर्तनम्– दूर्वा, कुटकी, नीम के पत्ते, तज–इनका उबटना बालक के शरीर में मलकर पीछे पीपल के पत्ते, मुलट्ठी, लसूड़े के पत्ते– इनका काढ़ा बनाकर स्नान कराए, तो यह रोग दूर होगा।

चेष्टाः– जिस बालक के नखों और दांतों में विकार हो, नींद नहीं आए, डर लगे, मन में उद्वेग रहे, शरीर में दुर्गन्ध उठे, अनेक प्रकार की चेष्टा करे, बल अधिक हो जाए–उसे ग्रहाविष्ट जानना चाहिए

सर्वबालग्रह–शान्त्यर्थं देवालये ज्योतिर्दर्शनं निवासश्च तत्ररात्री – ''ॐ हिनस्ति दैत्यतेजांसि स्वनेनापूर्य या जगत्। सा घण्टा पातु नो देवि पापेभ्यो नः सुतानिव।।''– इत्यस्य जापः, ततोऽनेनैव मन्त्रेण सदीप दधिमाषान्नबलिदाने घण्टाबन्धने च सर्वबालग्रहशान्तिः।।

अथ बालरक्षाविधि (प्रयोगसारे)– यदि दुष्टदृष्टि (नज़रादि दोषों) के कारण बालक के शरीर में कोई रोग, कष्ट हो जाए तो– ''ॐ वासुदेवो जगन्नाथः पूतनातर्जनो हरिः। रक्षतु त्वरितं बालं मुञ्च मुञ्च कुमारकम्।। १।। कृष्ण रक्ष शिशुं शंख–मधुकैटभ–मर्दन। प्रातः–सङ्गव–मध्याह्न–सायाह्नेषु च सन्ध्ययोः।। २।। महानिशि सदा रक्ष कंसाराति निषूदन। यद्गोरजः पिशाचांश्च ग्रहान् मातृग्रहानपि।। ३।। बालग्रहान्विशेषेण छिन्धि छिन्धि महाभयान्। त्राहि त्राहि हरे नित्यं त्वद्रक्षाभूषितं शिशुम्।। ४।। – इन चारों मंत्रों से अभिमंत्रित की गई गौ के गोबर की शुद्ध भस्म को बालक के मस्तक, कण्ठ, हृदयादि अंगों में लगाने से बालक का कष्ट दूर होगा।

बाल कष्टावली चक्रम्

किस समय कौन पूतना ग्रस्त करती है	मूर्ति–निर्माणार्थ द्रव्य	पूजनद्रव्य	बलि–विधान व समय	स्नान, पूजा, मार्जनमंत्र	धूप
प्रथम दिन–मास–वर्ष में योगिनी	नदी के दोनों किनारों की मृत्तिका	श्वेतचन्दन, तिलक, श्वेतपुष्प, 5 रंग की झंडी 5, दीपक 5, आटे के सतिए 5, कपूर, लोहवान,	श्वेतभात, 5 पूर्ण पोली (सुहाली) 1 प्रहर दिन चढ़े पूर्व दिशा में चौरास्ते पर रखें,	ॐ ब्रह्माविष्णुश्च रुद्रश्च स्कन्दो वै श्रवणस्तथा। रक्षन्तु त्वरितं बालं मुञ्च मुञ्च कुमारकम्।।	राई, खस, आक के फूल, बिल्ली और मनुष्य के बाल, निम्बपत्र, गोघृत
द्वितीय दिन–मास–वर्ष में सुनन्दना	एक सेर चावलों का आटा	10 दीपक, 10 झण्डी, पुष्प, चावलों के आटे के सतिए 10,	भात एक सेर, आटे के पूड़े, मत्स्य व बकरे का मांस, संध्यासमय, पश्चिम दिशा में चौरास्ते पर रखें,	ॐ नमश्चामुण्डायै विच्चे ह्रां ह्रां ह्रीं ह्रीं हूं हूं स्थानाद्राज्ञया स्वाहा।	
तृतीय दिन–मास–वर्ष में पूतना	एक सेर चावलों का आटा	रक्तचन्दन, रक्तपुष्प, श्वेत–ध्वजा, दीपक 10, गेहूं के आटे के सतिए 10,	एक सेर लालभात, आधा सेर पूर्ण पौली, पश्चिम दिशा में किसी वृक्ष के नीचे रखें,	सुनन्दना विधानोक्त	लहसुन, गोश्रृंग, सांप की कांचली, नीम के पत्ते, पुरुष और बिल्ली के बाल, गोघृत।
चतुर्थ दिन–मास–वर्ष में मुख मंडिका	तिल–चूर्ण एक सेर	श्वेतपुष्प, श्वेतध्वजा 5, दीपक, मिल सके तो अर्जुन वृक्ष के पुष्प,	भात, सेर आटे के पूडे, आधा सेर पूर्ण पौली, सायं, पश्चिम दिशा में किसी वृक्ष के नीचे रखें,	सुनन्दना विधानोक्त	
पंचम दिन–मास–वर्ष में विडालिका	एक सेर चावलों का आटा	श्वेतचन्दन, श्वेतपुष्प, दीपक 5, श्वेत ध्वजा 5, गेहूं के आटे के सतिए,	श्वेत भात, 7 पूड़ियां, सायंकाल पश्चिम दिशा में वृक्ष के नीचे रखें,	ॐ भगवती ह्रीं ह्रीं ह्रीं हूं हूं मुञ्च रक्षां कुरु कुरु बलिं गृहाण अस्त्र ठः ठः चामुंडे सर्वारि चण्डिके ठः ठः स्वाहा।	
षष्ठ दिन–मास–वर्ष में षट्कारिका	नदी के दोनों किनारों की मिट्टी	श्वेतचन्दन, श्वेतपुष्प, दीपक 5, श्वेतध्वजा 5,	भात, 5 मिठाई, 5 सुहाली, 7 पूड़ियां, 1 प्रहर दिन चढ़े पूर्व में चौरास्ते पर रखें,	योगिनी विधानोक्त	कूठ, गुग्गुल, राई, हाथीदांत, घृत।
सप्तम दिन–मास–वर्ष में कालिका	चावल का आटा एक सेर	श्वेतचन्दन, श्वेतपुष्प, दीपक 5, श्वेतध्वजा 5,	भात, 7 पूड़ियां, सायंकाल पश्चिम में चौरास्ते पर मौन होकर रखें,	विडालिका विधानोक्त	
अष्टम दिन–मास–वर्ष में कामिनी	नदी के दोनों किनारों की मिट्टी	रक्तचन्दन, 5 रंग की झंडी 5, दीपक 5,	गेहूँ की रोटी, मसूर की दाल, हरासाग, छागमांस, संध्या मे चौरास्ते पर रखें,	विडालिका विधानोक्त	
नवम दिन–मास–वर्ष में मदना	एक सेर गेहू का आटा	चन्दन, पुष्प, 5 दीपक, 5 रंग की झंडी 5,	भात, मत्स्यमांस, पापड़ी, सुहाली, उत्तर में प्रातः चौरास्ते पर रखें	ॐ नमो भगवते वासुदेवाय कृष्णाय मंडलबलिमादाय हन् हन् हुं फट् स्वाहा।	लहसुन, सांप की कांचली, नीम के पत्ते, पुरुष और बिल्ली के बाल, राई, गोघृत।
दशम दिन–मास–वर्ष में रेवती	एक सेर गेहू का आटा	रक्तपुष्प, 25 झण्डी, 25 दीपक, 25 सतिए,	गुड के घी भुने चावल, गौघृत, सायं, दक्षिण में चौरास्ते पर रखें,	ॐ नमो भगवते वैश्वदेवाय हन् हु फट् स्वाहा।	
एकादश दिन–मास–वर्ष में सुदर्शना	काले उड़दों का आटा एक सेर	श्वेतपुष्प, 25 दीपक, 25 सफेद झण्डी, 25 आटे के सतिए,	श्वेतभात, 7 पूडे, सुहाली 7, सायं व प्रातः दक्षिण में चौरास्ते पर रखें,	ॐ नमो भगवते रावणाय चन्द्रहास, वज्रहस्ताय ज्वल ज्वल दुष्ट ग्रहादीन् ॐ ह्रीं फट् स्वाहा।	
द्वादश दिन–मास–वर्ष में अद्भुता	चावलों का आटा एक सेर	13 दीपक, 13 झण्डी, 13 सतिए आटे के,	सुहाली, पूडे 7, पूड़ियां 7, मत्स्य मांस, पापडी, सायंकाल दक्षिण में चौरास्ते पर रखें	ॐ नमो नारायणाय ज्वलद्धस्ताय हन् हन् शोषय शोषय मर्दय मर्दय तापय तापय हैं हैं हैं हन हन	

अथ बालपूतना–विधान

यहां लिखे बाल–कष्टावली चक्रोक्त हर एक बलिदान के पीछे मार्जन शिखास्थान– स्पर्श निम्न–लिखित मन्त्रों द्वारा एक ही प्रकार से होता है, बलिदान–विधि तीन दिन निरंतर करें। चौथे दिन पलाश, अश्वत्थ, बिल्व, गूलर, मिल सके तो कपित्थ– इनके पत्रों को उबालकर बालक को मंत्र–पाठपूर्वक स्नान करावें। तदनन्तर कल्याणार्थ यथाशक्ति भिक्षुकों को तथा कुत्ते आदि जीवों को मिष्ठान भोजन कराएं। तदनन्तर "ओं द्यौः शांतिरन्तरिक्ष............" इत्यादि शातिमंत्रों व मार्जनमंत्रों से कुशा से छींटे देने के अनन्तर बालक की शिखा या शिखास्थान स्पर्शपूर्वक यह मंत्र पढ़ें– " ओं रक्ष रक्ष महादेव नीलग्रीव जटाधर। ग्रहैस्तु सहितो रक्ष मुञ्च मुञ्च कुमारकम्।।

"ओं सर्वमातर इमं ग्रहं संहरंतु हुं रोदय–रोदय, स्फोटय –स्फोटय स्वाहा। गर्ज–गर्ज सः गृहाण–गृहाण आमर्दय– आमर्दय ह्रीम्–ह्रीम् हन् हन् एवं सिद्धिरुद्रो ज्ञापय स्वाहा।।"

अथ नक्षत्र–कष्टावली

ज्वालामुखी योग

अथ नक्षत्र–कष्टावली

रोग–नक्षत्र	रोगशान्त्यर्थ दान	नक्षत्रपादवशाद् रोगदिन–संख्या				रोगशान्त्यर्थ जपनीय मन्त्र	रोगनिवृत्त्यर्थ बलि
		1	2	3	4		
अश्विनी	भोजनदान	9	11	1	20	मृत्युञ्जयमंत्र	घोड़ी के मुख में सात व्रीही धान्य दें।
भरणी	गो–अन्नादि दान	0	80	40	11	यमायतवेति मंत्रः	हाथी के मुख में तिल चावल दें।
कृत्तिका	स्वर्णदान	9	11	16	28	अग्निर्मूर्धेति	कछुए के मुख में घी दें।
रोहिणी	घृतदान	3	9	18	30	ब्रह्माययेति	सर्प को दूध–दही खिलाएं।
मृगशिरा	तिलदान	9	5	7	10	इमं देवेति मंत्र	खरगोश को दूध पिलाएं।
आर्द्रा	गोदान	0	18	0	0	नमस्ते रुद्र इति मंत्र	बकरे के मुख में रक्त डालें।
पुनर्वसु	पीतलदान	7	14	2	21	अदितिर्द्यौरिति मन्त्रः	सूअर को धान्य खिलाएं।
पुष्य	तैलान्नदान	6	7	10	21	बृहस्पतेति मन्त्रः	बकरे के मुख में दही डालें।
आश्लेषा	गो–अजादि दान	0	0	41	0	नमोस्तुसर्पेति मन्त्रः	बिलाब को दूध पिलाएं।
मघा	वस्त्राज्यदान	15	7	17	20	पितृभ्य इति मन्त्रः	बन्दर को तिल उड़द खिलाएं।
पू.फा.	भोजनदान	0	15	0	30	भगम्प्रणेति मन्त्रः	ऊंट के मुख में शहद दें।
उ.फा.	अन्नदान	7	14	7	60	दध्यावद्धेति मन्त्रः	गाय को शाक खिलाएं।
हस्त	तैलदान	15	17	15	0	उदत्यं जातवेदेति मन्त्रः	भैंसे को कमल के फूल खिलाएं।
चित्रा	दुग्धदान	11	8	9	16	त्वष्टा तुरगेति मन्त्रः	बाघ के लिए तगर–धतूरे के फूल वन में रखें।
स्वाती	गौघृतदान	60	17	30	0	वायोरग्नेति मन्त्रः	भैंसे को गुड़, चावल खिलाएं।
विशाखा	गौ–स्वर्णदान	15	0	4	13	इंद्राग्नी इति मन्त्रः	बाघ के मुख में गुड़, भात की बलि दें।
अनुराधा	गौघृतदान	60	12	36	30	नमो मित्रेति मन्त्रः	बकरे को कुल्थीसहित भात, गुड़ दें।
ज्येष्ठा	तिलदान	69	9	6	4	त्रातारमिन्द्रमिति मन्त्रः	बंदरों को गुड़, तिल डालें।
मूल	रौप्यपात्रदान	0	9	15	6	माता पुत्रेति मन्त्रः	बिलाब को दूध पिलाएं।
पू.षा.	गोमुक्तादान	0	15	24	10	आपोधर्मेति मन्त्रः	कछुए के मुख में नागरमोथे की बलि दें।
उ.षा.	भोजनदान	30	24	26	16	विश्वेदेवेति मन्त्रः	गौ को धान्य डालें।
श्रवण	श्रीफलदान	60	24	6	9	विष्णोररराटेति मन्त्रः	भैंसे के मुख में रक्त, मीठा की बलि दें।
धनिष्ठा	अश्वान्नदान	15	4	20	21	वसोः पवित्रेति मन्त्रः	मनुष्य के मुख में दहीं, अन्न की बलि दें।
शतभिषा	भोजनान्नदान	4	45	3	22	वरुणस्तम्भेति मन्त्रः	गौ को चावल खिलाएं।
पू.भा.	भोजनदान	0	12	21	19	अहिर्बुध्न्येति मन्त्रः	कौए के मुख में फल की बलि छोड़ें।
उ.भा.	अन्नदान	10	3	9	15	अहिर्बुध्न्येति मन्त्रः	गाय को चावल खिलाएं।
रेवती	फलदान, कन्यापूजन	18	10	9	20	पूषन्नयेति मन्त्रः	हाथी के मुख में पूरी–पूओं की बलि छोड़ें।

ज्वालामुखी योग

तिथि	१	५	६	९	१०
नक्षत्र	मूल	भरणी	कृत्तिका	रोहिणी	आश्लेषा

जन्मे सो जीवे नहीं बसै जो उजड़ जाय। चूड़ा पहिरे कामिनी चटपट विधवा होय। गए गए ना बुहरे कूए नीर सुकाय।

पुत्रोत्पत्ति का समय

(1) जन्मलग्नेश व पुत्रेश के स्पष्ट को जोड़ें। योगफल के राश्यादि और नवांश की राशि में या इन दोनों की त्रिकोण राशि में जब गोचर का गुरु होता है, तब पुत्र–संतान उत्पन्न होती है।

(2) चंद्र, लग्न, गुरु– इन तीनों से पंचमस्थानेश या नवमस्थानेश की दशान्तर्दशा में पुत्रसंतानोत्पत्ति होती है।

विवाह (स्त्रीसुख) होने का समय

(1) जन्मलग्नेश, सप्तमेश को जोड़कर जो राशि हो, उस राशि में जब गोचर का गुरु हो, तब विवाह होता है।

(2) चन्द्रराशीश और अष्टमेश को जोड़ने पर प्राप्त राशि में जब गोचर का गुरु आए, तब विवाह होता है।

(3) लग्नेश का नवांशेश जिस राशि में हो, उस राशि से द्वितीयभाव में जब गोचर में गुरु–चन्द्र होते हैं, तब विवाह होता है।

(4) शुक्र–चन्द्र व सप्तमेश की दशान्तर्दशा में विवाह होता है।

पिता के खतरे का समय

(1) गुलिक स्पष्ट से सूर्य स्पष्ट घटाएं, शेष राशि के त्रिकोण में जब गोचर का शनि हो, तब पिता की मृत्यु होती है।

(2) सूर्य से 1/2/7/12 भाव में जो पापग्रह हो, उस की दशान्तर्दशा में पिता की मृत्यु होती है।

नोट– इस कष्टावली में प्रत्येक नक्षत्र का जपनीय मंत्र पृथक्–पृथक् लिखा है, उसे न जप सकें तो महामृत्युंजय मन्त्र ही जपें। जिस नक्षत्र के जिस चरण में पहले रोग उत्पन्न हुआ है, उस चरणानुसार कष्ट व दिन जानें, शून्य से विशेष भय जानें। दान, जप करे। जिस नक्षत्र में रोग पैदा हुआ है, उसे यहां कष्टावली में रोगनक्षत्र का नाम दिया गया है। रोगनक्षत्र को जानकर, इन कोष्ठकों में लिखा उपाय एवं यथाशक्ति दान करने से रोग शान्त होगा। 'रोग निवृत्त्यर्थ बलिदान' वाले कॉलम में घोड़ी, हाथी आदि के मुख में बलि देने के लिए लिखा है, वह गेहूं के आटे की वैसी ही आकृति बनाकर (मन में हाथी आदि की धारणा करके) उसके मुख में बलिद्रव्य देकर धूप–दीपादि करके आटे की आकृति को जल में प्रवाहित कर दें– ऐसा तीन दिन करें। साथ ही दान और जप भी करें।

रोगोत्पत्तो कुयोगाः

(1) रोग के शुरुआती दिन में जन्मराशि, नक्षत्र, लग्न में या राशि व लग्न से आठवें चन्द्र या यमघंट कुयोग हो।

(2) सूर्यवार को मघा, द्वादशी या भरणी, अनुराधा नक्षत्र हो।

(3) सोमवार को आर्द्रा या उ. षा. नक्षत्र हो।

(4) मंगलवार को कृत्तिका, मघा व शतभिषा या नन्दा (1/6/11) तिथि हो।

(5) बुधवार को अश्विनी, विशाखा या भद्रा (2/7/12) तिथि, आश्लेषा हो।

(6) गुरुवार छठ व शतभिषा या ज्येष्ठा व मृग. या जया (3/8/13) तिथि व मघा, हस्त हो।

(7) शुक्रवार–अष्टमी व अश्विनी या आश्ले., श्रवण या रिक्ता (4/9/14) तिथि, आर्द्रा या धनिष्ठा हो।

(8) शनिवार को नवमी व पू. षा. या हस्त व पू. भा. या पूर्णा (5/10/15) तिथि व भरणी हो।

(9) सूर्य, मंगल, शनि वारों को 4। 6। 9। 12/14/30 तिथि, भरणी, कृत्ति. आर्द्रा, आश्लेषा, पूर्वा. 3, विशा., ज्ये., धनि., शत. नक्षत्र हों तो मृत्युतुल्य कष्ट होता है।

परञ्च– जन्मपत्र में मारकेश का और भी विचार कर लेना चाहिए। क्योंकि– बिना मारकेश आए मृत्यु तो होती ही नहीं। हां– ऐसे योग में कष्ट ज़रूर मृत्युतुल्य होता है। उपरोक्त योगों में से किसी भी एक योग में रोगारम्भ होते ही तुलादान, गोदान तथा मृत्युञ्जयजप करना कल्याणप्रद है।

बाल–रक्षार्थ धूप

राई, लाख, नीम के पत्ते, बांस का छिल्का, लहसुन, शिवजी पर चढ़े हुए फूल, अगर, गाय का घी–इन सब को मिलाकर धूप देने से सब पूतना तथा अन्य बालग्रह दूर हो जाते हैं। धूप देते समय

अथ रोगत्रिनाड़ी चक्रम्

प्रथमा	आर्द्रा	पू.फा.	उ.फा.	अनु.	ज्ये.	धनि.	शत.	भर.	कृ.
मध्या	पुन.	मघा	हस्त	विशा.	मूल	श्रवण	पू.भा.	अश्वि.	रो.
अन्त्या	पुष्य	आश्ले.	चित्रा	स्वा.	पू.षा.	उ.षा.	उ.भा.	रेव.	मृ.

सूर्यनक्षत्र, दिन, जन्म और नाम नक्षत्र रोगत्रिनाड़ीचक्र में एक ही नाड़ी पर हों तो असाध्य रोगी का मरण होता है। मरने को हो तो प्रतिदिन देखने से जिस दिन यह योग मिले, उसी दिन निःसन्देह रोगी की मृत्यु कहनी चाहिए। यह रोगत्रिनाड़ी चक्र यात्रा तथा रण के समय वर्जित करना चाहिए।

कालस्य मुखदंष्ट्रा ज्ञानम्

दिननक्षत्र से नामनक्षत्र 5/13/23 संख्या का हो तो काल का मुख होता है और उसी प्रकार 10/18वां नक्षत्र दंष्ट्रा (दाढ़) होती है। काल के मुख में दाढ़ में जिस दिन गोचर में नक्षत्र प्राप्त हो, उस दिन अत्यन्त रोगग्रस्त पुरुष की हालत मृत्युपर्यन्त होती है। रोग पर, सर्पादि दर्शन पर, विग्रह–युद्ध में जाने पर काल के मुख–दंष्ट्रा में नक्षत्र हो तो अशुभ होता है।

कालांगचक्र से शुभाशुभ फलज्ञान

यदि किसी व्यक्ति के अंङ्गविशेष में पीड़ा, कष्ट, घाव, फोड़ा आदि चर्मविकार किंवा वायु–विकारादिजन्य कोई कष्ट हो तो तात्कालिक प्रश्नकुण्डली लगाकर, निम्नलिखित कालांगचक्र में दिए भावों के अनुसार उस पीड़ित भाव को देखें। यदि उस भाव में कोई अशुभ ग्रह हो, किंवा वह भाव खलदृष्ट, अस्त, नीच तथा शुभग्रह की दृष्टि से रहित हो तो समझें, कि उस अवयव में और विशेष कष्ट की संभावना है। शान्ति के लिए उस ग्रह की शान्ति कराएं। यदि प्रश्नकुण्डली में पीड़ित भाव शुभग्रह से युक्त किंवा शुभग्रहदृष्ट हो तो रोग (कष्ट) शीघ्र निवृत्त हो जाएगा।

कालांगचक्र

भाव	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
अंग	सिर	मुख	भुजाएं	हृदय	उदर	कटिभाग	…/मूत्राशय	…/गुदा	जंघाएं	घुटने	पिंडलियां	…-युगल

तिथिकष्टावली यन्त्रम्

तिथि	तिथीश	कष्ट–दिन	बलि	दान
1	अग्नि	12	शर्कराज्यबलि	घृतदान
2	ब्रह्मा	5	पायसबलि	भोजनदान
3	काम	7	घृतान्नबलि	रक्तवस्त्रदान
4	गणेश	16	मोदकान्नबलि	मूंगादान
5	सर्प	21	पायसबलि	दुग्धदान
6	स्कन्द	12	मोदकान्नबलि	चित्रवस्त्रदान
7	सूर्य	8	पायसबलि	ताम्रपात्रदान
8	ईश्वर	13	नानाभक्ष्यबलि	पीतवस्त्रदान
9	दुर्गा	18	मिष्ठान्नबलि	रक्तवस्त्रदान
10	यम	25	कृशरान्नबलि	नीलवस्त्रदान
11	विश्वेदेव	7	मोदकान्नबलि	पीतवस्त्रदान
12	विष्णु	7	मोदकान्नबलि	श्वेतवस्त्रदान
13	काम	10	दधिशर्कराबलि	सुवर्णदान
14	शिव	60	मिष्ठान्नबलि	क्षौद्रशाकभोजन
15	चन्द्र	3	दध्योदनबलि	रौप्यदान
30	पितर	18	अपूपकान्नबलि	उत्तमान्नभोजन

वारकष्टावली–यंत्रम्

वार	वारेश	क.दि.	बलि व दान
सू.	रुद्र	5	पायसबलि, सूर्यदान
चं.	गौरी	8	नानाभक्ष्यबलि, चन्द्रदान
मं.	स्कन्द	5	दुग्धबलि, भौमदान
बु.	विष्णु	7	मुद्गान्नबलि, बुधदान
बृ.	ब्रह्मा	5	घृतपक्वबलि, गुरुदान
शु.	इन्द्र	7	तिलयवाज्यमधुबलि, शुक्रदान
श.	यम	15	माषान्नबलि, शनिदान

103

ग्रहगोचरादिदशा-क्रमाद्यग्रह-कृतानिष्ट-फल-शमनाय प्रत्येक-ग्रहाणां दानमन्त्राः | जपनीयमन्त्राः | दानसमय | हवनसमिधः

ग्रहगोचराद्यदशा-क्रमाद्यग्रह-कृतानिष्ट-फल-शमनार्थं प्रत्येक-ग्रहाणां दान-पदार्थाः												जपसंख्या	जपनीयमन्त्राः	दानसमय	हवनसमिधः
सूर्य	माणिक	सुवर्ण	ताम्र	गेहूं	गुड़	घी	रक्तवस्त्र	केसर	रक्तपुष्प	मूंग, रक्तगाय	रक्तचन्दन	7000	ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः	उदय	अर्क
चन्द्र	मोती	सुवर्ण	रजत	चावल	मिसरी	दही	श्वेतवस्त्र	शंख	श्वेतपुष्प	कर्पूर, श्वेतबैल	श्वेतचन्दन	11000	ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्राय नमः	सन्ध्या	पलाश
भौम	मूंगा	सुवर्ण	ताम्र	मसूर	गुड़	घी	रक्तवस्त्र	केसर	रक्तकनेर	कस्तूरी, रक्तबैल	रक्तचन्दन	10000	ॐ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः	घटी 2 शेषदिन	खदिर
बुध	पन्ना	सुवर्ण	कांसी	मूंग	खांड	घी	हरावस्त्र	हाथीदांत	सर्वपुष्प	कर्पूर, शस्त्र	फल	19000	ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः	घटी 5 शेषदिन	अपामार्ग
गुरु	पुखराज	सुवर्ण	कांसी	दालचने	खांड	घी	पीतवस्त्र	हल्दी	पीतपुष्प	पुस्तक, घोड़ा	पीतफल	19000	ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः	सन्ध्या	अश्वत्थ
शुक्र	हीरा	सुवर्ण	रजत	चावल	मिसरी	दूध	श्वेतवस्त्र	सुगंध	श्वेतपुष्प	दधि, श्वेतघोड़ा	श्वेतचन्दन	16000	ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः	सूर्योदय	उदुम्बर
शनि	नीलम	सुवर्ण	लोहा	उड़द	कुल्थी	तेल	कृष्णवस्त्र	कस्तूरी	कृष्णपुष्प	कृष्णांग भैंस	उपानह	23000	ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनये नमः	मध्याह्न	शमी
राहु	गोमेद	सुवर्ण	सीसा	तिल	सरसों	तिल	नीलवस्त्र	खड्ग	कृष्णपुष्प	कंबल, घोड़ा	शूर्प	18000	ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः	रात्रि	दूर्वा
केतु	लहसुनिया	सुवर्ण	लोहा	तिल	सप्तधान्य	तेल	धूम्रवस्त्र	नारियल	धूम्रपुष्प	कंबल, बकरा	शस्त्र	17000	ॐ स्रां स्रीं स्रौं सः केतवे नमः	रात्रि	कुशा
मुन्था	मोती	सुवर्ण	कांसी	चावल	सुवर्ण	घी	श्वेतवस्त्र	कपूर	श्वेतपुष्प	मसरी, श्वेतचन्दन	हाथीदांत	मुन्थेशवत्	मुन्थेशमन्त्रः	मुन्थेशकाल	मुन्थेशवत्

नवग्रहों के व्रत की विधि

यदि किसी व्यक्ति का कोई ग्रह गोचर से या दशा–अन्तर्दशा से खराब चल रहा हो तो निम्नलिखित प्रकार से उस ग्रह का शास्त्रोक्त व्रत–विधान ब्रह्मचर्यपूर्वक करने से अशुभ फल की निवृत्ति होती है।

रविवार के व्रत की विधि–सूर्य का व्रत रविवार को करें। यह व्रत शुक्लपक्ष के पहले (जेठे) रविवार से आरम्भ करके वर्षपर्यन्त तीस या कम से कम 12 व्रत करें। उस रोज़ केवल गेहूं की रोटी, घी और लालखाण्ड के साथ या गेहूं का गुड़ से बना दलिया या हलवा इलायची डालकर दान करके शेष का दिन में ही सूर्यास्त से पहले भोजन करें। नमक बिल्कुल न खाएं। भोजन से पूर्व हो सके तो लालवस्त्र पहनकर ऊपर चक्रोक्त बीज–मन्त्र की माला का जप करें। तदनन्तर सूर्य को गन्धाक्षत, रक्तपुष्प दूर्वायुक्त अर्घ्य प्रदान करें। अपने मस्तक में लालचन्दन का तिलक करें। जब व्रत का अन्तिम रविवार हो तो हवन–पूर्णाहुति के बाद ब्राह्मण को भोजन कराएं। ऐसा करने से सूर्य का अशुभ फल शुभ फल में परिणत हो जाएगा। तेजस्विता बढ़ेगी। नेत्ररोग, चर्मरोग एवम् अन्य शारीरक रोग भी शान्त होंगे।

सूर्यशान्ति का सरल उपचार :–लाल वस्तुओं का विशेष उपयोग करें– जैसे– लालचादर, परना तथा तांबे की अंगूठी का पहनना।

सोमवार के व्रत की विधि– चन्द्रमा का व्रत शुक्ल–पक्ष के प्रथम (जेठे) सोमवार को प्रारम्भ करके 54 या 10 व्रत करें। व्रत के दिन श्वेत वस्त्र धारण करके ऊपर चक्रलिखित बीज–मन्त्र की 11 या 3 माला जप करें। सफेद फूलों से पूजन करके सफेद चन्दन का तिलक करें। मध्याह्न के समय नमक के बिना दही–चावल, घी, खाण्ड का यथाशक्ति दान करके स्वयं भोजन करें। जब व्रत का अन्तिम सोमवार हो, उस दिन हवन–पूर्णाहुति करके खीर–खाण्ड से ब्राह्मण व बटुकों को भोजन कराएं। इस व्रत के करने से व्यापार में लाभ, मानसिक कष्टों से शान्ति होती है। विशेष कार्यसिद्ध्यर्थ भी यह पूर्ण फलदायक होता है।

चन्द्रशान्ति का सरल उपचार :– सफेद जुराब, रुमाल, सफेद वस्त्र, दूध, दही का उपयोग, चान्दी की अंगूठी पहनना।

मंगलवार के व्रत की विधि :– यह व्रत शुक्ल पक्ष के प्रथम (जेठे) मंगलवार से प्रारम्भ करके 21 या 45 व्रत करने चाहिएं। हो सके तो यह व्रत आजीवन रखें। बिना सिला हुआ लालवस्त्र धारण करके बीजमन्त्र की 1, 5, या 7 माला जप करें। नमक सेवन न करें, यह ज़रूरी है। उस दिन गुड़ से बने हलवे का या लड्डुओं का दान करें और स्वयं भी खाएं। गुड़ से बना कुछ हलवा आदि बैल को भी खिलाएं। मंगलवार का व्रत ऋण–हर्ता तथा सन्तति–सुखप्रद है। जब व्रत का अन्तिम मंगलवार हो, उस दिन हवन–पूर्णाहुति करके लालवस्त्र, तांबा, मसूर, गुड़, गेहूं तथा नारियल का दान करें। ब्राह्मणों तथा बच्चों को मीठा भोजन कराएं।

मंगलशान्ति का सरल उपचार :– लालरंग की वस्तुओं का उपयोग, रात को लालवस्त्र पहनें, तांबे के बर्तनों का प्रयोग, तांबे की अंगूठी पहनना।

बुधवार का व्रत :– इस व्रत को शुक्ल पक्ष के प्रथम (जेठे) बुधवार से प्रारम्भ कर 21 या 45 व्रत करें। हरा वस्त्र धारण करके बीज–मन्त्र की 17 या 3 माला जप करना चाहिए। उस दिन भोजन में नमकरहित, खाण्ड–घी से बने पदार्थ, जैसे– मूंगी का बना हुआ हलवा, मूंगी की बनी मीठी पंजीरी या मूंगी के लड्डुओं का दान करें। फिर तीन तुलसीपत्र, गंगाजल या चरणामृत के साथ लेकर स्वयं भी उपरोक्त पदार्थ खाएं। व्रत के अन्तिम बुधवार को हवन–पूर्णाहुति करके छोटे बच्चों या अङ्गहीन भिक्षुक को मूंगीयुक्त भोजन कराकर हरा वस्त्र, मूंगी आदि का दान भी करें। इस व्रत से विद्या, धन–लाभ, व्यापार में तरक्की तथा स्वास्थ्यलाभ होता है। अमावस का व्रत करने से भी बुध ग्रहजन्य नेष्टफल से मुक्ति मिलती है।

बुधशान्ति का सरल उपचार :– हरा रंग, हरे वस्त्र तथा श्रृंगार की अन्य वस्तुएं, हरा रुमाल आदि रखना, कांसी के बर्तन में भोजन, बुधाष्टमी का व्रत।

बृहस्पति के व्रत की विधि :– यह व्रत शुक्ल पक्ष के प्रथम (जेठे) गुरुवार से आरम्भ करें। तीन वर्षपर्यन्त या 16 व्रत करें। उस दिन पीतवस्त्र धारण करके बीज–मन्त्र की 11 या तीन माला जप करें। पीतपुष्पों से पूजन–अर्घ्य दानादि के बाद भोजन में चने के बेसन की घी–खाण्ड से बनी मिठाई, लड्डू या हल्दी से पीले या केसरी चावल आदि ही खाएं और इन्हीं का दान करें। जब व्रत का अन्तिम गुरुवार हो तो हवन–पूर्णाहुति के बाद ब्राह्मण व बटुकों को लड्डूभोजन कराएं। स्वर्ण, पीत–वस्त्र, चने की दाल आदि का दान करें। यह व्रत विद्यार्थियों के लिए बुद्धि तथा विद्याप्रद है। धन की स्थिरता तथा यशवृद्धि करता है। अविवाहितों के लिए स्त्री प्राप्तिप्रद सिद्ध होता है।

बृहस्पतिशान्ति का सरल उपचार :– पीले वस्त्र, रुमाल आदि, पीले फूल धारण करना, सोने की अंगूठी पहनना।

शुक्र के व्रत की विधि :– इस व्रत को शुक्ल पक्ष के प्रथम (जेठे) शुक्रवार से प्रारम्भ कर, 31 या 21 व्रत करें। श्वेत वस्त्र धारण करके बीजमन्त्र की 3 या 21 माला जपें। भोजन में चावल, खाण्ड या दूध से बने पदार्थ ही सेवन करें। यही पदार्थ यथाशक्ति सम्भव हो तो एकाक्षी (एक आंख वाले) भिक्षुक को या श्वेत गाय को दें। जब व्रत का अन्तिम शुक्रवार हो, तब हवन–पूर्णाहुति के बाद खीर–खाण्ड से बने पदार्थ ब्राह्मणबटुकों को खिलाएं। चांदी, श्वेतवस्त्र, खाण्ड, चावल का दान करें। इस व्रत से स्त्रीसुख एवं ऐश्वर्य की वृद्धि होती है।

शुक्रशान्ति का सरल उपचार :–सफेद वस्त्र, सफेद रुमाल, सफेद फूल धारण करना आदि, गाय को हरा घास या पेड़ा देना, शिवपूजन।

शनि के व्रत की विधि :– इस व्रत को शुक्ल पक्ष के प्रथम (जेठे) शनिवार से आरम्भ करे। व्रत 51 या 31 करने चाहिएं। व्रत के दिन काला वस्त्र धारण करके बीजमन्त्र की 19 या तीन माला का जप करें। फिर एक बर्तन में शुद्ध जल, काले तिल, काले फूल या लवंग (लौंग), गङ्गाजल तथा शक्कर, थोड़ा दूध डालकर पश्चिम की ओर मुंह करके पीपल–वृक्ष की जड में डाल दें। भोजन में उड़द के आटे का बना पदार्थ, पंजीरी, कुछ तेल से पका हुआ पदार्थ कुत्ते व गरीब को दें तथा तेलपक्व वस्तु के साथ केला व अन्य फल स्वयं प्रयोग में लाना चाहिए। यही पदार्थ दान भी करें। व्रत के अन्तिम शनिवार को हवन–पूर्णाहुति के बाद तेल में पकी हुई वस्तुओं को देने के बाद काला वस्त्र, केवल उड़द तथा देसी (चमडे का) जूता तेल लगाकर दान करें। इस व्रत से सब प्रकार की सांसारिक परेशानी दूर हो जाती है। झगड़े में विजय होती है। लोह–मशीनरी, कारखाने वालों के व्यापार में उन्नति होती है।

शनिशान्ति का सरल उपचार :– घर के परदे, जूते, जुराब, घड़ी का पट्टा, रुमाल आदि काले रंग के धारण करें।

राहु–केतु के व्रत की विधि :– शुक्ल पक्ष के प्रथम (जेठे) शनिवार से ही यह व्रत भी शुरु करना चाहिए। व्रत 18 करें। काला वस्त्र धारण करके 18 या 3 बीजमन्त्र की माला जपें। तदनन्तर एक बर्तन में जल, दूर्वा और कुशा लेकर, पीपल की जड में डालें। भोजन में मीठा चूरमा, मीठी रोटी, समयानुसार रेवड़ी, भुग्गा, तिल के बने मीठे पदार्थ सेवन करें और [illegible]

राहु–केतुशान्ति का सरल उपचार :– नीला रुमाल, नीला घड़ी का पट्टा, नीला पैन, लोहे की अंगूठी पहनें।

ग्रहों के अरिष्ट-निवृत्त्यर्थ स्नानविधि

> यथा सिद्धौषधैः रोगाः नश्येयुर्मन्त्रतो भयम्।।
> तथा स्नान–विधानेन ग्रह–दोषः प्रणश्यति।।

रवि ग्रह के दोष की शान्ति के लिए कभी–कभी व्रत के दिन बिल्ववृक्ष की जड़, देवदारु, मुलट्ठी, लाल फूल, केसर पानी में उबालकर स्नान करें। चन्द्र शान्त्यर्थ सोमवार के व्रत के दिन खिरनी की जड़, श्वेत चन्दन, सिप्पी, पञ्चगव्य उबालकर स्नान करें। ऐसे ही मंगलव्रत के दिन अनन्तमूल, रक्त चन्दन, मौलश्री, लाल फूल–ये सब उबालकर; बुधव्रत के दिन गोबर, मधु, चावल, विधारा; **गुरुव्रत के दिन** भारंगी, मुलट्ठी, श्वेत सरसों, मालती पुष्प; **शुक्रव्रत के दिन** इलायची, मजीठ तथा **शनिव्रत के दिन** काले तिल, सौंफ, सुरमा, अमरवेल, सफेद बिनौला– उबालकर स्नान करें। ऐसे ही राहु–केतु की शान्ति के लिए शनिवार के दिन देवदारु, सरसों तथा लोहबान उबालकर स्नान करें, तो ग्रहशान्ति मिलती है।

नोटः– स्नानोक्त कोई वस्तु उपलब्ध न हो, तो जो वस्तु मिले उससे ही स्नान करें।

सर्वग्रह किंवा सर्वविधशान्ति के लिए सामान्य औषधस्नान

लाजवन्ती (छुई–मुई), कूट, खिलां, कांगनी, जौ, सरसों, देवदारु, हल्दी, सर्वोषधि, लोध– इन औषधियों के जल एवं सतीर्थोदक स्नान करने से सब ग्रहों की पीड़ा नष्ट होती है तथा पूर्व जो दान कह चुके हैं, उनके करने से शान्ति मिलती है। गुरुवचन, देवता, ब्राह्मणों की वंदना, वेदादि श्रवण, साधुओं से बातें, मन की शुद्धता, जप, दान, होम तथा यज्ञ के करने से दुष्ट स्थानों में स्थित ग्रह पीड़ा नहीं करते।– (श्रीपतिः)।

शनिविचार-अथ लघुकल्याणी (ढैया) फलम्:-

> कल्याणी प्रददाति वा रविसुते राशेश्चतुर्थाष्टमे व्याधिः
> बन्धुविरोधं देशगमनं क्लेशं च चिन्ताधिकम्।
> मृत्युं चैव करोति चापि मनुजं दुःखादि–वह्नेर्भयं
> लोहशस्त्रभयं सदैव–असुखं कुर्यादसौ सर्वदा।। १।।

वृहत्कल्याणी साढेसाती फलम् :-........राशौ द्वादश (12) मूर्ध्नि जन्म (1) हृदये पादौ द्वितीये (2) शनिः। नानाक्लेशकरोऽति दुर्जनभयं पुत्रान्पशून्पीडयेत्। हानिः स्यान्मरणं विदेशगमनं सौख्यं च साधारणम् , रामात्रद्धिविनाशनं प्रकुरुते तुर्याष्टमे वाऽथवा।। २।।

सप्तधान्य- उड़द, मूंगी, गेहूं, चने, जौ, धान्य (तंडुल), कंगनी।

अष्टगंध-स्याही :-अगर, कस्तूरी, कुंकुम, कर्पूर, चन्दन, टोपीदार लौंग, गोरोचन, देवदारु।

[illegible]

नक्षत्र–राशिज्ञान–चक्र

राशि→	मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या			तुला			वृश्चिक			धनु			मकर				कुम्भ			मीन		
नक्षत्र→ चरण ↓	अश्विनी	भरणी	कृत्तिका	कृत्तिका	रोहिणी	मृगशिरा	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू.फा.	उ.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	चित्रा	स्वाती	विशाखा	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.	उ.षा.	अभिजित	श्रवण	धनिष्ठा	धनिष्ठा	शतभिषा	पू.भा.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती
प्रथम चरण	चू	ली	अ	०	ओ	वे	०	कु	के	०	हु	डी	मा	मो	टे	०	पू	पे	०	रू	ती	०	ना	नो	ये	भू	भे	०	जू	खी	गा	०	गो	से	०	दू	दे
द्वितीय चरण	चे	लू	०	ई	वा	वो	०	घ	को	०	हे	डू	मी	टा	०	टो	ष	पो	०	रे	तू	०	नी	या	यो	धा	०	भो	जे	खू	गी	०	सा	सो	०	थ	दो
तृतीय चरण	चो	ले	०	उ	वी	०	क	ङ	ह	०	हो	डे	मू	टी	०	पा	ण	०	रा	रो	ते	०	नू	यी	भा	फ	०	जा	जो	खे	०	गू	सी	दा	०	झ	चा
चतुर्थ चरण	ला	लो	०	ए	वू	०	की	छ	०	हि	डा	डो	मे	टू	०	पी	ठ	०	री	ता	०	तो	ने	यू	भी	ढ	०	जी	खा	खो	०	गे	सू	०	दी	ञ	चि

राशिज्ञाने विशेषः– नक्षत्र व राशि में 'श' और 'स' तथा 'व' और 'ब' में कोई भेद नहीं होता। जिसके नाम का पहला अक्षर संयुक्त हो, वहां प्रथमाक्षर ग्रहण करें– **संयोगजाक्षरे नाम्नि ग्राह्यं तत्रादिमाक्षरम्।**

ध्यान दें – नामों का प्रारम्भ ङ, ञ, ण अक्षरों से नहीं होता। यदि नक्षत्र के आधार पर इन अक्षरों से नाम प्रारम्भ हो रहा हो तो 'ङ' की जगह 'घ', 'ञ' की जगह 'दु', तथा 'ण' की जगह 'पू' से प्रारम्भ करें। ऐसा करने से भेद नहीं होता।

"बहूनि यस्य नामानि नरस्य स्युः कथञ्चन। ततः पश्चादभवं नाम ग्राह्यं स्वर–विशारदैः।। प्रसुप्तो भाषते येन येनागच्छति शाब्दितः। तस्य नामाद्यवर्णे या मात्रा स स्वर एव हि।।

अथ जन्मराशि-नामराश्योः प्रधानता निर्णीयते–

विवाहे सर्वमांगल्ये यात्रादौ ग्रहगोचरे। जन्मराशेः प्रधानत्वं नामराशिं न चिन्तयेत्।। देशे ग्रामे गृहे युद्धे सेवायां व्यवहारके।। नामराशेः प्रधानत्वं जन्मराशिं न चिन्तयेत्।। काकिण्यां वर्गशुद्धौ च दाने द्यूते ज्वरोदये। मन्त्रे पुनर्भूवरणे च नामराशेः प्रधानता।। कुर्यात्षोडशकर्माणि जन्मराशौ बलान्विते। सर्वाण्यन्यानि कर्माणि नामराशौ बलान्विते।। विवाह घटनं चैवं लग्नजं ग्रहजं बलम्। कामभाक्चिन्तयेत् सर्वं जन्म न ज्ञायते यदा।।

अभिजित्निर्णय :– वैश्यप्रान्त्यांघ्रिः श्रुति–तिथि–भागतोऽभिजित्स्यात्।।

"उत्तराषाढ़ा का चौथा चरण और श्रवण का पहला १५वां भाग जोड़कर उसके चार भाग करें। उसको अभिजित् का एक चरण मानकर नाम रखने आदि के विचार में उपयोग करें। उत्तराषाढ़ा के तीन चरणों के ही चार भाग करके उत्तराषाढ़ा का एक–एक चरण मानो। श्रवण का १५वां भाग छोड़कर जो शेष रहे, उसके चार भाग करें; उसको श्रवण के १–१ चरण मानें। सामान्य गणक के ज्ञानार्थ ही यह यहां लिखा गया है।

राशिज्ञानम्– चू ल अ मेषः, इ वो वृषः, क घ ङ छ ह मिथुनम्।।
हीडो कर्कः, माटे सिंहः, टो ष ण ठ पो कन्या।।
राते तुला, तो ना यू वृश्चिकः, ये धफढभे धनुः।।
भोजा खागी मकरः, गुशद : कुम्भः दीथझञची मीनः।।

इस राशिज्ञान में प्रत्येक राशि के आदि और अन्त का अक्षर है और जहां जो अक्षर बदलता है, वहां वह अक्षर भी ले लिया गया है। जैसे–मेष में पहला अक्षर 'चू' लेने से अश्विनी के तीन चरण (चू चे चो) का ग्रहण होता है और 'ल' से (ला ली लू ले लो) पांचों का ग्रहण हुआ अर्थात् एक चरण (चौथा) अश्विनी का और चतुर्थ चरण पर्यन्त भरणी का ग्रहण हुआ और 'अ' से कृत्तिका का प्रथम चरण– इन नौ चरणों की एक राशि मेष हुई। इसी तरह अन्य राशियों का ज्ञान करें।

विशेष– जहां 'ज्ञ' का उच्चारण 'ज्ञ' होता है वहां ज्ञान चन्द्र का नक्षत्र उ.षा. और जहां इसका उच्चारण 'ग्य' होता है, वहां ज्ञान चन्द्र का नक्षत्र धनिष्ठा माना जाएगा। क्योंकि 'ज' और 'ग' वर्ण क्रमशः उ.षा. और धनिष्ठा नक्षत्र में पड़ते हैं।

नोटः–चन्द्रमा की राशि एवम् नक्षत्र के अनुसार जातक का नाम रखने में फलितज्ञ को काफी आसानी रहती है। नाम जानने से ही ज्योतिषी जातक के जन्मसमय चन्द्रमा की राशि एवम् नक्षत्र जान लेता है तथा फलितशास्त्र में काफी महत्त्वपूर्ण फलादेश चन्द्रमा की स्थिति पर ही निर्भर है। इसका एक वैज्ञानिक रहस्य भी है। निकटतम होने से चन्द्रमा का प्रभाव भूस्थित वनस्पति एवम् प्राणियों पर अन्य सभी ग्रहों की अपेक्षा अधिक होता है। ज्वारभाटा लाने में भी चन्द्रमा की देन सूर्य की देन से दुगुनी है। चन्द्रमा का ज्वार–भाटांक सूर्य के ज्वार–भाटांक से दुगुना है। चन्द्रमा के भगणकाल का स्त्री के मासिक धर्म से साक्षात् सम्बन्ध है। आजकल वैज्ञानिकों ने कुछ प्रयोग भी किए हैं, जिससे अचर जगत् (वनस्पति आदि) पर चन्द्रमा का प्रभाव स्पष्ट रूप से ज्ञात होता है। अतः जन्मपत्र आदि के अभाव में चन्द्रमा की स्थिति से ही फलादेश करने की परिपाटी फलितज्ञों में है।

नवीन फलितवेत्ता जन्मपत्र की अंग्रेज़ी तारीखों के हिसाब से भी फलादेश करने लग गए हैं। इस पद्धति में सायन सूर्य की राशि के आधार पर ही फलादेश होता है, जबकि चन्द्रमा की राशि के आधार पर फलादेश करना अधिक उपयुक्त है। अतः प्राचीन फलित–शास्त्रियों ने जन्मकालीन चन्द्रमा की स्थिति को जन्मराशि का नाम दिया है। हमारे ज्योतिष के अनुसार इसका विशेष महत्त्व भी है।

नक्षत्रचरण एवं नवांशराशि–बोधक सारणी

प्रियव्रत शर्मा

ग्रह या लग्न किस राशि, नक्षत्र एवं नक्षत्रचरण (नवांश) में विद्यमान है– यह इस सारणी से ग्रह एवं लग्न–राश्यादि द्वारा जाना जा सकता है। ध्यान रहे–यहां दिए गए राश्यादि वे हैं, जहां राशि एवं नक्षत्रचरण (नवांश) प्रारम्भ होता है। जैसे– स्पष्ट सूर्य 5 रा. 27 अं. 20 क. हो तो सारणी से ज्ञात हो जाता है कि– सूर्य कन्या राशि, चित्रा नक्षत्र–द्वितीय चरण तथा कन्या के नवांश में है। क्योंकि यहां सूर्य कन्या राशि के ही नवांश में है, अतः यह वर्गोत्तम नवांश में है। कोष्ठक में वर्गोतम नवांश के साथ स्टार (★) लगाया गया है। कन्या के नवांश का स्वामी बुध है– यह भी सारणी में निर्दिष्ट है।

इस सारणी की मदद से नवांशकुण्डली लगाना बहुत आसान है।

ग्रह या लग्न रा. अं. क.	राशि नक्षत्र चरण	नवांश–राशि	नवांश–स्वामी
0 00 00	मेष अश्वि. 1	★मेष	मं.
0 03 20	,, ,, 2	वृष	शु.
0 06 40	,, ,, 3	मिथुन	बु.
0 10 00	,, ,, 4	कर्क	चं.
0 13 20	,, भर. 1	सिंह	सू.
0 16 40	,, ,, 2	कन्या	बु.
0 20 00	,, ,, 3	तुला	शु.
0 23 20	,, ,, 4	वृश्चि.	मं.
0 26 40	,, कृत्ति. 1	धनु	गु.
1 00 00	वृष ,, 2	मकर	श.
1 03 20	,, ,, 3	कुम्भ	श.
1 06 40	,, ,, 4	मीन	गु.
1 10 00	,, रोहि. 1	मेष	मं.
1 13 20	,, ,, 2	★वृष	शु.
1 16 40	,, ,, 3	मिथुन	बु.
1 20 00	,, ,, 4	कर्क	चं.
1 23 20	,, मृग. 1	सिंह	सू.
1 26 40	,, ,, 2	कन्या	बु.
2 00 00	मिथुन ,, 3	तुला	शु.
2 03 20	,, ,, 4	वृश्चि.	मं.
2 06 40	,, आर्द्रा 1	धनु	गु.
2 10 00	,, ,, 2	मकर	श.
2 13 20	,, ,, 3	कुम्भ	श.
2 16 40	,, ,, 4	मीन	गु.
2 20 00	,, पुन. 1	मेष	मं.
2 23 20	,, ,, 2	वृष	शु.
2 26 40	,, ,, 3	★मिथुन	बु.

ग्रह या लग्न रा. अं. क.	राशि नक्षत्र चरण	नवांश राशि	नवांश स्वामी
3 00 00	कर्क पुन. 4	★कर्क	चं.
3 03 20	,, पुष्य 1	सिंह	सू.
3 06 40	,, ,, 2	कन्या	बु.
3 10 00	,, ,, 3	तुला	शु.
3 13 20	,, ,, 4	वृश्चि.	मं.
3 16 40	,, आश्ले. 1	धनु	गु.
3 20 00	,, ,, 2	मकर	श.
3 23 20	,, ,, 3	कुम्भ	श.
3 26 40	,, ,, 4	मीन	गु.
4 00 00	सिंह मघा 1	मेष	मं.
4 03 20	,, ,, 2	वृष	शु.
4 06 40	,, ,, 3	मिथुन	बु.
4 10 00	,, ,, 4	कर्क	चं.
4 13 20	,, पू.फा. 1	★सिंह	सू.
4 16 40	,, ,, 2	कन्या	बु.
4 20 00	,, ,, 3	तुला	शु.
4 23 20	,, ,, 4	वृश्चि.	मं.
4 26 40	,, उ.फा. 1	धनु	गु.
5 00 00	कन्या ,, 2	मकर	श.
5 03 20	,, ,, 3	कुम्भ	श.
5 06 40	,, ,, 4	मीन	गु.
5 10 00	,, हस्त 1	मेष	मं.
5 13 20	,, ,, 2	वृष	शु.
5 16 40	,, ,, 3	मिथुन	बु.
5 20 00	,, ,, 4	कर्क	चं.
5 23 20	,, चित्रा 1	सिंह	सू.
5 26 40	,, ,, 2	★कन्या	बु.

ग्रह या लग्न रा. अं. क.	राशि नक्षत्र चरण	नवांश–राशि	नवांश–स्वामी
6 00 00	तुला चित्रा 3	★तुला	शु.
6 03 20	,, ,, 4	वृश्चि.	मं.
6 06 40	,, स्वाती 1	धनु	गु.
6 10 00	,, ,, 2	मकर	श.
6 13 20	,, ,, 3	कुम्भ	श.
6 16 40	,, ,, 4	मीन	गु.
6 20 00	,, विशा. 1	मेष	मं.
6 23 20	,, ,, 2	वृष	शु.
6 26 40	,, ,, 3	मिथुन	बु.
7 00 00	वृश्चि. ,, 4	कर्क	चं.
7 03 20	,, अनु. 1	सिंह	सू.
7 06 40	,, ,, 2	कन्या	बु.
7 10 00	,, ,, 3	तुला	शु.
7 13 20	,, ,, 4	★वृश्चि.	मं.
7 16 40	,, ज्येष्ठा 1	धनु	गु.
7 20 00	,, ,, 2	मकर	श.
7 23 20	,, ,, 3	कुम्भ	श.
7 26 40	,, ,, 4	मीन	गु.
8 00 00	धनु मूल 1	मेष	मं.
8 03 20	,, ,, 2	वृष	शु.
8 06 40	,, ,, 3	मिथुन	बु.
8 10 00	,, ,, 4	कर्क	चं.
8 13 20	,, पू.षा. 1	सिंह	सू.
8 16 40	,, ,, 2	कन्या	बु.
8 20 00	,, ,, 3	तुला	शु.
8 23 20	,, ,, 4	वृश्चि.	मं.
8 26 40	,, उ.षा. 1	★धनु	गु.

ग्रह या लग्न रा. अं. क.	राशि नक्षत्र चरण	नवांश–राशि	नवांश–स्वामी
9 00 00	मकर उ. षा. 2	★मकर	श.
9 03 20	,, ,, 3	कुम्भ	श.
9 06 40	,, ,, 4	मीन	गु.
9 10 00	,, श्रव. 1	मेष	मं.
9 13 20	,, ,, 2	वृष	शु.
9 16 40	,, ,, 3	मिथुन	बु.
9 20 00	,, ,, 4	कर्क	चं.
9 23 20	,, धनि. 1	सिंह	सू.
9 26 40	,, ,, 2	कन्या	बु.
10 00 00	कुम्भ ,, 3	तुला	शु.
10 03 20	,, ,, 4	वृश्चि.	मं.
10 06 40	,, शत. 1	धनु	गु.
10 10 00	,, ,, 2	मकर	श.
10 13 20	,, ,, 3	★कुम्भ	श.
10 16 40	,, ,, 4	मीन	गु.
10 20 00	,, पू.भा. 1	मेष	मं.
10 23 20	,, ,, 2	वृष	शु.
10 26 40	,, ,, 3	मिथुन	बु.
11 00 00	मीन ,, 4	कर्क	चं.
11 03 20	,, उ.भा. 1	सिंह	सू.
11 06 40	,, ,, 2	कन्या	बु.
11 10 00	,, ,, 3	तुला	शु.
11 13 20	,, ,, 4	वृश्चि.	मं.
11 16 40	,, रेव. 1	धनु	गु.
11 20 00	,, ,, 2	मकर	श.
11 23 20	,, ,, 3	कुम्भ	श.
[illegible]	,, ,, [illegible]	★मीन	[illegible]

बारह राशियों का ग्रहगोचरानुसार फलादेश एवं ग्रहजन्य अन्य फल

वैशाख मास

मेषसंक्रान्ति (14 अप्रैल से 13 मई तक, सन् 2022 ई.)

(चू, चे, चो, ला, ली, लू, ले, लो, अ)

संक्रान्तिकालीन गोचर ग्रहस्थिति-फल-मेषकालीन कुण्डली में राहु-सूर्य-बुध के एकत्र होने से शासकों एवं प्रजा में तालमेल के अभाव से विवादास्पद स्थितियों में उलझने का योग है। शुक्र-मंगल का योग देश की आर्थिक एवं प्रगतिप्रद योजनाओं में रुकावटें बनाता है। बृहस्पति की कर्क पर दृष्टि देश व देशवासियों के लिए उत्तम लाभप्रद रहेगी।

वैशाख(मेष)संक्रान्ति-कुण्डली

2 | 12 गु. मं. | 3 | रा. 1 बु. सू. | 11 शु. | 4 | 10 श. | 5 चं. | 7 के. | 9 | 6 | 8

राजनीतिज्ञों के लिए यह समय विशेष कठिन एवं उलझनपूर्ण रहेगा। मकरस्थ शनि देश में विशेष परिवर्तन, आर्थिक उलझन का संकेत देता है।

मेष-संक्रान्ति प्रवेशकाल 14 अप्रैल, सन् 2022 ई. को 8 घं. 40 मि. (I.S.T.), मुहूर्त्ती 30, पुण्यकाल 15 घं. 5 मि. तक,

वैशाख मास में प्रत्येक राशि के लिए फल

मेष–सेहत ठीक रहे, वाहन से चोटभय, निजीलोगों से अनबन, सम्पदा-सम्बन्धी झगड़ों से दूर रहें, सन्तान-सुख, धोखेबाजों से दूर रहें। अप्रैल 19, 20, 27, 28, 29; मई 7, 8, 9 अशुभ।

वृष–नेत्रकष्टभय, धनलाभ हो, निजीलोगों से अनबन, मित्र सहायक हों, स्त्रीपक्ष से चिन्ता, कारोबार में रुकावट। अप्रैल 21, 22, 30; मई 10, 11 अशुभ।

मिथुन–सेहत ठीक, आय से व्यय अधिक, मित्र एवं बन्धु-सुख, सन्तान हेतु शुभ में खर्च, स्त्रीकष्ट या मानसिक उलझन से परेशानी। अप्रैल 15, 16, 23, 24; मई 2, 3, 4 अशुभ।

कर्क–वायुरोग, शरीर में दर्द, कारोबार ठीक रहे, भ्रातृसुख, राजपक्ष से लाभ, पुराने झंझट से दूर रहें, यात्रा में कष्ट, कार्यान्तर से लाभ। अप्रैल 17, 18, 25, 26, 27; मई 5, 6अशुभ।

सिंह–सेहत ठीक रहे, अर्थलाभ होकर व्यय अधिक हो, मित्र-बन्धु-कष्ट, वृथा विवाद से दूर रहें, स्त्रीपक्ष से चिन्ता, कारोबार कमज़ोर रहे। अप्रैल 19, 20, 27, 28, 29; मई 7, 8, 9 अशुभ।

कन्या–सेहत ठीक, गुप्त चिन्ता, भाई-मित्र-पक्ष से चिन्ता, स्त्रीपक्ष से सहयोग, कार्यान्तर व स्थानान्तर का विचार। अप्रैल 21, 22, 30; मई 10, 11 अशुभ।

तुला–राजपक्ष से चिन्ता दूर, स्त्रीसुख, सम्पत्ति-विवाद एवं घरेलू झंझट से बचें, निजीजनों से अनबन, सेहत ठीक रहे। अप्रैल 15, 16, 23, 24; मई 2, 3, 4 अशुभ।

वृश्चिक–रक्त-पित्तविकार, आर्थिक संकट, मानसिक परेशानी बढ़े, स्त्रीपक्ष से लाभ, कारोबार में रद्दोबदल का विचार बने। अप्रैल 17, 18, 25, 26, 27; मई 5, 6अशुभ।

धनु–क्रोध बढ़े, वृथाव्यय हो, चोरों से सावधान, निजीजनों का सहयोग रहे, सम्पत्ति-सुख, स्त्रीकष्ट, कार्यान्तर से लाभ मिले, यात्रा सुखद रहे। अप्रैल 19, 20, 27, 28, 29; मई 7, 8, 9 अशुभ।

मकर–पेट में खराबी, नेत्रपीड़ा अर्थलाभ हो, मित्र-बन्धु-सुख, स्त्रीपक्ष से चिन्ता, कारोबार में सुधार हो। अप्रैल 21, 22, 30; मई 10, 11 अशुभ।

कुम्भ–संक्रमण से परेशानी बढ़े, आय से व्यय अधिक, निजी-बन्धु-मित्रों का सहयोग रहे, विरोधी पक्ष कमज़ोर, स्त्रीपक्ष शुभ रहे। अप्रैल 15, 16, 23, 24; मई 2, 3, 4 अशुभ।

मीन–कफ-वायुरोग, आर्थिक स्थिति ठीक, वृथा व्यय हो, मित्रों से मनमुटाव, सन्तानपक्ष से चिन्ता रहे, स्त्रीपक्ष से सुख, कारोबार में रुकावटें आएं। अप्रैल 17, 18, 25, 26, 27; मई 5, 6 अशुभ।

ज्येष्ठ मास

वृषसंक्रान्ति (14 मई से 14 जून तक, सन 2022 ई.)

(इ, उ, ए, ओ, वा, वी, वू, वे, वो)

वृषसंक्रान्ति–कालीन गोचर ग्रहस्थिति–फल–षष्ठेश एवं लग्नेश शुक्र बृहस्पति के साथ बृहस्पति के क्षेत्र में होने से देश में विपरीत स्थिति का संकेत देता है। शनि-मंगल का कुम्भराशि में योग तुर्की-रूस-चीन-कोरिया में युद्धोन्माद बढ़ाएगा, भारत की प्रभावराशि मकर होने से राजनीतिज्ञों को कठिन स्थितियों का सामना करना पड़ेगा। जन-जीवनोपयोगी वस्तुओं में भारी तेजी से जनता परेशान रहे।

ज्येष्ठ(वृष)संक्रान्ति-कुण्डली

- 2 बु. सू.
- 3
- 4
- 5
- 6
- चं. 7 के.
- 8
- 9
- 10
- मं. 11 श.
- 12 गु. शु.
- 1 रा.

वृषसंक्रान्ति-प्रवेशकाल 14 मई, सन् 2022 ई. को 5 घं. 28 मि. (I.S.T.), मुहूर्त्ती 15, पुण्यकाल अगले दिन मध्याह्न तक,

ज्येष्ठ मास में प्रत्येक राशि के लिए फल

मेष–ऐशो-इशरत में मन लगे, आर्थिक स्थिति में सुधार हो, निजीलोगों से मन अशान्त, सम्पत्ति-कलह, स्त्रीसुख, कारोबार ठीक। मई 16, 17, 25, 26; जून 4, 5 अशुभ।

वृष–वायुपीड़ा, वृथाव्यय हो, बन्धु से सहयोग, सम्पत्तिसुख, स्त्रीपक्ष से शान्ति, राजभय, मासान्त में चोटभय। मई 18, 19, 27, 28, 29; जून 6, 7 अशुभ।

मिथुन–सिर व नेत्रकष्ट, मित्र-बन्धु का सहयोग रहे, स्त्रीकष्ट, शत्रु कमज़ोर रहें, मासान्त में आय से व्यय अधिक हो। मई 20, 21, 22, 30, 31; जून 8, 9, 10 अशुभ।

कर्क–सेहत गड़बड़, अर्थहानिभय, सन्तान हेतु विशेष खर्च, नीच व्यक्ति से अपमानभय, मासान्त ठीक रहे। मई 14, 15, 23, 24; जून 1, 2, 3, 11, 12 अशुभ।

सिंह–कारोबार में लाभ, सम्पत्ति-वादविवाद में न उलझें, मित्र-बन्धु से धोखा, कार्यान्तर का विचार। मई 16, 17, 25, 26; जून 4, 5 अशुभ।

कन्या–सेहत ठीक, पुरातन मसले सुलझें, मित्र-बन्धु का सहयोग रहे, स्त्रीपक्ष से लाभ मिले, नए उद्योग का विचार बने। मई 18, 19, 27, 28, 29; जून 6, 7 अशुभ।

तुला–रक्त-पित्तविकार, आय से व्यय अधिक हो, निजीजनकष्ट, सन्तान-स्त्रीपक्ष से सुख, कारोबार में रद्दोबदल हो, मासान्त शुभ। मई 20, 21, 22, 30, 31; जून 8, 9, 10 अशुभ।

वृश्चिक–गुप्त चिन्ता, रक्तविकार से परेशानी, व्यय अधिक, मित्र-बन्धुसहयोग रहे, स्त्रीपक्ष से लाभ, कारोबार सुधरे। मई 14, 15, 23, 24; जून 1, 2, 3, 11, 12 अशुभ।

धनु–सिर व नेत्रपीड़ा, अचानक धनलाभ हो, मित्रकष्ट से चिन्ता, यात्रा में चोट से बचें, कारोबार ठीक, सन्तान-स्त्रीपक्ष से शुभ समाचार मिले। मई 16, 17, 25, 26; जून 4, 5 अशुभ।

मकर–सेहत ठीक, अर्थलाभ हो, मित्र-बन्धुसुख, सन्तानपक्ष से चिन्ता, स्त्रीकष्ट, कारोबार में वृद्धि के उपाय हों। मई 18, 19, 27, 28, 29; जून 6, 7 अशुभ।

कुम्भ–वायुविकार, अर्थलाभ, लेकिन विशेष व्यय हो, जमीन-जायदाद पाने के योग, संतान व नई योजना हेतु विशेष खर्च हो। मई 20, 21, 22, 30, 31; जून 8, 9, 10 अशुभ।

मीन–सेहत ठीक, अर्थलाभ होकर हानिभय, निजीलोगों से अनबन, स्त्रीपक्ष से सहयोग, कारोबार में रद्दोबदल के बाद सुधार हो। मई 14, 15, 23, 24; जून 1, 2, 3, 11, 12 अशुभ।

आषाढ़ मास

मिथुनसंक्रान्ति (15 जून से 15 जुलाई तक, सन् 2022 ई.)

(क, की, कु, घ, ङ, छ, के, को, ह)

मिथुनसंक्रान्ति-कालीन गोचर ग्रहस्थिति-फल-मिथुन-संक्रान्ति-समय शुक्र-राहु एवं मंगल-गुरु का मेल सीमाप्रान्तों पर भारी अशान्ति का सूचक है।

आषाढ़(मिथुन)संक्रान्ति-कुण्डली

4 | 2 बु. | 5 | 3 सू. | 1 शु. रा. | 6 | गु. 12 मं. | 7 के. | 9 चं. | 11 श. | 8 | 10

अग्निकाण्ड, साम्प्रदायिक उपद्रव हों एवं कुछ देशद्रोही तत्त्व सक्रिय रहें, शासनतन्त्र परेशान रहे। कश्मीर एवं उत्तराखण्ड, छत्तीसगढ़ में उग्रवाद से हानि सम्भव है।

अनाज, घी, गुड़, सोना ,चांदी एवं शेयरों में जोरदार उठा-पटक होगी।

मिथुनसंक्रान्ति-प्रवेशकाल 15 जून, सन् 2022 ई. को 12 घं. 2 मि. (I.S.T.), मुहूर्त्त 30, पुण्यकाल सारा दिन,

आषाढ़ मास में प्रत्येक राशि के लिए फल

मेष–राजपक्ष में भय, धनलाभ होकर हानिभय, कर्जा सिर चढ़े, सन्तानपक्ष से सुख, अपमानभय, यात्रा में चोटभय। जून 21, 22; जुला. 1, 2, 10, 11 अशुभ।

वृष–वायुविकार, शत्रु हतप्रभ, अचानक कष्टभय, आर्थिक संकट रहे, निजी-लोगों से अनबन, मित्र-मिलाप, स्त्रीकष्ट से चिन्ता। जून 15, 16, 23, 24, 25, जुला. 3, 4, 5, 12, 13 अशुभ।

मिथुन–मित्र-बन्धुसुख, सेहत ठीक, स्त्री व सन्ततिकष्ट, यात्रा सुखद रहे, मासान्त में आय से व्यय अधिक हो। जून 17, 18, 26, 27; जुलाई 14, 15 अशुभ।

कर्क–वायुविकार, अर्थलाभ, सन्तान हेतु विशेष खर्च हो, स्त्रीसुख, कारोबार में सुधार हो। जून 19, 20, 28, 29, 30; जुलाई 8, 9 अशुभ।

सिंह–सेहत ठीक, मित्र-बन्धुकष्ट, स्त्रीसुख, कारोबार ठीक, जमीन-जायदाद का लाभ हो। जून 21, 22; जुला. 1, 2, 10, 11 अशुभ।

कन्या–रक्त-पित्तविकार, भाई-बन्धु से अनबन, स्त्रीपक्ष शुभ, कारोबार में वृद्धि, यात्रा में सावधान रहें, कष्टभय है। जून 15, 16, 23, 24, 25; जुला. 3, 4, 5, 12, 13 अशुभ।

तुला–चोटभय, भाई-मित्र का सहयोग रहे, सन्तान-स्त्रीपक्ष शुभ, कारोबार सुधरे। जून 17, 18, 26, 27; जुला. 14, 15 अशुभ।

वृश्चिक–शारीरिक कष्ट, नेत्र पर चोटभय, बन्धुसुख, आर्थिक लाभ हो, गुप्त शत्रु से सावधान रहें, मासान्त में विशेष खर्च हो। जून 19, 20, 28, 29, 30; जुला. 8, 9 अशुभ।

धनु–सेहत ठीक, अर्थलाभ, लेकिन खर्च अधिक हो, भाई-बन्धु का सहारा मिले, कार्यान्तर व स्थानान्तर का विचार बने, स्त्रीपक्ष से चिन्ता रहे। जून 21, 22; जुला. 1, 2, 10, 11 अशुभ।

मकर–वायुविकार, धनलाभ होकर हानिभय, मित्र-बन्धुसुख, मानसिक शान्ति, यात्रा में सावधान, चोटभय है। जून 15, 16, 23, 24, 25; जुला. 3, 4, 5, 12, 13 अशुभ।

कुम्भ–उदरविकार, गुप्त शत्रु से भय, स्त्रीपक्ष में लाभ, कारोबार में रुकावट, कार्यान्तर का विचार, घरेलू झंझटों से दूर रहें। जून 17, 18, 26, 27; जुला. 14, 15 अशुभ।

मीन–सेहत गड़बड़, अर्थलाभ होकर हानिभय, निजीजनों से वैमनस्य, स्त्रीपक्ष से चिन्ता, कारोबार में बाधा से मन परेशान रहे। जून 19, 20, 28, 29, 30; जुला. 8, 9 अशुभ।

श्रावण मास

कर्कसंक्रान्ति (16जुलाई से 16अगस्त तक, सन् 2022 ई.)

(हि, हु, हे, हो, डा, डी, डू, डे, डो)

कर्कसंक्रान्ति-कालीन गोचर ग्रहस्थिति-फल-सूर्य-शनि का समसप्तक एवं मेषस्थ मंगल-राहु का योग देश में उग्रवादजन्य किंवा प्राकृतिकप्रकोप से भारी हानि का संकेत देता है। केरल, बंगाल एवं दिल्ली में सम्प्रदाय-विशेष में भारी रोष एवं अशान्ति रहे। सीमाप्रान्तों पर सीमातिक्रमण से अशान्ति रहे। तेल, घी, गुड़, चना तेज रहें।

श्रावण(कर्क)संक्रान्ति-कुण्डली

5
बु.3 शु.
6
4 सू.
2
7 के.
मं. 1 रा.
8
10 श.
12 गु.
9
11चं.

कर्कसंक्रान्ति–प्रवेशकाल 16जुलाई, सन् 2022 ई. को 22 घं. 55 मि. (I.S.T.), मुहूर्त्ती 15, पुण्यकाल 10 घं. 56मि. बाद,

श्रावण मास में प्रत्येक राशि के लिए फल

मेष–उदरविकार, स्थानान्तरण का योग, आय से व्यय अधिक, मित्रों से मदद, सम्पत्ति-चिन्ता, स्त्री से अनबन, कारोबार ठीक रहे। जुलाई 16, 19, 20, 28, 29, 30; अगस्त 7, 8अशुभ।

वृष–वायुरोग से परेशानी, बन्धुसुख, मित्र-मिलाप, सन्ततिचिन्ता, स्त्रीसुख, कारोबार ठीक, मासान्त में व्यय अधिक। जुलाई 21, 22, 31; अगस्त 1, 9, 10 अशुभ।

मिथुन–गुप्त चिन्ता, आर्थिक स्थिति सुधरे, निजीजन-सहयोग, सन्ततिकष्ट, स्त्रीसुख, मासान्त में परेशानी बढ़े। जुलाई 23, 24, 25; अगस्त 2, 3, 11, 12 अशुभ।

कर्क–सेहत ठीक, लेकिन अचानक यात्रा में कष्टभय है, अर्थलाभ हो, भाई-बन्धु को कष्ट, सन्तानपक्ष से खुशी, शुभ समाचार। जुलाई 16, 17, 26, 27; अगस्त 13, 14 अशुभ।

सिंह–त्वचा-रोग, आय से व्यय अधिक, नई योजना से लाभ, अचानक राजभय से सावधान रहें। जुला. 18, 19, 20, 28, 29, 30; अग. 7, 8अशुभ।

कन्या–सेहत ठीक, शनि का दान करें, कारोबार ठीक, धनलाभ, मासान्त में खर्च अधिक, स्त्रीपक्ष शुभ, विद्यार्थियों को मंगल का दान ठीक रहे। जुला. 21, 22, 31; अग. 1, 9, 10 अशुभ।

तुला–संयम से रहें, घरेलू झगड़े-झंझट से बचें, वाहनसुख, धनलाभ पर्याप्त हो, शत्रु सिर उठाएं, स्त्री से कष्ट, कारोबार ठीक रहे। जुला. 23, 24, 25; अग. 2, 3, 11, 12 अशुभ।

वृश्चिक–रक्तविकार से परेशानी, अर्थलाभ होकर हानि, यात्रा शुभ रहे, मित्र-बन्धुसुख, सन्तान से चिन्ता, स्त्रीसुख, कारोबार ठीक रहे। जुला. 16, 17, 26, 27; अग. 13, 14 अशुभ।

धनु–शरीर में वायुविकार से कष्ट, सन्तानपक्ष से चिन्ता, गुप्त शत्रु से सावधान, कार्यान्तर व स्थानान्तर का विचार बने। जुला. 18, 19, 20, 28, 29, 30; अग. 7, 8अशुभ।

मकर–सेहत ठीक, राजपक्ष से विजय, भाई-बन्धुकष्ट, स्त्रीपक्ष से लाभ रहे, कारोबार में लाभ मिले। जुला. 21, 22, 31; अग. 1, 9, 10 अशुभ।

कुम्भ–जमीन-जायदादसम्बन्धी झगड़े सिरदर्द बनें, निजीलोगों से अनबन, शत्रु बढ़ें, वाहन से चोटभय है, कारोबार प्राय: ठीक रहे। जुला. 23, 24, 25; अग. 2, 3, 11, 12 अशुभ।

मीन–धनहानिभय, गुप्त चिन्ता से परेशानी, सन्तानपक्ष से खुशी, स्त्रीकष्ट, आय से व्यय अधिक रहे। जुला. 16, 17, 26, 27; अग. 13, 14 अशुभ।

भाद्रपद मास

सिंहसंक्रान्ति (17अग. से 16 सितं. तक, सन् 2022 ई.)

(मा, मी, मू, मे, मो, टा, टी, टू, टे)

सिंहसंक्रान्ति-कालीन गोचर ग्रहस्थिति-फल-लग्नस्थ सूर्य-बुध का योग एवं मकरस्थ शनि का शुक्र के साथ समसप्तक एवं स्वराशिस्थ गुरु देश में प्रगतिप्रद योजनाओं को कार्यान्वित करेगा।

उग्रवाद एवं सीमाप्रान्तों पर शान्त्यर्थ सैन्यबल का प्रयोग करना पड़ेगा। राहु एवं चन्द्र का मेल होने से प्रधान नेता को महंगाई एवं आर्थिक संकट कण्ट्रोल करने के लिए कठोर पग उठाने होंगे। रोगविशेष एवं उग्रवाद से जनता परेशान रहे।

सिंहसंक्रान्ति-प्रवेशकाल 17 अग., सन् 2022 ई. को 7 घं. 21 मि. (I.S.T.), मुहूर्त्ती 30, पुण्यकाल मध्याह्न तक,

भाद्रपद मास में प्रत्येक राशि के लिए फल

मेष–सेहत ठीक, अर्थलाभ होकर हानि हो, निजीजन-सहयोग, अच्छे लोगों से मेल, सन्तति-कष्टयोग, राजपक्ष शुभ, कारोबार ठीक रहे। अगस्त 24, 25, 26; सितम्बर 3, 4, 11, 12 अशुभ।

वृष–धनलाभ होकर हानिभय, मित्रों से मेल, सन्तान से सुख, स्त्रीपक्ष से लाभ, कारोबार ठीक, आय से व्यय अधिक हो। अगस्त 27, 28; सितम्बर 5, 6, 13, 14, 15 अशुभ।

मिथुन–सेहत ठीक, अर्थलाभ, निजीजनों से अनबन, वायुविकार, स्त्रीसुख, शत्रु प्रबल, कारोबार ठीक रहे। अगस्त 19, 20, 21, 29, 30, 31; सितम्बर 7, 8, 16अशुभ।

कर्क–उदरविकार, धनलाभ, निजीजनों व मित्रों से मेल, सम्पत्ति-विवाद, सन्तान हेतु विशेष खर्च, स्त्रीकष्ट, कारोबार कुछ ठीक हो। अगस्त 22, 23; सितम्बर 1, 2, 9, 10 अशुभ।

सिंह–सेहत गड़बड़, धनलाभ होकर हानिभय, सम्पत्ति-विवाद, वायुरोग, स्त्रीकष्ट, गुप्त शत्रु से भय रहे। अग. 24, 25, 26; सितं. 3, 4, 11, 12 अशुभ।

कन्या–सेहत ठीक, धनहानि, निजीजनों से अनबन, नई योजनाएं असफल,, फिर भी कारोबार में कुछ तरक्की हो। अग. 27, 28; सितं. 5, 6, 13, 14, 15 अशुभ।

तुला–सेहत कुछ ढीली, कर्जा सिर चढ़े, वृथा-विवाद से बचें, कारोबार गड़बड़, कार्यान्तर व स्थानान्तर का विचार। अग. 19, 20, 21, 29, 30, 31; सितं. 7, 8, 16अशुभ।

वृश्चिक–सेहत गड़बड़, अर्थलाभ, निजीजन व मित्र-बन्धुकष्ट, नई योजना व कार्यान्तर से लाभ, वैभव में मन लगे। अग. 22, 23; सितं. 1, 2, 9, 10 अशुभ।

धनु–सेहत ठीक, धनलाभ, खर्च अधिक, गुप्त चिन्ता, वंशवृद्धि, शुभ समाचार, स्त्रीसुख, मासान्त कष्टप्रद रहे। अग. 24, 25, 26; सितं. 3, 4, 11, 12 अशुभ।

मकर–सिर व नेत्रकष्ट, स्त्रीपक्ष से चिन्ता, कारोबार कमज़ोर, आय से व्यय अधिक, सन्तानार्थ विशेष व्यय हो। अग. 27, 28; सितं. 5, 6, 13, 14, 15 अशुभ।

कुम्भ–सेहत ठीक, निजीजनसहयोग मिले, नई योजना बने, यात्रा में लाभ, स्त्रीकष्ट, गुप्त शत्रु से सावधान रहें, वृथा व्यय हो। अग. 19, 20, 21, 29, 30, 31; सितं. 7, 8, 16अशुभ।

मीन–वायुविकार, धनलाभ हो, अच्छे लोगों से मेल, सन्ततिपक्ष से चिन्ता, कारोबार में कुछ रद्दोबदल हो। अग. 22, 23; सितं. 1, 2, 9, 10 अशुभ।

आश्विन मास

कन्यासंक्रान्ति (17 सितं. से 16 अक्तू. तक, सन् 2022 ई.)

(टो, पा, पी, पू, ष, ण, ठ, पे पो)

कन्यासंक्रान्ति-कालीन गोचर ग्रहस्थिति-फल-लग्न में बुधादित्ययोग एवं उच्चस्थ चन्द्र का मंगल के साथ योग किंच लग्न पर गुरु की दृष्टि प्रधान नेतृत्व को यश प्रदान करेगी। धनस्थान पर शनि की दृष्टि आर्थिक संकट का प्रतीक है, क्योंकि राहु की दृष्टि भी धनस्थान पर है। बुधादित्ययोग एवं स्वस्थ गुरु की लग्न पर दृष्टि देश की सत्तारूढ़ पार्टी की समस्याओं का समाधान कर सकेंगे।

आश्विन(कन्या)संक्रान्ति-कुण्डली

7 के.
5 शु.
8
6 बु. सू.
4
9
3
10 श.
12 गु.
2 चं. मं.
11
1 रा.

कन्यासंक्रान्ति-प्रवेशकाल 16 सितम्बर, सन् 2022 ई. को 7 घं. 20 मि. (I.S.T.), मुहूर्त्त 45, पुण्यकाल मध्याह्न तक,

आश्विन मास में प्रत्येक राशि के लिए शुभाशुभ फल

मेष—सेहत ठीक, धनलाभ हो, भाई-बन्धु-मित्र से लाभ, सन्तानपक्ष से कुछ चिन्ता, स्त्रीपक्ष शुभ, धार्मिक शुभ कार्य हों। सितम्बर 21, 22, 30; अक्तूबर 1, 9, 10 अशुभ।

वृष—वायुविकार, अर्थलाभ होकर हानि, भ्रातृकष्ट, मित्र से धोखाभय, सन्तानसुख, स्त्रीपक्ष से लाभ, कार्यान्तर व स्थानान्तर का विचार बने। सितम्बर 23, 24, 25; अक्तूबर 2, 3, 11, 12 अशुभ।

मिथुन—वायुविकार, धनलाभ, उत्साह बढ़े, सन्ततिकष्ट, स्त्रीपक्ष से चिन्ता, कारोबार पूर्ववत्, खर्च विशेष हो। सितम्बर 17, 26, 27; अक्तूबर 4, 5, 13, 14 अशुभ।

कर्क—धनलाभ होकर हानिभय, मन अशान्त, गुप्त चिन्ता, निजीजन-सहयोग, विरोधी प्रबल, कर्जा सिर चढ़े। सितम्बर 18, 19, 20, 28, 29; अक्तूबर 6, 7, 8, 15, 16 अशुभ।

सिंह—सेहत ठीक, यात्रा में सुख, नई योजना से हानि, भाग्य साथ न दे, कारोबार कमज़ोर, स्त्रीकष्ट, सन्तानसुख। सितं. 21, 22, 30; अक्तू. 1, 9, 10 अशुभ।

कन्या—वायुविकार, अर्थहानि, वृथाव्यय, कार्यान्तर से लाभ, कारोबार में प्रगति, स्त्रीसुख। सितं. 23, 24, 25; अक्तू. 2, 3, 11, 12 अशुभ।

तुला—सेहत ठीक, धनलाभ, निजीजनों से अनबन, गृहकलह, गुप्त चिन्ता, खर्च अधिक, कारोबार ठीक। सितं. 17, 26, 27; अक्तू. 4, 5, 13, 14 अशुभ।

वृश्चिक—सेहत ठीक, धनलाभ, उत्साह बढ़े, अपमानभय, कारोबार ठीक, नए कारोबार की योजना बने। सितं. 18, 19, 20, 28, 29; अक्तू. 6, 7, 8, 15, 16अशुभ।

धनु—रक्त-पित्तविकार, धनलाभ होकर हानि, सन्ततिसुख, स्त्रीकष्ट, कारोबार कुछ ठीक रहे। सितं. 21, 22, 30, अक्तू. 1, 9, 10 अशुभ।

मकर—नेत्र व उदरविकार, क्रोध बढ़े, वृथाविवाद से दूर रहें, मित्र-बन्धुसुख, सम्पत्तिलाभ, कारोबार में बाधा आए। सितं. 23, 24, 25; अक्तू. 2, 3, 11, 12 अशुभ।

कुम्भ—वायुविकार, निजीजन-सहयोग, सन्ततिचिन्ता, स्त्रीसुख, कारोबार कुछ ठीक, खर्च अधिक हो। सितं. 17, 26, 27; अक्तू. 4, 5, 13, 14 अशुभ।

मीन—वायुविकार, धनहानि, निजीजन-सुख, सन्तानपक्ष से चिन्ता, विरोधी कमजोर, स्त्रीपक्ष से लाभ, कारोबार में रद्दोबदल हो। सितं. *18, 19, 20, 28, 29,* अक्तू. 6, 7, 8, 15, 16 अशुभ।

कर्क—यात्रा चिन्ता, क्रोध बढ़े, गृहकलह, शत्रु प्रबल, कारोबार कमजोर, वृथा

कार्त्तिक मास

तुलासंक्रांति (17 अक्तूबर से 15 नवं. तक, सन् 2022 ई.)

(रा, री, रू, रे, रो, ता, ती, तू, ते)

तुलासंक्रांति-कालीन गोचर ग्रहस्थिति-फल—नीचस्थसूर्य पर शनि की विशेष दृष्टि देश में अप्रिय घटना का संकेत देती है। पाक, U.S.A., रूस, चीन एवं तुर्की, कोरिया आदि देशों की नीति, शस्त्रास्त्र-निर्माण की क्षमता, अघोषित युद्धात्मिका आदि विश्व में अशान्ति कर सकते हैं। रुई, सोना, चांदी एवं खाद्य-पदार्थ तेज रहेंगे।

तुलासंक्रान्ति-प्रवेशकाल 17 अक्तूबर, सन् 2022 ई. को 19 घं. 21 मि. (I.S.T.), मुहूर्त्ती 45, पुण्यकाल मध्याह्न बाद,

कार्त्तिक मास में प्रत्येक राशि के लिए शुभाशुभ फल

मेष—रक्त-पित्तविकार, चोरी व ठगी से बचें, गुप्त शत्रु से सावधान, निजीजनों से अनबन, कारोबार बिगड़े। अक्तूबर 18, 19, 27, 28; नवम्बर 5, 6, 14, 15 अशुभ।

वृष—मन अशान्त, गुप्त चिन्ता, अर्थलाभ होकर हानि हो, सन्तान व स्त्रीपक्ष से सुख, कारोबार में हानि, कार्यान्तर का विचार बने। अक्तूबर 20, 21, 22, 29, 30, 31; नवम्बर 7, 8अशुभ।

मिथुन—सिर व नेत्रकष्ट, कर्जा सिर चढ़े, मन अशान्त, घरेलू झंझटों से दूर रहें, स्त्रीकष्ट, कार्यान्तर से हानिभय है। अक्तूबर 23, 24; नवम्बर 1, 2, 9, 10, 11 अशुभ।

कर्क—गुप्त चिन्ता, क्रोध बढ़े, गृहकलह, शत्रु प्रबल, कारोबार कमजोर, वृथा घरेलू झंझटों से बचें। अक्तूबर 25, 26; नवम्बर 3, 4, 12, 13 अशुभ।

सिंह—वाहन से यात्रा में चोटभय, सेहत गड़बड़, धनलाभ होकर अधिक व्यय, निजीजनों से अनबन, नई योजना, कारोबार कमज़ोर रहे। अक्तू. 18, 19, 27, 28; नवं. 5, 6, 14, 15 अशुभ।

कन्या—सेहत ठीक, स्वतन्त्र कार्य में हानि, गृहकलह, सन्तान हेतु विशेष खर्च, स्त्रीसुख, कारोबार में रद्दोबदल हो। अक्तू. 20, 21, 22, 29, 30, 31; नवं. 7, 8अशुभ।

तुला—वायुविकार, कारोबार ठीक, उत्साह बढ़े, घरेलू झंझट से अशान्ति, स्त्री-सन्तानपक्ष से चिन्ता हो। अक्तू. 23, 24; नवं. 1, 2, 9, 10, 11 अशुभ।

वृश्चिक—सेहत ठीक, अर्थहानि, उत्साह बढ़े, स्त्रीकष्ट, कारोबार में रुकावट, खर्च अधिक, विलासिता में मन लगे। अक्तू. 25, 26; नवं. 3, 4, 12, 13 अशुभ।

धनु—सेहत बिगड़े, धनलाभ, आय से व्यय अधिक हो, कारोबार कमजोर, शत्रु बढ़े, कार्यान्तर व स्थानान्तर का विचार। अक्तू. 18, 19, 27, 28; नवं. 5, 6, 14, 15 अशुभ।

मकर—गुप्त चिन्ता, निजीजनों से अनबन, स्त्रीसुख, सन्तति से परेशानी, कारोबार ठप्प। अक्तू. 20, 21, 22, 29, 30, 31; नवं. 7, 8अशुभ।

कुम्भ—रक्त-पित्तविकार, धनहानि, मित्र-बन्धु से सहयोग, शत्रु से परेशानी, स्त्रीकष्ट, कारोबार कुछ ठीक। अक्तू. 23, 24; नवं. 1, 2, 9, 10, 11 अशुभ।

मीन—सेहत ठीक, धनलाभ, लेकिन अचानक वृथा व्यय हो, स्त्रीपक्ष से चिन्ता, घरेलू झंझट, गुप्त शत्रु से सावधान रहें। अक्तू. 25, 26; नवं. 3, 4, 12, 13 अशुभ।

मार्गशीर्ष मास

वृश्चिकसंक्रान्ति (16 नवं. से 15 दिसं. तक, सन् 2022 ई.)

(तो, ना, नी, नू, ने, नो, या, यी, यू)

वृश्चिकसंक्रान्ति-कालीन गोचर ग्रहस्थिति-

मार्गशीर्ष(वृश्चिक)संक्रान्ति-कुण्डली

9
7 के.
10 श.
बु. 8 शु.
सू.
6
11
चं. 5
12 गु.
2 मं.
4
1 रा.
3

फल-सूर्य-बुध-शुक्र का मंगल के साथ समसप्तक एवं लग्न पर पाप-दृष्टि इस मास में अघटित घटनाओं को जन्म देगी। विपक्षी पार्टियां सत्तारूढ़ पार्टी की प्रगतिप्रद योजनाओं में बाधक रहें। देश-सुरक्षा हेतु सैन्य-समृद्धि जरूरी है। सिंहस्थ चन्द्र पर मंगल की दृष्टि प्राकृतिक प्रकोप से हानि का संकेत देती है।

वृश्चिकसंक्रान्ति-प्रवेशकाल 16नवम्बर, सन् 2022 ई. को 19 घं. 14 मि. (I.S.T.), मुहूर्त्ती 30, पुण्यकाल मध्याह्न बाद,

मार्गशीर्ष मास में प्रत्येक राशि के लिए शुभाशुभ फल

मेष–सेहत गड़बड़, अर्थलाभ, निजीजन से अनबन, यात्रा में चोटभय, सन्तान-सुख, कारोबार में सुधार हो। नवम्बर 24, 25; दिसम्बर 2, 3, 12, 13 अशुभ।

वृष–वात-पित्तविकार, कार्यान्तर से लाभ, घरेलू झंझट, मित्रों से सहयोग, स्त्रीपक्ष से चिन्ता, स्थानान्तर का विचार बने। नवम्बर 17, 18, 26, 27; दिसम्बर 4, 5, 6, 14, 15 अशुभ।

मिथुन–उदरविकार, धनहानि, वृथाव्यय, भाई-बन्धुसुख, सन्तान-स्त्रीकष्ट, पार्टनरशिप में हानि, कार्यान्तर का विचार बने। नवम्बर 19, 20, 21, 28, 29; दिसम्बर 7, 8अशुभ।

कर्क–चोटभय, अर्थलाभ होकर हानिभय, मित्र-बन्धुसुख, सन्तान-स्त्रीपक्ष से चिन्ता, कारोबार में घाटा। नवम्बर 22, 23, 30; दिसम्बर 1, 9, 10, 11 अशुभ।

सिंह–वायुविकार, सट्टे आदि से धनहानि, सन्तानकष्ट, शत्रु प्रबल, घरेलू झंझट, सम्पत्ति-विवाद से बचें। नवं. 24, 25; दिसं. 2, 3, 12, 13 अशुभ।

कन्या–रक्त-पित्तविकार, कर्ज़े से बचें, धनहानि से मन चिन्तित, मित्र से अनबन, सन्ततिकष्ट, स्त्रीसुख। नवं. 17, 18, 26, 27; दिसं. 4, 5, 6, 14, 15 अशुभ।

तुला–सेहत ठीक, लेकिन क्रोध को शान्त रखें, वृथा विवाद से बचें, राजपक्ष से कष्टभय, निजीजन से अनबन, कार्यान्तर से लाभ। नवं. 19, 20, 21, 28, 29; दिसं. 7, 8अशुभ।

वृश्चिक–वायुरोग, धनहानि, व्यय अधिक, सन्तानपक्ष व नई योजना से लाभ, कारोबार प्रायः ठीक रहे। नवं. 22, 23, 30; दिसं. 1, 9, 10, 11 अशुभ।

धनु–उदरविकार, स्त्री-पुत्र हेतु विशेष खर्च हो, नीच व्यक्ति से हानिभय, मित्र-बन्धु से सुख, मासान्त में लाभ हो। नवं. 24, 25; दिसं. 2, 3, 12, 13 अशुभ।

मकर–क्रोध न करें, हानिभय, स्त्रीपक्ष से कष्ट, भ्रातृसुख, धनलाभ होकर विशेष व्यय हो, कारोबार में रुकावट हो। नवं. 17, 18, 26, 27; दिसं. 4, 5, 6, 14, 15 अशुभ।

कुम्भ–वायुविकार, धनलाभ हो, भाई-बन्धुसुख, सन्ततिकष्ट, शत्रु कमजोर, स्त्रीपक्ष शुभ, कारोबार कुछ ठीक न चले। नवं. 19, 20, 21, 28, 29; दिसं. 7, 8अशुभ।

मीन–सेहत ठीक, आय-व्यय बराबर, निजीजन-कष्ट, नई योजना से हानि, कार्यान्तर व स्थानान्तर का विचार, स्त्री/सन्तान से चिन्ता। नवं. 22, 23, 30; दिसं. 1, 9, 10, 11 अशुभ।

कर्क–सेहत ठीक, कारोबार में कुछ लाभ, भाई-बन्धु से लाभ, सन्ततिकष्ट,

पौष मास

धनुसंक्रान्ति (16दिसं. 2022 ई. से 13 जन., सन् 2023 ई. तक)

(ये, यो, भा, भी, भू, धा, फ, ढ, भे)

धनुसंक्रान्ति-कालीन गोचर ग्रहस्थिति-फल-लग्नस्थ सूर्य-बुध-शुक्र मंगल की दृष्टि में हैं। कश्मीर आदि सीमाप्रान्तों पर शत्रुदेश की गतिविधि चिन्तनीय रहेगी। व्यापारी वर्ग में असन्तोष से शासनतन्त्र के प्रति जनसाधारण असन्तुष्ट रहे। औद्योगिक क्षेत्रों के विस्तार की योजनाएं आर्थिक संकट से जूझें। प्राकृतिक प्रकोप से पर्वतीय भूभाग में हानि के योग हैं। खाद्य पदार्थ महंगे हों।

पौष(धनु)संक्रान्ति-कुण्डली

धनुसंक्रान्ति-प्रवेशकाल 16दिसम्बर, सन् 2022 ई. को 9 घं. 56मि. (I.S.T.), मुहूर्त्ती 45, पुण्यकाल सारा दिन,

पौष मास में प्रत्येक राशि के लिए शुभाशुभ फल

मेष–समय परेशानी वाला है, शनि-मंगलवार को चोट से बचें, आर्थिक संकट बढ़े, मित्र से मदद, संतान/स्त्रीचिन्ता, भ्रातृचिन्ता, धैर्य से काम लें। दिसम्बर 21, 22, 29, 30, 31; जनवरी (2023 ई.) 8, 9, अशुभ।

वृष–उदर किंवा नेत्रपीड़ा, कर्जा बढ़े, लेकिन कारोबार एवं बन्धु की मदद से लाभ रहे, मासान्त में विशेष खर्च। दिसम्बर 23, 24; जनवरी (2023 ई.) 1, 2, 10, 11, 12 अशुभ।

मिथुन–क्रोध बढ़े, अर्थलाभ हो, मित्र व निजीजन-सहयोग, उत्साह बढ़े, राजकार्य में सफलता, कारोबार ठीक रहे। दिसम्बर 17, 18, 25, 26; जनवरी (2023 ई.) 3, 4, 13 अशुभ।

कर्क–सेहत ठीक, कारोबार में कुछ लाभ, भाई-बन्धु से लाभ, सन्ततिकष्ट, स्त्रीपक्ष से चिन्ता, मासान्त में खर्च अधिक हो। दिसम्बर 19, 20, 27, 28; जनवरी (2023 ई.) 5, 6, 7 अशुभ।

सिंह–रक्त-पित्तविकार, धनलाभ हो, मित्र से अनबन, सन्तानकष्ट, स्त्रीसुख, कार्यान्तर से लाभ, आय से व्यय अधिक हो। दिसम्बर 21, 22, 29, 30, 31; जनवरी (2023 ई.) 8, 9 अशुभ।

कन्या–वायु-विकार, धनलाभ होकर हानिभय, निजीलोगों से सम्पत्तिविवाद, घरेलू झंझट, स्त्रीपक्ष से लाभ, कारोबार में रद्दोबदल हो। दिसं. 23, 24; जनवरी (2023 ई.) 1, 2, 10, 11, 12 अशुभ।

तुला–सेहत ठीक, आर्थिक संकट का सामना करना पड़े। मित्र वर्ग से मदद, सन्तानसुख, स्त्रीकष्ट, कारोबार कमजोर रहे। दिसं. 17, 18, 25, 26; जनवरी (2023 ई.) 3, 4, 13 अशुभ।

वृश्चिक–उदरविकार, अचानक हानिभय, मित्र-बन्धु से लाभ, स्त्रीकष्ट, कारोबार में सुधार। दिसं. 19, 20, 27, 28; जनवरी (2023 ई.) 5, 6, 7 अशुभ।

धनु–संयम से रहें, अपमान भय है, वृथा व्यय, भाई-मित्र से लाभ, सन्तान-स्त्रीपक्ष से चिन्ता, कारोबार ठीक चले। दिसं. 21, 22, 29, 30, 31; जनवरी (2023 ई.) 8, 9 अशुभ।

मकर–सेहत ठीक, धनलाभ, भाई-बन्धु से सहयोग, सन्तान-कष्ट, स्त्रीसुख, कारोबार ठीक। दिसं. 23, 24; जनवरी (2023 ई.) 1, 2, 10, 11, 12 अशुभ।

कुम्भ–सेहत ठीक, शुभ समाचार, धनलाभ, मित्र-बन्धु से मनमुटाव, स्त्रीसुख, कारोबार में सुधार हो। दिसं. 17, 18, 25, 26; जनवरी (2023 ई.) 3, 4, 13 अशुभ।

मीन–सेहत ठीक, अर्थलाभ होकर हानि हो, मित्र-बन्धु से विरोध, सम्पत्ति-विवाद, स्त्री व सन्तानसुख, नए उद्योग का विचार बने। दिसं. 19, 20, 27, 28; जनवरी (2023 ई.) 5, 6, 7 अशुभ।

माघ मास

मकरसंक्रान्ति (14 जनवरी से 12 फरवरी, सन् 2023 ई. तक)

(भो, जा, जी, जू, जे, जो, खा, खी, खू, खे, खो, गा, गी)

मकरसंक्रान्ति-कालीन गोचर ग्रहस्थिति-फल- लग्न में मकरस्थ शनि-सूर्य एवं शुक्र का मेल भयंकर प्राकृतिक आपदा का सूचक है। कुछ उ. भारतीय प्रान्तों, सीमाप्रान्तों एवं किसी मुस्लिम राष्ट्र में भारी परेशानी एवं हत्याकाण्ड सम्भव है। महंगाई पर कण्ट्रोल करना कठिन होगा। कुछ प्रान्त उग्रवादजन्य जनधनहानिग्रस्त रहें। चावल, घी, चना, गुड़ तेज रहेंगे।

माघ(मकर)संक्रान्ति-कुण्डली

11
9 बु.
12 गु.
शु. 10 श. सू.
8
1 रा.
7 के.
2 मं.
4
6 चं.
3
5

मकरसंक्रान्ति-प्रवेशकाल 14 जनवरी, सन् 2023 ई. को 20 घं. 43 मि. (I.S.T.), मुहूर्त्ती 30, पुण्यकाल मध्याह्न बाद एवं अगले दिन मध्याह्न तक,

माघ मास में प्रत्येक राशि के लिए शुभाशुभ फल

मेष–रोगभय, अर्थलाभ होकर वृथा खर्च, बन्धुसुख, सम्पत्तिविवाद, सन्तानसुख, नई योजना से लाभ, स्त्रीपक्ष से चिन्ता, कारोबार में बाधा आए। जनवरी 18, 19, 26, 27; फरवरी 4, 5, 6अशुभ।

वृष–कफ-वायुविकार, आर्थिक स्थिति कमज़ोर, मित्रों से मदद मिले, सन्तान-पक्ष शुभ, नई योजना से लाभ, स्त्रीकष्ट। जनवरी 20, 21, 28, 29; फरवरी 7, 8अशुभ।

मिथुन–बिगड़े काम बनेंगे, कर्ज सिर चढ़े, जमीन-जायदाद लाभ, स्त्री/सन्तान को कष्ट, कार्यान्तर का विचार। जनवरी 22, 23, 30, 31; फरवरी 1, 9, 10, 11 अशुभ।

कर्क–गुप्त चिंता, शूगर से कष्ट, आर्थिक स्थिति सुधरे, निजी-जनसुख, यात्रा में कष्ट, कार्यान्तर से लाभ। जनवरी 15, 16, 17, 24, 25; फरवरी 2, 3, 12 अशुभ।

सिंह–सेहत ठीक, धनलाभ, खर्च अधिक हो, मित्र-बन्धुकष्ट, स्त्रीसुख, नई योजना में बाधा, कारोबार कमज़ोर रहे। जन. 18, 19, 26, 27; फर. 4, 5, 6अशुभ।

कन्या–कफ-वायुविकार, अर्थलाभ होकर हानि हो, निजीजनों से अनबन, स्त्रीपक्ष से लाभ, कारोबार पूर्ववत् 1 जन. 20, 21, 28, 29; फर. 7, 8अशुभ।

तुला–उदरविकार, आय से व्यय अधिक हो, सन्तानपक्ष ठीक, स्त्रीकष्ट, कार्यान्तर से लाभ हो। जन. 22, 23, 30, 31; फर. 1, 9, 10, 11 अशुभ।

वृश्चिक–सेहत बिगड़े, धनलाभ, बन्धुसुख, शत्रु प्रबल, सम्पत्तिलाभ, कारोबार में प्रगति हो। जन. 15, 16, 17, 24, 25; फर. 2, 3, 12 अशुभ।

धनु–धनलाभ होकर हानिभय, निजीजन-सहयोग, सन्तानपक्ष से परेशानी, सम्पत्तिलाभ की योजना, स्त्रीपक्ष से मदद हो। जन. 18, 19, 26, 27; फर. 4, 5, 6अशुभ।

मकर–सेहत ठीक, धनलाभ अच्छा हो, मित्र से अनबन, सन्तानसुख, स्त्रीकष्ट, कार्यान्तर से लाभ हो। जन. 20, 21, 28, 29; फर. 7, 8अशुभ।

कुम्भ–सेहत ठीक रहे, अर्थलाभ होकर हानिभय, मित्र-बन्धुकष्ट, स्त्री एवं सन्तानपक्ष शुभ, आय से व्यय अधिक हो। जन. 22, 23, 30, 31; फर. 1, 9, 10, 11 अशुभ।

मीन–रोगभय, राजपक्ष से भय, आर्थिक संकट, बड़े भाई-बन्धु से सहयोग मिले, स्त्री को वायुरोग से कष्ट, कारोबार ठीक रहे। जन. 15, 16, 17, 24, 25; फर. 2, 3, 12 अशुभ।

फाल्गुन मास

कुम्भसंक्रांति (13 फरवरी से 13 मार्च तक, सन् 2023 ई.)

(गू, गे, गो, सा, सी, सू, से, सो, दा)

कुम्भसंक्रांति-कालीन गोचर ग्रहस्थिति-फल-लग्न में शनि-सूर्य-शुक्र का योग एवं शुक्रक्षेत्री मंगल राजनीतिज्ञों में सत्तासंघर्ष की भावना को प्रबल बनाएगा। देशहितार्थ किये गये कार्यक्षेत्र पर विपक्ष का वैमत्य उजागर होगा। आर्थिक संकट का सामना करना पड़ेगा। **लेकिन वैज्ञानिक क्षेत्र किंवा अन्तरिक्ष अनुसन्धान में भारत उत्तरोत्तर प्रगतिपथ पर रहेगा।** अनाज, चीनी, चांदी, तिलहन एवं शेयर बाजारों में तेजी रहे।

कुम्भसंक्रांति-प्रवेशकाल 13 फरवरी, 2023 ई. को 9 घं. 43 मि. (I.S.T.), मुहूर्त्ती 45, पुण्यकाल 16घं. 8मि. तक,

फाल्गुन मास में प्रत्येक राशि के लिए शुभाशुभ फल

मेष–कष्टभय, गुप्त चिन्ता, अचानक अर्थलाभ, शत्रुपक्ष कमज़ोर, अच्छे लोगों से सहयोग, नई प्रगतिप्रद योजना बने, कारोबार बढ़े। फरवरी 14, 15, 22, 23; मार्च 3, 4, 5, 13 अशुभ।

वृष–सेहत ठीक, धनलाभ हो, भाई-बन्धुसुख, सन्तान व स्त्रीपक्ष से चिन्ता, कारोबार ठीक, नए उद्योग लगें। फरवरी 16, 17, 24, 25; मार्च 6, 7 अशुभ।

मिथुन–सेहत ठीक, हौसला बुलन्द रहे, धनलाभ अच्छा हो, मित्र-बन्धु से कुछ अनबन, मासान्त में आय से व्यय अधिक हो। फरवरी 18, 19, 26, 27, 28; मार्च 8, 9, 10 अशुभ।

कर्क–उलझे मसले हल हों, आय से व्यय अधिक, भाई को कष्ट, राजपक्ष से जय, स्त्रीसुख, कार्यान्तर व स्थानान्तर का विचार बने। फरवरी 20, 21; मार्च 1, 2, 11, 12 अशुभ।

सिंह–वायुविकार, वृथा व्यय, मित्र-बन्धु से लाभ, पुराने झंझट सुलझें। स्त्रीसुख, शुभ कार्य हों। फर. 14, 15, 22, 23; मार्च 3, 4, 5, 13 अशुभ।

कन्या–पेट में विकार, धनलाभ होकर हानिभय, भाई-बन्धु से सुख, स्त्रीकष्ट, सन्तानपक्ष शुभ, शुभ कार्य हों, कारोबार ठीक हो। फर. 16, 17, 24, 25; मार्च 6, 7 अशुभ।

तुला–सेहत ठीक रहे, धनलाभ हो, निजीजन से अनबन, मित्र-बन्धु से मेल, विद्या में सफलता, अकारण कलह से सावधान। फर. 18, 19, 26, 27, 28; मार्च 8, 9, 10 अशुभ।

वृश्चिक–वायुरोग, अर्थलाभ होकर हानिभय, निजीजन-सुख, नई असफल योजना, शुभ कार्य हो, कार्यान्तर से लाभ हो। फर. 20, 21; मार्च 1, 2, 11, 12 अशुभ।

धनु–मधुमेह से परेशानी, धनलाभ पर्याप्त हो, मित्र से अनबन, सन्तानकष्ट, स्त्रीसुख, कार्यान्तर से लाभ हो। फर. 14, 15, 22, 23; मार्च 3, 4, 5, 13 अशुभ।

मकर–सेहत ठीक, धनलाभ होकर हानिभय, स्त्रीपक्ष से सुखलाभ, कार्यान्तर से लाभ मिले। फर. 16, 17, 24, 25; मार्च 6, 7 अशुभ।

कुम्भ–सुखलाभ, गुप्त शत्रु से भय, आर्थिक हानि से अशान्ति, मित्र से सहयोग, सन्तानपक्ष से सुख, नई योजना, कारोबार ठीक रहे। फर. 18, 19, 26, 27, 28; मार्च 8, 9, 10 अशुभ।

मीन–उदरविकार, भाई-बन्धु से सहयोग, नई लाभप्रद योजना बने, स्त्रीपक्ष से चिन्ता, अपमानभय, आय से व्यय अधिक रहे। फर. 20, 21; मार्च 1, 2, 11, 12 अशुभ।

चैत्र मास

मीनसंक्रान्ति (14 मार्च से 13 अप्रैल तक, सन् 2023 ई.)

(दी, दू, थ, झ, ञ, दे दो, चा, चि)

मीनसंक्रान्ति-कालीन गोचर ग्रहस्थिति-फल-लग्नेश गुरु सूर्य के साथ लग्न में ही है। धनस्थान पर स्थित शुक्र-राहु पर शनि की दृष्टि है। धनेश मंगल नीचाकांक्षी है। अत: यह मास राजनैतिक दृष्टि से विशेष उलझनपूर्ण रहेगा। विपक्ष हावी होगा। राजनीतिज्ञ के निधन व हत्याकाण्ड से अशान्ति बने। भयंकर भूकम्प, उग्रवादजन्य जनधनहानि भी संभव है। सीमाप्रान्तों पर सैन्यबल का प्रयोग करना विवशता होगी।

चैत्र(मीन)संक्रान्ति-कुण्डली

शु.1 रा.
श.11बु.
2
12 गु. सू.
10
3 मं.
9
4
6
8 चं.
5
7 के.

मीनसंक्रान्ति-प्रवेशकाल 14/15 मार्च, सन् 2023 ई. को 6घं. 33 मि. (I.S.T.), मुहूर्त्त 15, पुण्यकाल अगले दिन मध्याह्न तक,

चैत्र मास में प्रत्येक राशि के लिए शुभाशुभ फल

मेष—पुराने झंझट हल हों, सेहत प्राय: ठीक, आर्थिक लाभ ठीक रहे, भाई-सुख, मित्र से अनबन, नए विवाद से बचें। मार्च 14, 22, 23, 31; अप्रैल 9, 10, 11 अशुभ।

वृष—क्रोध न करें, हानिभय है, धनलाभ हो, निजीजन-सहयोग, यात्रा में कष्ट, मित्रकष्ट, शुभ कार्य हो, मासान्त शुभ। मार्च 15, 16, 24, 25; अप्रैल 2, 3,4, 12, 13 अशुभ।

मिथुन—वायुविकार, अचानक स्त्रीपक्ष से लाभ, कारोबार ठीक, मासान्त में विशेष खर्च। मार्च 17, 18, 19, 26, 27; अप्रैल 5, 6अशुभ।

कर्क—नेत्र व सिर-पीड़ा, धनलाभ होकर हानिभय, भ्रातृसुख, स्त्रीकष्ट, कार्यान्तर व स्थानान्तर का विचार बने। मार्च 20, 21, 28, 29, 30; अप्रैल 7, 8अशुभ।

सिंह—वायुविकार, धनहानि-भय, भाई-बन्धुसुख, सन्तानसुख, स्त्रीपक्ष से चिन्ता, कार्यान्तर से लाभ। मार्च 14, 22, 23, 31; अप्रैल 9, 10, 11 अशुभ।

कन्या—रक्त-पित्तविकार, धनलाभ होकर हानिभय, स्त्रीपक्ष से लाभ, कारोबार ठीक रहे, मित्र से सहयोग, सन्तान से चिन्ता रहे। मार्च 15, 16, 24, 25; अप्रै. 2, 3, 4, 12, 13 अशुभ।

तुला—धनहानि, गुप्त चिन्ता, कर्जा सिर चढ़े, भाई से सहयोग, मित्रों से अनबन, स्त्रीकष्ट, अशुभ समाचार, मासान्त में लाभ की स्थिति बने। मार्च 17, 18, 19, 26, 27; अप्रै. 5, 6अशुभ।

वृश्चिक—क्रोध न करें, हानिभय है, घरेलू झंझट बढ़े, कार्यान्तर का विचार, भ्रातृ-सुख, मित्रकष्ट, स्त्रीपक्ष शुभ रहे। मार्च 20, 21, 28, 29, 30; अप्रै. 7, 8अशुभ।

धनु—अचानक कष्टभय, यात्रा में सावधान रहें, मासमध्य में शुभलाभ, शनि-राहु का दान करें, कारोबार में लाभ हो। मार्च 14, 22, 23, 31; अप्रै. 9, 10, 11 अशुभ।

मकर—रोगभय, धनलाभ होकर खर्चा अधिक हो, कर्जा उठाना पड़े, मित्र-बन्धुकष्ट, सन्तानसुख, स्त्रीकष्ट, मासान्त शुभ रहे। मार्च 15, 16, 24, 25; अप्रै. 2, 3, 4, 12, 13 अशुभ।

कुम्भ—शत्रु कमज़ोर, सुख-लाभ हो, कारोबार, ठीक, धनलाभ हो, मित्र से मिलाप, घरेलू झंझटों से बचें। मार्च 17, 18, 19, 26, 27; अप्रै. 5, 6अशुभ।

मीन—सेहत ठीक, व्यर्थ के विवाद में न उलझें, भाई से लाभ, सन्तान के पक्ष से चिन्ता, सम्पत्तिलाभ हो। मार्च 20, 21, 28, 29, 30; अप्रै. 7, 8अशुभ।

अथ वर्षराजादि फलादेश (संवत् २०७९ वि.)

(सन् २०२२-२३ ई. की ग्रहपरिषद् का विवरण)

कल्पादि से गतवर्ष १९७२९४९१२३, सृष्टिसंवत् १९५५८८५१२३, श्रीविक्रमी संवत् २०७९, शक संवत् १९४४, श्रीकृष्ण जन्मसंवत् ५२५८, कलिसंवत् ५१२३, सप्तर्षि संवत् ५०९८, श्रीजैन महावीर निर्वाण संवत् २५४७-४८, श्रीबुद्धसंवत् २६४४-४५, हिजरी सन् १४४३-४४, फसली सन् १४२९-३०, ईस्वी सन् २०२२-२३।

संवत् २०७९ वि. में वर्षारम्भ में बार्हस्पत्यमान से 'नल' नामक संवत्सर है। इसका फल 'बृहत्संहिता' में इसप्रकार लिखा है :—गर्मी की फसलें अवर्षणादि कारणों से सूखने (नष्ट) होने लगती हैं। इस संवत्सर में अग्नि से भयंकर जनधन-हानि एवं उग्रवादादि किंवा साम्प्रदायिक उपद्रवों से हानिभय भी है।

'संवत्सर संहिता' के अनुसार **'नल-नामक'** संवत्सर का फल इसप्रकार है—

> **''दुर्भिक्षं जायते घोरं राज्ञां दुर्मतिजं भयम्।**
> **बालहानिश्च रोगेभ्यो नले ज्ञेया समन्ततः।।''**

अर्थात्—'नल' संवत्सर में देश के कुछ प्रान्तों में भयंकर दुर्भिक्ष एवं राजनीतिज्ञों की मनमानी किंवा गलत नीतियों के कारण देश एवं जनता की स्थिति अधिक खराब हो सकती है। बच्चों में भयंकर रोगविशेष से हड़कम्प मच सकता है।

मेघमहोदयानुसार 'नल' नामक संवत्सर का फल इसप्रकार है—''नल-संवत्सरे शनिः स्वामी, अल्पमेघः, चैत्रे रोगपीड़ा, वायुप्रबलः, ज्येष्ठे राज्ञां परस्परं विग्रहः, उत्तरे दुष्कालः।।''

सं. २०७९ वि. का राजा (ग्रहपरिषद् के प्रधान) शनि, मन्त्री गुरु, सस्येश (चौमासी फसलों के स्वामी) शनि, धान्येश (शीतकालीन फसलों के स्वामी) शुक्र, मेघेश (मौसम, वर्षा-पानी के स्वामी) बुध, रसेश (गुड़, खाण्ड, रसकस आदि के स्वामी), चन्द्र, नीरसेश (सर्वविध धातु आदि व्यापार के स्वामी) शनि, फलेश (फल-फूल आदि के स्वामी) मंगल, धनेश (धन-दौलत एवं खजाना के स्वामी) शनि एवं दुर्गेश (सुरक्षा एवं प्रतिरक्षा के स्वामी) बुध हैं।

संवत् २०७९ वि. के उल्लिखित पदाधिकारियों का फल इस प्रकार है—

(१) संवत्सर २०७९ वि. के राजा 'शनि' का फल—

> **''दुर्भिक्षमारकं रोगान् करोति पवनं तथा।**
> **शनैश्चराब्दो दोषांश्च विग्रहांश्चैव भूभुजाम्।।''**

अर्थात्—शनि के वर्ष में उपद्रव, युद्ध-दंगे, मारकाट की घटनाएं अधिक होंगी। अनेकों देशों में परस्पर तनाव व टकराव की स्थिति बनेगी। जनहानि व महामारी से किंवा अनेकत्र उपद्रवों से वातावरण क्षुब्ध रहे। कहीं अवर्षण से दुर्भिक्ष, कहीं तूफान से जनधनहानि हो। शासन को पेयजल-समस्या आदि का सामना करना पड़े। राजनीतिज्ञों में मतभेद गहराएगा, परिणाम शुभंकर नहीं रहें।

(२) मन्त्री 'गुरु' का फल—

> **''विविध-धान्ययुता खलु मेदिनी प्रचुर तोयघना मुदिता भवेत्।**
> **नृपतयो जनलालन-तत्पराः सुरगुरौ खलु मन्त्रिपदान्विते।।''**

अर्थात्—गुरु के मन्त्री होने से सभी अनाजों की पैदावार अच्छी हो, वर्षा पर्याप्त एवं शासन की लोक-लुभावन नीतियों के कारण जनता प्रसन्न रहे।

(३) सस्येश 'शनि' का फल–

''रविसुते यदि सस्यपतौ जनो नृपतिभिः परिपीड़ित-विग्रहः।
गदभयं तुष-धान्यहरं सदा दुरित-वाद-विवाद-रता नराः।।''

अर्थात्–शनि सस्येश हो तो शासन द्वारा लोगों को कष्ट होता है। अनेकविध रोगों द्वारा जनजीवन त्रस्त रहे। अनाज की खड़ी फसलों को प्राकृतिक प्रकोप से हानि हो। जनता में साम्प्रदायिक किंवा झूठे वाद-विवाद पनपें। राजनीतिज्ञ व्यर्थ की अनुशासनात्मक कार्यवाही (मुकद्दमे आदि) में उलझें।

(४) धान्येश 'शुक्र' का फल–

''भृगौ पश्चिमधान्येशे पश्चाद्धान्यं न पच्यते।
सस्यं समर्घतां याति स्वल्पं क्षीरं गवामपि।।''

अर्थात्–धान्येश शुक्र होने से जाड़े की खेतियां पकती नहीं (खराब हो जाती हैं)। पुनरपि अन्न सस्ता हो, दूध की कमी रहे।

(५) मेघेश 'बुध' का फल–

''अमृत-रश्मिसुते यदि वारिपे बहुजलं तुष-धान्यरसादिकम्।
द्विजवराः यजनोत्सुकचेतसो विविध सौख्युता धरणी तदा।।''

अर्थात्–बुध मेघेश हो तो वर्षा अधिक, गेहूं की फसल अच्छी हो। ब्राह्मण लोग धर्म-कर्म में लगे रहें। पृथ्वी पर विविध सुख-समृद्धि रहे।

(६) रसेश 'चन्द्र' का फल–

''अथ विधौ रसपे भुवि मानवा नव-नवैर्विधिभिः प्रियभाषिणः।
जलधरा बहु-वारि-विधायका रसवती धन-धान्यवती मही।।''

अर्थात्–रसेश चन्द्र होने से लोग नए-नए ढंग से अपने मनोभावों को व्यक्त करते हैं, बनावटी विनम्र भाषण करते हैं। वर्षा बहुत हो, पृथ्वी पर धन-धान्य-समृद्धि भी रहे। पेयजल की समस्या न रहे।

(७) नीरसेश 'शनि' का फल–

''त्रपु-पिण्डादि-लौहानामूर्ण–वस्त्रादिनां तथा।
अर्घवृद्धिः प्रजायेत नीरसेशो यदा शनिः।।''

अर्थात्–इस वर्ष शनि के नीरसेश होने से सीसा, पीतल, लोहा एवं ऊनी वस्त्र आदि के बाजार तेज रहें।

(८) फलेश 'मंगल' का फल–

''फलपतिर्यदि भूतनयो भवेत् सुबहु-पुष्प-फलोद्गम-शालिनी।
गतभयाश्च जना जनपालका विविध वाद-विवादनकारकाः।।''

अर्थात्–फलेश मंगल होने से फल-फूलों की उपज अच्छी रहे। जनता भयमुक्त वातावरण में रहे। शासक (राजनीतिज्ञ) लोग परस्पर बहुविध वाद-विवाद में उलझे रहें।

(९) धनेश 'शनि' का फल–

''द्रविणपे रविजे विरलं धनं गदहता धरणी-पतयस्तदा।
अधनिका वणिजः कृषिजीविनो बुधजनाः परिपीड़ित-मानसाः।।''

अर्थात्–धनेश शनि होने से सट्टाबाजारों किंवा शेयरबाजारों में हानि, धनी लोगों में रोग व शोक की मार, व्यापारियों को हानि तथा किसानों को भी नुक्सान उठाना पड़ता है।

(१०) दुर्गेश 'बुध' का फल–

''शशिसुतो यदि दुर्गपतिर्भवेद् विषय-साम्यसुखं तु विशेषतः।
न हि च द्रव्यवतां वणिजां भयं पर-बलागमजं न भयं क्वचित्।।''

अर्थात्–बुध दुर्गेश हो तो जनता मध्यम स्तर के भौतिक सुख भोगती है। धनिकों एवं व्यापारियों में भयमुक्त वातावरण रहता है। शत्रुसेना द्वारा देश की सीमाओं का अतिक्रमण नहीं होता।

नोट–यद्यपि संवत् के इन दशाधिकारियों का फल सर्वत्र अनुभव किया गया है, किन्तु विशेषतः राजा का फल कश्मीर, अफगानिस्तान एवं बराड़ देश में, मन्त्री का फल आन्ध्र, वाल्हीक, उज्जैन एवं मालवा में, सस्येश का पौण्ड्र, विदर्भ में, धान्येश का गुजरात, नर्मदा के तटवर्ती प्रदेश एवं मध्यप्रदेश में, मेघेश का मगध एवं बंगाल में, रसेश का कोंकण एवं गोवा में, नीरसेश का मालवा व बिहार में, धनेश का राजस्थान एवं बाड़मेर में, [illegible]

वर्षा आदि के विश्वामान

वर्षाविश्वा ७, धान्य ५, तृण ५, शीत ३, तेज १७, वायु १३, वृद्धि १५, क्षय १५, विग्रह ११, क्षुधा ११, तृषा १०, निद्रा ७, आलस्य १५, उद्यम १३, शान्ति १५, क्रोध १३, दम्भ ५, लोभ ३, मैथुन १५, रस ९, फल १३, उत्साह ११, उग्रता १, पाप १, पुण्य ७, व्याधि ७, व्याधिनाश ५, आचार ५, अनाचार ११, मृत्यु ९, जन्म १, देशोपद्रव ७, देशस्वास्थ्य ११, चौर १३, चौरनाश १३, अग्नि ११, अग्निशान्ति १५, उद्भिज्ज ११, जरायुज ३, अण्डज ९, स्वेदज १५, टिड्डी ३, तोता ३, मूषक १५, सोना १९, तांबा ७, स्वचक्र ९, परचक्र १५, वृष्टि ३, वृष्टिनाश ११ एवं कर्क संक्रान्ति शनिवारी होने से संवत् विश्वा ५ हैं।

वर्षा हेतु चतुर्मेघ-विचार—आवर्तकादि चतुर्मेघों में इस संवत् २०७९ वि. में '**पुष्कर**' नामक मेघ है।

फल—''**पुष्करे मन्दवृष्टिः स्यात्**''-अर्थात् कहीं सन्तुलित वर्षा, कहीं वर्षा की कमी (अल्पता) अनुभव हो।

नोट—मेघविचारणा में मेघ-चतुष्टय का अधिक महत्त्व है।

वर्षा हेतु नवमेघ-विचार—इस संवत् २०७९ वि. में नवमेघों में '**तम**' नामक मेघ है।

फल—''**रोगाधिक्यं जायते नीरशेषश्चौराधिक्यं नैव धान्यस्य पोषः।**
यस्मिन् वर्षे स्यात्तमो नाम मेघस्तस्मिन् दुःखं प्राप्नुयाल्लोकसंघः॥''

अर्थात्—रोग अधिक हों, पेयजल एवं कृषिकर्म के लिए अनेकत्र वर्षा की कमी अनुभव हो, परिणामस्वरूप धान (चावल) आदि की फसल नष्ट हो। जनता नानाविध रोगों किंवा महामारी आदि से परेशान रहे।

संवत् २०७९ वि. में आवह आदि सप्तवायु-विचार—इस संवत् में '**वायु-सप्तक**' विचार से '**अतिवह**' नामक वायु प्रबल रहेगी।

फल—इस वर्ष '**अतिवह**' नामक वायु का प्रभाव म.प्र., उ.खण्ड, असम, मेघालय, बंगाल, राजस्थान, महाराष्ट्र किंवा उ.प्र. के क्षेत्रों में अनेकत्र भयंकर तूफान, झंझावात एवं आकाशीय बिजली से हानि के रूप में घटित होगा। अतिवह वायु का प्रकोप अनेकत्र खड़ी फसलों के लिए हानिकारक भी रहेगा।

अनन्तादि अष्टनाग—अनन्तादि अष्टनागों में इस वर्ष ''**महापद्म**'' नामक नाग है।

फल—''**महापद्मे महावृष्टिर्यत्र तत्र दुर्भिक्षकम्। महामारि-भयं देशे जन-संहारकारणम्॥**'' **अर्थात्**—कहीं भयंकर वर्षा, कहीं सूखा दुर्भिक्ष का कारण बने। देश में (त्वचारोगादि) भयंकर महामारी से जनता त्रस्त रहे। भयंकर सरीसृप, सर्पादि के दंशादि से जनसामान्य में भय व्याप्त रहे।

द्वादश नागविचार—द्वादशनागों में इस वर्ष '**नन्दसारी**' नामक नाग है।

फल—''**यस्मिन् वर्षे नागराजो नन्दसार्यभिधानकः।**
तस्मिन् वर्षे महावृष्टिं कुरुते नन्दते जनः॥''

अर्थात्—इस वर्ष '**नन्दसारी**' नामक नाग कुछ प्रान्तों भारी वर्षा से जन-धन एवं कृषिक्षेत्र को हानि पहुँचाए। कुछ क्षेत्र, जहां वर्षा का अभाव रहता है, वहां अनुकूल जलवायु से कृषक वर्ग आनन्दित रहे।

वि. संवत् २०७९ में संवत् (समय) का वाहन—इस संवत्सर का '**राजाशनि**' होने से '**समय का वाहन महिष**' (भैंसा) है।

फल—''**राजानो विग्रहं यान्ति वृष्टिनाशो महर्घता।**
भूमिकम्पो भयं घोरं महिषारूढ़े तु वत्सरे॥''

अर्थात्—संवत् २०७९ वि. का वाहन महिष होने से राजनीतिज्ञों में मतभेद बढ़ेंगे। कहीं सत्तापरिवर्तन हो। वर्षा से अभावग्रस्त क्षेत्र में दुर्भिक्ष की स्थिति बने। कहीं भयंकर भूकम्प किंवा महामारी आदि प्राकृतिक प्रकोप से हानि हो, जनता मंहगाई से परेशान रहे।

संवत् २०७९ वि. के चार स्तम्भ

(१) जलस्तम्भ—(चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को रेवती नक्षत्र) ९७.४ प्रतिशत है।

(२) तृणस्तम्भ–(वैशाख शुक्ल प्रतिपदा को भरणी नक्षत्र) ७९.३ प्रतिशत है।

(३) वायुस्तम्भ–(ज्येष्ठ शुक्ल प्रतिपदा का मृगशिरा नक्षत्र) ३५.३ प्रतिशत है।

(४) अन्नस्तम्भ–(आषाढ़ शुक्ल प्रतिपदा को पुनर्वसु नक्षत्र) ४८ प्रतिशत है।

ये उल्लिखित चार स्तम्भ देश के कुशल-क्षेम-ज्ञानार्थ विशेष महत्त्व रखते हैं; क्योंकि सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड की सत्ता जल, वायु, अन्न एवं तृण (जड़ी-बूटियों) आदि पर ही निर्भर हैं। संवत् के शुभारम्भ पर देश की प्राकृतिक व्यवस्था के नियामक इन चार स्तम्भों का आकलन आवश्यक समझा गया है। इन स्तम्भों को **''वर्ष के मर्मस्थान''** माना जाता है।

(१) संवत् २०७९ वि. में **'जलस्तम्भ'** (चैत्र शु. प्रतिपदा को रेवती नक्षत्र) ९७.४ प्रतिशत होने से इस वर्ष बाढ़, वर्षा, भूकम्प, तूफान आदि प्राकृतिक प्रकोप से बिहार, उ.खण्ड, बंगाल, केरल, महाराष्ट्र एवं उ.प्र. आदि प्रान्तों में अनेकत्र भयंकर जनधनहानि होगी। समुद्र तटवर्ती भूभाग पर एवं नेपाल, चीन आदि भारतेतर देशों में भी प्राकृतिक प्रकोप से हानि को योग हैं। भूसे से निकलने वाले अनाज (चावल, ग्वार, बाजरा) की उपज अधिक हो। पशुचारा एवं जड़ी-बूटियां भी सहज उपलब्ध हों।

(२) 'तृणस्तम्भ'–(इस संवत् में वैशाख शुक्ल प्रतिपदा को भरणी नक्षत्र) ७९.३ प्रतिशत है। **स्पष्ट है कि**–जल-तृणस्तम्भ इस वर्ष प्रबल है। अत: जड़ी-बूटियों एवं चावल, ग्वार आदि अनाजों की बहुतायत होने से अनाजों का Export होने से देश की आर्थिक स्थिति प्रबल होगी। इस साल मानसून अगेती आने से ज्वार, बाजरा एवं मरुस्थल में उपजने वाली फसलों से भी कृषकों को लाभ होगा।

(३) इस वर्ष (ज्येष्ठ शुक्ल प्रतिपदा को मृगशिव नक्षत्र) ३५.३ प्रतिशत होने से **'वायुस्तम्भ'** क्षीण है। अत: इस वर्ष प्राकृतिक आपदाओं तूफान, बवंडर, भूकम्प आदि से अनेकत्र हानि के योग बनेंगे। भारत व तमाम दक्षिण एशिया में बाढ़, महामारी आदि किंवा औद्योगिक गैस उत्सर्जन आदि से कुछ प्रान्तों में जनधन-हानि हो। हिमाचल प्रदेश, जम्मू-कश्मीर, उड़ीसा, तामिलनाडु, महाराष्ट्र आदि में कहीं प्राकृतिक आपदा से हानि हो। क्योंकि पृथ्वी के भीतर सीस्मोग्राफिक (वेवस) वायु से आकाश या शून्य में विद्यमान वायु के साथ जब संघर्ष होता है तो भूगर्भान्तर्गत प्लेटें हिलने से भूकम्प आदि दुर्घटनाएं घटित होती हैं। इस बारे यह वर्ष वायुस्तम्भ क्षीण होने से चिन्तनीय ही है।

(४) अन्नस्तम्भ–(इस वर्ष आषाढ़ शुक्ल प्रतिपदा को पुनर्वसु नक्षत्र) ४८ प्रतिशत होने से घरेलू उत्पाद एवं अनेकत्र खड़ी फसलों को हानि पहुंचेगी। जनजीवनोपयोगी कुछ खाद्य पदार्थों का आयात भी करना संभव है।

अनियमित मानसून एवं जनजीवन-सन्तोषार्थ भारत-शासन को चिन्तित रहना होगा। ग्रहस्थिति के अनुसार पर्यावरण किंवा मौसम-प्रणाली में उल्लेखनीय परिवर्तन आने से इन स्तम्भों के प्रतिफलन में चिन्तनीय स्थिति भी बन सकती है, यह भी ध्यान में रखना आवश्यक है। क्योंकि पर्यावरण प्रकृति की प्रतिकूलता एवं ऋतु-विपर्यय को भी प्रभावित करता है।

आर्षमान विचार (सं. २०७९ वि. की रक्षा के लिए चार दुर्ग)

(१) प्रथम आर्ष–(अक्षयतृतीया को **'रोहिणी'** नक्षत्र) ८३.८ प्रतिशत है।

(२) द्वितीय आर्ष–(गत सं. २०७८ वि. में पौष-अमा को मूल नक्षत्र) ६२.३ प्रतिशत है।

(३) तृतीय आर्ष–(श्रावण-पूर्णिमा को श्रावण नक्षत्र) ८५.५ प्रतिशत है।

(४) चतुर्थ आर्ष–(कार्त्तिक-पूर्णिमा को कृत्तिका नक्षत्र) का अभाव है।

नोट–उल्लिखित चारों आर्षमान इस संवत्सर में जनजीवन एवं देश की सुरक्षा, कानून-व्यवस्था, आर्थिक समृद्धि, सामाजिक शान्ति, सर्वविध-समृद्धि किंवा नैतिक मूल्यों को सुनिश्चित करते हैं। ये भी *संवत्सर के मर्मस्थल माने जाते* हैं।

(१) प्रथम आर्ष–वैशाख शुक्ल तृतीया को रोहिणी नक्षत्र ८३.८ प्रतिशत होने से यह दुर्ग प्रबल है। **स्पष्ट संकेत मिलता है कि**–भारत देश की सुरक्षा-व्यवस्था सुदृढ़ रहेगी, विरोधी देश को पराजय का मुख देखना पड़ेगा। सुख-समृद्धि, कानून-व्यवस्था, सामाजिक एवं नैतिक मूल्यवृद्धि एवं जन-जीवन सुव्यवस्थित रहे।

गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार सं. २०७९ वि. के मध्य कहीं प्राकृतिक प्रकोप, भूकम्प, समुद्री तूफान, भयंकर बाढ़, किंवा विस्फोट आदि से हानि के योग है। कुछ प्रान्तों में साम्प्रदायिक घटनाओं एवं महामारी से वातावरण सरकार के लिए चिन्तनीय रह सकता है।

(२) द्वितीय आर्ष–गत सं. २०७८ वि. में पौष अमा को मूल नक्षत्र ६२.३ प्रतिशत है।

द्वितीय आर्ष (किला) भी सुदृढ़ होने से देश-रक्षाशक्ति के सुदृढ़ होने का संकेत देता है। विश्व के प्रतिष्ठित देशों में भारत का प्रभावक्षेत्र बढ़ेगा। नए कार्यक्रम एवं नई योजनाओं से भारत समृद्धि की ओर अग्रेसर रहेगा। अन्तरिक्ष विज्ञान में भारत विश्व में अपना विशेष स्थान बनाएगा। देश को हरेक क्षेत्र में अग्रणी भूमिका के लिए सरकार के प्रयास प्रशंसनीय रहेंगे।

तृतीय आर्ष–श्रावण पूर्णिमा को श्रवण नक्षत्र ८५.५ प्रतिशत होने से यह आर्ष भी पूर्णतया सुदृढ़ है। देश के राजनीतिज्ञ अपना एवं अपनी पार्टियों का प्रभावक्षेत्र बढ़ाने में विशेष रुचि रखेंगे।

संवत् के अन्तिम चरण में राजनीतिज्ञों के कार्य देशहितार्थ न होकर नये-नये घोटाले उजागर होंगे। केन्द्रीय शासनतन्त्र सत्ता को बनाये रखने के लिए प्रयत्नशील रहेगा। आर्थिक संकट देश के सामने उपस्थित होगा। कश्मीर, बंगलादेश, चीन के सीमाप्रान्त चिन्तनीय स्थिति बना सकते हैं।

चतुर्थ आर्ष–कार्तिक-पूर्णिमा को कृत्तिका नक्षत्र का अभाव है। शासनतन्त्र की चेतनाशक्ति प्रगति पर प्रधान नेतृत्व यद्यपि विशेष ध्यान तो न दे सकेंगे लेकिन भारत की गरिमा एवं गणतन्त्र तो बद्धमूल ही रहेंगे।

वर्ष के चार स्तम्भों एवं आर्षमान-विचार से यद्यपि देश की स्थिति तो भूतकालिक राजनैतिक कारणों से विशेष चिन्तनीय नहीं रहेगी। लेकिन नई शासनप्रणाली इसे सुधारने के लिए सशक्त सिद्ध होगी।

दोहा : **''अखैतीज रोहिणी न होई, पौष अमावस मूल न जोई।**
राखी श्रवणो हीन विचारो, कार्त्तिक पुण्यो कृत्तिका टारो।
महीमाह खलबली प्रकाशै, कहै भड्डली साख-विनाशै।।''

संवत् २०७९ वि. में रोहिणी का वास
(वर्षा एवं जलवायु के लिए विशेष)

संवत् २०७९ वि. में **'मेष संक्रान्ति'** १४ अप्रैल, सन् २०२२ ई.में गुरुवार, पू. फा. नक्षत्र, वृद्धि योग एवं सिंहस्थ चन्द्र के समय ८ घं. ४० मि. पर लग रही है। **अतः रोहिणी का वास 'पर्वत' पर है।**

फल–रोहिणी का वास पर्वत पर हो वर्षा की भयंकर कमी होने से कहीं अकाल की स्थिति बनेगी, खड़ी फसलें सूख जाती हैं–

''रोहिणी-नाम नक्षत्रं पर्वतस्थ यदा भवेत्।
वृष्टि-हानिस्तदा ज्ञेया सर्वसस्य-विनाशनम्।।''

संवत्सर (समय) का वास–इस संवत में रोहिणी का वास **'पर्वत'** पर होने से संवत् (समय) का वास **कुंभकार (कुम्हार)** के घर है। अतः देश में नई-नई योजनाएं क्रियान्वित होंगी। किसान वर्ग एवं काश्तकारों को सुविधाएं मिलेंगी।

सं. २०७९ वि. में शनि की स्थिति एवं दृष्टि–संवत् २०७९ के प्रारम्भ में शनि मकर में चलेगा। २८ अप्रैल, २०२२ ई. तक मकर में रहेगा। तत्पश्चात् २९ अप्रैल से ११ जुलाई, २०२२ ई. तक कुम्भ में रहेगा। १२ जुलाई, २०२२ ई. से १७ जन., सन् २०२३ ई. तक पुनः मकर में आएगा। १८ जन., २०२३ को कुम्भ में आकर संवत् के अन्त तक कुम्भ में ही रहेगा।

शनि की दृष्टि–संवत् २०७९ वि. में शनि मकर-कुम्भ में विचरण करेगा। **अत: शनि की दृष्टि (मकर-कुम्भस्थ होने से) उत्तर दिशा की तरफ ही रहेगी।**

फल–सं. २०७९ वि. में विशेषकर उत्तरी गोलार्द्ध की दिशा में प्राकृतिक प्रकोप, भूकम्प, जलाप्लाव, हिंसा, शासकों में अस्थिरता एवं राजनैतिक हत्याकाण्ड होंगे। गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार १ अप्रैल, २०२२ ई. से जुलाई, सन् २०२२ ई. तक शनि-मंगल की स्थिति विश्व में व्यापक हिंसा, युद्धात्मक व भारी संकटापन्न स्थिति बना सकती है। मकर-मीन-तुला, मेष एवं वृश्चिक नाम किंवा जन्मराशि वाले शासकों (राजनायिकों) को भारी संकटापन्न स्थिति का सामना करना पड़ेगा।

विशिष्ट व्यक्तियों की सुरक्षा सुनिश्चित करनी आवश्यक है। कहीं प्राकृतिक भूकम्पादि प्रकोप से हानि का योग भी है। मकर नाम राशि वाले देशों एवं राजनीतिज्ञों के लिए शनि-मंगल का सम्बन्ध अशुभ है। अप्रैल सन् २०२२ ई. से जुलाई, सन् २०२२ ई. के लगभग तक भारत को शत्रु की गतिविधि से सावधान रहना होगा, सैन्यबल को तैयार रखना होगा–

''शनैश्चरः क्रमात्पश्यन् तत्तद्देशान् प्रपीडयेत्।
दुर्भिक्ष-देशभंगाद्यैर्विग्रहो राजविड्वरैः।।''

संवत् २०७९ वि. में स्नान-दानार्थ विशेष अमावस्याएं

सोमवती अमावस्याएं इस संवत् में दो हैं–

(१) ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष (३० मई, सन् २०२२ ई.)

(२) फाल्गुन कृ. पक्ष (२० फर., सन् २०२३ ई.)

भौमवती अमावस्याएं भी इस संवत् में दो ही हैं–

(१) कार्तिक कृष्ण पक्ष (२५ अक्तूबर, सन् २०२२ ई.)

(२) चैत्र कृष्ण पक्ष (२१ मार्च, सन् २०२३ ई.)

इस संवत् २०७९ वि. में शनैश्चरी अमावस्याएं तीन हैं–

(१) वैशाख कृष्ण पक्ष (३० अप्रैल, २०२२ ई.)

(२) भाद्रपद कृष्ण पक्ष (२७ अगस्त, सन् २०२२ ई.)

(३) माघ कृष्ण पक्ष (२१ जनवरी, सन् २०२३ ई.)

नोट–सोमवती अमावस्या के दिन चावल आदि अन्न, घी, दूध का दान दक्षिणासहित करें। इस दिन गंगा आदि पवित्र नदियों में स्नान-दान का विशेष महत्त्व है। भौमवती अमा के दिन गोशाला में गुड़ एवं अन्नादि दान करना चाहिए। मंगल ग्रह का मन्त्रजाप एवं गोपूजन करें। इस दिन लाल वस्त्र-दान एवं तीर्थस्थान पर योग्य सच्चरित्र ब्राह्मण को स्वर्णदान करना भी शास्त्रविहित है।

शनैश्चरी अमा को तुलादान, तेलदान, काले तिल, काला कपड़ा एवं काली दाल दान करें।

ध्यान दें–उल्लिखित अमावस्याओं में दान एवं तीर्थस्थान/पूजन आदि का विशेष महत्त्व है। साथ ही अधिकाधिक पंचांगों का योग्य ब्राह्मणों को तीर्थ पर या अन्यत्र भी दान करणा पुण्यप्रद लिखा है। सभी अमावस्याओं पर पूर्वजों को पिण्डदान करने का विधान है।

इस वर्ष की विशेष अमावस्याओं का माहात्म्य

1. इस वर्ष सोमवार को दो अमावस्याएं हैं। **'स्कन्दपुराण'** के अनुसार शिव-मन्दिर में जाकर भगवान् शंकर की पंचोपचारपूजा-पूर्वक सोमेश्वर महादेव का ध्यान करके अनन्तकोटि यज्ञों का फल प्राप्त करें–

''अमा सोमेन संयुक्ता कदाचिद्यदि लभ्यते।
तस्यां सोमेश्वरं पूजय कोटियज्ञ-फलं लभेत।।''

सोमवती अमावस्या को गंगा आदि नदियों किंवा तीर्थों पर स्नान, जप, होम, ब्रह्मभोजन, पितृतर्पण से कुटुम्ब में वृद्धि एवं सुख-समृद्धि प्राप्त होती है–

''सोमवारेण संयुक्ता अमावस्या यदा भवेत्।
तदाऽनन्तफलं श्राद्धं पितृणां दत्तभक्षणम्।।''

'शनैश्चरी अमा' *पूर्वजन्म पापनाशनार्थ एवं ग्रहरोग-शान्त्यर्थ उपयोगी मानी गयी है।*

इस दिन तिल, तेल, माह का दान एवं शनिमन्त्र का जाप किंवा तुलादान करना श्रेयस्कर लिखा है।

संवत् २०७९ वि. में शरत्सस्य-जातकविचार

ध्यान रहे–गर्मी में बोई जाने वाली तथा सर्दी में तैयार होने पर काटी जाने वाली फसलें चावल, मूंग, ज्वार, बाजरा, कपास, अरहर, तिल, तोड़िया, सूरजमुखी, ग्वार, गन्ना, मक्का आदि "**खरीफ फसलों**" को '**शरत्सस्य**' कहा जाता है। शरत्सस्य का विचार वृषस्थ सूर्य से ही किया जाता है।

संवत् २०७९ वि. में वैशाख शुक्ल चतुर्दशी, शनिवार, स्वाती नक्षत्र, व्यतीपात योग एवं तुलास्थ चन्द्र के समय १४/१५ मई, सन् २०२२ ई. को सूर्यदेव ५ घं. २८ मि. पर प्रातः वृषराशि में प्रविष्ट होंगे।

विशेष नोट–शरत् सस्यजातक-विचारार्थ तात्कालीन औदयिक लग्न से फलादेश-विचार उचित नहीं। **अतः सस्यजातक-विचारार्थ यहां सूर्य को ही लग्न मानकर फलविचार शास्त्रविहित है। तदनुसार यहां सूर्य को ही लग्न मानकर फलादेश लिखा गया है।**

वृष-संक्रान्ति १४/१५ मई, २०२२ ई., ५ घं. २८ मि. प्रातः

फल–बुधादित्य योग यद्यपि शुभ है, पुनरपि सूर्य से द्वादशस्थ राहु एवं शनियुत मंगल की सूर्य पर दृष्टि होने से कुछ प्रान्तों में अतिवर्षण किंवा अवर्षण से फसलों को हानि पहुंचेगी। सूर्य से दशमस्थान में शनि-मंगल कुंभराशिस्थ हैं, अतः प्राकृतिक प्रकोप से पश्चिमी एवं दक्षिणी प्रान्तों में व्यापार को हानि पहुंचेगी एवं भयंकर दुर्भिक्ष की स्थिति के संकेत भी मिलते हैं। अलसी, मटर, कुलत्थ, गेहूं, मूंग, बारीक चावल आदि में महर्घता रहेगी। राहु से सप्तमस्थ पापयुत चन्द्र भी अशुभ है–

"राशेर्यस्य क्रूराः पीड़ास्थानेषु संस्थिता बलिनः।
तत्प्रोक्त-द्रव्याणां महर्घता दुर्लभत्वं च।।"

संवत् २०७९ वि. में ग्रीष्म-सस्यजातक

सं. २०७९ वि. में मार्गशीर्ष कृष्णपक्ष अष्टमी, बुधवार, मघानक्षत्र, ब्रह्म योग एवं सिंहस्थ चन्द्र के समय, १९ घं. १४ मि. (भा. स्टैं. टा.) पर **१६ नवम्बर सन् २०२२ ई. को सूर्य वृश्चिक राशि में प्रविष्ट होगा।**

फल–वृश्चिकस्थ सूर्य-बुध एवं शुक्र पर सप्तमस्थ अंगारक (मंगल) की विशेष दृष्टि होने से खड़ी फसलों को हानि पहुंचती है। **बादरायण संहिता** के अनुसार–

"क्रूरान्तस्थः सूर्यो वृश्चिकसंस्थो विनाशयति सस्यम्।
जातं जातं पापः सप्तमसंस्थो विनाशयति।।"

१६ नवम्बर, सन् २०२२ ई., १९ घं. १४ मि. (I.S.T.),

मकरस्थ शनि का चन्द्र के साथ षडष्टक एवं मंगल की चन्द्र पर विशेष दृष्टि कहीं दुर्भिक्ष, कहीं बाढ़ किंवा हि.प्र. के वन्यभाग में अग्निकाण्ड आदि प्राकृतिक प्रकोप से हानिप्रद मालूम देती है। वृश्चिकस्थ सूर्य से छठे राहु एवं सप्तमस्थ मंगल (दोनों स्थान पापयुक्त) होने से अनेकत्र पैदावार अनुकूल होने पर भी मंहगाई से जनता परेशान रहे।

सूर्य का आर्द्रा नक्षत्र में प्रवेश

आषाढ़-कृष्ण-नवमी, बुधवार, तदुसार २२ जून, सन् २०२२ ई. को तात्कालिक नक्षत्र रेवती, शोभन योग वाले दिन ११ घं. ४१ मि. पर सूर्यदेव मीनस्थ चन्द्र के समय आर्द्रा नक्षत्र में प्रविष्ट होंगे। इस समय सिंह लग्न है।

फल–आर्द्राप्रवेश के समय स्वस्थ गुरु के साथ मंगल का योग है। शनि

सप्तमभाव में स्वराशिस्थ है। शुक्र भी स्वराशिस्थ है। अतः जुलाई से अक्तूबर के मध्य अनेक प्रान्तों में वर्षा पर्याप्त होगी, लेकिन सूर्य का आर्द्रा नक्षत्र में प्रवेश दिन में ११ घं. ४१ मि. पर होने से कुछ प्रान्त सूखाग्रस्त रहेंगे–"**दिवार्द्रां याति चेद्भानुर्जल-भक्षणकारकः।**" सूर्य का आर्द्रा नक्षत्र में प्रवेश नवमी तिथि को होने से किसी विशेष महामारी आदि से जनता को भारी आपदा का सामना भी करना पड़ेगा–

सूर्य-आर्द्रा-प्रवेशकालिक कुण्डली

६, ४, ७ के., ५, ३ सू. शु., ८, २ बु., श. ११, ९, १ रा., १०, गु. चं.१२ मं.

२२ जून, सन् २०२२ ई., ११ घं. ४१ मि. (I.S.T.)

"वह्नि-वेदाष्ट-नन्देन्द्रा एतत् संख्यासु भास्करः।
तिथिष्वार्द्रां यदा याति कष्टदः शेषके शुभः॥"

आर्द्रा-प्रवेशकुण्डली में शनि की मेषस्थ राहु एवं मंगल की मिथुनस्थ सूर्य पर विशेष दृष्टि होने से सरकार को पर्यावरण-कंट्रोल करने एवं जन-जीवनोपयोगी वस्तुओं की उपलब्धता के लिए विशेष प्रयास करने होंगे।

संवत् २०७९ वि. का शुभारम्भ

संवत् २०७८ वि. में चैत्र कृष्ण अमावस शुक्रवार, तदनुसार १/२ अप्रैल, सन् २०२२ ई., रेवती नक्षत्र, ऐन्द्रयोग एवं मीनस्थ चन्द्र के समय शुभ संवत् २०७९ वि. का शुभारम्भ ११ बजकर ५४ मि. पर मिथुन लग्न में होगा।

संवत् २०७९ वि. की प्रवेशकुण्डली

४, २ रा., ५, ३, १, ६, सू. १२ चं. बु., ७, ९, गु. ११ शु., ८ के., श.१० मं.

१ अप्रैल, सन् २०२२ ई., ११ घं. ५४ मि. (I.S.T.)

फल–सं. २०७९ वि. का शुभारम्भ मिथुन लग्न में हुआ है। लग्न पर कुम्भ राशिस्थ गुरु की दृष्टि भी है। साथ ही मीनस्थ सूर्य-बुध का मेल है एवं लग्नेश बुध नीच व सूर्य के प्रभाव में हतप्रभ भी है, अतः भारत की राजनीति में विशेष उठापटक के योग हैं। गुरु-शुक्र दोनों परस्पर विरोधी ग्रह कुम्भस्थ हैं, अतः कुछ प्रान्त भयंकर प्राकृतिक आपदाग्रस्त रहें, कहीं सीमाप्रान्तों पर युद्धात्मक स्थिति बनेगी–

"एकत्र गुरु-शुक्रौ वा तदा वृष्टिः रणोऽथवा॥"

क्योंकि भारत की प्रभावराशि मकर में शनि-मंगल हैं। अतः देश के कुछ प्रान्तों में साम्प्रदायिक उपद्रवों किंवा पाक आदि के कारण युद्ध की स्थिति से जनधनहानि बनेगी। सरकार को सचेष्ट (सावधान) रहना होगा–"**युद्धदौ शनि-माहेयौ तथा दुर्भिक्षकारकौ।**"

संवत् की प्रवेशकालीन ग्रहस्थिति इस वर्ष जटिल समस्याओं वाली तो है, परन्तु विश्व में भारत को कुछ सुयश मिले। हालांकि दक्षिण-पश्चिमी प्रान्तों एवं भू-भाग से शत्रुकृत कुचेष्टा से देश को सावधान रहना होगा–

"मारिर्दक्षिण देशे स्यात् तथा बंगेष्व्युपद्रवः।
लोके दुःखं विजानीयात् पश्चिमे ननु विग्रहः॥"

पुनरपि भारत विश्वगुरु के रूप में उदित रहेगा।

सं. २०७९ वि. में वर्षेश/जगत्लग्न-कुण्डली

जब सूर्य निरयण मेषराशि में प्रविष्ट होता है, तो तात्कालिकलग्न ही 'जगत् लग्न' कहलाता है।

तात्कालिक वर्षेश-जगत्लग्न कुण्डली

३, सू. बु. रा. १, गु. १२, ४, २, मं. ११ शु., ५ चं., ६, ८, श. १०, ७ के., ९

१४ अप्रैल, सन् २०२२ ई., ८ घं. ४० मि. (I.S.T.)

संवत् २०७९ वि. में चैत्रशुक्ल-त्रयोदशी, गुरुवार, तदनुसार १४ अप्रैल, सन् २०२२ ई. को पू. फा. नक्षत्र, वृद्धियोग एवं सिंहस्थचन्द्र के समय ८ घं. ४० मि. पर सूर्यदेव मेष राशि में प्रविष्ट होंगे।

फल–लग्नेश शुक्र शनि के क्षेत्र में मंगल के साथ मेल कर रहा है, अतः देश में राजनैतिक

लाभे लाभः सुख-धनचयो दुःख-दारिद्र्यमन्त्ये।

गतिविधि उग्र होगी, रोग से जनता परेशान रहे, देशन्तर्गत साम्प्रदायिक भावना कहीं भारी संकटापन्न स्थिति बनाएगी। कहीं अकाल की स्थिति बनेगी–

''क्रूरः क्रूरार्दितो वा दिशति परभयं कष्टमन्नं महर्घम्।।''

जगत् लग्न का उदय दारुण नक्षत्र पू. फा. में होने से चोरी एवं हत्याकाण्ड आदि की घटनाएं अधिक होंगी। गुरु स्वराशिस्थ होने से इस वर्ष रुलिंग-राजनैतिक पार्टी को पुनः अभ्युदय का अवसर मिलेगा। भारत का प्रभावराशीश शनि प्रबल है। अप्रैल से अगस्त सन् २०२२ ई. के मध्य सीमाप्रान्तों पर शत्रुदेश की नापाक हरकत से सैन्यबल का प्रयोग करने के लिए भी बाध्य होना पड़ेगा।

वर्षेश लग्न में चन्द्र-केतु-सूर्य-बुध-राहु एवं शनि-मंगल की स्थिति कहीं भूकम्प, तूफान आदि से क्षतिकारक है। वर्षेश लग्नानुसार श्रावण, आश्विन, पौष, माघ तक का समय वरिष्ठ नेतृत्व के लिए कष्टप्रद रहेगा। सुरक्षा को सुदृढ़ रखना होगा।

अपने जन्मलग्न से द्वादश भावों में जगत्लग्न का फल इस प्रकार जानिये–

(१) प्रथम भाव से शरीरसुख, (२) धनागम, (३) कुटुम्बवृद्धि (पारिवारिक सुख), (४) मित्र व बन्धुसुख, (५) सन्ततिसुख, (६) शत्रु की पराजय, (७) स्त्रीसुख, (८) रोगभय, मृत्यभय, (९) धर्म-कर्म में प्रवृत्ति किंवा धनलाभ, (१०) धन व सम्मानप्राप्ति, (११) लाभ किंवा अन्य सुख-साधनप्राप्ति तथा (१२) बारहवें भाव से कष्ट व आर्थिक संकट का ज्ञान प्राप्त करें–

''जन्मोदये देहसुखं धनेऽर्थलाभस्तृतीये च कुटुम्बवृद्धिः।
**तुर्ये सुहृत्सौख्यमथात्मजाप्तिं पुत्रे रिपौ शत्रु-पराजयःस्यात्।।
स्त्री-सौख्याप्तिर्भवति मदने मृत्युरुग्भीश्च रन्ध्रे।
धर्मार्थाप्तिस्तपसि दशमे वित्तसौख्यं पदाप्तिः।।
लाभे लाभः सुख-धनचयो दुःख-दारिद्र्यमन्त्ये।
पुंसोर्मेषे प्रविशति रवौ जन्मलग्नाद् विलग्ने।।''**

यदि 'जगत् लग्न' अपने 'जन्मलग्न' से ६, ८ या १२वें भावों में यत्किञ्चित् भी पापी ग्रह के प्रभाव में हो तो वह वर्ष कष्टप्रद किंवा अशुभ रहेगा, ऐसा जानें।

जगत्लग्न से व्यक्तिगत फलविचार

जन्मकुण्डली में लग्न बलवान् हो तो जन्मराशि से जगत्लग्न जिस राशि पर आये, वह भाग शुभग्रह या भावेश से दृष्ट या युक्त हो तो उस वर्ष में उस भाव की वृद्धि कहनी चाहिए। यदि पापग्रह की दृष्टि या योग हो तो उस भाव की हानि कहें। जन्मलग्न, जन्मराशि एवं अपने वर्षलग्न से वर्षेश(जगत्)लग्न आठवें या बारहवें हो तो वह वर्ष उस व्यक्ति के लिए शुभ नहीं होगा।

इसी प्रकार देश एवं ग्राम के शुभाशुभ विचार के लिए भी समझना चाहिए।

गुर्रा-फल (सन् २०२२-२३ ई.)

इस्लामी मतानुसार एक (यकम) मुहर्रम से ही नया हिजरी सन् प्रारम्भ होता है। उस दिन जो वार होता है, वही इस्लामी मतानुसार (उसी वार से सम्बन्धित ग्रह ही) साल का राजा होता है, जो ''गुर्रा'' नाम से जाना जाता है।

संवत् २०७८ वि. में श्रावण शु. द्वितीया मंगलवार, तदनुसार १० अगस्त, सन् २०२१ ई. को यकम (१) मुहर्रम, हिजरी सन् १४४३ का आगाज हुआ था। अतः हिजरी सन् १४४३ का बादशाह मंगल है।

फल–विश्व के अनेक क्षेत्रों में भयंकर अग्निकाण्ड, महामारी, आन्तरिक साम्प्रदायिक झगड़े, सीमासंघर्ष एवं कहीं भूकम्प आदि प्राकृतिक प्रकोप से हानि हो। वर्षा सामयिक किंवा उपयुक्त न होने से कृषिकर्म चिन्तनीय रहे। मंहगाई चरम सीमा पर रहे।

संवत् २०७९ वि. में श्रावण शुक्ल तृतीया रविवार, तदनुसार ३१ जुलाई, सन् २०२२ को यकम मुहर्रम, हिजरी सन् १४४४ का आगाज़ होगा। क्योंकि हिजरी सन् का आगाज़ रविवार को हो रहा है, अतः हिजरी सन् १४४४ का बादशाह सूर्य ही होगा।

फल–वर्षा पर्याप्त हो, धान सस्ते हों। सरकार महंगाई पर कंट्रोल करे। जनता सुखी रहे। पशुधन सुरक्षित रहे। दूध-घी का लाभ सब को मिले। अनेकत्र वायुवेग से हानि भी संभव है। गेहूं, धान एवं तेल-तिलहन की फसल अच्छी हो। कहीं अग्निकाण्ड से हानि हो। कपास की उपज पर्याप्त हो। मुस्लिम राष्ट्रविशेष में अशान्ति एवं कहीं हत्याकाण्ड व सत्तापरिवर्तन हो।

सं. २०७९ वि. में आय-व्यय चक्र (विंशोत्तरी मतानुसार)

सं. २०७९ वि. का राजा शनि है।

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
लाभ	८	२	८	२	५	८	२	८	५	१४	१४	५
व्यय	५	१४	११	८	५	११	१४	५	११	११	११	११

लाभ-व्यय देखने की विधि–अपनी राशि के लाभ-व्यय-अंकों को जोड़कर, उसमें से १ घटाकर शेष को ८ से भाग देने पर यदि १ बचे तो आमदन, २ बचे तो सुख-लाभ, ३ बचने पर क्लेश, ४ शेष रहने पर बीमारी से परेशानी, ५ शेष आने पर अपयश, ६ शेष बचने पर इज्जत, ७ शेष आने पर सफलता और ० (शून्य) शेष रहने पर हानि होगी–ऐसा जानें।

''इतीदं वत्सरफलं वत्सरादि तिथौ शुभम्।
यः शृणोति नरो भक्त्या स सुखी वत्सरं भवेत्।।''

विशेष–चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से दस दिन तक नीम के कोमल पत्ते, नीम की मंजरी या निमौली का चूर्ण, सेंधा नमक, इमली, कालीमिर्च, हींग, अजवायन, जीरा, तुलसीदल–ये सब कूट-पीसकर इच्छानुसार खाण्ड या शक्कर में मिलाकर शर्बत बनाकर प्रातः सेवन करने से रक्तविकार, वात-पित्त एवं कफजन्य कष्टों एवं कुष्ठरोग से मुक्ति मिलती है।

....

श्रीमार्त्तण्ड ज्योतिष कार्यालय कुराली (मोहाली) पंजाब के इन युवा-कर्मठ विद्वान् कार्यकर्ताओं का पंचांग-प्रकाशन में भारी सहयोग वस्तुतः प्रशंसनीय है–

''**श्रीमार्त्तण्ड ज्योतिष कार्यालय कुराली**'' के प्रबन्धक, हमारे पूज्यपिता जी के प्रिय शिष्य चि. प्रेमचन्द शर्मा; ग्राम सुन्हाड़-सौर (सोलन) (हि.प्र.) निवासी श्रीकृष्ण शर्मा, शास्त्री, **M.A.**, साहित्याचार्य, वेदाचार्य; नालाबलोग (पंचकूला) निवासी चि. सुरेशानन्द शर्मा, **B.A.** एवं चि. रविसन्धु (सुपुत्र राणा रणजीत सिंह जी) श्रीमार्त्तण्ड पंचांग (हिन्दी), बटुक पंचांग एवं शिरोमणि तिथपत्रिका (पंजाबी) के पाण्डु-लिपि-लेखन एवं प्रूफरीडिंग आदि का काम बड़ी तत्परता, सावधानी और आदरभाव से करते हैं। पंचांग के प्रकाशन-कार्य में हमारा भार इन युवाओं के स्वत्व से भरे इस उत्साहपूर्ण सहयोग से काफी हल्का हुआ है। एतदर्थ इनके निरन्तर प्रगतिमय परम-उज्ज्वल भविष्य के लिए हमारा इन्हें सस्नेह आशीर्वाद है।

–*प्रियव्रत शर्मा, इन्दुशेखर शर्मा,*
(सम्पादक–श्रीमार्त्तण्ड पञ्चाङ्ग)

श्री वि. सं. २०७९, शाक १९४४, चैत्र शुक्ल पक्ष १

(२ से १६ अप्रैल, सन् २०२२ ई.)
(उत्तरायण, उत्तरगोल, वसन्त ऋतु)

बु. १५ अप्रैल से सायं पश्चिम में उदित हो जाएगा।
प्रातः गु. पूर्वक्षितिज में और शु. मं. श. उत्तरोत्तर ऊपर उठे दिखाई देंगे।

दिनमान घ.	दिनमान प.	तिथि	वार	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	योग	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	करण	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	तारीखें प्र. (चैत्र)	अं. (अप्रैल)	श. (चैत्र)	मु. (शाबान)	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल	घ.	प.	चण्डीगढ़ (भा.स्टैं.टा.) सूर्योदय घं.	सूर्योदय मि.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मि.	स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. (भा.स्टैं.टा.) रा.	अं.	क.	वि.	
३०	५९	१	श.	१४	११	रेव.	१२	४५	ऐं.	५	३७	ब.	१४	११	२०	२	१२	२९	मेष	१२	४५	६	१५	१८	३८	११	१८	४	९	चंद्रदर्शन, मु. ३०, पंचक समाप्त १२/४५, चांद्र संवत्सर (A)
३१	३	२	र.	१६	३	अश्वि.	१५	५८	वै.	४	५	कौ.	१६	३	२१	३	१३	र.१	मेष			६	१३	१८	३९	११	१९	३	२१	रमजान मु. प्रारम्भ,
३१	८	३	चं.	१९	१८	भर.	२०	३९	वि.	३	४३	ग.	१९	१८	२२	४	१४	२	वृष	३७	३	६	१२	१८	३९	११	२०	२	३२	भ. ५१/३४ बाद, गौरी तृतीया (गणगौर), आन्दोलन (B)
३१	१२	४	मं.	२३	५६	कृत्ति.	२६	४१	प्री.	४	२८	वि.	२३	५६	२३	५	१५	३	वृष			६	११	१८	४०	११	२१	१	४०	भ. २३/५६ तक, श्री(लक्ष्मी)पंचमी (देखें पृ.13), हयव्रत,
३१	१७	५	बु.	२९	३९	रोहि.	३३	४४	आ.	६	७	बा.	२९	३९	२४	६	१६	४	वृष			६	१०	१८	४०	११	२२	०	४६	शुक्र शत. में २३/०, नाग पंचमी, [नल संवत्सर]
३१	२२	६	गु.	३६	०	मृग.	४१	२१	सौ.	८	२४	कौ.	२	४९	२५	७	१७	५	मिथुन	७	३२	६	८	१८	४१	११	२२	५९	५०	मंगल कुम्भ में २२/५२, स्कन्द षष्ठी,
३१	२६	७	शु.	४२	२४	आर्द्रा	४८	५८	शो.	१०	५४	ग.	९	१२	२६	८	१८	६	मिथुन			६	७	१८	४२	११	२३	५८	५१	भ. ४२/२४ बाद, बुध अश्वि. मेष में १४/३९,
३१	३१	८	श.	४८	१४	पुन.	५६	०	अ.	१३	१२	वि.	१५	११	२७	९	१९	७	कर्क	३९	२२	६	६	१८	४२	११	२४	५७	५०	भ. १५/१९ तक, श्रीदुर्गाष्टमी, अशोकाष्टमी (पुनर्वसुयोग),
३१	३५	९	र.	५२	५६	पुष्य	६०	०	सु.	१४	५३	बा.	२०	३५	२८	१०	२०	८	कर्क			६	५	१८	४३	११	२५	५६	४७	श्रीरामनवमी, नवरात्र समाप्त,
३१	४०	१०	चं.	५६	६	पुष्य	१	५४	धृ.	१५	३४	तै.	२४	३१	२९	११	२१	९	कर्क			६	४	१८	४४	११	२६	५५	४२	नवरात्र-पारणा,
३१	४४	११	मं.	५७	२९	आश्ले.	६	१९	शू.	१४	५९	व.	२६	४७	३०	१२	२२	१०	सिंह	६	१९	६	३	१८	४४	११	२७	५४	३४	भ. २६/४७ से ५७/२९ तक, राहु कृत्ति. १ मेष, केतु (C)
३१	४९	१२	बु.	५७	१	मघा	८	५७	गं.	१३	०	ब.	२७	१५	३१	१३	२३	११	सिंह			६	१	१८	४५	११	२८	५३	२४	गुरु पू.भा. ४ मीन में २४/२२, कामदा एकादशीव्रत (D)
३१	५३	१३	गु.	५४	४९	पू.फा.	९	४८	वृ.	९	३५	कौ.	२५	५५	वै.१	१४	२४	१२	कन्या	२४	४३	६	०	१८	४६	११	२९	५२	१२	सं. सूर्य अश्वि. मेष में ६/४२, मु. ३०, पुण्यकाल १५ घं. (E)
३१	५७	१४	शु.	५१	५	उ.फा.	८	५९	ध्रु. व्या.	४ ५८	४९ ५०	ग.	२२	५७	२	१५	२५	१३	कन्या			५	५९	१८	४६	०	०	५०	५८	भ. ५१/५ बाद, बुध पश्चिम में उदित १८ घं. ४६ मि., (F)
३२	२	१५	श.	४६	७	हस्त	६	४३	ह.	५१	५४	वि.	१८	३६	३	१६	२६	१४	तुला	३५	५	५	५८	१८	४७	०	१	४९	४२	भ. १८/३६ तक, मंगल शत. में १२/३१, चैत्री पूर्णिमा, (G)

(A) २०७९ वि. प्रारम्भ, वासन्त (चैत्र) नवरात्र प्रारम्भ, वर्षफल-श्रवण, तैलाभ्यंग, ध्वजारोहण, निम्बपत्र-प्राशन, गुड़ी पड़वा, चन्द्रव्रत, (B) तृतीया, श्रीमत्स्य जयन्ती, (C) विशा. ३ तुला में २३/३७, कामदा एकादशी व्रत (स्मा). (देखें पृ. 13), दोलोत्सव, (D) (वै.), श्रीविष्णु-दमनोत्सव, (E) ०५ मि. तक, बुध भर. में ४८/२२, प्रदोषव्रत, वैशाखी (पं., हरि. हि.प्र.), अनंग त्रयोदशी, श्रीमहावीर जयन्ती (जैन), (F) दमनक चतुर्दशी, श्रीशिव- दमनोत्सव, गुड फ्राई डे, (G) वैशाखस्नान प्रारम्भ, श्रीसत्यनारायण व्रत, श्रीहनुमान् जयन्ती (द.भा.),

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं. ३० मि. (I.S.T.) ९ अप्रैल

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	२	१०	०	१०	१०	९	१	७
२४	२१	१	१	२८	९	२८	०	०
५७	५२	१२	३१	५९	२७	३४	१०	१०
५१	३२	१२	४	३२	२७	३१	५२	५२
५८	७१७	४५	१२४	१३	६५	४	३	३
५७	२८	२०	२२	४४	२	५७	११	११
-	-	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
-	-	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
रेव. ३	पुन. १	धनि. ३	अश्वि. १	पू.भा. ३	शत. १	धनि. २	कृत्ति. २	विशा. ४

कुण्डली सूर्योदय (९ अप्रै.)

१ बु.; १२ सू.; ११ गु. मं.शु.; १० श.; २ रा.; ३ चं.; ९; ४; ६; ८ के.; ५; ७

लोकभविष्य–इस संवत् का राजा शनि है एवं शनि को इस वर्ष चार पद प्राप्त हैं। अतः यह वर्ष आर्थिक दृष्टि से देश की प्रगति में बाधक रहेगा। शनि की दृष्टि उत्तर में रहने और इस चांद्रमास में पांच शनिवार होने से अनेकत्र भयंकर भूकम्प किंवा अग्निकाण्ड आदि से हानि की घटनाएं होंगी–

"शनेश्च पंचकं दृष्ट्वा पाताले कम्पते फणी।
ईशानदेशभंगश्च वह्निदाहो महर्घता।।"

यह वर्ष प्रधान नेतृत्व के लिए कठिन परिस्थितियां वाला है। राजनैतिक पार्टियां परस्पर विरोधी मन्तव्य से देशहित में परेशानी का कारण बनेंगी।

ग्रहचाल और बाजार का रुख–पक्षारम्भ में रुई, सूत, सोना, चांदी में अच्छी तेजी, घी-तेल मन्दे रहें। ७/८ अप्रैल को अनाज, दालवाना, गुड़, खाण्ड, सोना में अच्छी तेजी बनेगी। ११/१२ अप्रैल को सोना-चांदी-तांबा तेज रहें। १३ अप्रैल से पक्षान्त तक सोना, चांदी, रुई, गुड़, खाण्ड, शक्कर के व्यापारी अच्छी तेजी से लाभ लेंगे।

आकाशलक्षण–अप्रैल ७, ८ एवं ११ से १६ अप्रैल के मध्य मुंबई, पश्चिमी राजस्थान एवं हि.प्र. के कुछ भागों ... किंवा खण्डवृष्टि होगी। उत्तरी भारत में तापमान बढ़ने लगेगा।

कुण्डली सूर्योदय (१६ अप्रै.)

१ सू. बु. रा.; १२ गु.; ११ मं. शु.; १० श.; ९; ८; ७ के.; २

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं. ३० मि. (I.S.T.) १६ अप्रैल

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	५	१०	०	११	१०	९	०	६
१	२१	६	१५	०	१७	२९	२९	२९
४९	२९	२९	३५	३४	६	७	४८	४८
४२	३४	३८	३०	४२	३५	४४	३६	३६
५८	८४७	४५	११२	१३	६६	४	३	३
४२	१८	२२	२८	२३	१९	२८	११	११
-	-	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
-	-	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
अश्वि. १	हस्त ४	धनि. ४	भर. १	पू.भा. ४	शत. ४	धनि. २	कृत्ति. १	चित्रा ३

श्री वि. सं. २०७९, शाक १९४४, वैशाख कृष्ण पक्ष २

(१७ से ३० अप्रैल, सन् २०२२ ई.)
(उत्तरायण, उत्तरगोल, वसन्त-ग्रीष्म ऋतु)

प्रातः गु. शु. मं. पूर्व में, श. पूर्वकपाल में और सायं बु. पश्चिम में दिखाई देगा।

दिनमान		तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		करण	समाप्ति-काल		तारीखें प्र. वैशाख	अं. अप्रैल	श. चैत्र	मु. रमजान	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल			चण्डीगढ़ (भा.स्टैं.टा.) सूर्योदय		सूर्यास्त		स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. (भा.स्टैं.टा.)				
घ.	प.			घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.						घ.	प.	घं.	मि.	घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
३२	६	१	र.	४०	१२	चित्रा स्वाती	३ ५९	१५ १	व.	४४	१५	बा.	१३	१०	४	१७	२७	१५	तुला			५	५७	१८	४७	०	२	४८	२३	
३२	१०	२	चं.	३३	४०	विशा.	५४	१६	सि.	३६	७	तै.	६	५६	५	१८	२८	१६	वृश्चि.	४०	२८	५	५६	१८	४८	०	३	४७	३	शुक्र पू.भा. में ३५/३३, नेप्च्यून पू.भा. ४ मीन में ६/४०,
३२	१५	३	मं.	२६	५०	अनु.	४९	१९	व्य.	२७	४५	व.	०	१५	६	१९	२९	१७	वृश्चि.			५	५५	१८	४९	०	४	४५	४१	भ. ०/१५ से २६/५० तक, श्रीगणेश चतुर्थी व्रत,
३२	१९	४	बु.	१९	५८	ज्येष्ठा	४४	२८	व.	१९	२१	बा.	१९	५८	७	२०	३०	१८	धनु	४४	२८	५	५४	१८	४९	०	५	४४	१७	सूर्य सायन वृष में ५/०३, ग्रीष्म ऋतु प्रारम्भ, अगस्त्य अस्त,
३२	२३	५	गु.	१३	२०	मूल	३९	५६	प.	११	९	तै.	१३	२०	८	२१	वै.१	१९	धनु			५	५३	१८	५०	०	६	४२	५१	
३२	२८	६	शु.	७	७	पू.षा.	३५	५५	शि. सि.	३ ५५	१५ ५३	व.	७	७	९	२२	२	२०	मकर	५०	१	५	५२	१८	५१	०	७	४१	२४	भ. ७/७ से ३४/२० तक, बुध कृत्ति. में २६/०,
३२	३२	७	श.	१	२९	उ.षा.	३२	३६	सा.	४९	८	ब.	१	२९	१०	२३	३	२१	मकर			५	५१	१८	५१	०	८	३९	५५	
अवम		८	श.	५६	३७	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	अष्टमी तिथिक्षय,
३२	३६	९	र.	५२	३७	श्रव.	३०	५	शु.	४३	३	तै.	२४	३७	११	२४	४	२२	कुम्भ	५९	९	५	५०	१८	५२	०	९	३८	२५	पंचक प्रारम्भ ५९/९, बुध वृष में ४६/१८, यूरेनस भर. ३ (A)
३२	४०	१०	चं.	४९	३४	धनि.	२८	२९	शु.	३७	४३	व.	२१	५	१२	२५	५	२३	कुम्भ			५	४९	१८	५३	०	१०	३६	५२	भ. २१/५ से ४९/३४ तक,
३२	४४	११	मं.	४७	३१	शत.	२७	५०	ब्र.	३३	१२	ब.	१८	३२	१३	२६	६	२४	कुम्भ			५	४८	१८	५३	०	११	३५	१९	वरूथिनी एकादशी व्रत (स.), श्रीवल्लभाचार्य जयन्ती
३२	४८	१२	बु.	४६	३३	पू.भा.	२८	१५	ऐं.	२९	३२	कौ.	१७	२	१४	२७	७	२५	मीन	१३	३	५	४७	१८	५४	०	१२	३३	४३	सूर्य भर. में ४६/५१, शुक्र मीन में ३१/१५,
३२	४२	१३	गु.	४६	४२	उ.भा.	२९	४५	वै.	२६	४५	ग.	१६	३७	१५	२८	८	२६	मीन			५	४६	१८	५५	०	१३	३२	६	भ. ४६/४२ बाद, गुरु उ.भा. १ में ३८/५२, प्रदोषव्रत,
३२	५६	१४	शु.	४८	३	रेव.	३२	२३	वि.	२४	५२	वि.	१७	२२	१६	२९	९	२७	मेष	३२	२३	५	४५	१८	५५	०	१४	३०	२८	भ. १७/२२ तक, पंचक समाप्त ३२/२३, शनि धनि. ३ (B)
३३	०	३०	श.	५०	३४	अश्वि.	३६	११	प्री.	२३	५६	च.	१९	१९	१७	३०	१०	२८	मेष			५	४४	१८	५६	०	१५	२८	४८	शुक्र उ.भा. में २७/५२, शनैश्चरी अमा,

(A) में २१/६, (B) कुम्भ में ५/१९, प्लूटो वक्री ४५/४५,

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं. ३० मि. (I.S.T.) २३ अप्रैल

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	९	१०	०	११	१०	९	०	६
८	२	११	२७	२	२४	२९	२९	२९
३९	८	४७	२९	७	५३	३७	२६	२६
५५	३४	१३	५१	१८	५१	२२	२१	२१
५८	८४२	४५	८६	१३	६७	३	३	३
३०	२८	२२	६	०	२०	५५	११	११
-	-	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
-	-	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
अश्वि. ३	उ.षा. २	शत. २	कृत्ति. १	पू.भा. ४	पू.भा. १	धनि. २	कृत्ति. १	विशा. ३

कुण्डली सूर्योदय (२३ अप्रै.)

भाव	ग्रह
१	सू. बु. रा.
२	
३	
४	
५	
६	
७	के.
८	
९	
१०	श. चं.
११	मं. शु.
१२	गु.

लोकभविष्य–वैशाख कृष्ण में चतुर्दशी को शुक्रवार होने से इस वर्ष अन्न की उपज अधिक होने से व्यापारी लाभान्वित होंगे–"**वैशाखस्य चतुर्दश्यां वारौ चेद् गुरु-भार्गवौ। तदा निष्पद्यते धान्यं विपुलं पृथिवीतले।।**" लेकिन इस चान्द्रमास में पांच रविवार होने से कहीं दुर्भिक्ष की स्थिति भी बनेगी एवं कहीं प्रतिष्ठित व्यक्ति के अपदस्थ होने से छत्रभंग भी संभव है–

"यत्र मासे रवेर्वारा जायन्ते पंचसन्ततम्।
दुर्भिक्षं छत्रभंगः स्यात्तदा हि तत्र महद्भयम्।।"

ग्रहचाल और बाजार का रुख–पक्षारम्भ में रुई, चांदी, अफीम में जोरदार घटाबढ़ी चलेगी। २२ से २७ अप्रैल के मध्य और आगे ३० अप्रैल को सोना, चांदी, तांबा, पीतल, गेहूं, जौ, चना, चावल, मोठ, अलसी, सरसों, गुड़, खाण्ड, घी एवं रुई में जोरदार तेजी के झटके आएंगे, लाभ लें।

कुण्डली सूर्योदय (३० अप्रै.)

भाव	ग्रह
१	सू. चं. रा.
२	बु.
३	
४	
५	
६	
७	के.
८	
९	
१०	
११	मं. श.
१२	गु. शु.

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं. ३० मि. (I.S.T.) ३० अप्रैल

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	०	१०	१	११	११	१०	०	६
१५	५	१७	५	३	२	०	२९	२९
२८	४०	४	५३	३६	४७	३	४	४
४८	३०	४०	५०	५५	११	५	६	६
५८	७४७	४५	५२	१२	६८	३	३	३
१८	२९	१९	२०	३१	९	२०	११	११
-	-	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
-	-	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
भर. १	अश्वि. २	शत. ४	कृत्ति. ३	उ.भा. १	पू.भा. ४	धनि. ३	कृत्ति. १	विशा. ३

आकाशलक्षण– अप्रैल १८, २२, २४, २७, २८ एवं ३० अप्रैल के लगभग आसाम, राजस्थान, उड़ीसा एवं उ.प्र. के कुछ भागों में किन्च मुंबई एवं हि.प्र. के ऊपरी भागों में कहीं मेघगर्जना के साथ खण्डवृष्टि के योग हैं।

131 (१ से १६ मई, सन् २०२२ ई.) स्पष्ट सूर्य

श्री वि. सं. २०७९, शाक १९४४, वैशाख शुक्ल पक्ष ३ — **(१ से १६ मई, सन् २०२२ ई.) (उत्तरायण, उत्तरगोल, ग्रीष्म ऋतु)**

बु. १२ मई को पश्चिम में अस्त हो जाएगा। प्रातः गु. शु. मं. पूर्व में और श. पूर्वकपाल में होगा।

दिनमान घ.	दिनमान प.	तिथि	वार	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	योग	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	करण	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	तारीखें प्र. वैशाख	अं. मई	श. वैशाख	मु. रमजान	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल	घ.	प.	चण्डीगढ़ (भा.स्टैं.टा.) सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. (भा.स्टैं.टा.) रा.	अं.	क.	वि.	
३३	४	१	र.	५४	१६	भर.	४१	८	आ.	२३	५५	किं.	२२	२५	१८	१	११	२९	वृष	५७	३२	५	४३	१८	५७	०	१६	२७	६	मई प्रारम्भ,
३३	८	२	चं.	५९	२	कृत्ति.	४७	८	सौ.	२४	४६	बा.	२६	३९	१९	२	१२	३०	वृष			५	४२	१८	५७	०	१७	२५	२२	चन्द्रदर्शन, मु. ३०, श्रीशिवाजी जयन्ती,
३३	१२	३	मं.	६०	०	रोहि.	५४	०	शो.	२६	२२	तै.	३१	५२	२०	३	१३	श.१	वृष			५	४१	१८	५८	०	१८	२३	३७	मंगल पू.भा. में ५१/५१, श्रीपरशुराम जयन्ती, अक्षय (A)
३३	१६	३	बु.	४	४२	मृग.	६०	०	अ.	२८	३३	ग.	४	४२	२१	४	१४	२	मिथुन	२७	४४	५	४०	१८	५९	०	१९	२१	४९	भ. ३७/४६ बाद,
३३	२०	४	गु.	१०	५४	मृग.	१	२९	सु.	३१	४	वि.	१०	५४	२२	५	१५	३	मिथुन			५	३९	१८	५९	०	२०	२०	०	भ. १०/५४ तक,
३३	२३	५	शु.	१७	१५	आर्द्रा	९	१३	धृ.	३३	३७	बा.	१७	१५	२३	६	१६	४	कर्क	५९	४९	५	३९	१९	००	०	२१	१८	९	बुध रोहि. में २९/४९, आद्य जगद्गुरु श्रीशंकराचार्य जयन्ती,
३३	२७	६	श.	२३	१७	पुन.	१६	३९	शू.	३५	४८	तै.	२३	१७	२४	७	१७	५	कर्क			५	३८	१९	१	०	२२	१६	१५	श्रीरामानुजाचार्य जयन्ती (उ.भा.),
३३	३१	७	र.	२८	२८	पुष्य	२३	२०	गं.	३७	१८	व.	२८	२८	२५	८	१८	६	कर्क			५	३७	१९	१	०	२३	१४	२०	भ. २८/२८ बाद, श्रीगंगा जन्म,
३३	३४	८	चं.	३२	२०	आश्ले.	२८	४९	वृ.	३७	४४	वि.	००	२४	२६	९	१९	७	सिंह	२८	४९	५	३६	१९	२	०	२४	१२	२३	भ. ०/२४ तक,
३३	३८	९	मं.	३४	३३	मघा	३२	३९	ध्रु.	३६	५३	बा.	३	२६	२७	१०	२०	८	सिंह			५	३५	१९	३	०	२५	१०	२४	बुध वक्री २९/१८, श्रीजानकी जयन्ती,
३३	४१	१०	बु.	३४	५२	पू.फा.	३४	४१	व्या.	३४	३२	तै.	४	४३	२८	११	२१	९	कन्या	४९	५४	५	३५	१९	३	०	२६	८	२३	सूर्य कृत्ति में ३२/३०,
३३	४५	११	गु.	३३	१४	उ.फा.	३४	४९	ह.	३०	४०	व.	४	०३	२९	१२	२२	१०	कन्या			५	३४	१९	४	०	२७	६	२१	भ. ४/०३ से ३३/१४ तक, शुक्र रेव. में ७/१६, बुध (B)
३३	४८	१२	शु.	२९	४५	हस्त	३३	७	व.	२५	१७	ब.	१	२९	३०	१३	२३	११	कन्या			५	३३	१९	५	०	२८	४	१६	प्रदोषव्रत,
३३	५१	१३	श.	२४	३६	चित्रा	२९	४६	सि.	१८	३३	तै.	२४	३६	ज्ये.१	१४	२४	१२	तुला	१	३७	५	३३	१९	५	०	२९	२	१०	सं. सूर्य वृष में ५९/४९ (देखें पृ. 13), मु. १५, (C)
३३	५५	१४	र.	१८	५	स्वाती	२५	६	व्य.	१०	४०	व.	१८	५	२	१५	२५	१३	तुला			५	३२	१९	६	१	०	०	३	भ. १८/०५ से ४४/१८ तक, गुरु उ.भा. २ में १८/४८, (D)
३३	५८	१५	चं.	१०	३१	विशा.	१९	२५	व. प.	१ ५२	५१ २७	ब.	१०	३१	३	१६	२६	१४	वृश्चिक	५	५५	५	३१	१९	६	१	०	५७	५३	श्रीबुद्ध जयन्ती, बुद्ध पूर्णिमा, वैशाखी पूर्णिमा, (E)

(A) तृतीया (रोहिणी योग), शव्वाल मु. प्रारम्भ, **(B)** पश्चिम में अस्त १९ घं. ०४ मि., मोहिनी एकादशी व्रत (स.), **(C)** पुण्यकाल अगले दिन मध्याह्न तक, वक्री बुध कृत्ति. में ३९/४८, श्रीनृसिंह जयन्ती, **(D)** श्रीकूर्म जयन्ती, श्रीसत्यनारायण व्रत, **(E)** वैशाखस्नान समाप्त,

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं. ३० मि. (I.S.T.) ९ मई

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	३	१०	१	११	११	१०	०	६
२४	२४	२३	१०	५	१३	०	२८	२८
१२	२	५१	३६	२६	४	२९	३५	३५
२४	३५	५२	०	५३	१९	५७	२९	२९
५८	७४२	४५	५	११	६८	२	३	३
१	३२	९	१	४९	५७	३३	११	११
-	-	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
-	-	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
भर. ४	आश्ले. ३	पू.भा. ३	रोहि. २	उ.भा. २	उ.भा. ३	धनि. ३	कृत्ति. २	चित्रा. ३

कुण्डली सूर्योदय (९ मई)

२ बु. — सू. १ रा. — गु. १२ शु. — ३ — मं. ११ — ४ चं. — १० श. — ५ — के. ७ — ९ — ६ — ८

लोकभविष्य—इस पक्ष में शनि-मंगल का कुम्भराशि में एक साथ रहना राजनीतिज्ञों एवं देश के लिए अनिष्ट कारक है। दुर्घटना किंवा प्राकृतिक प्रकोप से जनधनहानि संभव है—"युद्धदौ शनि-माहेयौ तथा दुर्भिक्षकारकौ।"भारत के किसी प्रान्त विशेष में दुर्भिक्ष की स्थिति बनेगी।

ग्रहचाल और बाजार का रुख—पक्षारम्भ में बाजार अस्थिर रहेंगे। ६ से ९ मई के मध्य रुई, कपास, सूत, सोना, चांदी, तेल, तिलहन, चावल, गुड़, खाण्ड, घी, अनाज एवं दालों में अच्छी तेजी से लाभ लें। ९ से १२ मई के मध्य जोरदार मन्दी के झटके आएंगे, सावधान रहें, आगे १४ मई को सभी व्यापारिक वस्तुओं में तेजी से लाभ मिलेगा।

कुण्डली सूर्योदय (१६ मई)

३ — १ रा. — सू. २ बु. — गु. १२ शु. — ४ — मं. ११ श. — ५ — ६ — ८ — १० — चं. ७ के. — ९

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं. ३० मि. (I.S.T.) १६ मई

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	६	१०	१	११	११	१०	०	६
०	२८	२९	९	६	२१	०	२८	२८
५७	३१	७	३१	४७	८	४५	१३	१३
५३	४०	२७	४८	४३	३४	४७	१३	१३
५७	८९१	४४	२५	११	६९	१	३	३
४९	३६	५९	२६	१८	२९	५४	११	११
-	-	मा.	व.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
-	-	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
कृत्ति. २	विशा. ३	पू.भा. ३	कृत्ति. ४	उ.भा. २	रेव. २	धनि. ३	कृत्ति. २	विशा. ३

आकाशलक्षण—मई ४, ६, ९, १०, ११ एवं १२ से १६ मई के अन्तराल में पूर्वी उड़ीसा, उत्तराखण्ड, मेघालय, मुंबई, भूटान, सिक्किम, असम, केरल एवं उ.प्र. के कुछ भागों में बादलचाल तथा खण्डवृष्टि के योग हैं।

श्री वि. सं. २०७९, शाक १९४४, ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष ४

(१७ से ३० मई, सन् २०२२ ई.)
(उत्तरायण, उत्तरगोल, ग्रीष्म ऋतु)

बु. अस्त है। प्रातः शु. पूर्व में, गु. मं. पूर्वकपाल में और श. याम्योत्तरवृत्तासन्न होगा।

दिनमान घ.	दिनमान प.	तिथि	वार	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	योग	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	करण	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	तारीखें प्र. ज्येष्ठ	अं. मई	श. वैशाख	मु. शाबान	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल	घ.	प.	चण्डीगढ़ (भा.स्टैं.टा.) सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. (भा.स्टैं.टा.) रा.	अं.	क.	वि.	
३४	१	१	मं.	२	१६	अनु.	१३	८	शि.	४२	४५	कौ.	२	१६	४	१७	२७	१५	वृश्चिक			५	३१	१९	७	१	१	५५	४३	मंगल मीन में १०/१,
अवम		२	मं.	५३	४४	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	द्वितीया तिथिक्षय,
३४	४	३	बु.	४५	१७	ज्येष्ठा	६	३७	सि.	३३	३	व.	१९	३०	५	१८	२८	१६	धनु	६	३७	५	३०	१९	८	१	२	५३	३०	भ. १९/३० से ४५/१७ तक,
३४	७	४	गु.	३७	१६	मूल पू.षा.	० ५४	१६ २८	सा.	२३	३८	ब.	११	१६	६	१९	२९	१७	धनु			५	३०	१९	८	१	३	५१	१७	श्रीगणेश चतुर्थी व्रत,
३४	१०	५	शु.	३०	०	उ.षा.	४९	३१	शु.	१४	४७	कौ.	३	३८	७	२०	३०	१८	मकर	८	९	५	२९	१९	९	१	४	४९	२	
३४	१३	६	श.	२३	४६	श्रव.	४५	४३	शु. ब्र.	६ ५९	४५ ४०	व.	२३	४६	८	२१	३१	१९	मकर			५	२९	१९	१०	१	५	४६	४६	भ. २३/४६ से ५१/१५ तक, मंगल उ.भा. में ३७/१८, (A)
३४	१६	७	र.	१८	४९	धनि.	४३	१५	ऐं.	५३	४५	ब.	१८	४९	९	२२	ज्ये.१	२०	कुम्भ	१४	१९	५	२८	१९	१०	१	६	४४	२९	पंचक प्रारम्भ १४/१९,
३४	१८	८	चं.	१५	१७	शत.	४२	१४	वै.	४९	२	कौ.	१५	१७	१०	२३	२	२१	कुम्भ			५	२८	१९	११	१	७	४२	११	शुक्र अश्वि. मेष में ३७/२७,
३४	२१	९	मं.	१३	१५	पू.भा.	४२	४४	वि.	४५	३१	ग.	१३	१५	११	२४	३	२२	मीन	२७	२९	५	२७	१९	१२	१	८	३९	५२	भ. ४३/०० बाद,
३४	२३	१०	बु.	१२	४४	उ.भा.	४४	४१	प्री.	४३	१२	वि.	१२	४४	१२	२५	४	२३	मीन			५	२७	१९	१२	१	९	३७	३२	भ. १२/४४ तक, सूर्य रोहि. में २३/३०,
३४	२६	११	गु.	१३	४०	रेव.	४७	५९	आ.	४१	५८	बा.	१३	४०	१३	२६	५	२४	मेष	४७	५९	५	२६	१९	१३	१	१०	३५	११	पंचक समाप्त ४७/५९, अपरा एकादशी व्रत (स.), (B)
३४	२८	१२	शु.	१५	५५	अश्वि.	५२	३०	सौ.	४१	४३	तै.	१५	५५	१४	२७	६	२५	मेष			५	२६	१९	१३	१	११	३२	४९	प्रदोषव्रत,
३४	३१	१३	श.	१९	२०	भर.	५८	२	शो.	४२	१९	व.	१९	२०	१५	२८	७	२६	मेष			५	२६	१९	१४	१	१२	३०	२६	भ. १९/२० से ५१/३३ तक,
३४	३३	१४	र.	२३	४४	कृत्ति.	६०	०	अ.	४३	३८	श.	२३	४४	१६	२९	८	२७	वृष	१४	३५	५	२५	१९	१४	१	१३	२८	२	वट सावित्री व्रत (अमापक्ष),
३४	३५	३०	चं.	२८	५७	कृत्ति.	४	२६	सु.	४५	३१	ना.	२८	५७	१७	३०	९	२८	वृष			५	२५	१९	१५	१	१४	२५	३७	सोमवती अमा, भावुका अमा, श्रीशनैश्चर जयन्ती,

(A) सूर्य सायन मिथुन में ३/३०, **(B)** भद्रकाली एकादशी (पं.),

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं. ३० मि. (I.S.T.) २३ मई

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	१०	११	१	११	११	१०	०	६
७	१०	४	५	८	२९	०	२७	२७
४२	३०	२१	५१	३	१६	५७	५०	५०
११	१९	५०	४७	५८	२५	१	५८	५८
५७	८५८	४४	३४	१०	६९	१	३	३
४१	५५	४८	०	२९	५७	१३	११	११
-	-	मा.	व.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
-	-	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
कृत्ति. ४	भा. २	उ.भा. १	कृत्ति. ३	उ.भा. २	रेव. ४	धनि. ३	कृत्ति. १	[illegible] ३

कुण्डली सूर्योदय (२३ मई)

२ सू. बु.; ३; ४; ५; ६; के. ७; ८; ९; १०; चं. ११ श.; १२ गु. शु.; १ रा. मं.

लोकभविष्य–मीन राशि में मंगल–गुरु का योग एवं राहु–शुक्र पर शनि की दृष्टि और इस चान्द्रमास में 5 मंगलवार होने से ''मंगले मियते राजा''–प्रमाणानुसार यह मास किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति के लिए भयावह है। गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार सीमाप्रान्तों में अशांति, दुर्भिक्ष, किंवा प्राकृतिक आपदा से जनधनहानि संभव है।

ग्रहचाल और बाज़ार का रुख–पक्षारम्भ में गुरु-मंगल का सम्बन्ध सोना, रुई में तेजी करे, चांदी में घटाबढ़ी रहे। २१/२२ मई को सोना-चांदी, रुई, गेहूं, जौ, चना तेज हों, लेकिन २३ मई के लगभग अचानक मन्दा रहे। २५ मई को अनाज, दालें, गुड़, खाण्ड, घी में तेजी रहे।

आकाशलक्षण–मई १६, १७, १८, २१, २३, २४ एवं २५ मई को महाराष्ट्र (मुंबई), भूटान, उड़ीसा, शिलांग, काठमांडु, जम्मू-कश्मीर, उ.प्र. के कुछ भागों, उत्तराखण्ड, बिहार एवं हि.प्र. में वायुवेग एवं मेघगर्जना के साथ अच्छी वर्षा के योग हैं। १७, १८ मई के करीब अनेकत्र वर्षा संभव है।

कुण्डली सूर्योदय (३० मई)

२ सू. चं. बु.; ३; ४; ५; ६; के. ७; ८; ९; १०; श. ११; १२ मं. गु.; शु. १ रा.

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं. ३० मि. (I.S.T.) ३० मई

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	१	११	१	११	०	१०	०	६
१४	९	९	२	९	७	१	२७	२७
२५	९	३४	३५	१५	२७	३	२८	२८
३७	८	३६	२१	४	२१	२९	४२	४२
५७	७१६	४४	१६	९	७०	०	३	३
३४	४३	३१	६	४२	२२	३२	११	११
-	-	मा.	व.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
-	-	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible] १	कृत्ति. ४	[illegible] १	[illegible] १	[illegible] १	[illegible] ३	[illegible] ३	[illegible] १	[illegible] ३

श्री वि. सं. २०७९, शाक १९४४, ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष ५

(३१ मई से १४ जून, सन् २०२२ ई.)
(उत्तरायण, उत्तरगोल, ग्रीष्म ऋतु)

दिनमान घ.	दिनमान प.	तिथि	वार	समाप्तिकाल घ.	समाप्तिकाल प.	नक्षत्र	समाप्तिकाल घ.	समाप्तिकाल प.	योग	समाप्तिकाल घ.	समाप्तिकाल प.	करण	समाप्तिकाल घ.	समाप्तिकाल प.	तारीखें प्र. ज्येष्ठ	अं. मई	श. ज्येष्ठ	मु. शव्वाल	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल	घ.	प.	चण्डीगढ़ (भा.स्टैं.टा.) सूर्योदय घं.	सूर्योदय मि.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मि.	स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. (भा.स्टैं.टा.) रा.	अं.	क.	वि.	पक्षारम्भ में ही बु. प्रातः पूर्व में दिखाई देना आरम्भ हो जाएगा। इस से ऊपर शु. चमकता दीखेगा। इस समय मं. गु. पूर्वकपाल में और श. याम्योत्तरवृत्त में होगा।
३४	३७	१	मं.	३४	४६	रोहि.	११	२९	धृ.	४७	४९	किं.	१	५२	१८	३१	१०	२९	मिथुन	४५	१२	५	२५	१९	१६	१	१५	२३	११	बुध पूर्व में उदित ५ घं. २५ मि.,
३४	३९	२	बु.	४०	५६	मृग.	१८	५८	शू.	५०	२१	बा.	७	५१	१९	जू.१	११	३०	मिथुन			५	२४	१९	१६	१	१६	२०	४३	चन्द्रदर्शन, मु. १५, जून प्रारम्भ,
३४	४१	३	गु.	४७	१२	आर्द्रा	२६	३८	गं.	५२	५६	तै.	१४	४	२०	२	१२	जि.१	मिथुन			५	२४	१९	१७	१	१७	१८	१५	रम्भा तृतीया, श्री महारणा प्रताप जयन्ती (राज.), (A)
३४	४३	४	शु.	५३	१४	पुन.	३४	११	वृ.	५५	२०	व.	२०	१३	२१	३	१३	२	कर्क	१७	२०	५	२४	१९	१७	१	१८	१५	४५	भ. २०/१३ से ५३/१४ तक, बुध मार्गी २०/१५, (B)
३४	४४	५	श.	५८	४१	पुष्य	४१	१६	ध्रु.	५७	१६	ब.	२५	५७	२२	४	१४	३	कर्क			५	२४	१९	१८	१	१९	१३	१४	शुक्र भर. में ०/३४, शनि वक्री ५४/४२,
३४	४६	६	र.	६०	०	आश्ले.	४७	३२	व्या.	५८	२८	कौ.	३०	५५	२३	५	१५	४	सिंह	४७	३२	५	२४	१९	१८	१	२०	१०	४२	अरण्य षष्ठी, विन्ध्यवासिनी पूजा,
३४	४८	६	चं.	३	१०	मघा	५२	३४	ह.	५८	४०	तै.	३	१०	२४	६	१६	५	सिंह			५	२४	१९	१९	१	२१	८	९	
३४	४९	७	मं.	६	१८	पू.फा.	५६	४	व.	५७	३६	व.	६	१८	२५	७	१७	६	सिंह			५	२३	१९	१९	१	२२	५	३५	भ. ६/१८ से ३७/६ तक,
३४	५०	८	बु.	७	४७	उ.फा.	५७	४७	सि.	५५	५	ब.	७	४७	२६	८	१८	७	कन्या	११	४०	५	२३	१९	२०	१	२३	२	५९	सूर्य मृग. में १८/६, मंगल रेव. में ३६/३०,
३४	५२	९	गु.	७	२५	हस्त	५७	३६	व्य.	५१	३	कौ.	७	२५	२७	९	१९	८	कन्या			५	२३	१९	२०	१	२४	०	२२	श्रीगंगा दशहरा (देखें पृ. 14),
३४	५३	१०	शु.	५	७	चित्रा	५५	३२	व.	४५	२८	ग.	५	७	२८	१०	२०	९	तुला	२६	४७	५	२३	१९	२०	१	२४	५७	४४	भ. ३३/३ बाद, निर्जला एकादशी व्रत (स्मा.) (देखें पृ.14),
३४	५४	११	श.	०	५५	स्वाती	५१	४४	प.	३८	२५	वि.	००	५५	२९	११	२१	१०	तुला			५	२३	१९	२१	१	२५	५५	६	भ. ०/५५ तक, निर्जला एकादशी व्रत (वै.), चम्पा द्वादशी, (C)
अवम		१२	श.	५५	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	द्वादशी तिथिक्षय,
३४	५५	१३	र.	४७	३९	विशा.	४६	२७	शि.	३०	६	कौ.	२१	२०	३०	१२	२२	११	वृश्चिक	३२	५२	५	२३	१९	२१	१	२६	५२	२६	प्रदोषव्रत,
३४	५६	१४	चं.	३९	९	अनु.	४०	१	सि.	२०	४५	ग.	१३	२४	३१	१३	२३	१२	वृश्चिक			५	२३	१९	२२	१	२७	४९	४५	भ. ३९/९ बाद, श्रीसत्यनारायण व्रत (देखें पृ.14),
३४	५६	१५	मं.	२९	५५	ज्येष्ठा	३२	५१	सा.	१०	३९	वि.	४	३२	३२	१४	२४	१३	धनु	३२	५१	५	२३	१९	२२	१	२८	४७	४	भ. ४/३२ तक, राहु भर. ४, केतु विशा. २ में १९/६, (D)

(A) जिल्काद मु. प्रारम्भ, (B) गुरु उ.भा. ३ में ४४/४०, बलिदानदिन श्रीगुरु अर्जुनदेव जी, (C) त्रिस्पृशा महाद्वादशी, (D) वट सावित्री व्रत (पूर्णिमा पक्ष),

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं. ३० मि. (I.S.T.) ८ जून

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	४	११	१	११	०	१०	०	६
२३	२७	१६	२	१०	१८	१	२७	२७
२	३३	१३	४३	३७	२	४	०	०
५९	४६	२५	५३	५९	१२	४३	५	५
५७	७७९	४४	२३	८	७०	०	३	३
२३	४	२	४	३४	४३	२२	११	११
-	-	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
-	-	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
रोहि. ४	उ.फा. २	उ.भा. ४	कृत्ति. २	उ.भा. ३	भर. २	धनि. ३	कृत्ति. १	विशा. ३

कुण्डली सूर्योदय (८ जून)

३
रा. १ शु.
४
सू. २ बु.
मं. १२ गु.
५ चं.
श. ११
६
८
१०
के. ७
९

लोकभविष्य–शुक्र-राहु पर शनि की विशेष दृष्टि है, शनि वक्रगति से चल रहा है। प्रतिपदा को मंगलवार भी है, अतः किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति के निधन से किंवा किसी देश-विशेष में अचानक सत्तापरिवर्तन किंवा दुर्भिक्ष आदि प्राकृतिक प्रकोप से भयावह स्थिति बने–

"ज्येष्ठ-शुक्ल-प्रतिपदि यदि स्याद्भौमवासरः।
छत्रभंगं प्रजापीड़ां दुर्भिक्षं च समादिशेत्।।"

ग्रहस्थिति देश में किसी महामारी से हानि का संकेत भी देती है।

ग्रहचाल और बाजार का रुख–३१ मई से ३ जून तक वर्षा किंवा जलवायु प्रतिकूल रहने से सोना, चांदी, तेल, तिलहन, घी, गुड़, खाण्ड मन्दे रहें। चना-दालें तेज रहें। ५ से ७ जून के मध्य सभी बाजार तेज रहें। ८ जून से पक्षान्त तक अनाज, दालवाना, गुड़, खाण्ड, घी में तेजी से लाभ रहे।

आकाशलक्षण–३१ मई, जून ३, ५, ६, ८, ९, १३ एवं १४ जून को उत्तराखंड, हि.प्र., जम्मू-कश्मीर, उ.प्र., उड़ीसा, बिहार एवं उत्तरी भारत में वायुवेग के साथ वर्षा के योग हैं। बंगाल-बिहार एवं आसाम में कुछ भागों में बाढ़ से हानि के योग भी हैं।

कुण्डली सूर्योदय (१४ जून)

३
रा. १ शु.
४
सू. २ बु.
मं. १२ गु.
५
श. ११
६
चं. ८
१०
के. ७
९

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं. ३० मि. (I.S.T.) १४ जून

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	७	११	१	११	०	१०	०	६
२८	२१	२०	६	११	२५	१	२६	२६
४७	४५	३६	६	२७	७	१	४१	४१
३	४५	५०	१०	२५	२५	८	०	०
५७	८५१	४३	४८	७	७१	०	३	३
१८	४७	४३	५	४५	१	५६	११	११
-	-	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
-	-	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
मृग. २	ज्ये. २	रेव. २	कृत्ति. ३	उ.भा. ३	भर. ४	धनि. ३	कृत्ति. १	विशा. ३

श्री वि. सं. २०७९, शाक १९४४, आषाढ़ कृष्ण पक्ष ६

(१५ से २९ जून, सन् २०२२ ई.)
(उत्तर-दक्षिणायन, उत्तरगोल, ग्रीष्म-वर्षा ऋतु)

प्रातः बु. शु. पूर्व में, मं. गु. पूर्वकपाल में और श. याम्योत्तरवृत्त से पश्चिम की ओर दिखाई देगा।

दिनमान		तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		करण	समाप्ति-काल		तारीखें प्र.	अं.	श.	मु.	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल			चण्डीगढ़ (भा.स्टैं.टा.) सूर्योदय		सूर्यास्त		स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. (भा.स्टैं.टा.)				
घ.	प.			घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.	आषाढ़	जून	ज्येष्ठ	ज़िल्काद		घ.	प.	घं.	मि.	घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
३४	५७	१	बु.	२०	२१	मूल	२५	२२	शु. / शु.	० / ४९	९ / ३६	कौ.	२०	२१	१	१५	२५	१४	धनु			५	२३	१९	२२	१	२९	४४	२१	सं. सूर्य मिथुन में १६/४०, मु. ३०, पुण्यकाल सारा दिन, (A)
३४	५८	२	गु.	१०	५४	पू.षा.	१८	३	ब्र.	३९	२०	ग.	१०	५४	२	१६	२६	१५	मकर	३१	१५	५	२४	१९	२३	२	०	४१	३९	भ. ३६/२५ बाद,
३४	५८	३	शु.	१	५८	उ.षा.	११	१९	ऐं.	२९	४३	वि.	१	५८	३	१७	२७	१६	मकर			५	२४	१९	२३	२	१	३८	५५	भ. १/५८ तक, श्रीगणेशचतुर्थी व्रत,
अवम		४	शु.	५३	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	चतुर्थी तिथिक्षय,
३४	५९	५	श.	४७	१९	श्रव.	५	३७	वै.	२१	३	कौ.	२०	३९	४	१८	२८	१७	कुम्भ	३३	१६	५	२४	१९	२३	२	२	३६	११	पंचक प्रारम्भ ३३/१६, बुध रोहि. में १७/४२, शुक्र वृष में ७/१०,
३४	५९	६	र.	४२	१६	धनि. / शत.	१ / ५८	१९ / ४२	वि.	१३	३८	ग.	१४	४७	५	१९	२९	१८	कुम्भ			५	२४	१९	२३	२	३	३३	२७	भ. ४२/१६ बाद,
३४	५९	७	चं.	३९	३	पू.भा.	५७	५७	प्री.	७	३७	वि.	१०	४०	६	२०	३०	१९	मीन	४२	५८	५	२४	१९	२४	२	४	३०	४२	भ. १०/४० तक,
३४	५९	८	मं.	३७	४६	उ.भा.	५९	६	आ.	३	१०	बा.	८	२५	७	२१	३१	२०	मीन			५	२४	१९	२४	२	५	२७	५८	सूर्य सायन कर्क में २३/१९, दक्षिणायन एवम् वर्षा ऋतु प्रारम्भ,
३४	५९	९	बु.	३८	२२	रेव.	६०	०	सौ. / शो.	० / ५८	१४ / ४७	तै.	८	४	८	२२	आ.१	२१	मीन			५	२५	१९	२४	२	६	२५	१३	सूर्य आर्द्रा में १५/४२,
३४	५९	१०	गु.	४०	४२	रेव.	२	३	अ.	५८	३६	व.	९	३२	९	२३	२	२२	मेष	२	३	५	२५	१९	२४	२	७	२२	२८	भ. ९/३२ से ४०/४२ तक, पंचक समाप्त २/३,
३४	५९	११	शु.	४४	२८	अश्वि.	६	३५	सु.	५९	२९	ब.	१२	३५	१०	२४	३	२३	मेष			५	२५	१९	२४	२	८	१९	४३	योगिनी एकादशी व्रत (स.),
३४	५८	१२	श.	४९	२२	भर.	१२	२५	धृ.	६०	०	कौ.	१६	५५	११	२५	४	२४	वृष	२९	३	५	२५	१९	२५	२	९	१६	५८	यूरेनस भर. ४ में १५/५७,
३४	५८	१३	र.	५५	०	कृत्ति.	१९	९	धृ.	१	९	ग.	२२	११	१२	२६	५	२५	वृष			५	२६	१९	२५	२	१०	१४	१२	भ. ५५/० बाद, शुक्र रोहि. में ३१/३०, प्रदोषव्रत,
३४	५७	१४	चं.	६०	०	रोहि.	२६	२९	शू.	३	२१	वि.	२८	२	१३	२७	६	२६	वृष			५	२६	१९	२५	२	११	११	२७	भ. २८/२ तक, मंगल अश्वि. मेष में ०/३३,
३४	५७	१४	मं.	१	५	मृग.	३४	६	गं.	५	५०	श.	१	५	१४	२८	७	२७	मिथुन	०	१७	५	२६	१९	२५	२	१२	८	४१	बुध मृग. में १७/३३, नेप्च्यून वक्री २०/१०,
३४	५६	३०	बु.	७	१८	आर्द्रा	४१	४३	वृ.	८	२६	ना.	७	१८	१५	२९	८	२८	मिथुन			५	२७	१९	२५	२	१३	५	५५	

(A) शुक्र कृत्ति. में १८/३०,

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं. ३० मि. (I.S.T.) २१ जून

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	११	११	१	११	१	१०	०	६
५	३	२५	१३	१२	३	०	२६	२६
२७	५०	४१	२	१८	२५	५२	१८	१८
५८	२९	२५	९	४०	३२	३८	४४	४४
५७	७८४	४३	७३	६	७१	१	३	३
१५	९	१५	५८	४४	२०	३५	११	११
-	-	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
-	-	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

कुण्डली सूर्योदय (२१ जून)

सू. ३ — बु. २ शु. — रा. १ — चं. गु. १२ मं. — श. ११ — १० — ९ — ८ — के. ७ — ६ — ५ — ४

लोकभविष्य–सूर्य पर मंगल की दृष्टि है, पक्षांत में शनि की भी रा. मं. पर दृष्टि है। बुध-शुक्र दोनों वृषस्थ हैं, अतः इस मास में कहीं अग्निकाण्ड, कहीं अनावृष्टि से दुर्भिक्ष की स्थिति बनेगी। कहीं बाढ़ से भयंकर हानि भी होगी। मासान्त के लगभग मेषस्थ मंगल-राहु कहीं अग्निकाण्ड किंवा अन्य प्राकृतिक प्रकोप से जनधनहानि का संकेत देते हैं–

"वक्रे राहुयुते भौमे प्रजापीड़ाग्निना भयः।"

ग्रहचाल और बाजार का रुख–१५ जून को सभी अनाज, दालें एवं सोना-चांदी तेज रहें, लेकिन तुरन्त ही १८ जून तक सभी व्यापारिक वस्तुएं मन्दी रहें। २२ से २७ जून तक शनि-मंगल-राहु की स्थिति सभी अनाजों, घी, तेल, गुड़, खाण्ड, चांदी में अच्छी तेजी करे, बाद में मन्दी रहे।

आकाशलक्षण–जून १५, १६, १८, १९, २२, २३ एवं २६ से २९ जून के मध्य पंजाब, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, चण्डीगढ़, देहली, उत्तराखण्ड, उ. प्रदेश, महाराष्ट्र, उड़ीसा, केरल, आसाम, बंगाल में अनेकत्र वायुवेग के साथ जोरदार वर्षा हो। कुछ प्रान्त बाढ़ग्रस्त भी रहें।

कुण्डली सूर्योदय (२९ जून)

चं. सू. ३ — बु. २ शु. — मं. १ रा. — १२ गु. — श. ११ — १० — ९ — ८ — के. ७ — ६ — ५ — ४

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं. ३० मि. (I.S.T.) २९ जून

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	२	०	१	११	१	१०	०	६
१३	११	१	२४	१३	१२	०	२५	२५
५	४८	२५	२९	८	५७	३७	५३	५३
५५	४	११	१६	३	२५	२४	१७	१७
५७	७१०	४२	१००	५	७१	२	३	३
१४	१	३६	४५	२७	३९	१८	११	११
-	-	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
-	-	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

श्री वि. सं. २०७९, शाक १९४४, आषाढ़ शुक्ल पक्ष ७ | तारीखें | चण्डीगढ़ | स्पष्ट सूर्य | (३० जून से १३ जुलाई, सन् २०२२ ई.) 135

श्री वि. सं. २०७९, शाक १९४४, आषाढ़ शुक्ल पक्ष ७

(३० जून से १३ जुलाई, सन् २०२२ ई.)
(दक्षिणायन, उत्तरगोल, वर्षा ऋतु)

दिनमान घ.	दिनमान प.	तिथि	वार	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	योग	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	करण	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	तारीखें प्र. आषाढ़	तारीखें अं. जून	तारीखें श. आषाढ़	तारीखें मु. ज़िल्काद	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल	घ.	प.	चण्डीगढ़ (भा.स्टैं.टा.) सूर्योदय घं.	सूर्योदय मि.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मि.	स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. (भा.स्टैं.टा.) रा.	अं.	क.	वि.	५ जुला. को बु. पूर्व में दिखाई देना बन्द हो जाएगा। प्रातः शु. पूर्व में, मं. पूर्वकपाल में, गु. याम्योतरवृत्त में तथा शनि इससे पश्चिम की ओर दिखाई देगा।
३४	५५	१	गु.	१३	२६	पुन.	४९	९	ध्रु.	१०	५७	ब.	१३	२६	१६	३०	९	२९	कर्क	३२	२०	५	२७	१९	२५	२	१४	३	९	चन्द्रदर्शन, मु. ४५, आषाढ़ गुप्त नवरात्र प्रारम्भ,
३४	५४	२	शु.	११	१५	पुष्य	५६	१०	व्या	१३	१५	कौ.	११	१५	१७	जु.१	१०	जि.१	कर्क			५	२७	१९	२५	२	१५	०	२३	गुरु उ.भा. ४ में १४/२७, श्रीजगदीश रथोत्सव (A)
३४	५३	३	श.	२४	३३	आश्ले.	६०	०	ह.	१५	१०	ग.	२४	३३	१८	२	११	२	कर्क			५	२८	१९	२५	२	१५	५७	३६	भ. ५६/४९ बाद, बुध मिथुन में १०/३४,
३४	५२	४	र.	२९	७	आश्ले.	२	३५	व.	१६	३२	वि.	२९	७	१९	३	१२	३	सिंह	२	३५	५	२८	१९	२५	२	१६	५४	५०	भ. २९/७ तक,
३४	५१	५	चं.	३२	४०	मघा	८	६	सि.	१७	१०	ब.	०	५३	२०	४	१३	४	सिंह			५	२९	१९	२५	२	१७	५२	२	
३४	४९	६	मं.	३४	५९	पू.फा.	१२	३२	व्य.	१६	५३	कौ.	३	४९	२१	५	१४	५	कन्या	२८	२७	५	२९	१९	२५	२	१८	४९	१५	बुध आर्द्रा में ४१/२५, बुध पूर्व में अस्त ५ घं. २९ मि., (B)
३४	४८	७	बु.	३५	४८	उ.फा.	१५	३५	व.	१५	२९	ग.	५	२३	२२	६	१५	६	कन्या			५	२९	१९	२५	२	१९	४६	२७	भ. ३५/४८ बाद, सूर्य पुन. में १४/१५, विवस्वत् सप्तमी,
३४	४६	८	गु.	३४	५६	हस्त	१७	३	प.	१२	४९	वि.	५	२२	२३	७	१६	७	तुला	४७	९	५	३०	१९	२४	२	२०	४३	३९	भ. ५/२२ तक, शुक्र मृग. में ४०/१५,
३४	४५	९	शु.	३२	१७	चित्रा	१६	४६	शि.	८	४३	बा.	३	३६	२४	८	१७	८	तुला			५	३०	१९	२४	२	२१	४०	५१	आषाढ़ गुप्त नवरात्र समाप्त,
३४	४३	१०	श.	२७	५२	स्वाती	१४	४४	सि. सा.	३ ५६	१३ १६	तै.	०	४	२५	९	१८	९	वृश्चिक	५७	५	५	३१	१९	२४	२	२२	३८	३	भ. ५४/४९ बाद, नवरात्र-पारणा,
३४	४१	११	र.	२१	४६	विशा.	१०	५९	शु.	४८	१	वि.	२१	४६	२६	१०	१९	१०	वृश्चिक			५	३१	१९	२४	२	२३	३५	१५	भ. २१/४६ तक, हरिशयनी (C)
३४	४०	१२	चं.	१४	१५	अनु. ज्येष्ठा	५ ५९	४४ १८	शु.	३८	४२	बा.	१४	१५	२७	११	२०	११	धनु	५९	१८	५	३२	१९	२४	२	२४	३२	२६	सोमप्रदोष व्रत,
३४	३८	१३	मं.	५	३५	मूल	५२	२	ब्र.	२८	३४	तै.	५	३५	२८	१२	२१	१२	धनु			५	३२	१९	२३	२	२५	२९	३८	भ. ५६/११ बाद, बुध पुन में ७/२२, **वक्री शनि धनि. २** (D)
अवम		१४	मं.	५६	११	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	चतुर्दशी तिथिक्षय,
३४	३६	१५	बु.	४६	२६	पू.षा.	४४	२३	ऐं.	१७	५७	वि.	२१	१८	२९	१३	२२	१३	मकर	५७	२७	५	३३	१९	२३	२	२६	२६	४९	भ. २१/१८ तक, **शुक्र मिथुन में १३/१६, वक्री प्लूटो** (E)

(A) (रथयात्रा) पुरी (पुष्य योग), जुलाई प्रारम्भ, जिल्हिज्ज मु. प्रारम्भ, (B) कुमार षष्ठी, (C) एकादशी व्रत (स.), श्रीविष्णु-शयनोत्सव, (D) मकर में २३/१५, (E) उ.षा. २ में १६/५७, गुरु पूर्णिमा (व्यासपूजा), आषाढ़ी पूर्णिमा, चातुर्मास्य व्रत-नियमादि प्रारम्भ, कोकिला व्रत, श्रीसत्यनारायण व्रत, श्रीशिव-शयनोत्सव,

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं. ३० मि. (I.S.T.) ७ जुलाई

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	५	०	२	११	१	१०	०	६
२०	१९	७	९	१३	२२	०	२५	२५
४३	३५	३	१६	४६	३१	१६	२७	२७
४०	५६	१६	४६	४७	४३	४२	५१	५१
५७	७९६	४१	१२२	४	७१	२	३	३
१२	४५	४९	१८	३	५७	५६	११	११
-	-	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
-	-	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
पुन. १	हस्त ३	अश्वि. ३	आर्द्रा १	उ.भा. ४	रोहि. ४	धनि. ३	भर. ४	विशा. २

कुण्डली सूर्योदय (७ जुला.)

भाव	राशि / ग्रह
१	३ बु. सू.
२	२ शु.
३	१ मं. रा.
४	१२ गु.
५	११
६	१०
७	९
८	८
९	७ के.
१०	६ चं.
११	५
१२	४

लोकभविष्य–लगभग ८ जुलाई तक शनि की मंगल राहु पर विशेष दृष्टि और तत्पश्चात् वक्री शनि मकरराशि में भारत की राजनीति के लिए संवेदनशील रहेगा;- **''मकरे च यदा सौरिर्दुर्भिक्षं तत्र दारुणम्।''** दुर्भिक्ष एवं रोगविशेष से जनजीवन परेशान रहे। मकरस्थ शनि में कश्मीर-पाक-चीन की कुटिल नीति से सीमाप्रान्तों पर सैन्यबल को सन्नद्ध रखना होगा।

ग्रहचाल और बाजार का रुख–पक्षारम्भ में बाजार अस्थिर किंवा मन्दी प्रधान रहें। २ से ५ जुलाई के मध्य रुई, सोना, चांदी, गेहूं, जौ, चना, मूंग, मोठ, तेल-तिलहन के बाजारों में उठापटक से मन्दी प्रधान रहे। ६ से ८ जुलाई तक गेहूं, चावल, दालवाना, गुड़, खाण्ड, घी तेज रहें। विशेषतः ९ से १३ जुलाई तक सोना, अनाज, तिलहन आदि में विशेष तेजी के झटके आएं।

आकाशलक्षण–३० जून से १० जुलाई के मध्य हि.प्र., उत्तराखण्ड, उत्तरप्रदेश, पंजाब, हरियाणा, चण्डीगढ़, दिल्ली, कश्मीर एवं भारत के दक्षिणी एवं पश्चिमी प्रान्तों में अनेकत्र जोरदार वर्षा के योग हैं। ध्यान दें कि-२,५,६,९,१० एवं १३ जुलाई को कुछ प्रान्तों में बाढ़ एवं आकाशीय बिजली से हानि संभव है।

कुण्डली सूर्योदय (१३ जुला.)

भाव	राशि / ग्रह
१	सू. ३ बु.
२	शु. २
३	मं. १ रा.
४	गु. १२
५	११
६	श. १०
७	चं. ९
८	८
९	के. ७
१०	६
११	५
१२	४

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं. ३० मि. (I.S.T.) १३ जुलाई

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	८	०	२	११	१	९	०	६
२६	१५	११	२१	१४	२९	२९	२५	२५
२६	१९	१२	५२	८	४३	५७	८	८
४९	५८	३८	४१	२४	५९	५९	४६	४६
५७	९१६	४१	१२९	२	७२	३	३	३
१२	४२	१२	६	५८	१०	२२	११	११
-	-	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
-	-	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
पुन. २	पू.षा. १	अश्वि. ४	पुन. १	उ.भा. ४	मृग. २	धनि. १	भर. ४	विशा. २

श्री वि. सं. २०७९, शाक १९४४, श्रावण कृष्ण पक्ष ८

(१४ से २८ जुलाई, सन् २०२२ ई.)
(दक्षिणायन, उत्तरगोल, वर्षा ऋतु)

दिनमान घ.	दिनमान प.	तिथि	वार	समाप्तिकाल घ.	समाप्तिकाल प.	नक्षत्र	समाप्तिकाल घ.	समाप्तिकाल प.	योग	समाप्तिकाल घ.	समाप्तिकाल प.	करण	समाप्तिकाल घ.	समाप्तिकाल प.	तारीखें प्र. आषाढ़	तारीखें अं. जुलाई	तारीखें श. आषाढ़	तारीखें मु. ज़िल्हिज	चन्द्रराशि	प्रवेशकाल घ.	प्रवेशकाल प.	चण्डीगढ़ (भा.स्टैं.टा.) सूर्योदय घं.	सूर्योदय मि.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मि.	स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. (भा.स्टैं.टा.) रा.	अं.	क.	वि.	बु. अस्त है। प्रातः शु. पूर्व में, मं. पूर्वकपाल में, गु. याम्योत्तरवृत्तासन्न और श. पश्चिम में होगा।
३४	३३	१	गु.	३६	४७	उ.षा.	३६	५०	वै. वि.	७ ५६	१३ ४५	बा.	११	३६	३०	१४	२३	१४	मकर			५	३३	१९	२३	२	२७	२४	१	अशून्य शयनव्रत (देखें पृ. 14),
३४	३१	२	शु.	२७	४३	श्रव.	२९	५२	प्री.	४६	५५	तै.	२	१५	३१	१५	२४	१५	कुम्भ	५६	४६	५	३४	१९	२२	२	२८	२१	१३	भ. ५३/४२ बाद, पंचक प्रारम्भ ५६/४६,
३४	२९	३	श.	१९	४१	धनि.	२३	५८	आ.	३८	४	वि.	१९	४१	श्रा.१	१६	२५	१६	कुम्भ			५	३५	१९	२२	२	२९	१८	२५	भ. १९/४१ तक, सं. सूर्य कर्क में ४३/२२, मु. १५, (A)
३४	२७	४	र.	१३	६	शत.	१९	३३	सौ.	३०	३२	बा.	१३	६	२	१७	२६	१७	कुम्भ			५	३५	१९	२२	३	०	१५	३८	
३४	२४	५	चं.	८	१८	पू.भा.	१६	५९	शो.	२४	३३	तै.	८	१८	३	१८	२७	१८	मीन	२	२७	५	३६	१९	२१	३	१	१२	५२	बुध पुष्य में २०/१५, शुक्र आर्द्रा में ४५/७,
३४	२२	६	मं.	५	३४	उ.भा.	१६	२७	अ.	२०	१६	व.	५	३४	४	१९	२८	१९	मीन			५	३६	१९	२१	३	२	१०	६	भ. ५/३४ से ३५/१८ तक,
३४	१९	७	बु.	४	५८	रेव.	१८	४	सु.	१७	४२	ब.	४	५८	५	२०	२९	२०	मेष	१८	४	५	३७	१९	२०	३	३	७	२०	पंचक समाप्त १८/४, सूर्य पुष्य में १२/५७,
३४	१६	८	गु.	६	२७	अश्वि.	२१	३८	धृ.	१६	४४	कौ.	६	२७	६	२१	३०	२१	मेष			५	३७	१९	२०	३	४	४	३६	
३४	१४	९	शु.	९	४६	भर.	२६	५५	शू.	१७	९	ग.	९	४६	७	२२	३१	२२	वृष	४३	२९	५	३८	१९	१९	३	५	१	५२	भ. ४२/७ बाद, सूर्य सायन सिंह में ४९/५८,
३४	११	१०	श.	१४	३२	कृत्ति.	३३	३०	गं.	१८	३९	वि.	१४	३२	८	२३	श्रा.१	२३	वृष			५	३९	१९	१९	३	५	५९	९	भ. १४/३२ तक,
३४	८	११	र.	२०	१६	रोहि.	४०	५१	वृ.	२०	५२	बा.	२०	१६	९	२४	२	२४	वृष			५	३९	१९	१८	३	६	५६	२७	बुध आश्ले. में ४९/२७, कामिका एकादशी व्रत (स.),
३४	५	१२	चं.	२६	२९	मृग.	४८	३३	ध्रु.	२३	२६	तै.	२६	२९	१०	२५	३	२५	मिथुन	१४	४१	५	४०	१९	१८	३	७	५३	४६	सोमप्रदोष व्रत,
३४	२	१३	मं.	३२	४६	आर्द्रा	५६	११	व्या.	२६	४	व.	३२	४६	११	२६	४	२६	मिथुन			५	४०	१९	१७	३	८	५१	६	भ. ३२/४६ बाद, श्रावण-शिवरात्रि,
३३	५९	१४	बु.	३८	४७	पुन.	६०	०	ह.	२८	३१	वि.	५	४६	१२	२७	५	२७	कर्क	४६	४१	५	४१	१९	१७	३	९	४८	२६	भ. ५/४६ तक,
३३	५६	३०	गु.	४४	१७	पुन.	३	२८	व.	३०	३६	च.	११	३२	१३	२८	६	२८	कर्क			५	४२	१९	१६	३	१०	४५	४७	गुरु वक्री ५१/४, हरियाली अमा,

(A) पुण्यकाल १३/२२ बाद, मंगल भर. में ५/५१, बुध कर्क में ४६/२५, श्रीगणेशचतुर्थी व्रत,

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं. ३० मि. (I.S.T.) २१ जुलाई

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३ ४ ४ ३६	० ८ ४६ ३६	० १६ ३८ ५९	३ ८ ५४ ३९	११ १४ २६ ५१	२ ९ २२ ३३	९ २९ २९ २०	० २४ ४३ १९	६ २४ ४३ १९
५७ १६	७४१ ४२	४० १५	१२३ ३५	१ २७	७२ ३१	३ ५०	३ ११	३ ११
-	-	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
-	-	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

कुण्डली सूर्योदय (२१ जुला.)

भाव	राशि	ग्रह
लग्न	४	बु., सू.
२	५	
३	६	
४	७	के.
५	८	
६	९	
७	१०	श.
८	११	
९	१२	गु.
१०	१	मं., रा., चं.
११	२	
१२	३	शु.

लोकभविष्य–इस चान्द्रमास में ५ गुरुवार एवं ५ शुक्रवार होने से देश के पश्चिमी भागों में कहीं राजविग्रह व युद्धोन्माद बने। लेकिन प्रजा में सुख-समृद्धि व सुभिक्ष भी रहे ही।

समुद्रतटवर्ती प्रान्तों में कहीं जलाप्लाव व तूफान से हानि हो।

ग्रहचाल और बाजार का रुख–१६ जुलाई के लगभग रुई, सूत, गुड़, खाण्ड, शक्कर, तिलहन, चांदी, सोना, अनाज तेज रहें। १८ जुलाई के लगभग व्यापारिक वस्तुओं में घटाबढ़ी के बाद २० जुलाई तक मन्दी रहे। २४ से २८ जुलाई तक तिलहन, उड़द, मूंग, मोठ, गेहूं, जौ, चना, चावल, सोना, चांदी, ऊनी वस्त्र तेज रहें। २७ जुलाई के करीब रुई, कपास के व्यापारी विशेष सावधान रहें।

आकाशलक्षण–१६ से २० जुलाई एवं २४, २७, २८ जुलाई को राजस्थान, उड़ीसा, असम, केरल, हि.प्र., बंगाल, कश्मीर, उ.प्र., [illegible] प्राकृतिक प्रकोप से हानि संभव है।

कुण्डली सूर्योदय (२८ जुला.)

भाव	राशि	ग्रह
लग्न	४	सू., चं., बु.
२	५	
३	६	
४	७	के.
५	८	
६	९	
७	१०	श.
८	११	
९	१२	गु.
१०	१	मं., रा.
११	२	
१२	३	शु.

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं. ३० मि. (I.S.T.) २८ जुलाई

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३ १० ४५ ४७	३ २ ३३ ९	० २१ १७ ५३	३ २२ ४७ ४५	११ १४ ३२ ५१	२ १७ ५० ५९	९ २९ १ २५	० २४ २१ ४	६ २४ २१ ४
५७ २२	७१८ १७	३९ १६	११२ ३३	० ५	७२ ५३	४ १०	३ ११	३ ११
-	-	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
-	-	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

श्री वि. सं. २०७९, शाक १९४४, श्रावण शुक्ल पक्ष ९															तारीखें				चन्द्रराशि-प्रवेशकाल			चण्डीगढ़ (भा.स्टैं.टा.)				स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. (भा.स्टैं.टा.)				(२९ जुलाई से १२ अगस्त, सन् २०२२ ई.) (दक्षिणायन, उत्तरगोल, वर्षा ऋतु)
दिनमान		तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		करण	समाप्ति-काल		प्र. श्रावण	अं. जुलाई	श. श्रावण	मु. जिल्हिज्ज				सूर्योदय		सूर्यास्त						पक्षारम्भ से ही बु. सायं पश्चिम में दिखाई देने लगेगा। प्रातः शु. पूर्व क्षितिज में, मं. याम्योत्तरवृत्त में, गु. पश्चिम कपाल में और श. इससे पश्चिम में दिखाई देगा।
घ.	प.			घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.						घ.	प.	घं.	मि.	घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
३३	५३	१	शु.	४९	८	पुष्य	१०	१०	सि.	३२	११	किं.	१६	४२	१४	२९	७	२९	कर्क			५	४२	१९	१५	३	११	४३	९	शुक्र पुन. में ४५/४९, बुध पश्चिम में उदित १९ घं. १५ मि.,
३३	४९	२	श.	५३	१३	आश्ले.	१६	१४	व्य.	३३	१३	बा.	२१	१०	१५	३०	८	३०	सिंह	१६	१४	५	४३	१९	१५	३	१२	४०	३२	चन्द्रदर्शन, मु. ३०,
३३	४६	३	र.	५६	२७	मघा	२१	३०	व.	३३	३६	तै.	२४	५०	१६	३१	९	मु.१	सिंह			५	४३	१९	१४	३	१३	३७	५५	बुध मघा सिंह में ५५/०१, मधुस्रवा तृतीया (A)
३३	४३	४	चं.	५८	४३	पू.फा.	२५	५४	प.	३३	१७	व.	२७	३५	१७	अ.१	१०	२	कन्या	४१	५३	५	४४	१९	१३	३	१४	३५	१९	भ. २७/३५ से ५८/४३ तक, अगस्त प्रारम्भ,
३३	३९	५	मं.	५९	५३	उ.फा.	२९	१९	शि.	३२	८	ब.	२९	१८	१८	२	११	३	कन्या			५	४५	१९	१२	३	१५	३२	४४	नागपंचमी, ऋक् उपाकर्म (B)
३३	३६	६	बु.	५९	४९	हस्त	३१	३५	सि.	३०	४	कौ.	२९	५१	१९	३	१२	४	कन्या			५	४५	१९	१२	३	१६	३०	९	सूर्य आश्ले. में ९/४०, श्रीकल्कि जयन्ती,
३३	३२	७	गु.	५८	२१	चित्रा	३२	३३	सा.	२६	५८	ग.	२९	५	२०	४	१३	५	तुला	२	१५	५	४६	१९	११	३	१७	२७	३५	भ. ५८/२१ बाद, गोस्वामी श्रीतुलसीदास जयन्ती,
३३	२९	८	शु.	५५	२५	स्वाती	३२	६	शु.	२२	४३	वि.	२६	५३	२१	५	१४	६	तुला			५	४६	१९	१०	३	१८	२५	१	भ. २६/५३ तक, मंगल कृत्ति. में १८/४९, श्रीदुर्गाष्टमी,
३३	२५	९	श.	५१	०	विशा.	३०	१०	शु.	१७	१५	बा.	२३	१३	२२	६	१५	७	वृश्चिक	१५	४७	५	४७	१९	९	३	१९	२२	२९	शुक्र कर्क में ५८/५२,
३३	२१	१०	र.	४५	८	अनु.	२६	४५	ब्र.	१०	३४	तै.	१८	४	२३	७	१६	८	वृश्चिक			५	४८	१९	८	३	२०	१९	५७	
३३	१८	११	चं.	३८	१	ज्येष्ठा	२२	१	ऐं. वै.	२ ५३	४७ ५९	व.	११	३४	२४	८	१७	९	धनु	२२	१	५	४८	१९	७	३	२१	१७	२५	भ. ११/३४ से ३८/१ तक, बुध पू.फा. में ५३/४८, (C)
३३	१४	१२	मं.	२९	५३	मूल	१६	११	वि.	४४	२५	ब.	३	५७	२५	९	१८	१०	धनु			५	४९	१९	७	३	२२	१४	५५	शुक्र पुष्य में ४२/४५, भौमप्रदोष व्रत,
३३	१०	१३	बु.	२१	५	पू.षा.	९	३४	प्री.	३४	२३	तै.	२१	५	२६	१०	१९	११	मकर	२२	४८	५	५०	१९	६	३	२३	१२	२५	मंगल वृष में ३८/१५,
३३	६	१४	गु.	१२	१	उ.षा. श्रव.	२ ५५	३७ ४२	आ.	२४	१२	व.	१२	१	२७	११	२०	१२	मकर			५	५०	१९	५	३	२४	९	५७	भ. १२/१ से ३७/३६ तक, शुक्ल-कृष्ण-यजु उपाकर्म (D)
३३	२	१५	शु.	३	८	धनि.	४९	२१	सौ.	१४	१५	ब.	३	८	२८	१२	२१	१३	कुम्भ	२२	२३	५	५१	१९	४	३	२५	७	२९	पंचक प्रारम्भ २२/२३, श्रावणी पूर्णिमा, (E)

(A) (संधारा तीज), मुहर्रम (हिजरी सन् १४४४) मु. प्रारम्भ, **(B)** (देखें पृ. 14), **(C)** पवित्रा एकादशीव्रत (स.), **(D)** (देखें पृ. 15), रक्षाबन्धन (राखी) (२० घं. ५२ मि. बाद) (देखें पृ. 15), श्रीसत्यनारायण व्रत, **(E)** श्रीअमरनाथ यात्रा (ज.क.),

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं. ३० मि. (I.S.T.) ५ अगस्त

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३ १८ २५ २	६ १२ ३७ १२	० २६ २७ ३८	४ ७ १ २०	११ १४ २७ ५१	२ २७ ३४ १९	९ २८ २७ १०	० २३ ५५ ३७	६ २३ ५५ ३७
५७ २७	८१४ ५७	३७ ५९	९९ १५	१ ३१	७३ ५	४ २४	३ ११	३ ११
-	-	मा.	मा.	व.	मा.	व.	व.	व.
-	-	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
आश्ले. २	स्वा. १	भर. ४	मघा ३	उ.फा. ४	पुन. ३	धनि. १	भर. ४	विशा. १

कुण्डली सूर्योदय (५ अग.)

५ बु. | ४ सू. | ३ शु. | २ | रा. १ मं. | गु. १२ | ११ | श. १० | ९ | ८ | के. ७ चं. | ६

लोकभविष्य–इस पक्ष में सूर्य-शनि का समसप्तक एवं राहुयुत मंगल की सूर्य पर दृष्टि भी है। अतः घोर युद्धोन्माद, प्राकृतिक प्रकोप, उपद्रव, हिंसा आदि का वातावरण सर्वत्र रहे।

कहीं यानदुर्घटना, कहीं सीमाप्रान्तों पर अघोषित युद्ध की स्थिति बने।

ग्रहचाल बाजार का रुख–पक्षारम्भ में धान्य, बिनौला तेज सोना, चांदी, रुई, कपास, तिलहन में झटके की तेजी बने। यह तेजी उत्तम-मध्यम तौर पर ७ अगस्त तक चलेगी। ११/१२ अगस्त को सोना, चांदी, तांबा, रुई, कपास, सूत, घी, तिलहन एवं सभी अनाजों में अच्छी तेजी का झटका आएगा।

कुण्डली सूर्योदय (१२ अग.)

५ बु. | शु. ४ सू. | ३ | मं. २ | रा. १ | १२ गु. | ११ | चं. १० श. | ९ | ८ | ७ के. | ६

आकाशलक्षण–जुलाई २९, ३१, अग. ३, ५, ६, ८, ९ एवं ११ अग. को भारत के अनेक प्रान्तों में कहीं बाढ़, तूफान व कहीं सूखा रहे। हि.प्र., कश्मीर, उ.खण्ड, उ.प्रदेश, दिल्ली एवं भारत में और भी अनेकत्र अच्छी वर्षा के योग हैं।

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं. ३० मि. (I.S.T.) १२ अगस्त

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३ २५ ७ २९	९ २४ ११ ४३	१ ० ४९ ५०	४ १८ २ ०	११ १४ १३ ११	३ ६ ६ ३९	९ २७ ५६ १	० २३ ३३ २२	६ २३ ३३ २२
५७ ३३	८९२ ३६	३६ ४५	८७ ५२	२ ५१	७३ २०	४ २९	३ ११	३ ११
-	-	मा.	मा.	व.	मा.	व.	व.	व.
-	-	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
आश्ले. ३	धनि. २	कृत्ति. १	पू.फा. १	उ.फा. ४	पुष्य २	धनि. १	भर. ४	विशा. १

श्री वि. सं. २०७९, शाक १९४४, भाद्रपद कृष्ण पक्ष १०

(१३ से २७ अगस्त, सन् २०२२ ई.)
(दक्षिणायन, उत्तरगोल, वर्षा-शरद् ऋतु)

प्रातः शु पूर्वक्षितिज में, मं. याम्योत्तरवृत्त में और गु. इससे पश्चिम में होगा। सायं बु. पश्चिम क्षितिज में और श. पूर्व में दिखाई देगा।

दिनमान घ.	दिनमान प.	तिथि	वार	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	योग	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	करण	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.
अवम		१	शु.	५४	५०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
३२	५९	२	श.	४७	३५	शत.	४४	१	शो. अ.	४ ५६	५३ ३०	तै.	२१	१२
३२	५५	३	र.	४१	४९	पू.भा.	४०	८	सु.	४९	२१	व.	१४	४२
३२	५१	४	चं.	३७	५३	उ.भा.	३८	४	धृ.	४३	४४	ब.	९	५१
३२	४७	५	मं.	३६	०	रेव.	३८	२	शू.	३९	४७	कौ.	६	५६
३२	४३	६	बु.	३६	१७	अश्वि.	४०	७	गं.	३७	३३	ग.	६	८
३२	३८	७	गु.	३८	३६	भर.	४४	११	वृ.	३६	५५	वि.	७	२६
३२	३४	८	शु.	४२	४१	कृत्ति.	४९	५४	ध्रु.	३७	३८	बा.	१०	३८
३२	३०	९	श.	४८	३	रोहि.	५६	४९	व्या.	३९	२२	तै.	१५	२२
३२	२६	१०	र.	५४	९	मृग.	६०	०	ह.	४१	४३	व.	२१	६
३२	२२	११	चं.	६०	०	मृग.	४	१९	व.	४४	१६	ब.	२७	१७
३२	१८	११	मं.	०	२५	आर्द्रा	११	५६	सि.	४६	३८	बा.	०	२५
३२	१३	१२	बु.	६	२१	पुन.	१९	१०	व्य.	४८	३५	तै.	६	२१
३२	९	१३	गु.	११	३८	पुष्य	२५	४३	व.	४९	५३	व.	११	३८
३२	५	१४	शु.	१६	०२	आश्ले.	३१	२३	प.	५०	२७	श.	१६	२
३२	०	३०	श.	१९	२७	मघा	३६	५	शि.	५०	१५	ना.	१९	२७

तिथि	तारीखें प्र. श्रावण	अं. अगस्त	श. श्रावण	मु. मुहर्रम	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल	घ.	प.	चण्डीगढ़ (भा.स्टैं.टा.) सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. (भा.स्टैं.टा.) रा.	अं.	क.	वि.	
१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	प्रतिपदा तिथिक्षय,
२	२९	१३	२२	१४	कुम्भ			५	५१	१९	३	३	२६	५	२	
३	३०	१४	२३	१५	मीन	२५	५६	५	५२	१९	२	३	२७	२	३७	भ. १४/४२ से ४१/४९ तक, कज्जली तृतीया,
४	३१	१५	२४	१६	मीन			५	५३	१९	१	३	२८	०	१३	श्रीगणेश (संकष्ट)चतुर्थी व्रत (चन्द्रोदय देखें पृ. 11), (A)
५	३२	१६	२५	१७	मेष	३८	२	५	५३	१९	००	३	२८	५७	५०	पंचक समाप्त ३८/२, राहु भर. ३, केतु विशा. १ में ११/१८,
६	भा.१	१७	२६	१८	मेष			५	५४	१८	५९	३	२९	५५	२९	भ. ३६/१७ बाद, सं. सूर्य मघा सिंह में ३/४२, मु. ३०, (B)
७	२	१८	२७	१९	मेष			५	५४	१८	५८	४	०	५३	९	भ. ७/२६ तक, बुध उ.फा. में ११/३४, श्रीकृष्ण (C)
८	३	१९	२८	२०	वृष	०	२९	५	५५	१८	५७	४	१	५०	५१	श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रत (वै.), गोकुलाष्टमी (नन्दोत्सव),
९	४	२०	२९	२१	वृष			५	५६	१८	५६	४	२	४८	३५	बुध कन्या में ५०/२५, शुक्र आश्ले. में ३६/०, श्रीगुग्गा नवमी,
१०	५	२१	३०	२२	मिथुन	३०	३३	५	५६	१८	५५	४	३	४६	२०	भ. २१/६ से ५४/९ तक,
११	६	२२	३१	२३	मिथुन			५	५७	१८	५३	४	४	४४	७	
११	७	२३	भा.१	२४	मिथुन			५	५७	१८	५२	४	५	४१	५६	सूर्य सायन कन्या में ७/७, शरद् ऋतु प्रारम्भ, अजा (D)
१२	८	२४	२	२५	कर्क	२	२६	५	५८	१८	५१	४	६	३९	४६	यूरेनस वक्री ३३/३४, प्रदोषव्रत,
१३	९	२५	३	२६	कर्क			५	५८	१८	५०	४	७	३७	३८	भ. ११/३८ से ४३/५२ तक, वक्री गुरु उ.भा. ३ में (E)
१४	१०	२६	४	२७	सिंह	३१	२३	५	५९	१८	४९	४	८	३५	३१	
३०	११	२७	५	२८	सिंह			६	००	१८	४८	४	९	३३	२६	मंगल रोहि. में ३६/१९, कुशोत्पाटिनी अमा, पिठोरी (F)

(A) बहुला चतुर्थी, भारत स्वतन्त्रता दिवस, (B) पुण्यकाल मध्याह्न तक, (C) जन्माष्टमी व्रत (स्मा.)(चन्द्रोदय देखें पृ. 11), (D) एकादशीव्रत (स.)(देखें पृ. 16), (E) १९/३०, पर्युषण पर्व प्रारम्भ,
(F) अमा, शनैश्चरी अमा,

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं. ३० मि. (I.S.T.)
१९ अगस्त

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	०	१	४	११	३	९	०	६
१	२९	५	२७	१३	१४	२७	२३	२३
५०	४१	२	४१	४९	४०	२४	११	११
५१	३८	५३	१३	१६	५२	३४	७	७
५७	७२७	३५	७५	४	७३	४	३	३
४४	१३	२०	३५	९	३७	२९	११	११
-	-	मा.	मा.	व.	मा.	व.	व.	व.
-	-	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
मघा १	कृत्ति. १	कृत्ति. ३	उ.फा. १	उ.भा. ४	पुष्य ४	धनि. २	भर. ३	विशा. १

कुण्डली सूर्योदय (१९ अग.)

६ | शु. ४ | ७ के. | बु. ५ सू. | ३ | ८ | २ मं. | चं. १ रा. | ९ | ११ | श. १० | गु. १२

लोकभविष्य–१७ अगस्त से मंगल की सूर्य पर विशेष दृष्टि है। सूर्य-मंगल की स्थिति कहीं साम्प्रदायिक उपद्रव एवं कहीं प्राकृतिक प्रकोप से हानि करे। शनि-शुक्र का समसप्तक भी चल रहा है। अतः कुछ प्रान्तों में दुर्भिक्ष की स्थिति बने-

> "क्रूराणां सह सौम्यैश्च यदि स्यात् समसप्तकम्।
> अनावृष्टिस्तदा ज्ञेया लोकपीड़ा महत्यपि।।"

देश में रोगविशेष से जनधन की हानि भी संभव है।

ग्रहचाल और बाजार का रुख–पक्षारम्भ से लगभग १८ अगस्त तक रुई, मूंग, ज्वार, बाजरा, सभी तिलहन, घी, सोना, चांदी, गेहूं, चावल, गुड़, खाण्ड आदि में तेजी प्रधान रहेगी। शेयर बाजार मन्दे रहें। २० अग. को रुई, चांदी मन्दी, अनाज, गुड़, खाण्ड, हल्दी तेज, २५ से २७ अग. तक सभी अनाज, दालें तेज़, गुड़, खाण्ड, शक्कर मन्दे रहें।

आकाशलक्षण–अग. १५, १७, १८, २०, २१, २५ एवं २७ अग. को पंजाब, हि.प्र., उ.प्र., महाराष्ट्र, कश्मीर, किंवा उ.खण्ड में वायुवेग के साथ अनेकत्र भारी वर्षा के योग हैं। राजस्थान, बिहार, बंगाल, उड़ीसा, म.प्र. आदि में कहीं दुर्भिक्ष की स्थिति एवं कहीं आकाशीय बिजली से भी हानि संभव है।

कुण्डली सूर्योदय (२७ अग.)

बु. ६ | शु. ४ | के. ७ | सू. ५ चं. | ३ | ८ | मं. २ | ९ | ११ | १ रा. | श. १० | गु. १२

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं. ३० मि. (I.S.T.)
२७ अगस्त

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	४	१	५	११	३	९	०	६
९	५	९	६	१३	२४	२६	२२	२२
३३	३७	३९	४७	११	३०	४९	४५	४५
२६	१८	२	२५	१५	५१	१२	४१	४१
५७	७४५	३३	५७	५	७३	४	३	३
५६	५४	२५	४१	२९	५५	१९	११	११
-	-	मा.	मा.	व.	मा.	व.	व.	व.
-	-	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

श्री वि. सं. २०७९, शाक १९४४, भाद्रपद शुक्ल पक्ष ११

(२८ अगस्त से १० सितम्बर, सन् २०२२ ई.)
(दक्षिणायन, उत्तरगोल, शरद् ऋतु)

दिनमान		तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		करण	समाप्ति-काल		तारीखें प्र. भाद्रपद	अं. अगस्त	श. भाद्रपद	मु. मुहर्रम	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल			चण्डीगढ़ (भा.स्टैं.टा.) सूर्योदय		सूर्यास्त		स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. (भा.स्टैं.टा.)				प्रातः शु. पूर्वक्षितिज में, मं. याम्योत्तरवृत्त में और गु. पश्चिम में होगा, सायं बु. पश्चिमक्षितिज में और श. पूर्व में दिखाई देगा।
घ.	प.			घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.						घ.	प.	घं.	मि.	घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
३१	५६	१	र.	२१	५३	पू.फा.	३९	४९	सि.	४९	१७	ब.	२१	५३	१२	२८	६	२९	कन्या	५५	३७	६	०	१८	४७	४	१०	३१	२२	
३१	५२	२	चं.	२३	२०	उ.फा.	४२	३७	सा.	४७	३३	कौ.	२३	२०	१३	२९	७	३०	कन्या			६	१	१८	४५	४	११	२९	२०	चन्द्रदर्शन, मु. ४५, वक्री शनि धनि. १ में ७/९, (A)
३१	४७	३	मं.	२३	४९	हस्त	४४	२९	शु.	४५	५	ग.	२३	४९	१४	३०	८	स.१	कन्या			६	१	१८	४४	४	१२	२७	२०	भ. ५३/३७ बाद, सूर्य पू.फा. में ५३/९, बुध हस्त में (B)
३१	४३	४	बु.	२३	२२	चित्रा	४५	२५	शु.	४१	५१	वि.	२३	२२	१५	३१	९	२	तुला	१५	३	६	२	१८	४३	४	१३	२५	२०	भ. २३/२२ तक, शुक्र मघा सिंह में ५५/४०, (C)
३१	३९	५	गु.	२१	५७	स्वाती	४५	२३	ब्र.	३७	५०	बा.	२१	५७	१६	सि.१	१०	३	तुला			६	२	१८	४२	४	१४	२३	२३	ऋषि पंचमी, संवत्सरी महापर्व (जैन), सितम्बर प्रारम्भ,
३१	३४	६	शु.	१९	३१	विशा.	४४	१९	ऐं.	३३	०	तै.	१९	३१	१७	२	११	४	वृश्चिक	२९	४१	६	३	१८	४१	४	१५	२१	२६	सूर्य षष्ठी व्रत,
३१	३०	७	श.	१६	१	अनु.	४२	१३	वै.	२७	१९	व.	१६	१	१८	३	१२	५	वृश्चिक			६	४	१८	४०	४	१६	१९	३१	भ. १६/१ से ४३/४५ तक, मुक्ताभरण (संतान) (D)
३१	२५	८	र.	११	२९	ज्येष्ठा	३९	५	वि.	२०	४६	ब.	११	२९	१९	४	१३	६	धनु	३९	५	६	४	१८	३८	४	१७	१७	३८	अगस्त्य उदित,
३१	२१	९	चं.	५	५७	मूल	३५	१	प्री.	१३	२५	कौ.	५	५७	२०	५	१४	७	धनु			६	५	१८	३७	४	१८	१५	४६	श्रीचन्द नवमी (उदासीन सम्प्रदाय महोत्सव),
अवम		१०	चं.	५९	३४	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	दशमी तिथिक्षय,
३१	१६	११	मं.	५२	२८	पू.षा.	३०	९	आ. सौ.	५ ५६	२२ ४८	व.	२६	१	२१	६	१५	८	मकर	४३	४९	६	५	१८	३६	४	१९	१३	५५	भ. २६/१ से ५२/२८ तक, पद्मा एकादशी व्रत (स्मा.),
३१	१२	१२	बु.	४४	५८	उ.षा.	२४	४५	शो.	४७	५२	ब.	१८	४३	२२	७	१६	९	मकर			६	६	१८	३५	४	२०	१२	६	पद्मा एकादशी व्रत (वै.), श्रीवामन जयन्ती, श्रवण (E)
३१	७	१३	गु.	३७	२२	श्रव.	१९	७	अ.	३८	५३	कौ.	११	१०	२३	८	१७	१०	कुम्भ	४६	१९	६	६	१८	३३	४	२१	१०	१८	पंचक प्रारम्भ ४६/१९, प्रदोषव्रत,
३१	३	१४	शु.	३०	२	धनि.	१३	३८	सु.	३०	८	ग.	३	४२	२४	९	१८	११	कुम्भ			६	७	१८	३२	४	२२	८	३२	भ. ३०/२ से ५६/४५ तक, श्री अनन्त चतुर्दशी व्रत, (F)
३०	५८	१५	श.	२३	२३	शत.	८	४२	धृ.	२१	५६	ब.	२३	२३	२५	१०	१९	१२	मीन	५०	३७	६	८	१८	३१	४	२३	६	४७	बुध वक्री ७/३०, प्रोष्ठपदी श्राद्ध/पूर्णिमा का महालय (G)

(A) मेला डेरा बाबा गोसाई आणां (कुराली) पंजाब, (B) ३३/१९, गौरी तृतीया, हरितालिका तृतीया, श्रीवराह जयन्ती, साम उपाकर्म, कलंक चतुर्थी (चन्द्रदर्शन निषिद्ध) (चन्द्रास्त २० घं. ४० मि.), सफर मु. प्रारम्भ, (C) श्रीसिद्धिविनायक व्रत, (D) सप्तमी व्रत, श्रीराधाष्टमी (देखें पृ. 17), दूर्वाष्टमी (देखें पृ. 16), श्रीमहालक्ष्मी व्रतारम्भ, (E) द्वादशी (श्रवणयोग १६ घं. 0 मि. बाद), (F) श्रीसत्यनारायण व्रत, (G) श्राद्ध, महालय/पितृपक्ष प्रारम्भ, प्रतिपदा का श्राद्ध (देखें पृ. 17),

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं. ३० मि. (I.S.T.) ४ सितम्बर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	७	१	५	११	४	९	०	६
१७	२०	१३	१३	१२	४	२६	२२	२२
१७	२८	५८	०	२३	२३	१५	२०	२०
३८	४७	४४	४५	१५	१	३९	१५	१५
५८	८४८	३१	२९	६	७४	४	३	३
८	२१	११	५३	३७	९	०	११	११
-	-	मा.	मा.	व.	मा.	व.	व.	व.
-	-	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
पू.फा. २	उ.फा. १	रोहि. १	हस्त १	उ.षा. ३	मघा १	धनि. १	पू.भा. ३	चित्रा १

कुण्डली सूर्योदय (४ सितं.)

बु. ६ | ४ | के. ७ | सू. ५ शु. | ३ | चं. ८ | २ मं. | ९ | ११ | १ रा. | श. १० | गु. १२

लोकभविष्य—सूर्य-शुक्र दोनों पर मंगल की विशेष दृष्टि है। इस चान्द्रमास में पांच शनिवार भी हैं, अतः मंहगाई से जन-जीवन परेशान हो-''दुर्भिक्षं तु शनैश्चरे।'' कहीं भूकम्प, भूस्खलन किंवा तूफान आदि प्राकृतिक प्रकोप से हानि भी संभव है। किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति के निधन से शोक व्याप्त हो।

ग्रहचाल और बाजार का रुख—पक्षारम्भ में शेयर बाजार तेज रहें एवं रुई, कपास, तेल, तिलहन, लाल मिर्च, मसाले, सोना, चांदी भी तेज रहेंगे। ३१ अग. के लगभग सोना, चांदी, तांबा, जौ, चना, घी, तेल, गुड़, खाण्ड, शक्कर, चावल आदि में अच्छी तेजी बने। ८ सितं. के लगभग बाजार पलट सकते हैं।

आकाशलक्षण—अगस्त २८, २९, ३०, ३१ एवं सितम्बर ८ से १० के मध्य नेपाल, बिहार, दार्जीलिंग, विन्ध्यप्रदेश, उ.प्र. एवं उत्तराखण्ड, आसाम में कहीं जोरदार वर्षा एवं कहीं बाढ़ आदि प्राकृतिक प्रकोप से जनधनहानि हो।

कुण्डली सूर्योदय (१० सितं.)

बु. ६ | ४ | के. ७ | सू. ५ शु. | ३ | ८ | २ मं. | ९ | चं. ११ | रा. १ | श. १० | १२ गु.

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं. ३० मि. (I.S.T.) १० सितम्बर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	१०	१	५	११	४	९	०	६
२३	१७	१७	१४	११	११	२५	२२	२२
६	३१	१	४५	४१	४८	५२	१	१
४७	४३	१५	११	५५	२३	२१	१०	१०
५८	८५९	२९	२	७	७४	३	३	३
११	०	१८	१०	१६	२०	४१	११	११
-	-	मा.	मा.	व.	मा.	व.	व.	व.
-	-	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
पू.फा. ३	स्वा. ४	रोहि. ३	हस्त १	उ.षा. ३	मघा ४	धनि. १	पू.भा. ३	चित्रा १

श्री वि. सं. २०७९, शाक १९४४, आश्विन कृष्ण पक्ष १२

(११ से २५ सितम्बर, सन् २०२२ ई.)
(दक्षिणायन, उत्तर-दक्षिणगोल, शरद् ऋतु)

१६ सितं. को बु. पश्चिम में अस्त हो जाएगा। प्रातः शु पूर्व में अत्यल्प समय के लिए दिखाई देगा। इस समय मं. पश्चिम कपाल में और गु. पश्चिम क्षितिज की ओर होगा। सायं श. को पूर्वकपाल में देखें।

दिनमान घ.	दिनमान प.	तिथि	वार	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	योग	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	करण	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	तारीखें प्र. भाद्रपद	अं. सितंबर	श. भाद्रपद	मु. सफर	चन्द्रराशि	प्रवेशकाल घ.	प्रवेशकाल प.	चण्डीगढ़ (भा.स्टैं.टा.) सूर्योदय घं.	सूर्योदय मि.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मि.	स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. (भा.स्टैं.टा.) रा.	अं.	क.	वि.	
३०	५४	१	र.	१७	४७	पू.भा.	४	४३	शू.	१४	३६	कौ.	१७	४७	२६	११	२०	१३	मीन			६	८	१८	३०	४	२४	५	४	शुक्र पू.फा. में १२/२२, वक्री नेप्च्यून पू.भा. ३ कुम्भ (A)
३०	४९	२	चं.	१३	३७	उ.भा.	२	६	गं.	८	२४	ग.	१३	३७	२७	१२	२१	१४	मीन			६	९	१८	२८	४	२५	३	२३	भ. ४२/२२ बाद, तृतीया का श्राद्ध,
३०	४५	३	मं.	११	१०	रेव.	१	७	वृ.	३	३५	वि.	११	१०	२८	१३	२२	१५	मेष	१	७	६	९	१८	२७	४	२६	१	४४	भ. ११/१० तक, पंचक समाप्त १/७, सूर्य उ.फा. में (B)
३०	४०	४	बु.	१०	३९	अश्वि.	१	५९	ध्रु. व्या.	० ५८	१७ ३०	बा.	१०	३९	२९	१४	२३	१६	मेष			६	१०	१८	२६	४	२७	०	७	पंचमी का श्राद्ध, भरणी श्राद्ध,
३०	३५	५	गु.	१२	५	भर.	४	४५	ह.	५८	११	तै.	१२	५	३०	१५	२४	१७	वृष	२०	४६	६	१०	१८	२४	४	२७	५८	३२	षष्ठी का श्राद्ध, चन्द्रषष्ठी व्रत,
३०	३१	६	शु.	१५	२१	कृत्ति.	९	२०	व.	५९	५	व.	१५	२१	३१	१६	२५	१८	वृष			६	११	१८	२३	४	२८	५६	५९	भ. १५/२१ से ४७/४५ तक, बुध पश्चिम में अस्त (C)
३०	२६	७	श.	२०	७	रोहि.	१५	२३	सि.	६०	०	ब.	२०	७	आ.१	१७	२६	१९	मिथुन	४८	५०	६	११	१८	२२	४	२९	५५	२८	सं. सूर्य कन्या में २/५८, मु. ४५, पुण्यकाल मध्याह्न तक, (D)
३०	२२	८	र.	२५	५२	मृग.	२२	२५	सि.	०	५२	कौ.	२५	५२	२	१८	२७	२०	मिथुन			६	१२	१८	२१	५	०	५३	५९	अष्टमी का श्राद्ध (देखें पृ. 17),
३०	१७	९	चं.	३२	३	आर्द्रा	२९	५३	व्य.	३	८	ग.	३२	३	३	१९	२८	२१	मिथुन			६	१३	१८	१९	५	१	५२	३३	वक्री बुध उ.फा. में ३०/१२, नवमी का श्राद्ध, (E)
३०	१२	१०	मं.	३८	३	पुन.	३७	१२	व.	५	२५	व.	५	३	४	२०	२९	२२	कर्क	२०	२६	६	१३	१८	१८	५	२	५१	८	भ. ५/३ से ३८/३ तक, दशमी का श्राद्ध,
३०	८	११	बु.	४३	२२	पुष्य	४३	५२	प.	७	२३	ब.	१०	४३	५	२१	३०	२३	कर्क			६	१४	१८	१७	५	३	४९	४६	शुक्र उ.फा. में ५६/२२, इन्दिरा एकादशी व्रत (स.), (F)
३०	३	१२	गु.	४७	३८	आश्ले.	४९	३१	शि.	८	४२	कौ.	१५	३०	६	२२	३१	२४	सिंह	४९	३१	६	१४	१८	१६	५	४	४८	२७	द्वादशी का श्राद्ध, संन्यासियों का श्राद्ध,
२९	५८	१३	शु.	५०	३९	मघा	५३	५८	सि.	९	८	ग.	१९	८	७	२३	आ.१	२५	सिंह			६	१५	१८	१४	५	५	४७	९	भ. ५०/३९ बाद, वक्री गुरु उ.भा. २ में १३/१५, (G)
२९	५४	१४	श.	५२	२२	पू.फा.	५७	९	सा.	८	३४	वि.	२१	३१	८	२४	२	२६	सिंह			६	१५	१८	१३	५	६	४५	५३	भ. २१/३१ तक, मंगल मृग. में ३/१२, शुक्र कन्या में (H)
२९	४९	३०	र.	५२	५०	उ.फा.	५९	६	शु.	७	०	च.	२२	३६	९	२५	३	२७	कन्या	१२	४३	६	१६	१८	१२	५	७	४४	३९	सर्वपितृ अमा, चतुर्दशी/अमा/अज्ञात मृत्युतिथि वालों (I)

(A) में ४४/६, द्वितीया का श्राद्ध, (B) ३७/४२, श्रीगणेशचतुर्थी व्रत, चतुर्थी का श्राद्ध, (C) १८ घं. २३ मि., सप्तमी का श्राद्ध, (D) (इस दिन कोई तिथिश्राद्ध नहीं होगा (देखें पृ. 17)], श्रीमहालक्ष्मी व्रत समाप्त, (E) सौभाग्यवती श्राद्ध, (F) एकादशी का श्राद्ध, (G) सूर्य सायन तुला में ०/४८, दक्षिण गोल प्रारम्भ, विषुव दिन, प्रदोषव्रत, त्रयोदशी का श्राद्ध, मघा श्राद्ध, (H) ३७/०, चतुर्दशी (अपमृत्यु वालों) का श्राद्ध, (I) का श्राद्ध, श्राद्ध समाप्त, महालय/पितृपक्ष समाप्त,

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं. ३० मि. (I.S.T.) १८ सितम्बर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५	२	१	५	११	४	९	०	६
०	१	२०	११	१०	२१	२५	२१	२१
५३	५२	४५	२४	४१	४३	२४	३५	३५
५९	३१	५१	१३	३७	५०	३४	४४	४४
५८	७१२	२६	५३	७	७४	३	३	३
३४	१४	२४	१८	५०	३३	११	११	११
-	-	मा.	व.	व.	मा.	व.	व.	व.
-	-	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
उ.फा. २	मृग. ३	रोहि. ४	हस्त १	उ.भा. ३	पू.फा. ३	धनि. १	भर. ३	चित्रा १

कुण्डली सूर्योदय (१८ सितं.)

बु. ७ के. | शु. ५ | ८ | सू. ६ | ४ | ९ | ३ चं. | श. १० | गु. १२ | मं. २ | ११ | १ रा.

लोकभविष्य–इस चान्द्रमास में पांच रविवार हैं, देश में रोगविशेष से जनता परेशान रहे–"**पंचार्क-वासरे रोगाः।**" आश्वि.कृ. तृतीया को मंगलवार होने से कुछ प्रान्तों व विश्व में कहीं भयंकर अग्निकाण्ड से हानि होगी। जन-जीवनोपयोगी वस्तुओं की मंहगाई से राजनीतिज्ञ परस्पर उलझन में रहें–

"आश्विने हि तृतीयायां यदि भौम-शनैश्चरौ।
तदा त्वग्निभयं विद्यादथवान्न-महर्घता।।"

ग्रहचाल और बाजार का रुख–१३ से १८ सितं. तक रुई, कपास, सोना, चांदी, घी, तेल, तिलहन, चावल, उड़द, ज्वार, सुपारी में तेजी प्रधान रहे। १९ से २३ सितं. तक रुई, चांदी मन्दी रहे। २४ सितं. को सभी अनाज, घी, तेल, ऊन एवं चावलों में विशेष तेजी का झटका आएगा।

कुण्डली सूर्योदय (२५ सितं.)

के. ७ | चं. ५ | ८ | बु. ६ शु. सू. | ४ | ९ | ३ | १० श. | गु. १२ | मं. २ | ११ | रा. १

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं. ३० मि. (I.S.T.) २५ सितम्बर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५	४	१	५	११	५	९	०	६
७	२६	२३	४	९	०	२५	२१	२१
४४	५२	४१	१५	४५	२६	३	१३	१३
३९	१५	४७	३६	५८	१८	५६	२९	२९
५८	७७४	२३	५८	८	७४	२	३	३
४९	२०	२१	२२	३	४४	३८	११	११
-	-	मा.	व.	व.	मा.	व.	व.	व.
-	-	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

आकाशलक्षण–सितं. ११, १३, १६, १७, १९, २१, २३ एवं २४ सितं. को भारत के उत्तर-पश्चिमी क्षेत्रों में बादलचाल एवं वायुवेग के साथ अनेकत्र खण्डवृष्टि हो। हि.प्र. एवं कश्मीर, उ.खण्ड के उन्नतशृंगों पर कहीं हिमपात के समाचार मिलें।

श्री वि. सं. २०७९, शाक १९४४, आश्विन शुक्ल पक्ष १३

(२६ सितम्बर से ९ अक्तूबर, सन् २०२२ ई.)
(दक्षिणायन, दक्षिणगोल, शरद् ऋतु)

३० सितं. को शु. पूर्व में लुप्त हो जाएगा। १ अक्तू. को बु. पूर्व में उदित होगा। प्रातः मं. पश्चिम कपाल में और गु. पश्चिम में होगा। सायं श. को पूर्वकपाल में देखें।

दिनमान घ.	दिनमान प.	तिथि	वार	समाप्तिकाल घ.	समाप्तिकाल प.	नक्षत्र	समाप्तिकाल घ.	समाप्तिकाल प.	योग	समाप्तिकाल घ.	समाप्तिकाल प.	करण	समाप्तिकाल घ.	समाप्तिकाल प.	तारीखें प्र. आश्विन	अं. सितंबर	श. आश्विन	मु. सफर	चन्द्रराशि	प्रवेशकाल घ.	प्रवेशकाल प.	चण्डीगढ़ (भा.स्टैं.टा.) सूर्योदय घं.	सूर्योदय मि.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मि.	स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. (भा.स्टैं.टा.) रा.	अं.	क.	वि.	
२९	४५	१	चं.	५२	९	हस्त	५९	५८	शु.	४	२८	किं.	२२	२६	१०	२६	४	२८	कन्या			६	१७	१८	१०	५	८	४३	२८	नाना-नानी का श्राद्ध, शारद (आश्विन) नवरात्र प्रारम्भ, (A)
२९	४०	२	मं.	५०	२८	चित्रा	५९	५१	ब्र. ऐं.	१ ५६	५ ५३	बा.	२१	१९	११	२७	५	२९	तुला	३०	०	६	१७	१८	९	५	९	४२	१८	चन्द्रदर्शन, मु. ३०, सूर्य हस्त में १६/६, शुक्र-वार्धक्य (B)
२९	३५	३	बु.	४७	५४	स्वाती	५८	५५	वै.	५२	०	तै.	१९	११	१२	२८	६	र.१	तुला			६	१८	१८	८	५	१०	४१	१०	रवि-उल-अव्वल मु. प्रारम्भ,
२९	३१	४	गु.	४४	३६	विशा.	५७	१५	वि.	४६	३१	व.	१६	१५	१३	२९	७	२	वृश्चिक	४२	४३	६	१८	१८	७	५	११	४०	४	भ. १६/१५ से ४४/३६ तक,
२९	२६	५	शु.	४०	३९	अनु.	५४	५८	प्री.	४०	३२	ब.	१२	३७	१४	३०	८	३	वृश्चिक			६	१९	१८	५	५	१२	३९	०	शुक्र पूर्व में अस्त ६ घं. १९ मि., श्री उपाङ्गललिता व्रत,
२९	२१	६	श.	३६	८	ज्येष्ठा	५२	८	आ.	३४	४	कौ.	८	२३	१५	अ.१	९	४	धनु	५२	८	६	२०	१८	४	५	१३	३७	५८	बुध पूर्व में उदित ६ घं. २० मि., अक्तूबर प्रारम्भ,
२९	१७	७	र.	३१	८	मूल	४८	५०	सौ.	२७	१२	ग.	३	३८	१६	२	१०	५	धनु			६	२०	१८	३	५	१४	३६	५८	भ. ३१/८ से ५८/२८ तक, बुध मार्गी २०/४३, शुक्र हस्त (C)
२९	१२	८	चं.	२५	४२	पू.षा.	४५	९	शो.	१९	५९	ब.	२५	४२	१७	३	११	६	मकर	५९	११	६	२१	१८	२	५	१५	३५	५९	सरस्वती पूजन, श्रीदुर्गाष्टमी, महाष्टमी, महानवमी (D)
२९	८	९	मं.	१९	५९	उ.षा.	४१	१३	अ.	१२	३२	कौ.	१९	५९	१८	४	१२	७	मकर			६	२१	१८	०	५	१६	३५	२	सरस्वती के लिए बलिदान, नवरात्र समाप्त, महानवमी (E)
२९	३	१०	बु.	१४	६	श्रव.	३७	११	सु. धृ.	४ ५७	५५ १९	ग.	१४	६	१९	५	१३	८	मकर			६	२२	१७	५९	५	१७	३४	७	भ. ४१/९ बाद, सरस्वती विसर्जन, नवरात्र-पारणा, (F)
२८	५८	११	गु.	८	१५	धनि.	३३	१७	शू.	४९	५१	वि.	८	१५	२०	६	१४	९	कुम्भ	५	११	६	२३	१७	५८	५	१८	३३	१३	भ. ८/१५ तक, पंचक प्रारम्भ ५/११, पापांकुशा (G)
२८	५४	१२	शु.	२	४०	शत.	२९	४४	गं.	४२	४५	बा.	२	४०	२१	७	१५	१०	कुम्भ			६	२३	१७	५७	५	१९	३२	२२	प्रदोषव्रत,
अवम		१३	शु.	५७	३४	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	त्रयोदशी तिथिक्षय,
२८	४९	१४	श.	५३	१५	पू.भा.	२६	४९	वृ.	३६	१२	ग.	२५	२५	२२	८	१६	११	मीन	१२	२७	६	२४	१७	५६	५	२०	३१	३२	भ. ५३/१५ बाद, प्लूटो मार्गी ५२/२७,
२८	४५	१५	र.	५०	०	उ.भा.	२४	४९	ध्रु.	३०	२७	वि.	२१	३७	२३	९	१७	१२	मीन			६	२५	१७	५४	५	२१	३०	४४	भ. २१/३७ तक, शरत् पूर्णिमा, कोजागर व्रत (H)

शुक्र अस्त ३० सितम्बर

(A) महाराजा अग्रसेन जयन्ती, (B) प्रारम्भ ६ घं. १९ मि., (C) में ३८/६, सरस्वती आवाहन, (D) (पूजा/उपवास के लिए), (E) (बलिदान के लिए), (F) विजयादशमी (दशहरा) (देखें पृ. 17), आयुध-पूजा, अपराजिता पूजन, सीमोल्लंघन, श्रीमाध्वाचार्य जयन्ती, (G) एकादशी व्रत (स.), भरत मिलाप, (H) (लक्ष्मी-इन्द्रपूजा), महर्षि वाल्मीकि जयन्ती, श्रीसत्यनारायण व्रत, कार्त्तिकस्नान प्रारम्भ,

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं. ३० मि. (I.S.T.) ३ अक्तूबर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५	८	१	५	११	५	९	०	६
१५	१५	२६	०	८	१०	२४	२०	२०
३५	२८	३४	३	४१	२४	४५	४८	४८
५९	३२	५०	४३	५२	४३	१७	३	३
५९	८५२	१९	११	७	७४	१	३	३
३	४८	१८	३७	५४	५३	५५	११	११
-	-	मा.	मा.	व.	मा.	व.	व.	व.
-	-	उ.	उ.	उ.	अ.	उ.	अ.	अ.
हस्त २	पू.षा. १	मृग. १	उ.फा. २	उ.भा. २	हस्त १	धनि. १	भर. ३	विशा. १

कुण्डली सूर्योदय (३ अक्तू.)

के. ७ | ५ | ८ | शु. ६ बु. सू. | ४ | ९ चं. | ३ | १० श. | गु. १२ | मं. २ | ११ | १ रा.

लोकभविष्य–इस पक्ष में शुक्र अस्त होगा। देशविशेष में कहीं युद्धाग्नि से भयंकर वातावरण बनेगा, कहीं रक्तपात एवं सीमाप्रान्त अशान्त रहें–

> "शुक्लपक्षे यदा शुक्रः समुदेत्यस्तमेति वा।
> राजपुत्र-सहस्त्राणां मही पिबति शोणितम्।।"

सूर्य-बुध-शुक्र कन्या राशि में हैं, अतः महंगाई से जन-जीवन त्रस्त रहेगा। कहीं अकाल की स्थिति से जनता स्थानान्तरण करे।

ग्रहचाल बाजार का रुख–२७ से ३० सितं. तक सभी अनाज, गुड़, खाण्ड, जौ, रुई, नमक, हींग, धनिया, ऊनी वस्त्र, घी, तेल तेज रहें। चांदी-सोना में उठापटक रहें। २ अक्तूबर के लगभग विशेषतः तेल, तिलहन, चना, चावल, जौ, सोना-चांदी तेज हों।

आकाशलक्षण–सितं. २७, ३० एवं अक्तू. १, २ के लगभग पश्चिमी भागों में कहीं बादलचाल एवं वायुवेग के साथ खण्डवृष्टि हो। ९ अक्तूबर के लगभग से शीतकाल का प्रभाव अनुभव होने लगेगा।

कुण्डली सूर्योदय (९ अक्तू.)

के. ७ | ५ | ८ | सू. ६ बु. शु. | ४ | ९ | ३ | १० श. | चं. १२ गु. | मं. २ | ११ | १ रा.

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं. ३० मि. (I.S.T.) ९ अक्तूबर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५	११	१	५	११	५	९	०	६
२१	१०	२८	३	७	१७	२४	२०	२०
३०	२८	२२	३५	५५	५४	३५	२८	२८
४४	२२	९	३५	१७	१३	७	५९	५९
५९	८१८	१५	६४	७	७४	१	३	३
१४	२५	५०	१०	३२	५८	२२	११	११
-	-	मा.	मा.	व.	मा.	व.	व.	व.
-	-	उ.	उ.	उ.	अ.	उ.	अ.	अ.
हस्त ४	उ.भा. ३	मृग. २	उ.फा. ३	उ.भा. २	हस्त ३	धनि. १	भर. ३	विशा. १

श्री वि. सं. २०७९, शाक १९४४, कार्त्तिक कृष्ण पक्ष १४

(१० से २५ अक्तूबर, सन् २०२२ ई.)
(दक्षिणायन, दक्षिणगोल, शरद्-हेमन्त ऋतु)

शु. अस्त है। बु. भी २० अक्तू. को पूर्व में अदृश्य हो जाएगा। प्रातः मं. पश्चिमकपाल में होगा। सायं गु. पूर्व में और श. याम्योत्तरवृत्त के पास दिखाई देगा। २५ अक्तू. को भारत में खण्डग्रास सूर्यग्रहण दिखाई देगा।

दिनमान		तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		करण	समाप्ति-काल		तारीखें प्र. आश्विन	अं. अक्तूबर	श. आश्विन	मु. र.उ.अ.	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल			चण्डीगढ़ (भा.स्टैं.टा.) सूर्योदय		सूर्यास्त		स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. (भा.स्टैं.टा.)				
घ.	प.			घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.						घ.	प.	घं.	मि.	घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
२८	४०	१	चं.	४८	३	रेव.	२४	०	व्या.	२५	४१	बा.	१९	१	२४	१०	१८	१३	मेष	२४	०	६	२५	१७	५३	५	२२	२९	५८	पंचक समाप्त २४/०, सूर्य चित्रा में ४८/२२,
२८	३६	२	मं.	४७	३९	अश्वि.	२४	३७	ह.	२२	३	तै.	१७	५१	२५	११	१९	१४	मेष			६	२६	१७	५२	५	२३	२९	१४	
२८	३१	३	बु.	४८	५२	भर.	२६	४७	व.	१९	४१	व.	१८	१६	२६	१२	२०	१५	वृष	४२	३६	६	२६	१७	५१	५	२४	२८	३२	भ. १८/१६ से ४८/५२ तक,
२८	२६	४	गु.	५१	४३	कृत्ति.	३०	३३	सि.	१८	३५	ब.	२०	१७	२७	१३	२१	१६	वृष			६	२७	१७	५०	५	२५	२७	५२	शुक्र चित्रा में १८/१८, श्रीगणेशचतुर्थी व्रत, करक चतुर्थी (A)
२८	२२	५	शु.	५६	२	रोहि.	३५	४७	व्य.	१८	४०	कौ.	२३	५२	२८	१४	२२	१७	वृष			६	२८	१७	४९	५	२६	२७	१४	बुध हस्त में २/४५,
२८	१७	६	श.	६०	०	मृग.	४२	१२	व.	१९	४६	ग.	२८	४४	२९	१५	२३	१८	मिथुन	८	५२	६	२८	१७	४७	५	२७	२६	३९	
२८	१३	६	र.	१	२७	आर्द्रा	४९	२२	प.	२१	३५	व.	१	२७	३०	१६	२४	१९	मिथुन			६	२९	१७	४६	५	२८	२६	६	भ. १/२७ से ३४/३३ तक, मंगल मिथुन में ०/६,
२८	८	७	चं.	७	३०	पुन.	५६	४५	शि.	२३	४५	ब.	७	३०	का.१	१७	२५	२०	कर्क	३९	५६	६	३०	१७	४५	५	२९	२५	३५	सं. सूर्य तुला में ३२/१०, मु. ४५, पुण्यकाल मध्याह्न बाद, (B)
२८	४	८	मं.	१३	३८	पुष्य	६०	०	सि.	२५	५१	कौ.	१३	३८	२	१८	२६	२१	कर्क			६	३१	१७	४४	६	०	२५	७	शुक्र तुला में ३७/५२, राहु भर. २, केतु स्वा. ४ में ४/१९,
२८	०	९	बु.	११	१६	पुष्य	३	४५	सा.	२७	२९	ग.	११	१६	३	१९	२७	२२	कर्क			६	३१	१७	४३	६	१	२४	४१	भ. ५१/३७ बाद, वक्री गुरु उ.भा. १ में ३५/४९,
२७	५५	१०	गु.	२३	५२	आश्ले.	९	५५	शु.	२८	१८	वि.	२३	५२	४	२०	२८	२३	सिंह	९	५५	६	३२	१७	४२	६	२	२४	१७	भ. २३/५२ तक, बुध पूर्व में अस्त ६ घं. ३२ मि.,
२७	५१	११	शु.	२७	५	मघा	१४	४८	शु.	२८	३	बा.	२७	५	५	२१	२९	२४	सिंह			६	३३	१७	४१	६	३	२३	५५	रमा एकादशी व्रत (स.),
२७	४६	१२	श.	२८	४३	पू.फा.	१८	११	ब्र.	२६	३४	तै.	२८	४३	६	२२	३०	२५	कन्या	३३	४७	६	३३	१७	४०	६	४	२३	३६	बुध चित्रा में २१/१८, गोवत्स द्वादशी,
२७	४२	१३	र.	२८	४३	उ.फा.	१९	५९	ऐं.	२३	४९	व.	२८	४३	७	२३	का.१	२६	कन्या			६	३४	१७	३९	६	५	२३	१९	भ. २८/४३ से ५७/५७ तक, शुक्र स्वा. में ५७/९, (C)
२७	३८	१४	चं.	२७	१०	हस्त	२०	१६	वै.	१९	५१	श.	२७	१०	८	२४	२	२७	तुला	४९	५४	६	३५	१७	३८	६	६	२३	३	सूर्य स्वा. में १४/१८, नरक चतुर्दशी (पूर्वारुणोदय (D)
२७	३३	३०	मं.	२४	१६	चित्रा	१९	११	वि.	१४	४७	ना.	२४	१६	९	२५	३	२८	तुला			६	३६	१७	३७	६	७	२२	५०	वक्री यूरेनस भर. ३ में ४१/३०, भौमवती अमा, (E)

खण्डग्रास सूर्यग्रहण
२५ अक्तूबर

(A) (करवाचौथ) (चन्द्रोदय देखें पृष्ठ 11), (B) अहोई अष्टमी (महाकाली-पूजन) (पं., हरि.), (C) शनि मार्गी ७/४२, सूर्य सायन वृश्चिक में २३/४९, हेमन्त ऋतु प्रारम्भ, प्रदोषव्रत (देखें पृ. 18), धनत्रयोदशी, यम-प्रीत्यर्थदीपदान, श्रीहनुमान् जयन्ती (उ.भा.), (D) वाली), दीपावली (देखें पृ. 18), श्रीमहालक्ष्मी-पूजन, ग्रहणवेध, (E) खण्डग्रास सूर्यग्रहण (भारत में दृश्य) (देखें पृ. 22), श्रीमहावीरनिर्वाण दिवस (जैन),

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं. ३० मि. (I.S.T.) १८ अक्तूबर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६	३	२	५	११	५	९	०	६
०	३	०	१६	६	२९	२४	२०	२०
२५	२८	२१	२	५०	९	२६	०	०
७	५७	१३	४५	४८	२६	२१	२२	२२
५९	७१५	९	१७	६	७५	०	३	३
३४	२९	४५	४०	३८	६	२९	११	११
-	-	मा.	मा.	व.	मा.	व.	व.	व.
-	-	उ.	उ.	उ.	अ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

कुण्डली सूर्योदय (१८ अक्तू.)

- ७ : के., सू.
- ६ : बु., शु.
- ५
- ४ : चं.
- ३ : मं.
- २
- १ : रा.
- १२ : गु.
- ११
- १० : श.
- ९
- ८

लोकभविष्य–इस चान्द्रमास में पांच सोमवार एवं पांच मंगलवार हैं, अतः कुछ प्रान्तों में जलभराव से हानि एवं कुछ स्थानों पर भयंकर अग्निकाण्ड से जनधनहानि भी हो। क्योंकि अमावस वाले दिन मंगलवार है और इसी दिन सूर्यग्रहण भी है–"भौमे भूम्यां महावह्निः।"

मुस्लिमदेशविशेष में सत्तापरिवर्तन का योग भी है, क्योंकि नीच सूर्य पर शनि की विशेष दृष्टि भी है।

ग्रहचाल और बाजार का रुख–१० से १४ अक्तू. के मध्य रुई, सूत, सोना, चांदी, गुड़, खाण्ड, शक्कर, गेहूं, चना आदि में तेजी रहे। १५ एवं १७ अक्तू. को गुड़, खाण्ड, शक्कर, तिलहन, सोना, चांदी, घी में झटके की तेजी से लाभ मिलेगा। १८ अक्तू. के लगभग जोरदार मन्दी संभव है। २०, २२ से २५ अक्तू. को सोना, चांदी, घी, रुई में तेजी का झटका संभव है।

आकाशलक्षण–अक्तूबर १० से १५ एवं विशेषतः १७, १८, २०, २२, २३, २४ अक्तूबर को श्रीलंका, आसाम, बंगाल एवं उत्तरप्रदेश के कुछ भागों में कहीं बादलचाल व वर्षा के योग हैं। हि.प्र., उत्तराखण्ड एवं उ. भारत में शरद का प्रभाव बढ़ेगा।

कुण्डली सूर्योदय (२५ अक्तू.)

- ७ : के., सू., चं., शु.
- ६ : बु.
- ५
- ४
- ३ : मं.
- २
- १ : रा.
- १२ : गु.
- ११
- १० : श.
- ९
- ८

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं. ३० मि. (I.S.T.) २५ अक्तूबर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६	६	२	५	११	६	९	०	६
७	१	१	२७	६	७	२४	१९	१९
२२	४०	१३	४३	७	५५	२५	३८	३८
५१	३०	२४	२९	१४	२३	९	७	७
५९	८२४	४	१०१	५	७५	०	३	३
४९	४७	१६	२७	३९	१०	१४	११	११
-	-	मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
-	-	उ.	अ.	उ.	अ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

143

(२६ अक्तूबर से ८ नवम्बर, सन् २०२२ ई.)

श्री वि. सं. २०७९, शाक १९४४, कार्त्तिक शुक्ल पक्ष १५ — (२६ अक्तूबर से ८ नवम्बर, सन् २०२२ ई.) (दक्षिणायन, दक्षिणगोल, हेमन्त ऋतु)

बु. शु. अस्त हैं। प्रातः मं. पश्चिम कपाल में होगा। सायं गु. पूर्व में और श. याम्योत्तरवृत्त में होगा। ८ नवं. को खग्रास चन्द्रग्रहण होगा।

दिनमान घ.	दिनमान प.	तिथि	वार	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	योग	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	करण	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	तारीखें प्र. कार्तिक	तारीखें अं. अक्तूबर	तारीखें श. कार्तिक	तारीखें मु. र.उ.अ.	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल	घ.	प.	चण्डीगढ़ (भा.स्टैं.टा.) सूर्योदय घं.	सूर्योदय मि.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मि.	स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. (भा.स्टैं.टा.) रा.	अं.	क.	वि.	
२७	२९	१	बु.	२०	१४	स्वाती	१६	५८	प्री.	८	४७	ब.	२०	१४	१०	२६	४	२९	वृश्चिक	५९	४४	६	३६	१७	३६	६	८	२२	३९	बुध तुला में १८/०, गोवर्धन-पूजा, बलिपूजा, अन्नकूट, (A)
२७	२५	२	गु.	१५	२०	विशा.	१३	५३	आ. सा.	२ ५४	४ ४६	कौ.	१५	२०	११	२७	५	३०	वृश्चिक			६	३७	१७	३५	६	९	२२	३०	चन्द्रदर्शन, मु. ३०, श्रीविश्वकर्मा पूजा (देखें पृ. 18), ग्रहणवेध,
२७	२१	३	शु.	९	४९	अनु.	१०	१०	शो.	४७	७	ग.	९	४९	१२	२८	६	र.१	वृश्चिक			६	३८	१७	३४	६	१०	२२	२३	भ. ३६/५२ बाद, ग्रहणवेध, रवि-उल्सानी मु. प्रारम्भ,
२७	१६	४	श.	३	५७	ज्येष्ठा	६	६	अ.	३९	१८	वि.	३	५७	१३	२९	७	२	धनु	६	६	६	३९	१७	३३	६	११	२२	१७	भ. ३/५७ तक, ज्ञान पंचमी (जैन),
अवम		५	श.	५७	५८	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	पंचमी तिथिक्षय,
२७	१२	६	र.	५२	१	मूल पू.षा.	१ ५७	५६ ४९	सु.	३१	२८	कौ.	२५	०	१४	३०	८	३	धनु			६	३९	१७	३२	६	१२	२२	१३	मंगल वक्री ३०/४५, बुध स्वा. में १५/४०, सूर्यषष्ठी (B)
२७	८	७	च.	४६	१८	उ.षा.	५३	५७	धृ.	२३	४८	ग.	१९	१०	१५	३१	९	४	मकर	११	४७	६	४०	१७	३१	६	१३	२२	११	भ. ४६/१८ बाद,
२७	४	८	मं.	४०	५८	श्रव.	५०	२८	शू.	१६	२२	वि.	१३	३८	१६	न.१	१०	५	मकर			६	४१	१७	३१	६	१४	२२	११	भ. १३/३८ तक, गोपाष्टमी, नवम्बर प्रारम्भ,
२७	००	९	बु.	३६	१०	धनि.	४७	३२	गं.	९	१९	बा.	८	३४	१७	२	११	६	कुम्भ	१८	५४	६	४२	१७	३०	६	१५	२२	१२	पंचक प्रारम्भ १८/५४, अक्षय नवमी, कूष्माण्ड नवमी,
२६	५६	१०	गु.	३१	५९	शत.	४५	१४	वृ. ध्रु.	२ ५६	४४ ४३	तै.	४	४	१८	३	१२	७	कुम्भ			६	४३	१७	२९	६	१६	२२	१४	शुक्र विशा. में ३५/४, **खग्रास चन्द्रग्रहण ८ नवम्बर**
२६	५२	११	शु.	२८	३२	पू.भा.	४३	४०	व्या.	५१	१७	व.	०	१५	१९	४	१३	८	मीन	२८	५८	६	४३	१७	२८	६	१७	२२	१९	भ. ०/१५ से २८/३२ तक, देवप्रबोधिनी एकादशी व्रत (C)
२६	४८	१२	श.	२५	५६	उ.भा.	४२	५९	ह.	४६	३४	बा.	२५	५६	२०	५	१४	९	मीन			६	४४	१७	२७	६	१८	२२	२४	शनिप्रदोष व्रत, तुलसी-विवाह, चातुर्मास्य व्रत-नियमादि समाप्त,
२६	४४	१३	र.	२४	१९	रेव.	४३	१६	व.	४२	३८	तै.	२४	१९	२१	६	१५	१०	मेष	४३	१६	६	४५	१७	२७	६	१९	२२	३२	पंचक समाप्त ४३/१६, सूर्य विशा. में ३४/१५, वैकुण्ठ चतुर्दशी,
२६	४०	१४	चं.	२३	४५	अश्वि.	४४	३७	सि.	३९	३३	व.	२३	४५	२२	७	१६	११	मेष			६	४६	१७	२६	६	२०	२२	४१	भ. २३/४५ से ५४/१ तक, बुध विशा. में २१/२२, (D)
२६	३६	१५	मं.	२४	२२	भर.	४७	९	व्य.	३७	२४	ब.	२४	२२	२३	८	१७	१२	मेष			६	४७	१७	२५	६	२१	२२	५१	भीष्मपंचक समाप्त, श्रीगुरु नानक जयन्ती, कार्त्तिक (E)

(A) गोक्रीड़ा, यमद्वितीया, भाई दूज (देखें पृ. 18), ग्रहणवेध, (B) (छठ) (बिहार), (C) (स.), देव-प्रबोधोत्सव, भीष्मपंचक प्रारम्भ, (D) श्रीसत्यनारायण व्रत, त्रिपुरोत्सव, ग्रहणवेध, (E) पूर्णिमा, कार्त्तिक-स्नान समाप्त, मेला पुष्कर राज (राज.), खग्रास चन्द्रग्रहण (भारत में दृश्य) (देखें पृ. 22),

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं. ३० मि. (I.S.T.) १ नवम्बर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६	९	२	६	११	६	९	०	६
१४	१०	१	९	५	१६	२४	१९	१९
२२	४४	२५	२९	३१	४१	२९	१५	१५
११	२३	३६	१३	१०	४५	०	५१	५१
६०	८४८	१	९९	४	७५	०	३	३
१	१	४१	३२	२८	१३	५७	११	११
-	-	व.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
-	-	उ.	अ.	उ.	अ.	उ.	अ.	अ.
स्वा. ३	श्रव. १	मृग. ३	स्वा. १	उ.भा. १	स्वा. ४	धनि. १	भर. २	स्वा. ४

कुण्डली सूर्योदय (१ नवं.)

८	के. सू. ७ बु. शु.	६
९		५
श. १० चं.		४
११	१ रा.	मं. ३
गु. १२		२

लोकभविष्य–इस पक्ष में तुलाराशिस्थ सूर्य-शुक्र-बुध एवं केतु पर शनि की विशेष दृष्टि है एवं शनि भी मंगल से दृष्ट है। अतः भयंकर प्राकृतिक आपदा से जनता परेशान रहे। भूकम्प, अग्निकाण्ड, महामारी का त्रास इस मास में बनता है। इस मास में चन्द्रग्रहण कहीं आकाशीय बिजली गिरने से हानि का संकेत देता है।

ग्रहचाल और बाजार का रुख–२६ से २९ अक्तू. के मध्य रुई, गुड़, खाण्ड, सोना, सरसों, तेल, घी तेज रहें। अक्तू. ३० से ४ नवं. तक बाजार मन्दे रहें। ५ नवं. से पक्षान्त तक गेहूं, चना, रुई, जौ, चावल आदि अनाज कुछ तेज रहें।

आकाशलक्षण–अक्तूबर २६, २७, ३० एवं नवंबर ३, ५, ६, किंवा ८ नवम्बर को कश्मीर, हि.प्र. एवं उ.खण्ड आदि पर्वतीय भूभागों में अनेकत्र वायुवेग के साथ वर्षा, हिमपात से यातायात बाधित रहे।

कुण्डली सूर्योदय (८ नवं.)

८	के. सू. ७ बु. शु.	६
९		५
१० श.		४
११	चं. १ रा.	मं. ३
गु. १२		२

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं. ३० मि. (I.S.T.) ८ नवम्बर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६	०	२	६	११	६	९	०	६
२१	१५	०	२०	५	२५	२४	१८	१८
२२	५७	५५	५७	३	२८	३७	५३	५३
५२	२२	२५	२५	४८	१९	५१	३६	३६
६०	७६४	७	९६	३	७५	१	३	३
१२	४८	४९	४२	९	१५	४१	११	११
-	-	व.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
-	-	उ.	अ.	उ.	अ.	उ.	अ.	अ.
विशा. १	भर. १	मृग. ३	विशा. १	उ.भा. १	विशा. २	धनि. १	भर. २	स्वा. ४

श्री वि. सं. २०७९, शाक १९४४, मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष १६	तारीखें	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल	चण्डीगढ़ (भा.स्टैं.टा.)	स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. (भा.स्टैं.टा.)	(९ से २३ नवम्बर, सन् २०२२ ई.) (दक्षिणायन, दक्षिणगोल, हेमन्त ऋतु)

बु. शु. अस्त हैं। प्रातः मं. पश्चिम में होगा। सायं गु. पूर्वकपाल में और श. याम्योत्तरवृत्तासन्न होगा।

दिनमान घ.	दिनमान प.	तिथि	वार	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	योग	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	करण	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	प्र. कार्तिक	अं. नवंबर	श. कार्तिक	मु. र.उ.मा.	चन्द्रराशि	घ.	प.	सूर्योदय घं.	सूर्योदय मि.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
२६	३२	१	बु.	२६	१४	कृत्ति.	५०	५२	व.	३६	१२	कौ.	२६	१४	२४	९	१८	१३	वृष	२	५६	६	४७	१७	२४	६	२२	२३	३	ग्रहणवेध,
२६	२९	२	गु.	२९	२१	रोहि.	५५	४७	प.	३५	५८	ग.	२९	२१	२५	१०	१९	१४	वृष			६	४८	१७	२४	६	२३	२३	१८	ग्रहणवेध,
२६	२५	३	शु.	३३	४०	मृग.	६०	०	शि.	३६	३६	व.	१	३१	२६	११	२०	१५	मिथुन	२८	४०	६	४९	१७	२३	६	२४	२३	३३	भ. १/३१ से ३३/४० तक, शुक्र वृश्चिक में ३३/१९, ग्रहणवेध,
२६	२१	४	श.	३८	५९	मृग.	१	४५	सि.	३८	०	ब.	६	१९	२७	१२	२१	१६	मिथुन			६	५०	१७	२३	६	२५	२३	५१	श्रीगणेशचतुर्थी व्रत,
२६	१८	५	र.	४५	१	आर्द्रा	८	३६	सा.	३९	५५	कौ.	१२	०	२८	१३	२२	१७	कर्क	५९	७	६	५१	१७	२२	६	२६	२४	११	वक्री मंगल वृष में ३४/५२, बुध वृश्चिक में ३६/१२,
२६	१४	६	चं.	५१	१९	पुन.	१५	५६	शु.	४२	३	ग.	१८	१०	२९	१४	२३	१८	कर्क			६	५२	१७	२१	६	२७	२४	३३	भ. ५१/१९ बाद, शुक्र अनु. में १२/३९,
२६	११	७	मं.	५७	२३	पुष्य	२३	१९	शु.	४४	४	वि.	२४	२१	३०	१५	२४	१९	कर्क			६	५३	१७	२१	६	२८	२४	५६	भ. २४/२१ तक, बुध अनु. में ४२/५५,
२६	७	८	बु.	६०	०	आश्ले.	३०	१३	ब्र.	४५	३४	बा.	२९	५०	मा.१	१६	२५	२०	सिंह	३०	१३	६	५३	१७	२०	६	२९	२५	२२	सं. सूर्य वृश्चिक में ३०/५५, मु. ३०, पुण्यकाल मध्याह्न (A)
२६	४	८	गु.	२	३६	मघा	३६	४	ऐं.	४६	११	कौ.	२	३६	२	१७	२६	२१	सिंह			६	५४	१७	२०	७	०	२५	४९	
२६	१	९	शु.	६	३५	पू.फा.	४०	३१	वै.	४५	३७	ग.	६	३५	३	१८	२७	२२	कन्या	५६	२३	६	५५	१७	१९	७	१	२६	१८	भ. ३७/४५ बाद,
२५	५८	१०	श.	८	५४	उ.फा.	४३	१४	वि.	४३	४०	वि.	८	५४	४	१९	२८	२३	कन्या			६	५६	१७	१९	७	२	२६	४९	भ. ८/५४ तक, सूर्य अनु. में ४९/७,
२५	५५	११	र.	९	२१	हस्त	४४	७	प्री.	४०	१४	बा.	९	२१	५	२०	२९	२४	कन्या			६	५७	१७	१९	७	३	२७	२२	उत्पन्ना एकादशी व्रत (स.),
२५	५१	१२	चं.	७	५३	चित्रा	४३	९	आ.	३५	२०	तै.	७	५३	६	२१	३०	२५	तुला	१३	५०	६	५८	१७	१८	७	४	२७	५६	सोमप्रदोष व्रत,
२५	४८	१३	मं.	४	३७	स्वाती	४०	३३	सौ.	२९	४	व.	४	३७	७	२२	मा.१	२६	तुला			६	५९	१७	१८	७	५	२८	३२	भ. ४/३७ से ३२/१३ तक, सूर्य सायन धनु में १७/१०,
अवम		१४	मं.	५९	४७	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	चतुर्दशी तिथिक्षय,
२५	४६	३०	बु.	५३	३८	विशा.	३६	३३	शो.	२१	३७	च.	२६	४२	८	२३	२	२७	वृश्चिक	२२	३८	६	५९	१७	१८	७	६	२९	१०	गुरु मार्गी ५३/५५,

(A) बाद, श्रीकालाष्टमी (भैरवाष्टमी),

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं. ३० मि. (I.S.T.) १७ नवम्बर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	४	१	७	११	७	९	०	६
०	५	२९	५	४	६	२४	१८	१८
२५	१७	१४	१५	४२	४५	५६	२४	२४
५०	४६	१२	३६	३४	३८	२६	५९	५९
६०	७३३	१५	९३	१	७५	२	३	३
३१	२१	२२	५४	२१	१७	३३	११	११
-	-	व.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
-	-	उ.	अ.	उ.	अ.	उ.	अ.	अ.

कुण्डली सूर्योदय (१७ नवं.)

९ — के. ७ — १० श. — सू. ८ शु. बु. — ६ — ११ — चं. ५ — गु. १२ — मं. २ — ४ — रा. १ — ३

लोकभविष्य—पक्षमध्य के बाद सूर्य-बुध-शुक्र वृश्चिक में हैं एवं इनका मंगल के साथ समसप्तकयोग भी बन रहा है, अतः सभी अनाज मंहगे होंगे, वर्षा का अभाव होने किंवा कहीं जलभराव से खड़ी फसलों को हानि पहुंचेगी। दुर्भिक्ष की स्थिति बनेगी–

"एकराशौ यदा ह्येते सौम्य-शुक्र-दिनाधिपाः।
सर्वधान्य-महर्घत्वं मेघा स्वल्पजलप्रदाः॥"

ग्रहचाल और बाजार का रुख—११ से १३ नवं. तक सभी अनाज, रुई, कपास, सूत, तेल, घी, तिलहन, सोना, चांदी, तेज, १४/१५ नवं. को बाजार मन्दे रहें। १६ से पक्षान्त तक बाजारों में तेजी-मन्दी के झटके आएंगे, सावधान रहें।

कुण्डली सूर्योदय (२३ नवं.)

९ — चं. ७ के. — १० श. — बु. ८ शु. सू. — ६ — ११ — ५ — १२ गु. — मं. २ — ४ — १ रा. — ३

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं. ३० मि. (I.S.T.) २३ नवम्बर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	६	१	७	११	७	९	०	६
६	२३	२७	१४	४	१४	२५	१८	१८
२९	४३	३१	३५	३७	१७	१३	५	५
११	१०	११	४६	३५	२३	१०	५४	५४
६०	८६२	१९	९२	०	७५	३	३	३
३९	९	२८	४१	६	१८	७	११	११
-	-	व.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
-	-	उ.	अ.	उ.	अ.	उ.	अ.	अ.

आकाशलक्षण—इस पक्ष में नवम्बर ११ से १६ के मध्य एवं १७, १९, २० नवम्बर के लगभग हरियाणा, पंजाब, दिल्ली, हि.प्र., कश्मीर एवं उत्तराखण्ड आदि में भयंकर शीतलहर का प्रभाव रहेगा। इन दिनों भारत के हिमालय क्षेत्रों में भारी हिमपात हो।

145 स्पष्ट सूर्य (२४ नवम्बर से ८ दिसम्बर, सन् २०२२ ई.)

श्री वि. सं. २०७९, शाक १९४४, मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष १७ — (२४ नवम्बर से ८ दिसम्बर, सन् २०२२ ई.) (दक्षिणायन, दक्षिणगोल, हेमन्त ऋतु)

२५ नवं. को शु. पश्चिम में उदित हो जाएगा। बु. भी ३ दिसं. से पश्चिम में दृश्य होगा। प्रातः मं. पश्चिम में ; सायं गु. पूर्वकपाल में तथा श. याम्योत्तरवृत से पश्चिम की ओर दिखाई देगा।

दिनमान घ.	दिनमान प.	तिथि	वार	समाप्तिकाल घ.	समाप्तिकाल प.	नक्षत्र	समाप्तिकाल घ.	समाप्तिकाल प.	योग	समाप्तिकाल घ.	समाप्तिकाल प.	करण	समाप्तिकाल घ.	समाप्तिकाल प.	तारीखें प्र. मार्गशीर्ष	अं. नवंबर	श. मार्गशीर्ष	मु. र.उ.सा.	चन्द्रराशि	प्रवेशकाल घ.	प्रवेशकाल प.	चण्डीगढ़ (भा.स्टैं.टा.) सूर्योदय घं.	सूर्योदय मि.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मि.	स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. (भा.स्टैं.टा.) रा.	अं.	क.	वि.	
२५	४३	१	गु.	४६	३३	अनु.	३१	३१	अ.	१३	१५	किं.	२०	५	९	२४	३	२८	वृश्चिक			७	०	१७	१७	७	७	२९	४९	बुध ज्ये. में १६/४२, शुक्र ज्ये. में ४९/५२,
२५	४०	२	शु.	३८	५५	ज्येष्ठा	२५	४९	सु. धृ.	४ ५४	१४ ५३	बा.	१२	४४	१०	२५	४	२९	धनु	२५	४९	७	१	१७	१७	७	८	३०	३०	चन्द्रदर्शन, मु. ३०, शुक्र पश्चिम में उदित १७ घं. १७ मि.,
२५	३७	३	श.	३१	५	मूल	१९	५०	शू.	४५	२७	तै.	५	०	११	२६	५	ज.१	धनु			७	२	१७	१७	७	९	३१	११	भ. ५७/१५ बाद, जमद-उल-अव्वल मु. प्रारम्भ,
२५	३५	४	र.	२३	२६	पू.षा.	१३	५७	गं.	३६	१४	वि.	२३	२६	१२	२७	६	२	मकर	२७	३२	७	३	१७	१७	७	१०	३१	५५	भ. २३/२६ तक,
२५	३२	५	चं.	१६	१९	उ.षा.	८	३२	वृ.	२७	३०	बा.	१६	१९	१३	२८	७	३	मकर			७	४	१७	१७	७	११	३२	३९	**शुक्रबाल्य समाप्त १७ घं. १७ मि., स्कन्द/गुह षष्ठी, (A)**
२५	३०	६	मं.	१०	०	श्रव.	३	५३	ध्रु.	१९	२८	तै.	१०	०	१४	२९	८	४	कुम्भ	३१	५५	७	४	१७	१६	७	१२	३३	२४	पंचक प्रारम्भ ३१/५५, चम्पा षष्ठी, मित्र सप्तमी,
२५	२७	७	बु.	४	४३	धनि. शत.	० ५७	१५ ४६	व्या.	१२	१८	व.	४	४३	१५	३०	९	५	कुम्भ			७	५	१७	१६	७	१३	३४	११	भ. ४/४३ से ३२/४३ तक,
२५	२५	८	गु.	०	३९	पू.भा.	५६	३२	ह.	६	६	ब.	०	३९	१६	दि.१	१०	६	मीन	४१	४३	७	६	१७	१६	७	१४	३४	५८	दिसम्बर प्रारम्भ,
अवम		९	गु.	५७	५१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	नवमी तिथिक्षय,
२५	२३	१०	शु.	५६	२१	उ.भा.	५६	३४	व. सि.	० ५६	५७ ४६	तै.	२७	६	१७	२	११	७	मीन			७	७	१७	१६	७	१५	३५	४६	सूर्य ज्ये. में ५९/१६, **बुध मूल धनु में ५९/१२,**
२५	२१	११	श.	५६	६	रेव.	५७	५०	व्य.	५३	३५	व.	२६	१३	१८	३	१२	८	मेष	५७	५०	७	८	१७	१६	७	१६	३६	३५	भ. २६/१३ से ५६/६ तक, पंचक समाप्त ५७/५०, **(B)**
२५	१९	१२	र.	५७	३	अश्वि.	६०	०	व.	५१	१८	ब.	२६	३४	१९	४	१३	९	मेष			७	९	१७	१६	७	१७	३७	२५	वक्री मंगल रोहि. में ३०/२७, **मोक्षदा एकादशी व्रत (वै.),**
२५	१७	१३	चं.	५९	५	अश्वि.	०	१४	प.	४९	५२	कौ.	२८	४	२०	५	१४	१०	मेष			७	९	१७	१६	७	१८	३८	१५	**शुक्र मूल धनु में २७/०, सोमप्रदोष व्रत,**
२५	१५	१४	मं.	६०	०	भर.	३	४०	शि.	४९	१३	ग.	३०	३५	२१	६	१५	११	वृष	१९	४१	७	१०	१७	१६	७	१९	३९	७	
२५	१४	१४	बु.	२	६	कृत्ति.	८	४	सि.	४९	१६	व.	२	६	२२	७	१६	१२	वृष			७	११	१७	१६	७	२०	४०	०	भ. २/६ से ३४/६ तक, **श्रीसत्यनारायण व्रत, श्रीदत्त जयन्ती,**
२५	१२	१५	गु.	६	५	रोहि.	१३	२१	सा.	४९	५८	ब.	६	५	२३	८	१७	१३	मिथुन	४६	१९	७	१२	१७	१६	७	२१	४०	५३	

शुक्र उदित २५ नवम्बर

(A) बलिदानदिवस श्रीगुरु तेगबहादुर जी, (B) बुध पश्चिम में उदित १७ घं. १६ मि., नेप्च्यून मार्गी ५६/४३, मोक्षदा एकादशी व्रत (स्मा.) (देखें पृ. 18)**, श्रीगीता जयन्ती,**

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं. ३० मि. (I.S.T.) १ दिसम्बर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	१०	१	७	११	७	९	०	६
१४	१९	२४	२६	४	२४	२५	१७	१७
३४	३५	४२	५२	४२	१९	४०	४०	४०
५९	५७	२	४१	३८	४८	३९	२७	२७
६०	८१६	२२	९१	१	७५	३	३	३
४८	३९	४४	१८	३४	१८	४९	११	११
-	-	व.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
-	-	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
अनु. ४	शत. ४	मृग. १	ज्ये. ४	उ.भा. १	ज्ये. ३	धनि. १	भर. २	स्वा. ४

कुण्डली सूर्योदय (१ दिसं.)

९ | शु. बु. ८ सू. | ७ के. | १० श. | ६ | ११ चं. | ५ | १२ गु. | मं. २ | ४ | १ रा. | ३

लोकभविष्य–इस पक्ष में पक्षारंभ में ही (द्वितीया को) पश्चिम में शुक्र उदित होगा। कहीं भयंकर प्राकृतिक आपदा, दुर्भिक्ष व महामारी आदि के कारण जनता स्थानान्तरण के लिए विवश हो-

"गुरु-शुक्रोदयश्चास्तो यदा वै मार्गशीर्षके।
देशान्तरं हि गच्छन्ति तदा क्षुत्पीड़िता जनाः।।"

इस पक्ष में तिथिक्षय भी कहीं प्रतिष्ठित व्यक्ति का पद रिक्त व सत्ताहस्तान्तरण होने का संकेत देता है। कहीं साम्प्रदायिक उपद्रव से अशान्ति किंवा दुर्भिक्ष की स्थिति बने-

"मार्गशीर्षादि मासेषु शुक्लपक्षे तिथिक्षयः।
छत्रभंगं प्रजापीड़ा दुर्भिक्षं च समादिशेत्।।"

ग्रहचाल और बाजार का रुख–२४ नवं. को घी, गुड़, खाण्ड, चावल, सोना-चांदी तेज रहें। २५ नवं. को सभी अनाज, मैटल, तेल, तिलहन में घटाबढ़ी रहे। २ दिसं. को चावल, गेहूं आदि अनाज, सोना, चांदी एवं तिलहन तेज रहें। ४/५ दिसं. को रुई, कपास, सरसों, घी, तिलहन, सोना, चांदी, तांबा तेज रहेंगे।

आकाशलक्षण–२४ से २६ नवं. के मध्य एवं ४,५, ६दिसं. को उ.भारत भयंकर शीतलहर की चपेट में रहेगा। हि.प्र., उत्तराखण्ड, कश्मीर के ऊपरी भागों में भारी हिमपात हो। राजस्थान, उ.प्र. एवं उत्तरी भारत में खण्डवृष्टि भी हो।

कुण्डली सूर्योदय (८ दिसं.)

शु. ९ बु. | ७ के. | १० श. | ८ सू. | ६ | ११ | ५ | १२ गु. | चं. २ मं. | ४ | रा. १ | ३

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं. ३० मि. (I.S.T.) ८ दिसम्बर,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	१	१	८	११	८	९	०	६
२१	१९	२२	७	४	३	२६	१७	१७
४०	४५	०	२५	५७	६	९	१८	१८
५५	२८	४३	५१	५२	४७	१२	१२	१२
६०	७२८	२३	८८	२	७५	४	३	३
५४	४३	०	४९	५९	१६	२५	११	११
-	-	व.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
-	-	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
ज्ये. २	रोहि. ३	रोहि. ४	मूल ३	उ.भा. १	मूल १	धनि. १	भर. २	स्वा. ४

श्री वि. सं. २०७९, शाक १९४४, पौष कृष्ण पक्ष १८

(९ से २३ दिसम्बर, सन् २०२२ ई.)
(दक्षिण-उत्तरायण, दक्षिणगोल, हेमन्त-शिशिर ऋतु)

प्रातः मं. पश्चिम क्षितिज में दिखाई देगा। सायं बु. शु. पश्चिमक्षितिज में, श. पश्चिमकपाल में और गु. याम्योत्तरवृत्तासन्न दिखाई देगा।

दिनमान घ.	दिनमान प.	तिथि	वार	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	योग	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	करण	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	तारीखें प्र. मार्गशीर्ष	तारीखें अं. दिसंबर	तारीखें श. मार्गशीर्ष	तारीखें मु. ज.उ.अ.	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल	घ.	प.	चण्डीगढ़ (भा.स्टैं.टा.) सूर्योदय घं.	सूर्योदय मि.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मि.	स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. (भा.स्टैं.टा.) रा.	अं.	क.	वि.	
२५	११	१	शु.	१०	५४	मृग.	१९	२६	शु.	५१	१४	कौ.	१०	५४	२४	९	१८	१४	मिथुन			७	१२	१७	१७	७	२२	४१	४७	
२५	९	२	श.	१६	२६	आर्द्रा	२६	१०	शु.	५२	५७	ग.	१६	२६	२५	१०	१९	१५	मिथुन			७	१३	१७	१७	७	२३	४२	४३	भ. ४९/३० बाद,
२५	८	३	र.	२२	३२	पुन.	३३	२४	ब्र.	५५	०	वि.	२२	३२	२६	११	२०	१६	कर्क	१६	३४	७	१४	१७	१७	७	२४	४३	३९	भ. २२/३२ तक, बुध पू.षा. में ५७/५५, श्रीगणेश (A)
२५	७	४	चं.	२८	५५	पुष्य	४०	५२	ऐं.	५७	८	बा.	२८	५५	२७	१२	२१	१७	कर्क			७	१४	१७	१७	७	२५	४४	३७	
२५	६	५	मं.	३५	१५	आश्ले.	४८	१३	वै.	५९	६	कौ.	२	५	२८	१३	२२	१८	सिंह	४८	१३	७	१५	१७	१८	७	२६	४५	३५	
२५	५	६	बु.	४१	५	मघा	५४	५९	वि.	६०	०	ग.	८	१०	२९	१४	२३	१९	सिंह			७	१६	१७	१८	७	२७	४६	३५	भ. ४१/५ बाद, शनि धनि. २ में ३५/१९,
२५	४	७	गु.	४५	५७	पू.फा.	६०	०	वि.	०	३४	वि.	१३	३१	३०	१५	२४	२०	सिंह			७	१६	१७	१८	७	२८	४७	३६	भ. १३/३१ तक,
२५	४	८	शु.	४९	२२	पू.फा.	०	४२	प्री.	१	१०	बा.	१७	४०	पौ.१	१६	२५	२१	कन्या	१६	५७	७	१७	१७	१९	७	२९	४८	३७	सं. सूर्य मूल धनु में ६/४३, मु. ४५, पुण्यकाल सारा दिन, (B)
२५	३	९	श.	५०	५९	उ.फा.	५	०	आ. सौ.	० ५८	३८ ४३	तै.	२०	१०	२	१७	२६	२२	कन्या			७	१८	१७	१९	८	०	४९	४०	
२५	३	१०	र.	५०	३४	हस्त	७	२९	शो.	५५	१२	व.	२०	४६	३	१८	२७	२३	तुला	३८	०	७	१८	१७	१९	८	१	५०	४४	भ. २०/४६ से ५०/३४ तक,
२५	२	११	चं.	४८	४	चित्रा	७	५९	अ.	५०	३	ब.	१९	१९	४	१९	२८	२४	तुला			७	१९	१७	२०	८	२	५१	४८	राहु भर. १, केतु स्वा. ३ में ५५/५७, सफला एकादशीव्रत (स.),
२५	२	१२	मं.	४३	३५	स्वाती	६	२७	सु.	४३	२०	कौ.	१५	४९	५	२०	२९	२५	वृश्चिक	४९	४	७	१९	१७	२०	८	३	५२	५४	
२५	२	१३	बु.	३७	२१	विशा. अनु.	३ ५८	२ २	धृ.	३५	१२	ग.	१०	२८	६	२१	३०	२६	वृश्चिक			७	२०	१७	२१	८	४	५४	०	भ. ३७/२१ बाद, सूर्य सायन मकर में ४९/५८, उत्तरायण (C)
२५	२	१४	गु.	२९	४२	ज्येष्ठा	५१	४५	शू.	२५	५६	वि.	३	३१	७	२२	पौ.१	२७	धनु	५१	४५	७	२०	१७	२१	८	५	५५	६	भ. ३/३१ तक, बुध उ.षा. में ३७/२८,
२५	२	३०	शु.	२१	४	मूल	४४	४०	गं.	१५	४९	ना.	२१	४	८	२३	२	२८	धनु			७	२१	१७	२२	८	६	५६	१४	

(A) चतुर्थी व्रत (देखें पृ. 19), (B) शुक्र पू.षा. में ४/२२, (C) एवम् शिशिर ऋतु प्रारम्भ, प्रदोषव्रत,

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं. ३० मि. (I.S.T.) १६ दिसम्बर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७ २९ ४८ ३९	४ २५ ३६ ३२	१ १९ ३ ३७	८ १८ ५० २१	११ ५ २७ ८	८ १३ ८ ५४	९ २६ ४६ ३५	० १६ ५२ ४५	६ १६ ५२ ४५
६१ ३	७४४ ८	२० २९	७९ २	४ ३१	७५ १५	५ ०	३ ११	३ ११
-	-	व.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
-	-	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
४ [illegible]	४ [illegible]	३ [illegible]	२ [illegible]	२ [illegible]	४ [illegible]	२ [illegible]	२ [illegible]	४ [illegible]

कुण्डली सूर्योदय (१६ दिसं.)

शु. ९ बु. | के. ७ | श. १० | सू. ८ | ६ | ११ | चं. ५ | गु. १२ | मं. २ | ४ | रा. १ | ३

लोकभविष्य–सूर्य-शुक्र-बुध पर मंगल की दृष्टि है। अतः राजनीतिज्ञों में देशहितार्थ एवं जनता को प्रलोभन देकर वोट बटोरने की प्रवृत्ति बढ़ेगी। देश आर्थिक संकट का सामना करेगा। कृषकवर्ग राजनीतिज्ञों से विमुख रहे। सीमाप्रान्तों पर सुरक्षा-व्यवस्था को सुदृढ़ रखना आवश्यक है। पाक-अधिकृत क्षेत्र में उपद्रव से राजनैतिक लाभ उठाने का उचित समय है।

ग्रहचाल और बाजार का रुख–११ से १६ दिसं. के मध्य रुई, कपास, सूत, सोना-चांदी, तिलहन, तेल, घी में अच्छे तेजी-मन्दी के रिएक्शन्ज़ आएंगे। सावधान रहें। १९ दिसंबर को रुई, गुड़, खाण्ड, घी, तेल, गेहूं, चावल तेज रहें।

आकाशलक्षण–दिसम्बर ११, १६ से १९ एवं २२, २३ दिसम्बर को उत्तरी भारत में भयंकर शीत लहर से जनजीवन त्रस्त रहेगा। धुन्ध से यातायात बाधित होगा। हि.प्र., कश्मीर एवं उत्तराखण्ड आदि में वायुवेग के साथ खण्डवृष्टि के योग भी हैं।

कुण्डली सूर्योदय (२३ दिसं.)

१० श. | ८ | ११ | शु. सू. ९ चं. बु. | के. ७ | १२ गु. | ६ | १ रा. | ३ | ५ | मं. २ | ४

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं. ३० मि. (I.S.T.) २३ दिसम्बर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८ ६ ५६ १६	८ ० ५४ ५१	१ १६ ५२ १	८ २६ ५७ १०	११ ६ २ ३९	८ २१ ५५ ३९	९ २७ २३ ५	० १६ ३० २९	६ १६ ३० २९
६१ ७	९०८ ०	१६ १५	५१ ३५	५ ४८	७५ १४	५ २९	३ ११	३ ११
-	-	व.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
-	-	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
३ [illegible]	१ [illegible]	३ [illegible]	२ [illegible]	२ [illegible]	३ [illegible]	२ [illegible]	२ [illegible]	३ [illegible]

श्री वि. सं. २०७९, शाक १९४४, पौष शुक्ल पक्ष १९

(२४ दिसं., २०२२ ई. से ६ जन., सन् २०२३ ई.)
(उत्तरायण, दक्षिणगोल, शिशिर ऋतु)

१ जन. को पश्चिम में बु. लुप्त हो जाएगा। सायं शु. पश्चिम क्षितिज पर, इससे ऊपर श. होगा। इस समय गु. याम्योत्तरवृत्त में और मं. पूर्व में दिखाई देगा।

दिनमान घ.	दिनमान प.	तिथि	वार	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	योग	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	करण	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	तारीखें प्र. पौष	अं. दिसंबर	श. पौष	मु. ज.उ.ळ.	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल	घ.	प.	चण्डीगढ़ (भा.स्टैं.टा.) सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. (भा.स्टैं.टा.) रा.	अं.	क.	वि.	
२५	२	१	श.	११	५३	पू.षा.	३७	१४	वृ. धु.	५ ५४	१२ ३०	ब.	११	५३	९	२४	३	२९	मकर	५०	२२	७	२१	१७	२२	८	७	५७	२२	चन्द्रदर्शन, मु. ३०,
२५	२	२	र.	२	३७	उ.षा.	२९	५७	व्या.	४४	१	कौ.	२	३७	१०	२५	४	ज.१	मकर			७	२२	१७	२३	८	८	५८	३०	क्रिस्मस डे, जमद-उल्सानी मु. प्रारम्भ,
अवम		३	र.	५३	४४	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	तृतीया तिथिक्षय,
२५	३	४	चं.	४५	३९	श्रव.	२३	१८	ह.	३४	८	व.	१९	४१	११	२६	५	२	कुम्भ	५०	२०	७	२२	१७	२३	८	९	५९	३९	भ. १९/४१ से ४५/३९ तक, पंचक प्रारम्भ ५०/२०, (A)
२५	३	५	मं.	३८	४५	धनि.	१७	४०	व.	२५	१०	ब.	१२	१२	१२	२७	६	३	कुम्भ			७	२३	१७	२४	८	११	०	४७	बुध मकर में ५४/२८, प्लूटो उ.षा. ३ में १९/५१,
२५	४	६	बु.	३३	२३	शत.	१३	२६	सि.	१७	२२	कौ.	६	४	१३	२८	७	४	मीन	५६	२०	७	२३	१७	२५	८	१२	१	५६	गुरु उ.भा. २ में ५४/४५,
२५	५	७	गु.	२९	४४	पू.भा.	१०	५०	व्य.	१०	५४	ग.	१	३३	१४	२९	८	५	मीन			७	२३	१७	२५	८	१३	३	५	भ. २९/४४ से ५८/५२ तक, सूर्य पू.षा. में ११/५२, (B)
२५	६	८	शु.	२७	५५	उ.भा.	१०	०	व.	५	५३	ब.	२७	५५	१५	३०	९	६	मीन			७	२४	१७	२६	८	१४	४	१४	वक्री बुध धनु में ३६/४९,
२५	७	९	श.	२७	५३	रेव.	१०	५६	प. शि.	२ ५९	१६ ५८	कौ.	२७	५३	१६	३१	१०	७	मेष	१०	५६	७	२४	१७	२७	८	१५	५	२३	पंचक समाप्त १०/५६,
२५	८	१०	र.	२९	२८	अश्वि.	१३	२९	सि.	५८	५०	ग.	२९	२८	१७	ज.१	११	८	मेष			७	२४	१७	२७	८	१६	६	३१	बुध पश्चिम में अस्त १७ घं. २७ मि., जनवरी इंग्लिश (C)
२५	९	११	चं.	३२	२७	भर.	१७	२७	सा.	५८	३८	व.	०	५८	१८	२	१२	९	वृष	३३	३८	७	२४	१७	२८	८	१७	७	३९	भ. ०/५८ से ३२/२७ तक, पुत्रदा एकादशी व्रत (स.),
२५	१०	१२	मं.	३६	३३	कृत्ति.	२२	३२	शु.	५९	१२	ब.	४	३०	१९	३	१३	१०	वृष			७	२५	१७	२९	८	१८	८	४८	
२५	१२	१३	बु.	४१	३०	रोहि.	२८	२८	शु.	६०	०	कौ.	९	१	२०	४	१४	११	वृष			७	२५	१७	३०	८	१९	९	५५	वक्री बुध पू.षा. में २१/२७, प्रदोषव्रत,
२५	१३	१४	गु.	४७	२	मृग.	३५	१	शु.	०	१९	ग.	१४	१६	२१	५	१५	१२	मिथुन	१	४१	७	२५	१७	३०	८	२०	११	३	भ. ४७/२ बाद,
२५	१५	१५	शु.	५३	१	आर्द्रा	४२	०	ब्र.	१	५१	वि.	२०	१	२२	६	१६	१३	मिथुन			७	२५	१७	३१	८	२१	१२	११	भ. २०/१ तक, शुक्र श्रव. में २०/४२, पौषी पूर्णिमा, (D)

(A) शुक्र उ.षा. में ४२/७, जोड़मेला श्री फतेहगढ़ साहिब (पं.), **(B)** बुध वक्री १९/७, शुक्र मकर में २१/४०, अवतारदिन श्रीगुरु गोबिन्दसिंह जी, **(C)** नववर्ष (सन् २०२३ ई.) प्रारम्भ, **(D)** श्रीसत्यनारायण व्रत, माघस्नान प्रारम्भ,

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं. ३० मि. (I.S.T.) ३० दिसम्बर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८	११	१	९	११	९	९	०	६
१४	१३	१५	०	६	०	२८	१६	१६
४	२२	१४	८	४६	४२	२	८	८
१५	५६	१०	४८	५३	८	४५	१३	१३
६१	७९३	१०	१२	७	७५	५	३	३
९	१७	४९	४२	०	१०	५४	११	११
-	-	व.	व.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
-	-	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
पू.षा. १	उ.भा. ४	रोहि. २	उ.षा. २	उ.भा. १	उ.षा. २	धनि. २	भर. १	स्वा. ३

कुण्डली सूर्योदय (३० दिसं.)

शु. १० बु. श. | ११ | सू. ९ | ८ | के. ७ | गु. १२ चं. | ६ | १ रा. | ३ | ५ | मं. २ | ४

लोकभविष्य—शुक्र-शनि दोनों मकर राशि में हैं। शनि की गुरु पर विशेष दृष्टि भी है। राजनीतिज्ञों के लिए परस्पर संघर्षपूर्ण स्थिति बनेगी। कहीं जातिगत राजनीतिक/साम्प्रदायिक समस्याओं से निपटने के लिए समन्वयात्मक नीति अपनानी होगी। देश की राजनीति में विशेष परिवर्तन के योग बन सकते हैं।

ग्रहचाल और बाजार का रुख—पक्षारम्भ में सोना-चांदी, रुई, अनाजों में तेजी रहे। २८ दिसं. को बाजार कमजोर रहें। २३ दिसं. से २ जनवरी, सन् २०२३ ई. तक रुई, कपास, गुड़, घी, तेल, तिलहन, गेहूं, जौ, चना, हल्दी, सोना-चांदी में जोरदार तेजी से लाभ लें। शेयर बाजारों में जोरदार उठापटक रहेगी। ४ से ६ जन. के मध्य वायदा बाजार मन्दे रहें।

कुण्डली सूर्योदय (६ जन.)

शु. १० श. | ११ | सू. ९ बु. | ८ | के. ७ | १२ गु. | ६ | १ रा. | चं. ३ | ५ | २ मं. | ४

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं. ३० मि. (I.S.T.) ६ जनवरी

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८	२	१	८	११	९	९	०	६
२१	१०	१४	२४	७	९	२८	१५	१५
१२	४१	१५	४८	३९	२८	४५	४५	४५
१३	३१	४५	१५	१०	४	११	५८	५८
६१	७१५	५	७८	८	७५	६	३	३
७	४०	४	३८	५	५	१५	११	११
-	-	व.	व.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
-	-	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
पू.षा. ३	आर्द्रा २	रोहि. २	पू.षा. ४	उ.भा. २	उ.षा. ४	धनि. २	भर. १	स्वा. ३

आकाशलक्षण—दिसम्बर २६ से ३० तक एवं जनवरी (सन् २०२३ ई.) १ से ६ तक उत्तरी भारत जोरदार शीत लहर की चपेट में रहेगा। पर्वतीय भूभाग भारी बर्फबारी के कारण हिमाच्छादित रहें एवं धुन्द से यानदुर्घटनाएं भी संभव हैं।

श्री वि. सं. २०७९, शाक १९४४, माघ कृष्ण पक्ष २०

(७ से २१ जनवरी, सन् २०२३ ई.)
(उत्तरायण, दक्षिणगोल, शिशिर ऋतु)

१३ जन. से बु. प्रातः पूर्व में दृश्य हो जाएगा। सायं शु. श. पश्चिमक्षितिज में, गु. पश्चिमकपाल में और मं. को याम्योत्तरवृत से पूर्व में देख सकते हैं।

दिनमान		तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		करण	समाप्ति-काल		तारीखें प्र.	अं.	श.	मु.	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल			चण्डीगढ़ (भा.स्टैं.टा.) सूर्योदय		सूर्यास्त		स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. (भा.स्टैं.टा.)				
घ.	प.			घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.	पौष	जनवरी	पौष	ज.उ.सा.		घ.	प.	घं.	मि.	घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
२५	१७	१	श.	५९	१४	पुन.	४९	१६	ऐं.	३	४०	बा.	२६	७	२३	७	१७	१४	कर्क	३२	२६	७	२५	१७	३२	८	२२	१३	१८	
२५	१९	२	र.	६०	०	पुष्य	५६	३८	वै.	५	४०	तै.	३२	२४	२४	८	१८	१५	कर्क			७	२५	१७	३३	८	२३	१४	२६	
२५	२१	२	चं.	५	३५	आश्ले.	६०	०	वि.	७	४४	ग.	५	३५	२५	९	१९	१६	कर्क			७	२५	१७	३३	८	२४	१५	३३	भ. ३८/४२ बाद,
२५	२३	३	मं.	११	५०	आश्ले.	३	५९	प्री.	९	४४	वि.	११	५०	२६	१०	२०	१७	सिंह	३	५९	७	२५	१७	३४	८	२५	१६	४१	भ. ११/५० तक, श्रीगणेश(संकष्ट)चतुर्थी व्रत (A)
२५	२५	४	बु.	१७	४५	मघा	११	१	आ.	११	२९	बा.	१७	४५	२७	११	२१	१८	सिंह			७	२५	१७	३५	८	२६	१७	४८	सूर्य उ.षा. में १६/५७,
२५	२७	५	गु.	२३	०	पू.फा.	१७	२७	सौ.	१२	४५	तै.	२३	०	२८	१२	२२	१९	कन्या	३३	५६	७	२५	१७	३६	८	२७	१८	५५	मंगल मार्गी ४७/३४,
२५	२९	६	शु.	२७	१०	उ.फा.	२२	५५	शो.	१३	१८	व.	२७	१०	२९	१३	२३	२०	कन्या			७	२५	१७	३७	८	२८	२०	२	भ. २७/१० से ५८/३२ तक, बुध पूर्व में उदित ७ घं. (B)
२५	३२	७	श.	२९	५४	हस्त	२७	१	अ.	१२	४८	ब.	२९	५४	मा.१	१४	२४	२१	तुला	५८	२७	७	२५	१७	३८	८	२९	२१	९	सं. सूर्य मकर में ३३/१९, मु. ३०, पुण्यकाल मध्याह्न (C)
२५	३४	८	र.	३०	५१	चित्रा	२९	२६	सु.	११	२	बा.	०	२२	२	१५	२५	२२	तुला			७	२५	१७	३९	९	०	२२	१६	
२५	३७	९	चं.	२९	४९	स्वाती	२९	५५	धृ.	७	४६	तै.	०	२०	३	१६	२६	२३	तुला			७	२५	१७	३९	९	१	२३	२३	भ. ५८/१२ बाद,
२५	४०	१०	मं.	२६	४२	विशा.	२८	२३	शू. गं.	२ ५६	५३ २४	वि.	२६	४२	४	१७	२७	२४	वृश्चिक	१३	५७	७	२४	१७	४०	९	२	२४	३०	भ. २६/४२ तक, शुक्र धनि. में ०/४२, शनि धनि. ३, (D)
२५	४२	११	बु.	२१	३७	अनु.	२४	५५	वृ.	४८	२५	बा.	२१	३७	५	१८	२८	२५	वृश्चिक			७	२४	१७	४१	९	३	२५	३६	बुध मार्गी २८/१५, षट्तिला एकादशी व्रत (स.),
२५	४५	१२	गु.	१४	४६	ज्येष्ठा	१९	४४	ध्रु.	३९	८	तै.	१४	४६	६	१९	२९	२६	धनु	१९	४४	७	२४	१७	४२	९	४	२६	४२	प्रदोषव्रत,
२५	४८	१३	शु.	६	३०	मूल	१३	१०	व्या.	२८	५२	व.	६	३०	७	२०	३०	२७	धनु			७	२४	१७	४३	९	५	२७	४८	भ. ६/३० से ३१/५२ तक, सूर्य सायन कुम्भ में १६/३०, (E)
अवम		१४	शु.	५७	१४	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	चतुर्दशी तिथिक्षय
२५	५१	३०	श.	४७	२९	पू.षा. उ.षा.	५ ५७	४१ ४५	ह.	१७	५६	च.	२२	२१	८	२१	मा.१	२८	मकर	१८	४०	७	२३	१७	४४	९	६	२८	५४	गुरु उ.भा. ३ में २४/२२, शनैश्चरी अमा, मौनी अमा,

(A) (चन्द्रोदय देखें पृ. 11), (B) २५ मि., लोहड़ी (पं., हरि., हि.प्र., ज.क.), (C) बाद एवं अगले दिन मध्याह्न तक, मकर संक्रान्ति, जन्मदिन स्वामी विवेकानन्द जी, (D) कुम्भ में २६/३७,
(E) मेरु त्रयोदशी (जैन),

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं. ३० मि. (I.S.T.) १५ जनवरी

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९	५	१	८	११	९	९	०	६
०	२९	१३	१४	८	२०	२९	१५	१५
२२	१८	५८	५४	५७	४३	४३	१७	१७
१८	२६	५२	१०	५	१६	९	२०	२०
६१	७७९	१	२७	९	७४	६	३	३
७	२१	५९	५०	२१	५८	३९	११	११
-	-	मा.	व.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
-	-	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.

कुण्डली सूर्योदय (१५ जन.)

सू. १० शु. श. | ११ | ९ बु. | ८ | के. ७ | चं. ६ | ५ | ४ | ३ | २ मं. | १ रा. | गु. १२

लोकभविष्य–इस पक्ष में पांच शनिवार एवं पांच इतवार हैं। शनि–सूर्य का एकराशिसम्बन्ध साम्प्रदायिक उलझनें पैदा करेगा–

> "शनेश्च पंचकं दृष्ट्वा पाताले कंपते फणी।
> दुर्भिक्षं छत्रभंगः स्यात्तदा तत्र महद्भयम्।।"

ग्रहस्थिति कहीं सत्तापरिवर्तन किंवा प्राकृतिक आपदा से जनधनहानि का संकेत भी देती है।

ग्रहचाल और बाजार का रुख–११ जन. के लगभग उड़द, मूंग, चावल, चना, गेहूं, गुड़, खाण्ड, शक्कर, घी, तिल, तेल, लाल मिर्च तेज रहें। १४ जन. के लगभग रुई में जोरदार मन्दी; तेल, तिलहन एवं चांदी में तेजी बने। १८ जन. को चांदी, शेयर, दालें, अनाज, चावल तेज; शेयर मन्दे रहें। १९-२० जन. को रुई, चांदी में घटाबढ़ी; अनाज तेज एवं तिलहन मन्दे रहें।

आकाशलक्षण–जनवरी १०, ११, १३, १४, १५, १६, १८ एवं १९ से २१ जनवरी के लगभग भयंकर शीतलहर से उ. भारत ठिठुरेगा। पर्वतीय प्रान्तों में हिमपात, बादलचाल एवं खण्डवृष्टि के योग हैं। १८ जनवरी के लगभग यानदुर्घटना किंवा प्राकृतिक आपदा से हानि रहे।

कुण्डली सूर्योदय (२१ जन.)

सू. १० शु. | श. ११ | चं. ९ बु. | ८ | ७ के. | ६ | ५ | ४ | ३ | २ मं. | १ रा. | १२ गु.

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं. ३० मि. (I.S.T.) २१ जनवरी

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९	८	१	८	११	९	१०	०	६
६	२४	१४	१४	९	२८	०	१४	१४
२८	०	२१	२१	५५	१२	२३	५८	५८
५५	३४	४४	१५	७	४५	३५	१५	१५
६१	९२१	६	२१	१०	७४	६	३	३
५	२४	१७	५८	६	५१	५२	११	११
-	-	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
-	-	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.

श्री वि. सं. २०७९, शाक १९४४, माघ शुक्ल पक्ष २१

(२२ जनवरी से ५ फरवरी, सन् २०२३ ई.)
(उत्तरायण, दक्षिणगोल, शिशिर ऋतु)

३० जन. को शनि अस्त हो जाएगा। प्रातः बु. पूर्वक्षितिज में होगा। सायं शु. पश्चिम में, इससे ऊपर गु. और मं. पूर्वकपाल में दिखाई देगा।

दिनमान		तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		करण	समाप्ति-काल		तारीखें प्र.	अं.	श.	मु.	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल			चण्डीगढ़ (भा.स्टैं.टा.) सूर्योदय		सूर्यास्त		स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. (भा.स्टैं.टा.)				
घ.	प.			घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.	माघ	जनवरी	माघ	ज.उ.मा.		घ.	प.	घं.	मि.	घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
२५	५४	१	र.	३७	४१	श्रव.	४९	५४	व. सि.	६ ५५	४५ ४१	किं.	१२	३५	९	२२	२	२९	मकर			७	२३	१७	४५	९	७	२९	५८	शुक्र कुम्भ में २१/१५, यूरेनस मार्गी ५२/४५, (A)
२५	५७	२	चं.	२८	२२	धनि.	४२	३८	व्य.	४५	११	बा.	३	१	१०	२३	३	३०	कुम्भ	१६	८	७	२३	१७	४६	९	८	३१	२	चन्द्रदर्शन, मु. ३०, पंचक प्रारम्भ १६/८,
२६	१	३	मं.	१९	५९	शत.	३६	२७	व.	३५	३४	ग.	१९	५९	११	२४	४	र.१	कुम्भ			७	२२	१७	४७	९	९	३२	६	भ. ४६/३० बाद, सूर्य श्रव. में २२/४५, गौरी तृतीया (B)
२६	४	४	बु.	१३	०	पू.भा.	३१	४७	प.	२७	११	वि.	१३	०	१२	२५	५	२	मीन	१७	४८	७	२२	१७	४७	९	१०	३३	८	भ. १३/० तक,
२६	७	५	गु.	७	४६	उ.भा.	२८	५७	शि.	२०	१७	बा.	७	४६	१३	२६	६	३	मीन			७	२१	१७	४८	९	११	३४	१०	भारत गणतन्त्र दिवस, श्रीपंचमी, वसन्त पंचमी, (C)
२६	११	६	शु.	४	३३	रेव.	२८	९	सि.	१५	०	तै.	४	३३	१४	२७	७	४	मेष	२८	९	७	२१	१७	४९	९	१२	३५	१०	पंचक समाप्त २८/९, शुक्र शत. में ४२/२२
२६	१४	७	श.	३	२६	अश्वि.	२९	२२	सा.	११	२३	व.	३	२६	१५	२८	८	५	मेष			७	२०	१७	५०	९	१३	३६	१०	भ. ३/२६ से ३३/५५ तक, रथ/आरोग्य सप्तमी (D)
२६	१८	८	र.	४	२३	भर.	३२	३१	शु.	९	२०	ब.	४	२३	१६	२९	९	६	वृष	४८	३५	७	२०	१७	५१	९	१४	३७	८	
२६	२१	९	चं.	७	१०	कृत्ति.	३७	१८	शु.	८	४०	कौ.	७	१०	१७	३०	१०	७	वृष			७	१९	१७	५२	९	१५	३८	५	शनि अस्त १७ घं. ५२ मि., माघ गुप्त नवरात्र समाप्त,
२६	२५	१०	मं.	११	२७	रोहि.	४३	२०	ब्र.	९	८	ग.	११	२७	१८	३१	११	८	वृष			७	१९	१७	५३	९	१६	३९	०	भ. ४४/४ बाद, नवरात्र-पारणा,
२६	२९	११	बु.	१६	४९	मृग.	५०	११	ऐं.	१०	२५	वि.	१६	४९	१९	फ.१	१२	९	मिथुन	१६	४२	७	१८	१७	५४	९	१७	३९	५५	भ. १६/४९ तक, जया एकादशी व्रत (स.), भीष्म द्वादशी, (E)
२६	३२	१२	गु.	२२	५१	आर्द्रा	५७	३०	वै.	१२	१४	बा.	२२	५१	२०	२	१३	१०	मिथुन			७	१८	१७	५५	९	१८	४०	४८	
२६	३६	१३	शु.	२९	१२	पुन.	६०	०	वि.	१४	१९	तै.	२९	१२	२१	३	१४	११	कर्क	४८	६	७	१७	१७	५५	९	१९	४१	४०	प्रदोषव्रत (देखें पृ. 19),
२६	४०	१४	श.	३५	३४	पुन.	४	५९	प्री.	१६	२८	ग.	२	२३	२२	४	१५	१२	कर्क			७	१६	१७	५६	९	२०	४२	३१	भ. ३५/३४ बाद, बुध उ.षा. में १९/४,
२६	४४	१५	र.	४१	४६	पुष्य	१२	२१	आ.	१८	३१	वि.	८	४०	२३	५	१६	१३	कर्क			७	१६	१७	५७	९	२१	४३	२०	भ. ८/४० तक, श्रीसत्यनारायण व्रत, माघी पूर्णिमा, (F)

(A) माघ गुप्त नवरात्र प्रारम्भ, **(B)** (गोंतरी), वरद-तिल-कुन्द चतुर्थी, रजब मु. प्रारम्भ, **(C)** (श्रीलक्ष्मी-सरस्वतीपूजन), **(D)** (पूर्वारुणोदय वाली), भीष्माष्टमी, मर्यादा महोत्सव (जैन), **(E)** फरवरी प्रारम्भ, **(F)** माघ स्नान समाप्त, श्रीगुरु रविदास जयन्ती,

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं. ३० मि. (I.S.T.) २९ जनवरी

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९	०	१	८	११	१०	१०	०	६
१४	१८	१५	१९	११	८	१	१४	१४
३७	५२	३०	४३	१९	१०	१९	३२	३२
९	३२	१८	८	१६	५२	१३	४९	४९
६०	७५२	११	५८	११	७४	७	३	३
५७	२१	२१	२३	१	३९	४	११	११
-	-	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
-	-	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
श्रव. २	भर. २	रोहि. २	पू.षा. २	उ.भा. ३	शत. १	धनि. ३	भर. १	स्वा. ३

कुण्डली सूर्योदय (२९ जन.)

शु. ११ श. | बु. ९
गु. १२ | सू. १० | ८
रा. १ चं. | के. ७
मं. २ | ४ | ६
३ | ५

लोकभविष्य—पक्षारम्भ में ही शनि-शुक्र का कुम्भराशि में एकत्र होना एवं शनि का राहु के साथ दृष्टिसम्बन्ध कहीं अग्निकाण्ड एवं कहीं महामारी से भयंकर जनधनहानि का संकेत देता है। मुस्लिमराष्ट्रों का इस्लामिक राष्ट्रवाद असफल रहेगा एवं पाक आदि के प्रान्तों में कहीं विस्फोट व ब्लूचिस्तान में सत्तापरिवर्तन के लिए आन्दोलन होंगे। भारत की राजनीति में भी आश्चर्यजनक उलटफेर संभव है।

ग्रहचाल और बाजार का रुख—पक्षारम्भ से २७ जन. तक कुम्भ में शनि-शुक्र रुई, चांदी, घी, गुड़, खाण्ड, चना, दालें, जौ, चावल, रुई में झटके की तेजी करेंगे। ३० जनवरी के लगभग रुई, गुड़, खाण्ड, शक्कर, तेल, घी, तिलहन में अच्छी तेजी हो। अन्य व्यापारिक वस्तुओं में भारी घटाबढ़ी के बाद तेजी रहे।

आकाशलक्षण—जनवरी २२, २३, २४, २७ एवं ३० को तथा ४, ५ फरवरी को शीत का प्रभाव कुछ कम होने लगेगा, लेकिन उ.भा. एवं कुछ अन्य प्रान्तों में अनेकत्र वायुवेग के साथ खण्डवृष्टि के योग भी हैं।

कुण्डली सूर्योदय (५ फर.)

शु. ११ श. | ९ बु.
गु. १२ | सू. १० | ८
१ रा. | के. ७
२ मं. | चं. ४ | ६
३ | ५

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं. ३० मि. (I.S.T.) ५ फरवरी

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९	३	१	८	११	१०	१०	०	६
२१	१३	१७	२७	१२	१६	२	१४	१४
४३	२०	१	२३	३८	५२	९	१०	१०
२१	४२	१७	५९	३१	४१	३	३३	३३
६०	७१४	१५	७४	११	७४	७	३	३
४९	२०	४	१	४२	२५	११	११	११
-	-	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
-	-	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.	अ.
श्रव. ४	पुष्य ४	रोहि. ३	उ.षा. १	उ.भा. ३	शत. ४	धनि. ३	भर. १	स्वा. ३

श्री वि. सं. २०७९, शाक १९४४, फाल्गुन कृष्ण पक्ष २२

(६ से २० फरवरी, सन् २०२३ ई.) (उत्तरायण, दक्षिणगोल, शिशिर-वसन्त ऋतु)

श. अस्त रहेगा। प्रातः बु. पूर्वक्षितिज में होगा। सायं शु. पश्चिम में, इससे ऊपर गु. और मं. इस समय याम्योत्तरवृत्तासन्न दिखाई देगा।

दिनमान		तिथि	वार	समाप्तिकाल		नक्षत्र	समाप्तिकाल		योग	समाप्तिकाल		करण	समाप्तिकाल		तारीखें प्र.	अं.	श.	मु.	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल			चण्डीगढ़ (भा.स्टैं.टा.) सूर्योदय		सूर्यास्त		स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. (भा.स्टैं.टा.)				
घ.	प.			घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.	माघ	फरवरी	माघ	रजब		घ.	प.	घं.	मि.	घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
२६	४८	१	चं.	४७	३९	आश्ले.	१९	३०	सौ.	२०	२४	बा.	१४	४३	२४	६	१७	१४	सिंह	१९	३०	७	१५	१७	५८	९	२२	४४	९	सूर्य धनि. में ३१/०,
२६	५२	२	मं.	५३	५	मघा	२६	१६	शो.	२१	५८	तै.	२०	२२	२५	७	१८	१५	सिंह			७	१४	१७	५९	९	२३	४४	५६	बुध मकर में ०/३७, शुक्र पू.भा. में २६/४५,
२६	५६	३	बु.	५७	५४	पू.फा.	३२	३१	अ.	२३	९	व.	२५	२९	२६	८	१९	१६	कन्या	४८	५९	७	१३	१८	००	९	२४	४५	४२	भ. २५/२९ से ५७/५४ तक, गुरु उ.भा. ४ में २६/१६,
२७	०	४	गु.	६०	०	उ.फा.	३८	५	सु.	२३	४९	ब.	२९	५५	२७	९	२०	१७	कन्या			७	१३	१८	१	९	२५	४६	२७	श्रीगणेशचतुर्थी व्रत,
२७	४	४	शु.	१	५६	हस्त	४२	४३	धृ.	२३	४८	बा.	१	५६	२८	१०	२१	१८	कन्या			७	१२	१८	२	९	२६	४७	११	
२७	८	५	श.	४	५२	चित्रा	४६	११	शू.	२२	५५	तै.	४	५२	२९	११	२२	१९	तुला	१४	३९	७	११	१८	२	९	२७	४७	५४	
२७	१३	६	र.	६	२९	स्वाती	४८	१२	गं.	२०	५७	व.	६	२९	३०	१२	२३	२०	तुला			७	१०	१८	३	९	२८	४८	३६	भ. ६/२९ से ३६/३० तक,
२७	१७	७	चं.	६	३१	विशा.	४८	३४	वृ.	१७	४५	ब.	६	३१	फा.१	१३	२४	२१	वृश्चिक	३३	३९	७	९	१८	४	९	२९	४९	१७	सं. सूर्य कुम्भ में ६/२७, मु. ४५, पुण्यकाल २२/२७ तक,
२७	२१	८	मं.	४	४९	अनु.	४७	११	ध्रु.	१३	१०	कौ.	४	४९	२	१४	२५	२२	वृश्चिक			७	८	१८	५	१०	०	४९	५६	बुध श्रव. में २३/१०, शनि धनि. ४ में ४५/१३,
२७	२५	९	बु.	१	१९	ज्येष्ठा	४४	५	व्या. ह.	७ ५९	११ ४६	ग.	१	१९	३	१५	२६	२३	धनु	४४	५	७	८	१८	६	१०	१	५०	३५	भ. २८/४० से ५६/३ तक, शुक्र मीन में ३२/१५,
अवम		१०	बु.	५६	३	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	दशमी तिथिक्षय,
२७	३०	११	गु.	४९	१७	मूल	३९	२४	व.	५१	११	ब.	२२	४०	४	१६	२७	२४	धनु			७	७	१८	७	१०	२	५१	१२	विजया एकादशी व्रत (स्मा.) (देखें पृ. 19),
२७	३४	१२	शु.	४१	१६	पू.षा.	३३	२५	सि.	४१	३५	कौ.	१५	१६	५	१७	२८	२५	मकर	४६	४४	७	६	१८	७	१०	३	५१	४८	विजया एकादशी व्रत (वै.),
२७	३८	१३	श.	३२	२४	उ.षा.	२६	३२	व्य.	३१	१७	ग.	६	५०	६	१८	२९	२६	मकर			७	५	१८	८	१०	४	५२	२३	भ. ३२/२४ से ५७/४३ तक, शुक्र उ.भा. में १४/३६, **(A)**
२७	४३	१४	र.	२३	६	श्रव.	१९	९	व.	२०	३७	श.	२३	६	७	१९	३०	२७	कुम्भ	४५	२३	७	४	१८	९	१०	५	५२	५७	पंचक प्रारम्भ ४५/२३, सूर्य शत. में ४२/४२,
२७	४७	३०	चं.	१३	५१	धनि.	११	४७	प. शि.	९ ५९	५८ ४२	ना.	१३	५१	८	२०	फा.१	२८	कुम्भ			७	३	१८	१०	१०	६	५३	२९	राहु अश्वि. ४, केतु स्वा. २ में ५०/१८, सोमवती अमा,

(A) नेप्च्यून पू.भा. ४ मीन में ३३/५१, सूर्य सायन मीन में ५२/३०, वसन्त ऋतु प्रारम्भ, शनि प्रदोषव्रत, श्रीमहाशिवरात्रि व्रत,

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं. ३० मि. (I.S.T.) १४ फरवरी

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	७	१	९	११	१०	१०	०	६
०	८	१९	९	१४	२८	३	१३	१३
४९	५८	३३	२१	२७	१	१४	४१	४१
५७	१३	१७	३	२	५	३	५६	५६
६०	८२२	१९	८५	१२	७४	७	३	३
३९	४१	१	२६	२८	५	१५	११	११
-	-	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
-	-	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

कुण्डली सूर्योदय (१४ फर.)

गु. १२ | बु. १०
सू. ११ शु. श.
१ रा. | ९
२ मं. | ८ चं.
३ | ५ | के. ७
४ | ६

लोकभविष्य–पक्षमध्य तक सूर्य-शनि एवं शुक्र का एकत्र होना तथा पक्षमध्य में शु.गु. का मीनस्थ होना कहीं अकालिक वर्षा, प्राकृतिक आपदा किंवा महामारी से हानि कारक है। सूर्य-शनि (परस्पर शत्रु ग्रह) कहीं शासक के विरुद्ध प्रजा में असन्तोष से किंवा कहीं सीमाप्रान्तों पर युद्धात्मक स्थिति की संभावना भी बनाते हैं–

"गुरु-शुक्रौ यदैकस्थौ सौरि-सूर्यश्च कुंभके।
अकाले वा भवेद्वृष्टिर्नरयुद्धं च कुत्रचित्।।"

ग्रहचाल और बाजार का रुख–पक्षारम्भ से ८ फर. तक रुई, सोना, चांदी, दालें, मोटे अनाज तेज रहें। १३/१४ फर. को घी, तेल, तिलहन, गुड़, खाण्ड, चना, चावल एवं चांदी में अच्छी तेजी के झटके आएंगे। १५ फर. से चांदी-रुई, कपास, तिलहन, काली मिर्च, तेल, घी में तेजी पक्षान्त तक रहे।

कुण्डली सूर्योदय (२० फर.)

गु. १२ शु. | १० बु.
सू. ११ चं. श.
१ रा. | ९
२ मं. | ८
३ | ५ | के. ७
४ | ६

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं. ३० मि. (I.S.T.) २० फरवरी

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	१०	१	९	११	११	१०	०	६
६	२	२१	१८	१५	५	३	१३	१३
५३	४२	३३	१०	४२	२४	५७	२२	२२
३०	१६	६	५७	५९	५८	३५	५२	५२
६०	९०६	२१	९१	१२	७३	७	३	३
३१	४१	१४	४६	५५	५०	१५	११	११
-	-	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
-	-	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

आकाशलक्षण – फरवरी ६ से ८ तक एवं १३ से २० फरवरी तक हवा का जोर रहेगा। उ.भारत के कुछ भागों में कहीं बादलचाल, कहीं [illegible] हो। वसन्त ऋतु के आगमन से मौसम में परिवर्तन अनुभव होगा।

151

श्री वि. सं. २०७९, शाक १९४४, फाल्गुन शुक्ल पक्ष २३ | तारीखें | चण्डीगढ़ | स्पष्ट सूर्य | (२१ फरवरी से ७ मार्च, सन् २०२३ ई.)

श्री वि. सं. २०७९, शाक १९४४, फाल्गुन शुक्ल पक्ष २३

(२१ फरवरी से ७ मार्च, सन् २०२३ ई.)
(उत्तरायण, दक्षिणगोल, वसन्त ऋतु)

२ मार्च को बु. पूर्व में लुप्त हो जाएगा। श. ५ मार्च से प्रातः पूर्व में दिखाई देना शुरु होगा। सायंकाल में गु. शु. पश्चिम में परस्पर काफी आसन्न दिखाई देंगे। मं. इस समय याम्योत्तरवृत्तासन्न होगा।

दिनमान घ.	दिनमान प.	तिथि	वार	समाप्तिकाल घ.	समाप्तिकाल प.	नक्षत्र	समाप्तिकाल घ.	समाप्तिकाल प.	योग	समाप्तिकाल घ.	समाप्तिकाल प.	करण	समाप्तिकाल घ.	समाप्तिकाल प.	तारीखें प्र. फाल्गुन	तारीखें अं. फरवरी	तारीखें श. फाल्गुन	तारीखें मु. रजब	चन्द्रराशि	प्रवेशकाल घ.	प्रवेशकाल प.	चण्डीगढ़ (भा.स्टैं.टा.) सूर्योदय घं.	सूर्योदय मि.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मि.	स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. (भा.स्टैं.टा.) रा.	अं.	क.	वि.	
२७	५२	१	मं.	५	७	शत. पू.भा.	४ ५९	५५ ००	सि.	५०	१३	ब.	५	७	९	२१	२	२९	मीन	४५	२१	७	२	१८	११	१०	७	५४	०	चन्द्रदर्शन, मु. ३०, अवतारदिन श्रीरामकृष्ण परमहंस,
अवम		२	मं.	५७	२०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	द्वितीया तिथिक्षय,
२७	५६	३	बु.	५०	५९	उ.भा.	५४	३१	सा.	४१	५२	तै.	२४	९	१०	२२	३	शा.१	मीन			७	१	१८	११	१०	८	५४	२९	शाबान मु. प्रारम्भ,
२८	१	४	गु.	४६	२४	रेव.	५१	५०	शु.	३४	५३	व.	१८	४१	११	२३	४	२	मेष	५१	५०	७	००	१८	१२	१०	९	५४	५६	भ. १८/४१ से ४६/२४ तक, पंचक समाप्त ५१/५०, (A)
२८	५	५	शु.	४३	५१	अश्वि.	५१	८	शु.	२९	३०	ब.	१५	७	१२	२४	५	३	मेष			६	५९	१८	१३	१०	१०	५५	२२	मंगल मृग. में ४९/१८, गुरु रेव. १ में ११/०,
२८	१०	६	श.	५३	२६	भर.	५२	३१	ब्र.	२५	४७	कौ.	१३	३८	१३	२५	६	४	मेष			६	५८	१८	१४	१०	११	५५	४६	**होलाष्टक २७ फर. से ७ मार्च तक**
२८	१४	७	र.	४५	५	कृत्ति.	५५	५४	ऐं.	२३	४२	ग.	१४	१५	१४	२६	७	५	वृष	८	१४	६	५७	१८	१४	१०	१२	५६	७	भ. ४५/५ बाद,
२८	१९	८	चं.	४८	३४	रोहि.	६०	०	वै.	२३	७	वि.	१६	४९	१५	२७	८	६	वृष			६	५६	१८	१५	१०	१३	५६	२७	भ. १६/४९ तक, बुध कुम्भ में २४/३६, होलाष्टक प्रारम्भ,
२८	२३	९	मं.	५३	३१	रोहि.	०	५९	वि.	२३	४६	बा.	२१	३	१६	२८	९	७	मिथुन	३४	५	६	५४	१८	१६	१०	१४	५६	४५	
२८	२८	१०	बु.	५९	२५	मृग.	७	२४	प्री.	२५	१९	तै.	२६	२८	१७	मा.१	१०	८	मिथुन			६	५३	१८	१७	१०	१५	५७	०	शुक्र रेव. में ६/४०, मार्च प्रारम्भ,
२८	३३	११	गु.	६०	०	आर्द्रा	१४	३७	आ.	२७	२४	व.	३२	३७	१८	२	११	९	मिथुन			६	५२	१८	१७	१०	१६	५७	१४	भ. ३२/३७ बाद, बुध पूर्व में अस्त ६ घं. ५२ मि.,
२८	३७	११	शु.	५	५०	पुन.	२२	९	सौ.	२९	४२	वि.	५	५०	१९	३	१२	१०	कर्क	५	१६	६	५१	१८	१८	१०	१७	५७	२६	भ. ५/५० तक, बुध शत. में २३/२५, आमलकी (B)
२८	४२	१२	श.	१२	१३	पुष्य	२९	३७	शो.	३१	५४	बा.	१२	१३	२०	४	१३	११	कर्क			६	५०	१८	१९	१०	१८	५७	३६	सूर्य पू.भा. में ५८/५५, शनिप्रदोष व्रत,
२८	४७	१३	र.	१८	१६	आश्ले.	३६	४३	अ.	३३	४८	तै.	१८	१६	२१	५	१४	१२	सिंह	३६	४३	६	४९	१८	१९	१०	१९	५७	४३	शनि उदित ६ घं. ४९ मि.,
२८	५१	१४	चं.	२३	४४	मघा	४३	१२	सु.	३५	१४	व.	२३	४४	२२	६	१५	१३	सिंह			६	४८	१८	२०	१०	२०	५७	४९	भ. २३/४४ से ५६/३ तक, होलिका दहन (प्रदोष में) (C)
२८	५६	१५	मं.	२८	२८	पू.फा.	४८	५८	धृ.	३६	६	ब.	२८	२८	२३	७	१६	१४	सिंह			६	४७	१८	२१	१०	२१	५७	५३	होलाष्टक समाप्त, जन्मदिन श्रीचैतन्य महाप्रभु,

(A) बुध धनि. में १५/४८, (B) एकादशी व्रत (स.) (देखें पृ.19), गोविन्द द्वादशी, (C) (देखें पृ. 20), श्रीसत्यनारायण व्रत,

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं. ३० मि. (I.S.T.) २७ फरवरी

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	१	१	९	११	११	१०	०	६
१३	१०	२८	२९	१७	१४	४	१३	१३
५६	६	८	१३	१४	०	४८	०	०
२७	७	४२	४४	४३	४५	१२	३७	३७
६०	७३८	२३	९८	१३	७३	७	३	३
१८	३२	२८	३५	२०	२८	१२	११	११
-	-	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
-	-	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.	अ.
शत. ३	रोहि. १	मृग. २	धनि. २	रेव. १	उ.भा. ४	धनि. ४	अश्वि. ४	स्वा. २

कुण्डली सूर्योदय (२७ फर.)

गु. १२ शु. ; बु. १० ; १ रा. ; सू. ११ श. ; ९ ; २ मं. चं. ; ८ ; ३ ; ५ ; के. ७ ; ४ ; ६

लोकभविष्य–इस चान्द्रमास में पांच चन्द्रवार एवं पांच मंगलवार हैं, अतः कहीं धनधान्यसमृद्धि से जनता प्रसन्न रहे, कहीं (किसी प्रान्त विशेष या देशविशेष में) शासक के विरुद्ध आन्दोलन किंवा रक्तपात से अशान्ति रहे–**"रक्तेन पूरिता पृथ्वी छत्रभंगस्तदा भवेत्।"**

शनि की राहु पर विशेष दृष्टि एवं गु.शु. की कन्या राशि पर पूर्ण दृष्टि पाक आदि यावनराष्ट्र के लिए भयावह है।

ग्रहचाल और बाजार का रुख–२३/२४ फर. से चावल, चांदी, रुई, तिलहन में घटाबढ़ी के बाद मन्दी रहे। २७ फर. को तेल, तिलहन, गुड़, खाण्ड, सोना-चांदी में झटके की तेजी रहे। १, २ मार्च को बाजारों में उठापटक रहे। ४ मार्च को सभी वायदा बाजार तेज रहें।५ मार्च को बाजार अचानक नीचे गिरें।

कुण्डली सूर्योदय (७ मार्च)

गु. १२ शु. ; १० ; १ रा. ; बु. ११ श. सू. ; ९ ; २ मं. ; ८ ; ३ ; चं. ५ ; के. ७ ; ४ ; ६

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं. ३० मि. (I.S.T.) ७ मार्च

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	४	१	१०	११	११	१०	०	६
२१	१६	२७	१२	१९	२३	५	१२	१२
५७	४	२३	५१	२	४६	४५	३५	३५
५३	२२	४८	१९	५५	४९	१९	११	११
६०	७३१	२५	१०७	१३	७२	७	३	३
२	४९	३२	०	४४	५९	३	११	११
-	-	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
-	-	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
पू.भा. १	पू.फा. १	मृग. २	शत. २	रेव. १	रेव. ३	धनि. ४	अश्वि. ४	स्वा. २

आकाशलक्षण–फरवरी २३, २४, २७ को एवं १ से ६ मार्च के मध्य श्रीलंका के पूर्वी छोर, शिलांग व अन्य कुछ भागों में बादलचाल व बूंदाबांदी हो। उ.भारत में हवा का जोर रहे। जलवायु-विचार से मौसम सुहावना रहे।

श्री वि. सं. २०७९, शाक १९४४, चैत्र कृष्ण पक्ष २४

(८ से २१ मार्च, सन् २०२३ ई.)
(उत्तरायण, दक्षिण-उत्तरगोल, वसन्त ऋतु)

बु. अस्त रहेगा। प्रातः श. पूर्व क्षितिज में दिखाई देगा। सायं पश्चिम में गु. और इससे ऊपर शु. चमकता दिखाई देगा। इस समय मं. याम्योत्तरवृत्त में होगा।

दिनमान घ.	दिनमान प.	तिथि	वार	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	योग	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	करण	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	तारीखें प्र. फाल्गुन	अं. मार्च	श. फाल्गुन	मु. शाबान	चन्द्रराशि	प्रवेशकाल घ.	प्रवेशकाल प.	चण्डीगढ़ (भा.स्टैं.टा.) सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. (भा.स्टैं.टा.) रा.	अं.	क.	वि.	
२९	१	१	बु.	३२	२३	उ.फा.	५३	५५	शू.	३६	२२	बा.	०	२५	२४	८	१७	१५	कन्या	५	१९	६	४५	१८	२२	१०	२२	५७	५५	वसन्तोत्सव, होला महल्ला श्री आनन्दपुर साहिब (पं.),
२९	५	२	गु.	३५	२५	हस्त	५८	०	गं.	३५	५६	तै.	३	५५	२५	९	१८	१६	कन्या			६	४४	१८	२२	१०	२३	५७	५५	
२९	१०	३	शु.	३७	२९	चित्रा	६०	०	वृ.	३४	४७	व.	६	२७	२६	१०	१९	१७	तुला	२९	४४	६	४३	१८	२३	१०	२४	५७	५४	भ. ६/२७ से ३७/२९ तक, बुध पू.भा. में ५३/४२,
२९	१५	४	श.	३८	३०	चित्रा	१	९	धु.	३२	५१	ब.	७	५९	२७	११	२०	१८	तुला			६	४२	१८	२४	१०	२५	५७	५०	गुरु रेव. २ में ५/४, श्रीगणेशचतुर्थी व्रत,
२९	१९	५	र.	३८	२२	स्वाती	३	१७	व्या.	३०	१	कौ.	८	२६	२८	१२	२१	१९	वृश्चिक	४९	४	६	४१	१८	२४	१०	२६	५७	४५	मंगल मिथुन में ५५/५२, शुक्र अश्वि. मेष में ४/२५,
२९	२४	६	चं.	३७	०	विशा.	४	१३	ह.	२६	१४	ग.	७	४१	२९	१३	२२	२०	वृश्चिक			६	३९	१८	२५	१०	२७	५७	३९	भ. ३७/० बाद,
२९	२९	७	मं.	३४	२०	अनु.	३	५६	व.	२१	२७	वि.	५	४०	चै.१	१४	२३	२१	वृश्चिक			६	३८	१८	२६	१०	२८	५७	३०	भ. ५/४० तक, सं. सूर्य मीन में ५९/५१ (देखें पृ.20), (A)
२९	३३	८	बु.	३०	२२	ज्येष्ठा मूल	२ ५९	२१ २७	सि.	१५	३६	बा.	२	२१	२	१५	२४	२२	धनु	२	२१	६	३७	१८	२६	१०	२९	५७	२०	श्रीशीतलाष्टमी,
२९	३८	९	गु.	२५	९	पू.षा.	५५	२७	व्य.	८	४६	ग.	२५	९	३	१६	२५	२३	धनु			६	३६	१८	२७	११	०	५७	८	भ. ५१/५७ बाद, बुध मीन में २६/५७, मेला श्रीशीतला (B)
२९	४३	१०	शु.	१८	५१	उ.षा.	५०	२९	व. प.	० ५२	५६ २४	वि.	१८	५१	४	१७	२६	२४	मकर	९	१८	६	३४	१८	२८	११	१	५६	५५	भ. १८/५१ तक, बुध उ.भा. में ५२/४९,
२९	४७	११	श.	११	४१	श्रव.	४४	४९	शि.	४३	१८	ब.	११	४१	५	१८	२७	२५	मकर			६	३३	१८	२८	११	२	५६	४०	सूर्य उ.भा. में २०/४८, पापमोचिनी एकादशी व्रत (स.),
२९	५२	१२	र.	३	५८	धनि.	३८	४९	सि.	३३	५५	तै.	३	५८	६	१९	२८	२६	कुम्भ	११	५०	६	३२	१८	२९	११	३	५६	२३	भ. ५५/५८ बाद, पंचक प्रारम्भ ११/५०, प्रदोषव्रत,
अवम		१३	र.	५५	५८	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	त्रयोदशी तिथिक्षय,
२९	५७	१४	चं.	४८	११	शत.	३२	५०	सा.	२४	३१	वि.	२२	४	७	२०	२९	२७	कुम्भ			६	३१	१८	३०	११	४	५६	५	भ. २२/४ तक, सूर्य सायन मेष में ५१/०, उत्तरगोल (C)
३०	२	३०	मं.	४०	५८	पू.भा.	२७	१९	शु.	१५	२७	च.	१४	३४	८	२१	३०	२८	मीन	१३	३७	६	३०	१८	३०	११	५	५५	४४	भौमवती अमा, चान्द्र संवत्सर २०७९ वि. पूर्ण,

(A) मु. १५, पुण्यकाल अगले दिन मध्याह्न तक, शनि शत. १ में ४७/२५, (B) माता (कुराली) पं., (C) प्रारम्भ, महाविषुव दिन, मेला पिहोवा तीर्थ (हरि.),

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं. ३० मि. (I.S.T.) १५ मार्च

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	७	२	१०	११	०	१०	०	६
२९	२८	०	२७	२०	३	६	१२	१२
५७	४८	५४	३८	५३	२८	४१	९	९
२०	५३	२४	२७	५९	४७	७	४५	४५
५९	८३९	२७	११५	१४	७२	६	३	३
४९	२५	१४	४८	४	५७	५१	११	११
-	-	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
-	-	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.

कुण्डली सूर्योदय (१५ मार्च)

गु. १२ | १० | शु. १ रा. | सू. बु. ११ श. | ९ | २ | चं. ८ | मं. ३ | ५ | के. ७ | ४ | ६

लोकभविष्य–कुम्भस्थ शनि की मेषस्थ राहु एवं शुक्र पर विशेष दृष्टि है। शनि-मंगल का नवमपंचमसम्बन्ध चल ही रहा है, अतः अनेक प्रान्तों में भयंकर दुर्भिक्ष की स्थिति बनेगी एवं किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति को भयावह स्थिति का सामना करना पड़े–

> **''राहु-शुक्रस्य संयोगो यदा मेषे भविष्यति।**
> **दुर्भिक्षं ज्ञायते तत्र नात्र कार्या विचारणा।।''**

ग्रहचाल और बाजार का रुख–१२ से १५ मार्च के मध्य गुड़, खाण्ड, सोना, चांदी, तेल, तिलहन, जौ, चना, घी एवं सोना-चांदी में अच्छी तेजी-मंदी के झटके आकर मंदी बने। गेहूं, गुड़, शक्कर, खाण्ड, उड़द, मोठ, नमक तेज रहें। पक्षान्त में तेल-तिलहन, चावल-रसकस तेज रहें।

आकाशलक्षण–१० एवं १२ से १८ मार्च तक म.प्र., बंगाल, आसाम आदि में कहीं बादलचाल व बूंदाबांदी हो। उ.भारत में वायुवेग रहे, मौसम में गर्मी अनुभव होने लगेगी।

''चन्द्रमौलि-शंकरचरण बार बार सिरनाय। संवत् यह पूरण कियो गिरा-गणेश मनाय।।''

कुण्डली सूर्योदय (२१ मार्च)

रा. १ शु. | ११ चं. श. | २ | सू. बु. १२ गु. | १० | मं. ३ | ९ | ४ | ६ | ८ | ५ | के. ७

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं. ३० मि. (I.S.T.) २१ मार्च

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	१०	२	११	११	०	१०	०	६
५	२६	३	९	२२	१०	७	११	११
५५	३	४०	२६	१८	४२	२१	५०	५०
४४	७	४१	५५	४८	२३	४७	४०	४०
५९	८७५	२८	१२०	१४	७२	६	३	३
३८	५१	२१	३३	१४	१	४०	११	११
-	-	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
-	-	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.

मास पक्ष	जनवरी	तिथि	वार	समाप्ति-काल घं.	समाप्ति-काल मि.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घं.	समाप्ति-काल मि.	योग	समाप्ति-काल घं.	समाप्ति-काल मि.	चन्द्रराशि	प्रवेशकाल घं.	प्रवेशकाल मि.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं.	मि.	चण्डीगढ़ सूर्यास्त घं.	मि.	दिल्ली सूर्योदय घं.	मि.	दिल्ली सूर्यास्त घं.	मि.	जयपुर सूर्योदय घं.	मि.	जयपुर सूर्यास्त घं.	मि.	वाराणसी सूर्योदय घं.	मि.	वाराणसी सूर्यास्त घं.	मि.	तारीख	भद्रा, ग्रहराशि नक्षत्र-प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
पौ.कृ.	1	14	श.	27	42	ज्येष्ठा	19	17	गं.	13	54	धनु	19	17	7	24	17	27	7	18	17	31	7	20	17	40	6	48	17	15	1	भ. 17/29 तक, इंग्लिश नववर्ष (2022 ई.) प्रारम्भ,
	2	30	र.	24	3	मूल	16	23	वृ./	9	41	धनु			7	24	17	28	7	18	17	32	7	20	17	41	6	48	17	16	2	गुरु शत. 1 में 15/46,
									ध्रु.	29	28																					
पौष शुक्ल	3	1	चं.	20	32	पू.षा.	13	32	व्या.	25	24	मकर	18	52	7	25	17	29	7	18	17	32	7	20	17	42	6	48	17	16	3	पौष शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, शुक्र वार्धक्य प्रारम्भ 17/31,
	4	2	मं.	17	19	उ.षा.	10	56	ह.	21	36	मकर			7	25	17	30	7	19	17	33	7	20	17	43	6	48	17	17	4	चन्द्रदर्शन, मु. 30,
	5	3	बु.	14	35	श्रवण/	8	46	व.	18	14	कुम्भ	19	53	7	25	17	30	7	19	17	34	7	21	17	43	6	48	17	18	5	भ. 25/32 बाद, पंचक प्रारम्भ 19/53, बुध श्रव. में 18/12, वक्री (A)
						धनि.	31	11																								शुक्र अस्त 6 जनवरी
	6	4	गु.	12	29	शत.	30	20	सि.	15	23	कुम्भ			7	25	17	31	7	19	17	35	7	21	17	44	6	49	17	19	6	भ. 12/29 तक, शुक्र पश्चिम में अस्त 17/31,
	7	5	शु.	11	10	पू.भा.	30	19	व्य.	13	11	मीन	24	15	7	25	17	32	7	19	17	35	7	21	17	45	6	49	17	19	7	
	8	6	श.	10	43	उ.भा.	31	10	व.	11	39	मीन			7	25	17	33	7	19	17	36	7	21	17	45	6	49	17	20	8	
	9	7	र.	11	9	रेवती	—	—	प.	10	48	मीन			7	25	17	34	7	19	17	37	7	21	17	46	6	49	17	21	9	भ. 11/9 से 23/47 तक, नेप्च्यून पू.भा. 3 में 9/17, जन्मदिन (B)
	10	8	चं.	12	24	रेवती	8	49	शि.	10	35	मेष	8	49	7	25	17	34	7	19	17	38	7	21	17	47	6	49	17	21	10	पंचक समाप्त 8/49,
	11	9	मं.	14	22	अश्वि.	11	9	सि.	10	54	मेष			7	25	17	35	7	19	17	39	7	21	17	48	6	49	17	22	11	सूर्य उ.षा. में 7/57,
	12	10	बु.	16	49	भरणी	13	59	सा.	11	37	वृष	20	45	7	25	17	36	7	19	17	39	7	21	17	49	6	49	17	23	12	भ. 30/11 बाद, शुक्र पूर्व में उदित 7/25, शुक्र उदित 12 जनवरी
	13	11	गु.	19	33	कृत्ति.	17	6	शु.	12	33	वृष			7	25	17	37	7	19	17	40	7	21	17	49	6	49	17	24	13	भ. 19/33 तक, वक्री यूरेनस भर. 1 में 28/56, पुत्रदा एकादशी (C)
	14	12	शु.	22	19	रोहि.	20	17	शु.	13	35	वृष			7	25	17	38	7	19	17	41	7	21	17	50	6	49	17	24	14	सं. सूर्य मकर में 14/29, मु. 45, पुण्यकाल सारा दिन, बुध (D)
	15	13	श.	24	57	मृग.	23	21	ब्र.	14	32	मिथुन	9	50	7	25	17	39	7	19	17	42	7	21	17	51	6	49	17	25	15	शुक्र बाल्य समाप्त 7/25, शनि प्रदोष व्रत, बुध पश्चिम में अस्त 17/41,
	16	14	र.	27	18	आर्द्रा	26	9	ऐं.	15	19	मिथुन			7	25	17	40	7	19	17	43	7	21	17	52	6	49	17	26	16	भ. 27/18 बाद, मंगल मूल धनु में 16/31,
	17	15	चं.	29	18	पुन.	28	37	वै.	15	52	कर्क	22	2	7	24	17	41	7	19	17	43	7	21	17	52	6	49	17	27	17	भ. 16/18 तक, पौषी पूर्णिमा, श्री सत्यनारायण व्रत, माघ स्नान प्रारम्भ,
माघ कृष्ण	18	1	मं.	30	54	पुष्य	30	42	वि.	16	7	कर्क			7	24	17	41	7	19	17	44	7	21	17	53	6	49	17	27	18	माघ कृष्ण पक्ष प्रारम्भ, गुरु शत. 2 में 15/34, यूरेनस मार्गी (E)
	19	2	बु.	—	—	आश्ले.	—	—	प्री.	16	5	कर्क			7	24	17	42	7	18	17	45	7	21	17	54	6	49	17	28	19	
	20	2	गु.	8	5	आश्ले.	8	24	आ.	15	44	सिंह	8	24	7	24	17	43	7	18	17	46	7	20	17	55	6	49	17	29	20	भ. 20/28 बाद, शनि श्रव. 4 में 26/38, सूर्य सायन कुम्भ में 8/9,
	21	3	शु.	8	52	मघा	9	42	सौ.	15	4	सिंह			7	23	17	44	7	18	17	47	7	20	17	56	6	48	17	30	21	भ. 8/52 तक, श्री गणेश(संकष्ट)चतुर्थी व्रत
	22	4	श.	9	14	पू.फा.	10	38	शो.	14	6	कन्या	16	48	7	23	17	45	7	18	17	48	7	20	17	56	6	48	17	31	22	वक्री बुध उ.षा. में 25/13,
	23	5	र.	9	12	उ.फा.	11	9	अ.	12	48	कन्या			7	23	17	46	7	17	17	48	7	20	17	57	6	48	17	31	23	यूरेनस भर. 2 में 15/36,
	24	6	चं.	8	44	हस्त	11	15	सु.	11	11	तुला	23	8	7	22	17	47	7	17	17	49	7	19	17	58	6	48	17	32	24	भ. 8/44 से 20/17 तक, सूर्य श्रव. में 10/19,
	25	7/	मं.	7	49	चित्रा	10	54	धृ./	9	12	तुला			7	22	17	48	7	17	17	50	7	19	17	59	6	48	17	33	25	जन्मदिन स्वामी विवेकानन्दजी,
		8		30	25				शू.	30	51																					अष्टमी तिथिक्षय,
	26	9	बु.	28	34	स्वाती	10	6	गं.	28	8	वृश्चिक	27	12	7	21	17	49	7	16	17	51	7	19	18	0	6	47	17	34	26	भारत गणतन्त्र दिवस,
	27	10	गु.	26	17	विशा./	8	51	वृ.	25	3	वृश्चिक			7	21	17	49	7	16	17	52	7	18	18	0	6	47	17	34	27	भ. 15/25 से 26/17 तक,
						अनु.	31	10																								
	28	11	शु.	23	36	ज्येष्ठा	29	7	ध्रु.	21	40	धनु	29	7	7	20	17	50	7	15	17	53	7	18	18	1	6	47	17	35	28	षट्तिला एकादशी व्रत (स),
	29	12	श.	20	38	मूल	26	49	व्या.	18	2	धनु			7	20	17	51	7	15	17	54	7	18	18	2	6	46	17	36	29	शुक्र मार्गी 14/17,
	30	13	र.	17	29	पू.षा.	24	22	ह.	14	15	मकर	29	45	7	19	17	52	7	14	17	54	7	17	18	3	6	46	17	37	30	भ. 17/29 से 27/54 तक, प्रदोष व्रत
	31	14	चं.	14	18	उ.षा.	21	57	व./	10	25	मकर			7	19	17	53	7	14	17	55	7	17	18	4	6	45	17	37	31	बुध पूर्व में उदित 7/20,
									सि.	30	40																					

(A) शुक्र पू.षा. में 18/37, (B) श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी, (C) व्रत (स.), लोहड़ी (पं, हरि., हि.प्र., ज.क.), (D) वक्री 17/10, मकर संक्रान्ति, (E) 20/58, शनि अस्त 17/41, (F) श्रीमेरु त्रयोदशी (जैन),

श्री वि. सं. 2078 — तिथ्यादि पंचांग (भा. स्टैं. टा.) — फरवरी, सन् 2022 ई.

मास पक्ष	फरवरी	तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		चन्द्रराशि-प्रवेशकाल			चण्डीगढ़				दिल्ली				जयपुर				वाराणसी				तारीख	भद्रा, ग्रहराशि नक्षत्र-प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
															सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त			
				घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.		
मा.कृ.	1	30	मं.	11	15	श्रवण	19	44	व्य.	27	8	कुम्भ	30	45	7	18	17	54	7	13	17	56	7	16	18	4	6	45	17	38	1	पचंक प्रारम्भ 30/45, भौमवती अमा, मौनी अमा, महोदय योग (A)
माघ शुक्ल	2	1/	बु.	8	31	धनि.	17	52	व.	23	58	कुम्भ			7	17	17	55	7	13	17	57	7	16	18	5	6	44	17	39	2	माघ शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, चन्द्रदर्शन, मु. 15, गुरु शत. 3 में 10/54, (B)
		2		30	16																											द्वितीया तिथिक्षय,
	3	3	गु.	28	38	शत.	16	34	प.	21	16	कुम्भ			7	17	17	56	7	12	17	58	7	15	18	6	6	44	17	39	3	मंगल पू.षा. में 25/19, गौरी तृतीया (गोंतरी),
	4	4	शु.	27	47	पू.भा.	15	57	शि.	19	9	मीन	10	2	7	16	17	57	7	12	17	59	7	15	18	7	6	43	17	40	4	भ. 16/13 से 27/47 तक, बुध मार्गी 9/43, वरद-तिल-कुन्द चतुर्थी,
	5	5	श.	27	47	उ.भा.	16	8	सि.	17	41	मीन			7	15	17	57	7	11	17	59	7	14	18	7	6	43	17	41	5	श्री पंचमी, वसन्त पंचमी, श्रीलक्ष्मी-सरस्वती पूजन,
	6	6	र.	28	38	रेवती	17	9	सा.	16	52	मेष	17	9	7	15	17	58	7	10	18	0	7	13	18	8	6	42	17	42	6	पंचक समाप्त 17/9, सूर्य धनि.में 13/23,
	7	7	चं.	30	16	अश्वि.	18	58	शु.	16	42	मेष			7	14	17	59	7	10	18	1	7	13	18	9	6	42	17	42	7	भ. 30/16 बाद, रथ सप्तमी (पूर्वारुणोदय वाली), आरोग्य सप्तमी, (C)
	8	8	मं.	—	—	भरणी	21	27	शु.	17	4	वृष	28	9	7	13	18	0	7	9	18	2	7	12	18	10	6	41	17	43	8	भ. 19/24 तक, राहु कृत्ति. 2, केतु विशा. 4 में 17/38. भीष्माष्टमी,
	9	8	बु.	8	31	कृत्ति.	24	23	ब्र.	17	50	वृष			7	12	18	1	7	8	18	3	7	11	18	10	6	41	17	44	9	गुरु अस्त 23 फरवरी
	10	9	गु.	11	8	रोहि.	27	31	ऐं.	18	48	वृष			7	12	18	2	7	7	18	3	7	11	18	11	6	40	17	44	10	माघ गुप्त नवरात्र समाप्त,
	11	10	शु.	13	52	मृग.	30	37	वै.	19	48	मिथुन	17	5	7	11	18	3	7	7	18	4	7	10	18	12	6	39	17	45	11	भ. 27/10 बाद, नवरात्र-पारणा,
	12	11	श.	16	27	आर्द्रा	—	—	वि.	20	39	मिथुन			7	10	18	3	7	6	18	5	7	9	18	13	6	39	17	46	12	भ. 16/27 तक, सं. सूर्य कुम्भ में 27/27, मु. 15, पुण्यकाल अगले(D)
	13	12	र.	18	42	आर्द्रा	9	27	प्री.	21	14	कर्क	29	18	7	9	18	4	7	5	18	6	7	9	18	13	6	38	17	46	13	भीष्म द्वादशी,
	14	13	चं.	20	28	पुन.	11	52	आ.	21	27	कर्क			7	8	18	5	7	4	18	6	7	8	18	14	6	37	17	47	14	सोम प्रदोष व्रत,
	15	14	मं.	21	43	पुष्य	13	48	सौ.	21	17	कर्क			7	7	18	6	7	3	18	7	7	7	18	15	6	36	17	48	15	भ. 21/43 बाद,
	16	15	बु.	22	26	आश्ले.	15	13	शो.	20	43	सिंह	15	13	7	6	18	7	7	3	18	8	7	6	18	15	6	36	17	48	16	भ. 10/5 तक, गुरु शत. 4 में 14/41, श्रीसत्यनारायण व्रत, माघी (E)
फाल्गुन कृष्ण	17	1	गु.	22	40	मघा	16	10	अ.	19	46	सिंह			7	5	18	8	7	2	18	9	7	5	18	16	6	35	17	49	17	फाल्गुन कृष्ण पक्ष प्रारम्भ, शनि धनि. 1 में 25/19,
	18	2	शु.	22	29	पू.फा.	16	41	सु.	18	29	कन्या	22	46	7	5	18	8	7	1	18	9	7	5	18	17	6	34	17	50	18	बुध श्रव. में 30/22, प्लूटो उ.षा. 3 में 28/5, सूर्य सायन मीन में (F)
	19	3	श.	21	57	उ.फा.	16	51	धृ.	16	56	कन्या			7	4	18	9	7	0	18	10	7	4	18	17	6	33	17	50	19	भ. 10/13 से 21/57 तक, सूर्य शत. में 17/57,
	20	4	र.	21	5	हस्त	16	42	शू.	15	7	तुला	28	31	7	3	18	10	6	59	18	11	7	3	18	18	6	33	17	51	20	गुरु वार्धक्य प्रारम्भ 18/12, श्री गणेश चतुर्थी व्रत,
	21	5	चं.	19	58	चित्रा	16	16	गं.	13	5	तुला			7	2	18	11	6	58	18	11	7	2	18	19	6	32	17	51	21	मंगल उ.षा.में 28/2,
	22	6	मं.	18	35	स्वाती	15	36	वृ.	10	51	तुला			7	1	18	11	6	57	18	12	7	1	18	19	6	31	17	52	22	भ. 18/35 से 29/47 तक, शुक्र उ.षा. में 22/36, शनि उदित 7/1,
	23	7	बु.	16	57	विशा.	14	40	ध्रु./	8	25	वृश्चिक	8	55	7	0	18	12	6	56	18	13	7	0	18	20	6	30	17	53	23	गुरु अस्त 18/12,
									व्या.	29	47																					
	24	8	गु.	15	4	अनु.	13	30	ह.	26	58	वृश्चिक			6	58	18	13	6	55	18	14	6	59	18	21	6	29	17	53	24	
	25	9	शु.	12	58	ज्येष्ठा	12	7	व.	23	58	धनु	12	7	6	57	18	14	6	54	18	14	6	58	18	21	6	28	17	54	25	भ. 23/49 बाद,
	26	10	श.	10	39	मूल	10	32	सि.	20	50	धनु			6	56	18	15	6	53	18	15	6	58	18	22	6	28	17	54	26	भ. 10/39 तक, मंगल मकर में 15/50, विजया एकादशी व्रत (स्मा.),
	27	11/	र.	8	13	पू.षा.	8	48	व्य.	17	38	मकर	14	21	6	55	18	15	6	52	18	16	6	57	18	22	6	27	17	55	27	शुक्र मकर में 10/17, विजया एकादशी व्रत (वै.),
		12		29	43																											द्वादशी तिथिक्षय,
	28	13	चं.	27	16	उ.षा./	7	2	व.	14	24	मकर			6	54	18	16	6	51	18	16	6	56	18	23	6	26	17	55	28	भ. 27/16 बाद, सोम प्रदोष व्रत,
						श्रव	29	19																								

(A) (सूर्योदय से 11/15 तक), (B) माघ गुप्त नवरात्र प्रारम्भ, (C) मर्यादा महोत्सव (जैन), (D) दिन मध्याह्न तक, जया एकादशी व्रत (स.), (E) पूर्णिमा, माघ-स्नान समाप्त, श्री गुरु रविदास जयन्ती, (F) 22/13, वसन्त ऋतु प्रारम्भ,

श्री वि. सं. 2078 — तिथ्यादि पंचांग (भा. स्टैं. टा.) — मार्च, सन् 2022 ई.

मास पक्ष	तारीख	तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		चन्द्रराशि-प्रवेशकाल			चण्डीगढ़				दिल्ली				जयपुर				वाराणसी				तारीख	भद्रा, ग्रहराशि नक्षत्र-प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
															सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त			
				घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.		
फा.कृ.	1	14	मं.	25	0	धनि.	27	47	प.	11	16	कुम्भ	16	31	6	53	18	17	6	50	18	17	6	55	18	24	6	25	17	56	1	भ. 14/8 तक, पंचक प्रारम्भ 16/31, बुध धनि. में 20/29, (A)
	2	30	बु.	23	4	शत.	26	37	शि./	8	20	कुम्भ			6	52	18	17	6	49	18	18	6	54	18	24	6	24	17	56	2	गुरु पू.भा. 1 में 11/5,
									सि.	29	41																					
फाल्गुन शुक्ल	3	1	गु.	21	37	पू.भा.	25	56	सा.	27	28	मीन	20	3	6	51	18	18	6	48	18	18	6	53	18	25	6	23	17	57	3	फाल्गुन शुक्ल पक्ष प्रारम्भ,
	4	2	शु.	20	45	उ.भा.	25	51	शु.	25	44	मीन			6	50	18	19	6	47	18	19	6	52	18	25	6	22	17	57	4	चन्द्रदर्शन, मु. 45, सूर्य पू.भा. में 24/11, अवतार दिन श्रीरामकृष्ण परमहंस,
	5	3	श.	20	36	रेवती	26	29	शु.	24	34	मेष	26	29	6	49	18	20	6	46	18	19	6	51	18	26	6	21	17	58	5	पंचक समाप्त 26/29,
	6	4	र.	21	12	अश्वि.	27	50	ब्र.	24	0	मेष			6	47	18	20	6	45	18	20	6	50	18	27	6	20	17	58	6	भ. 8/54 से 21/12 तक, बुध कुम्भ में 11/20,
	7	5	चं.	22	32	भरणी	29	54	ऐं.	23	59	मेष			6	46	18	21	6	44	18	21	6	49	18	27	6	19	17	59	7	होलाष्टक प्रारम्भ
	8	6	मं.	24	31	कृत्ति	—	—	वै.	24	27	वृष	12	30	6	45	18	22	6	43	18	21	6	48	18	28	6	18	18	0	8	10 से 18 मार्च
	9	7	बु.	26	57	कृत्ति.	8	31	वि.	25	15	वृष			6	44	18	22	6	42	18	22	6	47	18	28	6	17	18	0	9	भ. 26/57 बाद,
	10	8	गु.	29	34	रोहि.	11	30	प्री.	26	13	मिथुन	25	2	6	43	18	23	6	41	18	23	6	45	18	29	6	16	18	0	10	भ. 16/16 तक, बुध शत. में 19/41, शुक्र श्रव. में 27/53, (B)
	11	9	शु.	—	—	मृग	14	35	आ	27	9	मिथुन			6	41	18	24	6	39	18	23	6	44	18	29	6	15	18	1	11	मंगल श्रव. में 25/34,
	12	9	श.	8	8	आर्द्रा	17	31	सौ.	27	54	मिथुन			6	40	18	24	6	38	18	24	6	43	18	30	6	14	18	1	12	गुरु उदित 26 मार्च
	13	10	र.	10	22	पुन.	20	5	शो.	28	17	कर्क	13	29	6	39	18	25	6	37	18	24	6	42	18	30	6	13	18	2	13	भ. 23/14 बाद.
	14	11	चं.	12	6	पुष्य	22	7	अ.	28	13	कर्क			6	38	18	26	6	36	18	25	6	41	18	31	6	12	18	2	14	भ. 12/6 तक, सं. सूर्य मीन में 24/16, मु. 15, पुण्यकाल अगले (C)
	15	12	मं.	13	12	आश्ले.	23	32	सु.	27	40	सिंह	23	32	6	37	18	26	6	35	18	26	6	40	18	31	6	11	18	3	15	गुरु पू.भा. 2 में 30/19, गोविन्द द्वादशी, भौम प्रदोष व्रत,
	16	13	बु.	13	40	मघा	24	20	धृ.	26	37	सिंह			6	35	18	27	6	34	18	26	6	39	18	32	6	10	18	3	16	
	17	14	गु.	13	30	पू.फा.	24	34	शू.	25	7	कन्या	30	32	6	34	18	28	6	33	18	27	6	38	18	32	6	9	18	4	17	भ. 13/30 से 25/8 तक, श्री सत्यनारायण व्रत, होलिकादहन (D)
	18	15	शु.	12	47	उ.फा.	24	17	गं.	23	13	कन्या			6	33	18	28	6	31	18	27	6	37	18	33	6	8	18	4	18	सूर्य उ.भा. में 8/37, बुध पू.भा. में 21/5. होलाष्टक समाप्त, (E)
चैत्र कृष्ण	19	1	श.	11	37	हस्त	23	37	वृ.	21	0	कन्या			6	32	18	29	6	30	18	28	6	36	18	33	6	7	18	5	19	चैत्र कृष्ण पक्ष प्रारम्भ, शनि धनि. 2 में 20/7, वसन्तोत्सव, हला- (F)
	20	2	र.	10	7	चित्रा	22	40	ध्रु.	18	32	तुला	11	10	6	31	18	30	6	29	18	28	6	35	18	34	6	6	18	5	20	भ. 21/13 बाद, सूर्य सायन मेष में 21/4, उत्तर गोल प्रारम्भ, (G)
	21	3/	चं.	8	20	स्वाती	21	30	व्या.	15	54	तुला			6	29	18	30	6	28	18	29	6	34	18	34	6	5	18	6	21	भ. 8/20 तक, श्री गणेश चतुर्थी व्रत,
		4		30	24																											चतुर्थी तिथिक्षय,
	22	5	मं.	28	22	विशा.	20	13	ह.	13	8	वृश्चिक	14	33	6	28	18	31	6	27	18	30	6	32	18	35	6	4	18	6	22	शक संवत् 1944 प्रारम्भ,
	23	6	बु.	26	16	अनु.	18	52	व	10	19	वृश्चिक			6	27	18	32	6	26	18	30	6	31	18	35	6	3	18	7	23	भ. 26/16 बाद.
	24	7	गु.	24	10	ज्येष्ठा	17	29	सि./	7	28	धनु	17	29	6	26	18	32	6	24	18	31	6	30	18	36	6	2	18	7	24	भ. 13/8 तक, बुध मीन में 10/56, शुक्र धनि. में 21/48, मेला (H)
									व्य.	28	36																					
	25	8	शु.	22	4	मूल	16	7	व.	25	45	धनु			6	24	18	33	6	23	18	31	6	29	18	36	6	1	18	7	25	बुध उ.भा. में 29/42, श्री शीतलाष्टमी,
	26	9	श.	20	2	पू.षा.	14	47	प.	22	58	मकर	20	28	6	23	18	34	6	22	18	32	6	28	18	37	6	0	18	8	26	गुरु उदित 6/23,
	27	10	र.	18	4	उ.षा.	13	32	शि.	20	14	मकर			6	22	18	34	6	21	18	32	6	27	18	37	5	59	18	8	27	भ. 7/3 से 18/4 तक,
	28	11	चं.	16	15	श्रव	12	24	सि.	17	38	कुम्भ	23	54	6	21	18	35	6	20	18	33	6	26	18	38	5	58	18	9	28	पंचक प्रारम्भ 23/54, पाप मोचिनी एकादशी व्रत (स.),
	29	12	मं.	14	38	धनि	11	28	सा.	15	12	कुम्भ			6	19	18	35	6	19	18	33	6	25	18	38	5	56	18	9	29	मंगल धनि. में 19/20, गुरु पू.भा. 3 में 29/38, गुरु बाल्य समाप्त। (I)
	30	13	बु.	13	19	शत	10	48	शु.	13	1	मीन	28	32	6	18	18	36	6	18	18	34	6	24	18	39	5	55	18	10	30	भ. 13/19 से 24/50 तक, वारुणी योग (सूर्योदय से 10/48 तक), (J)
	31	14	गु.	12	22	पू.भा.	10	30	शु.	11	7	मीन			6	17	18	37	6	16	18	35	6	23	18	39	5	54	18	10	31	सूर्य रेव. में 19/25, शुक्र कुम्भ में 8/39,
चै.कृ.	अ.1	30	शु.	11	54	उ.भा.	10	39	ब.	9	35	मीन	.		6	16	18	37	6	15	18	35	6	22	18	40	5	53	18	10	अ.1	बुध रेव. में 24/53, चान्द्र संवत्सर 2078 वि. पूर्ण, अप्रैल प्रारम्भ

(A) श्रीमहाशिवरात्रि व्रत (शिवयोग), (B) होलाष्टक प्रारम्भ, (C) मध्याह्न तक, आमलकी एकादशी व्रत (स.), (D) (21/1 से 22/13 के मध्य) (E) जन्मदिन श्री चैतन्य महाप्रभु,
(F) महल्ला श्री आनन्दपुर साहिब (पं.), (G) महाविषुव दिन, बुध पूर्व में अस्त 6/31, (H) श्री शीतला माता कुराली (पं.), (I) 6/23, भौम प्रदोष व्रत, (J) मेला पिहोवा तीर्थ (हरि.)

श्री वि.सं. 2078-79											तिथ्यादि पंचांग (भा. स्टैं. टा.)																					अप्रैल, सन् 2022 ई.
मास पक्ष	अप्रैल	तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति काल		योग	समाप्ति काल		चन्द्रराशि - प्रवेशकाल			चण्डीगढ़				दिल्ली				जयपुर				वाराणसी				तारीख	भद्रा, ग्रहराशिनक्षत्र-प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
															सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त			
				घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.		
चै.कृ.	1	30	शु.	11	54	उ.भा.	10	39	ब्र.	9	35	मीन			6	16	18	37	6	15	18	35	6	22	18	40	5	53	18	10	1	बुध रेव. में 24/53, चान्द्र संवत्सर 2078 वि.पूर्ण,
चैत्र शुक्ल	2	1	श.	11	58	रेव.	11	21	ऐं	8	29	मेष	11	21	6	15	18	38	6	14	18	36	6	20	18	40	5	52	18	11	2	**चैत्र शुक्ल पक्ष प्रारम्भ**, पंचक समाप्त 11/21, **चन्द्रदर्शन**, **(A)**
	3	2	र.	12	39	अश्वि.	12	37	वै.	7	51	मेष			6	13	18	39	6	13	18	36	6	19	18	41	5	51	18	11	3	
	4	3	चं.	13	55	भर.	14	28	वि.	7	41	वृष	21	1	6	12	18	39	6	12	18	37	6	18	18	41	5	50	18	12	4	भ. 26/50 बाद, **गौरी तृतीया** (गणगौर), **आन्दोलन तृतीया**, **(B)**
	5	4	मं.	15	45	कृत्ति.	16	51	प्री.	7	58	वृष			6	11	18	40	6	11	18	37	6	17	18	42	5	49	18	12	5	भ.15/45 तक, **श्री (लक्ष्मी) पंचमी** (देखें पृ. 13), हयव्रत,
	6	5	बु.	18	1	रोहि.	19	39	आ.	8	37	वृष			6	10	18	40	6	10	18	38	6	16	18	42	5	48	18	13	6	शुक्र शत. में 15/22, **नागपंचमी**,
	7	6	गु.	20	33	मृग.	22	41	सौ.	9	30	मिथुन	9	9	6	8	18	41	6	8	18	38	6	15	18	43	5	47	18	13	7	**मंगल कुम्भ में 15/17, स्कन्द षष्ठी,**
	8	7	शु.	23	5	आर्द्रा	25	43	शो.	10	29	मिथुन			6	7	18	42	6	7	18	39	6	14	18	43	5	46	18	14	8	भ.23/5 बाद, **बुध अश्वि. मेष में 11/59**
	9	8	श.	25	24	पुन.	28	30	अ.	11	23	कर्क	21	50	6	6	18	42	6	6	18	40	6	13	18	44	5	45	18	14	9	भ.12/14 तक, **श्रीदुर्गाष्टमी, अशोकाष्टमी** (पुनर्वसुयोग),
	10	9	र.	27	16	पुष्य	–	–	सु.	12	2	कर्क			6	5	18	43	6	5	18	40	6	12	18	44	5	44	18	14	10	**नवरात्र समाप्त, श्रीरामनवमी,**
	11	10	चं.	28	30	पुष्य	6	51	धृ.	12	17	कर्क			6	4	18	44	6	4	18	41	6	11	18	45	5	43	18	15	11	**नवरात्र-पारणा,**
	12	11	मं.	29	2	आश्ले.	8	34	शू.	12	2	सिंह	8	34	6	3	18	44	6	3	18	41	6	10	18	45	5	42	18	15	12	भ.16/46 से 29/2 तक, **राहु कृत्ति. 1 मेष, केतु विशा. 3 तुला (C)**
	13	12	बु.	28	50	मघा	9	36	ग.	11	13	सिंह			6	1	18	45	6	2	18	42	6	9	18	46	5	41	18	16	13	**गुरु पू.भा. 4 मीन में 15/46**, कामदा एकादशीव्रत (वै.), **(D)**
	14	13	गु.	27	56	पू.फा.	9	56	वृ.	9	50	कन्या	15	54	6	0	18	46	6	1	18	42	6	8	18	46	5	40	18	16	14	**सं. सूर्य अश्वि. मेष में 8/41**, मु. 30, पुण्यकाल 15/05 तक, **(E)**
	15	14	शु.	26	25	उ.फा.	9	35	ध्रु.	7	55	कन्या			5	59	18	46	6	0	18	43	6	7	18	47	5	39	18	17	15	भ. 26/25 बाद, **बुध पश्चिम में उदित 18/46**, श्रीशिव- **(F)**
									व्या.	29	31																					
	16	15	श.	24	25	हस्त	8	39	ह.	26	44	तुला	20	1	5	58	18	47	5	59	18	43	6	6	18	47	5	39	18	17	16	भ.13/25 तक, मंगल शत. में 10/59, **चैत्री पूर्णिमा, वैशाख- (G)**
वैशाख कृष्ण	17	1	र.	22	2	चित्रा	7	16	व.	23	39	तुला			5	57	18	47	5	58	18	44	6	5	18	48	5	38	18	18	17	**वैशाख कृष्णपक्ष प्रारम्भ,**
						स्वाती	29	33																								
	18	2	चं.	19	24	विशा.	27	38	सि.	20	23	वृश्चि.	22	8	5	56	18	48	5	57	18	45	6	4	18	48	5	37	18	18	18	शुक्र पू.भा. में 20/9, नेप्च्यून पू.भा. 4 मीन में 8/36,
	19	3	मं.	16	39	अनु.	25	39	व्य.	17	1	वृश्चि.			5	55	18	49	5	56	18	45	6	3	18	49	5	36	18	19	19	भ. 6/1 से 16/39 तक, **श्रीगणेश चतुर्थी व्रत,**
	20	4	बु.	13	53	ज्येष्ठा	23	41	व.	13	38	धनु	23	41	5	54	18	49	5	55	18	46	6	2	18	50	5	35	18	19	20	**सूर्य सायन वृष में 7/55, ग्रीष्म ऋतु प्रारम्भ, अगस्त्य अस्त,**
	21	5	गु.	11	13	मूल	21	51	प.	10	20	धनु			5	53	18	50	5	54	18	46	6	1	18	50	5	34	18	20	21	
	22	6	शु.	8	43	पू.षा.	20	14	शि.	7	11	मकर	25	52	5	52	18	51	5	53	18	47	6	0	18	51	5	33	18	20	22	भ. 8/43 से 19/36 तक, बुध कृत्ति. में 16/16
									सि.	28	13																					
	23	7/	श.	6	27	उ.षा.	18	53	सा.	25	30	मकर			5	51	18	51	5	52	18	47	5	59	18	51	5	32	18	20	23	
		8		28	30																											अष्टमी तिथिक्षय,
	24	9	र.	26	53	श्रव.	17	52	शु.	23	3	कुम्भ	29	29	5	50	18	52	5	51	18	48	5	58	18	52	5	31	18	21	24	पंचक प्रारंभ 29/29, बुध वृष में 24/21, **(H)**
	25	10	चं.	25	38	धनि.	17	12	शु.	20	54	कुम्भ			5	49	18	53	5	50	18	49	5	57	18	52	5	31	18	21	25	भ. 14/15 से 25/38 तक,
	26	11	मं.	24	48	शत.	16	56	ब्र.	19	5	कुम्भ			5	48	18	53	5	49	18	49	5	57	18	53	5	30	18	22	26	वरूथिनी एकादशी व्रत (स.), श्रीवल्लभाचार्य जयन्ती,
	27	12	बु.	24	24	पू.भा.	17	5	ऐं.	17	35	मीन	11	0	5	47	18	54	5	48	18	50	5	56	18	53	5	29	18	22	27	सूर्य भर. में 24/31, शुक्र मीन में 18/17,
	28	13	गु.	24	27	उ.भा.	17	40	वै.	16	28	मीन			5	46	18	55	5	47	18	50	5	55	18	54	5	28	18	23	28	भ.24/27 बाद, गुरु उ.भा. 1 में 21/19, प्रदोषव्रत,
	29	14	शु.	24	58	रेव.	18	42	वि.	15	42	मेष	18	42	5	45	18	55	5	46	18	51	5	54	18	54	5	27	18	23	29	भ.12/43 तक, पंचक समाप्त 18/42, शनि धनि. 3 कुम्भ में **(I)**
	30	30	श.	25	58	अश्वि	20	12	प्री.	15	18	मेष			5	44	18	56	5	45	18	52	5	53	18	55	5	27	18	24	30	शुक्र उ.भा. में 16/53, शनैश्चरी अमा,

(A) मु. 30, चान्द्र संवत्सर 2079 वि. प्रारम्भ, वासन्त (चैत्र) नवरात्र प्रारम्भ, वर्षफल-श्रवण, तैलाभ्यंग, ध्वजारोहण, निम्बपत्र-प्राशन, चंद्रव्रत, गुड़ी पड़वा, **(B)** श्रीमत्स्य जयन्ती, **(C)** में 15/30, कामदा एकादशीव्रत (स्मा.) (देखें पृ. 13), दोलोत्सव, **(D)** श्रीविष्णु-दमनोत्सव, **(E)** बुध भर. में 25/21, प्रदोष व्रत, वैशाखी (पं., हरि., हि.प्र.), अनंग त्रयोदशी, श्रीमहावीर जयन्ती (जैन), **(F)** दमनोत्सव, दमनक चतुर्दशी, [illegible] **(G)** स्नान प्रारम्भ, श्रीसत्यनारायण व्रत, श्रीहनुमान जयन्ती (उ.भा.), **(H)** [illegible]

मास पक्ष	ता.	तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति काल		योग	समाप्ति काल		चन्द्रराशि-प्रवेशकाल			चण्डीगढ़				दिल्ली				जयपुर				वाराणसी				तारीख	भद्रा, ग्रहराशिनक्षत्र-प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
															सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त			
				घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.		
वैशाख शुक्ल	1	1	र.	27	25	भर.	22	10	आ.	15	17	वृष	28	43	5	43	18	57	5	44	18	52	5	52	18	55	5	26	18	24	1	वैशाख शुक्ल पक्ष प्रारंभ,
	2	2	चं.	29	19	कृत्ति.	24	33	सौ.	15	36	वृष			5	42	18	57	5	44	18	53	5	52	18	56	5	25	18	25	2	चन्द्रदर्शन, मु. 30, श्रीशिवाजी जयन्ती,
	3	3	मं.	--	--	रोहि.	27	17	शो.	16	14	वृष			5	41	18	58	5	43	18	53	5	51	18	56	5	24	18	25	3	मंगल पू.भा. में 26/25, श्रीपरशुराम जयन्ती, अक्षय तृतीया (A)
	4	3	बु.	7	33	मृग.	--	-	अ.	17	6	मिथुन	16	45	5	40	18	59	5	42	18	54	5	50	18	57	5	24	18	26	4	भ. 20/47 बाद,
	5	4	गु.	10	1	मृग.	6	16	सु.	18	5	मिथुन			5	39	18	59	5	41	18	55	5	49	18	58	5	23	18	26	5	भ. 10/1 तक,
	6	5	शु.	12	33	आर्द्रा	9	20	धृ.	19	5	मिथुन			5	39	19	0	5	41	18	55	5	49	18	58	5	22	18	27	6	बुध रोहि. में 17/35, आद्य जगद्गुरु श्रीशंकराचार्य जयन्ती,
	7	6	श.	14	57	पुन.	12	17	शू.	19	57	कर्क	5	34	5	38	19	1	5	40	18	56	5	48	18	59	5	22	18	27	7	श्रीरामानुजाचार्य जयन्ती (उ.भा.),
	8	7	र.	17	0	पुष्य	14	57	गं.	20	32	कर्क			5	37	19	1	5	39	18	56	5	47	18	59	5	21	18	28	8	भ. 17/0 बाद, श्रीगंगा जन्म,
	9	8	चं.	18	32	आश्ले	17	7	वृ.	20	42	सिंह	17	7	5	36	19	2	5	38	18	57	5	47	19	0	5	20	18	28	9	भ. 5/47 तक,
	10	9	मं.	19	25	मघा	18	39	ध्रु.	20	21	सिंह			5	35	18	3	5	38	18	58	5	46	19	0	5	20	18	29	10	बुध वक्री 17/18, श्रीजानकी जयन्ती,
	11	10	बु.	19	31	पू.फा.	19	27	व्या.	19	24	कन्या	25	32	5	35	19	3	5	37	18	58	5	45	19	1	5	19	18	29	11	सूर्य कृत्ति. में 18/35,
	12	11	गु.	18	52	उ.फा.	19	30	ह.	17	50	कन्या			5	34	19	4	5	36	18	59	5	45	19	1	5	19	18	30	12	भ. 7/11 से 18/52 तक, शुक्र रेव. में 8/29, बुध पश्चिम में (B)
	13	12	शु.	17	27	हस्त	18	48	व.	15	40	कन्या			5	33	19	5	5	36	18	59	5	44	19	2	5	18	18	31	13	प्रदोषव्रत,
	14	13	श.	15	23	चित्रा	17	27	सि.	12	58	तुला	6	12	5	33	19	5	5	35	19	0	5	44	19	3	5	18	18	31	14	सं. सूर्य वृष में 29/29 (देखें पृ. 13) मु.15, (C)
	15	14	र.	12	46	स्वाती	15	34	व्य.	9	48	तुला			5	32	19	6	5	34	19	1	5	43	19	3	5	17	18	32	15	भ. 12/46 से 23/15 तक, गुरु उ.भा. 2 में 13/3, (D)
	16	15	चं.	9	44	विशा.	13	18	व.	6	16	वृश्चि.	7	53	5	31	19	6	5	34	19	1	5	43	19	4	5	17	18	32	16	श्रीबुद्ध जयन्ती (बुद्धपूर्णिमा), वैशाखी पूर्णिमा, (E)
									प.	26	30																					
ज्येष्ठ कृष्ण	17	1/	मं.	6	26	अनु.	10	46	शि.	22	37	वृश्चि.			5	31	19	7	5	33	19	2	5	42	19	4	5	16	18	33	17	ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष प्रारंभ, मंगल मीन में 9/32,
		2		27	0																											द्वितीया तिथिक्षय,
	18	3	बु.	23	37	ज्येष्ठा	8	9	सि.	18	43	धनु	8	9	5	30	19	8	5	33	19	2	5	42	19	5	5	16	18	33	18	भ. 13/18 से 23/37 तक
	19	4	गु.	20	24	मूल	5	37	सा.	14	57	धनु			5	30	19	8	5	32	19	3	5	41	18	5	5	15	18	34	19	श्रीगणेशचतुर्थी व्रत,
						पू.षा.	27	17																								
	20	5	शु.	17	29	उ.षा.	25	18	शु.	11	24	मकर	8	45	5	29	19	9	5	32	19	4	5	41	19	6	5	15	18	34	20	
	21	6	श.	14	59	श्रव.	23	46	शु.	8	10	मकर			5	29	19	10	5	31	19	4	5	40	19	6	5	14	18	35	21	भ. 14/59 से 25/59 तक, मंगल उ.भा. में 20/24, (F)
									ब्र.	29	21																					
	22	7	र.	13	0	धनि.	22	46	ऐं.	26	58	कुम्भ	11	12	5	28	19	10	5	31	19	5	5	40	19	7	5	14	18	35	22	पंचक प्रारम्भ 11/12
	23	8	चं.	11	34	शत.	22	22	वै.	25	4	कुम्भ			5	28	19	11	5	31	19	5	5	39	19	7	5	14	18	36	23	शुक्र अश्वि. मेष में 20/27
	24	9	मं.	10	45	पू.भा.	22	33	वि.	23	40	मीन	16	27	5	27	19	12	5	30	19	6	5	39	19	8	5	13	18	36	24	भ. 22/39 बाद,
	25	10	बु.	10	33	उ.भा.	23	19	प्री.	22	44	मीन			5	27	19	12	5	30	19	6	5	39	19	9	5	13	18	37	25	भ. 10/33 तक, सूर्य रोहि. में 14/51,
	26	11	गु.	10	54	रेव.	24	38	आ.	22	14	मेष	24	38	5	26	19	13	5	29	19	7	5	38	19	9	5	13	18	37	26	पंचक समाप्त 24/38, अपरा एकादशी व्रत (स.), (G)
	27	12	शु.	11	48	अश्वि.	26	26	सौ.	22	7	मेष			5	26	19	13	5	29	19	8	5	38	19	10	5	13	18	38	27	प्रदोषव्रत,
	28	13	श.	13	10	भर.	28	39	शो.	22	21	मेष			5	26	19	14	5	29	19	8	5	38	19	10	5	12	18	38	28	भ. 13/10 से 26/3 तक,
	29	14	र.	14	55	कृत्ति.	-	-	अ.	22	53	वृष	11	15	5	25	19	14	5	28	19	9	5	38	19	11	5	12	18	39	29	वटसावित्री व्रत (अमापक्ष),
	30	30	चं.	17	0	कृत्ति.	7	12	सु.	23	37	वृष			5	25	19	15	5	28	19	9	5	37	19	11	5	12	18	39	30	सोमवती अमा, भावुका अमा, श्रीशनैश्चर जयन्ती,
ज्ये.शु.	31	1	मं.	19	19	रोहि.	10	1	धृ.	24	32	मिथुन	23	29	5	25	19	16	5	28	19	10	5	37	19	12	5	12	18	40	31	ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष प्रारंभ, बुध पूर्व में उदित 5/25,

(A) (रोहिणीयोग), (B) अस्त 19/4, मोहिनी एकादशी व्रत (स.), (C) पुण्यकाल अगले दिन मध्याह्न तक, वक्री बुध कृत्ति. में 21/28, श्रीनृसिंह जयन्ती, (D) श्रीकूर्म जयन्ती, श्रीसत्यनारायण व्रत, (E) वैशाखस्नान समाप्त, (F) सूर्य सायन मिथुन में 6/53, (G) भद्रकाली एकादशी (पं.),

श्री वि.सं. 2079 — तिथ्यादि पंचांग (भा. स्टैं. टा.) — जून, सन् 2022 ई.

मास पक्ष	क्र.	तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति काल		योग	समाप्ति काल		चन्द्रराशि-प्रवेशकाल			चण्डीगढ़				दिल्ली				जयपुर				वाराणसी				तारीख	भद्रा, ग्रहराशिनक्षत्र-प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
															सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त			
				घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.		
ज्येष्ठ शुक्ल	1	2	बु.	21	47	मृग.	13	0	शू.	25	33	मिथुन			5	24	19	16	5	28	19	10	5	37	19	12	5	11	18	40	1	चन्द्रदर्शन, मु.15,
	2	3	गु.	24	17	आर्द्रा	16	4	गं.	26	35	मिथुन			5	24	19	17	5	28	19	11	5	37	19	13	5	11	18	40	2	रम्भा तृतीया, श्रीमहाराणा प्रताप जयन्ती (राज.),
	3	4	शु.	26	42	पुन.	19	5	वृ.	27	32	कर्क	12	20	5	24	19	17	5	27	19	11	5	37	19	13	5	11	18	41	3	भ. 13/29 से 26/42 तक, बुध मार्गी 13/30, गुरु उ.भा. (A)
	4	5	श.	28	53	पुष्य	21	54	ध्रु.	28	18	कर्क			5	24	19	18	5	27	19	12	5	37	19	13	5	11	18	41	4	शुक्र भर. में 5/38, शनि वक्री 27/17,
	5	6	र.	–	–	आश्ले.	24	24	व्या.	28	47	सिंह	24	24	5	24	19	18	5	27	19	12	5	36	19	14	5	11	18	42	5	अरण्य षष्ठी, विन्ध्यवासिनी पूजा,
	6	6	चं.	6	40	मघा	26	25	ह.	28	52	सिंह			5	24	19	19	5	27	19	13	5	36	19	14	5	11	18	42	6	
	7	7	मं.	7	55	पू.फा.	27	49	व.	28	26	सिंह			5	23	19	19	5	27	19	13	5	36	19	15	5	11	18	43	7	भ. 7/55 से 20/13 तक,
	8	8	बु.	8	30	उ.फा.	28	30	सि.	27	26	कन्या	10	3	5	23	19	20	5	27	19	13	5	47	19	15	5	11	18	43	8	सूर्य मृग. में 12/37, मंगल रेव. में 19/59
	9	9	गु.	8	22	हस्त	28	26	व्य.	25	48	कन्या			5	23	19	20	5	27	19	14	5	36	19	16	5	11	18	43	9	श्रीगंगा दशहरा (देखें पृ. 14),
	10	10	शु.	7	26	चित्रा	27	36	व.	23	34	तुला	16	6	5	23	18	20	5	27	19	14	5	36	19	16	5	11	18	44	10	भ. 18/36 बाद, निर्जला एकादशीव्रत (स्मा.) (देखें पृ. 14),
	11	11/	श.	5	46	स्वाती	26	5	प.	20	46	तुला			5	23	19	21	5	27	19	15	5	36	19	16	5	11	18	44	11	भ. 5/46 तक, निर्जला एकादशी व्रत (वै.), चम्पा द्वादशी, (B)
		12		27	24																											द्वादशी तिथिक्षय,
	12	13	र.	24	27	विशा.	23	58	शि.	17	26	वृश्चि.	18	33	5	23	19	21	5	27	19	15	5	36	19	17	5	11	18	44	12	प्रदोषव्रत,
	13	14	चं.	21	3	अनु.	21	24	सि.	13	41	वृश्चि.			5	23	19	22	5	27	19	15	5	36	19	17	5	11	18	45	13	भ. 21/3 बाद, श्रीसत्यनारायण व्रत (देखें पृ. 14)
	14	15	मं.	17	21	ज्येष्ठा	18	32	सा.	9	39	धनु	18	32	5	23	19	22	5	27	19	16	5	36	19	17	5	11	18	45	14	भ. 7/12 तक, राहु भर. 4, केतु विशा. 2 में 13/1, (C)
आषाढ़ कृष्ण	15	1	बु.	13	32	मूल	15	32	शु.	5	27	धनु			5	23	19	22	5	27	19	16	5	37	19	18	5	11	18	45	15	आषाढ़ कृष्ण पक्ष प्रारम्भ, स. सूर्य मिथुन में 12/03, (D)
									शु.	25	14																					
	16	2	गु.	9	45	पू.षा.	12	37	ब्र.	21	8	मकर	17	55	5	24	19	23	5	27	19	16	5	37	19	18	5	11	18	46	16	भ. 19/58 बाद,
	17	3/	शु.	6	11	उ.षा.	9	55	ऐं.	17	17	मकर			5	24	19	23	5	27	19	17	5	37	19	18	5	11	18	46	17	भ. 6/11 तक, श्रीगणेशचतुर्थी व्रत,
		4		27	0																											चतुर्थी तिथिक्षय,
	18	5	श.	24	20	श्रव.	7	39	वै.	13	49	कुम्भ	18	42	5	24	19	23	5	27	19	17	5	37	19	19	5	12	18	46	18	पंचक प्रारम्भ 18/42, बुध रोहि. में 12/29, शुक्र वृष में 8/16,
	19	6	र.	22	19	धनि.	5	56	वि.	10	51	कुम्भ			5	24	19	23	5	28	19	17	5	37	18	19	5	12	18	47	19	भ. 22/19 बाद,
						शत.	28	53																								
	20	7	चं.	21	1	पू.भा.	28	35	प्री.	8	27	मीन	22	35	5	24	19	24	5	28	19	17	5	37	19	19	5	12	18	47	20	भ. 9/40 तक,
	21	8	मं.	20	31	उ.भा.	29	3	आ.	6	40	मीन			5	24	19	24	5	28	19	18	5	37	19	19	5	12	18	47	21	सूर्य सायन कर्क में 14/44, दक्षिणायन एवम् वर्षा ऋतु प्रारम्भ,
	22	9	बु.	20	45	रेव.	–	–	सौ.	5	30	मीन			5	25	19	24	5	28	19	18	5	38	19	20	5	12	18	47	22	सूर्य आर्द्रा में 11/42,
									शो.	28	55																					
	23	10	गु.	21	42	रेव.	6	14	अ.	28	51	मेष	6	14	5	25	19	24	5	28	19	18	5	38	19	20	5	13	18	47	23	भ. 9/13 से 21/42 तक, पंचक समाप्त 6/14,
	24	11	शु.	23	12	अश्वि.	8	3	सु.	29	13	मेष			5	25	19	24	5	29	19	18	5	38	19	20	5	13	18	48	24	योगिनी एकादशी व्रत (स.),
	25	12	श.	25	10	भर.	10	23	धृ.	–	–	वृष	17	2	5	25	19	25	5	29	19	18	5	38	19	20	5	13	18	48	25	यूरेनस भर. 4 में 11/48,
	26	13	र.	27	26	कृत्ति.	13	5	धृ.	5	53	वृष			5	26	19	25	5	29	19	18	5	39	19	20	5	13	18	48	26	भ. 27/26 बाद, शुक्र रोहि. में 18/2, प्रदोषव्रत,
	27	14	चं.	–	–	रोहि.	16	2	शू.	6	46	वृष			5	26	19	25	5	30	19	19	5	39	19	20	5	14	18	48	27	भ. 16/39 तक, मंगल अश्वि. मेष में 5/39,
	28	14	मं.	5	52	मृग.	19	5	गं.	7	46	मिथुन	5	33	5	26	19	25	5	30	19	19	5	39	19	20	5	14	18	48	28	बुध मृग. में 12/27, नेप्च्यून वक्री 13/30,
	29	30	बु.	8	22	आर्द्रा	22	8	वृ.	8	49	मिथुन			5	27	19	25	5	30	19	19	5	40	19	20	5	14	18	48	29	
आ.शु.	30	1	गु.	10	49	पुन.	25	7	ध्रु.	9	50	कर्क	18	23	5	27	19	25	5	31	19	19	5	40	19	20	5	15	18	48	30	आषाढ़ शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, चन्द्रदर्शन, मु. 45, आषाढ़ (E)

(A) 3 में 23/16, बलिदानदिन श्री गुरु अर्जुनदेव जी, (B) त्रिस्पृशा महाद्वादशी, (C) वटसावित्री व्रत (पूर्णिमापक्ष), (D) मु. 30, पुण्यकाल सारा दिन, शुक्र क्रांति में 12/47.
(E) [illegible]

159 श्री वि.सं. 2079 तिथ्यादि पंचांग (भा. स्टैं. टा.) जुलाई, सन् 2022 ई.

मास पक्ष	जुलाई	तिथि	वार	समाप्तिकाल घं.	समाप्तिकाल मि.	नक्षत्र	समाप्तिकाल घं.	समाप्तिकाल मि.	योग	समाप्तिकाल घं.	समाप्तिकाल मि.	चन्द्रराशि	प्रवेशकाल घं.	प्रवेशकाल मि.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं.	मि.	चण्डीगढ़ सूर्यास्त घं.	मि.	दिल्ली सूर्योदय घं.	मि.	दिल्ली सूर्यास्त घं.	मि.	जयपुर सूर्योदय घं.	मि.	जयपुर सूर्यास्त घं.	मि.	वाराणसी सूर्योदय घं.	मि.	वाराणसी सूर्यास्त घं.	मि.	तारीख	भद्रा, ग्रहराशिनक्षत्र-प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
आषाढ़ शुक्ल	1	2	शु.	13	9	पुष्य	27	56	व्या.	10	45	कर्क			5	27	19	25	5	31	19	19	5	40	19	21	5	15	18	48	1	गुरु उ. भा. 4 में 11/14, श्रीजगदीश रथोत्सव (रथयात्रा) (A)
	2	3	श.	15	17	आश्ले.	-	-	ह.	11	32	कर्क			5	28	19	25	5	31	19	19	5	41	19	21	5	15	18	48	2	भ. 28/12 बाद, बुध मिथुन में 9/42,
	3	4	र.	17	7	आश्ले.	6	30	व.	12	5	सिंह	6	30	5	28	19	25	5	32	19	19	5	41	19	21	5	16	18	48	3	भ. 17/7 तक,
	4	5	चं.	18	33	मघा	8	43	सि.	12	21	सिंह			5	29	19	25	5	32	19	19	5	41	19	20	5	16	18	48	4	
	5	6	मं.	19	29	पू.फा.	10	30	व्य.	12	14	कन्या	16	52	5	29	19	25	5	32	19	19	5	42	19	20	5	16	18	48	5	बुध आर्द्रा में 22/03, बुध पूर्व में अस्त 5/29, कुमारषष्ठी,
	6	7	बु.	19	49	उ.फा.	11	44	व.	11	41	कन्या			5	29	19	25	5	33	19	19	5	42	19	20	5	17	18	48	6	भ. 19/49 बाद, सूर्य पुन. में 11/11, विवस्वत सप्तमी,
	7	8	गु.	19	28	हस्त	12	19	प.	10	37	तुला	24	21	5	30	19	24	5	33	19	18	5	43	19	20	5	17	18	48	7	भ. 7/39 तक, शुक्र मृग. में 21/36,
	8	9	शु.	18	25	चित्रा	12	13	शि.	9	0	तुला			5	30	19	24	5	34	19	18	5	43	19	20	5	18	18	48	8	आषाढ़ गुप्त नवरात्र समाप्त,
	9	10	श.	16	40	स्वाती	11	24	सि.	6	48	वृश्चि.	28	21	5	31	19	24	5	34	19	18	5	44	19	20	5	18	18	48	9	भ. 27/27 बाद, नवरात्र-पारणा,
									सा.	28	1																					
	10	11	र.	14	14	विशा.	9	55	शु.	24	44	वृश्चि.			5	31	19	24	5	35	19	18	5	44	19	20	5	19	18	48	10	भ. 14/14 तक, हरिशयनी एकादशी व्रत (स.), (B)
	11	12	चं.	11	14	अनु.	7	49	शु.	21	1	धनु	29	15	5	32	19	24	5	35	19	18	5	44	19	20	5	19	18	48	11	सोम प्रदोषव्रत,
						ज्येष्ठा	29	15																								
	12	13/14	मं.	7 / 28	46 / 1	मूल	26	21	ब्र.	16	58	धनु			5	32	19	23	5	36	19	18	5	45	19	19	5	19	18	47	12	भ. 28/1 बाद, बुध पुन. में 8/29, वक्री शनि धनि. 2 (C) चतुर्दशी तिथिक्षय,
	13	15	बु.	24	7	पू.षा.	23	18	ऐं.	12	44	मकर	28	32	5	33	19	23	5	36	19	17	5	45	19	19	5	20	18	47	13	भ. 14/4 तक, शुक्र मिथुन में 10/50, वक्री प्लूटो (D)
श्रावण कृष्ण	14	1	गु.	20	16	उ.षा.	20	18	वै.	8	27	मकर			5	33	19	23	5	37	19	17	5	46	19	19	5	20	18	47	14	श्रावण कृष्ण पक्ष प्रारंभ, अशून्यशयनव्रत (देखें पृ. 14),
									वि.	28	16																					
	15	2	शु.	16	39	श्रव.	17	31	प्री.	24	20	कुम्भ	28	17	5	34	19	22	5	37	19	17	5	46	19	19	5	21	18	47	15	भ. 27/3 बाद, पंचक प्रारम्भ 28/17,
	16	3	श.	13	27	धनि.	15	10	आ.	20	48	कुम्भ			5	35	19	22	5	38	19	16	5	47	19	18	5	21	18	46	16	भ. 13/27 तक, सं. सूर्य कर्क में 22/56, मु. 15, (E)
	17	4	र.	10	50	शत.	13	25	सौ.	17	48	कुम्भ			5	35	19	22	5	38	19	16	5	47	19	18	5	22	18	46	17	
	18	5	चं.	8	55	पू.भा.	12	23	शो.	15	25	मीन	6	34	5	36	19	21	5	39	19	16	5	48	19	18	5	22	18	46	18	बुध पुष्य में 13/42, शुक्र आर्द्रा में 23/39,
	19	6	मं.	7	50	उ.भा.	12	11	अ.	13	43	मीन			5	36	19	21	5	39	19	15	5	48	18	17	5	23	18	46	19	भ. 7/50 से 19/43 तक,
	20	7	बु.	7	36	रेव.	12	50	सु.	12	42	मेष	12	50	5	37	19	20	5	40	19	15	5	49	19	17	5	23	18	45	20	पंचक समाप्त 12/50, सूर्य पुष्य में 10/48,
	21	8	गु.	8	12	अश्वि.	14	17	धृ.	12	19	मेष			5	37	19	20	5	40	19	14	5	49	19	17	5	23	18	45	21	
	22	9	शु.	9	32	भर.	16	24	शू.	12	30	वृष	23	1	5	38	19	19	5	41	19	14	5	50	19	16	5	24	18	44	22	भ. 22/29 बाद, सूर्य सायन सिंह में 25/37,
	23	10	श.	11	27	कृत्ति.	19	2	गं.	13	6	वृष			5	39	19	19	5	41	19	13	5	50	19	16	5	24	18	44	23	भ. 11/27 तक,
	24	11	र.	13	46	रोहि.	22	0	वृ.	14	0	वृष			5	39	19	18	5	42	19	13	5	51	19	15	5	25	18	44	24	बुध आश्ले. में 25/26, कामिका एकादशी व्रत (स.),
	25	12	चं.	16	16	मृग.	25	5	ध्रु.	15	2	मिथुन	11	32	5	40	19	18	5	42	19	12	5	51	19	15	5	25	18	43	25	सोम प्रदोषव्रत,
	26	13	मं.	18	47	आर्द्रा	28	9	व्या.	16	6	मिथुन			5	40	19	17	5	43	19	12	5	52	19	14	5	26	18	43	26	भ. 18/47 बाद, श्रावण-शिवरात्रि,
	27	14	बु.	21	12	पुन.	-	-	ह.	17	5	कर्क	24	21	5	41	19	17	5	44	19	11	5	52	19	14	5	26	18	42	27	भ. 7/59 तक,
	28	30	गु.	23	25	पुन.	7	4	व.	17	56	कर्क			5	42	19	16	5	44	19	11	5	53	19	13	5	27	18	42	28	गुरु वक्री 26/8, हरियाली अमावस,
श्रा.शु.	29	1	शु.	25	22	पुष्य	9	46	सि.	18	35	कर्क			5	42	19	15	5	45	19	10	5	53	19	13	5	27	18	41	29	श्रावण शुक्ल पक्ष प्रारंभ, शुक्र पुन. में 24/2, बुध पश्चिम (F)
	30	2	श.	27	0	आश्ले.	12	12	व्य.	19	0	सिंह	12	12	5	43	19	15	5	45	19	9	5	54	19	12	5	28	18	41	30	चन्द्रदर्शन, मु. 30,
	31	3	र.	28	18	मघा	14	20	व.	19	10	सिंह			5	43	19	14	5	46	19	9	5	54	19	11	5	28	18	40	31	बुध मघा सिंह में 27/44, मधुस्रवा तृतीया (G)

(A) पुरी (पुष्ययोग), **(B)** श्रीविष्णु-शयनोत्सव, **(C)** मकर में 14/50, **(D)** उ.षा. 2 में 12/20, गुरु पूर्णिमा (व्यासपूजा), आषाढ़ी पूर्णिमा, चातुर्मास्य व्रत-नियमादि प्रारम्भ, कोकिला व्रत, श्रीसत्यनारायण व्रत, श्रीशिवशयनोत्सव, **(E)** पुण्यकाल 10/56 बाद, मंगल भर. में 7/55, बुध कर्क में 24/09, श्रीगणेशचतुर्थी व्रत, **(F)** में उदित 19/15, **(G)** (संधारा तीज), हिजरी सन् 1444 प्रारम्भ,

मास पक्ष	अगस्त	तिथि	वार	समाप्ति-काल घं.	समाप्ति-काल मि.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं.	समाप्ति काल मि.	योग	समाप्ति काल घं.	समाप्ति काल मि.	चन्द्रराशि - प्रवेशकाल	घं.	मि.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं.	मि.	चण्डीगढ़ सूर्यास्त घं.	मि.	दिल्ली सूर्योदय घं.	मि.	दिल्ली सूर्यास्त घं.	मि.	जयपुर सूर्योदय घं.	मि.	जयपुर सूर्यास्त घं.	मि.	वाराणसी सूर्योदय घं.	मि.	वाराणसी सूर्यास्त घं.	मि.	तारीख	भद्रा, ग्रहराशिनक्षत्र-प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
श्रावण शुक्ल	1	4	चं.	29	13	पू.फा.	16	6	प.	19	3	कन्या	22	29	5	44	19	13	5	46	19	8	5	55	19	11	5	29	18	39	1	भ. 16/46 से 29/13 तक,
	2	5	मं.	29	42	उ.फा.	17	28	शि.	18	36	कन्या			5	45	19	12	5	47	19	7	5	55	19	10	5	29	18	39	2	नागपंचमी, ऋक् उपाकर्म (देखें पृ. 14),
	3	6	बु.	29	41	हस्त	18	23	सि.	17	47	कन्या			5	45	19	12	5	47	19	7	5	56	19	9	5	30	18	38	3	सूर्य आश्ले. में 9/37, श्रीकल्कि जयन्ती,
	4	7	गु.	29	7	चित्रा	18	47	सा.	16	33	तुला	6	39	5	46	19	11	5	48	19	6	5	56	19	9	5	30	18	38	4	भ. 29/7 बाद, गोस्वामी श्रीतुलसीदास जयन्ती,
	5	8	शु.	27	57	स्वाती	18	37	शु.	14	52	तुला			5	46	19	10	5	49	19	5	5	57	19	8	5	31	18	37	5	भ. 16/32 तक, मंगल कृत्ति. में 13/18, श्रीदुर्गाष्टमी,
	6	9	श.	26	11	विशा.	17	51	शु.	12	41	वृश्चि.	12	6	5	47	19	9	5	49	19	4	5	57	19	7	5	31	18	36	6	शुक्र कर्क में 29/20,
	7	10	र.	23	51	अनु.	16	30	ब्र.	10	1	वृश्चि.			5	48	19	8	5	50	19	4	5	58	19	7	5	32	18	35	7	
	8	11	चं.	21	1	ज्येष्ठा	14	37	ऐं.	6	54	धनु	14	37	5	48	19	7	5	50	19	3	5	58	19	6	5	32	18	35	8	भ. 10/26 से 21/1 तक, बुध पू.फा. में 27/19, (A)
									वै.	27	24																					
	9	12	मं.	17	46	मूल	12	17	वि.	23	35	धनु			5	49	19	7	5	51	19	2	5	59	19	5	5	32	18	34	9	शुक्र पुष्य में 22/55, भौम प्रदोषव्रत,
	10	13	बु.	14	16	पू.षा.	9	39	प्री.	19	35	मकर	14	58	5	50	19	6	5	51	19	1	5	59	19	4	5	33	18	33	10	मंगल वृष में 21/8,
	11	14	गु.	10	39	उ.षा.	6	52	आ.	15	31	मकर			5	50	19	5	5	52	19	0	6	0	19	3	5	33	18	33	11	भ. 10/39 से 20/52 तक, शुक्ल-कृष्ण-यजु उपाकर्म (B)
						श्रव.	28	7																								
	12	15/	शु.	7	5	धनि.	25	35	सौ.	11	33	कुम्भ	14	49	5	51	19	4	5	52	18	59	6	0	19	3	5	34	18	32	12	पंचक प्रारम्भ 14/49, श्रावणी पूर्णिमा, श्रीअमरनाथ यात्रा (C)
भाद्रपद कृष्ण		1		27	47																											भाद्रपद कृष्ण पक्ष प्रारम्भ, प्रतिपदा तिथिक्षय,
	13	2	श.	24	54	शत.	23	28	शो.	7	49	कुम्भ			5	51	19	3	5	53	18	59	6	1	19	2	5	34	18	31	13	
									अ.	28	27																					
	14	3	र.	22	36	पू.भा.	21	55	सु.	25	37	मीन	16	15	5	52	19	2	5	54	18	58	6	1	19	1	5	35	18	30	14	भ. 11/45 से 22/36 तक, कज्जली तृतीया,
	15	4	चं.	21	2	उ.भा.	21	6	धृ.	23	22	मीन			5	53	19	1	5	54	18	57	6	2	19	0	5	35	18	29	15	श्रीगणेश(संकष्ट)चतुर्थी व्रत (चन्द्रोदय देखें पृ. 11), (D)
	16	5	मं.	20	17	रेव.	21	6	शू.	21	48	मेष	21	6	5	53	19	0	5	55	18	56	6	2	18	59	5	36	18	28	16	पंचक समाप्त 21/6, राहु भर. 3, केतु विशा. 1 में 10/24,
	17	6	बु.	20	25	अश्वि.	21	57	गं.	20	55	मेष			5	54	18	59	5	55	18	55	6	3	18	58	5	36	18	28	17	भ. 20/25 बाद, सं. सूर्य मघा सिंह में 7/23, मु. 30, (E)
	18	7	गु.	21	21	भर.	23	35	वृ.	20	40	मेष			5	54	18	58	5	56	18	54	6	3	18	57	5	36	18	27	18	भ. 8/54 तक, बुध उ.फा. में 10/32, श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रत (F)
	19	8	शु.	22	59	कृत्ति.	25	53	ध्रु.	20	58	वृष	6	6	5	55	18	57	5	56	18	53	6	4	18	56	5	37	18	26	19	श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रत (वै.), गोकुलाष्टमी (नन्दोत्सव),
	20	9	श.	25	9	रोहि.	28	39	व्या.	21	40	वृष			5	56	18	56	5	57	18	52	6	4	18	56	5	37	18	25	20	बुध कन्या में 26/06, शुक्र आश्ले. में 20/20, श्रीगुग्गा नवमी,
	21	10	र.	27	36	मृग.	–	–	ह.	22	37	मिथुन	18	9	5	56	18	55	5	57	18	51	6	5	18	55	5	38	18	24	21	भ. 14/22 से 27/36 तक,
	22	11	चं.	–	–	मृग.	7	40	व.	23	39	मिथुन			5	57	18	53	5	58	18	50	6	5	18	54	5	38	18	23	22	
	23	11	मं.	6	7	आर्द्रा	10	44	सि.	24	37	कर्क	30	56	5	57	18	52	5	58	18	49	6	6	18	53	5	38	18	22	23	सूर्य सायन कन्या में 8/48, शरद् ऋतु प्रारम्भ, (G)
	24	12	बु.	8	30	पुन.	13	38	व्य.	25	24	कर्क			5	58	18	51	5	59	18	48	6	6	18	52	5	39	18	21	24	यूरेनस वक्री 19/24, प्रदोषव्रत,
	25	13	गु.	10	38	पुष्य	16	16	व.	25	56	कर्क			5	58	18	50	5	59	18	47	6	7	18	51	5	39	18	20	25	भ. 10/38 से 23/31 तक, वक्री गुरु उ.भा. 3 में 13/46, (H)
	26	14	शु.	12	24	आश्ले.	18	32	प.	26	10	सिंह	18	32	5	59	18	49	6	0	18	46	6	7	18	50	5	40	18	19	26	
	27	30	श.	13	47	मघा	20	26	शि.	26	6	सिंह			6	0	18	48	6	0	18	45	6	7	18	49	5	40	18	18	27	मंगल रोहि. में 20/32, कुशोत्पाटिनी अमावस, पिठोरी अमा, (I)
भाद्र. शु.	28	1	र.	14	45	पू.फा.	21	56	सि.	25	43	कन्या	28	15	6	0	18	47	6	1	18	43	6	8	18	48	5	40	18	17	28	भाद्रपद शुक्ल पक्ष प्रारंभ
	29	2	चं.	15	21	उ.फा.	23	4	सा.	25	2	कन्या			6	1	18	45	6	1	18	42	6	8	18	47	5	41	18	16	29	चन्द्रदर्शन, मु. 45, वक्री शनि धनि. 1 में 8/53, (J)
	30	3	मं.	15	33	हस्त	23	49	शु.	24	3	कन्या			6	1	18	44	6	2	18	41	6	9	18	45	5	41	18	15	30	भ. 27/28 बाद, सूर्य पू.फा. में 27/17, बुध हस्त में 19/15, (K)
	31	4	बु.	15	23	चित्रा	24	12	शु.	22	46	तुला	12	3	6	2	18	43	6	2	18	40	6	9	18	44	5	42	18	14	31	भ. 15/23 तक, शुक्र मघा सिंह में 16/18, श्रीसिद्धिविनायक व्रत,

(A) पवित्रा एकादशी व्रत (स.), (B) (देखें पृ. 15) रक्षाबन्धन (राखी) (20/52 बाद) (देखें पृ. 15), श्रीसत्यनारायण व्रत, (C) (जम्मू-कश्मीर) (D) बहुला चतुर्थी, भारत-स्वतन्त्रता दिवस, (E) पुण्यकाल मध्याह्न तक, (F) (स्मा.) (चन्द्रोदय देखें पृ. 11), (G) अजा एकादशी व्रत (स.) (देखें पृ. 16), (H) पर्युषण पर्व प्रारम्भ, (I) शनैश्चरी अमा., (J) मेला डेरा बाबा गोसाई आणां (कजली) पं., (K) सौभाग्य तृतीया, हरितालिका तृतीया, श्रीवराह जयन्ती, साम उपाकर्म, कलंक चतुर्थी (चन्द्रदर्शन निषिद्ध) (चन्द्रास्त 20/40).

श्री वि.सं. 2079 — तिथ्यादि पंचांग (भा. स्टैं. टा.) — सितंबर, सन् 2022 ई.

मास पक्ष	सितंबर	तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति काल		योग	समाप्ति काल		चन्द्रराशि - प्रवेशकाल			चण्डीगढ़				दिल्ली				जयपुर				वाराणसी				तारीख	भद्रा, ग्रहराशिनक्षत्र-प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
															सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त			
				घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.		
भाद्रपद शुक्ल	1	5	गु.	14	49	स्वाती	24	12	ब्र.	21	11	तुला			6	2	18	42	6	3	18	39	6	10	18	43	5	42	18	13	1	ऋषि पंचमी, संवत्सरी महापर्व (जैन),
	2	6	शु.	13	51	विशा.	23	47	ऐं.	19	15	वृश्चि.	17	55	6	3	18	41	6	3	18	38	6	10	18	42	5	42	18	12	2	सूर्यषष्ठी व्रत,
	3	7	श.	12	28	अनु.	22	57	वै.	16	59	वृश्चि.			6	4	18	40	6	4	18	37	6	11	18	41	5	43	18	11	3	भ. 12/28 से 23/34 तक, मुक्ताभरण(संतान)सप्तमी व्रत, (A)
	4	8	र.	10	40	ज्येष्ठा	21	42	वि.	14	23	धनु	21	42	6	4	18	38	6	4	18	36	6	11	18	40	5	43	18	10	4	अगस्त्य उदित,
	5	9/	चं.	8	28	मूल	20	5	प्री.	11	27	धनु			6	5	18	37	6	5	18	34	6	11	18	39	5	44	18	9	5	श्रीचन्द नवमी (उदासीन सम्प्रदाय महोत्सव),
		10		29	54																											दशमी तिथिक्षय,
	6	11	मं.	27	5	पू.षा.	18	9	आ.	8	14	मकर	23	38	6	5	18	36	6	5	18	33	6	12	18	38	5	44	18	8	6	भ. 16/29 से 27/5 तक, पद्मा एकादशी व्रत (स्मा.),
									सौ.	28	49																					
	7	12	बु.	24	5	उ.षा.	16	0	शो.	25	15	मकर			6	6	18	35	6	6	18	32	6	12	18	37	5	44	18	7	7	पद्मा एकादशी व्रत (वै.), श्रीवामन जयन्ती, श्रवण द्वादशी (B)
	8	13	गु.	21	3	श्रव.	13	45	अ.	21	40	कुम्भ	24	39	6	6	18	33	6	6	18	31	6	13	18	36	5	45	18	6	8	पंचक प्रारम्भ 24/39, प्रदोषव्रत,
	9	14	शु.	18	8	धनि.	11	34	सु.	18	10	कुम्भ			6	7	18	32	6	7	18	30	6	13	18	35	5	45	18	5	9	भ. 18/8 से 28/49 तक, श्री अनन्त चतुर्दशी व्रत, (C)
	10	15	श.	15	29	शत.	9	36	धृ.	14	54	मीन	26	23	6	8	18	31	6	7	18	29	6	14	18	33	5	45	18	4	10	बुध वक्री 9/8, प्रोष्ठपदी श्राद्ध/पूर्णिमा का महालय श्राद्ध, (D)
आश्विन कृष्ण	11	1	र.	13	15	पू.भा.	8	2	शू.	11	59	मीन			6	8	18	30	6	8	18	27	6	14	18	32	5	46	18	3	11	आश्विन कृष्ण पक्ष प्रारंभ, शुक्र पू.फा. में 11/5, वक्री नेप्च्यून (E)
	12	2	चं.	11	35	उ.भा.	6	59	गं.	9	30	मीन			6	9	18	28	6	8	18	26	6	14	18	31	5	46	18	2	12	भ. 23/6 बाद, तृतीया का श्राद्ध,
	13	3	मं.	10	37	रेव.	6	35	वृ.	7	35	मेष	6	35	6	9	18	27	6	9	18	25	6	15	18	30	5	47	18	1	13	भ. 10/37 तक, पंचक समाप्त 6/35, सूर्य उ.फा. में 21/14, (F)
	14	4	बु.	10	25	अश्वि.	6	57	ध्रु.	6	16	मेष			6	10	18	26	6	9	18	24	6	15	18	29	5	47	18	0	14	पंचमी का श्राद्ध, भरणी श्राद्ध,
									व्या.	29	34																					
	15	5	गु.	11	0	भर.	8	4	ह.	29	27	वृष	14	28	6	10	18	24	6	10	18	23	6	16	18	28	5	47	17	59	15	षष्ठी का श्राद्ध, चन्द्रषष्ठी व्रत,
	16	6	शु.	12	19	कृत्ति.	9	55	व.	29	49	वृष			6	11	18	23	6	10	18	21	6	16	18	27	5	48	17	57	16	भ. 12/19 से 25/17 तक, बुध पश्चिम में अस्त 18/23, (G)
	17	7	श.	14	14	रोहि.	12	21	सि.	–	–	मिथुन	25	43	6	11	18	22	6	11	18	20	6	17	18	25	5	48	17	56	17	सं. सूर्य कन्या में 7/22, मु. 45, पुण्यकाल मध्याह्न तक, (H)
	18	8	र.	16	33	मृग.	15	10	सि.	6	32	मिथुन			6	12	18	21	6	11	18	19	6	17	18	24	5	48	17	55	18	अष्टमी का श्राद्ध (देखें पृ 17),
	19	9	चं.	19	2	आर्द्रा	18	10	व्य.	7	27	मिथुन			6	13	18	19	6	12	18	18	6	17	18	23	5	49	17	54	19	वक्री बुध उ.फा. में 18/18, नवमी का श्राद्ध, सौभाग्यवादी श्राद्ध,
	20	10	मं.	21	26	पुन.	21	6	व.	8	23	कर्क	14	23	6	13	18	18	6	12	18	17	6	18	18	22	5	49	17	53	20	भ. 8/14 से 21/26 तक, दशमी का श्राद्ध,
	21	11	बु.	23	34	पुष्य	23	46	प.	9	11	कर्क			6	14	18	17	6	13	18	15	6	18	18	21	5	50	17	52	21	शुक्र उ.फा. में 28/47, इन्दिरा एकादशी व्रत (स.), (I)
	22	12	गु.	25	18	आश्ले.	26	3	शि.	9	43	सिंह	26	3	6	14	18	16	6	13	18	14	6	19	18	20	5	50	17	51	22	द्वादशी का श्राद्ध, संन्यासियों का श्राद्ध,
	23	13	शु.	26	31	मघा	27	50	सि.	9	54	सिंह			6	15	18	14	6	14	18	13	6	19	18	19	5	50	17	50	23	भ. 26/31 बाद, वक्री गुरु उ.भा. 2 में 11/33, सूर्य सायन तुला (J)
	24	14	श.	27	12	पू.फा.	29	7	सा.	9	41	सिंह			6	15	18	13	6	14	18	12	6	20	18	17	5	51	17	49	24	भ. 14/52 तक, मंगल मृग. में 7/32, शुक्र कन्या में 21/3, (K)
	25	30	र.	27	24	उ.फा.	29	55	शु.	9	4	कन्या	11	21	6	16	18	12	6	15	18	11	6	20	18	16	5	51	17	48	25	सर्वपितृ अमा, चतुर्दशी/अमा/अज्ञात मृत्युतिथि वालों का (L)
आश्विन शुक्ल	26	1	चं.	27	8	हस्त	30	16	शु.	8	4	कन्या			6	17	18	10	6	15	18	9	6	20	18	15	5	52	17	47	26	आश्विन शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, नाना-नानी का श्राद्ध, शारद (M)
	27	2	मं.	26	28	चित्रा	30	14	ब्र.	6	43	तुला	18	17	6	17	18	9	6	16	18	8	6	21	18	14	5	52	17	46	27	चन्द्रदर्शन, मु. 30, सूर्य हस्त में 12/43, शुक्रवार्धक्य प्रारम्भ 6/19,
									ऐं.	29	2																					
	28	3	बु.	25	28	स्वाती	29	52	वै.	27	6	तुला			6	18	18	8	6	16	18	7	6	21	18	13	5	52	17	44	28	
	29	4	गु.	24	9	विशा.	29	13	वि.	24	55	वृश्चि.	23	24	6	18	18	7	6	17	18	6	6	22	18	12	5	53	17	43	29	भ. 12/49 से 24/9 तक,
	30	5	शु.	22	35	अनु.	28	18	प्री.	22	32	वृश्चि.			6	19	18	5	6	17	18	5	6	22	18	11	5	53	17	42	30	शुक्र पूर्व में अस्त 6/19, श्री उपांगललिता व्रत,

शुक्र अस्त
30 सितंबर

(A) श्रीराधाष्टमी (देखें पृ. 17), श्रीमहालक्ष्मी व्रतारम्भ, दूर्वाष्टमी व्रत (देखें पृ. 16), (B) (श्रवणयोग 16/0 बाद), (C) श्रीसत्यनारायण व्रत, (D) महालय /पितृपक्ष प्रारम्भ, प्रतिपदा का श्राद्ध (देखें पृ. 17), (E) पू.भा. 3 कुम्भ में 23/46, द्वितीया का श्राद्ध, (F) श्रीगणेशचतुर्थी व्रत, चतुर्थी का श्राद्ध, (G) सप्तमी का श्राद्ध, (H) [इस दिन कोई तिथिश्राद्ध नहीं होगा (देखें पृ. 17)], श्रीमहालक्ष्मी व्रत समाप्त, (I) एकादशी का श्राद्ध, (J) में 6/34, दक्षिणगोल प्रारम्भ, विषुव दिन, प्रदोषव्रत, त्रयोदशी का श्राद्ध, मघा श्राद्ध, (K) चतुर्दशी (अपमृत्यु वालों) का श्राद्ध, (L) श्राद्ध, श्राद्ध समाप्त, महालय/पितृपक्ष समाप्त, (M) (आश्विन) नवरात्र प्रारम्भ, महाराजा अग्रसेन जयन्ती,

मास पक्ष	अक्तूबर	तिथि	वार	समाप्ति-काल घं.	मि.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं.	मि.	योग	समाप्ति काल घं.	मि.	चन्द्रराशि - प्रवेशकाल	घं.	मि.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	दिल्ली सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	जयपुर सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	वाराणसी सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	तारीख	भद्रा, ग्रहराशिनक्षत्र-प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
आश्विन शुक्ल	1	6	श.	20	47	ज्येष्ठा	27	11	आ.	19	57	धनु	27	11	6	20	18	4	6	18	18	3	6	23	18	10	5	54	17	41	1	बुध पूर्व में उदित 6/20,
	2	7	र.	18	47	मूल	25	52	सौ.	17	13	धनु			6	20	18	3	6	18	18	2	6	23	18	8	5	54	17	40	2	भ. 18/47 से 29/43 तक, बुध मार्गी 14/37, शुक्र हस्त में (A)
	3	8	चं.	16	38	पू.षा.	24	24	शो.	14	21	मकर	30	1	6	21	18	2	6	19	18	1	6	24	18	7	5	54	17	39	3	सरस्वती-पूजन, श्रीदुर्गाष्टमी, महाष्टमी, महानवमी (B)
	4	9	मं.	14	21	उ.षा.	22	51	अ.	11	22	मकर			6	21	18	0	6	19	18	0	6	24	18	6	5	55	17	38	4	सरस्वती के लिए बलिदान, नवरात्र समाप्त, (C)
	5	10	बु.	12	0	श्रव.	21	15	सु.	8	20	मकर			6	22	17	59	6	20	17	59	6	25	18	5	5	55	17	37	5	भ. 22/50 बाद, सरस्वती-विसर्जन, नवरात्र-पारणा, (D)
									धृ.	29	18																					
	6	11	गु.	9	41	धनि.	19	41	शू.	26	19	कुम्भ	8	27	6	23	17	58	6	20	17	58	6	25	18	4	5	56	17	36	6	भ. 9/41 तक, पंचक प्रारम्भ 8/27, पापांकुशा एकादशी व्रत (E)
	7	12/	शु.	7	27	शत.	18	17	गं.	23	29	कुम्भ			6	23	17	57	6	21	17	57	6	26	18	3	5	56	17	35	7	प्रदोषव्रत,
		13		29	25																											त्रयोदशी तिथिक्षय,
	8	14	श.	27	42	पू.भा.	17	7	वृ.	20	53	मीन	11	23	6	24	17	56	6	21	17	55	6	26	18	2	5	57	17	34	8	भ. 27/42 बाद, प्लूटो मार्गी 27/23,
	9	15	र.	26	24	उ.भा.	16	20	ध्रु.	18	35	मीन			6	25	17	54	6	22	17	54	6	27	18	1	5	57	17	33	9	भ. 15/3 तक, शरत् पूर्णिमा, कोजागर व्रत (लक्ष्मी-इन्द्रपूजा), (F)
कार्तिक कृष्ण	10	1	चं.	25	39	रेव.	16	1	व्या.	16	42	मेष	16	1	6	25	17	53	6	23	17	53	6	27	18	0	5	57	17	32	10	कार्तिक कृष्ण पक्ष प्रारंभ, पंचक समाप्त 16/1, सूर्य चित्रा में 25/46,
	11	2	मं.	25	29	अश्वि.	16	17	ह.	15	15	मेष			6	26	17	52	6	23	17	52	6	28	17	59	5	58	17	31	11	
	12	3	बु.	25	59	भर.	17	9	व.	14	19	वृष	23	29	6	26	17	51	6	24	17	51	6	28	17	58	5	58	17	30	12	भ. 13/44 से 25/59 तक,
	13	4	गु.	27	8	कृत्ति.	18	40	सि.	13	53	वृष			6	27	17	50	6	24	17	50	6	29	17	57	5	59	17	29	13	शुक्र चित्रा में 13/46, श्रीगणेशचतुर्थी व्रत, करक चतुर्थी (G)
	14	5	शु.	28	53	रोहि.	20	47	व्य.	13	56	वृष			6	28	17	49	6	25	17	49	6	29	17	56	5	59	17	28	14	बुध हस्त में 7/34,
	15	6	श.	–	–	मृग.	23	21	व.	14	23	मिथुन	10	1	6	28	17	47	6	25	17	48	6	30	17	55	6	0	17	27	15	
	16	6	र.	7	4	आर्द्रा	26	14	प.	15	7	मिथुन			6	29	17	46	6	26	17	47	6	30	17	54	6	0	17	26	16	भ. 7/4 से 20/18 तक, मंगल मिथुन में 6/31,
	17	7	चं.	9	30	पुन.	29	12	शि.	16	0	कर्क	22	28	6	30	17	45	6	27	17	46	6	31	17	53	6	1	17	25	17	सं. सूर्य तुला में 19/22, मु.45, पुण्यकाल मध्याह्न बाद, (H)
	18	8	मं.	11	58	पुष्य	–	–	सि.	16	51	कर्क			6	31	17	44	6	27	17	45	6	31	17	52	6	1	17	24	18	शुक्र तुला में 21/40, राहु भर. 2, केतु स्वा. 4 में 8/15,
	19	9	बु.	14	14	पुष्य	8	1	सा.	17	31	कर्क			6	31	17	43	6	28	17	44	6	32	17	51	6	2	17	24	19	भ. 27/10 बाद, वक्री गुरु उ.भा. 1 में 20/51,
	20	10	गु.	16	5	आश्ले.	10	30	शु.	17	51	सिंह	10	30	6	32	17	42	6	29	17	43	6	33	17	50	6	2	17	23	20	भ. 16/5 तक, बुध पूर्व में अस्त 6/32,
	21	11	शु.	17	23	मघा	12	28	शु.	17	46	सिंह			6	33	17	41	6	29	17	42	6	33	17	49	6	3	17	22	21	रमा एकादशी व्रत (स.),
	22	12	श.	18	3	पू.फा.	13	50	ब्र.	17	11	कन्या	20	4	6	33	17	40	6	30	17	41	6	34	17	48	6	3	17	21	22	बुध चित्रा में 15/4, गोवत्स द्वादशी,
	23	13	र.	18	3	उ.फा.	14	34	ऐं.	16	6	कन्या			6	34	17	39	6	31	17	40	6	34	17	47	6	4	17	20	23	भ. 18/3 से 29/45 तक, शुक्र स्वा. में 29/26, शनि मार्गी 9/39, (I)
	24	14	चं.	17	27	हस्त	14	41	वै.	14	31	तुला	26	32	6	35	17	38	6	31	17	39	6	35	17	46	6	5	17	19	24	सूर्य स्वा में 12/18, नरक चतुर्दशी (पूर्वारुणोदय वाली), (J)
	25	30	मं.	16	18	चित्रा	14	16	वि.	12	31	तुला			6	36	17	37	6	32	17	38	6	36	17	46	6	5	17	18	25	वक्री यूरेनस भर. 3 में 23/12, भौमवती अमा, खण्डग्रास (K)
कार्तिक शुक्ल	26	1	बु.	14	42	स्वाती	13	24	प्री.	10	7	वृश्चि.	30	30	6	36	17	36	6	33	17	37	6	36	17	45	6	6	17	18	26	कार्तिक शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, बुध तुला में 13/48, गोवर्धन पूजा, (L)
	27	2	गु.	12	45	विशा.	12	10	आ.	7	26	वृश्चि.			6	37	17	35	6	33	17	36	6	37	17	44	6	6	17	17	27	चन्द्रदर्शन, मु. 30, श्रीविश्वकर्मा पूजा (देखें पृ. 18), ग्रहणवेध,
									सौ.	28	32																					
	28	3	शु.	10	34	अनु.	10	42	शो.	25	29	वृश्चि.			6	38	17	34	6	34	17	35	6	37	17	43	6	7	17	16	28	भ. 21/23 बाद, ग्रहणवेध,
	29	4/	श.	8	13	ज्येष्ठा	9	5	अ.	22	22	धनु	9	5	6	39	17	33	6	35	17	35	6	38	17	42	6	7	17	15	29	भ. 8/13 तक, ज्ञान पंचमी (जैन)
		5		29	50																											पंचमी तिथिक्षय,
	30	6	र.	27	28	मूल	7	25	सु.	19	15	धनु			6	39	17	32	6	35	17	34	6	39	17	41	6	8	17	15	30	मंगल वक्री 18/57, बुध स्वा. में 12/55, सूर्य षष्ठी (छठ) (बिहार),
						पू.षा.	29	47																								
	31	7	चं.	25	12	उ.षा.	28	15	धृ.	16	11	मकर	11	23	6	40	17	31	6	36	17	33	6	39	17	41	6	9	17	14	31	भ. 25/12 बाद,

खंडग्रास सूर्यग्रहण
25 अक्तूबर

(A) 21/34, सरस्वती-आवाहन, (B) (पूजा/उपवास के लिए), (C) महानवमी (बलिदान के लिए), (D) विजयादशमी (दशहरा) (देखें पृ. 17), आयुधपुजा, अपराजिता पूजन, सीमोल्लंघन, श्रीमाध्वाचार्य जयन्ती, (E) (स.), भरत मिलाप, (F) महर्षि वाल्मीकि जयन्ती, श्रीसत्यनारायण व्रत, कार्तिकस्नान प्रारम्भ, (G) (करवाचौथ) (चन्द्रोदय देखें पृ. 11), (H) अहोई अष्टमी (महाकाली पूजन) (पं. हरि.), (I) सूर्य सायन वृश्चिक में 16/06, हेमन्त ऋतु प्रारम्भ, प्रदोषव्रत (देखें पृ. 18), धन त्रयोदशी, यमप्रीत्यर्थदीपदान, श्रीहनुमान जयन्ती (उ.भा.), (J) दीपावली (देखें पृ. 18), श्रीमहालक्ष्मीपूजन, ग्रहणवेध, (K) सूर्यग्रहण (भारत में दृश्य) (देखें पृ. 22), श्रीमहावीर निर्वाण दिवस (जैन), (L) बलिपूजा, अन्नकूट, गोक्रीड़ा, यम द्वितीया (भाई दूज) (देखें पृ. 18), [illegible]

163 तिथ्यादि पंचांग (भा. स्टैं. टा.) नवंबर, सन् 2022 ई.

श्री वि.सं. 2079 — तिथ्यादि पंचांग (भा. स्टैं. टा.)

मास पक्ष	नवम्बर	तिथि	वार	समाप्ति-काल घं.	मि.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं.	मि.	योग	समाप्ति काल घं.	मि.	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल	घं.	मि.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	दिल्ली सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	जयपुर सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	वाराणसी सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	तारीख	भद्रा, ग्रहराशिनक्षत्र-प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
कार्त्तिक शुक्ल	1	8	मं.	23	4	श्रव.	26	52	शू.	13	14	मकर			6	41	17	31	6	37	17	32	6	40	17	40	6	9	17	13	1	भ. 12/8 तक, गोपाष्टमी,
	2	9	बु.	21	10	धनि.	25	43	गं.	10	26	कुम्भ	14	16	6	42	17	30	6	38	17	31	6	41	17	39	6	10	17	13	2	पंचक प्रारम्भ 14/16, अक्षय नवमी, कूष्माण्ड नवमी,
	3	10	गु.	19	30	शत.	24	48	वृ.	7	48	कुम्भ			6	43	17	29	6	38	17	31	6	41	17	39	6	10	17	12	3	शुक्र विशा. में 20/45, **खग्रास चन्द्रग्रहण 8 नवंबर**
									ध्रु.	29	24																					
	4	11	शु.	18	8	पू.भा.	24	12	व्या.	27	14	मीन	18	19	6	43	17	28	6	39	17	30	6	42	17	38	6	11	17	11	4	भ. 6/49 से 18/8 तक, देवप्रबोधिनी एकादशीव्रत (स.), (A)
	5	12	श.	17	7	उ.भा.	23	56	ह.	25	22	मीन			6	44	17	27	6	40	17	29	6	43	17	37	6	12	17	11	5	शनि प्रदोषव्रत, तुलसी विवाह, चातुर्मास्य व्रत-नियमादि समाप्त,
	6	13	र.	16	29	रेव.	24	3	व.	23	48	मेष	24	3	6	45	17	27	6	40	17	28	6	44	17	37	6	12	17	10	6	पंचक समाप्त 24/3, सूर्य विशा. में 20/27, वैकुण्ठ चतुर्दशी,
	7	14	चं.	16	16	अश्वि.	24	37	सि.	22	35	मेष			6	46	17	26	6	41	17	28	6	44	17	36	6	13	17	10	7	भ. 16/16 से 28/23 तक, बुध विशा. में 15/19, (B)
	8	15	मं.	16	32	भर.	25	38	व्य.	21	44	मेष			6	47	17	25	6	42	17	27	6	45	17	35	6	14	17	9	8	भीष्म पंचक समाप्त, श्री गुरु नानक जयन्ती, कार्तिक पूर्णिमा, (C)
मार्गशीर्ष कृष्ण	9	1	बु.	17	17	कृत्ति.	27	8	व.	21	17	वृष	7	58	6	47	17	24	6	43	17	27	6	46	17	35	6	14	17	9	9	मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष प्रारंभ, ग्रहणवेध,
	10	2	गु.	18	33	रोहि.	29	7	प.	21	12	वृष			6	48	17	24	6	44	17	26	6	46	17	34	6	15	17	8	10	ग्रहणवेध,
	11	3	शु.	20	17	मृग.	–	–	शि.	21	28	मिथुन	18	17	6	49	17	23	6	44	17	25	6	47	17	34	6	16	17	8	11	भ. 7/25 से 20/17 तक, शुक्र वृश्चिक में 20/9, ग्रहणवेध,
	12	4	श.	22	26	मृग.	7	32	सि.	22	2	मिथुन			6	50	17	23	6	45	17	25	6	48	17	33	6	16	17	7	12	श्रीगणेशचतुर्थी व्रत,
	13	5	र.	24	51	आर्द्रा	10	17	सा.	22	49	कर्क	30	29	6	51	17	22	6	46	17	24	6	49	17	33	6	17	17	7	13	वक्री मंगल वृष में 20/48, बुध वृश्चिक में 21/20,
	14	6	चं.	27	24	पुन.	13	14	शु.	23	41	कर्क			6	52	17	21	6	47	17	24	6	49	17	32	6	18	17	6	14	भ. 27/24 बाद, शुक्र अनु. में 11/56,
	15	7	मं.	29	50	पुष्य	16	12	शु.	24	30	कर्क			6	53	17	21	6	47	17	23	6	50	17	32	6	19	17	6	15	भ. 16/37 तक, बुध अनु. में 24/3,
	16	8	बु.	–	–	आश्ले.	18	58	ब्र.	25	7	सिंह	18	58	6	53	17	20	6	48	17	23	6	51	17	32	6	19	17	6	16	सं. सूर्य वृश्चिक में 19/15, मु. 30, पुण्यकाल मध्याह्न बाद, (D)
	17	8	गु.	7	57	मघा	21	20	ऐं.	25	23	सिंह			6	54	17	20	6	49	17	22	6	52	17	31	6	20	17	5	17	
	18	9	शु.	9	33	पू.फा.	23	8	वै.	25	10	कन्या	29	28	6	55	17	19	6	50	17	22	6	52	17	31	6	21	17	5	18	भ. 22/1 बाद,
	19	10	श.	10	30	उ.फा.	24	14	वि.	24	24	कन्या			6	56	17	19	6	51	17	22	6	53	17	31	6	21	17	5	19	भ. 10/30 तक, सूर्य अनु. में 26/35,
	20	11	र.	10	41	हस्त	24	36	प्री.	23	3	कन्या			6	57	17	19	6	51	17	21	6	54	17	30	6	22	17	4	20	उत्पन्ना एकादशी व्रत (स.),
	21	12	चं.	10	7	चित्रा	24	14	आ.	21	6	तुला	12	30	6	58	17	18	6	52	17	21	6	55	17	30	6	23	17	4	21	सोम प्रदोषव्रत,
	22	13/	मं.	8	49	स्वाती	23	12	सौ.	18	36	तुला			6	59	17	18	6	53	17	21	6	55	17	30	6	24	17	4	22	भ. 8/49 से 19/52 तक, सूर्य सायन धनु में 13/51,
		14		30	54																											चतुर्दशी तिथिक्षय,
	23	30	बु.	28	27	विशा.	21	37	शो.	15	39	वृश्चि.	16	3	6	59	17	18	6	54	17	21	6	56	17	29	6	24	17	4	23	गुरु मार्गी 28/33,
मार्गशीर्ष शुक्ल	24	1	गु.	25	38	अनु.	19	37	अ.	12	18	वृश्चि.			7	0	17	17	6	55	17	20	6	57	17	29	6	25	17	4	24	मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष प्रारंभ, बुध ज्ये. में 13/41, शुक्र ज्ये. में 26/57,
	25	2	शु.	22	35	ज्येष्ठा	17	21	सु.	8	43	धनु	17	21	7	1	17	17	6	56	17	20	6	58	17	29	6	26	17	3	25	चन्द्रदर्शन, मु. 30, शुक्र पश्चिम में उदित 17/17,
									धृ.	28	58																					**शुक्र उदित 25 नवंबर**
	26	3	श.	19	28	मूल	14	58	शू.	25	13	धनु			7	2	17	17	6	56	17	20	6	58	17	29	6	27	17	3	26	भ. 29/56 बाद,
	27	4	र.	16	25	पू.षा.	12	38	गं.	21	33	मकर	18	4	7	3	17	17	6	57	17	20	6	59	17	29	6	27	17	3	27	भ. 16/25 तक,
	28	5	चं.	13	35	उ.षा.	10	29	वृ.	18	4	मकर			7	4	17	17	6	58	17	20	7	0	17	29	6	28	17	3	28	शुक्रबाल्य समाप्त 17/17, बलिदानदिन श्री गुरु तेगबहादुर जी, (E)
	29	6	मं.	11	4	श्रव.	8	38	ध्रु.	14	52	कुम्भ	19	51	7	4	17	16	6	59	17	20	7	1	17	29	6	29	17	3	29	पंचक प्रारम्भ 19/51, चम्पा षष्ठी, मित्र सप्तमी,
	30	7	बु.	8	58	धनि.	7	11	व्या.	12	1	कुम्भ			7	5	17	16	6	59	17	19	7	2	17	29	6	29	17	3	30	भ. 8/58 से 20/10 तक,
						शत.	30	12																								

(A) देव प्रबोधोत्सव, भीष्म पंचक प्रारम्भ, (B) श्रीसत्यनारायण व्रत, त्रिपुरोत्सव, ग्रहणवेध, (C) कार्त्तिकस्नान समाप्त, मेला पुष्करराज (राज.), खग्रास चन्द्रग्रहण (भारत में दृश्य) (देखें पृ. 22), (D) श्रीकालाष्टमी (भैरवाष्टमी), (E) स्कन्द/गुह षष्ठी,

श्री वि.सं. 2079 — तिथ्यादि पंचांग (भा. स्टैं. टा.) — दिसंबर, सन् 2022 ई.

मास पक्ष	दिनांक	तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति काल		योग	समाप्ति काल		चन्द्रराशि - प्रवेशकाल			चण्डीगढ़				दिल्ली				जयपुर				वाराणसी				तारीख	भद्रा, ग्रहराशिनक्षत्र-प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
															सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त			
				घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.		
मार्गशीर्ष शुक्ल	1	8/	गु.	7	21	पू.भा.	29	43	ह.	9	33	मीन	23	47	7	6	17	16	7	0	17	19	7	2	17	29	6	30	17	3	1	
		9		30	15																											नवमी तिथिक्षय,
	2	10	शु.	29	39	उ.भा.	29	45	व.	7	29	मीन			7	7	17	16	7	1	17	19	7	3	17	29	6	31	17	3	2	सूर्य ज्ये. में 30/50, बुध मूल धनु में 30/48,
									सि.	29	50																					
	3	11	श.	29	34	रेव.	30	16	व्य.	28	34	मेष	30	16	7	8	17	16	7	2	17	19	7	4	17	29	6	32	17	3	3	भ. 17/36 से 29/34 तक, पंचक समाप्त 30/16, (A)
	4	12	र.	29	58	अश्वि.	–	–	व.	27	40	मेष			7	9	17	16	7	3	17	19	7	4	17	29	6	32	17	3	4	वक्री मंगल रोहि. में 19/20, मोक्षदा एकादशीव्रत (वै.)
	5	13	चं.	30	48	अश्वि.	7	14	प.	27	6	मेष			7	9	17	16	7	3	17	20	7	5	17	29	6	33	17	3	5	शुक्र मूल धनु में 17/57, सोमप्रदोष व्रत,
	6	14	मं.	–	–	भर.	8	38	शि.	26	51	वृष	15	2	7	10	17	16	7	4	17	20	7	6	17	29	6	34	17	4	6	
	7	14	बु.	8	1	कृत्ति.	10	25	सि.	26	53	वृष			7	11	17	16	7	5	17	20	7	7	17	29	6	34	17	4	7	भ. 8/1 से 20/49 तक, श्रीसत्यनारायण व्रत, श्रीदत्त जयन्ती,
	8	15	गु.	9	38	रोहि.	12	32	सा.	27	11	मिथुन	25	43	7	12	17	16	7	6	17	20	7	7	17	29	6	35	17	4	8	
पौष कृष्ण	9	1	शु.	11	34	मृग.	14	59	शु.	27	42	मिथुन			7	12	17	17	7	6	17	20	7	8	17	30	6	36	17	4	9	पौष कृष्ण पक्ष प्रारंभ,
	10	2	श.	13	48	आर्द्रा	17	41	शु.	28	24	मिथुन			7	13	17	17	7	7	17	20	7	9	17	30	6	36	17	4	10	भ. 27/1 बाद,
	11	3	र.	16	15	पुन.	20	36	ब्र.	29	14	कर्क	13	51	7	14	17	17	7	8	17	21	7	9	17	30	6	37	17	5	11	भ. 16/15 तक, बुध पू.षा. में 30/24, श्रीगणेशचतुर्थी व्रत (देखें पृ 19),
	12	4	चं.	18	49	पुष्य	23	35	ऐं.	30	6	कर्क			7	14	17	17	7	8	17	21	7	10	17	30	6	38	17	5	12	
	13	5	मं.	21	21	आश्ले.	26	32	वै.	30	54	सिंह	26	32	7	15	17	18	7	9	17	21	7	11	17	31	6	38	17	5	13	
	14	6	बु.	23	42	मघा	29	15	वि.	–	–	सिंह			7	16	17	18	7	10	17	21	7	11	17	31	6	39	17	6	14	भ. 23/42 बाद, शनि धनि. 2 में 21/24,
	15	7	गु.	25	39	पू.फा.	–	–	वि.	7	29	सिंह			7	16	17	18	7	10	17	22	7	12	17	31	6	40	17	6	15	भ. 12/41 तक,
	16	8	शु.	27	2	पू.फा.	7	34	प्री.	7	45	कन्या	14	4	7	17	17	19	7	11	17	22	7	13	17	32	6	40	17	6	16	सं. सूर्य मूल धनु में 9/58, मु. 45, पुण्यकाल सारा दिन, (B)
	17	9	श.	27	41	उ.फा.	9	18	आ.	7	33	कन्या			7	18	17	19	7	11	17	22	7	13	17	32	6	41	17	7	17	
									सौ.	30	47																					
	18	10	र.	27	32	हस्त	10	18	शो.	29	23	तुला	22	30	7	18	17	19	7	12	17	23	7	14	17	32	6	41	17	7	18	भ. 15/40 से 27/32 तक,
	19	11	चं.	26	33	चित्रा	10	30	अ.	27	20	तुला			7	19	17	20	7	13	17	23	7	14	17	33	6	42	17	8	19	राहु भर. 1, केतु स्वा. 3 में 29/42, सफला एकादशी व्रत (स.),
	20	12	मं.	24	46	स्वाती	9	54	सु.	24	39	वृश्चि.	26	57	7	19	17	20	7	13	17	24	7	15	17	33	6	42	17	8	20	
	21	13	बु.	22	16	विशा.	8	33	धृ.	21	25	वृश्चि.			7	20	17	21	7	14	17	24	7	15	17	34	6	43	17	9	21	भ. 22/16 बाद, सूर्य सायन मकर में 27/19, उत्तरायण एवम् (C)
						अनु.	30	33																								
	22	14	गु.	19	13	ज्येष्ठा	28	2	शू.	17	43	धनु	28	2	7	20	17	21	7	14	17	25	7	16	17	34	6	43	17	9	22	भ. 8/44 तक, बुध उ.षा. में 22/19,
	23	30	शु.	15	47	मूल	25	13	गं.	13	40	धनु			7	21	17	22	7	15	17	25	7	16	17	35	6	44	17	10	23	
पौष शुक्ल	24	1	श.	12	7	पू.षा.	22	15	वृ.	9	26	मकर	27	31	7	21	17	22	7	15	17	26	7	17	17	35	6	44	17	10	24	पौष शुक्ल पक्ष प्रारंभ, चन्द्रदर्शन, मु. 30,
									ध्रु.	29	9																					
	25	2/	र.	8	25	उ.षा.	19	21	व्या.	24	58	मकर			7	22	17	23	7	16	17	26	7	17	17	36	6	45	17	11	25	क्रिस्मस डे,
		3		28	51																											तृतीया तिथिक्षय,
	26	4	चं.	25	38	श्रव.	16	41	ह.	21	1	कुम्भ	27	30	7	22	17	23	7	16	17	27	7	18	17	36	6	45	17	11	26	भ. 15/14 से 25/38 तक, पंचक प्रारम्भ 27/30, शुक्र उ.षा. (D)
	27	5	मं.	22	53	धनि.	14	27	व.	17	27	कुम्भ			7	23	17	24	7	16	17	28	7	18	17	37	6	46	17	12	27	बुध मकर में 29/10, प्लूटो उ.षा. 3 में 15/19,
	28	6	बु.	20	44	शत.	12	45	सि.	14	20	मीन	29	55	7	23	17	25	7	17	17	28	7	18	17	38	6	46	17	12	28	गुरु उ.भा. 2 में 29/17,
	29	7	गु.	19	17	पू.भा.	11	43	व्य.	11	45	मीन			7	23	17	25	7	17	17	29	7	19	17	38	6	46	17	13	29	भ. 19/17 से 30/56 तक, सूर्य पू.षा. में 12/8, (E)
	30	8	शु.	18	34	उ.भा.	11	24	व.	9	45	मीन			7	24	17	26	7	17	17	29	7	19	17	39	6	47	17	14	30	वक्री बुध धनु में 22/08,
	31	9	श.	18	33	रेव.	11	46	प.	8	18	मेष	11	46	7	24	17	27	7	18	17	30	7	19	17	40	6	47	17	14	31	पंचक समाप्त 11/46,
									शि.	31	23																					

(A) नेप्च्यून मार्गी 29/49, बुध पश्चिम में उदित 17/16, मोक्षदा एकादशी व्रत (स्मा.) (देखें पृ. 18), श्रीगीता जयन्ती, **(B)** शुक्र पू. षा. में 9/2, **(C)** शिशिर ऋतु प्रारम्भ, प्रदोषव्रत, **(D)** में 24/13, जोड़मेला श्रीफतेहगढ़ साहिब (पं.), **(E)** बुध वक्री 15/02, शुक्र मकर में 16/3, अवतारदिन श्री गुरु गोविन्दसिंह जी.

24/13, जोड़मेला श्रीफतेहगढ़ साहिब (पं.), (E) बुध वक्री 15/02, शुक्र मकर में 16/3, अवतारदिन श्री गुरु गोविन्दसिंह जी,

मास पक्ष	जनवरी	तिथि	वार	समाप्ति-काल घं.	मि.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं.	मि.	योग	समाप्ति काल घं.	मि.	चन्द्रराशि - प्रवेशकाल	घं.	मि.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	दिल्ली सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	जयपुर सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	वाराणसी सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	तारीख	भद्रा, ग्रहराशिनक्षत्र-प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
पौष शुक्ल	1	10	र.	19	12	अश्वि.	12	48	सि.	30	56	मेष			7	24	17	27	7	18	17	31	7	20	17	40	6	47	17	15	1	बुध पश्चिम में अस्त 17/27, इंग्लिश नववर्ष सन् 2023 ई. प्रारम्भ,
	2	11	चं.	20	23	भर.	14	23	सा.	30	52	वृष	20	51	7	24	17	28	7	18	17	32	7	20	17	41	6	48	17	16	2	भ. 7/47 से 20/23 तक, पुत्रदा एकादशी व्रत (स.),
	3	12	मं.	22	2	कृत्ति.	16	25	शु.	31	6	वृष			7	25	17	29	7	18	17	32	7	20	17	42	6	48	17	16	3	
	4	13	बु.	24	1	रोहि.	18	48	शु.	–	–	वृष			7	25	17	30	7	19	17	33	7	20	17	42	6	48	17	17	4	वक्री बुध पू.षा. में 16/0, प्रदोषव्रत,
	5	14	गु.	26	14	मृग.	21	26	शु.	7	33	मिथुन	8	5	7	25	17	30	7	19	17	34	7	21	17	43	6	48	17	18	5	भ. 26/14 बाद,
	6	15	शु.	28	37	आर्द्रा	24	13	ब्र.	8	10	मिथुन			7	25	17	31	7	19	17	34	7	21	17	44	6	49	17	18	6	भ. 15/25 तक, शुक्र श्रव. में 15/42, पौषी पूर्णिमा, (A)
माघ कृष्ण	7	1	श.	31	7	पुन.	27	7	ऐं.	8	53	कर्क	20	23	7	25	17	32	7	19	17	35	7	21	17	45	6	49	17	19	7	माघ कृष्ण पक्ष प्रारंभ,
	8	2	र.	–	–	पुष्य	30	5	वै.	9	41	कर्क			7	25	17	33	7	19	17	36	7	21	17	45	6	49	17	20	8	
	9	2	चं.	9	39	आश्ले.	–	–	वि.	10	31	कर्क			7	25	17	33	7	19	17	37	7	21	17	46	6	49	17	20	9	भ. 22/54 बाद,
	10	3	मं.	12	9	आश्ले.	9	1	प्री.	11	19	सिंह	9	1	7	25	17	34	7	19	17	38	7	21	17	47	6	49	17	21	10	भ. 12/9 तक, श्रीगणेश (संकष्ट) चतुर्थी व्रत (चन्द्रोदय देखें पृ. 11),
	11	4	बु.	14	31	मघा	11	50	आ.	12	1	सिंह			7	25	17	35	7	19	17	38	7	21	17	48	6	49	17	22	11	सूर्य उ.षा. में 14/12,
	12	5	गु.	16	37	पू.फा.	14	24	सौ.	12	31	कन्या	20	59	7	25	17	36	7	19	17	39	7	21	17	48	6	49	17	23	12	मंगल मार्गी 26/27,
	13	6	शु.	18	17	उ.फा.	16	35	शो.	12	44	कन्या			7	25	17	37	7	19	17	40	7	21	17	49	6	49	17	23	13	भ. 18/17 से 30/50 तक, बुध पूर्व में उदित 7/25, (B)
	14	7	श.	19	23	हस्त	18	13	अ.	12	32	तुला	30	48	7	25	17	38	7	19	17	41	7	21	17	50	6	49	17	24	14	सं. सूर्य मकर में 20/45, मु. 30, पुण्यकाल मध्याह्न बाद (C)
	15	8	र.	19	45	चित्रा	19	11	सु.	11	50	तुला			7	25	17	39	7	19	17	42	7	21	17	51	6	49	17	25	15	
	16	9	चं.	19	20	स्वाती	19	23	धृ.	10	31	तुला			7	25	17	39	7	19	17	42	7	21	17	51	6	49	17	26	16	भ. 30/42 बाद,
	17	10	मं.	18	5	विशा.	18	46	शू.	8	34	वृश्चि.	12	59	7	24	17	40	7	19	17	43	7	21	17	52	6	49	17	27	17	भ. 18/5 तक, शुक्र धनि. में 7/41, शनि धनि. 3 कुम्भ में 18/3,
									गं.	29	58																					
	18	11	बु.	16	3	अनु.	17	22	वृ.	26	46	वृश्चि.			7	24	17	41	7	19	17	44	7	21	17	53	6	49	17	27	18	बुध मार्गी 18/42, षट्तिला एकादशी व्रत (स.),
	19	12	गु.	13	18	ज्येष्ठा	15	17	ध्रु.	23	3	धनु	15	17	7	24	17	42	7	18	17	45	7	21	17	54	6	49	17	28	19	प्रदोषव्रत,
	20	13/	शु.	10	0	मूल	12	40	व्या.	18	57	धनु			7	24	17	43	7	18	17	46	7	20	17	55	6	49	17	29	20	भ. 10/0 से 20/9 तक, सूर्य सायन कुम्भ में 14/00, (D)
		14		30	18																											चतुर्दशी तिथिक्षय,
	21	30	श.	26	23	पू.षा.	9	40	ह.	14	34	मकर	14	52	7	23	17	44	7	18	17	47	7	20	17	55	6	49	17	30	21	गुरु उ.भा. 3 में 17/8, शनैश्चरी अमा, मौनी अमा,
						उ.षा.	30	29																								
माघ शुक्ल	22	1	र.	22	28	श्रव.	27	21	व.	10	5	मकर			7	23	17	45	7	18	17	47	7	20	17	56	6	48	17	30	22	माघ शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, शुक्र कुम्भ में 15/53, (E)
									सि.	29	40																					
	23	2	चं.	18	43	धनि.	24	26	व्य.	25	27	कुम्भ	13	51	7	23	17	46	7	17	17	48	7	20	17	57	6	48	17	31	23	चन्द्रदर्शन, मु. 30, पंचक प्रारम्भ 13/51,
	24	3	मं.	15	22	शत.	21	57	व.	21	36	कुम्भ			7	22	17	47	7	17	17	49	7	19	17	58	6	48	17	32	24	भ. 25/58 बाद, सूर्य श्रव. में 16/28, गौरी तृतीया (गोंतरी), (F)
	25	4	बु.	12	34	पू.भा.	20	5	प.	18	14	मीन	14	29	7	22	17	47	7	17	17	50	7	19	17	59	6	48	17	33	25	भ. 12/34 तक,
	26	5	गु.	10	28	उ.भा.	18	56	शि.	15	28	मीन			7	21	17	48	7	16	17	51	7	19	17	59	6	47	17	33	26	भारत गणतन्त्र दिवस, श्रीपंचमी, वसन्त पंचमी, (G)
	27	6	शु.	9	10	रेव.	18	36	सि.	13	21	मेष	18	36	7	21	17	49	7	16	17	52	7	18	18	0	6	47	17	34	27	पंचक समाप्त 18/36, शुक्र शत. में 24/18,
	28	7	श.	8	43	अश्वि.	19	5	सा.	11	54	मेष			7	20	17	50	7	15	17	53	7	18	18	1	6	47	17	35	28	भ. 8/43 से 20/54 तक, रथ/आरोग्य सप्तमी (H)
	29	8	र.	9	5	भर.	20	21	शु.	11	4	वृष	26	46	7	20	17	51	7	15	17	53	7	18	18	2	6	46	17	36	29	
	30	9	चं.	10	12	कृत्ति.	22	15	शु.	10	48	वृष			7	19	17	52	7	14	17	54	7	17	18	3	6	46	17	36	30	शनि अस्त 17/52, माघ गुप्त नवरात्र समाप्त,
	31	10	मं.	11	54	रोहि.	24	39	ब्र.	10	58	वृष			7	19	17	53	7	14	17	55	7	17	18	3	6	45	17	37	31	भ. 24/57 बाद, नवरात्र-पारणा,

(A) श्रीसत्यनारायण व्रत, माघस्नान प्रारम्भ, (B) लोहड़ी (पं., हरि., हि.प्र., ज.क.), (C) एवम् अगले दिन मध्याह्न तक, मकर संक्रान्ति, जन्मदिन स्वामी विवेकानन्द जी, (D) मेरु त्रयोदशी (जैन), (E) यूरेनस मार्गी 28/29, माघ गुप्त नवरात्र प्रारम्भ, (F) वरद-तिल-कुन्द चतुर्थी, (G) (श्रीलक्ष्मी-सरस्वती पूजन), (H) (पूर्वारुणोदय वाली), भीष्माष्टमी, मर्यादा महोत्सव (जैन),

श्री वि.सं. 2079 तिथ्यादि पंचांग (भा. स्टैं. टा.) फरवरी, सन् 2023 ई.

मास पक्ष	फरवरी	तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति काल		योग	समाप्ति काल		चन्द्रराशि - प्रवेशकाल			चण्डीगढ़				दिल्ली				जयपुर				वाराणसी				तारीख	भद्रा, ग्रहराशिनक्षत्र-प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
															सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त			
				घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.		
माघ शुक्ल	1	11	बु.	14	2	मृग.	27	23	ऐं.	11	28	मिथुन	13	59	7	18	17	54	7	13	17	56	7	16	18	4	6	45	17	38	1	भ. 14/2 तक, जया एकादशी व्रत (स.), भीष्म द्वादशी,
	2	12	गु.	16	26	आर्द्रा	30	18	वै.	12	11	मिथुन			7	18	17	55	7	13	17	57	7	16	18	5	6	45	17	39	2	
	3	13	शु.	18	58	पुन.	–	–	वि.	13	1	कर्क	26	31	7	17	17	55	7	12	17	57	7	15	18	6	6	44	17	39	3	प्रदोषव्रत (देखें पृ. 19),
	4	14	श.	21	30	पुन.	9	16	प्री.	13	51	कर्क			7	16	17	56	7	12	17	58	7	15	18	7	6	44	17	40	4	भ. 21/30 बाद, बुध उ.षा. में 14/54,
	5	15	र.	23	58	पुष्य	12	12	आ.	14	40	कर्क			7	16	17	57	7	11	17	59	7	14	18	7	6	43	17	41	5	भ. 10/45 तक, श्रीसत्यनारायण व्रत, माघी पूर्णिमा, (A)
फाल्गुन कृष्ण	6	1	चं.	26	19	आश्ले.	15	3	सौ.	15	24	सिंह	15	3	7	15	17	58	7	10	18	0	7	14	18	8	6	42	17	41	6	फाल्गुन कृष्ण पक्ष प्रारंभ, सूर्य धनि. में 19/39,
	7	2	मं.	28	28	मघा	17	45	शो.	16	2	सिंह			7	14	17	59	7	10	18	1	7	13	18	9	6	42	17	42	7	बुध मकर में 7/29, शुक्र पू.भा. में 17/56
	8	3	बु.	30	23	पू.फा.	20	14	अ.	16	29	कन्या	26	49	7	13	18	0	7	9	18	2	7	12	18	10	6	41	17	43	8	भ. 17/25 से 30/23 तक, गुरु उ.भा. 4 में 17/44,
	9	4	गु.	–	–	उ.फा.	22	27	सु.	16	45	कन्या			7	13	18	1	7	8	18	2	7	12	18	10	6	41	17	44	9	श्रीगणेश चतुर्थी व्रत,
	10	4	शु.	7	58	हस्त	24	17	धृ.	16	43	कन्या			7	12	18	2	7	8	18	3	7	11	18	11	6	40	17	44	10	
	11	5	श.	9	8	चित्रा	25	39	शू.	16	21	तुला	13	2	7	11	18	2	7	7	18	4	7	10	18	12	6	39	17	45	11	
	12	6	र.	9	46	स्वाती	26	27	गं.	15	33	तुला			7	10	18	3	7	6	18	5	7	10	18	12	6	39	17	46	12	भ. 9/46 से 21/46 तक,
	13	7	चं.	9	46	विशा.	26	35	वृ.	14	15	वृश्चि.	20	37	7	9	18	4	7	5	18	5	7	9	18	13	6	38	17	46	13	सं. सूर्य कुम्भ में 9/44, मु. 45, पुण्यकाल 16/08 तक,
	14	8	मं.	9	4	अनु.	26	1	ध्रु.	12	25	वृश्चि.			7	8	18	5	7	5	18	6	7	8	18	14	6	37	17	47	14	बुध श्रव. में 16/24, शनि धनि. 4 में 25/13,
	15	9/	बु.	7	39	ज्येष्ठा	24	46	व्या.	10	0	धनु	24	46	7	8	18	6	7	4	18	7	7	7	18	14	6	37	17	47	15	भ. 18/36 से 29/33 तक, शुक्र मीन में 20/2,
		10		29	33				ह.	31	2																					दशमी तिथिक्षय,
	16	11	गु.	26	49	मूल	22	52	व.	27	35	धनु			7	7	18	7	7	3	18	8	7	6	18	15	6	36	17	48	16	विजया एकादशी व्रत (स्मा.) (देखें पृ. 19),
	17	12	शु.	23	36	पू.षा.	20	28	सि.	23	44	मकर	25	48	7	6	18	7	7	2	18	8	7	6	18	16	6	35	17	49	17	विजया एकादशी व्रत (वै.),
	18	13	श.	20	2	उ.षा.	17	42	व्य.	19	35	मकर			7	5	18	8	7	1	18	9	7	5	18	17	6	34	17	49	18	भ. 20/2 से 30/10 तक, शुक्र उ.भा. में 12/55, नेप्च्यून पू.भा. 4 (B)
	19	14	र.	16	18	श्रव.	14	44	व.	15	19	कुम्भ	25	14	7	4	18	9	7	0	18	10	7	4	18	17	6	34	17	50	19	पंचक प्रारम्भ 25/14, सूर्य शत. में 24/09,
	20	30	चं.	12	35	धनि.	11	46	प.	11	2	कुम्भ			7	3	18	10	6	59	18	11	7	3	18	18	6	33	17	51	20	राहु अश्वि. 4, केतु स्वा. 2 में 27/10, सोमवती अमा,
									शि.	30	56																					
फाल्गुन शुक्ल	21	1/	मं.	9	5	शत.	9	0	सि.	27	7	मीन	25	11	7	2	18	11	6	58	18	11	7	2	18	19	6	32	17	51	21	फाल्गुन शुक्ल पक्ष प्रारंभ, चन्द्रदर्शन, मु. 30, (C)
		2		29	58	पू.भा.	30	38																								द्वितीया तिथिक्षय,
	22	3	बु.	27	25	उ.भा.	28	49	सा.	23	46	मीन			7	1	18	11	6	57	18	12	7	1	18	19	6	31	17	52	22	
	23	4	गु.	25	34	रेव.	27	44	शु.	20	57	मेष	27	44	7	0	18	12	6	57	18	13	7	1	18	20	6	30	17	52	23	भ. 14/29 से 25/34 तक, पंचक समाप्त 27/44, बुध धनि. में 13/19,
	24	5	शु.	24	31	अश्वि.	27	26	शु.	18	47	मेष			6	59	18	13	6	56	18	13	7	0	18	20	6	29	17	53	24	मंगल मृग. में 26/42, गुरु रेव. 1 में 14/35,
	25	6	श.	24	20	भर.	27	58	ब्र.	17	17	मेष			6	58	18	14	6	55	18	14	6	59	18	21	6	29	17	54	25	होलाष्टक प्रारम्भ 27 फरवरी
	26	7	र.	24	59	कृत्ति.	29	18	ऐं.	16	26	वृष	10	14	6	57	18	14	6	54	18	15	6	58	18	22	6	28	17	54	26	भ. 24/59 बाद,
	27	8	चं.	26	21	रोहि.	–	–	वै.	16	11	वृष			6	56	18	15	6	53	18	15	6	57	18	22	6	27	17	55	27	भ. 13/40 तक, बुध कुम्भ में 16/46, होलाष्क प्रारम्भ,
	28	9	मं.	28	19	रोहि.	7	19	वि.	16	25	मिथुन	20	32	6	54	18	16	6	52	18	16	6	56	18	23	6	26	17	55	28	

(A) माघस्नान समाप्त, श्रीगुरु रविदास जयन्ती, (B) मीन में 20/37, सूर्य सायन मीन में 28/5, बसन्त ऋतु प्रारम्भ, शनि प्रदोषव्रत, श्रीमहाशिवरात्रि व्रत. (C) अवतारदिन श्री रामकृष्ण परमहंस.

मास पक्ष	गते	तिथि	वार	समाप्ति-काल घं.	मि.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं.	मि.	योग	समाप्ति काल घं.	मि.	चन्द्रराशि - प्रवेशकाल	घं.	मि.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	दिल्ली सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	जयपुर सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	वाराणसी सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	तारीख	भद्रा, ग्रहराशिनक्षत्र-प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
फाल्गुन शुक्ल	1	10	बु.	30	39	मृग.	9	51	प्री.	17	1	मिथुन			6	53	18	17	6	51	18	17	6	55	18	23	6	25	17	56	1	शुक्र रेव. में 9/33,
	2	11	गु.	-	-	आर्द्रा	12	43	आ.	17	50	मिथुन			6	52	18	17	6	49	18	17	6	54	18	24	6	24	17	56	2	भ. 19/55 बाद, बुध पूर्व में अस्त 6/52,
	3	11	शु.	9	11	पुन.	15	43	सौ.	18	44	कर्क	8	58	6	51	18	18	6	48	18	18	6	53	18	25	6	23	17	57	3	भ. 9/11 तक, बुध शत. में 16/13, आमलकी एकादशी व्रत (A)
	4	12	श.	11	43	पुष्य	18	41	शो.	19	36	कर्क			6	50	18	19	6	47	18	19	6	52	18	25	6	22	17	57	4	सूर्य पू.भा. में 30/24, शनि प्रदोषव्रत,
	5	13	र.	14	7	आश्ले.	21	30	अ.	20	20	सिंह	21	30	6	49	18	19	6	46	18	19	6	51	18	26	6	21	17	58	5	शनि उदित 6/49, होलाष्टक समाप्त 7 मार्च
	6	14	चं.	16	17	मघा	24	4	सु.	20	53	सिंह			6	48	18	20	6	45	18	20	6	50	18	26	6	20	17	58	6	भ. 16/17 से 29/13 तक, होलिका दहन (प्रदोष में) (B)
	7	15	मं.	18	10	पू.फा.	26	22	धृ.	21	13	सिंह			6	47	18	21	6	44	18	21	6	49	18	27	6	19	17	59	7	होलाष्टक समाप्त, जन्मदिन श्री चैतन्य महाप्रभु,
चैत्र कृष्ण	8	1	बु.	19	43	उ.फा.	28	19	शू.	21	18	कन्या	8	53	6	45	18	22	6	43	18	21	6	48	18	28	6	18	17	59	8	चैत्र कृष्ण पक्ष प्रारंभ, वसन्तोत्सव, होला महल्ला (C)
	9	2	गु.	20	54	हस्त	29	56	गं.	21	7	कन्या			6	44	18	22	6	42	18	22	6	47	18	28	6	17	18	0	9	
	10	3	शु.	21	42	चित्रा	-	-	वृ.	20	38	तुला	18	36	6	43	18	23	6	41	18	22	6	46	18	29	6	16	18	0	10	भ. 9/18 से 21/42 तक, बुध पू.भा. में 28/12,
	11	4	श.	22	6	चित्रा	7	10	ध्रु.	19	50	तुला			6	42	18	24	6	40	18	23	6	45	18	29	6	15	18	1	11	गुरु रेव. 2 में 8/44, श्रीगणेश चतुर्थी व्रत,
	12	5	र.	22	1	स्वाती	7	59	व्या.	18	41	वृश्चि.	26	18	6	41	18	24	6	39	18	24	6	44	18	30	6	14	18	1	12	मंगल मिथुन में 29/02, शुक्र अश्वि. मेष में 8/27,
	13	6	चं.	21	27	विशा.	8	21	ह.	17	9	वृश्चि.			6	39	18	25	6	37	18	24	6	43	18	30	6	13	18	2	13	भ. 21/27 बाद,
	14	7	मं.	20	22	अनु.	8	12	व.	15	13	वृश्चि.			6	38	18	26	6	36	18	25	6	41	18	31	6	12	18	2	14	भ. 8/55 तक, सं. सूर्य मीन में 30/34 (देखें पृ. 20), मु. 15, (D)
	15	8	बु.	18	46	ज्येष्ठा	7	33	सि.	12	52	धनु	7	33	6	37	18	26	6	35	18	25	6	40	18	31	6	11	18	3	15	श्रीशीतलाष्टमी,
						मूल	30	24																								
	16	9	गु.	16	39	पू.षा.	28	46	व्य.	10	6	धनु			6	36	18	27	6	34	18	26	6	39	18	32	6	10	18	3	16	भ. 27/23 बाद, बुध मीन में 10/47, (E)
	17	10	शु.	14	7	उ.षा.	26	46	व.	6	58	मकर	10	18	6	34	18	28	6	33	18	27	6	38	18	32	6	9	18	4	17	भ. 14/7 तक, बुध उ.भा. में 27/42,
									प.	27	32																					
	18	11	श.	11	14	श्रव.	24	29	शि.	23	53	मकर			6	33	18	28	6	32	18	27	6	37	18	33	6	8	18	4	18	सूर्य उ.भा. में 14/52, पापमोचिनी एकादशी व्रत (स.),
	19	12/	र.	8	7	धनि.	22	4	सि.	20	6	कुम्भ	11	17	6	32	18	29	6	31	18	28	6	36	18	33	6	7	18	5	19	भ. 28/55 बाद, पंचक प्रारम्भ 11/17, प्रदोषव्रत,
		13		28	55																											त्रयोदशी तिथिक्षय,
	20	14	चं.	25	47	शत.	19	39	सा.	16	19	कुम्भ			6	31	18	30	6	29	18	28	6	35	18	34	6	6	18	5	20	भ. 15/21 तक, सूर्य सायन मेष में 26/55, उत्तरगोल प्रारम्भ, (F)
	21	30	मं.	22	53	पू.भा.	17	25	शु.	12	40	मीन	11	57	6	30	18	30	6	28	18	29	6	34	18	34	6	5	18	6	21	भौमवती अमा, चान्द्र संवत्सर 2079 वि. पूर्ण,

(A) (स.) (देखें पृ. 19), गोविन्द द्वादशी, **(B)** (देखें पृ. 20), श्रीसत्यनारायण व्रत, **(C)** श्री आनन्दपुर साहिब (पं.), **(D)** पुण्यकाल अगले दिन मध्याह्न तक, शनि शत. 1 में 25/36, **(E)** मेला शीतला माता (कुराली) पं., **(F)** महाविषुव दिन, मेला पिहोवा तीर्थ (हरि.),

चन्द्रमा का नक्षत्रचरणों में प्रवेशकाल (भा. स्टैं. टा.), सन् 2022 ई.

चन्द्र नक्षत्रचरण		1		2		3		4	
जनवरी 2022 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
31/1	ज्येष्ठा	22	4	3	23	8	42	14	0
1/2	मूल	19	17	0	34	5	50	11	6
2/3	पू.षा.	16	23	21	40	2	57	8	14
3/4	उ.षा.	13	32	18	52	0	12	5	33
4/5	श्रव.	10	56	16	21	21	47	3	15
5/6	धनि.	8	46	14	18	19	53	1	31
6/7	शत.	7	11	12	54	18	40	0	28
7/8	पू.भा.	6	20	12	15	18	13	0	15
8/9	उ.भा.	6	19	12	27	18	38	0	52
9/10	रेव.	7	10	13	30	19	53	2	20
10/11	अश्वि.	8	49	15	20	21	54	4	31
11/12	भर.	11	9	17	49	0	31	7	15
12/13	कृत्ति.	13	59	20	45	3	31	10	19
13/14	रोहि.	17	6	23	54	6	42	13	30
14/15	मृग.	20	17	3	4	9	50	16	36
15/16	आर्द्रा	23	21	6	4	12	47	19	28
17	पुन.	2	9	8	48	15	25	22	2
18/19	पुष्य	4	37	11	10	17	42	0	13
19/20	आश्ले.	6	42	13	10	19	36	2	0
20/21	मघा	8	24	14	46	21	6	3	25
21/22	पू.फा.	9	42	15	58	22	13	4	26
22/23	उ.फा.	10	37	16	48	22	56	5	3
23/24	हस्त	11	9	17	12	23	15	5	15
24/25	चित्रा	11	14	17	12	23	8	5	2
25/26	स्वाती	10	54	16	44	22	33	4	20
26/27	विशा.	10	6	15	50	21	32	3	12
27/28	अनु.	8	51	14	28	20	3	1	37
28	ज्येष्ठा	7	10	12	41	18	11	23	40
29	मूल	5	7	10	34	15	59	21	24
30	पू.षा.	2	49	8	12	13	36	18	59
31	उ.षा.	0	22	5	45	11	9	16	33

चन्द्र नक्षत्रचरण		1		2		3		4	
फरवरी 2022 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
31/1	श्रव.	21	57	3	22	8	48	14	15
1/2	धनि.	19	44	1	13	6	45	12	18
2/3	शत.	17	53	23	30	5	9	10	50
3/4	पू.भा.	16	34	22	21	4	10	10	2
4/5	उ.भा.	15	57	21	55	3	56	10	1
5/6	रेव.	16	8	22	19	4	32	10	49
6/7	अश्वि.	17	9	23	32	5	58	12	27
7/8	भर.	18	58	1	32	8	8	14	46
8/9	कृत्ति.	21	27	4	9	10	52	17	37
10	रोहि.	0	23	7	9	13	56	20	44
11	मृग.	3	31	10	19	17	5	23	51
12/13	आर्द्रा	6	37	13	21	20	4	2	46
13/14	पुन.	9	27	16	6	22	43	5	18
14/15	पुष्य	11	52	18	24	0	54	7	22
15/16	आश्ले.	13	48	20	12	2	34	8	55
16/17	मघा	15	13	21	30	3	45	9	58
17/18	पू.फा.	16	10	22	20	4	29	10	36
18/19	उ.फा.	16	41	22	46	4	49	10	50
19/20	हस्त	16	51	22	50	4	48	10	46
20/21	चित्रा	16	42	22	37	4	31	10	24
21/22	स्वाती	16	16	22	7	3	58	9	47
22/23	विशा.	15	35	21	23	3	10	8	55
23/24	अनु.	14	40	20	24	2	7	7	49
24/25	ज्येष्ठा	13	30	19	11	0	50	6	29
25/26	मूल	12	7	17	44	23	21	4	56
26/27	पू.षा.	10	32	16	6	21	41	3	15
27/28	उ.षा.	8	48	14	21	19	55	1	28
28	श्रव.	7	1	12	35	18	9	23	44

चन्द्र नक्षत्रचरण		1		2		3		4	
मार्च 2022 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
1	धनि.	5	19	10	54	16	31	22	9
2	शत.	3	47	9	27	15	9	20	52
3	पू.भा.	2	37	8	23	14	12	20	3
4	उ.भा.	1	56	7	51	13	48	19	48
5	रेव.	1	51	7	56	14	4	20	15
6	अश्वि.	2	29	8	45	15	4	21	26
7	भर.	3	50	10	18	16	47	23	19
8/9	कृत्ति.	5	54	12	30	19	9	1	49
9/10	रोहि.	8	31	15	14	21	58	4	44
10/11	मृग.	11	30	18	16	1	2	7	49
11/12	आर्द्रा	14	35	21	20	4	5	10	49
12/13	पुन.	17	31	0	12	6	52	13	29
13/14	पुष्य	20	5	2	39	9	11	15	40
14/15	आश्ले.	22	7	4	32	10	55	17	15
15/16	मघा	23	32	5	48	12	1	18	12
17	पू.फा.	0	20	6	27	12	31	18	33
18	उ.फा.	0	34	6	32	12	29	18	24
19	हस्त	0	17	6	9	12	0	17	49
19/20	चित्रा	23	37	5	24	11	10	16	55
20/21	स्वाती	22	40	4	23	10	6	15	49
21/22	विशा.	21	30	3	12	8	52	14	33
22/23	अनु.	20	13	1	53	7	33	13	13
23/24	ज्येष्ठा	18	52	0	31	6	11	11	50
24/25	मूल	17	29	23	9	4	48	10	27
25/26	पू.षा.	16	7	21	47	3	26	9	7
26/27	उ.षा.	14	47	20	28	2	8	7	50
27/28	श्रव.	13	31	19	14	0	56	6	40
28/29	धनि.	12	24	18	8	23	54	5	40
29/30	शत.	11	28	17	16	23	5	4	56
30/31	पू.भा.	10	48	16	41	22	36	4	32

चन्द्रमा का नक्षत्रचरणों में प्रवेशकाल (भा. स्टैं. टा.), सन् 2022 ई.

चन्द्र नक्षत्रचरण		1		2		3		4	
अप्रैल 2022 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
31/1	उ.भा.	10	30	16	30	22	31	4	34
1/2	रेव.	10	39	16	46	22	56	5	7
2/3	अश्वि.	11	21	17	36	23	54	6	14
3/4	भर.	12	37	19	1	1	28	7	57
4/5	कृत्ति.	14	28	21	1	3	36	10	13
5/6	रोहि.	16	51	23	31	6	13	12	55
6/7	मृग.	19	39	2	34	9	9	15	55
7/8	आर्द्रा	22	41	5	27	12	13	18	58
9	पुन.	1	43	8	26	15	9	21	50
10/11	पुष्य	4	30	11	8	17	44	0	18
11/12	आश्ले.	6	50	13	20	19	47	2	12
12/13	मघा	8	34	14	54	21	10	3	25
13/14	पू.फा.	9	36	15	45	21	51	3	54
14/15	उ.फा.	9	55	15	54	21	50	3	43
15/16	हस्त	9	35	15	24	21	11	2	56
16/17	चित्रा	8	39	14	21	20	1	1	39
17	स्वाती	7	16	12	52	18	27	24	0
18	विशा.	5	33	11	5	16	37	22	8
19	अनु.	3	38	9	8	14	38	20	8
20	ज्ये.	1	39	7	9	12	39	18	10
20/21	मूल	23	41	5	12	10	45	16	17
21/22	पू.षा.	21	51	3	25	9	1	14	37
22/23	उ.षा.	20	14	1	52	7	31	13	12
23/24	श्रव.	18	53	0	36	6	20	12	5
24/25	धनि.	17	52	23	40	5	29	11	20
25/26	शत.	17	12	23	6	5	1	10	58
26/27	पू.भा.	16	56	22	56	4	57	11	0
27/28	उ.भा.	17	4	23	11	5	19	11	28
28/29	रेव.	17	40	23	53	6	7	12	24
29/30	अश्वि.	18	42	1	2	7	24	13	45

चन्द्र नक्षत्रचरण		1		2		3		4	
मई 2022 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
30/1	भर.	20	12	2	39	9	8	15	38
1/2	कृत्ति.	22	10	4	43	11	19	17	55
3	रोहि.	0	33	7	12	13	53	20	34
4	मृग.	3	17	10	1	16	45	23	30
5/6	आर्द्रा	6	16	13	2	19	48	2	34
6/7	पुन.	9	20	16	5	22	50	5	34
7/8	पुष्य	12	17	18	59	1	40	8	19
8/9	आश्ले.	14	57	21	33	4	6	10	38
9/10	मघा	17	7	23	34	5	58	12	20
10/11	पू.फा.	18	39	0	55	7	9	13	19
11/12	उ.फा.	19	27	1	32	7	34	13	33
12/13	हस्त	19	29	1	23	7	14	13	2
13/14	चित्रा	18	48	0	31	6	12	11	51
14/15	स्वाती	17	27	23	2	4	34	10	5
15/16	विशा.	15	34	21	2	2	28	7	53
16/17	अनु.	13	17	18	41	0	3	5	25
17/18	ज्ये.	10	46	16	7	21	28	2	48
18/19	मूल	8	9	13	30	18	52	0	14
19	पू.षा.	5	37	11	0	16	25	21	50
20	उ.षा.	3	17	8	45	14	14	19	45
21	श्रव.	1	18	6	52	12	28	18	6
21/22	धनि.	23	46	5	28	11	12	16	58
22/23	शत.	22	46	4	37	10	29	16	24
23/24	पू.भा.	22	21	4	21	10	23	16	27
24/25	उ.भा.	22	33	4	41	10	52	17	4
25/26	रेव.	23	19	5	36	11	55	18	15
27	अश्वि.	0	38	7	2	13	29	19	56
28	भर.	2	26	8	57	15	29	22	3
29/30	कृत्ति.	4	39	11	15	17	53	0	32
30/31	रोहि.	7	12	13	53	20	34	3	17

चन्द्र नक्षत्रचरण		1		2		3		4	
जून 2022 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
31/1	मृग.	10	1	16	45	23	29	6	14
1/2	आर्द्रा	13	0	19	46	2	32	9	18
2/3	पुन.	16	4	22	49	5	35	12	20
3/4	पुष्य	19	4	1	48	8	31	15	13
4/5	आश्ले.	21	54	4	34	11	12	17	49
6	मघा	0	24	6	58	13	29	19	58
7	पू.फा.	2	25	8	50	15	12	21	32
8	उ.फा.	3	49	10	3	16	15	22	24
9	हस्त	4	30	10	33	16	34	22	31
10	चित्रा	4	26	10	17	16	6	21	52
11	स्वाती	3	36	9	17	14	55	20	31
12	विशा.	2	5	7	36	13	5	18	33
12/13	अनु.	23	58	5	22	10	44	16	4
13/14	ज्ये.	21	24	2	42	7	59	13	16
14/15	मूल	18	32	23	47	5	2	10	17
15/16	पू.षा.	15	32	20	48	2	3	7	20
16/17	उ.षा.	12	37	17	55	23	14	4	34
17/18	श्रव.	9	55	15	19	20	43	2	10
18/19	धनि.	7	39	13	9	18	42	0	18
19	शत.	5	55	11	36	17	19	23	4
20	पू.भा.	4	53	10	44	16	38	22	35
21	उ.भा.	4	35	10	38	16	43	22	51
22	रेव.	5	3	11	17	17	33	23	52
23/24	अश्वि.	6	14	12	38	19	4	1	33
24/25	भर.	8	3	14	36	21	10	3	46
25/26	कृत्ति.	10	23	17	2	23	42	6	23
26/27	रोहि.	13	5	19	48	2	32	9	17
27/28	मृग.	16	2	22	47	5	33	12	18
28/29	आर्द्रा	19	4	1	50	8	36	15	22
29/30	पुन.	22	8	4	53	11	38	18	23

चन्द्रमा का नक्षत्रचरणों में प्रवेशकाल (भा. स्टैं. टा.)

चन्द्र नक्षत्रचरण		1		2		3		4	
जुलाई 2022 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
1	पुष्य	1	7	7	50	14	33	21	14
2	आश्ले.	3	56	10	36	17	15	23	53
3/ 4	मघा.	6	30	13	5	19	39	2	12
4/ 5	पू.फा.	8	43	15	13	21	40	4	6
5/ 6	उ.फा.	10	30	16	52	23	11	5	28
6/ 7	हस्त	11	44	17	56	0	6	6	14
7/ 8	चित्रा	12	19	18	21	0	21	6	18
8/ 9	स्वाती	12	13	18	5	23	54	5	40
9/10	विशा.	11	24	17	6	22	44	4	21
10/11	अनु.	9	55	15	26	20	56	2	24
11	ज्येष्ठा	7	49	13	13	18	35	23	56
12	मूल	5	15	10	33	15	50	21	6
13	पू.षा.	2	21	7	36	12	50	18	4
13/14	उ.षा.	23	18	4	32	9	47	15	2
14/15	श्रव.	20	18	1	34	6	52	12	11
15/16	धनि.	17	31	22	53	4	17	9	42
16/17	शत.	15	10	20	40	2	12	7	47
17/18	पू.भा.	13	25	19	5	0	48	6	34
18/19	उ.भा.	12	23	18	15	0	11	6	9
19/20	रेव.	12	11	18	16	0	24	6	36
20/21	अश्वि.	12	50	19	7	1	28	7	51
21/22	भर.	14	17	20	45	3	16	9	49
22/23	कृत्ति.	16	24	23	1	5	40	12	21
23/24	रोहि.	19	2	1	45	8	29	15	14
24/25	मृग.	22	0	4	46	11	32	18	18
26	आर्द्रा.	1	5	7	51	14	38	21	23
27/28	पुन.	4	9	10	54	17	38	0	21
28/29	पुष्य	7	4	13	46	20	27	3	7
29/30	आश्ले.	9	46	16	24	23	1	5	37
30/31	मघा.	12	12	18	46	1	18	7	50

चन्द्र नक्षत्रचरण		1		2		3		4	
अगस्त 2022 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
31/ 1	पू.फा.	14	20	20	48	3	15	9	41
1/ 2	उ.फा.	16	6	22	29	4	50	11	10
2/ 3	हस्त	17	28	23	45	5	59	12	12
3/ 4	चित्रा	18	23	0	32	6	39	12	44
4/ 5	स्वाती	18	47	0	48	6	46	12	43
5/ 6	विशा.	18	37	0	29	6	18	12	6
6/ 7	अनु.	17	51	23	34	5	15	10	53
7/ 8	ज्येष्ठा	16	30	22	4	3	37	9	8
8/ 9	मूल	14	37	20	4	1	30	6	54
9/10	पू.षा.	12	17	17	39	23	0	4	20
10/11	उ.षा.	9	39	14	58	20	16	1	34
11	श्रव.	6	52	12	10	17	29	22	48
12	धनि.	4	7	9	27	14	49	20	11
13	शत.	1	35	7	1	12	28	17	57
13/14	पू.भा.	23	28	5	1	10	37	16	15
14/15	उ.भा.	21	55	3	39	9	25	15	14
15/16	रेव.	21	6	3	1	9	0	15	1
16/17	अश्वि.	21	6	3	14	9	25	15	39
17/18	भर.	21	57	4	17	10	40	17	6
18/19	कृत्ति.	23	35	6	6	12	39	19	15
20	रोहि.	1	53	8	32	15	13	21	55
21/22	मृग.	4	39	11	24	18	9	0	54
22/23	आर्द्रा.	7	40	14	26	21	12	3	58
23/24	पुन.	10	44	17	28	0	12	6	56
24/25	पुष्य	13	38	20	19	2	59	9	38
25/26	आश्ले.	16	16	22	52	5	27	12	0
26/27	मघा.	18	32	1	3	7	32	13	59
27/28	पू.फा.	20	26	2	50	9	14	15	35
28/29	उ.फा.	21	56	4	15	10	32	16	49
29/30	हस्त	23	3	5	17	11	29	17	40
30/31	चित्रा	23	49	5	57	12	3	18	8

चन्द्र नक्षत्रचरण		1		2		3		4	
सितंबर 2022 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
1	स्वाती	0	12	6	14	12	15	18	14
2	विशा.	0	11	6	8	12	2	17	55
2/ 3	अनु.	23	47	5	37	11	25	17	12
3/ 4	ज्येष्ठा	22	57	4	41	10	23	16	3
4/ 5	मूल	21	42	3	20	8	56	14	31
5/ 6	पू.षा.	20	5	1	38	7	9	12	39
6/ 7	उ.षा.	18	9	23	38	5	6	10	33
7/ 8	श्रव.	16	0	21	26	2	53	8	19
8/ 9	धनि.	13	45	19	12	0	39	6	6
9/10	शत.	11	34	17	3	22	33	4	4
10/11	पू.भा.	9	36	15	10	20	46	2	23
11/12	उ.भा.	8	1	13	42	19	26	1	11
12/13	रेव.	6	59	12	49	18	42	0	37
13/14	अश्वि.	6	35	12	36	18	40	0	47
14/15	भर.	6	57	13	9	19	25	1	43
15/16	कृत्ति.	8	4	14	28	20	55	3	23
16/17	रोहि.	9	55	16	28	23	4	5	41
17/18	मृग.	12	21	19	1	1	43	8	26
18/19	आर्द्रा.	15	10	21	55	4	40	11	25
19/20	पुन.	18	10	0	55	7	39	14	23
20/21	पुष्य	21	6	3	48	10	29	17	8
21/22	आश्ले.	23	46	6	23	12	58	19	31
23	मघा.	2	3	8	32	15	0	21	26
24	पू.फा.	3	50	10	12	16	32	22	50
25	उ.फा.	5	7	11	21	17	34	23	45
26/27	हस्त	5	55	12	2	18	8	0	13
27/28	चित्रा	6	16	12	17	18	17	0	16
28	स्वाती	6	14	12	10	18	5	23	59
29	विशा.	5	52	11	43	17	34	23	24
30	अनु.	5	12	11	0	16	47	22	33

30/31 चित्रा 23 49 5 57 12 3 18 8

चन्द्रमा का नक्षत्रचरणों में प्रवेशकाल (भा. स्टैं. टा.)

चन्द्र नक्षत्रचरण		1		2		3		4	
अक्तूबर 2022 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
1	ज्येष्ठा	4	18	10	2	15	46	21	29
2	मूल	3	11	8	52	14	33	20	13
3	पू.षा.	1	52	7	31	13	9	18	47
4	उ.षा.	0	24	6	1	11	38	17	14
4/ 5	श्रव.	22	51	4	27	10	2	15	38
5/ 6	धनि .	21	15	2	51	8	27	14	4
6/ 7	शत .	19	41	1	19	6	57	12	37
7/ 8	पू.भा.	18	17	23	58	5	40	11	23
8/ 9	उ.भा.	17	7	22	53	4	41	10	29
9/10	रेव.	16	20	22	13	4	7	10	3
10/11	अश्वि.	16	1	22	2	4	4	10	9
11/12	भर.	16	17	22	26	4	38	10	53
12/13	कृत्ति.	17	9	23	29	5	50	12	14
13/14	रोहि.	18	40	1	9	7	39	14	12
14/15	मृग.	20	46	3	23	10	1	16	40
15/16	आर्द्रा.	23	21	6	3	12	46	19	30
17	पुन.	2	14	8	59	15	43	22	28
18/19	पुष्य	5	12	11	56	18	38	1	20
19/20	आश्ले.	8	1	14	41	21	19	3	55
20/21	मघा.	10	30	17	2	23	33	6	1
21/22	पू.फा.	12	28	18	52	1	13	7	33
22/23	उ.फा.	13	50	20	4	2	16	8	26
23/24	हस्त	14	34	20	39	2	42	8	43
24/25	चित्रा	14	41	20	38	2	32	8	25
25/26	स्वाती	14	16	20	5	1	53	7	39
26/27	विशा.	13	24	19	7	0	49	6	30
27/28	अनु.	12	10	17	49	23	28	5	5
28/29	ज्येष्ठा	10	42	16	18	21	54	3	30
29/30	मूल	9	5	14	40	20	15	1	50
30/31	पू.षा.	7	25	13	0	18	36	0	11
31	उ.षा.	5	47	11	23	17	0	22	37

चन्द्र नक्षत्रचरण		1		2		3		4	
नवंबर 2022 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
1	श्रव.	4	15	9	53	15	32	21	12
2	धनि .	2	52	8	34	14	16	19	59
3	शत .	1	42	7	27	13	13	19	0
4	पू.भा.	0	48	6	37	12	27	18	19
5	उ.भा.	0	12	6	6	12	1	17	58
5/ 6	रेव.	23	56	5	55	11	57	17	59
7	अश्वि.	0	3	6	9	12	17	18	26
8	भर.	0	37	6	49	13	4	19	20
9	कृत्ति.	1	38	7	58	14	20	20	43
10	रोहि.	3	8	9	36	16	4	22	35
11/12	मृग.	5	7	11	41	18	17	0	54
12/13	आर्द्रा.	7	32	14	12	20	53	3	34
13/14	पुन.	10	17	17	1	23	45	6	29
14/15	पुष्य	13	14	19	59	2	44	9	28
15/16	आश्ले.	16	12	22	55	5	37	12	18
16/17	मघा.	18	58	1	36	8	13	14	47
17/18	पू.फा.	21	20	3	50	10	19	16	44
18/19	उ.फा.	23	7	5	28	11	46	18	1
20	हस्त	0	14	6	23	12	30	18	34
21	चित्रा	0	35	6	34	12	30	18	23
22	स्वाती	0	13	6	1	11	47	17	30
22/23	विशा.	23	12	4	51	10	28	16	3
23/24	अनु.	21	37	3	9	8	39	14	8
24/25	ज्येष्ठा	19	37	1	4	6	30	11	55
25/26	मूल	17	21	22	45	4	9	9	34
26/27	पू.षा.	14	58	20	22	1	47	7	12
27/28	उ.षा.	12	38	18	4	23	31	4	59
28/29	श्रव.	10	28	15	59	21	30	3	3
29/30	धनि .	8	38	14	13	19	51	1	30

चन्द्र नक्षत्रचरण		1		2		3		4	
दिसंबर 2022 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
30/ 1	शत .	7	11	12	53	18	38	0	24
1	पू.भा.	6	12	12	2	17	54	23	47
2	उ.भा.	5	43	11	41	17	40	23	42
3/ 4	रेव.	5	45	11	50	17	57	0	5
4/ 5	अश्वि.	6	16	12	28	18	42	0	57
5/ 6	भर.	7	14	13	33	19	53	2	15
6/ 7	कृत्ति.	8	38	15	2	21	28	3	56
7/ 8	रोहि.	10	25	16	55	23	26	5	58
8/ 9	मृग.	12	32	19	7	1	43	8	20
9/10	आर्द्रा.	14	59	21	38	4	18	10	59
10/11	पुन.	17	41	0	24	7	7	13	51
11/12	पुष्य	20	35	3	20	10	5	16	50
12/13	आश्ले.	23	35	6	20	13	5	19	49
14	मघा.	2	32	9	15	15	56	22	36
15/16	पू.फा.	5	15	11	53	18	28	1	2
16/17	उ.फा.	7	34	14	4	20	31	2	55
17/18	हस्त	9	18	15	37	21	53	4	7
18/19	चित्रा	10	18	16	26	22	30	4	32
19/20	स्वाती	10	30	16	26	22	18	4	8
20/21	विशा.	9	54	15	38	21	19	2	57
21/22	अनु.	8	33	14	6	19	37	1	6
22	ज्येष्ठा	6	32	11	57	17	20	22	42
23	मूल	4	2	9	21	14	39	19	56
24	पू.षा.	1	13	6	28	11	44	16	59
24/25	उ.षा.	22	15	3	31	8	47	14	3
25/26	श्रव.	19	21	0	39	5	59	11	19
26/27	धनि .	16	41	22	5	3	30	8	57
27/28	शत .	14	27	19	`58	1	32	7	7
28/29	पू.भा.	12	45	18	26	0	9	5	55
29/30	उ.भा.	11	43	17	34	23	28	5	25
30/31	रेव.	11	24	17	26	23	30	5	37

चन्द्रमा का नक्षत्रचरणों में प्रवेशकाल (भा. स्टैं. टा.)

चन्द्र नक्षत्रचरण		1		2		3		4	
जनवरी 2023 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
31/1	अश्वि.	11	46	17	58	0	12	6	29
1/2	भर.	12	48	19	9	1	32	7	56
2/3	कृत्ति.	14	23	20	51	3	21	9	53
3/4	रोहि.	16	25	22	59	5	34	12	11
4/5	मृग.	18	48	1	26	8	5	14	45
5/6	आर्द्रा.	21	25	4	7	10	48	17	30
7	पुन.	0	13	6	56	13	40	20	23
8	पुष्य	3	7	9	52	16	36	23	20
9/10	आश्ले.	6	5	12	49	19	33	2	17
10/11	मघा.	9	1	15	44	22	26	5	8
11/12	पू.फा.	11	50	18	30	1	9	7	47
12/13	उ.फा.	14	24	20	59	3	33	10	5
13/14	हस्त	16	35	23	3	5	29	11	52
14/15	चित्रा	18	13	0	32	6	48	13	1
15/16	स्वाती	19	11	1	18	7	23	13	24
16/17	विशा.	19	23	1	18	7	10	12	59
17/18	अनु.	18	46	0	29	6	10	11	47
18/19	ज्येष्ठा	17	22	22	55	4	24	9	52
19/20	मूल	15	17	20	41	2	2	7	22
20/21	पू.षा.	12	40	17	56	23	12	4	26
21/22	उ.षा.	9	40	14	52	20	5	1	17
22	श्रव.	6	29	11	41	16	54	22	7
23	धनि .	3	21	8	35	13	51	19	8
24	शत .	0	26	5	46	11	8	16	32
24/25	पू.भा.	21	58	3	26	8	56	14	29
25/26	उ.भा.	20	5	1	43	7	25	13	9
26/27	रेव.	18	56	0	47	6	40	12	37
27/28	अश्वि.	18	36	0	39	6	45	12	54
28/29	भर.	19	5	1	20	7	38	13	58
29/30	कृत्ति.	20	20	2	46	9	13	15	43
30/31	रोहि.	22	15	4	48	11	24	18	0

चन्द्र नक्षत्रचरण		1		2		3		4	
फरवरी 2023 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
1	मृग.	0	39	7	18	13	59	20	40
2	आर्द्रा.	3	23	10	6	16	49	23	33
3/4	पुन.	6	17	13	2	19	47	2	31
4/5	पुष्य	9	16	16	0	22	44	5	28
5/6	आश्ले.	12	12	18	55	1	38	8	21
6/7	मघा.	15	3	21	44	4	25	11	5
7/8	पू.फा.	17	44	0	23	7	1	13	38
8/9	उ.फा.	20	14	2	49	9	23	15	55
9/10	हस्त	22	27	4	57	11	25	17	52
11	चित्रा	0	17	6	41	13	2	19	22
12	स्वाती	1	39	7	55	14	8	20	18
13	विशा.	2	27	8	33	14	36	20	37
14	अनु.	2	35	8	30	14	23	20	13
15	ज्येष्ठा	2	1	7	46	13	28	19	8
16	मूल	0	46	6	21	11	53	17	24
16/17	पू.षा.	22	52	4	19	9	43	15	6
17/18	उ.षा.	20	28	1	48	7	7	12	24
18/19	श्रव.	17	41	22	58	4	13	9	28
19/20	धनि .	14	43	19	59	1	14	6	29
20/21	शत .	11	46	17	3	22	21	3	40
21/22	पू.भा.	9	0	14	22	19	45	1	11
22	उ.भा.	6	38	12	7	17	39	23	13
23	रेव.	4	49	10	29	16	11	21	56
24	अश्वि.	3	44	9	35	15	29	21	26
25	भर.	3	26	9	29	15	36	21	46
26	कृत्ति.	3	58	10	14	16	33	22	54
27/28	रोहि.	5	18	11	45	18	14	0	45

चन्द्र नक्षत्रचरण		1		2		3		4	
मार्च 2023 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
28/1	मृग.	7	19	13	55	20	32	3	11
1/2	आर्द्रा.	9	51	16	33	23	15	5	59
2/3	पुन.	12	43	19	27	2	12	8	58
3/4	पुष्य	15	43	22	28	5	13	11	57
4/5	आश्ले.	18	41	1	24	8	7	14	49
5/6	मघा.	21	30	4	10	10	49	17	27
7	पू.फा.	0	4	6	40	13	15	19	49
8	उ.फा.	2	21	8	53	15	23	21	52
9	हस्त	4	19	10	46	17	11	23	34
10/11	चित्रा	5	56	12	17	18	36	0	54
11/12	स्वाती	7	10	13	25	19	38	1	50
12/13	विशा.	7	59	14	7	20	14	2	18
13/14	अनु.	8	21	14	22	20	20	2	17
14/15	ज्येष्ठा	8	12	14	5	19	57	1	46
15/16	मूल	7	33	13	18	19	2	0	44
16	पू.षा.	6	24	12	2	17	38	23	13
17	उ.षा.	4	46	10	18	15	48	21	18
18	श्रव.	2	46	8	13	13	39	19	4
19	धनि .	0	29	5	53	11	17	16	40
19/20	शत .	22	4	3	27	8	50	14	14
20/21	पू.भा.	19	39	1	4	6	30	11	57
21/22	उ.भा.	17	25	22	55	4	25	9	58
22/23	रेव.	15	32	21	8	2	46	8	26
23/24	अश्वि.	14	8	19	53	1	40	7	29
24/25	भर.	13	22	19	17	1	14	7	15
25/26	कृत्ति.	13	18	19	25	1	34	7	46
26/27	रोहि.	14	0	20	18	2	38	9	1
27/28	मृग.	15	27	21	54	4	25	10	57
28/29	आर्द्रा.	17	32	0	8	6	46	13	25
29/30	पुन.	20	6	2	48	9	31	16	15
30/31	पुष्य	22	59	5	43	12	28	18	12

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा.स्टैं.टा.), 1 जनवरी 2022 ई. को अयनांश 24° 9' 37"

जनवरी	साम्पातिक काल 0.0.h GMT	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	मध्यम राहु	स्पष्ट राहु	सूर्य क्रां.	चन्द्र क्रां.	चन्द्र शर
	घं. मि. से.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	अं. क.
1	6 42 31	8 16 22 9	7 21 19 21	7 18 56 20	9 4 1 24	10 6 23 10	8 29 8 4	9 17 44 33	1 5 22 27	1 7 3 13	-23 1	-23 55	-1 17
2	6 46 28	8 17 23 19	8 6 27 7	7 19 39 0	9 5 25 44	10 6 34 56	8 28 38 3	9 17 51 3	1 5 19 16	1 7 0 22	-22 56	-25 59	-2 33
3	6 50 25	8 18 24 29	8 21 36 38	7 20 21 43	9 6 47 38	10 6 46 48	8 28 6 25	9 17 57 36	1 5 16 5	1 6 55 35	-22 51	-26 7	-3 38
4	6 54 21	8 19 25 40	9 6 37 54	7 21 4 27	9 8 6 36	10 6 58 45	8 27 33 23	9 18 4 11	1 5 12 54	1 6 49 16	-22 45	-24 20	-4 28
5	6 58 18	8 20 26 50	9 21 21 39	7 21 47 14	9 9 22 9	10 7 10 47	8 26 59 8	9 18 10 49	1 5 9 44	1 6 42 12	-22 38	-20 55	-4 58
6	7 2 14	8 21 28 1	10 5 40 51	7 22 30 3	9 10 33 41	10 7 22 55	8 26 23 54	9 18 17 28	1 5 6 33	1 6 35 17	-22 31	-16 21	-5 9
7	7 6 11	8 22 29 11	10 19 31 36	7 23 12 54	9 11 40 31	10 7 35 7	8 25 47 56	9 18 24 10	1 5 3 22	1 6 29 25	-22 24	-11 3	-5 1
8	7 10 7	8 23 30 20	11 2 53 7	7 23 55 47	9 12 41 56	10 7 47 25	8 25 11 27	9 18 30 53	1 5 0 11	1 6 25 13	-22 16	-5 25	-4 37
9	7 14 4	8 24 31 30	11 15 47 18	7 24 38 43	9 13 37 8	10 7 59 47	8 24 34 42	9 18 37 39	1 4 57 0	1 6 23 0	-22 8	0 16	-3 59
10	7 18 0	8 25 32 39	11 28 17 55	7 25 21 40	9 14 25 15	10 8 12 15	8 23 57 58	9 18 44 26	1 4 53 49	1 6 22 35	-21 59	5 47	-3 11
11	7 21 57	8 26 33 47	0 10 29 48	7 26 4 40	9 15 5 25	10 8 24 47	8 23 21 29	9 18 51 16	1 4 50 39	1 6 23 27	-21 50	10 57	-2 15
12	7 25 54	8 27 34 55	0 22 28 9	7 26 47 42	9 15 36 42	10 8 37 23	8 22 45 31	9 18 58 6	1 4 47 28	1 6 24 46	-21 41	15 37	-1 15
13	7 29 50	8 28 36 2	1 4 18 10	7 27 30 46	9 15 58 15	10 8 50 4	8 22 10 19	9 19 4 59	1 4 44 17	1 6 25 36	-21 31	19 38	-0 11
14	7 33 47	8 29 37 8	1 16 4 38	7 28 13 52	9 16 9 15	10 9 2 49	8 21 36 7	9 19 11 53	1 4 41 6	1 6 25 2	-21 21	22 50	0 52
15	7 37 43	9 0 38 14	1 27 51 45	7 28 57 0	9 16 9 4	10 9 15 38	8 21 3 9	9 19 18 49	1 4 37 55	1 6 22 21	-21 10	25 4	1 53
16	7 41 40	9 1 39 19	2 9 42 55	7 29 40 11	9 15 57 16	10 9 28 32	8 20 31 37	9 19 25 46	1 4 34 45	1 6 17 6	-20 59	26 12	2 49
17	7 45 36	9 2 40 24	2 21 40 44	8 0 23 24	9 15 33 41	10 9 41 29	8 20 1 43	9 19 32 44	1 4 31 34	1 6 9 21	-20 47	26 6	3 38
18	7 49 33	9 3 41 29	3 3 47 2	8 1 6 39	9 14 58 33	10 9 54 31	8 19 33 39	9 19 39 44	1 4 28 23	1 5 59 22	-20 35	24 47	4 18
19	7 53 29	9 4 42 32	3 16 2 57	8 1 49 56	9 14 12 29	10 10 7 36	8 19 7 33	9 19 46 45	1 4 25 12	1 5 47 58	-20 23	22 16	4 46
20	7 57 26	9 5 43 36	3 28 29 11	8 2 33 16	9 13 16 33	10 10 20 45	8 18 43 34	9 19 53 47	1 4 22 1	1 5 36 9	-20 10	18 42	5 1
21	8 1 23	9 6 44 38	4 11 6 9	8 3 16 38	9 12 12 18	10 10 33 58	8 18 21 48	9 20 0 50	1 4 13 51	1 5 25 4	-19 57	14 16	5 2
22	8 5 19	9 7 45 41	4 23 54 23	8 4 0 2	9 11 1 35	10 10 47 15	8 18 2 22	9 20 7 55	1 4 15 40	1 5 15 45	-19 44	9 8	4 48
23	8 9 16	9 8 46 43	5 6 54 38	8 4 43 29	9 9 46 38	10 11 0 35	8 17 45 19	9 20 15 0	1 4 12 29	1 5 8 57	-19 30	3 32	4 19
24	8 13 12	9 9 47 44	5 20 8 2	8 5 26 57	9 8 29 45	10 11 13 59	8 17 30 43	9 20 22 6	1 4 9 18	1 5 4 54	-19 16	-2 20	3 35
25	8 17 9	9 10 48 45	6 3 36 2	8 6 10 29	9 7 13 17	10 11 27 25	8 17 18 36	9 20 29 14	1 4 6 7	1 5 3 19	-19 1	-8 12	2 39
26	8 21 5	9 11 49 46	6 17 20 6	8 6 54 2	9 5 59 26	10 11 40 56	8 17 8 59	9 20 36 22	1 4 2 57	1 5 3 21	-18 46	-13 48	1 33
27	8 25 2	9 12 50 46	7 1 21 21	8 7 37 38	9 4 50 6	10 11 54 29	8 17 1 53	9 20 43 30	1 3 59 46	1 5 3 48	-18 31	-18 49	0 20
28	8 28 58	9 13 51 45	7 15 39 50	8 8 21 16	9 3 46 52	10 12 8 6	8 16 57 16	9 20 50 39	1 3 56 35	1 5 3 21	-18 16	-22 51	-0 56
29	8 32 55	9 14 52 44	8 0 13 54	8 9 4 56	9 2 50 56	10 12 21 46	8 16 55 8	9 20 57 49	1 3 53 24	1 5 0 52	-18 0	-25 29	-2 10
30	8 36 52	9 15 53 42	8 14 59 33	8 9 48 38	9 2 3 7	10 12 35 28	8 16 55 28	9 21 5 0	1 3 50 13	1 4 55 38	-17 43	-26 22	-3 15
31	8 40 48	9 16 54 39	8 29 50 25	8 10 32 22	9 1 23 52	10 12 49 14	8 16 58 11	9 21 12 10	1 3 47 3	1 4 47 35	-17 27	-25 22	-4 8

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा.स्टैं.टा.), 1 फरवरी 2022 ई. को अयनांश 24° 9' 43"

फरवरी	साम्पातिक काल 0.0.h GMT	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	मध्यम राहु	स्पष्ट राहु	सूर्य क्रां.	चन्द्र क्रां.	चन्द्र शर
	घं. मि. से.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	अं. क.
1	8 44 45	9 17 55 35	9 14 38 27	8 11 16 8	9 0 53 23	10 13 3 2	8 17 3 16	9 21 19 22	1 3 43 52	1 4 37 12	-17 10	-22 37	-4 44
2	8 48 41	9 18 56 31	9 29 15 1	8 11 59 57	9 0 31 36	10 13 16 53	8 17 10 40	9 21 26 33	1 3 40 41	1 4 25 31	-16 53	-18 26	-5 0
3	8 52 38	9 19 57 25	10 13 32 31	8 12 43 47	9 0 18 16	10 13 30 46	8 17 20 19	9 21 33 45	1 3 37 30	1 4 13 48	-16 35	-13 16	-4 57
4	8 56 34	9 20 58 18	10 27 25 32	8 13 27 39	9 0 13 2	10 13 44 42	8 17 32 9	9 21 40 56	1 3 34 20	1 4 3 17	-16 18	-7 35	-4 37
5	9 0 31	9 21 59 10	11 10 51 28	8 14 11 33	9 0 15 26	10 13 58 40	8 17 46 8	9 21 48 8	1 3 31 9	1 3 54 55	-16 0	-1 42	-4 2
6	9 4 27	9 23 0 0	11 23 50 35	8 14 55 29	9 0 25 0	10 14 12 41	8 18 2 10	9 21 55 20	1 3 27 58	1 3 49 12	-15 41	4 4	-3 15
7	9 8 24	9 24 0 49	0 6 25 28	8 15 39 27	9 0 41 13	10 14 26 44	8 18 20 13	9 22 2 32	1 3 24 47	1 3 46 3	-15 23	9 30	-2 19
8	9 12 21	9 25 1 37	0 18 40 19	8 16 23 27	9 1 3 36	10 14 40 48	8 18 40 12	9 22 9 43	1 3 21 36	1 3 44 54	-15 4	14 26	-1 19
9	9 16 17	9 26 2 23	1 0 40 20	8 17 7 28	9 1 31 38	10 14 54 55	8 19 2 4	9 22 16 55	1 3 18 26	1 3 44 49	-14 45	18 43	-0 16
10	9 20 14	9 27 3 7	1 12 31 8	8 17 51 32	9 2 4 52	10 15 9 4	8 19 25 45	9 22 24 6	1 3 15 15	1 3 44 38	-14 26	22 11	0 46
11	9 24 10	9 28 3 50	1 24 18 16	8 18 35 37	9 2 42 52	10 15 23 14	8 19 51 11	9 22 31 16	1 3 12 4	1 3 43 13	-14 6	24 42	1 47
12	9 28 7	9 29 4 31	2 6 6 54	8 19 19 44	9 3 25 15	10 15 37 27	8 20 18 18	9 22 38 26	1 3 8 53	1 3 39 37	-14 46	26 9	2 42
13	9 32 3	10 0 5 11	2 18 1 32	8 20 3 54	9 4 11 38	10 15 51 40	8 20 47 4	9 22 45 36	1 3 5 43	1 3 33 16	-13 26	26 23	3 31
14	9 36 0	10 1 5 49	3 0 5 46	8 20 48 5	9 5 1 41	10 16 5 56	8 21 17 24	9 22 52 45	1 3 2 32	1 3 23 59	-13 6	25 23	4 11
15	9 39 56	10 2 6 26	3 12 22 9	8 21 32 18	9 5 55 7	10 16 20 13	8 21 49 15	9 22 59 53	1 2 59 21	1 3 12 9	-12 46	23 10	4 41
16	9 43 53	10 3 7 1	3 24 52 7	8 22 16 32	9 6 51 39	10 16 34 31	8 22 22 34	9 23 7 1	1 2 56 10	1 2 58 34	-12 25	19 49	4 57
17	9 47 50	10 4 7 35	4 7 36 1	8 23 0 49	9 7 51 3	10 16 48 51	8 22 57 17	9 23 14 8	1 2 52 59	1 2 44 21	-12 4	15 29	4 59
18	9 51 46	10 5 8 7	4 20 33 18	8 23 45 8	9 8 53 5	10 17 3 12	8 23 33 21	9 23 21 14	1 2 49 49	1 2 30 50	-11 43	10 24	4 45
19	9 55 43	10 6 8 38	5 3 42 47	8 24 29 29	9 9 57 35	10 17 17 34	8 24 10 43	9 23 28 19	1 2 46 38	1 2 19 13	-11 22	4 46	4 17
20	9 59 39	10 7 9 7	5 17 3 11	8 25 13 51	9 11 4 22	10 17 31 57	8 24 49 21	9 23 35 24	1 2 43 27	1 2 10 24	-11 0	-1 10	3 34
21	10 3 36	10 8 9 35	6 0 33 23	8 25 58 16	9 12 13 17	10 17 46 22	8 25 29 10	9 23 42 27	1 2 40 16	1 2 4 45	-10 39	-7 7	2 38
22	10 7 32	10 9 10 2	6 14 12 45	8 26 42 43	9 13 24 12	10 18 0 47	8 26 10 8	9 23 49 29	1 2 37 6	1 2 2 1	-10 17	-12 50	1 33
23	10 11 29	10 10 10 27	6 28 1 7	8 27 27 11	9 14 36 59	10 18 15 13	8 26 52 13	9 23 56 31	1 2 33 55	1 2 1 21	-9 55	-17 58	0 21
24	10 15 25	10 11 10 51	7 11 58 35	8 28 11 42	9 15 51 32	10 18 29 40	8 27 35 22	9 24 3 30	1 2 30 44	1 2 1 29	-9 33	-22 12	-0 52
25	10 19 22	10 12 11 14	7 26 5 6	8 28 56 14	9 17 7 46	10 18 44 8	8 28 19 31	9 24 10 29	1 2 27 33	1 2 1 0	-9 11	-25 8	-2 4
26	10 23 19	10 13 11 35	8 10 19 57	8 29 40 48	9 18 25 35	10 18 58 37	8 29 4 39	9 24 17 26	1 2 24 23	1 1 58 40	-8 49	-26 29	-3 8
27	10 27 15	10 14 11 55	8 24 41 7	9 0 25 23	9 19 44 55	10 19 13 6	8 29 50 43	9 24 24 22	1 2 21 12	1 1 53 40	-8 26	-26 5	-4 1
28	10 31 12	10 15 12 13	9 9 5 4	9 1 10 1	9 21 5 42	10 19 27 36	9 0 37 40	9 24 31 17	1 2 18 1	1 1 45 48	-8 3	-23 56	-4 38

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा.स्टैं.टा.), 1 मार्च 2022 ई. को अयनांश 24° 9' 47''

मार्च	साम्पातिक काल 0.0.h GMT	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	मध्यम राहु	स्पष्ट राहु	सूर्य क्रां.	चन्द्र क्रां.	चन्द्र शर
	घं. मि. से.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	अं. क.
1	10 35 8	10 16 12 30	9 23 26 46	9 1 54 40	9 22 27 53	10 19 42 6	9 1 25 29	9 24 38 9	1 2 14 50	1 1 35 31	-7 41	-20 17	-4 58
2	10 39 5	10 17 12 45	10 7 40 22	9 2 39 20	9 23 51 24	10 19 56 37	9 2 14 7	9 24 45 1	1 2 11 40	1 1 23 47	-7 18	-15 28	-4 59
3	10 43 1	10 18 12 59	10 21 40 1	9 3 24 2	9 25 16 13	10 20 11 8	9 3 3 33	9 24 51 50	1 2 8 29	1 1 11 51	-6 55	-9 55	-4 42
4	10 46 58	10 19 13 10	11 5 20 54	9 4 8 46	9 26 42 18	10 20 25 39	9 3 53 43	9 24 58 38	1 2 5 18	1 1 0 57	-6 32	-4 1	-4 9
5	10 50 54	10 20 13 20	11 18 40 2	9 4 53 31	9 28 9 38	10 20 40 10	9 4 44 37	9 25 5 24	1 2 2 7	1 0 52 7	-6 9	1 57	-3 23
6	10 54 51	10 21 13 28	0 1 36 31	9 5 38 17	9 29 38 11	10 20 54 42	9 5 36 13	9 25 12 8	1 1 58 57	1 0 45 52	-5 46	7 40	-2 28
7	10 58 48	10 22 13 34	0 14 11 33	9 6 23 5	10 1 7 55	10 21 9 13	9 6 28 29	9 25 18 50	1 1 55 46	1 0 42 17	-5 22	12 55	-1 27
8	11 2 44	10 23 13 37	1 26 28 1	9 7 7 54	10 2 38 51	10 21 23 44	9 7 21 23	9 25 25 29	1 1 52 35	1 0 40 56	-4 59	17 33	-0 22
9	11 6 41	10 24 13 39	1 8 30 7	9 7 52 44	10 4 10 57	10 21 38 14	9 8 14 54	9 25 32 7	1 1 49 25	1 0 40 59	-4 35	21 22	0 42
10	11 10 37	10 25 13 38	2 20 22 51	9 8 37 35	10 5 44 13	10 21 52 45	9 9 9 1	9 25 38 43	1 1 46 14	1 0 41 25	-4 12	24 15	1 43
11	11 14 34	10 26 13 36	2 2 11 39	9 9 22 28	10 7 18 39	10 22 7 15	9 10 3 43	9 25 45 16	1 1 43 3	1 0 41 14	-3 48	26 3	2 40
12	11 18 30	10 27 13 31	2 14 1 58	9 10 7 23	10 8 54 15	10 22 21 44	9 10 58 57	9 25 51 47	1 1 39 52	1 0 39 31	-3 25	26 41	3 30
13	11 22 27	10 28 13 23	2 25 58 58	9 10 52 18	10 10 31 0	10 22 36 13	9 11 54 44	9 25 58 16	1 1 36 42	1 0 35 40	-3 1	26 4	4 11
14	11 26 23	10 29 13 14	3 8 7 10	9 11 37 15	10 12 8 56	10 22 50 41	9 12 51 1	9 26 4 42	1 1 33 31	1 0 29 27	-2 38	24 13	4 42
15	11 30 20	11 0 13 3	3 20 30 10	9 12 22 13	10 13 48 2	10 23 5 9	9 13 47 48	9 26 11 6	1 1 30 20	1 0 21 3	-2 14	21 12	5 0
16	11 34 17	11 1 12 49	4 3 10 25	9 13 7 12	10 15 28 20	10 23 19 36	9 14 45 4	9 26 17 27	1 1 27 9	1 0 11 6	-1 50	17 9	5 4
17	11 38 13	11 2 12 33	4 16 8 56	9 13 52 13	10 17 9 49	10 23 34 2	9 15 42 48	9 26 23 45	1 1 23 59	1 0 0 28	-1 27	12 13	4 52
18	11 42 10	11 3 12 16	4 29 25 17	9 14 37 14	10 18 52 31	10 23 48 27	9 16 40 59	9 26 30 1	1 1 20 48	0 29 50 14	-1 3	6 36	4 25
19	11 46 6	11 4 11 56	5 12 57 39	9 15 22 18	10 20 36 27	10 24 2 51	9 17 39 36	9 26 36 14	1 1 17 37	0 29 41 25	-0 39	0 35	3 43
20	11 50 3	11 5 11 34	5 26 43 14	9 16 7 22	10 22 21 36	10 24 17 14	9 18 38 38	9 26 42 25	1 1 14 26	0 29 34 49	-0 15	-5 35	2 46
21	11 53 59	11 6 11 11	6 10 38 47	9 16 52 28	10 24 8 0	10 24 31 36	9 19 38 4	9 26 48 32	1 1 11 16	0 29 30 47	0 8	-11 34	1 39
22	11 57 56	11 7 10 45	6 24 41 8	9 17 37 35	10 25 55 40	10 24 45 57	9 20 37 54	9 26 54 37	1 1 8 5	0 29 29 12	0 32	-17 1	0 26
23	12 1 52	11 8 10 18	7 8 47 33	9 18 22 43	10 27 44 35	10 25 0 17	9 21 38 6	9 27 0 38	1 1 4 54	0 29 29 26	0 56	-21 34	-0 50
24	12 5 49	11 9 9 49	7 22 55 57	9 19 7 53	10 29 34 48	10 25 14 36	9 22 38 40	9 27 6 37	1 1 1 43	0 29 30 31	1 19	-24 51	-2 3
25	12 9 46	11 10 9 19	8 7 4 44	9 19 53 3	11 1 26 17	10 25 28 53	9 23 39 35	9 27 12 33	1 0 58 33	0 29 31 21	1 43	-26 34	-3 8
26	12 13 42	11 11 8 47	8 21 12 36	9 20 38 15	11 3 19 4	10 25 43 8	9 24 40 50	9 27 18 25	1 0 55 22	0 29 30 58	2 7	-26 34	-4 2
27	12 17 39	11 12 8 12	9 5 18 4	9 21 23 27	11 5 13 8	10 25 57 23	9 25 42 25	9 27 24 14	1 0 52 11	0 29 28 42	2 30	24 51	-4 41
28	12 21 35	11 13 7 37	9 19 19 19	9 22 8 41	11 7 8 29	10 26 11 35	9 26 44 18	9 27 30 0	1 0 49 1	0 29 24 21	2 54	-21 37	-5 3
29	12 25 32	11 14 6 59	10 3 13 59	9 22 53 55	11 9 5 5	10 26 25 46	9 27 46 30	9 27 35 43	1 0 45 50	0 29 18 13	3 17	-17 11	-5 7
30	12 29 28	11 15 6 19	10 16 59 18	9 23 39 10	11 11 2 55	10 26 39 55	9 28 48 58	9 27 41 22	1 0 42 39	0 29 10 57	3 40	-11 54	-4 54
31	12 33 25	11 16 5 38	11 0 32 22	9 24 24 26	11 13 1 57	10 26 54 3	9 29 51 44	9 27 46 58	1 0 39 28	0 29 3 27	4 4	-6 8	-4 23

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा.स्टैं.टा.), 1 अप्रैल 2022 ई. को अयनांश 24° 9' 50"

तारीख	साम्पातिक काल 0.0.h GMT	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	मध्यम राहु	स्पष्ट राहु	सूर्य क्रां.	चन्द्र क्रां.	चन्द्र शर
	घं. मि. से.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	अं. क.
1	12 37 21	11 17 4 55	11 13 50 37	9 25 9 43	11 15 2 7	10 27 8 8	10 0 54 45	9 27 52 30	1 0 36 18	0 28 56 38	4 27	-0 11	-3 39
2	12 41 18	11 18 4 9	11 26 52 17	9 25 55 0	11 17 3 21	10 27 22 12	10 1 58 2	9 27 57 58	1 0 33 7	0 28 51 12	4 50	5 40	-2 44
3	12 45 15	11 19 3 22	0 9 36 44	9 26 40 17	11 19 5 33	10 27 36 13	10 3 1 33	9 28 3 23	1 0 29 56	0 28 47 36	5 13	11 10	-1 42
4	12 49 11	11 20 2 32	0 22 4 33	9 27 25 36	11 21 8 37	10 27 50 12	10 4 5 19	9 28 8 44	1 0 26 45	0 28 45 54	5 36	16 7	-0 36
5	12 53 8	11 21 1 41	1 4 17 34	9 28 10 54	11 23 12 24	10 28 4 9	10 5 9 19	9 28 14 1	1 0 23 35	0 28 45 52	5 59	20 18	0 30
6	12 57 4	11 22 0 47	1 16 18 44	9 28 56 13	11 25 16 44	10 28 18 3	10 6 13 32	9 28 19 15	1 0 20 24	0 28 47 0	6 22	23 34	1 34
7	13 1 1	11 22 59 50	1 28 11 52	9 29 41 32	11 27 21 27	10 28 31 55	10 7 17 58	9 28 24 24	1 0 17 13	0 28 48 40	6 44	25 47	2 34
8	13 4 57	11 23 58 52	2 10 1 30	10 0 26 52	11 29 26 18	10 28 45 45	10 8 22 36	9 28 29 30	1 0 14 2	0 28 50 13	7 7	26 48	3 26
9	13 8 54	11 24 57 51	2 21 52 32	10 1 12 12	0 1 31 4	10 28 59 32	10 9 27 27	9 28 34 31	1 0 10 52	0 28 51 2	7 29	26 37	4 10
10	13 12 50	11 25 56 48	3 3 50 0	10 1 57 32	0 3 35 26	10 29 13 16	10 10 32 29	9 28 39 28	1 0 7 41	0 28 50 42	7 52	25 11	4 44
11	13 16 47	11 26 55 42	3 15 58 49	10 2 42 52	0 5 39 7	10 29 26 58	10 11 37 44	9 28 44 22	1 0 4 30	0 28 49 2	8 14	22 35	5 5
12	13 20 44	11 27 54 35	3 28 23 22	10 3 28 13	0 7 41 48	10 29 40 36	10 12 43 9	9 28 49 11	1 0 1 19	0 28 46 4	8 36	18 55	5 13
13	13 24 40	11 28 53 25	4 11 7 14	10 4 13 34	0 9 43 7	10 29 54 12	10 13 48 45	9 28 53 56	0 29 58 9	0 28 42 7	8 58	14 18	5 5
14	13 28 37	11 29 52 12	4 24 12 43	10 4 58 55	0 11 42 45	11 0 7 45	10 14 54 32	9 28 58 36	0 29 54 58	0 28 37 39	9 19	8 56	4 42
15	13 32 33	0 0 50 58	5 7 40 32	10 5 44 17	0 13 40 19	11 0 21 15	10 16 0 29	9 29 3 13	0 29 51 47	0 28 33 16	9 41	2 59	4 3
16	13 36 30	0 1 49 42	5 21 29 34	10 6 29 38	0 15 35 30	11 0 34 42	10 17 6 35	9 29 7 44	0 29 48 36	0 28 29 31	10 2	-3 15	3 9
17	13 40 26	0 2 48 24	6 5 36 52	10 7 15 0	0 17 27 58	11 0 48 5	10 18 12 54	9 29 12 12	0 29 45 26	0 28 26 53	10 24	-9 29	2 2
18	13 44 23	0 3 47 3	6 19 58 1	10 8 0 22	0 19 17 24	11 1 1 26	10 19 19 21	9 29 16 35	0 29 42 15	0 28 25 32	10 45	-15 20	0 46
19	13 48 19	0 4 45 41	7 4 27 39	10 8 45 44	0 21 3 30	11 1 14 43	10 20 25 57	9 29 20 54	0 29 39 4	0 28 25 26	11 6	-20 24	-0 33
20	13 52 16	0 5 44 17	7 19 0 12	10 9 31 6	0 22 46 1	11 1 27 57	10 21 32 43	9 29 25 8	0 29 35 53	0 28 26 17	11 26	-24 13	-1 51
21	13 56 13	0 6 42 52	8 3 30 32	10 10 16 29	0 24 24 43	11 1 41 8	10 22 39 37	9 29 29 17	0 29 32 43	0 28 27 37	11 47	-26 26	-3 1
22	14 0 9	0 7 41 24	8 17 54 22	10 11 1 51	0 25 59 24	11 1 54 15	10 23 46 40	9 29 33 22	0 29 29 32	0 28 28 54	12 7	-26 52	-4 0
23	14 4 6	0 8 39 55	9 2 8 34	10 11 47 13	0 27 29 51	11 2 7 18	10 24 53 51	9 29 37 22	0 29 26 21	0 28 29 40	12 27	-25 31	-4 43
24	14 8 2	0 9 38 25	9 16 11 2	10 12 32 35	0 28 55 57	11 2 20 18	10 26 1 11	9 29 41 17	0 29 23 10	0 28 29 38	12 47	-22 35	-5 8
25	14 11 59	0 10 36 53	10 0 0 30	10 13 17 57	1 0 17 31	11 2 33 14	10 27 8 38	9 29 45 7	0 29 20 0	0 28 28 44	13 7	-18 25	-5 15
26	14 15 55	0 11 35 19	10 13 36 20	10 14 3 19	1 1 34 28	11 2 46 6	10 28 16 13	9 29 48 53	0 29 16 49	0 28 27 5	13 26	-13 22	-5 5
27	14 19 52	0 12 33 44	10 26 58 12	10 14 48 40	1 2 46 39	11 2 58 54	10 29 23 55	9 29 52 33	0 29 13 38	0 28 24 59	13 46	-7 46	-4 37
28	14 23 48	0 13 32 7	11 10 6 5	10 15 54 1	1 3 54 0	11 3 11 39	11 0 31 44	9 29 56 9	0 29 10 27	0 28 22 50	14 5	-1 55	-3 56
29	14 27 45	0 14 30 28	11 23 0 5	10 16 19 21	1 4 56 26	11 3 24 19	11 1 39 39	9 29 59 39	0 29 7 17	0 28 20 56	14 23	3 55	-3 3
30	14 31 42	0 15 28 48	0 5 40 30	10 17 4 40	1 5 53 50	11 3 36 55	11 2 47 41	10 0 3 5	0 29 4 6	0 28 19 34	14 42	9 31	-2 2

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टै. टा.), 1 मई 2022 ई. को अयनांश 24° 9' 53" 177

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.), 1 मई 2022 ई. को अयनांश 24° 9' 53"

ता.	साम्पातिक काल 0.0 h GMT			सूर्य				चन्द्र				मंगल				बुध				गुरु				शुक्र				शनि				मध्यम राहु				स्पष्ट राहु				सूर्य क्रां		चन्द्र क्रां		चन्द्रशर	
	घं.	मि.	से.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.
1	14	35	38	0	16	27	6	0	18	7	59	10	17	49	59	1	6	46	10	11	3	49	26	11	3	55	50	10	0	6	25	0	29	0	55	0	28	18	50	15	0	14	38	-0	56
2	14	39	35	0	17	25	22	1	0	23	33	10	18	35	16	1	7	33	20	11	4	1	53	11	5	4	4	10	0	9	40	0	28	57	44	0	28	18	45	15	19	19	6	0	12
3	14	43	31	0	18	23	37	1	12	28	47	10	19	20	33	1	8	15	19	11	4	14	16	11	6	12	25	10	0	12	50	0	28	54	33	0	28	19	10	15	36	22	42	1	18
4	14	47	28	0	19	21	49	1	24	25	48	10	20	5	49	1	8	52	1	11	4	26	34	11	7	20	50	10	0	15	55	0	28	51	23	0	28	19	55	15	54	25	16	2	20
5	14	51	24	0	20	20	0	2	6	17	22	10	20	51	4	1	9	23	26	11	4	38	48	11	8	29	22	10	0	18	54	0	28	48	12	0	28	20	47	16	11	26	42	3	15
6	14	55	21	0	21	18	9	2	18	6	48	10	21	36	18	1	9	49	33	11	4	50	56	11	9	37	58	10	0	21	48	0	28	45	1	0	28	21	36	16	28	26	54	4	3
7	14	59	17	0	22	16	16	2	29	57	56	10	22	21	30	1	10	10	19	11	5	3	0	11	10	46	40	10	0	24	36	0	28	41	50	0	28	22	12	16	45	25	52	4	39
8	15	3	14	0	23	14	21	3	11	55	2	10	23	6	41	1	10	25	47	11	5	14	59	11	11	55	27	10	0	27	20	0	28	38	40	0	28	22	33	17	2	23	40	5	4
9	15	7	11	0	24	12	24	3	24	2	35	10	23	51	52	1	10	36	0	11	5	26	53	11	13	4	19	10	0	29	57	0	28	35	29	0	28	22	38	17	18	20	23	5	16
10	15	11	7	0	25	10	25	4	6	25	7	10	24	37	1	1	10	41	1	11	5	38	42	11	14	13	16	10	0	32	30	0	28	32	18	0	28	22	31	17	34	16	9	5	14
11	15	15	4	0	26	8	24	4	19	6	51	10	25	22	8	1	10	40	57	11	5	50	25	11	15	22	17	10	0	34	56	0	28	29	7	0	28	22	19	17	49	11	8	4	57
12	15	19	0	0	27	6	21	5	2	11	14	10	26	7	15	1	10	35	59	11	6	2	4	11	16	31	24	10	0	37	18	0	28	25	56	0	28	22	8	18	5	5	29	4	24
13	15	22	57	0	28	4	16	5	15	40	31	10	26	52	20	1	10	26	18	11	6	13	37	11	17	40	34	10	0	39	33	0	28	22	46	0	28	22	2	18	20	-0	36	3	36
14	15	26	53	0	29	2	10	5	29	35	12	10	27	37	23	1	10	12	10	11	6	25	4	11	18	49	50	10	0	41	44	0	28	19	35	0	28	22	3	18	34	-6	51	2	33
15	15	30	50	1	0	0	2	6	13	53	35	10	28	22	26	1	9	53	53	11	6	36	27	11	19	59	10	10	0	43	48	0	28	16	24	0	28	22	8	18	49	-12	56	1	20
16	15	34	46	1	0	57	53	6	28	31	40	10	29	7	27	1	9	31	48	11	6	47	43	11	21	8	34	10	0	45	47	0	28	13	13	0	28	22	12	19	3	-18	28	-0	1
17	15	38	43	1	1	55	42	7	13	23	16	10	29	52	26	1	9	6	22	11	6	58	54	11	22	18	3	10	0	47	41	0	28	10	2	0	28	22	9	19	17	-22	55	-1	22
18	15	42	40	1	2	53	30	7	28	20	43	11	0	37	24	1	8	38	1	11	7	10	0	11	23	27	36	10	0	49	28	0	28	6	52	0	28	21	54	19	30	-25	52	-2	39
19	15	46	36	1	3	51	17	8	13	15	54	11	1	22	21	1	8	7	16	11	7	20	59	11	24	37	14	10	0	51	10	0	28	3	41	0	28	21	25	19	43	-26	58	-3	44
20	15	50	33	1	4	49	2	8	28	1	17	11	2	7	16	1	7	34	41	11	7	31	53	11	25	46	56	10	0	52	47	0	28	0	30	0	28	20	46	19	56	-26	7	-4	34
21	15	54	29	1	5	46	46	9	12	31	1	11	2	52	9	1	7	0	51	11	7	42	41	11	26	56	41	10	0	54	17	0	27	57	19	0	28	20	6	20	8	-23	31	-5	5
22	15	58	26	1	6	44	29	9	26	41	16	11	3	37	0	1	6	26	20	11	7	53	22	11	28	6	31	10	0	55	42	0	27	54	8	0	28	19	35	20	20	-19	33	-5	17
23	16	2	22	1	7	42	11	10	10	30	19	11	4	21	50	1	5	51	47	11	8	3	58	11	29	16	25	10	0	57	1	0	27	50	58	0	28	19	24	20	32	-14	36	-5	10
24	16	6	19	1	8	39	52	10	23	58	14	11	5	6	38	1	5	17	47	11	8	14	27	0	0	26	22	10	0	58	14	0	27	47	47	0	28	19	39	20	43	-9	4	-4	46
25	16	10	15	1	9	37	32	11	7	6	23	11	5	51	23	1	4	44	55	11	8	24	50	0	1	36	24	10	0	59	21	0	27	44	36	0	28	20	20	20	54	-3	17	-4	7
26	16	14	12	1	10	35	11	11	19	56	49	11	6	36	7	1	4	13	44	11	8	35	6	0	2	46	29	10	1	0	23	0	27	41	25	0	28	21	20	21	5	2	32	-3	17
27	16	18	9	1	11	32	49	0	2	31	57	11	7	20	48	1	3	44	45	11	8	45	16	0	3	56	37	10	1	1	18	0	27	38	14	0	28	22	26	21	15	8	9	-2	18
28	16	22	5	1	12	30	26	0	14	54	14	11	8	5	26	1	3	18	26	11	8	55	19	0	5	6	48	10	1	2	8	0	27	35	4	0	28	23	20	21	25	13	21	-1	14
29	16	26	2	1	13	28	2	0	27	5	55	11	8	50	3	1	2	55	11	11	9	5	15	0	6	17	3	10	1	2	51	0	27	31	53	0	28	23	45	21	35	17	58	-0	7
30	16	29	58	1	14	25	37	1	9	9	8	11	9	34	36	1	2	35	21	11	9	15	4	0	7	27	21	10	1	3	29	0	27	28	42	0	28	23	27	21	44	21	47	0	59
31	16	33	55	1	15	23	11	1	21	5	51	11	10	19	7	1	2	19	15	11	9	24	46	0	8	37	43	10	1	4	1	0	27	25	31	0	28	22	19	21	53	24	39	2	2

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.), 1 जून 2022 ई. को अयनांश 24° 9' 58"

जून	साम्पातिक काल 0.0 h GMT			सूर्य				चन्द्र				मंगल				बुध				गुरु				शुक्र				शनि				मध्यम राहु				स्पष्ट राहु				सूर्य क्रां		चन्द्र क्रां		चन्द्रशर	
	घ.	मि.	से.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.
1	16	37	51	1	16	20	43	2	2	58	3	11	11	3	35	1	2	7	7	11	9	34	21	0	9	48	7	10	1	4	27	0	27	22	20	0	28	20	19	22	1	26	24	3	0
2	16	41	48	1	17	18	15	2	14	47	51	11	11	48	0	1	1	59	8	11	9	43	49	0	10	58	33	10	1	4	47	0	27	19	10	0	28	17	36	22	9	26	56	3	49
3	16	45	44	1	18	15	45	2	26	37	34	11	12	32	22	1	1	55	28	11	9	53	10	0	12	9	3	10	1	5	1	0	27	15	59	0	28	14	28	22	17	26	15	4	28
4	16	49	41	1	19	13	14	3	8	29	55	11	13	16	41	1	1	56	11	11	10	2	23	0	13	19	35	10	1	5	9	0	27	12	48	0	28	11	14	22	24	24	22	4	56
5	16	53	38	1	20	10	42	3	20	27	59	11	14	0	57	1	2	1	23	11	10	11	28	0	14	30	11	10	1	5	11	0	27	9	37	0	28	8	19	22	31	21	24	5	12
6	16	57	34	1	21	8	9	4	2	35	20	11	14	45	9	1	2	11	4	11	10	20	26	0	15	40	48	10	1	5	8	0	27	6	26	0	28	6	5	22	38	17	30	5	14
7	17	1	31	1	22	5	35	4	14	55	55	11	15	29	19	1	2	25	15	11	10	29	16	0	16	51	29	10	1	4	58	0	27	3	15	0	28	4	47	22	44	12	48	5	1
8	17	5	27	1	23	2	59	4	27	33	46	11	16	13	25	1	2	43	53	11	10	37	59	0	18	2	12	10	1	4	43	0	27	0	5	0	28	4	32	22	49	7	28	4	34
9	17	9	24	1	24	0	22	5	10	32	50	11	16	57	27	1	3	6	57	11	10	46	33	0	19	12	57	10	1	4	21	0	26	56	54	0	28	5	12	22	55	1	41	3	52
10	17	13	20	1	24	57	44	5	23	56	24	11	17	41	27	1	3	34	22	11	10	55	0	0	20	23	46	10	1	3	54	0	26	53	43	0	28	6	27	23	0	-4	22	2	57
11	17	17	17	1	25	55	6	6	7	46	36	11	18	25	23	1	4	6	5	11	11	3	18	0	21	34	36	10	1	3	21	0	26	50	32	0	28	7	47	23	4	-10	26	1	50
12	17	21	13	1	26	52	26	6	22	3	36	11	19	9	16	1	4	42	0	11	11	11	29	0	22	45	30	10	1	2	43	0	26	47	21	0	28	8	38	23	8	-15	9	0	33
13	17	25	10	1	27	49	45	7	6	45	5	11	19	53	5	1	5	22	3	11	11	19	31	0	23	56	26	10	1	1	58	0	26	44	11	0	28	8	28	23	12	-21	6	-0	47
14	17	29	7	1	28	47	3	7	21	45	45	11	20	36	50	1	6	6	10	11	11	27	25	0	25	7	25	10	1	1	8	0	26	41	0	0	28	6	59	23	15	-24	47	-2	6
15	17	33	3	1	29	44	21	8	6	57	32	11	21	20	33	1	6	54	15	11	11	35	10	0	26	18	26	10	1	0	12	0	26	37	49	0	28	4	8	23	18	-26	42	-3	16
16	17	37	0	2	0	41	38	8	22	10	39	11	22	4	11	1	7	46	14	11	11	42	47	0	27	29	31	10	0	59	10	0	26	34	38	0	28	0	10	23	20	-26	37	-4	13
17	17	40	56	2	1	38	55	9	7	15	0	11	22	47	46	1	8	42	3	11	11	50	15	0	28	40	37	10	0	58	3	0	26	31	27	0	27	55	39	23	22	-24	35	-4	52
18	17	44	53	2	2	36	11	9	22	1	49	11	23	31	17	1	9	41	36	11	11	57	35	0	29	51	47	10	0	56	50	0	26	28	16	0	27	51	14	23	24	-20	54	-5	10
19	17	48	49	2	3	33	27	10	6	24	56	11	24	14	44	1	10	44	50	11	12	4	46	1	1	2	59	10	0	55	32	0	26	25	6	0	27	47	35	23	25	-16	4	-5	8
20	17	52	46	2	4	30	42	10	20	21	14	11	24	58	7	1	11	51	43	11	12	11	47	1	2	14	14	10	0	54	8	0	26	21	55	0	27	45	13	23	26	-10	31	-4	48
21	17	56	42	2	5	27	58	11	3	50	29	11	25	41	25	1	13	2	9	11	12	18	40	1	3	25	32	10	0	52	38	0	26	18	44	0	27	44	18	23	26	-4	39	-4	12
22	18	0	39	2	6	25	13	11	16	54	38	11	26	24	40	1	14	16	7	11	12	25	24	1	4	36	52	10	0	51	3	0	26	15	33	0	27	44	44	23	26	1	15	-3	24
23	18	4	36	2	7	22	28	11	29	37	1	11	27	7	50	1	15	33	34	11	12	31	58	1	5	48	15	10	0	49	22	0	26	12	22	0	27	46	2	23	26	6	57	-2	27
24	18	8	32	2	8	19	43	0	12	1	36	11	27	50	56	1	16	54	27	11	12	38	23	1	6	59	41	10	0	47	35	0	26	9	11	0	27	47	32	23	25	12	15	-1	25
25	18	12	29	2	9	16	57	0	24	12	29	11	28	33	57	1	18	18	45	11	12	44	39	1	8	11	9	10	0	45	44	0	26	6	1	0	27	48	29	23	24	16	59	-0	20
26	18	16	25	2	10	14	12	1	6	13	28	11	29	16	53	1	19	46	25	11	12	50	44	1	9	22	39	10	0	43	47	0	26	2	50	0	27	48	9	23	22	20	58	0	46
27	18	20	22	2	11	11	27	1	18	7	55	11	29	59	44	1	21	17	26	11	12	56	41	1	10	34	12	10	0	41	44	0	25	59	39	0	27	46	2	23	20	24	3	1	48
28	18	24	18	2	12	8	41	1	29	58	40	0	0	42	30	1	22	51	44	11	13	2	27	1	11	45	47	10	0	39	37	0	25	56	28	0	27	41	52	23	17	26	3	2	45
29	18	28	15	2	13	5	55	2	11	48	4	0	1	25	11	1	24	29	16	11	13	8	3	1	12	57	25	10	0	37	24	0	25	53	17	0	27	35	43	23	14	26	53	3	35

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.), 1 जुलाई 2022 ई. को अयनांश 24° 10' 4"

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.), 1 जुलाई 2022 ई. को अयनांश 24° 10' 4''

जुलाई	साम्पातिक काल 0.0 h GMT			सूर्य				चन्द्र				मंगल				बुध				गुरु				शुक्र				शनि				मध्यम राहु				स्पष्ट राहु				सूर्य क्रां		चन्द्र क्रां		चन्द्रशर	
	घ.	मि.	से.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.
1	18	36	8	2	15	0	23	3	5	30	31	0	2	50	17	1	27	53	53	11	13	18	46	1	15	20	46	10	0	32	43	0	25	46	56	0	27	19	10	23	7	24	52	4	45
2	18	40	5	2	15	57	36	3	17	27	6	0	3	32	41	1	29	40	47	11	13	23	52	1	16	32	30	10	0	30	15	0	25	43	45	0	27	10	9	23	3	22	8	5	2
3	18	44	1	2	16	54	50	3	29	29	51	0	4	15	0	2	1	30	39	11	13	28	48	1	17	44	17	10	0	27	42	0	25	40	34	0	27	1	47	22	59	18	27	5	6
4	18	47	58	2	17	52	3	4	11	41	5	0	4	57	13	2	3	23	20	11	13	33	33	1	18	56	5	10	0	25	4	0	25	37	23	0	26	54	50	22	54	13	57	4	57
5	18	51	54	2	18	49	15	4	24	3	38	0	5	39	20	2	5	18	42	11	13	38	8	1	20	7	55	10	0	22	21	0	25	34	12	0	26	49	49	22	48	8	50	4	33
6	18	55	51	2	19	46	28	5	6	40	44	0	6	21	21	2	7	16	35	11	13	42	33	1	21	19	48	10	0	19	34	0	25	31	2	0	26	46	57	22	42	3	16	3	56
7	18	59	47	2	20	43	40	5	19	35	56	0	7	3	16	2	9	16	46	11	13	46	47	1	22	31	43	10	0	16	42	0	25	27	51	0	26	46	2	22	36	- 2	35	3	6
8	19	3	44	2	21	40	52	6	2	52	41	0	7	45	5	2	11	19	4	11	13	50	50	1	23	43	40	10	0	13	46	0	25	24	40	0	26	46	26	22	30	- 8	29	2	5
9	19	7	40	2	22	38	3	6	16	33	54	0	8	26	48	2	13	23	13	11	13	54	42	1	24	55	39	10	0	10	45	0	25	21	29	0	26	47	14	22	23	-14	11	0	55
10	19	11	37	2	23	35	15	7	0	41	14	0	9	8	25	2	15	28	56	11	13	58	24	1	26	7	41	10	0	7	40	0	25	18	18	0	26	47	23	22	16	-19	19	- 0	21
11	19	15	34	2	24	32	26	7	15	14	11	0	9	49	56	2	17	35	57	11	14	1	55	1	27	19	44	10	0	4	30	0	25	15	7	0	26	45	59	22	8	-23	28	- 1	37
12	19	19	30	2	25	29	38	8	0	9	19	0	10	31	20	2	19	43	58	11	14	5	15	1	28	31	50	10	0	1	16	0	25	11	57	0	26	42	25	22	0	-26	7	- 2	49
13	19	23	27	2	26	26	49	8	15	19	58	0	11	12	38	2	21	52	41	11	14	8	24	1	29	43	59	9	29	57	59	0	25	8	46	0	26	36	33	21	51	-26	54	- 3	49
14	19	27	23	2	27	24	1	9	0	36	40	0	11	53	50	2	24	1	47	11	14	11	22	2	0	56	9	9	29	54	37	0	25	5	35	0	26	28	48	21	43	-25	39	- 4	34
15	19	31	20	2	28	21	13	9	15	48	32	0	12	34	55	2	26	10	59	11	14	14	8	2	2	8	22	9	29	51	11	0	25	2	24	0	26	20	0	21	33	-22	32	- 4	59
16	19	35	16	2	29	18	25	10	0	45	10	0	13	15	53	2	28	20	2	11	14	16	44	2	3	20	38	9	29	47	42	0	24	59	13	0	26	11	12	21	24	-17	58	- 5	3
17	19	39	13	3	0	15	38	10	15	18	19	0	13	56	44	3	0	28	39	11	14	19	8	2	4	32	56	9	29	44	8	0	24	56	3	0	26	3	27	21	14	-12	27	- 4	47
18	19	43	9	3	1	12	52	10	29	23	6	0	14	37	29	3	2	36	36	11	14	21	21	2	5	45	17	9	29	40	32	0	24	52	52	0	25	57	33	21	4	- 6	27	- 4	14
19	19	47	6	3	2	10	6	11	12	58	5	0	15	18	6	3	4	43	43	11	14	23	23	2	6	57	40	9	29	36	51	0	24	49	41	0	25	53	53	20	53	- 0	21	- 3	28
20	19	51	3	3	3	7	20	11	26	4	45	0	15	58	36	3	6	49	47	11	14	25	13	2	8	10	5	9	29	33	7	0	24	46	30	0	25	52	17	20	42	5	34	- 2	32
21	19	54	59	3	4	4	36	0	8	46	36	0	16	38	59	3	8	54	39	11	14	26	51	2	9	22	33	9	29	29	20	0	24	43	19	0	25	52	9	20	31	11	5	- 1	30
22	19	58	56	3	5	1	52	0	21	8	18	0	17	19	14	3	10	58	14	11	14	28	18	2	10	35	4	9	29	25	30	0	24	40	9	0	25	52	32	20	19	16	1	- 0	25
23	20	2	52	3	5	59	9	1	3	14	51	0	17	59	21	3	13	0	23	11	14	29	33	2	11	47	37	9	29	21	36	0	24	36	58	0	25	52	23	20	7	20	13	0	39
24	20	6	49	3	6	56	27	1	15	11	11	0	18	39	20	3	15	1	3	11	14	30	36	2	13	0	13	9	29	17	39	0	24	33	47	0	25	50	41	19	55	23	31	1	41
25	20	10	45	3	7	53	46	1	27	1	45	0	19	19	11	3	17	0	9	11	14	31	28	2	14	12	51	9	29	13	40	0	24	30	36	0	25	46	42	19	42	25	46	2	37
26	20	14	42	3	8	51	6	2	8	50	21	0	19	58	54	3	18	57	40	11	14	32	8	2	15	25	31	9	29	9	38	0	24	27	25	0	25	40	1	19	29	26	51	3	27
27	20	18	38	3	9	48	26	2	20	40	2	0	20	38	28	3	20	53	32	11	14	32	35	2	16	38	14	9	29	5	33	0	24	24	15	0	25	30	41	19	16	26	43	4	7
28	20	22	35	3	10	45	47	3	2	33	9	0	21	17	53	3	22	47	45	11	14	32	51	2	17	50	59	9	29	1	25	0	24	21	4	0	25	19	8	19	2	25	21	4	37
29	20	26	32	3	11	43	9	3	14	31	26	0	21	57	9	3	24	40	18	11	14	32	56	2	19	3	46	9	28	57	15	0	24	17	53	0	25	6	11	18	48	22	50	4	55
30	20	30	28	3	12	40	32	3	26	36	12	0	22	36	16	3	26	31	10	11	14	32	48	2	20	16	36	9	28	53	3	0	24	14	42	0	24	52	52	18	34	19	18	5	0
31	20	34	25	3	13	37	55	4	8	48	31	0	23	15	14	3	28	20	22	11	14	32	28	2	21	29	28	9	28	48	49	0	24	11	31	0	24	40	21	18	19	14	56	4	51

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.), 1 अगस्त 2022 ई. को अयनांश 24° 10' 10"

अगस्त	साम्पातिक काल 0.0 h GMT			सूर्य				चन्द्र				मंगल				बुध				गुरु				शुक्र				शनि				मध्यम राहु				स्पष्ट राहु				सूर्य क्रां		चन्द्र क्रां		चन्द्रशर	
	घ.	मि.	से.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.
1	20	38	21	3	14	35	19	4	21	9	35	0	23	54	2	4	0	7	53	11	14	31	56	2	22	42	22	9	28	44	33	0	24	8	21	0	24	29	38	18	4	9	55	4	29
2	20	42	18	3	15	32	44	5	3	40	50	0	24	32	41	4	1	53	44	11	14	31	13	2	23	55	18	9	28	40	15	0	24	5	10	0	24	21	29	17	49	4	25	3	53
3	20	46	14	3	16	30	9	5	16	24	12	0	25	11	10	4	3	37	55	11	14	30	17	2	25	8	16	9	28	35	55	0	24	1	59	0	24	16	12	17	34	-1	20	3	5
4	20	50	11	3	17	27	35	5	29	22	5	0	25	49	29	4	5	20	27	11	14	29	10	2	26	21	17	9	28	31	33	0	23	58	48	0	24	13	34	17	18	-7	10	2	7
5	20	54	7	3	18	25	2	6	12	37	12	0	26	27	38	4	7	1	20	11	14	27	51	2	27	34	19	9	28	27	10	0	23	55	37	0	24	12	50	17	2	-12	49	1	1
6	20	58	4	3	19	22	29	6	26	12	9	0	27	5	37	4	8	40	35	11	14	26	20	2	28	47	24	9	28	22	46	0	23	52	27	0	24	12	53	16	45	-18	1	-0	11
7	21	2	1	3	20	19	57	7	10	8	56	0	27	43	25	4	10	18	13	11	14	24	38	3	0	0	31	9	28	18	21	0	23	49	16	0	24	12	25	16	29	-22	22	-1	23
8	21	5	57	3	21	17	25	7	24	28	7	0	28	21	4	4	11	54	13	11	14	22	44	3	1	13	40	9	28	13	55	0	23	46	5	0	24	10	17	16	12	-25	29	-2	33
9	21	9	54	3	22	14	55	8	9	7	55	0	28	58	31	4	13	28	36	11	14	20	38	3	2	26	52	9	28	9	27	0	23	42	54	0	24	5	42	15	55	-26	57	-3	33
10	21	13	50	3	23	12	25	8	24	3	47	0	29	35	48	4	15	1	22	11	14	18	20	3	3	40	5	9	28	4	59	0	23	39	44	0	23	58	27	15	38	-26	30	-4	21
11	21	17	47	3	24	9	57	9	9	8	13	1	0	12	55	4	16	32	30	11	14	15	52	3	4	53	21	9	28	0	31	0	23	36	33	0	23	48	56	15	20	-24	7	-4	51
12	21	21	43	3	25	7	29	9	24	11	43	1	0	49	50	4	18	2	0	11	14	13	11	3	6	6	39	9	27	56	1	0	23	33	22	0	23	38	5	15	2	-20	5	-5	0
13	21	25	40	3	26	5	2	10	9	4	19	1	1	26	35	4	19	29	52	11	14	10	20	3	7	19	59	9	27	51	32	0	23	30	11	0	23	27	6	14	44	-14	48	-4	49
14	21	29	36	3	27	2	37	10	23	37	16	1	2	3	7	4	20	56	4	11	14	7	17	3	8	33	22	9	27	47	2	0	23	27	0	0	23	17	12	14	26	-8	48	-4	20
15	21	33	33	3	28	0	13	11	7	44	27	1	2	39	29	4	22	20	35	11	14	4	3	3	9	46	47	9	27	42	32	0	23	23	50	0	23	9	21	14	7	-2	31	-3	35
16	21	37	30	3	28	57	50	11	21	23	5	1	3	15	38	4	23	43	23	11	14	0	38	3	11	0	15	9	27	38	2	0	23	20	39	0	23	4	2	13	48	3	41	-2	39
17	21	41	26	3	29	55	29	0	4	33	26	1	3	51	36	4	25	4	27	11	13	57	1	3	12	13	45	9	27	33	32	0	23	17	28	0	23	1	9	13	29	9	32	-1	36
18	21	45	23	4	0	53	10	0	17	18	12	1	4	27	21	4	26	23	45	11	13	53	14	3	13	27	17	9	27	29	3	0	23	14	17	0	23	0	9	13	10	14	48	-0	30
19	21	49	19	4	1	50	51	0	29	41	38	1	5	2	53	4	27	41	13	11	13	49	16	3	14	40	52	9	27	24	34	0	23	11	7	0	23	0	4	12	51	19	19	0	35
20	21	53	16	4	2	48	35	1	11	48	51	1	5	38	13	4	28	56	48	11	13	45	7	3	15	54	29	9	27	20	5	0	23	7	56	0	22	59	47	12	31	22	55	1	38
21	21	57	12	4	3	46	20	1	23	45	10	1	6	13	19	5	0	10	28	11	13	40	47	3	17	8	8	9	27	15	37	0	23	4	45	0	22	58	15	12	11	25	28	2	35
22	22	1	9	4	4	44	7	2	5	35	44	1	6	48	12	5	1	22	7	11	13	36	17	3	18	21	50	9	27	11	10	0	23	1	34	0	22	54	37	11	51	26	51	3	25
23	22	5	5	4	5	41	56	2	17	25	11	1	7	22	51	5	2	31	42	11	13	31	37	3	19	35	34	9	27	6	44	0	22	58	24	0	22	48	25	11	31	27	1	4	6
24	22	9	2	4	6	39	46	2	29	17	25	1	7	57	16	5	3	39	8	11	13	26	46	3	20	49	20	9	27	2	19	0	22	55	13	0	22	39	37	11	11	25	56	4	37
25	22	12	59	4	7	37	37	3	11	15	31	1	8	31	26	5	4	44	18	11	13	21	46	3	22	3	8	9	26	57	55	0	22	52	2	0	22	28	37	10	50	23	41	4	55
26	22	16	55	4	8	35	31	3	23	21	40	1	9	5	22	5	5	47	6	11	13	16	35	3	23	16	59	9	26	53	33	0	22	48	51	0	22	16	10	10	29	20	21	5	1
27	22	20	52	4	9	33	26	4	5	37	18	1	9	39	2	5	6	47	25	11	13	11	15	3	24	30	51	9	26	49	12	0	22	45	41	0	22	3	17	10	8	16	6	4	53
28	22	24	48	4	10	31	22	4	18	3	12	1	10	12	27	5	7	45	6	11	13	5	46	3	25	44	46	9	26	44	53	0	22	42	30	0	21	51	5	9	47	11	8	4	30
29	22	28	45	4	11	29	20	5	0	39	42	1	10	45	36	5	8	40	1	11	13	0	7	3	26	58	43	9	26	40	36	0	22	39	19	0	21	40	37	9	26	5	39	3	55
30	22	32	41	4	12	27	20	5	13	26	58	1	11	18	29	5	9	32	0	11	12	54	19	3	28	12	41	9	26	36	21	0	22	36	8	0	21	32	38	9	5	-0	10	3	7

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.), 1 सितंबर 2022 ई. को अयनांश 24° 10' 14"

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.), 1 सितंबर 2022 ई. को अयनांश 24° 10' 14"

सितंबर	साम्पातिक काल 0.0 h GMT			सूर्य				चन्द्र				मंगल				बुध				गुरु				शुक्र				शनि				मध्यम राहु				स्पष्ट राहु				सूर्य क्रा		चन्द्र क्रा		चन्द्रशर	
	घ	मि.	से.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.
1	22	40	34	4	14	23	23	6	9	35	36	1	12	23	26	5	11	6	23	11	12	42	18	4	0	40	44	9	26	27	57	0	22	29	47	0	21	25	1	8	22	-11	48	1	2
2	22	44	31	4	15	21	27	6	22	58	45	1	12	55	29	5	11	48	22	11	12	36	5	4	1	54	48	9	26	23	48	0	22	26	36	0	21	24	33	8	0	-17	5	-0	8
3	22	48	28	4	16	19	32	7	6	36	7	1	13	27	16	5	12	26	34	11	12	29	43	4	3	8	54	9	26	19	42	0	22	23	25	0	21	25	1	7	38	-21	37	-1	20
4	22	52	24	4	17	17	38	7	20	28	47	1	13	58	44	5	13	0	45	11	12	23	15	4	4	23	1	9	26	15	39	0	22	20	15	0	21	25	15	7	16	-25	1	-2	28
5	22	56	21	4	18	15	46	8	4	37	8	1	14	29	55	5	13	30	38	11	12	16	38	4	5	37	10	9	26	11	39	0	22	17	4	0	21	24	8	6	54	-26	55	-3	29
6	23	0	17	4	19	13	55	8	19	0	8	1	15	0	48	5	13	55	55	11	12	9	55	4	6	51	21	9	26	7	41	0	22	13	53	0	21	20	55	6	31	-27	3	-4	17
7	23	4	14	4	20	12	6	9	3	34	52	1	15	31	23	5	14	16	20	11	12	3	4	4	8	5	34	9	26	3	46	0	22	10	42	0	21	15	21	6	9	-25	21	-4	50
8	23	8	10	4	21	10	18	9	18	16	21	1	16	1	39	5	14	31	33	11	11	56	7	4	9	19	49	9	25	59	55	0	22	7	32	0	21	7	45	5	47	-21	55	-5	4
9	23	12	7	4	22	8	32	10	2	57	51	1	16	31	37	5	14	41	16	11	11	49	4	4	10	34	5	9	25	56	6	0	22	4	21	0	20	58	53	5	24	-17	7	-4	58
10	23	16	3	4	23	6	47	10	17	31	43	1	17	1	15	5	14	45	11	11	11	41	55	4	11	48	23	9	25	52	21	0	22	1	10	0	20	49	48	5	1	-11	22	-4	32
11	23	20	0	4	24	5	4	11	1	50	43	1	17	30	33	5	14	43	1	11	11	34	39	4	13	2	43	9	25	48	40	0	21	57	59	0	20	41	34	4	39	-5	6	-3	50
12	23	23	57	4	25	3	23	11	15	49	8	1	17	59	31	5	14	34	29	11	11	27	19	4	14	17	4	9	25	45	2	0	21	54	49	0	20	35	5	4	16	1	17	-2	55
13	23	27	53	4	26	1	44	11	29	23	34	1	18	28	9	5	14	19	23	11	11	19	53	4	15	31	27	9	25	41	27	0	21	51	38	0	20	30	48	3	53	7	26	-1	51
14	23	31	50	4	27	0	7	0	12	33	7	1	18	56	25	5	13	57	35	11	11	12	22	4	16	45	52	9	25	37	57	0	21	48	27	0	20	28	44	3	30	13	5	-0	42
15	23	35	46	4	27	58	32	0	25	19	9	1	19	24	20	5	13	29	1	11	11	4	47	4	18	0	19	9	25	34	30	0	21	45	16	0	20	28	29	3	7	18	1	0	26
16	23	39	43	4	28	56	59	1	7	44	46	1	19	51	53	5	12	53	46	11	10	57	8	4	19	14	47	9	25	31	7	0	21	42	6	0	20	29	19	2	44	22	2	1	32
17	23	43	39	4	29	55	28	1	19	54	15	1	20	19	4	5	12	12	2	11	10	49	24	4	20	29	18	9	25	27	48	0	21	38	55	0	20	30	22	2	21	25	0	2	32
18	23	47	36	5	0	53	59	2	1	52	31	1	20	45	51	5	11	24	13	11	10	41	37	4	21	43	50	9	25	24	34	0	21	35	44	0	20	30	45	1	58	26	47	3	24
19	23	51	32	5	1	52	33	2	13	44	45	1	21	12	15	5	10	30	55	11	10	33	47	4	22	58	23	9	25	21	23	0	21	32	33	0	20	29	47	1	34	27	19	4	7
20	23	55	29	5	2	51	8	2	25	35	59	1	21	38	15	5	9	32	56	11	10	25	54	4	24	12	59	9	25	18	17	0	21	29	23	0	20	27	1	1	11	26	36	4	40
21	23	59	26	5	3	49	46	3	7	30	49	1	22	3	49	5	8	31	18	11	10	17	58	4	25	27	36	9	25	15	15	0	21	26	12	0	20	22	21	0	48	24	40	5	0
22	0	3	22	5	4	48	26	3	19	33	12	1	22	28	58	5	7	27	16	11	10	10	1	4	26	42	14	9	25	12	18	0	21	23	1	0	20	16	1	0	24	21	37	5	8
23	0	7	19	5	5	47	9	4	1	46	16	1	22	53	41	5	6	22	15	11	10	2	1	4	27	56	54	9	25	9	26	0	21	19	51	0	20	8	31	0	1	17	36	5	2
24	0	11	15	5	6	45	53	4	14	12	14	1	23	17	58	5	5	17	49	11	9	54	0	4	29	11	35	9	25	6	38	0	21	16	40	0	20	0	34	-0	22	12	46	4	41
25	0	15	12	5	7	44	39	4	26	52	15	1	23	41	47	5	4	15	36	11	9	45	58	5	0	26	18	9	25	3	56	0	21	13	29	0	19	52	59	-0	46	7	20	4	7
26	0	19	8	5	8	43	28	5	9	46	35	1	24	5	8	5	3	17	14	11	9	37	55	5	1	41	2	9	25	1	18	0	21	10	18	0	19	46	30	-1	9	1	28	3	19
27	0	23	5	5	9	42	18	5	22	54	39	1	24	28	1	5	2	24	17	11	9	29	52	5	2	55	48	9	24	58	45	0	21	7	8	0	19	41	44	-1	32	-4	33	2	20
28	0	27	1	5	10	41	10	6	6	15	24	1	24	50	25	5	1	38	9	11	9	21	50	5	4	10	34	9	24	56	17	0	21	3	57	0	19	38	55	-1	56	-10	30	1	12
29	0	30	58	5	11	40	5	6	19	47	34	1	25	12	20	5	1	0	3	11	9	13	47	5	5	25	22	9	24	53	55	0	21	0	46	0	19	38	0	-2	19	-16	3	-0	1
30	0	34	55	5	12	39	1	7	3	29	59	1	25	33	44	5	0	30	58	11	9	5	46	5	6	40	11	9	24	51	37	0	20	57	35	0	19	38	32	-2	42	-20	51	-1	15

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.), 1 अक्तूबर 2022 ई. को अयनांश 24° 10' 17"

अक्तूबर	साम्पातिक काल 0.0 h GMT			सूर्य				चन्द्र				मंगल				बुध				गुरु				शुक्र				शनि				मध्यम राहु				स्पष्ट राहु				सूर्य क्रां		चन्द्र क्रां		चन्द्रशर	
	घ.	मि.	से.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.
1	0	38	51	5	13	37	58	7	17	21	36	1	25	54	37	5	0	11	37	11	8	57	46	5	7	55	1	9	24	49	25	0	20	54	25	0	19	39	51	-3	6	-24	34	-2	25
2	0	42	48	5	14	36	58	8	1	21	28	1	26	14	59	5	0	2	28	11	8	49	48	5	9	9	52	9	24	47	19	0	20	51	14	0	19	41	9	-3	29	-26	49	-3	28
3	0	46	44	5	15	35	59	8	15	28	32	1	26	34	50	5	0	3	43	11	8	41	52	5	10	24	43	9	24	45	17	0	20	48	3	0	19	41	41	-3	52	-27	23	-4	18
4	0	50	41	5	16	35	2	8	29	41	20	1	26	54	8	5	0	15	20	11	8	33	58	5	11	39	36	9	24	43	22	0	20	44	52	0	19	40	57	-4	15	-26	9	-4	53
5	0	54	37	5	17	34	7	9	13	57	41	1	27	12	53	5	0	37	6	11	8	26	7	5	12	54	30	9	24	41	31	0	20	41	42	0	19	38	46	-4	39	-23	14	-5	11
6	0	58	34	5	18	33	13	9	28	14	37	1	27	31	4	5	1	8	35	11	8	18	19	5	14	9	24	9	24	39	47	0	20	38	31	0	19	35	19	-5	2	-18	54	-5	9
7	1	2	30	5	19	32	22	10	12	28	16	1	27	48	41	5	1	49	17	11	8	10	34	5	15	24	19	9	24	38	8	0	20	35	20	0	19	31	3	-5	25	-13	31	-4	48
8	1	6	27	5	20	31	32	10	26	34	17	1	28	5	43	5	2	38	31	11	8	2	54	5	16	39	16	9	24	36	34	0	20	32	9	0	19	26	35	-5	48	-7	29	-4	9
9	1	10	24	5	21	30	44	11	10	28	22	1	28	22	9	5	3	35	35	11	7	55	17	5	17	54	13	9	24	35	7	0	20	28	59	0	19	22	35	-6	10	-1	10	-3	17
10	1	14	20	5	22	29	58	11	24	6	47	1	28	37	59	5	4	39	45	11	7	47	45	5	19	9	11	9	24	33	45	0	20	25	48	0	19	19	33	-6	33	5	6	-2	14
11	1	18	17	5	23	29	14	0	7	26	57	1	28	53	12	5	5	50	15	11	7	40	18	5	20	24	9	9	24	32	29	0	20	22	37	0	19	17	47	-6	56	11	2	-1	5
12	1	22	13	5	24	28	32	0	20	27	42	1	29	7	47	5	7	6	19	11	7	32	56	5	21	39	9	9	24	31	18	0	20	19	26	0	19	17	19	-7	18	16	20	0	6
13	1	26	10	5	25	27	52	1	3	9	25	1	29	21	43	5	8	27	15	11	7	25	39	5	22	54	10	9	24	30	14	0	20	16	16	0	19	17	57	-7	41	20	47	1	16
14	1	30	6	5	26	27	15	1	15	33	51	1	29	35	0	5	9	52	21	11	7	18	28	5	24	9	11	9	24	29	15	0	20	13	5	0	19	19	19	-8	3	24	13	2	20
15	1	34	3	5	27	26	39	1	27	43	56	1	29	47	36	5	11	21	0	11	7	11	23	5	25	24	14	9	24	28	23	0	20	9	54	0	19	20	57	-8	26	26	27	3	16
16	1	37	59	5	28	26	6	2	9	43	28	1	29	59	30	5	12	52	37	11	7	4	25	5	26	39	17	9	24	27	36	0	20	6	43	0	19	22	25	-8	48	27	26	4	3
17	1	41	56	5	29	25	35	2	21	36	54	2	0	10	43	5	14	26	41	11	6	57	33	5	27	54	21	9	24	26	56	0	20	3	33	0	19	23	22	-9	10	27	8	4	39
18	1	45	53	6	0	25	7	3	3	28	57	2	0	21	13	5	16	2	45	11	6	50	48	5	29	9	26	9	24	26	21	0	20	0	22	0	19	23	32	-9	32	25	35	5	3
19	1	49	49	6	1	24	41	3	15	24	26	2	0	30	58	5	17	40	25	11	6	44	10	6	0	24	32	9	24	25	52	0	19	57	11	0	19	22	54	-9	53	22	54	5	15
20	1	53	46	6	2	24	17	3	27	27	58	2	0	39	59	5	19	19	20	11	6	37	40	6	1	39	39	9	24	25	30	0	19	54	0	0	19	21	31	-10	15	19	13	5	12
21	1	57	42	6	3	23	55	4	9	43	43	2	0	48	15	5	20	59	11	11	6	31	18	6	2	54	46	9	24	25	13	0	19	50	50	0	19	19	37	-10	37	14	40	4	56
22	2	1	39	6	4	23	36	4	22	15	4	2	0	55	43	5	22	39	44	11	6	25	4	6	4	9	54	9	24	25	3	0	19	47	39	0	19	17	29	-10	58	9	25	4	25
23	2	5	35	6	5	23	19	5	5	4	28	2	1	2	25	5	24	20	45	11	6	18	59	6	5	25	3	9	24	24	59	0	19	44	28	0	19	15	26	-11	19	3	40	3	40
24	2	9	32	6	6	23	4	5	18	13	1	2	1	8	19	5	26	2	3	11	6	13	2	6	6	40	13	9	24	25	1	0	19	41	17	0	19	13	46	-11	40	-2	24	2	43
25	2	13	28	6	7	22	51	6	1	40	30	2	1	13	24	5	27	43	29	11	6	7	14	6	7	55	23	9	24	25	9	0	19	38	7	0	19	12	40	-12	1	-8	30	1	35
26	2	17	25	6	8	22	40	6	15	25	17	2	1	17	41	5	29	24	56	11	6	1	35	6	9	10	33	9	24	25	23	0	19	34	56	0	19	12	11	-12	21	-14	21	0	21
27	2	21	22	6	9	22	30	6	29	24	35	2	1	21	7	6	1	6	17	11	5	56	6	6	10	25	44	9	24	25	44	0	19	31	45	0	19	12	15	-12	42	-19	35	-0	56
28	2	25	18	6	10	22	23	7	13	34	43	2	1	23	43	6	2	47	27	11	5	50	46	6	11	40	56	9	24	26	11	0	19	28	34	0	19	12	43	-13	2	-23	45	-2	11
29	2	29	15	6	11	22	18	7	27	51	37	2	1	25	28	6	4	28	23	11	5	45	37	6	12	56	8	9	24	26	44	0	19	25	24	0	19	13	20	-13	22	-26	30	-3	18

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.), 1 नवंबर 2022 ई. को अयनांश 24° 10' 21''

नवंबर	साम्पातिक काल 0.0 h GMT			सूर्य				चन्द्र				मंगल				बुध				गुरु				शुक्र				शनि				मध्यम राहु				स्पष्ट राहु				सूर्य क्रा		चन्द्र क्रा		चन्द्रशर	
	घ	नि	से	रा	अं	क	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा	अ	क	वि	रा.	अं.	क	वि	रा	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क	वि	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क	वि.	रा	अ.	क.	वि.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क
1	2	41	4	6	14	22	11	9	10	44	23	2	1	25	36	6	9	29	13	11	5	31	10	6	16	41	45	9	24	29	0	0	19	15	51	0	19	14	26	-14	21	-24	6	- 5	13
2	2	45	1	6	15	22	12	9	24	52	24	2	1	23	55	6	11	8	45	11	5	26	42	6	17	56	58	9	24	29	57	0	19	12	40	0	19	14	20	-14	40	-20	6	- 5	15
3	2	48	57	6	16	22	15	10	6	51	58	2	1	21	22	6	12	47	53	11	5	22	25	6	19	12	11	9	24	31	1	0	19	9	30	0	19	14	7	-14	59	-15	2	- 4	59
4	2	52	54	6	17	22	19	10	22	41	33	2	1	17	56	6	14	26	37	11	5	18	19	6	20	27	24	9	24	32	11	0	19	6	19	0	19	13	54	-15	18	- 9	15	- 4	25
5	2	56	51	6	18	22	25	11	6	19	51	2	1	13	37	6	16	4	55	11	5	14	24	6	21	42	38	9	24	33	27	0	19	3	8	0	19	13	46	-15	36	- 3	6	- 3	36
6	3	0	47	6	19	22	32	11	19	45	48	2	1	8	26	6	17	42	49	11	5	10	41	6	22	57	51	9	24	34	49	0	18	59	57	0	19	13	46	-15	54	3	6	- 2	36
7	3	4	44	6	20	22	41	0	2	58	31	2	1	2	22	6	19	20	19	11	5	7	8	6	24	13	5	9	24	36	17	0	18	56	47	0	19	13	51	-16	12	9	4	- 1	29
8	3	8	40	6	21	22	52	0	15	57	22	2	0	55	25	6	20	57	25	11	5	3	48	6	25	28	19	9	24	37	51	0	18	53	36	0	19	13	55	-16	30	14	34	- 0	18
9	3	12	37	6	22	23	4	0	28	42	10	2	0	47	36	6	22	34	7	11	5	0	39	6	26	43	34	9	24	39	32	0	18	50	25	0	19	13	53	-16	47	19	20	0	52
10	3	16	33	6	23	23	19	1	11	13	13	2	0	38	54	6	24	10	27	11	4	57	41	6	27	58	48	9	24	41	18	0	18	47	14	0	19	13	37	-17	4	23	9	1	59
11	3	20	30	6	24	23	35	1	23	31	29	2	0	29	20	6	25	46	26	11	4	54	56	6	29	14	3	9	24	43	10	0	18	44	3	0	19	13	4	-17	21	25	50	2	59
12	3	24	26	6	25	23	52	2	5	38	42	2	0	18	55	6	27	22	3	11	4	52	22	7	0	29	18	9	24	45	8	0	18	40	53	0	19	12	16	-17	37	27	16	3	50
13	3	28	23	6	26	24	12	2	17	37	20	2	0	7	38	6	28	57	21	11	4	50	0	7	1	44	33	9	24	47	12	0	18	37	42	0	19	11	16	-17	54	27	24	4	30
14	3	32	20	6	27	24	34	2	29	30	33	1	29	55	31	7	0	32	21	11	4	47	50	7	2	59	49	9	24	49	21	0	18	34	31	0	19	10	15	-18	10	26	15	4	58
15	3	36	16	6	28	24	57	3	11	22	8	1	29	42	33	7	2	7	2	11	4	45	53	7	4	15	5	9	24	51	37	0	18	31	20	0	19	9	24	-18	25	23	57	5	14
16	3	40	13	6	29	25	22	3	23	16	20	1	29	28	47	7	3	41	27	11	4	44	7	7	5	30	21	9	24	53	59	0	18	28	9	0	19	8	53	-18	40	20	37	5	16
17	3	44	9	7	0	25	50	4	5	17	46	1	29	14	12	7	5	15	36	11	4	42	34	7	6	45	38	9	24	56	26	0	18	24	59	0	19	8	51	-18	55	16	24	5	4
18	3	48	6	7	1	26	19	4	17	31	7	1	28	58	50	7	6	49	30	11	4	41	13	7	8	0	55	9	24	58	59	0	18	21	48	0	19	9	21	-19	10	11	28	4	39
19	3	52	2	7	2	26	50	5	0	0	53	1	28	42	43	7	8	23	10	11	4	40	5	7	9	16	12	9	25	1	38	0	18	18	37	0	19	10	19	-19	24	5	59	4	0
20	3	55	59	7	3	27	23	5	12	50	57	1	28	25	52	7	9	56	37	11	4	39	9	7	10	31	30	9	25	4	22	0	18	15	26	0	19	11	36	-19	38	0	5	3	8
21	3	59	55	7	4	27	57	5	26	4	9	1	28	8	18	7	11	29	51	11	4	38	25	7	11	46	47	9	25	7	13	0	18	12	15	0	19	12	52	-19	51	- 5	59	2	5
22	4	3	52	7	5	28	33	6	9	41	47	1	27	50	4	7	13	2	54	11	4	37	54	7	13	2	5	9	25	10	8	0	18	9	5	0	19	13	47	-20	4	-11	59	0	52
23	4	7	49	7	6	29	11	6	23	43	10	1	27	31	11	7	14	35	46	11	4	37	35	7	14	17	23	9	25	13	10	0	18	5	54	0	19	14	0	-20	17	-17	34	- 0	25
24	4	11	45	7	7	29	50	7	8	5	19	1	27	11	43	7	16	8	27	11	4	37	29	7	15	32	41	9	25	16	17	0	18	2	43	0	19	13	18	-20	30	-22	17	- 1	42
25	4	15	42	7	8	30	31	7	22	43	6	1	26	51	40	7	17	40	59	11	4	37	36	7	16	48	0	9	25	19	30	0	17	59	32	0	19	11	38	-20	42	-25	41	- 2	54
26	4	19	38	7	9	31	13	8	7	29	37	1	26	31	6	7	19	13	21	11	4	37	55	7	18	3	18	9	25	22	48	0	17	56	21	0	19	9	9	-20	53	-27	21	- 3	55
27	4	23	35	7	10	31	56	8	22	17	14	1	26	10	4	7	20	45	33	11	4	38	27	7	19	18	36	9	25	26	11	0	17	53	11	0	19	6	13	-21	5	-27	4	- 4	41
28	4	27	31	7	11	32	40	9	6	58	38	1	25	48	35	7	22	17	35	11	4	39	11	7	20	33	54	9	25	29	40	0	17	50	0	0	19	3	21	-21	15	-24	54	- 5	7
29	4	31	28	7	12	33	25	9	21	27	52	1	25	26	43	7	23	49	28	11	4	40	7	7	21	49	12	9	25	33	14	0	17	46	49	0	19	1	2	-21	26	-21	8	- 5	14
30	4	35	24	7	13	34	12	10	5	40	57	1	25	4	31	7	25	21	10	11	4	41	17	7	23	4	30	9	25	36	54	0	17	43	38	0	18	59	42	-21	36	-16	13	- 5	1

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.), 1 दिसंबर 2022 ई. को अयनांश 24° 10' 15"

दिसंबर	साम्पातिक काल 0.0 h GMT			सूर्य				चन्द्र				मंगल				बुध				गुरु				शुक्र				शनि				मध्यम राहु				स्पष्ट राहु				सूर्य क्रा		चन्द्र क्रा		चन्द्रशर	
	घ.	मि.	से.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.
1	4	39	21	7	14	34	59	10	19	35	57	1	24	42	2	7	26	52	41	11	4	42	38	7	24	19	48	9	25	40	39	0	17	40	27	0	18	59	31	-21	46	-10	33	-4	31
2	4	43	18	7	15	35	47	11	3	12	36	1	24	19	18	7	28	23	59	11	4	44	12	7	25	35	6	9	25	44	28	0	17	37	16	0	19	0	24	-21	55	-4	29	-3	46
3	4	47	14	7	16	36	36	11	16	31	50	1	23	56	23	7	29	55	5	11	4	45	58	7	26	50	23	9	25	48	23	0	17	34	6	0	19	1	59	-22	4	1	39	-2	49
4	4	51	11	7	17	37	26	11	29	35	16	1	23	33	20	8	1	25	55	11	4	47	57	7	28	5	40	9	25	52	23	0	17	30	55	0	19	3	41	-22	12	7	36	-1	45
5	4	55	7	7	18	38	17	0	12	24	44	1	23	10	11	8	2	56	27	11	4	50	8	7	29	20	57	9	25	56	28	0	17	27	44	0	19	4	50	-22	20	13	8	-0	36
6	4	59	4	7	19	39	8	0	25	1	57	1	22	47	0	8	4	26	40	11	4	52	30	8	0	36	14	9	26	0	38	0	17	24	33	0	19	4	49	-22	28	18	3	0	33
7	5	3	0	7	20	40	1	1	7	28	26	1	22	23	50	8	5	56	29	11	4	55	5	8	1	51	31	9	26	4	53	0	17	21	22	0	19	3	12	-22	35	22	6	1	39
8	5	6	57	7	21	40	55	1	19	45	28	1	22	0	43	8	7	25	51	11	4	57	52	8	3	6	47	9	26	9	12	0	17	18	12	0	18	59	49	-22	41	25	7	2	40
9	5	10	53	7	22	41	49	2	1	54	11	1	21	37	43	8	8	54	40	11	5	0	51	8	4	22	3	9	26	13	37	0	17	15	1	0	18	54	44	-22	47	26	55	3	32
10	5	14	50	7	23	42	45	2	13	55	47	1	21	14	52	8	10	22	51	11	5	4	1	8	5	37	19	9	26	18	5	0	17	11	50	0	18	48	22	-22	53	27	26	4	15
11	5	18	47	7	24	43	41	2	25	51	46	1	20	52	13	8	11	50	16	11	5	7	23	8	6	52	35	9	26	22	39	0	17	8	39	0	18	41	18	-22	58	26	39	4	46
12	5	22	43	7	25	44	39	3	7	44	4	1	20	29	50	8	13	16	48	11	5	10	57	8	8	7	51	9	26	27	17	0	17	5	28	0	18	34	14	-23	3	24	40	5	4
13	5	26	40	7	26	45	37	3	19	35	12	1	20	7	43	8	14	42	17	11	5	14	43	8	9	23	7	9	26	32	0	0	17	2	17	0	18	27	54	-23	8	21	38	5	10
14	5	30	36	7	27	46	37	4	1	28	21	1	19	45	58	8	16	6	32	11	5	18	40	8	10	38	23	9	26	36	47	0	16	59	7	0	18	22	55	-23	12	17	42	5	2
15	5	34	33	7	28	47	37	4	13	27	20	1	19	24	35	8	17	29	18	11	5	22	48	8	11	53	38	9	26	41	39	0	16	55	56	0	18	19	40	-23	15	13	3	4	41
16	5	38	29	7	29	48	39	4	25	36	32	1	19	3	37	8	18	50	21	11	5	27	8	8	13	8	54	9	26	46	35	0	16	52	45	0	18	18	16	-23	18	7	50	4	7
17	5	42	26	8	0	49	42	5	8	0	40	1	18	43	8	8	20	9	23	11	5	31	39	8	14	24	9	9	26	51	35	0	16	49	34	0	18	18	27	-23	21	2	12	3	21
18	5	46	22	8	1	50	45	5	20	44	29	1	18	23	9	8	21	26	2	11	5	36	22	8	15	39	25	9	26	56	40	0	16	46	23	0	18	19	40	-23	23	-3	40	2	24
19	5	50	19	8	2	51	50	6	3	52	17	1	18	3	42	8	22	39	53	11	5	41	15	8	16	54	40	9	27	1	49	0	16	43	12	0	18	21	5	-23	24	-9	34	1	18
20	5	54	16	8	3	52	55	6	17	27	17	1	17	44	50	8	23	50	30	11	5	46	20	8	18	9	55	9	27	7	2	0	16	40	2	0	18	21	46	-23	25	-15	15	0	5
21	5	58	12	8	4	54	1	7	1	30	50	1	17	26	34	8	24	57	20	11	5	51	36	8	19	25	10	9	27	12	19	0	16	36	51	0	18	20	55	-23	26	-20	19	-1	10
22	6	2	9	8	5	55	8	7	16	1	34	1	17	8	57	8	25	59	46	11	5	57	2	8	20	40	24	9	27	17	40	0	16	33	40	0	18	17	57	-23	26	-24	21	-2	23
23	6	6	5	8	6	56	16	8	0	54	51	1	16	52	1	8	26	57	10	11	6	2	39	8	21	55	39	9	27	23	5	0	16	30	29	0	18	12	47	-23	26	-26	49	-3	28
24	6	10	2	8	7	57	23	8	16	2	51	1	16	35	46	8	27	48	45	11	6	8	27	8	23	10	53	9	27	28	34	0	16	27	18	0	18	5	45	-23	25	-27	22	-4	20
25	6	13	58	8	8	58	32	9	1	15	29	1	16	20	15	8	28	33	45	11	6	14	26	8	24	26	7	9	27	34	7	0	16	24	7	0	17	57	39	-23	24	-25	51	-4	53
26	6	17	55	8	9	59	40	9	16	22	6	1	16	5	28	8	29	11	16	11	6	20	35	8	25	41	20	9	27	39	43	0	16	20	57	0	17	49	30	-23	22	-22	30	-5	6
27	6	21	51	8	11	0	49	10	1	13	15	1	15	51	28	8	29	40	25	11	6	26	54	8	26	56	33	9	27	45	23	0	16	17	46	0	17	42	22	-23	20	-17	43	-4	58
28	6	25	48	8	12	1	58	10	15	42	13	1	15	38	14	9	0	0	17	11	6	33	24	8	28	11	45	9	27	51	7	0	16	14	35	0	17	37	5	-23	18	-12	2	-4	30
29	6	29	45	8	13	3	6	10	29	45	34	1	15	25	48	9	0	10	0	11	6	40	4	8	29	26	57	9	27	56	54	0	16	11	24	0	17	34	1	-23	14	-5	53	-3	47
30	6	33	41	8	14	4	15	11	13	22	56	1	15	14	10	9	0	8	48	11	6	46	53	9	0	42	8	9	28	2	45	0	16	8	13	0	17	33	3	-23	11	0	21	-2	52
31	6	37	38	8	15	5	24	11	26	36	13	1	15	3	21	8	29	56	6	11	6	53	53	9	1	57	18	9	28	8	39	0	16	5	2	0	17	33	33	-23	7	6	25	-1	50

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.), 1 जनवरी 2023 ई. को अयनांश 24° 10' 31"

जनवरी	साम्पातिक काल 0.0 h GMT			सूर्य				चन्द्र				मंगल				बुध				गुरु				शुक्र				शनि				मध्यम राहु				स्पष्ट राहु				सूर्य क्रां		चन्द्र क्रां		चन्द्रशर	
	घ.	मि.	से.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.
1	6	41	34	8	16	6	32	0	9	28	37	1	14	53	22	8	29	31	33	11	7	1	2	9	3	12	28	9	28	14	36	0	16	1	52	0	17	34	30	-23	2	12	3	-0	43
2	6	45	31	8	17	7	41	0	22	3	56	1	14	44	11	8	28	55	11	11	7	8	21	9	4	27	37	9	28	20	37	0	15	58	41	0	17	34	46	-22	57	17	5	0	24
3	6	49	27	8	18	8	49	1	4	25	51	1	14	35	50	8	28	7	27	11	7	15	49	9	5	42	45	9	28	26	41	0	15	55	30	0	17	33	16	-22	52	21	17	1	29
4	6	53	24	8	19	9	57	1	16	37	42	1	14	28	19	8	27	9	19	11	7	23	27	9	6	57	52	9	28	32	48	0	15	52	19	0	17	29	13	-22	46	24	31	2	28
5	6	57	20	8	20	11	5	1	28	42	13	1	14	21	37	8	26	2	16	11	7	31	14	9	8	12	58	9	28	38	58	0	15	49	8	0	17	22	15	-22	40	26	35	3	21
6	7	1	17	8	21	12	13	2	10	41	31	1	14	15	45	8	24	48	15	11	7	39	10	9	9	28	4	9	28	45	11	0	15	45	58	0	17	12	29	-22	33	27	24	4	3
7	7	5	14	8	22	13	20	2	22	37	11	1	14	10	41	8	23	29	37	11	7	47	15	9	10	43	9	9	28	51	26	0	15	42	47	0	17	0	30	-22	26	26	56	4	35
8	7	9	10	8	23	14	28	3	4	30	32	1	14	6	26	8	22	8	56	11	7	55	29	9	11	58	12	9	28	57	45	0	15	39	36	0	16	47	11	-22	18	25	14	4	55
9	7	13	7	8	24	15	35	3	16	22	50	1	14	3	0	8	20	48	51	11	8	3	51	9	13	13	15	9	29	4	6	0	15	36	25	0	16	33	40	-22	10	22	25	5	1
10	7	17	3	8	25	16	42	3	28	15	35	1	14	0	21	8	19	31	49	11	8	12	22	9	14	28	18	9	29	10	30	0	15	33	14	0	16	21	6	-22	2	18	41	4	55
11	7	21	0	8	26	17	49	4	10	10	45	1	13	58	30	8	18	20	3	11	8	21	2	9	15	43	19	9	29	16	57	0	15	30	3	0	16	10	31	-21	53	14	11	4	36
12	7	24	56	8	27	18	57	4	22	10	58	1	13	57	26	8	17	15	19	11	8	29	50	9	16	58	20	9	29	23	26	0	15	26	53	0	16	2	35	-21	43	9	8	4	4
13	7	28	53	8	28	20	4	5	4	19	35	1	13	57	9	8	16	18	56	11	8	38	47	9	18	13	19	9	29	29	58	0	15	23	42	0	15	57	33	-21	34	3	40	3	21
14	7	32	49	8	29	21	11	5	16	40	34	1	13	57	38	8	15	31	44	11	8	47	52	9	19	28	18	9	29	36	32	0	15	20	31	0	15	55	10	-21	23	-2	1	2	28
15	7	36	46	9	0	22	18	5	29	18	26	1	13	58	52	8	14	54	10	11	8	57	5	9	20	43	16	9	29	43	9	0	15	17	20	0	15	54	40	-21	13	-7	47	1	27
16	7	40	43	9	1	23	25	6	12	17	47	1	14	0	51	8	14	26	20	11	9	6	26	9	21	58	14	9	29	49	48	0	15	14	9	0	15	54	55	-21	2	-13	23	0	19
17	7	44	39	9	2	24	31	6	25	42	50	1	14	3	35	8	14	8	3	11	9	15	54	9	23	13	10	9	29	56	29	0	15	10	59	0	15	54	38	-20	50	-18	32	-0	52
18	7	48	36	9	3	25	38	7	9	36	35	1	14	7	3	8	13	58	57	11	9	25	31	9	24	28	5	10	0	3	13	0	15	7	48	0	15	52	36	-20	38	-22	54	-2	2
19	7	52	32	9	4	26	44	7	23	59	47	1	14	11	14	8	13	58	30	11	9	35	15	9	25	43	0	10	0	9	58	0	15	4	37	0	15	48	1	-20	26	-26	1	-3	7
20	7	56	29	9	5	27	50	8	8	49	54	1	14	16	8	8	14	6	8	11	9	45	7	9	26	57	53	10	0	16	46	0	15	1	26	0	15	40	35	-20	14	-27	25	-4	1
21	8	0	25	9	6	28	55	8	24	0	34	1	14	21	44	8	14	21	15	11	9	55	7	9	28	12	45	10	0	23	35	0	14	58	15	0	15	30	42	-20	1	-26	49	-4	39
22	8	4	22	9	7	30	0	9	9	21	58	1	14	28	1	8	14	43	13	11	10	5	13	9	29	27	36	10	0	30	27	0	14	55	5	0	15	19	17	-19	47	-24	12	-4	58
23	8	8	18	9	8	31	4	9	24	42	18	1	14	34	59	8	15	11	26	11	10	15	27	10	0	42	26	10	0	37	20	0	14	51	54	0	15	7	37	-19	33	-19	51	-4	56
24	8	12	15	9	9	32	7	10	9	49	56	1	14	42	37	8	15	45	21	11	10	25	49	10	1	57	14	10	0	44	15	0	14	48	43	0	14	57	1	-19	19	-14	16	-4	33
25	8	16	12	9	10	33	10	10	24	35	26	1	14	50	54	8	16	24	25	11	10	36	17	10	3	12	1	10	0	51	12	0	14	45	32	0	14	48	37	-19	5	-7	59	-3	51
26	8	20	8	9	11	34	11	11	8	52	58	1	14	59	49	8	17	8	8	11	10	46	52	10	4	26	46	10	0	58	10	0	14	42	21	0	14	42	56	-18	50	-1	29	-2	57
27	8	24	5	9	12	35	11	11	22	40	30	1	15	9	22	8	17	56	6	11	10	57	33	10	5	41	30	10	1	5	10	0	14	39	11	0	14	39	58	-18	35	4	53	-1	53
28	8	28	1	9	13	36	11	0	5	59	14	1	15	19	32	8	18	47	53	11	11	8	22	10	6	56	12	10	1	12	11	0	14	36	0	0	14	39	3	-18	19	10	49	-0	46
29	8	31	58	9	14	37	9	0	18	52	32	1	15	30	18	8	19	43	8	11	11	19	16	10	8	10	52	10	1	19	13	0	14	32	49	0	14	39	4	-18	4	16	7	0	22
30	8	35	54	9	15	38	6	1	1	24	53	1	15	41	39	8	20	41	31	11	11	30	17	10	9	25	31	10	1	26	17	0	14	29	38	0	14	38	43	-17	47	20	34	1	27
31	8	39	51	9	16	39	1	1	13	41	6	1	15	53	35	8	21	42	46	11	11	41	25	10	10	40	8	10	1	33	22	0	14	26	27	0	14	36	45	-17	31	24	2	2	27

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.), 1 फरवरी 2023 ई. को अयनांश 24° 10' 37"

फरवरी	साम्पातिक काल 0.0 h GMT			सूर्य				चन्द्र				मंगल				बुध				गुरु			
	घ.	मि.	से.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.
1	8	43	47	9	17	39	56	1	25	45	50	1	16	6	3	8	22	46	37	11	11	52	38
2	8	47	44	9	18	40	49	2	7	43	9	1	16	19	5	8	23	52	51	11	12	3	58
3	8	51	41	9	19	41	41	2	19	36	27	1	16	32	38	8	25	1	16	11	12	15	23
4	8	55	37	9	20	42	32	3	1	28	19	1	16	46	43	8	26	11	42	11	12	26	54
5	8	59	34	9	21	43	21	3	13	20	42	1	17	1	17	8	27	23	59	11	12	38	31
6	9	3	30	9	22	44	10	3	25	15	2	1	17	16	21	8	28	38	0	11	12	50	13
7	9	7	27	9	23	44	57	4	7	12	27	1	17	31	54	8	29	53	38	11	13	2	1
8	9	11	23	9	24	45	43	4	19	14	11	1	17	47	55	9	1	10	46	11	13	13	54
9	9	15	20	9	25	46	28	5	1	21	43	1	18	4	24	9	2	29	20	11	13	25	53
10	9	19	16	9	26	47	12	5	13	37	6	1	18	21	19	9	3	49	14	11	13	37	57
11	9	23	13	9	27	47	55	5	26	3	1	1	18	38	41	9	5	10	25	11	13	50	6
12	9	27	10	9	28	48	37	6	8	42	42	1	18	56	28	9	6	32	49	11	14	2	19
13	9	31	6	9	29	49	17	6	21	39	52	1	19	14	40	9	7	56	22	11	14	14	38
14	9	35	3	10	0	49	57	7	4	58	13	1	19	33	17	9	9	21	3	11	14	27	2
15	9	38	59	10	1	50	36	7	18	40	54	1	19	52	18	9	10	46	49	11	14	39	30
16	9	42	56	10	2	51	13	8	2	49	38	1	20	11	42	9	12	13	37	11	14	52	3
17	9	46	52	10	3	51	49	8	17	23	42	1	20	31	30	9	13	41	28	11	15	4	40
18	9	50	49	10	4	52	24	9	2	19	10	1	20	51	40	9	15	10	18	11	15	17	22
19	9	54	45	10	5	52	58	9	17	28	41	1	21	12	12	9	16	40	8	11	15	30	9
20	9	58	42	10	6	53	30	10	2	42	16	1	21	33	6	9	18	10	57	11	15	42	59
21	10	2	39	10	7	54	1	10	17	48	57	1	21	54	20	9	19	42	43	11	15	55	54
22	10	6	35	10	8	54	29	11	2	38	40	1	22	15	55	9	21	15	28	11	16	8	53
23	10	10	32	10	9	54	57	11	17	3	56	1	22	37	51	9	22	49	11	11	16	21	55
24	10	14	28	10	10	55	22	0	1	0	44	1	23	0	5	9	24	23	52	11	16	35	2
25	10	18	25	10	11	55	46	0	14	28	24	1	23	22	39	9	25	59	30	11	16	48	12
26	10	22	21	10	12	56	8	0	27	28	56	1	23	45	32	9	27	36	7	11	17	1	25
27	10	26	18	10	13	56	27	1	10	6	7	1	24	8	42	9	29	13	44	11	17	14	43
28	10	30	14	10	14	56	45	1	22	24	39	1	24	32	10	10	0	52	19	11	17	28	3

फरवरी	शुक्र				शनि				मध्यम राहु				स्पष्ट राहु				सूर्य क्रां		चन्द्र क्रां		चन्द्रशर	
	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.
1	10	11	54	42	10	1	40	28	0	14	23	17	0	14	32	14	-17	14	26	21	3	19
2	10	13	9	15	10	1	47	36	0	14	20	6	0	14	24	39	-16	57	27	26	4	1
3	10	14	23	46	10	1	54	44	0	14	16	55	0	14	14	3	-16	40	27	15	4	33
4	10	15	38	15	10	2	1	53	0	14	13	44	0	14	0	57	-16	22	25	48	4	52
5	10	16	52	41	10	2	9	3	0	14	10	33	0	13	46	18	-16	4	23	12	4	59
6	10	18	7	6	10	2	16	14	0	14	7	23	0	13	31	17	-15	46	19	38	4	53
7	10	19	21	28	10	2	23	26	0	14	4	12	0	13	17	8	-15	27	15	15	4	34
8	10	20	35	49	10	2	30	38	0	14	1	1	0	13	4	59	-15	9	10	15	4	3
9	10	21	50	7	10	2	37	51	0	13	57	50	0	12	55	39	-14	50	4	50	3	20
10	10	23	4	23	10	2	45	4	0	13	54	39	0	12	49	27	-14	30	-0	50	2	28
11	10	24	18	37	10	2	52	18	0	13	51	29	0	12	46	15	-14	11	-6	34	1	27
12	10	25	32	48	10	2	59	33	0	13	48	18	0	12	45	19	-13	51	-12	8	0	21
13	10	26	46	58	10	3	6	47	0	13	45	7	0	12	45	34	-13	31	-17	20	-0	47
14	10	28	1	5	10	3	14	3	0	13	41	56	0	12	45	42	-13	11	-21	50	-1	55
15	10	29	15	10	10	3	21	18	0	13	38	46	0	12	44	30	-12	51	-25	17	-2	58
16	11	0	29	12	10	3	28	33	0	13	35	35	0	12	41	4	-12	30	-27	17	-3	53
17	11	1	43	13	10	3	35	49	0	13	32	24	0	12	35	3	-12	9	-27	29	-4	34
18	11	2	57	10	10	3	43	4	0	13	29	13	0	12	26	40	-11	48	-25	43	-4	58
19	11	4	11	6	10	3	50	20	0	13	26	3	0	12	16	45	-11	27	-22	6	-5	1
20	11	5	24	58	10	3	57	35	0	13	22	52	0	12	6	26	-11	6	-16	59	-4	43
21	11	6	38	48	10	4	4	50	0	13	19	41	0	11	56	58	-10	44	-10	51	-4	6
22	11	7	52	35	10	4	12	5	0	13	16	30	0	11	49	23	-10	22	-4	12	-3	12
23	11	9	6	19	10	4	19	20	0	13	13	20	0	11	44	16	-10	0	2	30	-2	7
24	11	10	20	0	10	4	26	34	0	13	10	9	0	11	41	41	-9	38	8	52	-0	57
25	11	11	33	38	10	4	33	47	0	13	6	58	0	11	41	10	-9	16	14	37	0	15
26	11	12	47	13	10	4	41	0	0	13	3	47	0	11	41	48	-8	54	19	31	1	23
27	11	14	0	45	10	4	48	12	0	13	0	37	0	11	42	32	-8	31	23	23	2	26
28	11	15	14	13	10	4	55	24	0	12	57	26	0	11	42	18	-8	9	26	5	3	20

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.), 1 मार्च 2023 ई. को अयनांश 24° 10' 41"

मार्च	साम्पातिक काल 0.0 h GMT			सूर्य				चन्द्र				मंगल				बुध				गुरु				शुक्र				शनि				मध्यम राहु				स्पष्ट राहु				सूर्य क्रां		चन्द्र क्रां		चन्द्रशर	
	घ.	मि.	से.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.
1	10	34	11	10	15	57	1	2	4	29	34	1	24	55	55	10	2	31	55	11	17	41	27	11	16	27	38	10	5	2	35	0	12	54	15	0	11	40	16	-7	46	27	30	4	4
2	10	38	7	10	16	57	14	2	16	25	42	1	25	19	57	10	4	12	32	11	17	54	54	11	17	40	59	10	5	9	44	0	12	51	4	0	11	36	0	-7	23	27	37	4	37
3	10	42	4	10	17	57	26	2	28	17	28	1	25	44	14	10	5	54	10	11	18	8	24	11	18	54	16	10	5	16	53	0	12	47	54	0	11	29	24	-7	1	26	27	4	57
4	10	46	1	10	18	57	36	3	10	8	34	1	26	8	48	10	7	36	52	11	18	21	58	11	20	7	30	10	5	24	1	0	12	44	43	0	11	20	50	-6	38	24	7	5	5
5	10	49	57	10	19	57	44	3	22	2	0	1	26	33	36	10	9	20	36	11	18	35	34	11	21	20	40	10	5	31	8	0	12	41	32	0	11	10	59	-6	14	20	45	5	0
6	10	53	54	10	20	57	49	4	4	0	3	1	26	58	40	10	11	5	25	11	18	49	13	11	22	33	47	10	5	38	14	0	12	38	21	0	11	0	42	-5	51	16	30	4	42
7	10	57	50	10	21	57	53	4	16	4	22	1	27	23	58	10	12	51	19	11	19	2	55	11	23	46	49	10	5	45	19	0	12	35	11	0	10	50	56	-5	28	11	35	4	10
8	11	1	47	10	22	57	55	4	28	16	11	1	27	49	30	10	14	38	19	11	19	16	39	11	24	59	48	10	5	52	22	0	12	32	0	0	10	42	34	-5	5	6	10	3	27
9	11	5	43	10	23	57	55	5	10	36	27	1	28	15	16	10	16	26	25	11	19	30	26	11	26	12	43	10	5	59	24	0	12	28	49	0	10	36	16	-4	41	0	27	2	34
10	11	9	40	10	24	57	54	5	23	6	9	1	28	41	15	10	18	15	38	11	19	44	16	11	27	25	33	10	6	6	25	0	12	25	38	0	10	32	20	-4	18	-5	22	1	33
11	11	13	36	10	25	57	50	6	5	46	29	1	29	7	28	10	20	5	58	11	19	58	8	11	28	38	20	10	6	13	25	0	12	22	28	0	10	30	43	-3	54	-11	3	0	26
12	11	17	33	10	26	57	45	6	18	39	0	1	29	33	53	10	21	57	26	11	20	12	2	11	29	51	3	10	6	20	23	0	12	19	17	0	10	30	57	-3	31	-16	23	-0	44
13	11	21	30	10	27	57	39	7	1	45	37	2	0	0	31	10	23	50	0	11	20	25	59	0	1	3	42	10	6	27	19	0	12	16	6	0	10	32	16	-3	7	-21	4	-1	52
14	11	25	26	10	28	57	30	7	15	8	19	2	0	27	21	10	25	43	41	11	20	39	58	0	2	16	17	10	6	34	14	0	12	12	55	0	10	33	44	-2	43	-24	45	-2	56
15	11	29	23	10	29	57	20	7	28	48	53	2	0	54	24	10	27	38	27	11	20	53	59	0	3	28	47	10	6	41	7	0	12	9	45	0	10	34	28	-2	20	-27	7	-3	52
16	11	33	19	11	0	57	9	8	12	48	18	2	1	21	38	10	29	34	15	11	21	8	3	0	4	41	14	10	6	47	58	0	12	6	34	0	10	33	48	-1	56	-27	50	-4	35
17	11	37	16	11	1	56	55	8	27	6	12	2	1	49	4	11	1	31	5	11	21	22	8	0	5	53	37	10	6	54	48	0	12	3	23	0	10	31	26	-1	32	-26	43	-5	2
18	11	41	12	11	2	56	40	9	11	40	14	2	2	16	42	11	3	28	50	11	21	36	15	0	7	5	55	10	7	1	36	0	12	0	12	0	10	27	28	-1	9	-23	49	-5	10
19	11	45	9	11	3	56	24	9	26	25	45	2	2	44	31	11	5	27	28	11	21	50	24	0	8	18	9	10	7	8	22	0	11	57	2	0	10	22	24	-0	45	-19	20	-4	58
20	11	49	5	11	4	56	5	10	11	16	2	2	3	12	31	11	7	26	52	11	22	4	35	0	9	30	18	10	7	15	5	0	11	53	51	0	10	16	58	-0	21	-13	38	-4	26
21	11	53	2	11	5	55	44	10	26	3	7	2	3	40	41	11	9	26	55	11	22	18	48	0	10	42	23	10	7	21	47	0	11	50	40	0	10	11	59	0	3	-7	12	-3	37
22	11	56	59	11	6	55	22	11	10	38	58	2	4	9	2	11	11	27	28	11	22	33	2	0	11	54	24	10	7	28	27	0	11	47	29	0	10	8	5	0	26	-0	26	-2	34
23	12	0	55	11	7	54	57	11	24	56	45	2	4	37	34	11	13	28	21	11	22	47	17	0	13	6	19	10	7	35	4	0	11	44	19	0	10	5	44	0	50	6	14	-1	22
24	12	4	52	11	8	54	31	0	8	51	47	2	5	6	15	11	15	29	21	11	23	1	34	0	14	18	10	10	7	41	39	0	11	41	8	0	10	4	57	1	14	12	25	-0	7
25	12	8	48	11	9	54	2	0	22	21	53	2	5	35	7	11	17	30	15	11	23	15	53	0	15	29	56	10	7	48	12	0	11	37	57	0	10	5	32	1	37	17	51	1	7
26	12	12	45	11	10	53	31	1	5	27	11	2	6	4	8	11	19	30	46	11	23	30	12	0	16	41	37	10	7	54	42	0	11	34	46	0	10	6	57	2	1	22	16	2	14
27	12	16	41	11	11	52	58	1	18	9	49	2	6	33	18	11	21	30	36	11	23	44	33	0	17	53	12	10	8	1	10	0	11	31	36	0	10	8	38	2	24	25	28	3	14
28	12	20	38	11	12	52	23	2	0	33	16	2	7	2	37	11	23	29	26	11	23	58	55	0	19	4	42	10	8	7	35	0	11	28	25	0	10	9	59	2	48	27	22	4	2
29	12	24	34	11	13	51	45	2	12	41	51	2	7	32	5	11	25	26	54	11	24	13	17	0	20	16	7	10	8	13	57	0	11	25	14	0	10	10	32	3	11	27	54	4	39
30	12	28	31	11	14	51	5	2	24	40	19	2	8	1	42	11	27	22	37	11	24	27	41	0	21	27	26	10	8	20	17	0	11	22	3	0	10	10	1	3	35	27	6	5	2
31	12	32	28	11	15	50	22	3	6	33	25	2	8	31	27	11	29	16	11	11	24	42	5	0	22	38	39	10	8	26	34	0	11	18	53	0	10	8	22	3	58	26	5	5	13

अक्षांशभेद से भारत में चन्द्रदर्शन की तारीखें (सं. 2079 वि.)

मास	चैत्र	वैशाख	ज्येष्ठ	आषाढ़	श्रावण	भाद्रपद	आश्विन	कार्त्तिक	मार्गशीर्ष	पौष	माघ	फाल्गुन
भारतीय अक्षांश	चन्द्रदर्शन (2022 ई.)	चन्द्रदर्शन (2022 ई.)	चन्द्रदर्शन (2022 ई.)	चन्द्रदर्शन (2022 ई.)	चन्द्रदर्शन (2022 ई.)	चन्द्रदर्शन (2022 ई.)	चन्द्रदर्शन (2022 ई.)	चन्द्रदर्शन (2022 ई.)	चन्द्रदर्शन (2022 ई.)	चन्द्रदर्शन (2022 ई.)	चन्द्रदर्शन (2023 ई.)	चन्द्रदर्शन (2023 ई.)
+ 5^0	2 अप्रैल	2 मई	31 मई	30 जून	30 जुलाई	28 अगस्त	27 सितंबर	△26 अक्तू.	25 नवंबर	24 दिसंबर	22 जनवरी	21 फरवरी
+ 15^0	2 अप्रैल	2 मई	31 मई	30 जून	30 जुलाई	28 अगस्त	27 सितंबर	△26 अक्तू.	25 नवंबर	24 दिसंबर	23 जनवरी	21 फरवरी
+ 25^0	2 अप्रैल	2 मई	*1 जून	30 जून	30 जुलाई	28 अगस्त	27 सितंबर	27 अक्तू.	25 नवंबर	24 दिसंबर	23 जनवरी	21 फरवरी
+ 35^0	2 अप्रैल	2 मई	*1 जून	30 जून	30 जुलाई	28 अगस्त	27 सितंबर	27 अक्तू.	25 नवंबर	24 दिसंबर	23 जनवरी	21 फरवरी

* 25° से 35° उत्तरी अक्षांश तक के अधिकतर स्थलों पर 31 मई को भी चंद्रदर्शन की पर्याप्त संभावना है।

△ लगभग 5° से 15° उत्तर अक्षांशीय स्थलों पर 26 अक्तूबर को चंद्रदर्शन की पूरी-पूरी संभावना है।

Pin- 134 109, Phone-0172-2565303,

चण्डीगढ़ में चन्द्रोदयास्त-काल (भा. स्टैं. टा.), सन् 2022 ई.

तारीख	जनवरी				फरवरी				मार्च				अप्रैल			
	उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त	
	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
1	05	39	15	58	07	30	18	06	06	07	16	54	06	22	18	51
2	06	51	17	00	08	15	19	15	06	47	18	01	06	52	19	50
3	07	57	18	09	08	53	20	21	07	22	19	04	07	22	20	48
4	08	55	19	21	09	26	21	23	07	54	20	06	07	53	21	46
5	09	43	20	31	09	57	22	22	08	24	21	05	08	28	22	44
6	10	24	21	37	10	26	23	20	08	53	22	03	09	06	23	41
7	10	59	22	39	10	56	–	–	09	24	23	01	09	49	–	–
8	11	30	23	38	11	26	00	16	09	56	23	58	10	37	00	35
9	11	59	–	–	12	00	01	13	10	32	–	–	11	30	01	26
10	12	27	00	35	12	37	02	09	11	12	00	55	12	26	02	13
11	12	56	01	30	13	18	03	05	11	57	01	51	13	24	02	55
12	13	28	02	26	14	05	04	00	12	47	02	44	14	23	03	32
13	14	02	03	21	14	57	04	52	13	41	03	33	15	24	04	06
14	14	40	04	17	15	53	05	39	14	39	04	18	16	24	04	38
15	15	24	05	13	16	52	06	23	15	39	04	59	17	26	05	09
16	16	12	06	07	17	52	07	02	16	39	05	35	18	30	05	40
17	17	06	06	57	18	52	07	37	17	40	06	09	19	37	06	13
18	18	03	07	44	19	52	08	10	18	41	06	40	20	46	06	50
19	19	01	08	26	20	52	08	41	19	43	07	11	21	58	07	31
20	20	01	09	03	21	53	09	11	20	47	07	43	23	08	08	19
21	21	00	09	37	22	56	09	42	21	53	08	16	–	–	09	15
22	21	59	10	08	–	–	10	16	23	01	08	53	00	14	10	18
23	22	58	10	38	00	01	10	54	–	–	09	36	01	13	11	25
24	23	59	11	08	01	09	11	38	00	10	10	25	02	03	12	33
25	–	–	11	40	02	17	12	30	01	17	11	22	02	46	13	39
26	01	02	12	15	03	24	13	29	02	20	12	26	03	22	14	42
27	02	09	12	56	04	25	14	35	03	16	13	33	03	55	15	43
28	03	18	13	44	05	20	15	45	04	04	14	40	04	25	16	42
29	04	29	14	40					04	45	15	46	04	53	17	40
30	05	36	15	44					05	20	16	50	05	22	18	37
31	06	37	16	54					05	52	17	51				

मई				जून				जुलाई				अगस्त				तारीख
उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		
घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	
5	53	19	35	6	26	21	13	6	58	21	28	8	41	21	39	1
6	26	20	33	7	15	22	3	7	55	22	4	9	38	22	8	2
7	3	21	31	8	8	22	48	8	52	22	37	10	36	22	36	3
7	44	22	27	9	4	23	28	9	49	23	8	11	35	23	7	4
8	30	23	19	10	1	–	–	10	46	23	36	12	37	23	42	5
9	21	–	–	10	58	0	4	11	43	–	–	13	43	–	–	6
10	15	0	7	11	56	0	36	12	42	0	5	14	52	0	22	7
11	12	0	51	12	54	1	6	13	44	0	35	16	2	1	10	8
12	10	1	29	13	53	1	35	14	49	1	8	17	9	2	8	9
13	9	2	4	14	55	2	5	15	59	1	46	18	10	3	14	10
14	8	2	36	16	1	2	37	17	11	2	30	19	2	4	27	11
15	8	3	7	17	10	3	13	18	22	3	24	19	46	5	40	12
16	10	3	37	18	23	3	55	19	29	4	28	20	24	6	52	13
17	15	4	9	19	37	4	45	20	26	5	39	20	57	8	0	14
18	24	4	43	20	46	5	45	21	14	6	53	21	28	9	4	15
19	36	5	22	21	48	6	52	21	54	8	5	21	59	10	6	16
20	49	6	8	22	39	8	4	22	29	9	14	22	29	11	6	17
22	0	7	2	23	22	9	16	23	1	10	18	23	2	12	5	18
23	5	8	5	23	59	10	25	23	30	11	20	23	38	13	4	19
24	0	9	13	–	–	11	29	24	00	12	19	–	–	14	2	20
–	–	10	23	0	31	12	30	–	–	13	17	0	18	14	58	21
0	46	11	31	1	0	13	29	0	30	14	14	1	2	15	52	22
1	24	12	36	1	29	14	26	1	3	15	12	1	52	16	41	23
1	58	13	37	1	58	15	23	1	40	16	9	2	46	17	26	24
2	28	14	36	2	29	16	20	2	21	17	4	3	42	18	5	25
2	57	15	34	3	3	17	17	3	7	17	56	4	40	18	41	26
3	26	16	31	3	41	18	14	3	58	18	44	5	38	19	13	27
3	55	17	28	4	23	19	9	4	53	19	27	6	35	19	42	28
4	27	18	26	5	11	20	00	5	49	20	5	7	33	20	11	29
5	2	19	23	6	3	20	46	6	47	20	39	8	31	20	40	30
5	41	20	20					7	44	21	10	9	30	21	10	31

चण्डीगढ़ में चन्द्रोदयास्त काल (भा. स्टैं. टा.), सन् 2022-23 ई.

तारीख	सितंबर				अक्तूबर				नवंबर				दिसंबर				जनवरी				फरवरी				मार्च				तारीख
	उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		
	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	
1	10	31	21	43	11	43	21	52	13	34	–	–	13	27	0	11	13	29	2	8	14	2	3	58	12	46	2	48	1
2	11	35	22	20	12	50	22	50	14	15	0	5	13	57	1	14	14	2	3	8	14	51	4	53	13	38	3	40	2
3	12	42	23	4	13	52	23	55	14	51	1	12	14	26	2	15	14	38	4	7	15	45	5	44	14	33	4	27	3
4	13	50	23	57	14	47	–	–	15	24	2	17	14	56	3	14	15	19	5	6	16	41	6	29	15	30	5	9	4
5	14	56	–	–	15	34	1	4	15	54	3	20	15	27	4	14	16	5	6	3	17	38	7	9	16	27	5	45	5
6	15	58	0	58	16	15	2	14	16	24	4	21	16	1	5	13	16	56	6	57	18	34	7	44	17	24	6	18	6
7	16	52	2	6	16	50	3	22	16	54	5	22	16	39	6	13	17	50	7	47	19	30	8	15	18	20	6	47	7
8	17	38	3	18	17	23	4	28	17	26	6	22	17	22	7	12	18	47	8	30	20	25	8	44	19	15	7	15	8
9	18	18	4	29	17	53	5	31	18	2	7	23	18	10	8	9	19	44	9	9	21	20	9	11	20	11	7	41	9
10	18	53	5	38	18	24	6	33	18	42	8	23	19	2	9	3	20	40	9	43	22	16	9	38	21	9	8	9	10
11	19	25	6	44	18	55	7	35	19	27	9	22	19	57	9	50	21	35	10	13	23	14	10	5	22	8	8	37	11
12	19	55	7	48	19	29	8	36	20	17	10	18	20	54	10	32	22	30	10	41	–	–	10	35	23	11	9	10	12
13	20	26	8	50	20	7	9	37	21	10	11	9	21	50	11	9	23	25	11	8	0	14	11	9	–	–	9	47	13
14	20	59	9	51	20	48	10	37	22	6	11	55	22	46	11	42	–	–	11	35	1	18	11	48	0	16	10	31	14
15	21	34	10	51	21	35	11	34	23	3	12	35	23	42	12	11	0	22	12	3	2	25	12	36	1	23	11	23	15
16	22	13	11	51	22	26	12	28	24	0	13	10	–	–	12	39	1	22	12	35	3	33	13	34	2	27	12	24	16
17	22	56	12	49	23	21	13	16	–	–	13	42	0	38	13	7	2	25	13	12	4	39	14	40	3	27	13	33	17
18	23	44	13	44	–	–	14	00	0	57	14	11	1	35	13	35	3	33	13	57	5	37	15	53	4	19	14	45	18
19	–	–	14	36	0	17	14	38	1	54	14	40	2	35	14	6	4	43	14	51	6	29	17	8	5	4	15	57	19
20	0	36	15	22	1	15	15	12	2	52	15	8	3	38	14	41	5	53	15	55	7	12	18	22	5	43	17	8	20
21	1	32	16	3	2	13	15	43	3	52	15	38	4	46	15	23	6	58	17	7	7	50	19	32	6	18	18	16	21
22	2	30	16	40	3	11	16	13	4	55	16	12	5	58	16	13	7	54	18	23	8	24	20	39	6	51	19	22	22
23	3	28	17	13	4	9	16	41	6	1	16	50	7	10	17	13	8	42	19	37	8	56	21	44	7	22	20	27	23
24	4	26	17	44	5	8	17	11	7	12	17	36	8	18	18	22	9	22	20	48	9	27	22	47	7	55	21	32	24
25	5	24	18	13	6	10	17	42	8	24	18	31	9	18	19	36	9	57	21	55	10	0	23	50	8	30	22	36	25
26	6	22	18	42	7	15	18	18	9	34	19	35	10	9	20	49	10	29	22	58	10	35	–	–	9	8	23	38	26
27	7	22	19	11	8	22	18	59	10	37	20	44	10	51	21	59	10	59	24	0	11	14	0	51	9	50	–	–	27
28	8	24	19	44	9	32	19	47	11	30	21	55	11	27	23	6	11	30	–	–	11	57	1	51	10	37	0	38	28
29	9	28	20	20	10	41	20	43	12	15	23	5	11	59	–	–	12	2	1	1					11	29	1	33	29
30	10	35	21	2	11	46	21	47	12	54	–	–	12	29	0	8	12	38	2	1					12	24	2	23	30
31					12	44	22	56					12	59	1	9	13	17	3	0					13	21	3	7	31

यूरेनस, नेप्च्यून, प्लूटो के निरयण भोगांश और भौमादि ग्रहों के क्रान्ति-शर (सन 2022 ई.) (प्रातः 5घं. 30 मि.) (भा. स्टैं. टा.)

तारीख सन्	यूरेनस	नेप्च्यून	प्लूटो	मंगल		बुध		गुरु		शुक्र		शनि		यूरेनस		नेप्च्यून		प्लूटो	
				क्रांती	शर	क्रांती	शर	क्रांती	शर	क्रांती	शर	क्रांती	शर	क्रांती	शर	क्रांती	शर	क्रांती	शर
2022 ई.	रा. अं. क.	रा. अं. क.	रा. अं. क	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क
जनवरी 01	0 16 48	10 26 31	09 01 46	-22 30	-0 01	-22 18	-1 49	-12 13	-01 00	-18 35	02 53	-18 01	-0 49	14 44	-0 24	-4 44	-01 08	-22 39	-01 44
04	0 16 45	10 26 34	09 01 52	-22 47	-0 10	-21 05	-1 28	-12 00	-01 00	-18 04	03 40	-17 55	-0 50	14 43	-0 24	-4 43	-01 08	-22 38	-01 44
07	0 16 43	10 26 37	09 01 58	-23 02	-0 12	-19 46	-0 59	-11 47	-00 59	-17 36	04 24	-17 50	-0 50	14 42	-0 24	-4 42	-01 08	-22 38	-01 44
10	0 16 41	10 26 41	09 02 04	-23 15	-0 14	-18 26	-0 20	-11 33	-00 59	-17 12	05 04	-17 44	-0 50	14 42	-0 24	-4 40	-01 08	-22 37	-01 44
13	0 16 40	10 26 45	09 02 10	-23 27	-0 16	-17 15	0 28	-11 11	-00 59	-16 51	05 38	-17 38	-0 50	14 42	-0 24	-4 38	-01 08	-22 36	-01 45
16	0 16 40	10 26 49	09 02 16	-23 36	-0 18	-16 23	1 23	-11 05	-00 59	-16 34	06 06	-17 32	-0 50	14 42	-0 24	-4 37	-01 08	-22 35	-01 45
19	0 16 39	10 26 54	09 02 22	-23 43	-0 20	-15 58	2 17	-10 51	-00 59	-16 22	06 27	-17 27	-0 50	14 42	-0 24	-4 35	-01 08	-22 34	-01 45
22	0 16 40	10 26 59	09 02 28	-23 48	-022	-16 01	3 02	-10 36	-00 59	-16 14	06 40	-17 21	-0 50	14 42	-0 24	-4 33	-01 08	-22 33	-01 45
25	0 16 40	10 27 04	09 02 33	-23 51	-0 24	-16 27	3 29	-10 21	-00 59	-16 10	06 48	-17 14	-0 50	14 42	-0 24	-4 31	-01 07	-22 32	-01 46
28	0 16 42	10 27 09	09 02 39	-23 51	-0 27	-17 05	3 33	-10 06	-00 58	-16 10	06 49	-17 08	-0 51	14 43	-0 24	-4 29	-01 07	-22 31	-01 46
31	0 16 43	10 27 14	09 02 45	-23 50	-0 29	-17 46	3 19	-09 51	-00 58	-16 13	06 46	-17 02	-0 51	14 43	-0 23	-4 26	-01 07	-22 31	-01 46
फरवरी 01	0 16 44	10 27 16	09 02 47	-23 49	-0 29	-18 00	03 11	-09 46	-00 58	-16 15	06 44	-17 00	-0 51	14 43	-00 23	-4 26	-01 07	-22 30	-01 46
04	0 16 46	10 27 22	09 02 53	-23 45	-0 32	-18 35	02 41	-09 30	-00 58	-16 21	06 36	-16 54	-0 51	14 44	-00 23	-4 23	-01 07	-22 29	-01 47
07	0 16 49	10 27 28	09 02 58	-23 38	-0 34	-18 04	02 00	-09 15	-00 58	-16 28	06 24	-16 48	-0 51	14 45	-00 23	-4 21	-01 07	-22 29	-01 47
10	0 16 52	10 27 34	09 03 04	-23 30	-0 36	-18 23	01 33	-08 59	-00 58	-16 36	06 11	-16 41	-0 51	14 46	-00 23	-4 19	-01 07	-22 28	-01 47
13	0 16 56	10 27 40	09 03 10	-23 19	-0 38	-18 32	00 58	-08 43	-00 58	-16 43	05 55	-16 35	-0 52	14 47	-00 23	-4 16	-01 07	-22 27	-01 48
16	0 17 0	10 27 46	09 03 15	-23 06	-0 40	-18 30	00 26	-08 26	-00 58	-16 50	05 36	-16 21	-0 52	14 49	-00 23	-4 14	-01 07	-22 26	-01 48
19	0 17 5	10 27 52	09 03 20	-22 51	-0 43	-18 17	-00 04	-08 10	-00 58	-16 55	05 19	-16 22	-0 52	14 50	-00 23	-4 11	-01 07	-22 26	-01 48
22	0 17 10	10 27 59	09 03 25	-22 33	-0 45	-18 53	-00 31	-07 54	-00 58	-16 57	05 00	-16 16	-0 52	14 52	-00 23	-4 09	-01 07	-22 25	-01 49
25	0 17 15	10 28 05	09 03 13	-22 14	-0 47	-17 17	-00 56	-07 37	-00 58	-16 58	04 40	-16 10	-0 53	14 54	-00 23	-4 06	-01 07	-22 24	-01 49
28	0 17 21	10 28 12	09 03 35	-21 53	-0 49	-17 29	-01 17	-07 20	-00 59	-16 55	04 20	-16 04	-0 53	14 56	-00 23	-4 03	-01 07	-22 24	-01 49
मार्च 01	0 17 23	10 28 14	09 03 37	-21 45	-0 50	-17 11	-01 23	-07 15	-00 59	-16 53	04 13	-16 02	-0 53	14 56	-00 23	-4 03	-01 07	-22 24	-01 49
04	0 17 29	10 28 21	09 03 41	-21 21	-0 52	-16 08	-01 41	-06 58	-00 59	-16 45	03 52	-15 56	-0 53	14 58	-00 23	-4 00	-01 07	-22 23	-01 50
07	0 17 36	10 28 28	09 03 45	-20 55	-0 55	-14 53	-01 54	-06 41	-00 59	-16 34	03 32	-15 50	-0 54	15 00	-00 23	-3 57	-01 07	-22 23	-01 50
10	0 17 43	10 28 35	09 03 50	-20 27	-0 57	-13 27	-02 05	-06 25	-00 59	-16 19	03 11	-15 44	-0 54	15 03	-00 22	-3 55	-01 07	-22 22	-01 51
13	0 17 50	10 28 42	09 03 54	-19 58	-0 59	-11 15	-02 12	-06 08	-00 59	-15 59	02 51	-15 38	-0 54	15 05	-00 22	-3 52	-01 07	-22 22	-01 51
16	0 17 58	10 28 48	09 03 57	-19 26	-1 01	-10 02	-02 14	-05 51	-00 59	-15 36	02 31	-15 32	-0 55	15 07	-00 22	-3 49	-01 07	-22 21	-01 51
19	0 18 6	10 28 55	09 04 01	-18 53	-1 03	-08 03	-02 13	-05 34	-00 59	-15 08	02 11	-15 26	-0 55	15 10	-00 22	-3 47	-01 07	-22 21	-01 52
22	0 18 14	10 29 02	09 04 04	-18 18	-1 06	-05 53	-02 08	-05 18	-01 00	-14 36	01 52	-15 21	-0 55	15 12	-00 22	-3 44	-01 07	-22 21	-01 52
25	0 18 23	10 29 09	09 04 07	-17 42	-1 08	-03 34	-01 59	-05 01	-01 00	-14 00	01 33	-15 15	-0 56	15 15	-00 22	-3 41	-01 07	-22 20	-01 53
28	0 18 31	10 29 15	09 04 10	-17 04	-1 10	-01 05	-01 44	-04 45	-01 00	-13 20	01 15	-15 10	-0 56	15 18	-00 22	-3 39	-01 07	-22 20	-01 53
31	0 18 40	10 29 22	09 04 13	-16 24	-1 12	01 33	-01 25	-04 48	-01 00	-12 36	00 58	-15 05	-0 57	15 20	-00 22	-3 36	-01 07	-22 20	-01 53

यूरेनस, नेपच्यून, प्लूटो के निरयण भोगांश और भौमादि ग्रहों के क्रांति–शर (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.)

तारीख सन् 2022 ई.	यूरेनस रा. अं. क.	नेपच्यून रा. अं. क.	प्लूटो रा. अं. क.	मंगल क्रांति अं. क.	मंगल शर अं. क.	बुध क्रांति अं. क.	बुध शर अं. क.	गुरु क्रांति अं. क.	गुरु शर अं. क.	शुक्र क्रांति अं. क.	शुक्र शर अं. क.	शनि क्रांति अं. क.	शनि शर अं. क.	यूरेनस क्रांति अं. क.	यूरेनस शर अं. क.	नेपच्यून क्रांति अं. क.	नेपच्यून शर अं. क.	प्लूटो क्रांति अं. क.	प्लूटो शर अं. क.
अप्रेल 1	0 18 44	10 29 24	9 4 14	-16 11	-1 13	2 27	-1 18	-4 23	-1 1	-12 21	0 52	-15 3	-0 57	15 21	-0 22	-3 35	-1 7	-22 20	-1 54
4	0 18 53	10 29 31	9 4 16	-15 29	-1 15	5 13	-0 53	-4 6	-1 1	-11 32	0 35	-14 58	-0 57	15 24	-0 22	-3 33	-1 7	-22 20	-1 54
7	0 19 2	10 29 37	9 4 18	-14 47	-1 17	8 1	-0 24	-3 50	-1 1	-10 39	0 20	-14 54	-0 58	15 27	-0 22	-3 30	-1 8	-22 20	-1 54
10	0 19 12	10 29 44	9 4 20	-14 3	-1 19	10 48	0 8	-3 34	-1 1	-9 43	0 4	-14 49	-0 58	15 30	-0 22	-3 28	-1 8	-22 20	-1 55
13	0 19 22	10 29 50	9 4 22	-13 18	-1 21	13 28	0 41	-3 18	-1 2	-8 44	-0 10	-14 45	-0 58	15 33	-0 22	-3 25	-1 8	-22 20	-1 55
16	0 19 32	10 29 56	9 4 23	-12 32	-1 23	15 55	1 14	-3 2	-1 2	-7 42	-0 24	-14 41	-0 59	15 36	-0 22	-3 23	-1 8	-22 20	-1 56
19	0 19 42	11 0 2	9 4 24	-11 45	-1 25	18 4	1 45	-2 47	-1 3	-6 37	-0 36	-14 37	-0 59	15 39	-0 22	-3 21	-1 8	-22 21	-1 56
22	0 19 52	11 0 7	9 4 25	-10 57	-1 27	19 52	2 10	-2 31	-1 3	-5 30	-0 48	-14 33	-1 0	15 42	-0 22	-3 18	-1 8	-22 21	-1 57
25	0 20 2	11 0 13	9 4 25	-10 8	-1 28	21 18	2 29	-2 16	-1 3	-4 21	-0 59	-14 30	-1 0	15 45	-0 22	-3 16	-1 8	-22 21	-1 57
28	0 20 13	11 0 19	9 4 26	-9 19	-1 30	22 20	2 40	-2 2	-1 4	-3 10	-1 9	-14 27	-1 1	15 48	-0 22	-3 14	-1 8	-22 22	-1 57
मई 1	0 20 23	11 0 24	9 4 26	-8 29	-1 32	23 0	2 43	-1 47	-1 4	-1 57	-1 18	-14 24	-1 1	15 51	-0 22	-3 12	-1 8	-22 22	-1 58
4	0 20 33	11 0 29	9 4 25	-7 38	-1 33	23 18	2 35	-1 33	-1 5	-0 43	-1 27	-14 21	-1 2	15 55	-0 22	-3 10	-1 8	-22 22	-1 58
7	0 20 44	11 0 34	9 4 25	-6 47	-1 35	23 16	2 18	-1 19	-1 5	0 32	-1 34	-14 19	-1 2	15 58	-0 22	-3 9	-1 8	-22 23	-1 59
10	0 20 54	11 0 38	9 4 24	-5 55	-1 37	22 54	1 50	-1 5	-1 6	1 47	-1 40	-14 16	-1 3	16 1	-0 22	-3 7	-1 9	-22 24	-1 59
13	0 21 4	11 0 43	9 4 23	-5 3	-1 38	22 14	1 12	-0 51	-1 6	3 3	-1 46	-14 15	-1 3	16 4	-0 22	-3 5	-1 9	-22 24	-2 0
16	0 21 15	11 0 47	9 4 22	-4 11	-1 39	21 19	0 26	-0 38	-1 7	4 20	-1 50	-14 13	-1 4	16 7	-0 22	-3 4	-1 9	-22 25	-2 0
19	0 21 25	11 0 51	9 4 20	-3 19	-1 41	20 12	-0 25	-0 26	-1 7	5 36	-1 54	-14 12	-1 4	16 10	-0 22	-3 2	-1 9	-22 26	-2 1
22	0 21 35	11 0 54	9 4 19	-2 26	-1 42	19 1	-1 18	-0 13	-1 8	6 52	-1 57	-14 11	-1 5	16 13	-0 22	-3 1	-1 9	-22 26	-2 1
25	0 21 45	11 0 58	9 4 17	-1 34	-1 43	17 51	-2 7	-0 1	-1 9	8 7	-1 59	-14 10	-1 6	16 16	-0 21	-3 0	-1 9	-22 27	-2 1
28	0 21 55	11 1 1	9 4 14	-0 42	-1 44	16 50	-2 50	0 10	-1 9	9 21	-2 0	-14 9	-1 6	16 18	-0 21	-2 59	-1 9	-22 28	-2 2
31	0 22 5	11 1 4	9 4 12	0 11	-1 45	16 4	-3 24	0 21	-1 10	10 34	-2 0	-14 9	-1 7	16 21	-0 21	-2 58	-1 9	-22 29	-2 2
जून 1	0 22 8	11 1 5	9 4 11	0 28	-1 45	15 52	-3 33	0 25	-1 10	10 57	-2 0	-14 9	-1 7	16 22	-0 21	-2 57	-1 10	-22 29	-2 2
4	0 22 18	11 1 7	9 4 8	1 20	-1 46	15 31	-3 52	0 35	-1 11	12 8	-1 59	-14 10	-1 7	16 25	-0 21	-2 56	-1 10	-22 30	-2 3
7	0 22 27	11 1 9	9 4 6	2 11	-1 47	15 29	-4 1	0 45	-1 11	13 16	-1 58	-14 10	-1 8	16 28	-0 21	-2 56	-1 10	-22 31	-2 3
10	0 22 36	11 1 11	9 4 3	3 2	-1 47	15 45	-4 1	0 55	-1 12	14 22	-1 55	-14 11	-1 9	16 30	-0 21	-2 55	-1 10	-22 32	-2 4
13	0 22 46	11 1 13	9 3 59	3 53	-1 48	16 17	-3 52	1 4	-1 13	15 25	-1 52	-14 12	-1 9	16 33	-0 21	-2 55	-1 10	-22 33	-2 4
16	0 22 54	11 1 14	9 3 56	4 43	-1 48	17 2	-3 35	1 13	-1 14	16 26	-1 49	-14 14	-1 10	16 35	-0 22	-2 54	-1 10	-22 34	-2 4
19	0 23 3	11 1 15	9 3 52	5 32	-1 49	17 57	-3 13	1 21	-1 14	17 23	-1 44	-14 16	-1 10	16 38	-0 22	-2 54	-1 10	-22 35	-2 5
22	0 23 11	11 1 16	9 3 49	6 21	-1 49	19 0	-2 45	1 28	-1 15	18 16	-1 40	-14 18	-1 11	16 40	-0 22	-2 54	-1 11	-22 36	-2 5
25	0 23 19	11 1 16	9 3 45	7 9	-1 49	20 5	-2 13	1 35	-1 16	19 5	-1 34	-14 20	-1 11	16 42	-0 22	-2 54	-1 11	-22 37	-2 5
28	0 23 27	11 1 17	9 3 41	7 56	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	-1 12	16 44	-0 22	-2 54	-1 11	-22 39	-2 6

यूरेनस, नेपच्यून, प्लूटो के निरयण भोगांश और भौमादि ग्रहों के क्रांति–शर (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.)

तारीख सन्	यूरेनस	नेपच्यून	प्लूटो	मंगल		बुध		गुरु		शुक्र		शनि		यूरेनस		नेपच्यून		प्लूटो	
				क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर
2022 ई.	रा. अं. क.	रा. अं. क.	रा. अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.
जुलाई 1	0 23 35	11 1 16	9 3 37	8 43	-1 49	22 9	-1 3	1 47	-1 18	20 31	-1 22	-14 25	-1 12	16 47	-0 22	-2 54	-1 11	-22 40	-2 6
4	0 23 42	11 1 16	9 3 33	9 28	-1 49	22 59	-0 26	1 52	-1 18	21 7	-1 15	-14 28	-1 13	16 49	-0 22	-2 54	-1 11	-22 41	-2 6
7	0 23 49	11 1 15	9 3 29	10 12	-1 48	23 32	0 9	1 56	-1 19	21 38	-1 8	-14 31	-1 13	16 50	-0 22	-2 55	-1 11	-22 42	-2 7
10	0 23 55	11 1 14	9 3 25	10 55	-1 48	23 45	0 40	2 0	-1 20	22 4	-1 1	-14 35	-1 14	16 52	-0 22	-2 55	-1 11	-22 43	-2 7
13	0 24 1	11 1 13	9 3 20	11 38	-1 47	23 35	1 7	2 3	-1 21	22 24	-0 53	-14 39	-1 14	16 54	-0 22	-2 56	-1 12	-22 44	-2 7
16	0 24 7	11 1 11	9 3 16	12 19	-1 47	22 59	1 27	2 6	-1 22	22 39	-0 46	-14 42	-1 15	16 55	-0 22	-2 56	-1 12	-22 45	-2 8
19	0 24 12	11 1 10	9 3 12	12 58	-1 46	22 1	1 40	2 7	-1 23	22 48	-0 38	-14 46	-1 15	16 57	-0 22	-2 57	-1 12	-22 47	-2 8
22	0 24 17	11 1 8	9 3 7	13 37	-1 45	20 43	1 47	2 9	-1 24	22 51	-0 30	-14 51	-1 16	16 58	-0 22	-2 58	-1 12	-22 48	-2 8
25	0 24 22	11 1 5	9 3 3	14 14	-1 44	19 8	1 47	2 9	-1 25	22 49	-0 22	-14 55	-1 16	17 0	-0 22	-2 59	-1 12	-22 49	-2 8
28	0 24 26	11 1 3	9 2 59	14 50	-1 43	17 22	1 42	2 9	-1 25	22 40	-0 13	-14 59	-1 16	17 1	-0 22	-3 0	-1 12	-22 50	-2 9
31	0 24 30	11 0 60	9 2 55	15 25	-1 41	15 27	1 31	2 8	-1 26	22 26	-0 5	-15 4	-1 17	17 2	-0 22	-3 2	-1 12	-22 51	-2 9
अगस्त 1	0 24 31	11 0 59	9 2 53	15 36	-1 41	14 47	1 27	2 7	-1 27	22 20	-0 3	-15 5	-1 17	17 2	-0 22	-3 2	-1 12	-22 51	-2 9
4	0 24 35	11 0 56	9 2 49	16 8	-1 39	12 45	1 11	2 5	-1 28	21 57	0 5	-15 10	-1 17	17 3	-0 22	-3 3	-1 12	-22 52	-2 9
7	0 24 37	11 0 52	9 2 45	16 40	-1 38	10 40	0 51	2 3	-1 28	21 29	0 13	-15 14	-1 17	17 4	-0 22	-3 5	-1 13	-22 53	-2 9
10	0 24 40	11 0 49	9 2 41	17 10	-1 36	8 34	0 29	2 0	-1 29	20 56	0 21	-15 19	-1 18	17 4	-0 22	-3 6	-1 13	-22 54	-2 10
13	0 24 42	11 0 45	9 2 37	17 38	-1 34	6 29	0 4	1 56	-1 30	20 17	0 28	-15 24	-1 18	17 5	-0 22	-3 8	-1 13	-22 55	-2 10
16	0 24 43	11 0 41	9 2 33	18 5	-1 32	4 27	-0 22	1 51	-1 31	19 32	0 35	-15 28	-1 18	17 5	-0 22	-3 10	-1 13	-22 56	-2 10
19	0 24 44	11 0 37	9 2 29	18 31	-1 30	2 28	-0 50	1 46	-1 32	18 43	0 42	-15 33	-1 18	17 5	-0 22	-3 11	-1 13	-22 57	-2 10
22	0 24 45	11 0 33	9 2 26	18 56	-1 28	0 34	-1 19	1 40	-1 32	17 49	0 48	-15 37	-1 19	17 6	-0 22	-3 13	-1 13	-22 58	-2 10
25	0 24 45	11 0 28	9 2 23	19 18	-1 25	-1 13	-1 48	1 34	-1 33	16 50	0 54	-15 42	-1 19	17 6	-0 22	-3 15	-1 13	-22 59	-2 11
28	0 24 45	11 0 24	9 2 19	19 40	-1 22	-2 52	-2 17	1 27	-1 34	15 47	1 0	-15 46	-1 19	17 5	-0 22	-3 17	-1 13	-23 0	-2 11
31	0 24 44	11 0 19	9 2 16	20 0	-1 19	-4 20	-2 46	1 20	-1 34	14 40	1 5	-15 50	-1 19	17 5	-0 22	-3 19	-1 13	-23 0	-2 11
सित. 1	0 24 44	11 0 17	9 2 15	20 7	-1 18	-4 46	-2 55	1 17	-1 34	14 17	1 6	-15 52	-1 19	17 5	-0 22	-3 19	-1 13	-23 1	-2 11
4	0 24 42	11 0 13	9 2 12	20 25	-1 15	-5 55	-3 21	1 9	-1 35	13 5	1 11	-15 56	-1 19	17 5	-0 22	-3 21	-1 13	-23 1	-2 11
7	0 24 41	11 0 8	9 2 10	20 43	-1 12	-6 46	-3 43	1 0	-1 36	11 50	1 14	-16 0	-1 19	17 4	-0 22	-3 23	-1 13	-23 2	-2 11
10	0 24 38	11 0 3	9 2 7	20 59	-1 9	-7 13	-4 0	0 52	-1 36	10 31	1 18	-16 3	-1 19	17 4	-0 22	-3 25	-1 13	-23 2	-2 11
13	0 24 36	10 29 58	9 2 5	21 14	-1 5	-7 11	-4 9	0 43	-1 36	9 11	1 21	-16 7	-1 19	17 3	-0 22	-3 27	-1 13	-23 3	-2 11
16	0 24 33	10 29 53	9 2 3	21 28	-1 1	-6 34	-4 6	0 33	-1 37	7 48	1 23	-16 10	-1 19	17 2	-0 22	-3 29	-1 13	-23 3	-2 11
19	0 24 29	10 29 48	9 2 1	21 41	-0 57	-5 20	-3 47	0 24	-1 37	6 22	1 24	-16 13	-1 19	17 1	-0 22	-3 31	-1 13	-23 4	-2 12
22	0 24 25	10 29 43	9 1 60	21 54	-0 53	-3 35	-3 12	0 14	-1 37	4 56	1 25	-16 16	-1 19	17 0	-0 22	-3 33	-1 13	-23 4	-2 12
25	0 24 21	10 29 38	9 1 58	22 5	-0 48	-1 32	-2 21	0 5	-1 37	3 27	1 26	-16 18	-1 19	16 59	-0 22	-3 35	-1 13	-23 5	-2 12
28	0 24 16	10 29 33	9 1 57	22 16	-0 44	0 25	-1 22	-0 5	-1 37	1 58	1 26	-16 21	-1 19	16 58	-0 22	-3 37	-1 13	-23 5	-2 12

यूरेनस, नेपच्यून, प्लूटो के निरयण भोगांश और भौमादि ग्रहों के क्रांति–शर (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.)

तारीख सन्	यूरेनस			नेपच्यून			प्लूटो			मंगल क्रांति		मंगल शर		बुध क्रांति		बुध शर		गुरु क्रांति		गुरु शर	
2022 ई.	रा.	अं.	क.	रा.	अं.	क.	रा.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.
अक्त. 1	0	24	12	10	29	28	9	1	57	22	26	-0	39	1	54	-0	22	-0	14	-1	37
4	0	24	6	10	29	24	9	1	56	22	35	-0	33	2	40	0	30	-0	24	-1	37
7	0	24	1	10	29	19	9	1	56	22	44	-0	28	2	40	1	11	-0	33	-1	37
10	0	23	55	10	29	14	9	1	56	22	53	-0	22	1	58	1	38	-0	42	-1	37
13	0	23	49	10	29	10	9	1	56	23	1	-0	16	0	42	1	54	-0	50	-1	36
16	0	23	42	10	29	6	9	1	57	23	9	-0	9	-0	58	2	0	-0	58	-1	36
19	0	23	36	10	29	2	9	1	57	23	17	-0	3	-2	53	1	58	-1	6	-1	36
22	0	23	29	10	28	58	9	1	58	23	25	0	5	-4	56	1	49	-1	13	-1	35
25	0	23	22	10	28	54	9	1	60	23	33	0	12	-7	2	1	37	-1	20	-1	35
28	0	23	15	10	28	51	9	2	1	23	42	0	20	-9	8	1	21	-1	26	-1	34
31	0	23	7	10	28	47	9	2	3	23	50	0	28	-11	11	1	3	-1	31	-1	33
नव. 1	0	23	5	10	28	46	9	2	4	23	52	0	31	-11	51	0	57	-1	33	-1	33
4	0	22	57	10	28	43	9	2	6	24	1	0	39	-13	47	0	37	-1	37	-1	33
7	0	22	50	10	28	40	9	2	8	24	9	0	48	-15	38	0	17	-1	41	-1	32
10	0	22	43	10	28	38	9	2	11	24	17	0	57	-17	21	-0	3	-1	44	-1	31
13	0	22	35	10	28	36	9	2	14	24	25	1	6	-18	56	-0	23	-1	47	-1	30
16	0	22	28	10	28	34	9	2	17	24	32	1	15	-20	23	-0	43	-1	48	-1	30
19	0	22	20	10	28	32	9	2	20	24	39	1	24	-21	40	-1	1	-1	49	-1	29
22	0	22	13	10	28	31	9	2	24	24	45	1	33	-22	49	-1	19	-1	49	-1	28
25	0	22	6	10	28	30	9	2	28	24	50	1	43	-23	46	-1	35	-1	49	-1	27
28	0	21	59	10	28	29	9	2	32	24	55	1	51	-24	33	-1	49	-1	47	-1	26
दिसं. 1	0	21	52	10	28	28	9	2	36	24	58	2	0	-25	9	-2	1	-1	45	-1	26
4	0	21	46	10	28	28	9	2	40	24	59	2	8	-25	32	-2	10	-1	42	-1	25
7	0	21	39	10	28	28	9	2	45	25	0	2	15	-25	43	-2	17	-1	39	-1	24
10	0	21	33	10	28	29	9	2	50	24	59	2	22	-25	41	-2	19	-1	34	-1	23
13	0	21	27	10	28	30	9	2	55	24	57	2	28	-25	26	-2	18	-1	29	-1	22
16	0	21	22	10	28	31	9	2	60	24	55	2	33	-24	58	-2	10	-1	24	-1	21
19	0	21	17	10	28	32	9	3	5	24	52	2	37	-24	18	-1	56	-1	17	-1	21
22	0	21	12	10	28	34	9	3	10	24	48	2	41	-23	28	-1	34	-1	10	-1	20
25	0	21	7	10	28	36	9	3	16	24	44	2	44	-22	32	-1	2	-1	3	-1	19
28	0	21	3	10	28	38	9	3	21	24	40	2	47	-21	36	-0	20	-0	54	-1	18
31	0	20	59	10	28	41	9	3	27	24	36	2	48	-20	45	-0	33	-0	45	-1	17

तारीख सन्	शुक्र क्रांति		शुक्र शर		शनि क्रांति		शनि शर		यूरेनस क्रांति		यूरेनस शर		नेपच्यून क्रांति		नेपच्यून शर		प्लूटो क्रांति		प्लूटो शर	
2022 ई.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.
अक्त. 1	0	28	1	25	-16	23	-1	19	16	56	-0	22	-3	39	-1	13	-23	5	-2	12
4	-1	2	1	24	-16	25	-1	19	16	55	-0	22	-3	41	-1	13	-23	5	-2	12
7	-2	32	1	22	-16	26	-1	19	16	53	-0	22	-3	43	-1	13	-23	5	-2	12
10	-4	2	1	19	-16	27	-1	19	16	51	-0	22	-3	44	-1	13	-23	5	-2	12
13	-5	32	1	16	-16	28	-1	19	16	50	-0	22	-3	46	-1	13	-23	5	-2	12
16	-7	0	1	13	-16	29	-1	18	16	48	-0	22	-3	48	-1	13	-23	5	-2	12
19	-8	27	1	9	-16	29	-1	18	16	46	-0	22	-3	49	-1	13	-23	5	-2	12
22	-9	53	1	5	-16	29	-1	18	16	44	-0	22	-3	51	-1	13	-23	5	-2	12
25	-11	16	1	0	-16	29	-1	18	16	42	-0	22	-3	52	-1	13	-23	5	-2	12
28	-12	37	0	54	-16	29	-1	18	16	40	-0	22	-3	54	-1	13	-23	5	-2	13
31	-13	55	0	49	-16	28	-1	18	16	38	-0	22	-3	55	-1	13	-23	5	-2	13
नव. 1	-14	21	0	47	-16	28	-1	17	16	38	-0	22	-3	55	-1	13	-23	4	-2	13
4	-15	35	0	40	-16	26	-1	17	16	35	-0	22	-3	56	-1	13	-23	4	-2	13
7	-16	45	0	34	-16	25	-1	17	16	33	-0	22	-3	57	-1	13	-23	4	-2	13
10	-17	52	0	27	-16	23	-1	17	16	31	-0	22	-3	58	-1	13	-23	3	-2	13
13	-18	54	0	20	-16	21	-1	17	16	29	-0	22	-3	59	-1	13	-23	3	-2	13
16	-19	52	0	13	-16	19	-1	17	16	27	-0	22	-4	0	-1	13	-23	2	-2	13
19	-20	44	0	6	-16	16	-1	16	16	25	-0	22	-4	0	-1	13	-23	2	-2	13
22	-21	32	-0	1	-16	14	-1	16	16	23	-0	22	-4	1	-1	13	-23	1	-2	13
25	-22	13	-0	8	-16	10	-1	16	16	21	-0	22	-4	1	-1	12	-23	0	-2	13
28	-22	49	-0	16	-16	7	-1	16	16	19	-0	22	-4	1	-1	12	-23	0	-2	13
दिसं. 1	-23	19	-0	23	-16	3	-1	16	16	17	-0	22	-4	1	-1	12	-22	59	-2	14
4	-23	43	-0	30	-16	0	-1	16	16	15	-0	22	-4	1	-1	12	-22	58	-2	14
7	-23	59	-0	37	-15	55	-1	15	16	14	-0	22	-4	1	-1	12	-22	58	-2	14
10	-24	10	-0	43	-15	51	-1	15	16	12	-0	22	-4	1	-1	12	-22	57	-2	14
13	-24	13	-0	50	-15	47	-1	15	16	10	-0	22	-4	1	-1	12	-22	56	-2	14
16	-24	10	-0	56	-15	42	-1	15	16	9	-0	22	-4	0	-1	12	-22	55	-2	14
19	-24	0	-1	2	-15	37	-1	15	16	7	-0	22	-3	59	-1	12	-22	54	-2	14
22	-23	44	-1	8	-15	32	-1	15	16	6	-0	22	-3	59	-1	12	-22	53	-2	14
25	-23	21	-1	13	-15	26	-1	15	16	5	-0	22	-3	58	-1	11	-22	52	-2	15
28	-22	51	-1	17	-15	21	-1	15	16	4	-0	22	-3	57	-1	11	-22	51	-2	15
31	-22	19	-1	22	-15	15	-1	15	16	3	-0	21	-3	56	-1	11	-22	50	-2	15

यूरेनस, नेपच्यून, प्लूटो के निरयण भोगांश और भौमादि ग्रहों के क्रांति–शर (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.)

तारीख सन्	यूरेनस			नेपच्यून			प्लूटो			मंगल				बुध				गुरु				शुक्र				शनि				यूरेनस				नेपच्यून				प्लूटो			
										क्रांति		शर		क्रांति		शर		क्रांति		शर		क्रांति		शर		क्रांति		शर		क्रांति		शर		क्रांति		शर		क्रांति		शर	
2023 ई.	रा.	अं.	क.	रा.	अं.	क.	रा.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.
जन. 3	0	20	58	10	28	42	9	3	29	24	35	2	49	-20	30	0	52	-0	42	-1	17	-22	2	-1	23	-15	13	-1	15	16	2	-0	21	-3	55	-1	11	-22	50	-2	15
6	0	20	55	10	28	45	9	3	34	24	32	2	50	-19	56	1	50	-0	33	-1	16	-21	19	-1	26	-15	7	-1	15	16	1	-0	21	-3	54	-1	11	-22	49	-2	15
9	0	20	53	10	28	48	9	3	40	24	30	2	50	-19	37	2	40	-0	23	-1	16	-20	29	-1	29	-15	1	-1	15	16	1	-0	21	-3	53	-1	11	-22	48	-2	15
12	0	20	50	10	28	52	9	3	46	24	29	2	51	-19	33	3	12	-0	12	-1	15	-19	35	-1	32	-14	54	-1	15	16	0	-0	21	-3	51	-1	11	-22	47	-2	16
15	0	20	48	10	28	55	9	3	52	24	28	2	50	-19	40	3	22	-0	1	-1	14	-18	35	-1	34	-14	48	-1	15	16	0	-0	21	-3	49	-1	11	-22	46	-2	16
18	0	20	47	10	28	60	9	3	58	24	28	2	50	-19	57	3	13	0	11	-1	14	-17	30	-1	35	-14	41	-1	15	15	59	-0	21	-3	48	-1	11	-22	45	-2	16
21	0	20	46	10	29	4	9	4	4	24	29	2	49	-20	20	2	52	0	23	-1	13	-16	21	-1	35	-14	35	-1	15	15	59	-0	21	-3	46	-1	11	-22	44	-2	16
24	0	20	46	10	29	8	9	4	10	24	30	2	48	-20	45	2	24	0	35	-1	12	-15	8	-1	35	-14	28	-1	15	15	59	-0	21	-3	44	-1	11	-22	43	-2	17
27	0	20	46	10	29	13	9	4	15	24	32	2	46	-21	8	1	53	0	48	-1	12	-13	52	-1	35	-14	21	-1	15	15	59	-0	21	-3	42	-1	11	-22	43	-2	17
30	0	20	46	10	29	18	9	4	21	24	35	2	45	-21	27	1	22	1	1	-1	11	-12	32	-1	33	-14	14	-1	15	15	59	-0	21	-3	40	-1	10	-22	42	-2	17
31	0	20	48	10	29	24	9	4	27	24	39	2	43	-21	38	0	51	1	15	-1	11	-11	9	-1	31	-14	7	-1	15	16	0	-0	21	-3	38	-1	10	-22	41	-2	18
फर. 1	0	20	48	10	29	25	9	4	29	24	40	2	43	-21	40	0	42	1	19	-1	11	-10	41	-1	31	-14	5	-1	15	16	0	-0	21	-3	37	-1	10	-22	40	-2	18
4	0	20	50	10	29	31	9	4	35	24	44	2	41	-21	41	0	13	1	33	-1	10	-9	15	-1	28	-13	57	-1	15	16	1	-0	21	-3	35	-1	10	-22	39	-2	18
7	0	20	52	10	29	36	9	4	40	24	49	2	39	-21	31	-0	13	1	48	-1	10	-7	46	-1	24	-13	50	-1	15	16	1	-0	20	-3	33	-1	10	-22	39	-2	18
10	0	20	54	10	29	42	9	4	46	24	54	2	37	-21	10	-0	37	2	2	-1	9	-6	16	-1	20	-13	43	-1	15	16	2	-0	20	-3	30	-1	10	-22	38	-2	19
13	0	20	57	10	29	48	9	4	52	24	59	2	35	-20	39	-0	59	2	17	-1	9	-4	44	-1	15	-13	36	-1	15	16	3	-0	20	-3	28	-1	10	-22	37	-2	19
16	0	21	1	10	29	54	9	4	57	25	4	2	33	-19	56	-1	18	2	32	-1	8	-3	11	-1	10	-13	28	-1	16	16	4	-0	20	-3	25	-1	10	-22	36	-2	19
19	0	21	5	11	0	1	9	5	2	25	9	2	31	-19	2	-1	35	2	48	-1	8	-1	38	-1	4	-13	21	-1	16	16	5	-0	20	-3	23	-1	10	-22	35	-2	20
22	0	21	9	11	0	7	9	5	7	25	13	2	29	-17	56	-1	48	3	3	-1	7	-0	4	-0	58	-13	13	-1	16	16	7	-0	20	-3	20	-1	10	-22	35	-2	20
25	0	21	14	11	0	14	9	5	12	25	18	2	27	-16	38	-1	59	3	19	-1	7	1	30	-0	50	-13	6	-1	16	16	8	-0	20	-3	18	-1	10	-22	34	-2	20
28	0	21	19	11	0	20	9	5	17	25	22	2	25	-15	9	-2	6	3	35	-1	7	3	4	-0	43	-12	59	-1	16	16	10	-0	20	-3	15	-1	10	-22	33	-2	21
मार्च 1	0	21	21	11	0	22	9	5	19	25	24	2	25	-14	36	-2	7	3	40	-1	7	3	36	-0	40	-12	56	-1	16	16	10	-0	20	-3	14	-1	10	-22	33	-2	21
4	0	21	27	11	0	29	9	5	23	25	27	2	23	-12	51	-2	10	3	56	-1	6	5	9	-0	32	-12	49	-1	17	16	12	-0	20	-3	12	-1	10	-22	33	-2	21
7	0	21	33	11	0	36	9	5	28	25	30	2	20	-10	55	-2	8	4	13	-1	6	6	41	-0	24	-12	42	-1	17	16	14	-0	20	-3	9	-1	10	-22	32	-2	22
10	0	21	40	11	0	43	9	5	32	25	33	2	18	-8	47	-2	2	4	29	-1	6	8	12	-0	15	-12	35	-1	17	16	16	-0	20	-3	6	-1	10	-22	31	-2	22
13	0	21	46	11	0	49	9	5	36	25	35	2	16	-6	27	-1	52	4	45	-1	5	9	41	-0	5	-12	27	-1	18	16	18	-0	20	-3	3	-1	10	-22	31	-2	22
16	0	21	54	11	0	56	9	5	40	25	36	2	14	-3	58	-1	37	5	2	-1	5	11	8	0	4	-12	20	-1	18	16	20	-0	20	-3	1	-1	10	-22	31	-2	23
19	0	22	1	11	1	3	9	5	44	25	37	2	12	-1	20	-1	17	5	18	-1	5	12	33	0	14	-12	13	-1	18	16	22	-0	20	-2	58	-1	10	-22	30	-2	23
22	0	22	9	11	1	10	9	5	47	25	36	2	11	1	26	-0	53	5	35	-1	5	13	55	0	24	-12	7	-1	19	16	25	-0	19	-2	55	-1	10	-22	30	-2	24
25	0	22	17	11	1	17	9	5	51	25	35	2	9	4	16	-0	23	5	51	-1	5	15	15	0	34	-12	0	-1	19	16	27	-0	19	-2	53	-1	10	-22	30	-2	24
28	0	22	25	11	1	23	9	5	54	25	33	2	7	7	5	0	10	6	8	-1	4	16	31	0	44	-11	53	-1	19	16	29	-0	19	-2	50	-1	10	-22	29	-2	25
31	0	22	34	11	1	30	9	5	56	25	29	2	5	9	48	0	45	6	24	-1	4	17	44	0	54	-11	47	-1	20	16	32	-0	19	-2	48	-1	10	-22	29	-2	25

ग्रहों के निरयण राशि-नक्षत्रचरण-चार (1 जनवरी 2022 से 21 मार्च 2023 ई. तक)

सूर्य-चार (सन् 2022-2023 ई.)

तारीख 2022 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. (भा.स्टैं.टा.)	मि.	तारीख 2022 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. (भा.स्टैं.टा.)	मि.	तारीख 2022 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. (भा.स्टैं.टा.)	मि.	तारीख 2022 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. (भा.स्टैं.टा.)	मि.
जनवरी 1		पू.षा.	2	12	30	अप्रैल 14	मेष	अश्वि.	1	8	41	जुलाई 30		पुष्य	4	22	0	नवंबर 13		विशा.	3	11	47
4		पू.षा.	3	18	58	17		अश्वि.	2	18	26	अगस्त 3		आश्ले.	1	9	37	16	वृश्चिक	विशा.	4	19	15
8		पू.षा.	4	1	27	21		अश्वि.	3	4	20	6		आश्ले.	2	21	10	20		अनु.	1	2	35
11		उ.षा.	1	7	57	24		अश्वि.	4	14	22	10		आश्ले.	3	8	40	23		अनु.	2	9	47
14	मकर	उ.षा.	2	14	29	28		भर.	1	0	31	13		आश्ले.	4	20	4	26		अनु.	3	16	53
17		उ.षा.	3	21	4	मई 1		भर.	2	10	49	17	सिंह	मघा	1	7	23	29		अनु.	4	23	54
21		उ.षा.	4	3	41	4		भर.	3	21	15	20		मघा	2	18	33	दिसंबर 3		ज्येष्ठा	1	6	50
24		श्रव.	1	10	19	8		भर.	4	7	50	24		मघा	3	5	36	6		ज्येष्ठा	2	13	43
27		श्रव.	2	17	0	11		कृत्ति.	1	18	35	27		मघा	4	16	30	9		ज्येष्ठा	3	20	32
30		श्रव.	3	23	44	15	वृष	कृत्ति.	2	5	29	31		पू.फा.	1	3	17	13		ज्येष्ठा	4	3	17
फरवरी 3		श्रव.	4	6	31	18		कृत्ति.	3	16	30	सितंबर 3		पू.फा.	2	13	57	16	धनु	मूल	1	9	58
6		धनि.	1	13	23	22		कृत्ति.	4	3	38	7		पू.फा.	3	0	31	19		मूल	2	16	34
9		धनि.	2	20	22	25		रोहि.	1	14	51	10		पू.फा.	4	10	57	22		मूल	3	23	7
13	कुम्भ	धनि.	3	3	27	29		रोहि.	2	2	9	13		उ.फा.	1	21	14	26		मूल	4	5	38
16		धनि.	4	10	39	जून 1		रोहि.	3	13	32	17	कन्या	उ.फा.	2	7	22	29		पू.षा.	1	12	8
19		शत.	1	17	57	5		रोहि.	4	1	2	20		उ.फा.	3	17	19	सन् 2023 ई.					
23		शत.	2	1	21	8		मृग.	1	12	37	24		उ.फा.	4	3	6						
26		शत.	3	8	51	12		मृग.	2	0	18	27		हस्त	1	12	43	जनवरी 1		पू.षा.	2	18	38
मार्च 1		शत.	4	16	27	15	मिथुन	मृग.	3	12	3	30		हस्त	2	22	11	5		पू.षा.	3	1	9
5		पू.भा.	1	0	11	18		मृग.	4	23	52	अक्तूबर 4		हस्त	3	7	31	8		पू.षा.	4	7	41
8		पू.भा.	2	8	3	22		आर्द्रा	1	11	42	7		हस्त	4	16	43	11		उ.षा.	1	14	12
11		पू.भा.	3	16	5	25		आर्द्रा	2	23	33	11		चित्रा	1	1	46	14	मकर	उ.षा.	2	20	45
15	मीन	पू.भा.	4	0	16	29		आर्द्रा	3	11	24	14		चित्रा	2	10	39	18		उ.षा.	3	3	17
18		उ.भा.	1	8	37	जुलाई 2		आर्द्रा	4	23	17	17	तुला	चित्रा	3	19	22	21		उ.षा.	4	9	51
21		उ.भा.	2	17	7	6		पुन.	1	11	11	21		चित्रा	4	3	55	24		श्रव.	1	16	28
25		उ.भा.	3	1	44	9		पुन.	2	23	6	24		स्वाती	1	12	18	27		श्रव.	2	23	8
28		उ.भा.	4	10	30	13		पुन.	3	11	2	27		स्वाती	2	20	32	31		श्रव.	3	5	53
31		रेव.	1	19	25	16	कर्क	पुन.	4	22	56	31		स्वाती	3	4	37	फरवरी 3		श्रव.	4	12	43
अप्रैल 4		रेव.	2	4	28	20		पुष्य	1	10	48	नवंबर 3		स्वाती	4	12	36	6		धनि.	1	19	39
7		रेव.	3	13	42	23		पुष्य	2	22	37	6		विशा.	1	20	27	10		धनि.	2	2	39
10		रेव.	4	23	6	27		पुष्य	3	10	20	10		विशा.	2	4	11	13	कुम्भ	धनि.	3	9	44

ग्रहों के निरयण राशि-नक्षत्रचरण-चार (1 जनवरी 2022 से 21 मार्च 2023 ई. तक)

सूर्य-चार (सन् 2023 ई.)

तारीख 2023 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. (भा.स्टैं.टा.)	मि.
फरवरी 16		धनि.	4	16	54
20		शत.	1	0	9
23		शत.	2	7	30
26		शत.	3	15	0
मार्च 1		शत.	4	22	38
5		पू.भा.	1	6	24
8		पू.भा.	2	14	20
11		पू.भा.	3	22	23
15	मीन	पू.भा.	4	6	34
18		उ.भा.	1	14	52
21		उ.भा.	2	23	19

मंगल-चार (सन् 2022 ई.)

तारीख	राशि	नक्षत्र	चरण	घं.	मि.
जनवरी 2		ज्ये.	2	17	18
7		ज्ये.	3	9	28
12		ज्ये.	4	1	13
16	धनु	मूल	1	16	31
21		मूल	2	7	22
25		मूल	3	21	46
30		मूल	4	21	44
फरवरी 4		पू.षा.	1	1	19
8		पू.षा.	2	14	32
13		पू.षा.	3	3	23
17		पू.षा.	4	15	53
22		उ.षा.	1	4	2
26	मकर	उ.षा.	2	15	50
मार्च 3		उ.षा.	3	3	20
7		उ.षा.	4	14	34
12		श्रव.	1	1	34
16		श्रव.	2	12	20
20		श्रव.	3	22	52

मंगल-चार (सन् 2022-2023 ई.)

तारीख 2022 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. (भा.स्टैं.टा.)	मि.
मार्च 25		श्रव.	4	9	11
29		धनि.	1	19	20
अप्रैल 3		धनि.	2	5	21
7	कुम्भ	धनि.	3	15	17
12		धनि.	4	1	9
16		शत.	1	10	59
20		शत.	2	20	47
25		शत.	3	6	35
29		शत.	4	16	26
मई 4		पू.भा.	1	2	25
8		पू.भा.	2	12	34
12		पू.भा.	3	22	56
17	मीन	पू.भा.	4	9	32
21		उ.भा.	1	20	24
26		उ.भा.	2	7	35
30		उ.भा.	3	19	11
जून 4		उ.भा.	4	7	18
8		रेव.	1	19	59
13		रेव.	2	9	18
17		रेव.	3	23	17
22		रेव.	4	14	1
27	मेष	अश्वि.	1	5	39
जुलाई 1		अश्वि.	2	22	19
6		अश्वि.	3	16	10
11		अश्वि.	4	11	20
16		भर.	1	7	55
21		भर.	2	6	6
26		भर.	3	6	10
31		भर.	4	8	27
अगस्त 5		कृत्ति.	1	13	18
10	वृष	कृत्ति.	2	21	8
अगस्त 16		कृत्ति.	3	8	24
21		कृत्ति.	4	23	50
27		रोहि.	1	20	32
सितंबर 2		रोहि.	2	24	0
9		रोहि.	3	12	16
16		रोहि.	4	12	38
24		मृग.	1	7	32
अक्तू. 3		मृग.	2	11	52
16	मिथुन	मृग.	3	6	31
30	वक्री			18	57
नव. 13	वृष	मृग.	2	20	48
25		मृग.	1	19	11
दिसं. 4		रोहि.	4	19	20
13		रोहि.	3	13	58
23		रोहि.	2	23	8

सन् 2023 ई.

तारीख	राशि	नक्षत्र	चरण	घं.	मि.
जनवरी 13	मार्गी			2	27
फरवरी 3		रोहि.	3	18	10
15		रोहि.	4	15	5
25		मृग.	1	2	42
मार्च 5		मृग.	2	11	39
13	मिथुन	मृग.	3	5	2
20		मृग.	4	11	54

बुध-चार (सन् 2022 ई.)

तारीख 2022 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. (भा.स्टैं.टा.)	मि.
जनवरी 3		उ.षा.	4	3	16
5		श्रव.	1	18	12
8		श्रव.	2	22	3
14	वक्री			17	10
20		श्रव.	1	4	1
जनवरी 23		उ.षा.	4	1	13
25		उ.षा.	3	16	19
28		उ.षा.	2	17	2
फरवरी 4	मार्गी			9	43
12		उ.षा.	3	2	32
16		उ.षा.	4	0	33
19		श्रव.	1	6	22
22		श्रव.	2	4	5
24		श्रव.	3	20	45
27		श्रव.	4	9	59
मार्च 1		धनि.	1	20	29
4		धनि.	2	4	51
6	कुम्भ	धनि.	3	11	20
8		धनि.	4	16	13
10		शत.	1	19	41
12		शत.	2	21	49
14		शत.	3	22	43
16		शत.	4	22	27
18		पू.भा.	1	21	5
20		पू.भा.	2	18	40
22		पू.भा.	3	15	16
24	मीन	पू.भा.	4	10	56
26		उ.भा.	1	5	42
27		उ.भा.	2	23	34
29		उ.भा.	3	16	41
31		उ.भा.	4	9	6
अप्रैल 2		रेव.	1	0	53
3		रेव.	2	16	7
5		रेव.	3	6	58
6		रेव.	4	21	31
8	मेष	अश्वि.	1	11	59

ग्रहों के निरयण राशि-नक्षत्रचरण-चार (1 जनवरी 2022 से 21 मार्च 2023 ई. तक)

बुध-चार (सन् 2022-2023 ई.)

तारीख 2022 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. (भा.स्टैं.टा.)	मि.
अप्रैल 10		अश्वि.	2	2	31
11		अश्वि.	3	17	25
13		अश्वि.	4	8	53
15		भर.	1	1	21
16		भर.	2	19	16
18		भर.	3	15	8
20		भर.	4	13	46
22		कृत्ति.	1	16	16
25	वृष	कृत्ति.	2	0	21
27		कृत्ति.	3	17	23
मई 1		कृत्ति.	4	2	40
6		रोहि.	1	17	35
10	वक्री			17	18
14		कृत्ति.	4	21	28
21		कृत्ति.	3	20	0
28		कृत्ति.	2	4	4
जून 3	मार्गी			13	30
9		कृत्ति.	3	16	56
14		कृत्ति.	4	22	23
18		रोहि.	1	12	29
21		रोहि.	2	11	17
24		रोहि.	3	1	13
26		रोहि.	4	9	5
28		मृग.	1	12	27
30		मृग.	2	12	26
जुलाई 2	मिथुन	मृग.	3	9	42
4		मृग.	4	4	47
5		आर्द्रा	1	22	3
7		आर्द्रा	2	13	59
9		आर्द्रा	3	4	53
10		आर्द्रा	4	18	56

तारीख 2022 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. (भा.स्टैं.टा.)	मि.
जुलाई 12		पुन.	1	8	29
13		पुन.	2	21	44
15		पुन.	3	10	54
17	कर्क	पुन.	4	0	9
18		पुष्य	1	13	42
20		पुष्य	2	3	38
21		पुष्य	3	18	11
23		पुष्य	4	9	24
25		आश्ले.	1	1	26
26		आश्ले.	2	18	25
28		आश्ले.	3	12	23
30		आश्ले.	4	7	26
अगस्त 1	सिंह	मघा	1	3	44
3		मघा	2	1	22
5		मघा	3	0	25
7		मघा	4	1	1
9		पू.फा.	1	3	19
11		पू.फा.	2	7	31
13		पू.फा.	3	13	53
15		पू.फा.	4	22	43
18		उ.फा.	1	10	32
21	कन्या	उ.फा.	2	2	6
23		उ.फा.	3	22	42
27		उ.फा.	4	2	33
30		हस्त	1	19	15
सितंबर 4		हस्त	2	20	58
10	वक्री			9	8
15		हस्त	1	11	38
19		उ.फा.	4	18	18
22		उ.फा.	3	22	57
26		उ.फा.	2	4	22

तारीख 2022 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. (भा.स्टैं.टा.)	मि.
अक्तू. 2	मार्गी			14	37
8		उ.फा.	3	22	57
11		उ.फा.	4	21	12
14		हस्त	1	7	34
16		हस्त	2	12	29
18		हस्त	3	14	39
20		हस्त	4	15	17
22		चित्रा	1	15	4
24		चित्रा	2	14	29
26	तुला	चित्रा	3	13	48
28		चित्रा	4	13	14
30		स्वा.	1	12	55
नवंबर 1		स्वा.	2	12	55
3		स्वा.	3	13	18
5		स्वा.	4	14	6
7		विशा.	1	15	19
9		विशा.	2	16	56
11		विशा.	3	18	57
13	वृश्चिक	विशा.	4	21	20
16		अनु.	1	0	3
18		अनु.	2	3	4
20		अनु.	3	6	22
22		अनु.	4	9	55
24		ज्ये.	1	13	41
26		ज्ये.	2	17	39
28		ज्ये.	3	21	48
दिसंबर 1		ज्ये.	4	2	11
3	धनु	मूल	1	6	48
5		मूल	2	11	46
7		मूल	3	17	11
9		मूल	4	23	17

तारीख 2022 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. (भा.स्टैं.टा.)	मि.
दिसंबर 12		पू.षा.	1	6	24
14		पू.षा.	2	15	12
17		पू.षा.	3	2	39
19		पू.षा.	4	19	8
22		उ.षा.	1	22	19
28	मकर	उ.षा.	2	5	10
29	वक्री			15	2
30	धनु	उ.षा.	1	22	8

सन् 2023 ई.

तारीख	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. (भा.स्टैं.टा.)	मि.
जनवरी 4		पू.षा.	4	16	0
7		पू.षा.	3	8	22
9		पू.षा.	2	20	43
12		पू.षा.	1	20	32
18	मार्गी			18	42
25		पू.षा.	2	14	3
29		पू.षा.	3	12	26
फरवरी 1		पू.षा.	4	17	36
4		उ.षा.	1	14	54
7	मकर	उ.षा.	2	7	29
9		उ.षा.	3	20	43
12		उ.षा.	4	7	34
14		श्रव.	1	16	24
16		श्रव.	2	23	38
19		श्रव.	3	5	28
21		श्रव.	4	9	58
23		धनि.	1	13	19
25		धनि.	2	15	34
27	कुम्भ	धनि.	3	16	46
मार्च 1		धनि.	4	16	58
3		शत.	1	16	13

9	आर्द्रा	3	4	53	22	उ.फा.	3	22	57	7	मूल	3	17	11	मार्च 1	धनि.	4	16	58
10	आर्द्रा	4	18	56	26	उ.फा.	2	4	22	9	मूल	4	23	17	3	शत.	1	16	13

ग्रहों के निरयण राशि-नक्षत्रचरण-चार (1 जनवरी 2022 से 21 मार्च 2023 ई. तक)

बुध-चार (सन् 2023 ई.)

तारीख 2023 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. (भा.स्टैं.टा.)	मि.
मार्च 5		शत.	2	14	31
7		शत.	3	11	56
9		शत.	4	8	29
11		पू.भा.	1	4	12
12		पू.भा.	2	23	6
14		पू.भा.	3	17	17
16	मीन	पू.भा.	4	10	47
18		उ.भा.	1	3	42
19		उ.भा.	2	20	5
21		उ.भा.	3	12	5

गुरु-चार (सन् 2022 ई.)

तारीख	राशि	नक्षत्र	चरण	घं.	मि.
जनवरी 2		शत.	1	15	46
18		शत.	2	15	34
फरवरी 2		शत.	3	10	54
16		शत.	4	14	41
मार्च 2		पू.भा.	1	11	5
16		पू.भा.	2	6	19
30		पू.भा.	3	5	38
अप्रैल 13	मीन	पू.भा.	4	15	46
28		उ.भा.	1	21	19
मई 15		उ.भा.	2	13	3
जून 3		उ.भा.	3	23	16
जुलाई 1		उ.भा.	4	11	14
29	वक्री			2	8
अगस्त 25		उ.भा.	3	13	46
सितंबर 23		उ.भा.	2	11	33
अक्तू. 19		उ.भा.	1	20	51
नवंबर 24	मार्गी			4	33
दिसंबर 29		उ.भा.	2	5	17

गुरु-चार (सन् 2023 ई.)

तारीख 2023 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. (भा.स्टैं.टा.)	मि.
जनवरी 21		उ.भा.	3	17	8
फरवरी 8		उ.भा.	4	17	44
24		रेव.	1	14	35
मार्च 11		रेव.	2	8	44
25		रेव.	3	12	24

शुक्र-चार (सन् 2022 ई.)

तारीख	राशि	नक्षत्र	चरण	घं.	मि.
जनवरी 5		पू.षा.	4	18	37
11		पू.षा.	3	6	29
17		पू.षा.	2	6	56
29	मार्गी			14	17
फरवरी 11		पू.षा.	3	13	28
17		पू.षा.	4	20	43
22		उ.षा.	1	22	36
27	मकर	उ.षा.	2	10	17
मार्च 3		उ.षा.	3	13	25
7		उ.षा.	4	10	45
11		श्रव.	1	3	53
14		श्रव.	2	17	47
18		श्रव.	3	5	6
21		श्रव.	4	14	19
24		धनि.	1	21	48
28		धनि.	2	3	50
31	कुम्भ	धनि.	3	8	39
अप्रैल 3		धनि.	4	12	27
6		शत.	1	15	22
9		शत.	2	17	31
12		शत.	3	18	59
15		शत.	4	19	51
18		पू.भा.	1	20	9

शुक्र-चार (सन् 2022 ई.)

तारीख 2022 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. (भा.स्टैं.टा.)	मि.	तारीख 2022 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. (भा.स्टैं.टा.)	मि.
अप्रैल 21		पू.भा.	2	19	58	जुलाई 18		आर्द्रा	1	23	39
24		पू.भा.	3	19	19	21		आर्द्रा	2	17	54
27	मीन	पू.भा.	4	18	17	24		आर्द्रा	3	12	2
30		उ.भा.	1	16	53	27		आर्द्रा	4	6	5
मई 3		उ.भा.	2	15	11	30		पुन.	1	0	2
6		उ.भा.	3	13	12	अगस्त 1		पुन.	2	17	53
9		उ.भा.	4	10	58	4		पुन.	3	11	39
12		रेव.	1	8	29	7	कर्क	पुन.	4	5	20
15		रेव.	2	5	47	9		पुष्य	1	22	55
18		रेव.	3	2	53	12		पुष्य	2	16	25
20		रेव.	4	23	46	15		पुष्य	3	9	49
23	मेष	अश्वि.	1	20	27	18		पुष्य	4	3	7
26		अश्वि.	2	16	58	20		आश्ले.	1	20	20
29		अश्वि.	3	13	20	23		आश्ले.	2	13	27
जून 1		अश्वि.	4	9	33	26		आश्ले.	3	6	29
4		भर.	1	5	38	28		आश्ले.	4	23	26
7		भर.	2	1	36	31	सिंह	मघा	1	16	18
9		भर.	3	21	27	सितंबर 3		मघा	2	9	6
12		भर.	4	17	10	6		मघा	3	1	50
15		कृत्ति.	1	12	47	8		मघा	4	18	29
18	वृष	कृत्ति.	2	8	16	11		पू.फा.	1	11	5
21		कृत्ति.	3	3	38	14		पू.फा.	2	3	36
23		कृत्ति.	4	22	53	16		पू.फा.	3	20	4
26		रोहि.	1	18	2	19		पू.फा.	4	12	27
29		रोहि.	2	13	4	22		उ.फा.	1	4	47
जुलाई 2		रोहि.	3	8	0	24	कन्या	उ.फा.	2	21	3
5		रोहि.	4	2	51	27		उ.फा.	3	13	16
7		मृग.	1	21	36	30		उ.फा.	4	5	26
10		मृग.	2	16	16	अक्तू. 2		हस्त	1	21	34
13	मिथुन	मृग.	3	10	50	5		हस्त	2	13	40
16		मृग.	4	5	17	8		हस्त	3	5	44

ग्रहों के निरयण राशि-नक्षत्रचरण-चार (1 जनवरी 2022 से 21 मार्च 2023 ई. तक)

शुक्र-चार (सन् 2022-2023 ई.)

तारीख 2022 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. (भा.स्टैं.टा.)	मि.	तारीख 2023 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. (भा.स्टैं.टा.)	मि.
अक्तू. 10		हस्त	4	21	46	जनवरी 1		उ.षा.	3	7	54
13		चित्रा	1	13	46	3		उ.षा.	4	23	48
16		चित्रा	2	5	44	6		श्रव.	1	15	42
18	तुला	चित्रा	3	21	40	9		श्रव.	2	7	39
21		चित्रा	4	13	34	11		श्रव.	3	23	38
24		स्वा.	1	5	26	14		श्रव.	4	15	39
26		स्वा.	2	21	17	17		धनि.	1	7	41
29		स्वा.	3	13	7	19		धनि.	2	23	46
नवंबर 1		स्वा.	4	4	56	22	कुम्भ	धनि.	3	15	53
3		विशा.	1	20	45	25		धनि.	4	8	4
6		विशा.	2	12	34	28		शत.	1	0	18
9		विशा.	3	4	22	30		शत.	2	16	35
11	वृश्चिक	विशा.	4	20	9	फरवरी 2		शत.	3	8	58
14		अनु.	1	11	56	5		शत.	4	1	24
17		अनु.	2	3	42	7		पू.भा.	1	17	56
19		अनु.	3	19	28	10		पू.भा.	2	10	33
22		अनु.	4	11	13	13		पू.भा.	3	3	15
25		ज्ये.	1	2	57	15	मीन	पू.भा.	4	20	2
27		ज्ये.	2	18	42	18		उ.भा.	1	12	55
30		ज्ये.	3	10	26	21		उ.भा.	2	5	53
दिसंबर 3		ज्ये.	4	2	11	23		उ.भा.	3	22	59
5	धनु	मूल	1	17	57	26		उ.भा.	4	16	12
8		मूल	2	9	43	मार्च 1		रेव.	1	9	33
11		मूल	3	1	29	4		रेव.	2	3	2
13		मूल	4	17	16	6		रेव.	3	20	41
16		पू.षा.	1	9	2	9		रेव.	4	14	29
19		पू.षा.	2	0	49	12	मेष	अश्वि.	1	8	27
21		पू.षा.	3	16	37	15		[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
24		पू.षा.	4	8	24	17		अश्वि.	3	20	54

शनि-चार (सन् 2022-23 ई.)

तारीख 2022-23 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. (भा.स्टैं.टा.)	मि.
जनवरी 21		श्रव.	4	2	38
फरवरी 18		धनि.	1	1	19
मार्च 19		धनि.	2	20	7
अप्रैल 29	कुम्भ	धनि.	3	7	53
जून 5	वक्री			3	17
जुलाई 12	मकर	धनि.	2	14	50
अगस्त 29		धनि.	1	8	53
अक्तू. 23	मार्गी			9	39
दिसंबर 14		धनि.	2	21	24
जनवरी 17	कुम्भ	धनि.	3	18	3
फरवरी 15		धनि.	4	1	13
मार्च 15		शत.	1	1	36

राहु-चार (सन् 2022-23 ई.)

तारीख	राशि	नक्षत्र	चरण	घं.	मि.
फरवरी 8		कृत्ति.	2	17	38
अप्रैल 12	मेष	कृत्ति.	1	15	30
जून 14		भर.	4	13	1
अगस्त 16		भर.	3	10	24
अक्तू. 18		भर.	2	8	15
दिसंबर 20		भर.	1	5	42
फरवरी 21		अश्वि.	4	3	10
अप्रैल 25		अश्वि.	3	0	58

केतु-चार (सन् 2022 ई.)

तारीख	राशि	नक्षत्र	चरण	घं.	मि.
फरवरी 8		विशा.	4	17	38
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	15	30
जून 14		विशा.	2	13	1

केतु-चार (सन् 2022-23 ई.)

तारीख 2022-23 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. (भा.स्टैं.टा.)	मि.
दिसंबर 20		स्वा.	3	5	42
फरवरी 21		स्वा.	2	3	10
अप्रैल 25		स्वा.	1	0	58

यूरेनस-चार (सन् 2022-23 ई.)

तारीख	राशि	नक्षत्र	चरण	घं.	मि.
जनवरी 14		भर.	1	4	56
18	मार्गी			20	58
23		भर.	2	15	36
अप्रैल 24		भर.	3	14	16
जून 25		भर.	4	11	48
अगस्त 24	वक्री			19	24
अक्तू. 25		भर.	3	23	12
जन. 23	मार्गी			4	29
अप्रैल 14		भर.	4	23	35

नेप्च्यून-चार (सन् 2022-23 ई.)

तारीख	राशि	नक्षत्र	चरण	घं.	मि.
जन. 9		पू.भा.	3	9	17
अप्रैल 18	मीन	पू.भा.	4	8	36
जून 28	वक्री			13	30
सितंबर 11	कुम्भ	पू.भा.	3	23	46
दिसंबर 4	मार्गी			5	49
फरवरी 18	मीन	पू.भा.	4	20	37

प्लूटो-चार (सन् 2022 ई.)

तारीख	राशि	नक्षत्र	चरण	घं.	मि.
फरवरी 19		उ.षा.	3	4	5
अप्रैल 30	वक्री			0	3
जुलाई 13		उ.षा.	2	12	20
अक्तू. 9	मार्गी			3	23
दिसंबर 27		उ.षा.	3	15	19

ग्रहों के वक्र-मार्ग/उदयास्त की तारीखें

(1 जनवरी, सन् 2022 से 21 मार्च, 2023 ई. तक)

ग्रह	वक्र/मार्ग	तारीख
मंगल	वक्री	30 अक्तूबर, 2022 ई.
मंगल	मार्गी	13 जनवरी, 2023 ई.
बुध	वक्री	14 जनवरी, 2022 ई.
बुध	मार्गी	4 फरवरी, 2022 ई.
बुध	वक्री	10 मई, 2022 ई.
बुध	मार्गी	3 जून, 2022 ई.
बुध	वक्री	10 सितंबर, 2022 ई.
बुध	मार्गी	2 अक्तूबर, 2022 ई.
बुध	वक्री	29 दिसंबर, 2022 ई.
बुध	मार्गी	18 जनवरी, 2023 ई.
गुरु	वक्री	29 जुलाई, 2022 ई.
गुरु	मार्गी	24 नवंबर, 2022 ई.
शुक्र	मार्गी	29 जनवरी, 2022 ई.
वि. सं. 2079 में तो शुक्र वर्ष भर मार्गी ही रहेगा।		
शनि	वक्री	5 जून, 2022 ई.
शनि	मार्गी	23 अक्तूबर, 2022 ई.
यूरेनस	मार्गी	18 जनवरी, 2022 ई.
यूरेनस	वक्री	24 अगस्त, 2022 ई.
यूरेनस	मार्गी	23 जनवरी, 2023 ई.
नेप्च्यून	वक्री	28 जून, 2022 ई.
नेप्च्यून	मार्गी	4 दिसंबर, 2022 ई.
प्लूटो	वक्री	30 अप्रैल, 2022 ई.
प्लूटो	मार्गी	9 अक्तूबर, 2022 ई.

ग्रह	उदय/अस्त	तारीख
मंगल	वि. संवत् 2079 में सालभर उदित रहेगा।	
बुध	प. में अस्त	15 जनवरी, 2022 ई.
बुध	पू. में उदित	31 जनवरी, 2022 ई.
बुध	पू. में अस्त	20 मार्च, 2022 ई.
बुध	प. में उदित	15 अप्रैल, 2022 ई.
बुध	प. में अस्त	12 मई, 2022 ई.
बुध	पू. में उदित	31 मई, 2022 ई.
बुध	पू. में अस्त	5 जुलाई, 2022 ई.
बुध	प. में उदित	29 जुलाई, 2022 ई.
बुध	प. में अस्त	16 सितंबर, 2022 ई.
बुध	पू. में उदित	1 अक्तूबर, 2022 ई.
बुध	पू. में अस्त	20 अक्तूबर, 2022 ई.
बुध	प. में उदित	3 दिसंबर, 2022 ई.
बुध	प. में अस्त	1 जनवरी, 2023 ई.
बुध	पू. में उदित	13 जनवरी, 2023 ई.
बुध	पू. में अस्त	2 मार्च, 2023 ई.
गुरु	अस्त	23 फरवरी, 2022 ई.
गुरु	उदित	26 मार्च, 2022 ई.
गुरु सं. 2079 वि. में तो वर्षभर उदित ही रहेगा।		
शुक्र	प. में अस्त	6 जनवरी, 2022 ई.
शुक्र	पू. में उदित	12 जनवरी, 2022 ई.
शुक्र	पू. में अस्त	30 सितंबर, 2022 ई.
शुक्र	प. में उदित	25 नवंबर, 2022 ई.
शनि	अस्त	18 जनवरी, 2022 ई.
शनि	उदित	22 फरवरी, 2022 ई.
शनि	अस्त	30 जनवरी, 2023 ई.
शनि	उदित	5 मार्च, 2023 ई.

ग्रहों के निरयण राशि-नक्षत्रचरण-चार (1 जनवरी 2022 से 21 मार्च 2023 ई. तक)

शुक्र-चार (सन् 2022-2023 ई.)

तारीख 2022 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं.	मि. (भा.स्टैं.टा.)	तारीख 2023 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं.	मि. (भा.स्टैं.टा.)
अक्तू. 10		हस्त	4	21	46	जनवरी 1		उ.षा.	3	7	54
13		चित्रा	1	13	46	3		उ.षा.	4	23	48
16		चित्रा	2	5	44	6		श्रव.	1	15	42
18	तुला	चित्रा	3	21	40	9		श्रव.	2	7	39
21		चित्रा	4	13	34	11		श्रव.	3	23	38
24		स्वा.	1	5	26	14		श्रव.	4	15	39
26		स्वा.	2	21	17	17		धनि.	1	7	41
29		स्वा.	3	13	7	19		धनि.	2	23	46
नवंबर 1		स्वा.	4	4	56	22	कुम्भ	धनि.	3	15	53
3		विशा.	1	20	45	25		धनि.	4	8	4
6		विशा.	2	12	34	28		शत.	1	0	18
9		विशा.	3	4	22	30		शत.	2	16	35
11	वृश्चिक	विशा.	4	20	9	फरवरी 2		शत.	3	8	58
14		अनु.	1	11	56	5		शत.	4	1	24
17		अनु.	2	3	42	7		पू.भा.	1	17	56
19		अनु.	3	19	28	10		पू.भा.	2	10	33
22		अनु.	4	11	13	13		पू.भा.	3	3	15
25		ज्ये.	1	2	57	15	मीन	पू.भा.	4	20	2
27		ज्ये.	2	18	42	18		उ.भा.	1	12	55
30		ज्ये.	3	10	26	21		उ.भा.	2	5	53
दिसंबर 3		ज्ये.	4	2	11	23		उ.भा.	3	22	59
5	धनु	मूल	1	17	57	26		उ.भा.	4	16	12
8		मूल	2	9	43	मार्च 1		रेव.	1	9	33
11		मूल	3	1	29	4		रेव.	2	3	2
13		मूल	4	17	16	6		रेव.	3	20	41
16		पू.षा.	1	9	2	9		रेव.	4	14	29
19		पू.षा.	2	0	49	12	मेष	अश्वि.	1	8	27
21		पू.षा.	3	16	37	15		अश्वि.	2	2	35
24		पू.षा.	4	8	24	17		अश्वि.	3	20	54
27		उ.षा.	1	0	13	मार्च 20		अश्वि.	4	15	23
29	मकर	उ.षा.	2	16	3	23		[illegible]	1	10	4

शनि-चार (सन् 2022-23 ई.)

तारीख 2022-23 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं.	मि. (भा.स्टैं.टा.)
जनवरी 21		श्रव.	4	2	38
फरवरी 18		धनि.	1	1	19
मार्च 19		धनि.	2	20	7
अप्रैल 29	कुम्भ	धनि.	3	7	53
जून 5	वक्री			3	17
जुलाई 12	मकर	धनि.	2	14	50
अगस्त 29		धनि.	1	8	53
अक्तू. 23	मार्गी			9	39
दिसंबर 14		धनि.	2	21	24
जनवरी 17	कुम्भ	धनि.	3	18	3
फरवरी 15		धनि.	4	1	13
मार्च 15		शत.	1	1	36

राहु-चार (सन् 2022-23 ई.)

तारीख	राशि	नक्षत्र	चरण	घं.	मि.
फरवरी 8		कृत्ति.	2	17	38
अप्रैल 12	मेष	कृत्ति.	1	15	30
जून 14		भर.	4	13	1
अगस्त 16		भर.	3	10	24
अक्तू. 18		भर.	2	8	15
दिसंबर 20		भर.	1	5	42
फरवरी 21		अश्वि.	4	3	10
अप्रैल 25		अश्वि.	3	0	58

केतु-चार (सन् 2022 ई.)

तारीख	राशि	नक्षत्र	चरण	घं.	मि.
फरवरी 8		विशा.	4	17	38
अप्रैल 12	तुला	विशा.	3	15	30
जून 14		विशा.	2	13	1
अगस्त 16		विशा.	1	10	24
अक्तू. 18		स्वा.	4	8	15

केतु-चार (सन् 2022-23 ई.)

तारीख 2022-23 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं.	मि. (भा.स्टैं.टा.)
दिसंबर 20		स्वा.	3	5	42
फरवरी 21		स्वा.	2	3	10
अप्रैल 25		स्वा.	1	0	58

यूरेनस-चार (सन् 2022-23 ई.)

तारीख	राशि	नक्षत्र	चरण	घं.	मि.
जनवरी 14		भर.	1	4	56
18	मार्गी			20	58
23		भर.	2	15	36
अप्रैल 24		भर.	3	14	16
जून 25		भर.	4	11	48
अगस्त 24	वक्री			19	24
अक्तू. 25		भर.	3	23	12
जन. 23	मार्गी			4	29
अप्रैल 14		भर.	4	23	35

नेप्च्यून-चार (सन् 2022-23 ई.)

तारीख	राशि	नक्षत्र	चरण	घं.	मि.
जन. 9		पू.भा.	3	9	17
अप्रैल 18	मीन	पू.भा.	4	8	36
जून 28	वक्री			13	30
सितंबर 11	कुम्भ	पू.भा.	3	23	46
दिसंबर 4	मार्गी			5	49
फरवरी 18	मीन	पू.भा.	4	20	37

प्लूटो-चार (सन् 2022 ई.)

तारीख	राशि	नक्षत्र	चरण	घं.	मि.
फरवरी 19		उ.षा.	3	4	5
अप्रैल 30	वक्री			0	3
जुलाई 13		उ.षा.	2	12	20
अक्तू. 9	मार्गी			3	23
दिसंबर 27		उ.षा.	3	15	19

ग्रहों के वक्र-मार्ग/उदयास्त की तारीखें

(1 जनवरी, सन् 2022 से 21 मार्च, 2023 ई. तक)

ग्रह	वक्री/मार्गी	तारीख
मंगल	वक्री	30 अक्तूबर, 2022 ई.
मंगल	मार्गी	13 जनवरी, 2023 ई.
बुध	वक्री	14 जनवरी, 2022 ई.
बुध	मार्गी	4 फरवरी, 2022 ई.
बुध	वक्री	10 मई, 2022 ई.
बुध	मार्गी	3 जून, 2022 ई.
बुध	वक्री	10 सितंबर, 2022 ई.
बुध	मार्गी	2 अक्तूबर, 2022 ई.
बुध	वक्री	29 दिसंबर, 2022 ई.
बुध	मार्गी	18 जनवरी, 2023 ई.
गुरु	वक्री	29 जुलाई, 2022 ई.
गुरु	मार्गी	24 नवंबर, 2022 ई.
शुक्र	मार्गी	29 जनवरी, 2022 ई.
वि. सं. 2079 में तो शुक्र वर्ष भर मार्गी ही रहेगा।		
शनि	वक्री	5 जून, 2022 ई.
शनि	मार्गी	23 अक्तूबर, 2022 ई.
यूरेनस	मार्गी	18 जनवरी, 2022 ई.
यूरेनस	वक्री	24 अगस्त, 2022 ई.
यूरेनस	मार्गी	23 जनवरी, 2023 ई.
नेप्च्यून	वक्री	28 जून, 2022 ई.
नेप्च्यून	मार्गी	4 दिसंबर, 2022 ई.
प्लूटो	वक्री	30 अप्रैल, 2022 ई.
प्लूटो	मार्गी	9 अक्तूबर, 2022 ई.

ग्रह	उदय/अस्त	तारीख
मंगल	वि. संवत् 2079 में सालभर उदित रहेगा।	
बुध	प. में अस्त	15 जनवरी, 2022 ई.
बुध	पू. में उदित	31 जनवरी, 2022 ई.
बुध	पू. में अस्त	20 मार्च, 2022 ई.
बुध	प. में उदित	15 अप्रैल, 2022 ई.
बुध	प. में अस्त	12 मई, 2022 ई.
बुध	पू. में उदित	31 मई, 2022 ई.
बुध	पू. में अस्त	5 जुलाई, 2022 ई.
बुध	प. में उदित	29 जुलाई, 2022 ई.
बुध	प. में अस्त	16 सितंबर, 2022 ई.
बुध	पू. में उदित	1 अक्तूबर, 2022 ई.
बुध	पू. में अस्त	20 अक्तूबर, 2022 ई.
बुध	प. में उदित	3 दिसंबर, 2022 ई.
बुध	प. में अस्त	1 जनवरी, 2023 ई.
बुध	पू. में उदित	13 जनवरी, 2023 ई.
बुध	पू. में अस्त	2 मार्च, 2023 ई.
गुरु	अस्त	23 फरवरी, 2022 ई.
गुरु	उदित	26 मार्च, 2022 ई.
गुरु सं. 2079 वि. में तो वर्षभर उदित ही रहेगा।		
शुक्र	प. में अस्त	6 जनवरी, 2022 ई.
शुक्र	पू. में उदित	12 जनवरी, 2022 ई.
शुक्र	पू. में अस्त	30 सितंबर, 2022 ई.
शुक्र	प. में उदित	25 नवंबर, 2022 ई.
शनि	अस्त	18 जनवरी, 2022 ई.
शनि	उदित	22 फरवरी, 2022 ई.
शनि	अस्त	30 जनवरी, 2023 ई.
शनि	उदित	5 मार्च, 2023 ई.

अक्षांशादि सारणी (भारत के सभी ज़िला स्थलों एवम् प्रसिद्ध नगरों के लिए)

संक्षिप्तरूपः– अं. नि.= अण्डेमान एवं निकोबार, अरुणा.= अरुणाचल प्रदेश, आं.=आन्ध्र प्रदेश, आसा.= आसाम , उ.= उड़ीसा, उ.प्र.=उत्तरप्रदेश, उ.आं उत्तरांचल, क.= कर्णाटक , के.= केरल, गु.= गुजरात, गोवा= गोवा, का.= जम्मू–काश्मीर, ता.= तामिलनाडु, त्रि.= त्रिपुरा, दा.ना.= दादर एण्ड नागर हवेली, डा.= डामन ड्यू, ना.= नागालैण्ड, बं.= प. बंगाल, पं.= पंजाब, पां.= पाण्डिचेरी, बि.=बिहार, झा.ख.= झारखण्ड, मणि.= मणिपुर, म.प्र.= मध्यप्रदेश, छ.ग.= छत्तीसगढ़, म.= महाराष्ट्र, मिज़ो.= मिज़ोरम, मे.= मेघालय, रा.= राजस्थान, लक्ष.= लक्षद्वीप, सि.= सिक्किम, ह.= हरियाणा, हि.= हिमाचल प्रदेश,

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्वी) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
अकबरपुर	(उ.प्र.)	26 25	82 33	+ 0 12
अंकलेश्वर	(गु.)	21 38	73 02	–37 52
अकोला	(म.)	20 40	77 05	–21 40
अखनूर	(का.)	32 53	74 45	–31 00
अगरतला	(त्रि.)	23 48	91 15	+35 00
अगरोहा	(ह.)	29 21	75 38	–27 28
अंगुल	(उ.)	20 48	85 04	+10 16
अच्छीवाल	(का.)	33 41	75 14	–29 04
अजन्ता	(म.)	20 30	75 48	–26 48
अजनाला	(पं.)	31 51	74 48	–30 48
अजमेर	(रा.)	26 27	74 42	–31 12
अटारी	(पं.)	31 36	74 35	–31 40
अतनेर	(म.प्र.)	21 40	77 59	–18 04
अनन्तनाग	(का.)	33 44	75 10	–29 20
अनन्तपुर	(आं.)	14 42	77 36	–19 36
अनामलै	(ता.)	10 34	76 50	–22 40
अनूपगढ़	(रा.)	29 07	73 06	–37 36
अनूपशहर	(उ.प्र.)	28 22	78 16	–16 56
अबोहर	(पं.)	30 09	74 11	–33 16
अमरकंटक	(म.प्र.)	22 40	81 45	– 3 00
अमरनाथगुफा	(का.)	34 13	75 32	–27 52
अमरावती	(म.)	20 56	77 45	–19 00
अमरावती	(आं.)	16 35	80 20	– 8 40
अमरेली	(गु.)	21 36	71 18	–44 48
अमरोहा	(उ.प्र.)	28 54	78 29	–16 04
अमलापुरम्	(आं.)	16 36	82 03	– 1 48
अमलोह	(पं.)	30 37	76 14	–25 04

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्वी) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
अमीनगांव	(आसा.)	26 13	91 45	+37 00
अमृतसर	(पं.)	31 37	74 55	–30 20
अमेठी	(उ.प्र.)	26 08	81 50	– 2 40
अम्ब	(हि.)	31 42	76 07	–25 32
अम्बाला	(ह.)	30 21	76 52	–22 32
अम्बाह	(उ.प्र.)	26 43	78 15	–17 00
अम्बिकापुर	(छ.ग.)	23 07	83 12	+ 2 48
अयोध्या	(उ.प्र.)	26 48	82 12	– 1 12
अरकोट	(ता.)	12 54	79 20	–12 40
अरकोणम्	(ता.)	13 05	79 40	–11 20
अर्की	(हि.)	31 09	76 58	–22 08
अर्वी.	(म.)	21 00	78 18	–16 48
अरारिया	(बि.)	26 08	87 24	+19 36
अल्मोड़ा	(उ.आं.)	29 37	79 40	–11 20
अलवर	(रा.)	27 34	76 38	–23 28
अलीगंज	(उ.प्र.)	27 30	79 11	–13 16
अलीगढ़	(उ.प्र.)	27 53	78 05	–17 40
अलीपुर	(बं.)	22 32	88 20	+23 20
अलीपुर दुआर	(बं.)	26 29	89 44	+28 56
अलीबाग	(म.)	18 38	72 55	–38 20
अवनिगड्डा	(आं.)	16 03	80 59	– 6 04
अशोकनगर	(म.प्र.)	24 33	77 43	–19 08
अहमदनगर	(म.)	19 05	74 44	–31 04
अहमदाबाद	(गु.)	23 03	72 40	–39 20
अहवा	(गु.)	20 44	73 41	–35 16
आगरा	(उ.प्र.)	27 11	78 01	–17 56
आजमगढ़	(उ.प्र.)	26 04	83 11	+ 2 44

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्वी) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
आडोनी	(आं.)	15 38	77 16	–20 56
आदिलाबाद	(आं.)	19 40	78 31	–15 56
आनन्द	(गु.)	22 34	73 01	–37 56
आनन्दपुरसाहिब	(पं.)	31 15	76 31	–23 56
आनी	(हि.)	31 27	77 25	–20 20
आबू	(रा.)	24 40	72 45	–39 00
आरा	(बि.)	25 34	84 40	+ 8 40
आरामबाग	(बं.)	22 53	87 47	+21 08
आसनसोल	(बं.)	23 41	86 59	+17 56
आसिन्द	(रा.)	25 42	74 21	–32 36
इच्छापुरम्	(उ.)	19 10	84 43	+ 8 52
इटारसी	(म.प्र.)	22 37	77 45	–19 00
इटावा	(उ.प्र.)	26 47	79 02	–13 52
इन्दौर	(म.प्र.)	22 44	75 50	–26 40
इन्दौरा	(हि.)	32 07	75 40	–27 20
इम्फाल	(मणि.)	24 47	93 57	+45 48
इलाहाबाद	(उ.प्र.)	देखें	प्रयाग	–
ईटानगर	(अरुणा.)	27 05	93 40	+44 40
ईसागढ़	(म.प्र.)	24 50	77 53	–18 28
उखरूल	(मणि.)	25 07	94 23	+47 32
उगाला	(ह.)	30 11	76 59	–22 04
उज्जैन	(म.प्र.)	23 09	75 43	–27 08
उड़ी	(का.)	34 05	74 01	–33 56
उडुपी	(क.)	13 23	74 45	–31 00
उत्तरकाशी	(उ.आं.)	30 44	78 27	–16 12
उदयगिरि	(उ.)	19 08	84 10	+ 6 40
उदयपुर	(त्रि.)	23 32	91 29	+35 56

अक्षांशादि सारणी (भारत के सभी ज़िला स्थलों एवम् प्रसिद्ध नगरों के लिए)

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.	नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.	नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
उदयपुर	(रा.)	24 35	73 41	−35 16	कपूरथला	(पं.)	31 23	75 23	−28 28	कालिकट	(के.)	11 15	75 46	−26 56
उन्नाव	(उ.प्र.)	26 32	80 30	− 8 00	करतारपुर	(पं.)	31 27	75 30	−28 00	कालिम्पोंग	(बं.)	27 04	88 29	+23 56
उपशी	(का.)	33 52	77 50	−18 40	कर्णप्रयाग	(उ.आं.)	30 13	79 17	−12 52	काशी	(उ.प्र.)	देखें	वाराणसी	− −
उमरकोट	(उ.)	19 39	82 18	− 0 48	करनाल	(ह.)	29 42	77 02	−21 52	कियारीघाट	(हि.)	31 00	77 05	−21 40
उरई	(उ.प्र.)	25 59	79 28	−12 08	करसोग	(हि.)	31 23	77 13	−21 08	किरकी	(म.)	18 36	73 57	−34 12
उल्हासनगर	(म.)	19 13	73 07	−37 32	कराड	(म.)	17 15	74 12	−33 12	किश्तवाड़	(का.)	33 19	75 48	−26 48
ऊटकमण्ड	(ता.)	11 24	76 44	−23 04	करूर	(ता.)	10 58	78 03	−17 48	किशनगंज	(बि.)	26 10	87 56	+21 44
ऊधमपुर	(का.)	32 54	75 06	−29 36	कालाअम्ब	(हि.)	30 30	77 13	−21 08	किशनगढ़ (अजमेर)	(रा.)	26 34	74 52	−30 32
ऊना	(हि.)	31 29	76 17	−24 52	काल्पा	(हि.)	31 32	78 15	−17 00	कीरतपुरसाहिब	(पं.)	31 11	76 34	−23 44
एकलिंगजी	(रा.)	24 43	73 46	−34 56	करीमगंज	(आसा.)	24 48	92 30	+40 00	कुड्डप्पा	(ता.)	14 28	78 50	−14 40
एटा	(उ.प्र.)	27 38	78 40	−15 20	करीमनगर	(आं.)	18 27	79 06	−13 36	कुड्डालूर	(ता.)	11 43	79 49	−10 44
एरोड	(ता.)	11 20	77 46	−18 56	करौली	(रा.)	26 30	77 01	−21 56	कुफरी	(हि.)	31 06	77 12	−21 12
एर्नाकुलम्	(के.)	10 00	76 16	−24 56	कर्नूल	(आं.)	15 50	78 05	−17 40	कुंभकोणम्	(ता.)	10 59	79 24	−12 24
एलिचपुर	(म.)	21 18	77 33	−19 48	कल्याण	(म.)	19 17	73 11	−37 16	कुमारी अन्तरीप	(ता.)	8 05	77 34	−19 44
एलुरु	(आं.)	16 43	81 09	− 5 24	कवरत्ती	(लक्ष.)	10 33	72 38	−39 28	कुम्हारहट्टी	(हि.)	30 53	77 03	−21 48
एलेप्पे	(के.)	9 30	76 22	−24 32	कवार्धा	(छ.ग.)	22 00	81 15	− 5 00	कुराली	(पं.)	30 50	76 35	−23 40
एलोरा	(म.)	20 04	75 15	−29 00	कसारागोड	(के.)	12 30	75 00	−30 00	कुरुक्षेत्र	(ह.)	29 59	76 50	−22 40
ऐजावल	(मिज़ो.)	23 43	92 44	+40 56	कसौली	(हि.)	30 55	76 57	−22 12	कुल्लू	(हि.)	31 58	77 06	−21 36
ओखा	(गु.)	22 26	69 02	−53 52	काकिनाडा	(आं.)	16 56	82 13	− 1 08	कूच बिहार	(बं.)	26 19	89 26	+27 44
ओंगोल	(आं.)	15 30	80 06	− 9 36	कांकेर	(म.प्र.)	20 17	81 32	− 3 52	कृष्णानगर	(बं.)	23 24	88 30	+24 00
औरैय्या	(उ.प्र.)	26 28	79 31	−11 56	कांगड़ा	(हि.)	32 05	76 18	−24 48	केओंजरगढ़	(उ.)	21 38	85 35	+12 20
ओस्मानाबाद	(म.)	18 09	76 06	−25 36	कांचीपुरम्	(ता.)	12 50	79 44	−11 04	केन्द्रपाड़ा	(उ.)	20 30	86 25	+15 40
औट	(हि.)	31 47	77 11	−21 16	काठगोदाम	(उ.आं.)	29 16	79 32	−11 52	केदारनाथ	(उ.आं.)	30 44	79 04	−13 44
औरंगाबाद	(म.)	19 52	75 22	−28 32	काठियावाड़	(गु.)	22 00	71 00	−46 00	केप कैमोरिन	(ता.)	देखें	कुमारी	अन्तरीप
कटक	(उ.)	20 26	85 56	+13 44	कादियां	(पं.)	31 49	75 23	−28 28	केसरी	(ह.)	30 14	76 54	−22 24
कटनी	(म.प्र.)	23 47	80 27	− 8 12	कानपुर	(उ.प्र.)	26 28	80 21	− 8 36	कैथल	(ह.)	29 48	76 26	−24 16
कटरा	(का.)	32 59	74 57	−30 12	कामठी (काम्पटी)	(म.)	21 12	79 16	−12 56	कैलाशहर	(त्रि.)	24 18	92 01	+38 04
कटराई	(हि.)	32 07	77 07	−21 32	कारकाल	(क.)	13 12	74 59	−30 04	कोचीन	(के.)	9 58	76 14	−25 04
कटिहार	(बि.)	25 30	87 35	+20 20	कारगिल	(का.)	34 31	76 13	−25 08	कोटकपूरा	(पं.)	30 36	74 54	−30 24
कठुआ	(का.)	32 22	75 32	−27 52	कारवाड़	(क.)	14 50	74 09	−33 24	कोटखाई	(हि.)	31 08	77 36	−19 36
कण्डाघाट	(हि.)	30 58	77 07	−21 32	कारिकाल	(पां.)	10 55	79 50	−10 40	कोटगढ़	(हि.)	31 19	77 29	−20 04
कन्नूर	(के.)	11 52	75 25	−28 20	कालका	(ह.)	30 50	76 56	−22 16	कोटा	(रा.)	25 10	75 52	−26 32
कन्नौज	(उ.प्र.)	27 04	79 55	−10 20	कालाहस्ती	(आं.)	13 48	79 42	−11 12	कोट्टागुडम्	(आं.)	17 32	80 39	− 7 24

अक्षांशादि सारणी (भारत के सभी ज़िला स्थलों एवम् प्रसिद्ध नगरों के लिए)

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
कोट्टायम्	(के.)	9 34	76 31	−23 56
कोटद्वारा	(उ.आं.)	29 45	78 32	−15 52
कोंटई	(बं.)	21 50	87 48	+21 12
कोडईकनाल	(ता.)	10 14	77 29	−20 04
कोणार्क	(उ.)	19 54	86 07	+14 28
कोप्पल	(क.)	15 21	76 09	−25 24
कोयम्बटूर	(ता.)	11 00	77 00	−22 00
कोरबा	(छ.ग.)	22 22	82 42	+ 0 48
कोरापुट	(उ.)	18 48	82 41	+ 0 44
कोलकाता	(बं.)	22 34	88 24	+23 36
कोल्हापुर	(म.)	16 42	74 19	−32 44
कोलार	(क.)	13 10	78 10	−17 20
कोल्लेगाल	(क.)	12 08	77 06	−21 36
कोलेबीरा	(बि.)	22 43	84 42	+ 8 48
कोहिमा	(नागा.)	25 39	94 08	+46 32
क्विलोन	(के.)	8 54	76 38	−23 28
खजियार	(हि.)	32 32	76 04	−25 44
खड़गपुर	(बं.)	22 20	87 20	+19 20
खंडवा	(म.प्र.)	21 50	76 23	−24 28
खतौली	(उ.प्र.)	29 17	77 43	−19 08
खन्ना	(पं.)	30 42	76 13	−25 08
खम्भालिया	(गु.)	22 12	69 39	−51 24
खम्मम्	(आं.)	17 16	80 13	− 9 08
खरगोन	(म.प्र.)	21 52	75 36	−27 36
खरड़	(पं.)	30 45	76 37	−23 32
खलीलाबाद	(उ.प्र.)	26 47	83 04	+ 2 16
खुर्जा	(उ.प्र.)	28 13	77 50	−18 40
खुर्दा	(उ.)	20 10	85 38	+12 32
खेड़ा	(गु.)	22 45	72 45	−39 00
खेमकरण	(पं.)	31 08	74 34	−31 44
गगरेट	(हि.)	31 40	76 04	−25 44
गंगटोक	(सि.)	27 22	88 36	+24 24
गंजम्	(उ.)	19 28	85 05	+10 20

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
गढ़चिराली	(म.)	20 12	80 00	−10 00
गढ़मुक्तेश्वर	(उ.प्र.)	28 48	78 06	−17 36
गढ़वा (गरवा)	(झा.खं.)	24 10	83 52	+ 5 28
गढ़शंकर	(पं.)	31 13	76 08	−25 28
गदग	(क.)	15 26	75 42	−27 12
गया	(बि.)	24 49	85 01	+10 04
गाजियाबाद	(उ.प्र.)	28 40	77 26	−20 16
गाजीपुर	(उ.प्र.)	25 35	83 34	+ 4 16
गांधीधाम	(गु.)	23 06	70 08	−49 28
गिरडीह	(झा.खं.)	24 12	86 21	+15 24
गिलगित	(का.)	35 55	74 21	−32 36
गुड़गांव	(ह.)	28 27	77 04	−21 44
गुंटकल	(आं.)	15 11	77 24	−20 24
गुंटूर	(आं.)	16 20	80 27	− 8 12
गुड़ीवाड़ा	(आं.)	16 27	81 00	− 6 00
गुडूर	(आं.)	14 10	79 51	−10 36
गुना	(म.प्र.)	24 40	77 20	−20 40
गुम्मा	(हि.)	31 06	77 28	−20 08
गुरदासपुर	(पं.)	32 02	75 27	−28 12
गुलबर्गा	(क.)	17 20	76 50	−22 40
गुलमर्ग	(का.)	34 05	74 25	−32 20
गुवाहाटी	(आसा.)	26 10	91 45	+37 00
गोइन्दवाल	(पं.)	31 22	75 08	−29 28
गोंडल	(गु.)	21 56	70 50	−46 40
गोंडा	(उ.प्र.)	27 08	82 01	− 1 56
गोधरा	(गु.)	22 49	73 40	−35 20
गोपालगंज	(बि.)	26 28	84 26	+ 7 44
गोम्पा	(का.)	35 02	77 20	−20 40
गोरखपुर	(उ.प्र.)	26 45	03 22	+ 3 28
गोरस	(म.प्र.)	25 32	76 56	−22 16
गोहाना	(ह.)	29 08	76 42	−23 12
गौंडीया	(म.)	21 26	80 14	− 9 04
ग्वालियर	(म.प्र.)	26 14	78 10	−17 20

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
घरौण्डा	(ह.)	29 33	76 58	−22 08
घाटल	(बं.)	22 40	87 43	+20 52
घाटसिला	(झा.खं.)	22 36	86 29	+15 56
घुमारवीं	(हि.)	31 26	76 43	−23 08
चच्योट	(हि.)	31 32	77 01	−21 56
चण्डीगढ़	(यू.टी.)	30 45	76 50	−22 40
चण्डीमन्दिर कैंट	(ह.)	30 42	76 52	−22 32
चन्दननगर	(बं.)	22 51	88 21	+23 24
चन्दौसी	(उ.प्र.)	28 27	78 46	−14 56
चन्द्रपुर	(म.)	19 57	79 18	−12 48
चम्बा	(हि.)	32 34	76 08	−25 28
चमौली	(उ.आं.)	30 24	79 21	−12 36
चरखी दादरी	(ह.)	28 37	76 18	−24 48
चामुण्डा जी	(हि.)	32 07	76 23	−24 28
चायल	(हि.)	30 59	77 12	−21 12
चास	(झा.खं.)	23 38	86 10	+14 40
चिक मंगलूर	(क.)	13 19	75 47	−26 52
चिंगलपुट	(ता.)	12 42	80 01	− 9 56
चित्तरंजन	(बं.)	23 52	86 52	+17 28
चित्तूर	(आं.)	13 12	79 07	−13 32
चितौड़गढ़	(रा.)	24 54	74 40	−31 20
चित्रदुर्ग	(क.)	14 14	76 24	−24 24
चित्रौद	(गु.)	23 25	70 42	−47 12
चिदम्बरम्	(ता.)	11 25	79 42	−11 12
चिन्तपूरणी	(हि.)	31 49	76 07	−25 32
चिनसुरा	(बं.)	22 53	88 25	+23 40
चिरगांव	(उ.प्र.)	25 35	78 49	−14 44
चिराला	(आं.)	15 50	80 21	− 8 36
चुंगतास	(का.)	35 37	78 37	−15 32
चुनार	(उ.प्र.)	25 08	82 56	+ 1 44
चुशुल	(का.)	33 34	78 38	−15 28
चूड़चांदपुर	(मणि.)	24 19	93 40	+44 40
चूरू	(रा.)	28 19	75 01	−29 56

अक्षांशादि सारणी (भारत के सभी ज़िला स्थलों एवम् प्रसिद्ध नगरों के लिए)

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्वी) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.	नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्वी) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.	नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्वी) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
चेन्नई	(ता.)	देखें	मद्रास	–	जालन्धर	(पं.)	31 19	75 34	−27 44	टुण्डला	(उ.प्र.)	27 12	78 17	−16 52
चेरापूंजी	(मे.)	25 17	91 42	+36 48	जालेश्वर	(उ.)	21 48	87 14	+18 56	टोंक	(रा.)	26 11	75 50	−26 40
चौपाल	(हि.)	30 57	77 36	−19 36	जालोर	(रा.)	25 22	72 38	−39 28	टोडा रायसिंह	(रा.)	26 00	75 29	−28 04
छतरपुर	(उ.)	19 24	85 00	+10 00	जालौन	(उ.प्र.)	26 09	79 21	−12 36	टोहाना	(ह.)	29 42	75 54	−26 24
छतरपुर	(म.प्र.)	24 54	79 38	−11 28	ज़िरो	(अरुणा.)	27 32	93 47	+45 08	ट्रावनकोर	(के.)	9 00	77 00	−22 00
छपरा	(बि.)	25 47	84 45	+ 9 00	जींद	(ह.)	29 19	76 19	−24 44	ठयोग	(हि.)	31 07	77 21	−20 36
छिंदवाड़ा	(म.प्र.)	22 03	78 58	−14 08	ज़ीरा	(पं.)	30 58	74 59	−30 04	डगशई	(हि.)	30 53	77 03	−21 48
छिब्रामऊ	(उ.प्र.)	27 09	79 31	−11 56	जुब्बल	(हि.)	31 07	77 39	−19 14	डबवाली	(पं.)	29 58	74 45	−31 00
छोटा उदयपुर	(गु.)	22 19	74 01	−33 56	जूनागढ़	(गु.)	21 32	70 34	−47 44	डमटाल	(हि.)	32 12	75 40	−27 20
जगदलपुर	(छ.ग.)	19 05	82 04	− 1 44	जेतपुर	(गु.)	21 43	70 42	−47 12	डलहौज़ी	(हि.)	32 32	75 59	−26 04
जगरांव	(पं.)	30 47	75 29	−28 04	जैतों	(पं.)	30 28	74 53	−30 28	डामन	(डा.)	20 25	72 53	−38 28
जगाधरी	(ह.)	30 10	77 18	−20 48	जैसलमेर	(रा.)	26 55	70 54	−46 24	डायमंड हार्बर	(बं.)	22 12	88 12	+22 48
जंगीपुर	(बं.)	24 28	88 04	+22 16	जोगिन्द्रनगर	(हि.)	31 59	76 46	−22 56	डालटनगंज	(झा.खं.)	24 02	84 04	+ 6 16
जण्ड्याला	(पं.)	31 36	75 03	−29 48	जोधपुर	(रा.)	26 18	73 04	−37 44	डिगबोई	(आसा.)	27 22	95 40	+52 40
जतोग	(हि.)	31 06	77 07	−21 32	जोरहाट	(आसा.)	26 45	94 12	+46 48	डिंडीगुल	(क.)	10 22	78 00	−18 00
जनगांव	(आं.प्र.)	17 44	79 10	−13 20	जौनपुर	(उ.प्र.)	25 44	82 41	+ 0 44	डिबाई	(उ.प्र.)	28 13	78 15	−17 00
जबलपुर	(म.प्र.)	23 10	79 59	−10 04	ज्वालाजी	(हि.)	31 53	76 22	−24 32	डिब्रूगढ़	(आसा.)	27 29	94 56	+49 44
जम्बूसार	(गु.)	22 00	72 50	−38 40	ज्वालामुखी	(हि.)	31 53	76 19	−24 44	डीडवाना	(रा.)	27 24	74 34	−31 44
जमशेदपुर	(बि.)	22 50	86 10	+14 40	झज्जर	(ह.)	28 37	76 39	−23 24	डीसा	(गु.)	24 14	72 13	−41 08
जमालपुर	(बि.)	25 19	86 32	+16 08	झाबुआ	(म.प्र.)	22 45	74 38	−31 28	डूंगरपुर	(रा.)	23 50	73 43	−35 08
जमुई	(बि.)	24 55	86 13	+14 52	झरिया	(झा.खं.)	23 45	86 24	+15 36	डोडा	(का.)	33 10	75 35	−27 40
जम्मू	(का.)	32 43	74 54	−30 24	झांसी	(उ.प्र.)	25 26	78 35	−15 40	ड्यू	(डा.)	20 42	71 01	−45 56
जयपुर	(आसा.)	27 14	95 24	+51 36	झालरापाटन	(रा.)	24 33	76 10	−25 20	ढुबरी	(आसा.)	26 02	89 58	+29 52
जयपुर	(रा.)	26 55	75 52	−26 32	झालावाड़	(रा.)	24 36	76 09	−25 24	तंजावर	(ता.)	10 46	79 09	−13 24
जलगांव	(म.)	21 03	75 39	−27 24	झुंझुनू	(रा.)	28 06	75 25	−28 20	तपा	(पं.)	30 19	75 21	−28 36
जलपाईगुड़ी	(बं.)	26 31	88 44	+24 56	टांडा उरमुर	(पं.)	31 42	75 38	−27 28	तरनतारन	(पं.)	31 27	74 58	−30 08
जलालाबाद	(उ.प्र.)	27 43	79 40	−11 20	टिकापाड़ा डैम	(उ.)	20 32	84 56	+ 9 44	तवांग	(अरुणा.)	27 35	91 52	+37 28
जशपुरनगर	(छ.ग.)	22 53	84 12	+ 6 48	टिथवाल	(का.)	34 24	73 47	−34 52	तांगला	(आसा.)	26 40	91 57	+37 48
जसरा	(उ.प्र.)	25 17	81 48	− 2 48	टिहरी	(उ.आं.)	30 20	78 30	−16 00	ताड़पत्री	(आं.)	14 55	77 59	−18 04
जसरोटा	(का.)	32 29	75 27	−28 12	टीकमगढ़	(म.प्र.)	24 45	78 53	−14 28	तामलुक	(बं.)	22 18	87 55	+21 40
जाखल	(ह.)	29 48	75 50	−26 40	टीहरा सुजानपुर	(हि.)	31 51	76 32	−23 52	ताम्बरम्	(ता.)	12 55	80 07	− 9 32
जामनगर	(गु.)	22 28	70 06	−49 36	टुंकुर	(क.)	13 21	77 05	−21 40	तारकेश्वर	(बं.)	22 54	88 02	+22 08
जालना	(म.)	19 50	75 58	−26 08	टूटीकोरिन	(ता.)	8 40	78 11	−17 16	तारा	(गु.)	24 00	71 51	−42 36

अक्षांशादि सारणी (भारत के सभी ज़िला स्थलों एवम् प्रसिद्ध नगरों के लिए)

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
तारादेवी	(हि.)	31 03	77 08	−21 28
तिनसुकिया	(आसा.)	27 28	95 20	+51 20
तिरुवनन्तपुरम्	(के.)	8 30	76 58	−22 08
तिरुपति	(आं.)	13 39	79 25	−12 20
तिरुप्पर	(क.)	11 05	77 20	−20 40
तिरुवन्नामलै	(ता.)	12 13	79 04	−13 44
तुर्रा	(मे.)	25 30	90 13	+30 52
तेजपुर	(आसा.)	26 38	92 49	+41 16
तेनाली	(आं.)	16 13	80 36	− 7 36
तेरुनेलवेली	(ता.)	8 45	77 43	−19 08
त्रिचुरापल्ली	(ता.)	10 49	78 41	−15 16
त्रिचूर	(के.)	10 32	76 14	−25 04
त्रिवेन्द्रम्	(के.)	देखें —	तिरुवनन्तपुरम्	
थराड़	(गु.)	24 26	71 40	−43 20
थानेधार	(हि.)	31 20	77 34	−19 44
थानेसर	(ह.)	29 58	76 56	−22 16
दतिया	(म.प्र.)	25 39	78 27	−16 12
दन्तेवाड़ा	(छ.ग.)	18 52	81 22	− 4 32
दभोई	(गु.)	22 08	73 28	−36 08
दमोह	(म.प्र.)	23 50	79 29	−12 04
दरभंगा	(बि.)	26 10	85 57	+13 48
दसूहा	(पं.)	31 49	75 38	−27 28
दादरी	(ह.)	28 34	77 33	−19 48
दानापुर	(बि.)	25 38	85 05	+10 20
दार्जिलिंग	(बं.)	27 02	88 16	+23 04
दावनगेरे	(क.)	14 30	75 52	−26 32
दिल्ली	(यू.टी.)	28 38	77 12	−21 12
दीनानगर	(पं.)	32 09	75 28	−28 08
दीमापुर	(नागा.)	25 53	93 43	+44 52
दुजाना	(ह.)	28 41	76 37	−23 32
दुमका	(झा.खं.)	24 16	87 15	+19 00
दुर्ग	(म.प्र.)	21 11	81 17	− 4 52

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
दुर्गापुर	(बं.)	23 29	87 20	+19 20
देओगढ़	(उ.)	21 32	84 46	+ 9 04
देओट सिद्ध	(हि.)	31 28	76 34	−23 44
देवघर	(बि.)	24 30	86 42	+16 48
देवप्रयाग	(उ.आं.)	30 09	78 37	−15 32
देवबन्द	(उ.प्र.)	29 42	77 41	−19 16
देवरिया	(उ.प्र.)	26 31	83 47	+ 5 08
देवलाली	(म.)	19 58	73 52	−34 32
देवास	(म.प्र.)	22 58	76 06	−25 36
देहरा गोपीपुर	(हि.)	31 54	76 13	−25 08
देहरादून	(उ.आं.)	30 19	78 02	−17 52
देहरी	(बि.)	24 52	84 11	+ 6 44
दोराहा मण्डी	(पं.)	30 49	76 02	−25 52
दौसा	(रा.)	26 51	76 21	−24 36
द्रास	(का.)	34 27	75 46	−26 56
द्वारिका	(गु.)	22 14	69 02	−53 52
धनबाद	(झा.खं.)	23 47	86 30	+16 00
धनुष्कोडी	(ता.)	9 12	79 25	−12 20
धमतरी	(छ.ग.)	20 42	81 34	− 3 44
धर्मजयगढ़	(म.प्र.)	22 28	83 13	+ 2 52
धर्मपुर	(हि.)	30 53	77 02	−21 52
धर्मशाला	(हि.)	32 16	76 23	−24 28
धांगधरा	(गु.)	22 59	71 29	−44 04
धार	(म.प्र.)	22 35	75 20	−28 40
धारवाड़	(क.)	15 30	75 04	−29 44
धुले	(म.)	20 58	74 47	−30 52
धेन कानाल	(उ.)	20 40	85 39	+12 36
धौलपुर	(रा.)	26 42	77 53	−18 28
नईहाटी	(बं.)	22 57	88 25	+23 40
नकोदर	(पं.)	31 07	75 29	−28 04
नगर	(हि.)	32 07	77 08	−21 28
नगरोटा बगवां	(हि.)	32 06	76 22	−24 32
नजीबाबाद	(उ.प्र.)	29 38	78 20	−16 40

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
नडियाद	(गु.)	22 42	72 55	−38 20
नन्दापुर	(उ.)	18 32	82 52	+ 1 28
नन्दुरबार	(म.)	21 22	74 15	−33 00
नयागढ़	(उ.)	20 10	85 08	+10 32
नरवाणा	(ह.)	29 37	76 07	−25 32
नरसिंहपुरा	(उ.)	20 28	85 08	+10 32
नरेन्द्रनगर	(उ.आं.)	30 10	78 20	−16 40
नरैना	(रा.)	26 50	74 11	−33 16
नवद्वीप	(बं.)	23 25	88 22	+23 28
नवरंगपुर	(उ.)	19 15	82 39	+ 0 36
नवलगढ़	(रा.)	27 51	75 18	−28 48
नवसारी	(गु.)	20 52	72 56	−38 16
नवांशहर	(पं.)	31 07	76 08	−25 28
नसीराबाद	(रा.)	26 18	74 46	−30 56
नागापट्टनम्	(ता.)	10 45	79 50	−10 40
नागपुर	(म.)	21 10	79 10	−13 20
नागरकोयल	(ता.)	8 10	77 26	−20 16
नागौर	(रा.)	27 11	73 44	−35 04
नाचना	(रा.)	27 29	71 45	−43 00
नाथद्वारा	(रा.)	24 56	73 50	−34 40
नान्देड़	(म.)	19 11	77 21	−20 36
नानपाड़ा	(उ.प्र.)	27 52	81 30	− 4 00
नान्दोड़	(गु.)	21 52	73 32	−35 52
नाभा	(पं.)	30 22	76 08	−25 28
नारकण्डा	(हि.)	31 16	77 27	−20 12
नारनौल	(ह.)	28 03	76 14	−25 04
नारायणगढ़	(ह.)	30 29	77 08	−21 28
नालगोंडा	(आं.)	17 04	79 15	−13 00
नालन्दा	(बि.)	25 07	85 25	+11 40
नालागढ़	(हि.)	31 03	76 42	−23 12
नालिया	(गु.)	23 19	68 51	−54 36
नासिक	(म.)	20 00	73 52	−34 32
नाहन	(हि.)	30 33	77 21	−20 36

अक्षांशादि सारणी (भारत के सभी ज़िला स्थलों एवम् प्रसिद्ध नगरों के लिए)

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्वी) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.	नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्वी) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.	नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्वी) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
निज़ामाबाद	(आं.)	18 40	78 07	−17 40	पाठलगांव	(म.प्र.)	22 34	83 28	+ 3 52	फतेहपुर	(उ.प्र.)	25 56	80 52	− 6 32
निम्बहेड़ा	(रा.)	24 37	74 45	−31 00	पाण्डिचेरी	(पां.)	11 58	79 54	−10 24	फतेहपुर सीकरी	(उ.प्र.)	27 06	77 40	−19 20
निरमण्ड	(हि.)	31 27	77 34	−19 44	पणजी	(गोवा)	15 29	73 50	−34 40	फतेहाबाद	(उ.प्र.)	27 01	78 19	−16 44
नीमच	(म.प्र.)	24 27	74 52	−30 32	पानीपत	(ह.)	29 23	77 00	−22 00	फतेहाबाद	(ह.)	29 31	75 28	−28 08
नीलगिरि	(उ.)	21 29	86 49	+17 16	पापड़हांडी	(उ.)	19 22	82 34	+ 0 16	फरीदकोट	(पं.)	30 40	74 40	−31 20
नीलोखेड़ी	(ह.)	29 51	76 55	−22 20	पालनपुर	(गु.)	24 12	72 29	−40 04	फरीदाबाद	(ह.)	28 26	77 19	−20 44
नूरपुर	(हि.)	32 18	75 54	−26 24	पालमपुर	(हि.)	32 07	76 33	−23 48	फर्रूखाबाद	(उ.प्र.)	27 24	79 34	−11 44
नूरपुरबेदी	(पं.)	31 09	76 29	−24 04	पालिताणा	(गु.)	21 30	71 50	−42 40	फाज़िल्का	(पं.)	30 25	74 04	−33 44
नैनवा	(रा.)	25 45	75 57	−26 12	पाली	(रा.)	25 46	73 20	−36 40	फिरोज़पुर	(पं.)	30 55	74 40	−31 20
नैनीताल	(उ.आं.)	29 23	79 27	−12 12	पालयंकोट्टै	(ता.)	8 42	77 46	−18 56	फिरोज़ाबाद	(उ.प्र.)	27 09	78 24	−16 24
नैल्लूर	(आं.)	14 29	80 00	−10 00	पांवटा साहिब	(हि.)	30 27	77 37	−19 32	फिल्लौर	(पं.)	31 01	75 47	−26 52
नोखामण्डी	(रा.)	27 35	73 29	−36 04	पासीघाट	(अरुणा.)	28 05	95 20	+51 20	फुलेरा	(रा.)	26 52	75 16	−28 56
नोंगस्टोइन	(मे.)	25 31	91 16	+35 04	पिठोरागढ़	(उ.आं.)	29 35	80 13	− 9 08	फूलबानी	(उ.)	20 30	84 18	+ 7 12
नोहर	(रा.)	29 11	74 46	−30 56	पिपली	(ह.)	29 58	76 53	−22 28	फ़ैज़ाबाद	(उ.प्र.)	26 47	82 08	− 1 28
नौशहरा	(का.)	33 10	74 15	−33 00	पिहोवा	(ह.)	29 57	76 37	−23 32	बक्सर	(बि.)	25 34	83 59	+ 5 56
पचपदरा	(रा.)	25 55	72 21	−40 36	पीलीभीत	(उ.प्र.)	28 38	79 48	−10 48	बंगलौर	(क.)	13 00	77 35	−19 40
पंचकूला	(ह.)	30 42	76 52	−22 32	पुंछ	(का.)	33 51	74 06	−33 36	बंगा	(पं.)	31 11	75 59	−26 04
पंचमढ़ी	(म.प्र.)	22 28	78 26	−16 16	पुट्टापर्त्ती	(आं.)	14 15	77 45	−19 00	बटाला	(पं.)	31 48	75 12	−29 12
पंजिम	(गोवा)	15 29	73 50	−34 40	पुदुकोट्टै	(ता.)	10 23	78 49	−14 44	बठिण्डा	(पं.)	30 11	75 00	−30 00
पटना	(बि.)	25 37	85 13	+10 52	पुरनिया	(बि.)	25 49	87 31	+20 04	बड़ानगर	(बं.)	22 38	88 22	+23 28
पटियाला	(पं.)	30 20	76 25	−24 20	पुरी	(उ.)	19 48	85 52	+13 28	बड़ौदा	(गु.)	22 18	73 13	−37 08
पट्टी	(पं.)	31 17	74 51	−30 36	पुरुलिया	(बं.)	23 20	86 22	+15 28	बदायूं	(उ.प्र.)	28 03	79 07	−13 32
पटौदी	(ह.)	28 18	76 48	−22 48	पुष्कर	(रा.)	26 30	74 33	−31 48	बद्दी	(हि.)	30 55	76 48	−22 48
पठानकोट	(पं.)	32 17	75 42	−27 12	पूना	(म.)	18 34	73 53	−34 28	बद्रीनाथ	(उ.आं.)	30 44	79 29	−12 04
पंढरपुर	(म.)	17 42	75 24	−28 24	पोरबन्दर	(गु.)	21 40	69 36	−51 36	बनगांव	(बं.)	23 04	88 49	+25 16
पन्ना	(म.प्र.)	24 44	80 14	− 9 04	पोर्टब्लेयर	(अं.नि.)	11 41	92 43	+40 52	बनिहाल	(का.)	33 30	75 18	−28 48
परभनी	(म.)	19 16	76 51	−22 36	पोलाची	(ता.)	10 38	77 00	−22 00	बबीना	(उ.प्र.)	25 15	78 28	−16 08
पराकत्तम	(आं.)	15 30	80 06	− 9 36	पौड़ी	(उ.आं.)	30 09	78 47	−14 52	बंबई	(म.)	देखें —	मुम्बई	
पलवल	(ह.)	28 09	77 20	−20 40	प्रतापगढ़	(उ.प्र.)	25 50	81 59	− 2 04	बरवाला	(ह.)	29 22	75 54	−26 24
पहलगाम	(का.)	34 01	75 20	−26 40	प्रतापगढ़	(म.प्र.)	24 02	74 47	−30 52	बरेली	(उ.प्र.)	28 22	79 27	−12 12
पाकौर	(झा.खं.)	24 38	87 54	+21 36	प्रयाग	(उ.प्र.)	25 28	81 54	− 2 24	बरौनी	(बि.)	25 30	85 58	+13 52
पाटन	(गु.)	23 50	72 09	−41 24	प्रोद्दातूर	(ता.)	14 45	78 35	−15 40	बर्दवान	(बं.)	23 16	87 52	+21 28
पाटनगढ़	(उ.)	20 43	83 09	+ 2 36	फगवाड़ा	(पं.)	31 14	75 46	−26 56	बलरामपुर	(उ.प्र.)	27 26	82 11	− 1 16

अक्षांशादि सारणी (भारत के सभी ज़िला स्थलों एवम् प्रसिद्ध नगरों के लिए)

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्वी) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
बलिया	(उ.प्र.)	25 45	84 10	+ 6 40
बल्लभगढ़	(ह.)	28 21	77 19	−20 44
बसीरहाट	(बं.)	22 40	88 53	+25 32
बस्ति	(उ.प्र.)	26 48	82 43	+ 0 52
ब्रह्मकुण्ड	(आसा.)	27 52	96 23	+55 32
बहराईच	(उ.प्र.)	27 35	81 36	− 3 36
बागलकोट	(क.)	16 14	75 47	−26 52
बाघ	(म.प्र.)	22 22	74 49	−30 44
बातल	(हि.)	32 22	77 36	−19 36
बांकीपुर	(बि.)	25 40	85 12	+10 48
बांकुरा	(बं.)	23 15	87 04	+18 16
बाघपत	(उ.प्र.)	28 57	77 13	−21 08
बाटानगर	(बं.)	22 31	88 15	+23 00
बाड़मेर	(रा.)	25 45	71 25	−44 20
बांदा	(उ.प्र.)	25 29	80 20	− 8 40
बामनघाटी	(उ.)	22 13	86 15	+15 00
बारपेटा	(आसा.)	26 20	91 02	+34 08
बारसी	(म.)	18 14	75 44	−27 04
बारागढ़	(उ.)	21 25	83 35	+ 4 20
बाराबंकी	(उ.प्र.)	26 55	81 12	− 5 12
बारामूला	(का.)	34 12	74 20	−32 40
बारासत	(बं.)	22 43	88 29	+23 56
बारीपाड़ा	(उ.)	21 56	86 44	+16 56
बालाघाट	(म.प्र.)	21 48	80 11	− 9 16
बालामऊ	(उ.प्र.)	27 15	80 23	− 8 28
बालासौर	(उ.)	21 31	86 54	+17 36
बालीपाड़ा	(आसा.)	26 09	92 09	+38 36
बालूरघाट	(बं.)	25 13	88 46	+25 04
बालेश्वर	(उ.)	21 31	86 59	+17 56
बालोतरा	(रा.)	25 49	72 14	−41 04
बांस्वाड़ा	(रा.)	23 30	74 24	−32 24
बिजनौर	(उ.प्र.)	29 22	78 08	−17 28
बिलासपुर	(छ.ग.)	22 05	82 09	− 1 24

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्वी) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
बिलासपुर	(हि.)	31 20	76 47	−22 52
बिलासीपाड़ा	(आसा.)	26 13	90 13	+30 52
बिष्णुपुर	(बं.)	23 05	87 19	+19 16
बिहारशरीफ	(बि.)	25 11	85 32	+12 08
बीकानेर	(रा.)	28 01	73 20	−36 40
बीजापुर	(क.)	16 50	75 45	−27 00
बीड़	(म.)	18 59	75 46	−28 56
बीदर	(क.)	17 56	77 35	−19 40
बुक्क पत्तनम	(आं.)	14 12	77 46	−18 56
बुढलाडा	(पं.)	29 56	75 34	−27 44
बुटाणा	(ह.)	29 11	76 38	−23 28
बुद्धगया	(बि.)	24 41	84 58	+ 9 52
बुरनपुर	(बं.)	23 42	86 58	+17 52
बुरहानपुर	(म.प्र.)	21 18	76 14	−25 04
बुलन्दशहर	(उ.प्र.)	28 24	77 51	−18 36
बुलसार	(गु.)	20 36	72 56	−38 16
बूंदी	(रा.)	25 27	75 40	−27 20
बृन्दावन	(उ.प्र.)	27 33	77 44	−19 04
बेगूसराय	(बि.)	25 25	86 08	+14 32
बेट्टिया	(बि.)	26 48	84 33	+ 8 12
बेलगांव	(क.)	15 54	74 36	−31 36
बेला	(पं.)	30 56	76 23	−24 28
बेला(प्रतापगढ़)	(उ.प्र.)	25 54	82 01	− 1 56
बेल्लारी	(क.)	15 11	76 54	−22 24
बैकुण्ठपुर	(छ.ग.)	23 15	82 33	+ 0 12
बैजनाथ	(हि.)	32 04	76 37	−23 32
बैरकपुर	(बं.)	22 46	88 24	+23 36
बोम्डिला	(अरुणा.)	27 19	92 25	+39 40
बोरसाद	(गु.)	22 24	72 59	−38 04
बोलपुर	(बं.)	23 40	87 43	+20 52
बोलानगिर	(उ.)	20 41	83 30	+ 4 00
बौडा	(उ.)	20 50	84 22	+ 7 28
ब्यावर	(रा.)	26 06	74 20	−32 40

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्वी) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
ब्यास	(पं.)	31 31	75 18	−28 48
भटिण्डा	(पं.)	देखें	बठिण्डा	(पं.)
भण्डारा	(म.)	21 10	79 41	−11 16
भदोही	(उ.प्र.)	25 25	82 34	+ 0 16
भद्रक	(उ.)	21 05	86 30	+16 00
भद्रवाह	(का.)	32 59	75 43	−27 08
भद्राचलम्	(आं.)	17 42	80 53	− 6 28
भरतपुर	(रा.)	27 15	77 30	−20 00
भरमौर	(हि.)	32 27	76 32	−23 52
भरूच	(गु.)	21 40	72 58	−38 08
भवानीपत्तन	(उ.)	19 54	83 10	+ 2 40
भागलपुर	(बि.)	25 15	87 00	+18 00
भातपाड़ा	(बं.)	22 52	88 24	+23 36
भादसों	(पं.)	30 31	76 15	−25 00
भाभर	(गु.)	24 08	71 42	−43 12
भावनगर	(गु.)	21 46	72 10	−41 20
भिंड	(म.प्र.)	26 35	78 46	−14 56
भिलाई	(छ.ग.)	21 13	81 26	− 4 16
भिवंडी	(गु.)	19 18	73 04	−37 44
भिवानी	(ह.)	28 48	76 08	−25 28
भीनमाल	(रा.)	25 00	72 19	−40 44
भीमावरम्	(आं.)	16 34	81 35	− 3 40
भीलवाड़ा	(रा.)	25 21	74 40	−31 20
भुज	(गु.)	23 16	69 40	−51 20
भुवनेश्वर	(उ.)	20 13	85 50	+13 20
भुसावल	(म.)	21 01	75 50	−26 40
भोपाल	(म.प्र.)	23 16	77 24	−20 24
मऊ	(उ.प्र.)	25 17	81 23	− 4 28
मंगलोर	(क.)	12 54	74 51	−30 36
मंगलौर	(उ.आं.)	29 48	77 52	−18 32
मंगालादै	(आसा.)	26 23	92 02	+38 08
मछलीपट्टणम्	(आं.)	16 10	81 08	− 5 28
मजीठा	(पं.)	31 46	74 57	−30 12

अक्षांशादि सारणी (भारत के सभी ज़िला स्थलों एवम् प्रसिद्ध नगरों के लिए)

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.	नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.	नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
मण्डला	(म.प्र.)	22 37	80 22	− 8 32	माहे	(पां.)	11 42	75 32	−27 52	मोरेना (मुरैना)	(म.प्र.)	26 23	78 04	−17 44
मण्ड्या	(क.)	12 34	76 55	−22 20	मिदनापुर	(बं.)	22 25	87 21	+19 24	मोहनिया	(बि.)	25 11	83 37	+ 4 28
मण्डी	(हि.)	31 43	76 58	−22 08	मिराज	(म.)	16 51	74 42	−31 12	मोहाना	(म.)	25 54	77 45	−19 00
मणिकर्ण	(हि.)	32 02	77 21	−20 36	मिर्जापुर	(उ.प्र.)	25 09	82 35	+ 0 20	मोहाली	(पं.)	30 43	76 42	−23 12
मथुरा	(उ.प्र.)	27 30	77 41	−19 16	मीरपुर	(का.)	33 32	73 51	−34 36	यनम्	(पां.)	16 44	82 13	− 1 08
मदुरै	(ता.)	9 58	78 10	−17 20	मुक्तसर	(पं.)	30 29	74 31	−31 56	यमुनानगर	(ह.)	30 07	77 18	−20 48
मद्रास	(ता.)	13 05	80 18	− 8 48	मुकेरियां	(पं.)	31 57	75 37	−27 32	यवतमाल	(म.)	20 24	78 08	−17 28
मधुपुर	(झा.खं.)	24 16	86 39	+16 36	मुगलसराय	(उ.प्र.)	25 18	83 07	+ 2 28	योल	(हि.)	32 11	76 23	−24 28
मधुबनी	(बि.)	26 22	86 05	+14 20	मुंगेर	(बि.)	25 23	86 30	+16 00	रक्सौल	(बि.)	26 58	84 51	+ 9 24
मधीपुरा	(बि.)	25 55	86 47	+17 08	मुजफ्फरनगर	(उ.प्र.)	29 28	77 41	−19 16	रंगिया	(आसा.)	26 28	91 35	+36 20
मनाली	(हि.)	32 16	77 10	−21 20	मुजफ्फरपुर	(बि.)	26 07	85 27	+11 48	रतलाम	(म.प्र.)	23 21	75 07	−29 32
मन्दसौर	(म.प्र.)	24 05	75 06	−29 36	मुजफ्फराबाद	(का.)	34 23	73 30	−36 00	रतनगढ़	(रा.)	28 05	74 39	−31 24
मन्सूरी	(उ.आं.)	30 27	78 07	−17 32	मुद्रा	(म.प्र.)	24 43	77 35	−19 40	रत्नागिरि	(म.)	17 00	73 22	−36 32
मनसादेवी	(ह.)	30 43	76 51	−22 36	मुन्दरा	(गु.)	22 50	69 48	−50 48	राऊरकेला	(उ.)	22 15	84 52	+ 9 28
मनीमाजरा	(ह.)	30 42	76 52	−22 32	मुम्बई	(म.)	19 00	72 54	−38 24	रांची	(झा.खं.)	23 23	85 23	+11 32
मलोट	(पं.)	30 13	74 29	−32 04	मुरवाड़ा	(म.प्र.)	23 51	80 22	− 8 32	राजकोट	(गु.)	22 18	70 53	−46 28
मवाना	(उ.प्र.)	29 06	77 55	−18 20	मुरादाबाद	(उ.प्र.)	28 50	78 47	−14 52	राजगढ़	(म.प्र.)	24 01	76 45	−23 00
महबूबनगर	(आं.)	16 44	77 59	−18 04	मुरी	(झा.खं.)	23 51	82 34	+ 0 16	राजनन्दगांव	(छ.ग.)	21 05	81 05	− 5 40
महवा	(रा.)	27 03	76 56	−22 16	मुलाना	(ह.)	30 17	77 03	−21 48	राजपालैयम्	(ता.)	9 27	77 34	−19 44
महाबलिपुरम्	(ता.)	12 37	80 12	− 9 12	मुर्शिदाबाद	(बं.)	24 11	88 16	+23 04	राजपुरा	(पं.)	30 29	76 36	−23 36
महाबलेश्वर	(गु.)	17 58	73 43	−35 08	मेतूर	(ता.)	11 50	77 51	−18 36	राजमहल	(झा.खं.)	25 03	87 53	+21 32
महुआ	(गु.)	21 05	71 48	−42 48	मेढ़क	(आं.)	18 03	78 16	−17 00	राजमहेन्द्री	(आं.)	17 05	81 48	− 2 48
महेन्द्रगढ	(ह.)	28 17	76 09	−25 24	मेरठ	(उ.प्र.)	28 59	77 42	−19 12	राजुला	(गु.)	21 01	71 26	−44 16
महेसाणा	(गु.)	23 37	72 28	−40 08	मेलघाट	(म.)	21 44	77 12	−21 12	राजौरी	(का.)	33 22	74 17	−32 52
माछीवाड़ा	(पं.)	30 55	76 11	−25 16	मैनपुरी	(उ.प्र.)	27 14	79 01	−13 56	रादौर	(ह.)	30 01	77 08	−21 28
मांगरोल	(गु.)	21 07	70 08	−49 28	मैसूर	(क.)	12 18	76 37	−23 32	राधनपुर	(गु.)	23 52	71 36	−43 36
माण्डवी (कच्छ)	(गु.)	22 50	69 28	−52 08	मैहर	(म.प्र.)	24 16	80 45	− 7 00	रानाघाट	(बं.)	23 11	88 35	+24 20
मानसा	(पं.)	29 59	75 23	−28 28	मोकोक चुंग	(नागा.)	26 19	94 32	+48 08	रानीखेत	(उ.आं.)	29 39	79 25	−12 20
मायूरम्	(ता.)	11 08	79 40	−11 20	मोगा	(पं.)	30 48	75 10	−29 20	रापर	(गु.)	23 33	70 38	−47 28
मारवाड़ जं.	(रा.)	25 43	73 36	−35 36	मोतीहारी	(बि.)	26 40	84 57	+ 9 48	राबर्ट्सगंज	(उ.प्र.)	24 42	83 04	+ 2 16
मालदा	(बं.)	25 05	88 09	+22 36	मोरवी	(गु.)	22 50	70 50	−46 40	रामनाथपुरम्	(ता.)	9 23	78 53	−14 28
मालेगांव(नासिक)	(म.)	20 32	74 38	−31 28	मोरार	(म.प्र.)	26 13	78 14	−17 04	रामपुर	(उ.प्र.)	28 49	79 02	−13 52
मालेरकोटला	(पं.)	30 31	75 52	−26 32	मोरिण्डा	(पं.)	30 48	76 30	−24 00	रामबन	(का.)	33 15	75 15	−29 00

अक्षांशादि सारणी (भारत के सभी ज़िला स्थलों एवम् प्रसिद्ध नगरों के लिए)

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
रामपुरबुशहर	(हि.)	31 27	77 38	−19 28
रामपुराफूल	(पं.)	30 17	75 14	−29 04
रामानुजगंज	(छ.ग.)	23 48	83 42	+ 4 48
रामेश्वरम्	(ता.)	9 18	79 19	−12 44
रायकोट	(पं.)	30 39	75 36	−27 36
रायगढ़	(छ.ग.)	21 54	83 26	+ 3 44
रायचूर	(क.)	16 15	77 20	−20 40
रायपुर	(उ.प्र.)	30 19	78 06	−17 36
रायपुर	(छ.ग.)	21 15	81 41	− 3 16
रायबरेली	(उ.प्र.)	26 14	81 16	− 4 56
रायसिंहनगर	(रा.)	29 32	73 27	−36 12
रायसेन	(म.प्र.)	23 18	77 47	−18 52
रियांग	(अरुणा.)	27 32	92 55	+41 40
रिवालसर	(हि.)	31 38	76 50	−22 40
रीवां	(म.प्र.)	24 31	81 19	− 4 44
रुड़की	(उ.आं.)	29 52	77 53	−18 28
रुद्रप्रयाग	(उ.आं.)	30 16	78 59	−14 04
रिवाड़ी	(ह.)	28 12	76 40	−23 20
रोन्दू	(का.)	35 37	75 06	−29 36
रोपड़	(पं.)	30 57	76 32	−23 52
रोहड़ू	(हि.)	31 13	77 45	−19 00
रोहतक	(ह.)	28 54	76 38	−23 28
लक्सर	(उ.आं.)	29 48	78 02	−17 52
लखनऊ	(उ.प्र.)	26 51	80 55	− 6 20
लखपत	(गु.)	23 49	68 47	−54 52
लखीमपुर	(उ.प्र.)	27 57	80 49	− 6 44
लखीसराय	(बि.)	25 12	86 06	+14 24
ललितपुर	(उ.प्र.)	24 41	78 25	−15 20
लातूर	(म.)	18 24	76 34	−23 44
लाडवा	(ह.)	29 59	77 05	−21 40
लालसोत	(रा.)	26 34	76 23	−24 28
लिम्बड़ी	(गु.)	22 36	71 48	−42 48
लुधियाना	(पं.)	30 55	75 54	−26 24

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
लुम्डिंग	(आसा.)	25 46	93 10	+42 40
लूनावाड़ा	(गु.)	23 08	73 37	−35 32
लूनी	(रा.)	26 00	73 00	−38 00
लेह	(का.)	34 09	77 35	−19 40
लैंस डाऊन	(उ.आं.)	29 50	78 41	−15 16
लोहारू	(ह.)	28 27	75 49	−26 44
वर्धा	(म.)	20 42	78 40	−15 20
वलपरै	(ता.)	10 22	76 58	−22 08
वल्लभीपुर	(गु.)	20 52	71 58	−42 08
वलसाड़	(गु.)	20 40	72 55	−38 20
वारंगल	(आं.)	18 00	79 35	−11 40
वाल्टेअर	(आं.)	17 47	83 22	+ 3 28
वाराणसी	(उ.प्र.)	25 20	83 00	+ 2 00
विजयनगर	(क.)	15 20	76 30	−24 00
विजयपुरी	(आं.)	16 52	79 35	−11 40
विजयवाड़ा	(आं.)	16 31	80 39	− 7 24
विदिशा	(म.प्र.)	23 32	77 50	−18 40
विरामग्राम	(गु.)	23 08	72 04	−41 44
विरुदुनगर	(ता.)	9 36	77 58	−18 08
विल्लुपुरम्	(ता.)	11 56	79 29	−12 04
विशाखापट्टनम्	(आं.)	17 42	83 18	+ 3 12
विसनगर	(गु.)	23 41	72 36	−39 36
वेंकटपलम्	(उ.)	18 05	81 40	− 3 20
वेरावल	(गु.)	20 53	70 28	−48 08
वेल्लूर	(ता.)	12 56	79 09	−13 24
वैष्णोदेवी	(का.)	33 02	74 57	−30 12
व्यारा	(गु.)	21 09	73 28	−36 08
शहडोल	(म.प्र.)	23 20	81 22	− 4 32
शाजापुर	(म.प्र.)	23 26	76 18	−24 48
शान्ति निकेतन	(बं.)	23 40	87 42	+20 48
शान्तिपुर	(बं.)	23 15	88 26	+23 44
शामली	(उ.प्र.)	29 27	77 19	−20 44
शाहजहांपुर	(उ.प्र.)	27 53	79 55	−10 20

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
शाहदरा	(दिल्ली)	28 41	77 17	−20 52
शाहपुर	(हि.)	32 12	76 10	−25 20
शाहाबाद	(ह.)	30 10	76 52	−22 32
शाहाबाद	(उ.प्र.)	27 39	79 57	−10 12
शिकोहाबाद	(उ.प्र.)	27 06	78 36	−15 36
शिमला	(हि.)	31 06	77 10	−21 20
शिमोग	(क.)	13 56	75 34	−27 44
शिलांग	(मे.)	25 36	91 53	+37 32
शिवपुरी	(म.प्र.)	25 26	77 40	−19 20
शिवसागर	(आसा.)	26 58	94 39	+48 36
शिवहार (शिवविहार)	(बि.)	26 35	85 18	+11 12
शिवाकाशी	(ता.)	9 26	77 50	−18 40
शेखपुरा	(बि.)	25 09	85 53	+13 32
शैलम्	(आं.)	16 02	78 56	−14 16
शोलापुर	(म.)	17 43	75 56	−26 16
श्योपुर	(म.प्र.)	25 40	76 40	−23 20
श्रीकाकुलम्	(आं.)	18 19	84 00	+ 6 00
श्रीकालाहस्ती	(आं.)	13 48	79 42	−11 12
श्रीगंगानगर	(रा.)	29 49	73 50	−34 40
श्रीनगर	(उ.आं.)	30 13	78 47	−14 52
श्रीनगर	(का.)	34 07	74 50	−30 40
श्रीमाधोपुर	(रा.)	27 25	75 32	−27 52
श्रीरंगम्	(ता.)	10 52	78 40	−15 20
संगरूर	(पं.)	30 12	75 53	−26 28
संगारेड्डी पेठ	(आं.)	17 37	78 04	−17 44
सढौरा	(हि.)	30 23	77 13	−21 08
सतना	(म.प्र.)	24 34	80 55	− 6 20
सतारा	(म.)	17 49	74 05	−33 40
सदरा	(गु.)	23 20	72 48	−38 48
सदिया	(अरुणा.)	27 48	95 38	+52 32
सनौर	(पं.)	30 18	76 28	−24 08
सपाटू	(हि.)	30 59	76 59	−22 04
समराला	(पं.)	30 51	76 11	−[illegible] 16

अक्षांशादि सारणी (भारत के सभी ज़िला स्थलों एवम् प्रसिद्ध नगरों के लिए)

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्वी) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
समाना	(पं.)	30 09	76 12	−25 12
समस्तीपुर	(बि.)	25 55	85 50	+13 20
सम्बलपुर	(उ.)	21 28	84 01	+ 6 04
सरदारशहर	(रा.)	28 27	74 30	−32 00
सरहिंद	(पं.)	30 38	76 22	−24 32
सलीम	(म.)	11 39	78 12	−17 12
सवाई माधोपुर	(रा.)	25 58	76 25	−24 20
सहरसा	(बि.)	25 55	86 35	+16 20
सहसवां	(उ.प्र.)	28 05	78 45	−15 00
सहारनपुर	(उ.प्र.)	29 58	77 33	−19 48
सागर	(म.प्र.)	23 50	78 50	−14 40
सांगला	(हि.)	31 29	78 12	−17 12
सांगली	(म.)	16 55	74 37	−31 32
सांगानेर	(रा.)	26 49	75 49	−26 44
सांचोर	(रा.)	24 40	71 50	−42 40
साम्बा	(का.)	32 32	75 08	−29 28
सांभर	(रा.)	26 54	75 13	−29 08
सारनाथ	(उ.प्र.)	25 24	83 01	+ 2 04
सासनी	(उ.प्र.)	27 43	78 05	−17 40
सासाराम	(बि.)	24 57	84 03	+ 6 12
साहिबगंज	(झा.खं.)	25 13	87 40	+20 40
सिऊनी	(म.प्र.)	22 06	79 35	−11 40
सिऊरी	(बं.)	23 55	87 32	+20 08
सिकती	(बि.)	26 24	87 33	+20 12
सिकन्दराबाद	(आं.)	17 27	78 30	−16 00
सिकन्दराराऊ	(उ.प्र.)	27 42	78 27	−16 12
सिन्दरी	(रा.)	25 33	71 55	−42 20
सिन्दरी	(बं.)	23 45	86 42	+16 48
सिवाना	(रा.)	25 36	72 27	−40 12
सिरसा	(ह.)	29 32	75 04	−29 44
सिरोही	(रा.)	24 53	72 54	−38 24
सिल्चर	(आसा.)	24 49	92 47	+41 08
सिलीगुड़ी	(बं.)	26 42	88 26	+23 44
सिहोरा	(म.प्र.)	23 29	80 07	− 9 32
सिंहभूम	(झा.खं.)	22 24	85 30	+12 00
सीकर	(रा.)	27 36	75 09	−29 24
सीतापुर	(उ.प्र.)	27 34	80 41	− 7 16
सीतामढ़ी	(बि.)	26 35	85 32	+12 08
सीवां	(बि.)	28 12	84 23	+ 7 32
सुईगांव	(गु.)	24 10	71 23	−44 28
सुन्दरगढ़	(उ.)	22 07	84 02	+ 6 08
सुन्दरनगर	(हि.)	31 32	76 53	−22 28
सुनाम	(पं.)	30 08	75 48	−26 48
सुपौल	(बि.)	26 07	86 36	+16 24
सुरेन्द्रनगर	(गु.)	22 42	71 41	−43 16
सुल्तानपुर	(उ.प्र.)	26 16	82 04	− 1 44
सूरत	(गु.)	21 10	72 50	−38 40
सूरतगढ़	(रा.)	29 19	73 57	−34 12
सूरी	(बं.)	23 55	87 32	+20 08
सेरमपुर	(बं.)	22 45	88 21	+23 24
सैंज	(हि.)	31 49	77 19	−20 44
सोजत	(रा.)	25 56	73 42	−35 12
सोनगढ़	(गु.)	21 42	71 58	−42 08
सोनपुर	(बि.)	25 42	85 12	+10 48
सोनपुर	(उ.)	20 50	83 58	+ 5 52
सोनहाट	(छ.ग.)	23 29	82 30	0 00
सोनामर्ग	(का.)	34 18	75 18	−28 48
सोनीपत	(ह.)	28 59	77 01	−21 56
सोमनाथ	(गु.)	21 04	70 26	−48 16
सोलन	(हि.)	30 55	77 09	−21 24
हजारीबाग	(झा.खं.)	23 59	85 25	+11 40
हडसर	(हि.)	32 22	76 33	−23 48
हनुमानगढ़	(रा.)	29 35	74 21	−32 36
हफलोंग	(आसा.)	25 11	93 02	+42 08
हमीरपुर	(हि.)	31 41	76 31	−23 56
हरदोई	(उ.प्र.)	27 25	80 07	− 9 32
हरसीपत्तन	(हि.)	31 53	76 39	−23 24
हरिद्वार	(उ.आं.)	29 58	78 13	−17 08
हरिपुर	(हि.)	31 59	76 05	−25 40
हरिपुरधार	(हि.)	30 52	77 28	−20 08
हरीकेपत्तन	(पं.)	31 30	74 57	−30 12
हल्दवानी	(उ.आं.)	29 13	79 31	−11 56
हल्दिया	(बं.)	22 02	88 05	+22 20
हास्सन	(क.)	13 01	76 03	−25 48
हसनपुर	(ह.)	27 58	77 30	−20 00
हसनपुर	(उ.प्र.)	28 43	78 17	−16 52
हाजीपुर	(बि.)	25 43	85 14	+10 56
हाटकोटी	(हि.)	31 08	77 45	−19 00
हाथरस	(उ.प्र.)	27 36	78 03	−17 48
हापुड़	(उ.प्र.)	28 43	77 47	−18 52
हालीशहर	(बं.)	22 56	88 25	+23 40
हावड़ा	(बं.)	22 36	88 19	+23 16
हावेरी	(क.)	14 46	75 26	−28 16
हासपेट	(क.)	15 16	76 26	−24 16
हांसी	(हि.)	32 27	77 50	−18 40
हांसी	(ह.)	29 06	76 00	−26 00
हिंगनघाट	(म.)	20 32	78 52	−14 32
हिम्मतनगर	(गु.)	23 35	73 00	−38 00
हिसार	(ह.)	29 10	75 46	−26 56
हीराकुण्ड डैम	(उ.)	21 31	83 57	+ 5 48
हुबली	(क.)	15 20	75 14	−29 04
हैदराबाद	(आं.)	17 22	78 30	−16 00
होडल	(ह.)	27 53	77 22	−20 32
होशंगाबाद	(म.प्र.)	22 46	77 45	−19 00
होशियारपुर	(पं.)	31 32	75 57	−26 12
होसुर	(ता.)	12 45	77 51	−18 36

कुछ विदेशी प्रसिद्ध नगरों के अक्षांश आदि

नगर	देश	स्टैण्डर्ड टाईम मेरिडियन (अं. क.)	अक्षांश (अं. क.)	रेखांश (अं. क.)	स्टैण्डर्ड अन्तर (क्षेत्रीय स्टै. टा. से स्था. म. का. का अन्तर) (मि. से.)	भा. स्टै. टा. का क्षेत्रीय स्टै. टा. से अन्तर (घं मि.)
*Abadan	Iran	52 30 पू.	30 20 उ.	48 16 पू.	−16 56	+02 00
*Abbottabad	Pakistan	75 00 पू.	34 09 उ.	73 13 पू.	−07 08	+00 30
Abu Dhabi	U.A.E.	60 00 पू.	24 28 उ.	54 22 पू.	−22 32	+01 30
Accra	Ghana	00 00	05 33 उ.	00 13 प.	−00 52	+05 30
Addis Ababa	Ethiopia	45 00 पू.	09 02 उ	38 44 पू.	−25 04	+02 30
Aden	Yemen	45 00 पू.	12 45 उ.	45 04 पू.	+00 16	+02 30
Akyab	Myanmar	97 30 पू.	20 09 उ.	92 55 पू.	−18 20	−01 00
*Alexandria	Egypt	30 00 पू.	31 12 उ.	29 53 पू.	−00 28	+03 30
Algiers	Algeria	15 00 पू.	36 47 उ.	03 03 पू.	−47 48	+04 30
*Amman	Jordan	30 00 पू.	31 57 उ	35 56 पू.	+23 44	+03 30
*Amsterdam	Netherlands	15 00 पू.	52 22 उ.	04 53 पू.	−40 28	+04 30
*Angmagssalik	Greenland	45 00 प.	65 36 उ.	37 41 प.	+29 16	+08 30
*Ankara	Turkey	30 00 पू.	39 57 उ.	32 54 पू.	+11 36	+03 30
Anuradhapur	Sri Lanka	82 30 पू.	08 21 उ.	80 23 पू.	−08 28	00 00
*Athens	Greece	30 00 पू.	37 54 उ	23 43 पू.	−25 08	+03 30
*Auckland	New Zealand	180 00 पू.	36 52 द.	174 42 पू.	−21 12	−06 30
*Austin (Texas)	U.S.A.	90 00 प.	30 16 उ.	97 44 प.	−30 56	+11 30
Bacolod	Phill.	120 00 पू.	10 40 उ.	122 57 पू.	+11 48	−02 30
*Baghdad	Iraq	45 00 पू.	33 20 उ.	44 27 पू.	−02 12	+02 30
*Bahawalpur	Pakistan	75 00 पू.	29 59 उ	73 16 पू.	−06 56	+00 30
Bangkok	Thailand	105 00 पू.	13 44 उ.	100 30 पू.	−18 00	−01 30
Batticoloa	Sri Lanka	82 30 पू.	07 43 उ.	81 45 पू.	−03 00	00 00
Beijing	China	120 00 पू.	39 55 उ.	116 25 पू.	−14 20	−02 30
*Beirut	Lebanon	30 00 पू.	33 50 उ.	35 25 पू.	+21 40	+03 30
*Belgrade	Yugoslavia	15 00 पू.	44 50 उ.	20 30 पू.	+22 00	+04 30
*Berlin	Germany	15 00 पू.	52 32 उ.	13 25 पू.	−06 20	+04 30
*Berne	Switzerland	15 00 पू.	46 57 उ.	07 26 पू.	−30 16	+04 30
Biratnagar	Nepal	86 15 पू.	26 29 उ.	87 17 पू.	+04 08	−00 15
*Birmingham	England	00 00	52 30 उ.	01 50 प.	−07 20	+05 30
Bogota	Colombia	75 00 प.	04 36 उ.	74 05 प.	+03 40	+10 30
Bogra	Bangladesh	90 00 पू.	24 51 उ.	89 22 पू.	−02 32	−00 30
*Bonn	Germany	15 00 पू.	50 44 उ.	07 04 पू.	−31 44	+04 30
*Boston	U.S.A.	75 00 प.	42 21 उ.	71 04 प.	+15 44	+10 30
*Brasilia	Brazil	45 00 प.	15 47 द.	47 55 प.	−11 40	+08 30
*Bratislava	Slovakia	15 00 पू.	48 09 उ.	17 07 पू.	+08 28	+04 30
Brazzaville	Congo	15 00 पू.	04 16 द.	15 17 पू.	+01 08	+04 30
*Brisbane	Australia	150 00पू.	27 28 द.	153 02 पू.	+12 08	−04 30
*Brussels	Belgium	15 00 पू.	50 52 उ.	04 22 पू.	−42 32	+04 30
*Bucharest	Romania	30 00 पू.	44 25 उ.	26 07 पू.	−15 32	+03 30
*Budapest	Hungary	15 00 पू.	47 29 उ.	19 03 पू.	+16 12	+04 30
Buenos Aires	Argentina	45 00 प.	34 35 द.	58 27 प.	−53 48	+08 30
*Buffalo (N.Y.)	U.S.A.	75 00 प.	42 55 उ.	78 50 प.	−15 20	+10 30
*Cairo	Egypt	30 00 पू.	30 03 उ.	31 14 पू.	+04 56	+03 30
*California City	U.S.A.	120 00प.	35 07 उ.	117 59प.	+08 04	+13 30
*Canberra	Australia	150 00पू.	35 19 द.	149 08पू.	−03 28	−04 30
*Cape Town	South Africa	30 00 पू.	33 56 द.	18 22 पू.	−46 32	+03 30
Caracas	Venezuela	60 00 प.	10 30 उ.	66 56 प.	−39 44	+09 30
*Charlotti Amali	Virgin Is (U.K.)	60 00 प.	18 21 उ.	64 56 प.	−19 44	+09 30
*Chicago	U.S.A.	90 00 प.	41 53 उ.	87 38 प.	+09 28	+11 30
Chittagong	Bangla.	90 00 पू.	22 20 उ.	91 50 पू.	+07 20	−00 30
*Cleveland (Ohio)	U.S.A.	75 00 प.	41 30 उ.	81 41 प.	−26 44	+10 30
Colombo	Sri Lanka	82 30 पू.	06 56 उ.	79 51 पू.	−10 36	00 00
Comilla	Bangladesh	90 00 पू.	23 27 उ.	91 12 पू.	+04 48	−00 30
*Copenhagen	Denmark	15 00 पू.	55 40 उ.	12 35 पू.	−09 40	+04 30
Dakar	Senegal	00 00	14 40 उ.	17 26 प.	−69 44	+05 30
*Dallas (Texas)	U.S.A.	90 00 प.	32 47 उ.	96 48 प.	−27 12	+11 30

*इन नगरों में ग्रीष्मकालीन समय (Summer Time) प्रचलित है। ग्रीष्मकालीन समय क्षेत्रीय स्टै. टा. से एक घण्टा आगे रहता है।

* इन नगरों में ग्रीष्मकालीन समय (Summer Time) प्रचलित है। ग्रीष्मकालीन समय क्षेत्रीय स्टै. टा. से एक घण्टा आगे रहता है।

कुछ विदेशी प्रसिद्ध नगरों के अक्षांश आदि

नगर	देश	स्टैण्डर्ड टाईम मेरिडियन (अं. क.)	अक्षांश (अं. क.)	रेखांश (अं. क.)	स्टैण्डर्ड अन्तर (क्षेत्रीय स्टै. टा. से स्था. म. का. का अन्तर) (मि. से.)	भा. स्टै. टा. का क्षेत्रीय स्टै. टा. से अन्तर (घं. मि.)
*Damascus	Syria	30 00 पू.	33 30 उ.	36 18 पू.	+25 12	+03 30
Dar-es-salaam	Tanzania	45 00 पू.	06 50 द.	39 17 पू.	−22 52	+02 30
*Detroit (Mich.)	U.S.A.	75 00 प.	42 23 उ.	83 05 प.	−32 20	+10 30
Dhaka	Bangla.	90 00 पू.	23 43 उ.	90 25 पू.	+01 40	−00 30
Djibouti	Djibouti	45 00 पू.	11 36 उ.	43 09 पू.	−07 24	+02 30
Dinajpur	Bangla.	90 00 पू.	25 38 उ.	88 38 पू.	−05 28	−00 30
Doha	Qatar	45 00 पू.	25 17 उ.	51 32 पू.	+26 08	+02 30
*Dublin	Ireland	00 00	53 20 उ.	06 15 प.	−25 00	+05 30
Dubai	U.A.E.	60 00 पू.	25 18 उ.	55 18 पू.	−18 48	+01 30
*Edinburgh	Scotland	00 00	55 56 उ.	03 11 प.	−12 44	+05 30
*Edmonton	Canada	105 00 प.	53 33 उ.	113 28 प.	−33 52	+12 30
*Florida City	U.S.A.	75 00 प.	25 27 उ.	80 29 प.	−21 56	+10 30
*Frankfurt	Germany	15 00 पू.	50 06 उ.	08 40 पू.	−25 20	+04 30
Fukuoka	Japan	135 00 पू.	35 34 उ.	137 27 पू.	+09 48	−03 30
Galle	Sri Lanka	82 30 पू.	06 02 उ.	80 13 पू.	−09 08	00 00
Guatemala	Guatemala	90 00 प.	14 38 उ.	90 31 प.	−02 04	+11 30
*Geneva	Switzerland	15 00 पू.	46 12 उ.	06 09 पू.	−35 24	+04 30
*Glasgow	Scotland	00 00	55 52 उ.	04 15 प.	−17 00	+05 30
*Greenwich	England	00 00	51 29 उ.	00 00	00 00	+05 30
Guiyang	China	120 00 पू.	26 35 उ.	106 43 पू.	−53 08	−02 30
*Hamilton	Canada	75 00 प.	43 15 उ.	79 50 प.	−19 20	+10 30
Hanoi	North Vietnam	105 00 पू.	21 02 उ.	105 52 पू.	+03 28	−01 30
*Havana	Cuba	75 00 प.	23 08 उ.	82 22 प.	−29 28	+10 30
*Heidelberg	Germany	15 00 पू.	49 24 उ.	08 43 पू.	−25 08	+04 30
*Helsinki	Finland	30 00 पू.	60 09 उ.	24 57 पू.	−20 12	+03 30
Hiroshima	Japan	135 00 पू.	34 24 उ.	132 27 पू.	−10 12	−03 30
Hongkong	China	120 00 पू.	22 18 उ.	114 10 पू.	−23 20	−02 30
Honolulu	Hawai Island	150 00 प.	21 19 उ.	157 52 प.	−31 28	+15 30

नगर	देश	स्टैण्डर्ड टाईम मेरिडियन (अं. क.)	अक्षांश (अं. क.)	रेखांश (अं. क.)	स्टैण्डर्ड अन्तर (क्षेत्रीय स्टै. टा. से स्था. म. का. का अन्तर) (मि. से.)	भा. स्टै. टा. का क्षेत्रीय स्टै. टा. से अन्तर (घं. मि.)
*Houston (Texas)	U.S.A.	90 00 प.	29 45 उ.	95 21 प.	−21 24	+11 30
*Hyderabad	Pakistan	75 00 पू.	25 22 उ.	68 22 पू.	−26 32	+00 30
*Isfahan	Iran	52 30 पू.	32 40 उ.	51 38 पू.	−03 28	+02 00
*Islamabad	Pakistan	75 00 पू.	33 42 उ.	73 10 पू.	−07 20	+00 30
*Istanbul	Turkey	30 00 पू.	41 00 उ.	29 00 पू.	−04 00	+03 30
Jaffna	Sri Lanka	82 30 पू.	09 40 उ.	80 00 पू.	−10 00	00 00
Jakarta	Indonesia	105 00 पू.	06 10 द.	106 49 पू.	+07 16	−01 30
Jamaica	West Indies	75 00 प.	18 00 उ.	76 48 प.	−07 12	+10 30
*Jerusalem	Israel	30 00 पू.	31 46 उ.	35 14 पू.	+20 56	+03 30
Jessore	Bangla	90 00 पू.	23 10 उ.	89 13 पू.	−03 08	−00 30
Johannesburg	South Africa	30 00 पू.	26 15 द.	28 00 पू.	−08 00	+03 30
Kabul	Afghanistan	67 30 पू.	34 33 उ.	69 12 पू.	+06 48	+01 00
Kampala	Uganda	45 00 पू.	00 19 उ.	32 25 पू.	−50 20	+02 30
Kandahar	Afghanistan	67 30 पू.	31 32 उ.	65 30 पू.	−08 00	+01 00
Kandy	SriLanka	82 30 पू.	07 18 उ.	80 38 पू.	−07 28	00 00
*Karachi	Pakistan	75 00 पू.	24 52 उ.	67 03 पू.	−31 48	+00 30
Kathmandu	Nepal	86 15 पू.	27 43 उ.	85 19 पू.	−03 44	−00 15
Khartoum	Sudan	30 00 पू.	15 35 उ.	32 35 पू.	+10 20	+03 30
Kingston	*Jamaica*	75 00 प.	18 00 उ.	76 48 प.	−07 12	+10 30
Khulna	Bangla.	90 00 पू.	22 48 उ.	89 33 पू.	−01 48	−00 30
Kuala Lumpur	Malaysia	120 00 पू.	03 09 उ.	101 43 पू.	−73 08	−02 30
Kushtia	Bangla.	90 00 पू.	23 55 उ.	89 07 पू.	−03 32	−00 30
Kuwait	Kuwait	45 00 पू.	29 20 उ.	47 59 पू.	+11 56	+02 30
Kwangchow	China	120 00 पू.	23 06 उ.	113 16 पू.	−26 56	−02 30
Lagos	Nigeria	15 00 पू.	06 25 उ.	03 27 पू.	−46 12	+04 30
*Leeds	England	00 00	53 50 उ.	01 35 प.	−06 20	+05 30
*Leipzig	Germany	15 00 पू.	51 20 उ.	12 23 पू.	−10 28	+04 30
*Leningrad	Russia	30 00 पू.	59 57 उ.	30 18 पू.	+01 12	+03 30

* इन नगरों में ग्रीष्मकालीन समय (Summer Time) प्रचलित है। ग्रीष्मकालीन समय क्षेत्रीय स्टै. टा. से एक घण्टा आगे रहता है।

कुछ विदेशी प्रसिद्ध नगरों के अक्षांश आदि

नगर	देश	स्टैण्डर्ड टाईम मेरिडियन	अक्षांश	रेखांश	स्टैण्डर्ड अन्तर (क्षेत्रीय स्टैं. टा. से स्था. म. का. का अन्तर)	मा. स्टैं. टा. का क्षेत्रीय स्टैं. टा. से अन्तर
		अं. क.	अं. क.	अं. क.	मि. से.	घं मि.
Leopoldville	Zaire	15 00 पू.	04 18 द.	15 18 पू.	+01 12	+04 30
Lhasa	China	120 00 पू.	29 40 उ.	91 07 पू.	−115 32	−02 30
Lima	Peru	75 00 प.	12 02 द.	77 02 प.	−08 08	+10 30
*Lisbon	Portugal	00 00	38 43 उ.	09 11 प.	−36 44	+05 30
*Liverpool	England	00 00	53 25 उ.	02 55 प.	−11 40	+05 30
*London	England	00 00	51 32 उ.	00 05 प.	−00 20	+05 30
*Long Beach, Ca.	U.S.A.	120 00 प.	33 46 उ.	118 12 प.	+07 12	+13 30
*Los Angeles	U.S.A.	120 00 प.	34 03 उ.	118 14 प.	+07 04	+13 30
Luanda	Angola	15 00 पू.	08 48 द.	13 14 पू.	−07 04	+04 30
Lusaka	Zambia	30 00 पू.	15 25 द.	28 17 पू.	−06 52	+03 30
*Luxembourg	Luxembourg	15 00 पू.	49 36 उ.	06 09 पू.	−35 24	+04 30
*Madrid	Spain	15 00 पू.	40 25 उ.	03 41 प.	−74 44	+04 30
*Manchester	England	00 00	53 30 उ.	02 15 प.	−09 00	+05 30
Mandlay	Myanmar	97 30 पू.	22 00 उ.	96 05 पू.	−05 40	−01 00
Manila	Philippines	120 00 पू.	14 35 उ.	121 00 पू.	+04 00	−02 30
Mecca	SaudiArabia	45 00 पू.	21 25 उ.	39 54 पू.	−20 24	+02 30
*Melbourne	Australia	150 00 पू.	37 50 द.	144 59 पू.	−20 04	−04 30
*Mexico City	Mexico	90 00 प.	19 26 उ.	99 10 प.	−36 40	+11 30
*Milan	Italy	15 00 पू.	45 28 उ.	09 11 पू.	−23 16	+04 30
Mombasa	Kenya	45 00 पू.	04 00 द	39 40 पू.	−21 20	+02 30
*Montreal	Canada	75 00 प.	45 30 उ.	73 34 प.	+05 44	+10 30
*Moscow	Russia	45 00 पू.	55 45 उ.	37 34 पू.	−29 44	+02 30
Moulmein	Myanmar	97 30 पू.	16 30 उ.	97 38 पू.	+00 32	−01 00
*Multan	Pakistan	75 00 पू.	30 11 उ.	71 29 पू.	−14 04	+00 30
*Munich	Germany	15 00 पू.	48 08 उ.	11 35 पू.	−13 40	+04 30
Muscat	Oman	60 00 पू.	23 37 उ.	58 35 पू.	−05 40	+01 30
Mymensingh	Bangla.	90 00 पू.	24 45 उ.	90 24 पू.	+01 36	−00 30
Nagoya	Japan	135 00 पू.	35 10 उ.	136 55 पू.	+07 40	−03 30

नगर	देश	स्टैण्डर्ड टाईम मेरिडियन	अक्षांश	रेखांश	स्टैण्डर्ड अन्तर (क्षेत्रीय स्टैं. टा. से स्था. म. का. का अन्तर)	मा. स्टैं. टा. का क्षेत्रीय स्टैं. टा. से अन्तर
		अं. क.	अं. क.	अं. क.	मि. से.	घं मि.
Nairobi	Kenya	45 00 पू.	01 18 द.	36 52 पू.	−32 32	+02 30
*New Castle	England	00 00	52 27 उ.	03 06 प.	−12 24	+05 30
*New Orleans	U.S.A.	90 00 प.	29 57 उ.	90 04 प.	−00 16	+11 30
*New York	U.S.A.	75 00 प.	40 43 उ.	74 00 प.	+04 00	+10 30
Noakhali	Bangla.	90 00 पू.	22 49 उ.	91 06 पू.	+04 24	−00 30
*Nuuk	Greenland	45 00 प.	64 11 उ.	51 44 प.	+26 56	+08 30
Osaka	Japan	135 00 पू.	34 40 उ.	135 30 पू.	+02 00	−03 30
*Oslo	Norway	15 00 पू.	59 54 उ.	10 45 पू.	−17 00	+04 30
*Ottawa	Canada	75 00 प.	45 24 उ.	75 43 प.	−02 52	+10 30
Pabna	Bangla.	90 00 पू.	24 00 उ.	89 15 पू.	−03 00	−00 30
Paramaribo	Suriname	45 00 प.	05 50 उ.	55 10 प.	−40 40	+08 30
*Paris	France	15 00 पू.	48 50 उ.	02 20 पू.	−50 40	+04 30
Pegu	Myanmar	97 30 पू.	17 20 उ.	96 29 पू.	−04 04	−01 00
Peking	China	देखें – Beijing		—	—	—
Penang	Malaysia	120 00 पू.	05 25 उ.	100 20 पू.	−78 40	−02 30
Perth	Australia	120 00 पू.	32 00 द.	115 50 पू.	−16 40	−02 30
*Peshawar	Pakistan	75 00 पू.	34 01 उ.	71 33 पू.	−13 48	+00 30
*Philadelphia, Pa.	U.S.A.	75 00 प.	39 58 उ.	75 10 प.	−00 40	+10 30
Phnom penh	Cambodia	105 00 पू.	11 35 उ.	104 57 पू.	−00 12	−01 30
*Pittsburgh, Pa.	U.S.A.	75 00 प.	40 25 उ.	79 55 प.	−19 40	+10 30
Port Elizabeth	South Africa	30 00 पू.	33 58 द.	25 40 पू.	−17 20	+03 30
Port Louis	Mauritius	60 00 पू.	20 10 द.	57 30 पू.	−10 00	+01 30
Port of Spain	Trinidad and Tobago	60 00 प.	10 39 उ.	61 31 प.	−06 04	+09 30
*Prague	Czecho.	15 00 पू.	50 05 उ.	14 24 पू.	−02 24	+04 30
Prome	Myanmar	97 30 पू.	18 47 उ.	95 15 पू.	−09 00	−01 00
Punakha	Bhutan	90 00 पू.	27 42 उ.	89 52 पू.	−00 32	−00 30
*Quetta	Pakistan	75 00 पू.	30 12 उ.	67 00 पू.	−32 00	+00 30
Rabat*	Morocco	00 00	34 02 उ.	06 51 प.	−27 24	+05 30

* इन नगरों में ग्रीष्मकालीन समय (*Summer Time*) प्रचलित है। ग्रीष्मकालीन समय क्षेत्रीय स्टै. टा. से एक घण्टा आगे रहता है।

कुछ विदेशी प्रसिद्ध नगरों के अक्षांश आदि

नगर	देश	स्टैण्डर्ड टाईम मेरिडियन	अक्षांश	रेखांश	स्टैण्डर्ड अन्तर (क्षेत्रीय स्टैं. टा. से स्था. म. का. का अन्तर)	भा. स्टैं. टा. का क्षेत्रीय स्टैं. टा. से अन्तर
		अं. क.	अं. क.	अं. क.	मि. से.	घं मि.
Rangoon	Myanmar	97 30 पू.	16 47 उ.	96 10 पू.	−05 20	−01 00
Rangpur	Bangla.	90 00 पू.	25 45 उ.	89 15 पू.	−03 00	−00 30
Rajshahi	Bangla.	90 00 पू.	24 22 उ.	88 36 पू.	−05 36	−00 30
*Rawalpindi	Pakistan	75 00 पू.	33 36 उ.	73 04 पू.	−07 44	+00 30
Riyadh	Saudi Arabia	45 00 पू.	24 39 उ.	46 41 पू.	+06 44	+02 30
Road Town	Virgin Is. (U.K.)	60 00 प.	18 27 उ.	64 37 प.	−18 28	+09 30
*Rome	Italy	15 00 पू.	41 55 उ.	12 27 पू.	−10 12	+04 30
Saigon	SouthVietnam	105 00 पू.	10 49 उ.	106 41 पू.	+06 44	−01 30
Salisbury(Harare)	Zimbabwe	30 00 पू.	17 50 द.	31 03 पू.	+04 12	+03 30
San'a'	Yemen	45 00 पू.	15 23 उ.	44 12 पू.	−03 12	+02 30
*San Diego, Ca	U.S.A.	120 00 प.	32 43 उ.	117 10 प.	+10 40	+13 30
*San Francisco	U.S.A.	120 00 प.	37 48 उ.	122 25 प.	−09 40	+13 30
*San Juan	Puetro Rico	60 00 प.	18 28 उ.	66 07 प.	−24 28	+09 30
Santiago	Chile	60 00 प.	33 27 द.	70 40 प.	−42 40	+09 30
*Seattle	U.S.A	120 00 प.	47 41 उ.	122 15 प	−09 00	+13 30
Seoul	South Korea	135 00 पू.	37 31 उ.	126 58 पू.	−32 08	−03 30
Shanghai	China	120 00 पू.	31 14 उ.	121 28 पू.	+05 52	−02 30
Sharjah	U.A.E.	60 00 पू.	25 20 उ.	55 24 पू.	−18 24	+01 30
Singapore	Singapore	120 00 पू.	01 17 उ.	103 54 पू.	−64 24	−02 30
*Sofia	Bulgaria	30 00 पू.	42 41 उ.	23 21 पू.	−26 36	+03 30
*Stanley	Falkland Is.	60 00 प.	51 42 द.	57 51 प.	+08 36	+09 30
*Stockholm	Sweden	15 00 पू.	59 20 उ.	18 00 पू.	+12 00	+04 30
*Sukkur	Pakistan	75 00 पू.	27 42 उ.	68 52 पू.	−24 32	+00 30
Suva	Fiji	180 00 पू.	18 08 द.	178 25 पू.	−06 20	−06 30
*Sydney	Australia	150 00 पू.	33 52 द.	151 12 पू.	+04 48	−04 30
Sylhet	Bangla.	90 00 पू.	24 54 उ.	91 52 पू.	+07 28	−00 30
Taipei	Taiwan	120 00 पू.	25 03 उ.	121 30 पू.	+06 00	−02 30
Taskent	Uzbekistan	75 00 पू.	41 20 उ.	69 18 पू.	−22 48	+00 30
*Tehran	Iran	52 30 पू.	35 41 उ.	51 26 पू.	−04 16	+02 00
Thimpu	Bhutan	90 00 पू.	27 28 उ.	89 39 पू.	−01 24	−00 30
*Tirane	Albania	15 00 पू.	41 20 उ.	19 50 पू.	+19 20	+04 30
Tokyo	Japan	135 00 पू.	35 40 उ.	139 46 पू.	+19 04	−03 30
*Toronto	Canada	75 00 प.	43 39 उ.	79 23 प.	−17 32	+10 30
Trincomalee	Sri Lanka	82 30 पू.	08 31 उ.	81 14 पू.	−05 04	00 00
Tripoli	Libya	30 00 पू.	32 54 उ.	13 15 पू.	−67 00	+03 30
*Ulan Bator	Mongolia	105 00 पू.	47 55 उ..	106 53 पू.	+07 32	−01 30
*Vancouver	Canada	120 00 प.	49 16 उ.	123 07 प.	−12 28	+13 30
Vatican City	Vatican City	15 00 पू.	41 54 उ.	12 27 पू.	−10 12	+04 30
*Vienna	Austria	15 00 पू.	48 12 उ.	16 22 पू.	+05 28	+04 30
*Volgograd	Russia	45 00 पू.	48 44 उ.	44 25 पू.	−02 20	+02 30
Wakayama	Japan	135 00 पू.	34 13 उ.	135 11 पू.	+00 44	−03 30
*Warsaw	Poland	15 00 पू.	52 12 उ.	21 00 पू.	+24 00	+04 30
*Washington (D.C.)	U.S.A.	75 00 प.	38 55 उ.	77 04 प.	−08 16	+10 30
*Wellington	New Zealand	180 00 पू.	41 16 द.	174 47 पू.	−20 52	−06 30
Yokohama	Japan	135 00 पू.	35 27 उ.	139 39 पू.	+18 36	−03 30
Zanzibar	Tanzania	15 00 पू.	06 10 द.	39 11 पू.	−23 16	+02 30
*Zurich	Switzerland	15 00 पू.	47 23 उ.	08 32 पू.	−25 52	+04 30

** इन नगरों में ग्रीष्मकालीन समय(Summer Time) प्रचलित है। ग्रीष्मकालीन समय क्षेत्रीय स्टैं. टा. से एक घण्टा आगे रहता है।*

स्टैण्डर्ड टाईम मेरिडियन सारणी (विश्व के लगभग सभी मुख्य देशों / कालक्षेत्रों की स्टैंडर्ड टाईम मेरिडियन्स)

देश / प्रदेश / कालक्षेत्र	स्टैण्डर्ड टाईम मेरिडियन (रेखांश) अं. क.	भा. स्टैं. टा. का क्षेत्रीय स्टैं. टा. से अन्तर घं. मि.
Afghanistan	67 30 पू.	+ 01 00
*Albania	15 00 पू.	+ 04 30
Algeria	15 00 पू.	+ 04 30
Angola	15 00 पू.	+ 04 30
Argentina	45 00 प.	+ 08 30
*AUSTRALIA यह देश इन 3 कालक्षेत्रों (Time Zones) में बटा है।		
(i) E.S.T. (Eastern St. Time) (इस कालक्षेत्र में Victoria, Tasmania आदि प्रदेश आते हैं)	150 00 पू.	– 04 30
(ii) C.S.T. (Central St. Time) (इस कालक्षेत्र में South Australia, Broken Hill Area आदि आते हैं।)	142 30 पू.	– 04 00
(iii) W.S.T. (इस कालक्षेत्र में Western Australia आता है)	120 00 पू.	– 02 30
*Austria	15 00 पू.	+ 04 30
Bahrain	45 00 पू.	+ 02 30
Bangladesh	90 00 पू.	– 00 30
*Belgium	15 00 पू.	+ 04 30
Bhutan	90 00 पू.	– 00 30
Bolivia	60 00 प.	+ 09 30
*Bulgaria	30 00 पू.	+ 03 30
Burundi	30 00 पू.	+ 03 00
Cameroon	15 00 पू.	+ 04 30
*CANADA यह देश मुख्यतः इन 4 कालक्षेत्रों (Time Zones) में बटा है –		
(i) E.S.T. (Eastern St. Time) इस काल-क्षेत्र में N.W. Territories और Ontario का पू. भाग पड़ता है।	75 00 प.	+ 10 30

देश / प्रदेश / कालक्षेत्र	स्टैण्डर्ड टाईम मेरिडियन (रेखांश) अं. क.	भा. स्टैं. टा. का क्षेत्रीय स्टैं. टा. से अन्तर घं. मि.
(ii) C.S.T. (Central St. Time) इसमें N.W. Territories का मध्यभाग और Ontario का प. भाग पड़ता है।	90 00 प.	+ 11 30
(iii) M.S.T. (Mountain St. Time इसमें N.W. Territories का कुछ प. भाग तथा Alberta आदि प्रान्त पड़ते हैं।	105 00 प.	+12 30
(iv) P.S.T. (Pacific St. Time) इस कालक्षेत्र में N.W. Territories का अन्तिम प. भाग तथा B.Columbia पडता है।	120 00 प.	+ 13 30
*Chile	60 00 प.	+ 09 30
China	120 00 पू.	– 02 30
Colombia	75 00 प.	+ 10 30
Congo	15 00 पू.	+ 04 30
*Cuba	75 00 प.	+ 10 30
Ceylon	देखें ——	Sri Lanka
Cyprus	30 00 पू.	+ 03 30
*Denmark	15 00 पू.	+ 04 30
Ecuador	75 00 प.	+ 10 30
*Egypt	30 00 पू.	+ 03 30
*England(U.K.)	00 00	+ 05 30
Ethiopia	45 00 पू.	+ 02 30
*Falkland Islands	60 00 प.	+ 09 30
Fiji	180 00 पू.	– 06 30
*Finland	30 00 पू.	+ 03 30
*France	15 00 पू.	+ 04 30
Gambia	00 00	+ 05 30
*Germany	15 00 पू.	+ 04 30
Ghana	00 00	+ 05 30
*Greece	30 00 पू.	+ 03 30

देश / प्रदेश / कालक्षेत्र	स्टैण्डर्ड टाईम मेरिडियन (रेखांश) अं. क.	भा. स्टैं. टा. का क्षेत्रीय स्टैं. टा. से अन्तर घं. मि.
*Guatemala	90 00 प.	+ 11 30
Honduras	90 00 प.	+ 11 30
Hong Kong	120 00 पू.	– 02 30
*Iceland	00 00	+ 05 30
India	82 30 पू.	00 00
INDONESIA, REPUBLIC OF:- यह देश छोटे–बड़े 13000 से भी अधिक द्वीपों से बना है। पहिले यह 30–30 मिनटों के अन्तर वाले छः कालक्षेत्रों में विभाजित था। अब इसे एक–एक घण्टा के अन्तर वाले इन तीन कालक्षेत्रों में विभाजित किया गया है–		
(i) Bali, Bangka, Enggano, Java, Madura एवम् Sumatra द्वीप;........................	105 00 पू.	– 1 30
(ii) Alore, Borneo, Celebes (Sulawesi). Flores, Kabaena , Lombok, Sangihe , Talaud , Sumba, Sumbawa (Soembawa) और Timor (Timur) (द्वीपसमूह)	120 00 पू.	– 2 30
(iii) Aru, Babar, Buru, Cerem (Seram), Irian Jaya (West Irian), Larat , Maluku(Moluccas = Molukken), Schouten , Tanah Merah और Tanimbar (द्वीपसमूह)...	135 00 पू.	– 3 30

स्टैण्डर्ड टाईम मेरिडियन सारणी (विश्व के लगभग सभी मुख्य देशों / कालक्षेत्रों की स्टैंडर्ड टाईम मेरिडियन्स)

देश / प्रदेश / कालक्षेत्र	स्टैण्डर्ड टाईम मेरिडियन (रेखांश) अं. क.	भा. स्टैं. टा. का क्षेत्रीय स्टैं. टा. से अन्तर घं. मि.
*Iran	52 [illegible] पू.	+ 02 00
*Iraq	45 00 पू.	+ 02 30
*Irish Republic	00 00	+ 05 30
*Israel	30 00 पू.	+ 03 30
*Italy	15 00 पू.	+ 04 30
*Jamaica	75 00 प.	+ 10 30
Japan	135 00 पू.	– 03 30
*Jordan	30 00 पू.	+ 03 30
***KAZAKHSTAN** – यह देश, जो पहिले Soviet Union का भाग था, इन तीन कालक्षेत्रों में बंटा है:–		
(i) Kazakhstan (West) .	[illegible]0 00 पू.	+ 01 30
(ii) Kazakhstan (Central)..	75 00 पू.	+ 0 30
(iii) Kazakhstan (East) ..	90 00 पू.	– 0 30
Kumpuchia	105 00 पू.	– 01 30
Kenya	45 00 पू.	+ 02 30
Korea	135 00 पू.	– 03 30
Kuwait	45 00 पू.	+ 02 30
Laos	105 00 पू.	– 01 30
* Lebanon	30 00 पू.	+ 03 30
Libya	30 00 पू.	+ 03 30
Macao	120 00 पू.	– 02 30
Madagascar	45 00 पू.	+ 02 30
Malaysia	120 00 पू.	– 02 30
Maldive Islands	75 00 पू.	+ 00 30
Maurtius	60 00 पू.	+ 01 30

देश / प्रदेश / कालक्षेत्र	स्टैण्डर्ड टाईम मेरिडियन (रेखांश) अं. क.	भा. स्टैं. टा. का क्षेत्रीय स्टैं. टा. से अन्तर घं. मि.
*KYRGHIZSTAN (KIRGIZSTAN= KIRGHIZIA= KIRGIZIA) (यह पहिले Soviet Union का भाग था)......	0 00 पू.	+ 0 30
*MEXICO यह देष इन 3 कालक्षेत्रों मे बंटा है–		
(i) **E.S.T.** (Eastern St. Time) (इस कालक्षेत्र में Compeche, Chiapas आदि प्रान्त आते हैं)	90 00 प.	+ 11 30
(ii) **C.S.T.** (Central St. Time) (इस कालक्षेत्र में Baja California, Sur, Nayarit आदि पड़ते हैं।)	105 00 प.	+ 12 30
(iii) **W.S.T.** (Western St Time) (इस कालक्षेत्र में Baja California- Norte आते हैं)	120 00 प.	+ 13 30
Morocco	00 00	+ 05 30
Mozambique	30 00 पू.	+ 03 30
Myanmar (Burma)	97 30 पू.	– 01 00
Nepal	86 15 पू.	– 00 15
Netherlands	15 00 पू.	+ 04 30
*New Zealand	180 00 पू.	– 06 30
Nicaragua	90 00 प.	+ 11 30
Nigeria	15 00 पू.	+ 04 30
*Northern Ireland (U.K.)	00 00	+ 05 30
*Norway	15 00 पू.	+ 04 30
Oman (Muscat and Oman)	60 00 पू.	+ 01 30
*Pakistan	75 00 पू.	+ 00 30
Panama	75 00 प.	+ 10 30

देश / प्रदेश / कालक्षेत्र	स्टैण्डर्ड टाईम मेरिडियन (रेखांश) अं. क.	भा. स्टैं. टा. का क्षेत्रीय स्टैं. टा. से अन्तर घं. मि.
*Paraguay	60 00 प.	+ 09 30
Peru	75 00 प.	+ 10 30
Philippines	120 00 पू.	– 02 30
*Poland	15 00 पू.	+ 04 30
*Portugal	00 00	+ 05 30
Qatar	45 00 पू.	+ 02 30
Rwanda	30 00 पू.	+ 03 30
Romania	30 00 पू.	+ 03 30
*RUSSIA यह महादेश, जो Soviet Union का मूल घटक राष्ट्र रहा है, यह इन ग्यारह कालक्षेत्रों में बँटा है–		
(i)कालक्षेत्र Kaliningrad area	30 00 पू.	+ 3 30
(ii) कालक्षेत्र Novaja Zemla, European RSFSR (पश्चिमी भाग)....	45 00 पू.	+ 2 30
(iii) कालक्षेत्र European RSFSR (मध्य भाग)..............	60 00 पू.	+ 1 30
(iv) कालक्षेत्र European RSFSR (पू. भाग), Asian RSFSR (प. भाग)	75 00 पू.	+ 0 30
(v) कालक्षेत्र Asian RSFSR ...	90 00 पू.	– 0 30
(vi) कालक्षेत्र Asian RSFSR, Severnaja Zemla	105 00 पू.	– 1 30
(vii) कालक्षेत्र Asian RSFSR ...	120 00 पू.	– 2 30
(viii) कालक्षेत्र Asian RSFSR...	135 00 पू.	– 3 30
(ix) कालक्षेत्र Asian RSFSR, Novosibirskije Ostrova	150 00 पू.	– 4 30
(x) कालक्षेत्र Asian RSFSR (पू. भाग) , Ostrov Sachalin, Kuril Islands	165 00 पू.	– 5 30
(xi) कालक्षेत्र Asian RSFSR (अन्तिम पूर्वी छोर), Komandorskije Ostrova...	180 00 पू.	– 6 30

स्टैण्डर्ड टाईम मेरिडियन सारणी (विश्व के लगभग सभी मुख्य देशों / कालक्षेत्रों की स्टैंडर्ड टाईम मेरिडियन्स)

देश / प्रदेश / कालक्षेत्र	स्टैण्डर्ड टाईम मेरिडियन (रेखांश) अं. क.	भा. स्टैं. टा. का क्षेत्रीय स्टैं. टा. से अन्तर घं. मि.
Saudi Arabia	45 00 पू.	+ 02 30
*Scotland (U.K.)	00 00	+ 05 30
Singapore	120 00 पू.	− 02 30
South Africa	30 00 पू.	+ 03 30
*Spain	15 00 पू.	+ 04 30
Sri Lanka	82 30 पू.	00 00
Sudan	30 00 पू.	+ 03 30
Suriname	45 00 प.	+ 08 30
*Sweden	15 00 पू.	+ 04 30
*Switzerland	15 00 पू.	+ 04 30
*Syria	30 00 पू.	+ 03 30
TAJIKISTAN (TADZHIKISTAN) (यह पहिले Soviet Union का भाग था)......	75 00 पू.	+ 00 30
Taiwan	120 00 पू.	− 02 30
Tanzania	45 00 पू.	+ 02 30
Thailand	105 00 पू.	− 01 30
Trinidad andTobago	60 00 प.	+ 09 30
Tunisia	15 00 पू.	+ 04 30
*Turkey	30 00 पू.	+ 03 30

देश / प्रदेश / कालक्षेत्र	स्टैण्डर्ड टाईम मेरिडियन (रेखांश) अं. क.	भा. स्टैं. टा. का क्षेत्रीय स्टैं. टा. से अन्तर घं. मि.
U.A.E. (UNITED ARAB EMIRATES) .[Abu Dhabi, Ajman, Dubai, Fujairah, Ras-al-Khaimah, .Sharjah, और Umma-al-Quiwain)	60 00 पू.	+ 01 30
Uganda	45 00 पू.	+ 02 30
*U.K.	00 00	+ 05 30
Uruguay	45 00 प.	+ 08 30
UKRAIN यह पहिले Soviet Union का भाग था। यह इन दो कालक्षेत्रों में बँटा है–		
(i) इस कालक्षेत्र में Ukraine का प्रमुख भाग [Black और Azov Sea से घिरे दक्षिणी भाग (द्वीप) को छोड कर शेष पूरा भाग आता है।......................	30 00 पू.	+ 03 30
(ii) इसमें Black और Azov Sea से घिरा इसका केवल दक्षिणी भाग(द्वीप) आता है।....	45 00 पू.	+ 02 30
UZBEKISTAN.................. (यह पहले Soviet Union का भाग था)	75 00 पू.	+ 00 30

देश / प्रदेश / कालक्षेत्र	स्टैण्डर्ड टाईम मेरिडियन (रेखांश) अं. क.	भा. स्टैं. टा. का क्षेत्रीय स्टैं. टा. से अन्तर घं. मि.
*U.S.A. यह देश इन 4 कालक्षेत्रों (Time Zones) में बंटा है :–		
(i) **E.S.T.** (Eastern St. Time) (इस कालक्षेत्र में Delaware, Florida, Ohio आदि States पड़ती हैं।)	75 00 प.	+ 10 30
(ii) **C.S.T.** (Centrar St. Time) (इस कालक्षेत्र में Alabama, Illinois आदि States पड़ती हैं।)	90 00 प.	+ 11 30
(iii) **M.S.T.** (Mountain St. Time) (इस कालक्षेत्र में Arizona, Colorado आदि States पड़ती हैं।)	105 00 प.	+ 12 30
(iv) **P.S.T.** (Pacific St. Time) (इस कालक्षेत्र में California, Nevada आदि States पड़ती हैं।)	120 00 प.	+ 13 30
Vatican State	15 00 पू.	+ 04 30
Venezuela	60 00 प.	+ 09 30
Vietnam	105 00 पू.	− 01 30
*Wales(U.K.)	00 00	+ 05 30
*Yugoslavia	15 00 पू.	+ 04 30
Zamibia	30 00 पू.	+ 03 30
Zaire	30 00 पू.	+ 03 30
Zimbabwe	30 00 पू.	+ 03 30

* इन देशों में ग्रीष्मकालीन समय (Summer Time) प्रचलित है। Summer Time के बारे में विस्तृत जानकारी के लिए हमारी पुस्तक " विश्वलग्न सारणी " देखें।

धन (+) चिह्न वाले 'अभीष्ट स्टैं. टा. अन्तर ' का अर्थ है, कि भा. स्टैं. टा. अभीष्ट स्थानीय (देश / कालक्षेत्रीय) स्टैं. टा. से आगे है। इसी प्रकार ऋण (–) चिह्न वाला "अभीष्ट स्टैं. टा. अन्तर" बतलाता है, कि भा. स्टैं. टा. अभीष्ट स्थानीय (देश / कालक्षेत्रीय) स्टैं. टा. से पीछे है।

दैनिक लग्नसारणी, चण्डीगढ़ (U.T.) में लग्नों का समाप्तिकाल [भा.स्टै.टा.]

वैशाख

माह	अंग्रेज़ी तारीख	वैशाख	मेष घं. मि.	वृष घं. मि.	मिथुन घं. मि.	कर्क घं. मि.	सिंह घं. मि.	कन्या घं. मि.	तुला घं. मि.	वृश्चिक घं. मि.	धनु घं. मि.	मकर घं. मि.	कुम्भ घं. मि.	मीन घं. मि.
अप्रैल	१३	१	७ ३६	९ ३०	११ ४४	१४ ०७	१६ २७	१८ ४४	२१ ०६	२३ २६	१ ३१	३ १२	४ ३७	५ ५९
	१४	२	७ ३२	९ २६	११ ४०	१४ ०३	१६ २३	१८ ४०	२१ ०२	२३ २२	१ २७	३ ०८	४ ३३	५ ५५
	१५	३	७ २८	९ २२	११ ३७	१३ ५९	१६ १९	१८ ३६	२० ५८	२३ १८	१ २३	३ ०४	४ २९	५ ५१
	१६	४	७ २४	९ १८	११ ३३	१३ ५५	१६ १५	१८ ३३	२० ५४	२३ १४	१ १९	३ ००	४ २५	५ ४७
	१७	५	७ २०	९ १४	११ २९	१३ ५१	१६ ११	१८ २९	२० ५०	२३ १०	१ १५	२ ५६	४ २१	५ ४३
	१८	६	७ १६	९ ११	११ २५	१३ ४७	१६ ०७	१८ २५	२० ४६	२३ ०६	१ ११	२ ५२	४ १७	५ ३९
	१९	७	७ १२	९ ०७	११ २१	१३ ४३	१६ ०३	१८ २१	२० ४२	२३ ०२	१ ०७	२ ४८	४ १३	५ ३५
	२०	८	७ ०८	९ ०३	११ १७	१३ ३९	१५ ५९	१८ १७	२० ३८	२२ ५८	१ ०३	२ ४४	४ ०९	५ ३१
	२१	९	७ ०४	८ ५९	११ १३	१३ ३५	१५ ५५	१८ १३	२० ३४	२२ ५४	० ५९	२ ४०	४ ०५	५ २८
	२२	१०	७ ००	८ ५५	११ ०९	१३ ३१	१५ ५१	१८ ०९	२० ३०	२२ ५१	० ५५	२ ३६	४ ०१	५ २४
	२३	११	६ ५६	८ ५१	११ ०५	१३ २७	१५ ४७	१८ ०५	२० २७	२२ ४७	० ५१	२ ३२	३ ५७	५ २०
	२४	१२	६ ५२	८ ४७	११ ०१	१३ २३	१५ ४३	१८ ०१	२० २३	२२ ४३	० ४७	२ २८	३ ५३	५ १६
	२५	१३	६ ४८	८ ४३	१० ५७	१३ १९	१५ ३९	१७ ५७	२० १९	२२ ३९	० ४३	२ २४	३ ४९	५ १२
	२६	१४	६ ४४	८ ३९	१० ५३	१३ १६	१५ ३६	१७ ५३	२० १५	२२ ३५	० ३९	२ २०	३ ४५	५ ०८
	२७	१५	६ ४१	८ ३५	१० ४९	१३ १२	१५ ३२	१७ ४९	२० ११	२२ ३१	० ३५	२ १६	३ ४२	५ ०४
	२८	१६	६ ३७	८ ३१	१० ४५	१३ ०८	१५ २८	१७ ४५	२० ०७	२२ २७	० ३२	२ १३	३ ३८	५ ००
	२९	१७	६ ३३	८ २७	१० ४२	१३ ०४	१५ २४	१७ ४१	२० ०३	२२ २३	० २८	२ ०९	३ ३४	४ ५६
	३०	१८	६ २९	८ २३	१० ३८	१३ ००	१५ २०	१७ ३७	१९ ५९	२२ १९	० २४	२ ०५	३ ३०	४ ५२
मई	१	१९	६ २५	८ १९	१० ३४	१२ ५६	१५ १६	१७ ३४	१९ ५५	२२ १५	० २०	२ ०१	३ २६	४ ४८
	२	२०	६ २१	८ १६	१० ३०	१२ ५२	१५ १२	१७ ३०	१९ ५१	२२ ११	० १६	१ ५७	३ २२	४ ४४
	३	२१	६ १७	८ १२	१० २६	१२ ४८	१५ ०८	१७ २६	१९ ४७	२२ ०७	० १२	१ ५३	३ १८	४ ४०
	४	२२	६ १३	८ ०८	१० २२	१२ ४४	१५ ०४	१७ २२	१९ ४३	२२ ०३	० ०८	१ ४९	३ १४	४ ३६
	५	२३	६ ०९	८ ०४	१० १८	१२ ४०	१५ ००	१७ १८	१९ ३९	२१ ५९	० ०४	१ ४५	३ १०	४ ३२
	६	२४	६ ०५	८ ००	१० १४	१२ ३६	१४ ५६	१७ १४	१९ ३५	२१ ५६	० ००	१ ४१	३ ०६	४ २९
	७	२५	६ ०१	७ ५६	१० १०	१२ ३२	१४ ५२	१७ १०	१९ ३२	२१ ५२	२३ ५६	१ ३७	३ ०२	४ २५
	८	२६	५ ५७	७ ५२	१० ०६	१२ २८	१४ ४८	१७ ०६	१९ २८	२१ ४८	२३ ५२	१ ३३	२ ५८	४ २१
	९	२७	५ ५३	७ ४८	१० ०२	१२ २४	१४ ४४	१७ ०२	१९ २४	२१ ४४	२३ ४८	१ २९	२ ५४	४ १७
	१०	२८	५ ४९	७ ४४	९ ५८	१२ २०	१४ ४०	१६ ५८	१९ २०	२१ ४०	२३ ४४	१ २५	२ ५०	४ १३
	११	२९	५ ४६	७ ४०	९ ५४	१२ १७	१४ ३६	१६ ५४	१९ १६	२१ ३६	२३ ४०	१ २१	२ ४६	४ ०९
	१२	३०	५ ४२	७ ३६	९ ५०	१२ १३	१४ ३३	१६ ५०	१९ १२	२१ ३२	२३ ३७	१ १८	२ ४३	४ ०५
	१३	३१	५ ३८	७ ३२	९ ४६	१२ ०९	१४ २९	१६ ४६	१९ ०८	२१ २८	२३ ३३	१ १४	२ ३९	४ ०१
	१४	ज्ये१	५ ३४											

ज्येष्ठ

माह	अंग्रेज़ी तारीख	ज्येष्ठ	वृष घं. मि.	मिथुन घं. मि.	कर्क घं. मि.	सिंह घं. मि.	कन्या घं. मि.	तुला घं. मि.	वृश्चिक घं. मि.	धनु घं. मि.	मकर घं. मि.	कुम्भ घं. मि.	मीन घं. मि.	मेष घं. मि.
मई	१४	१	७ २८	९ ४३	१२ ०५	१४ २५	१६ ४२	१९ ०४	२१ २४	२३ २९	१ १०	२ ३५	३ ५७	५ ३०
	१५	२	७ २४	९ ३९	१२ ०१	१४ २१	१६ ३९	१९ ००	२१ २०	२३ २५	१ ०६	२ ३१	३ ५३	५ २६
	१६	३	७ २०	९ ३५	११ ५७	१४ १७	१६ ३५	१८ ५६	२१ १६	२३ २१	१ ०२	२ २७	३ ४९	५ २२
	१७	४	७ १७	९ ३१	११ ५३	१४ १३	१६ ३१	१८ ५२	२१ १२	२३ १७	० ५८	२ २३	३ ४५	५ १८
	१८	५	७ १३	९ २७	११ ४९	१४ ०९	१६ २७	१८ ४८	२१ ०८	२३ १३	० ५४	२ १९	३ ४१	५ १४
	१९	६	७ ०९	९ २३	११ ४५	१४ ०५	१६ २३	१८ ४४	२१ ०४	२३ ०९	० ५०	२ १५	३ ३७	५ १०
	२०	७	७ ०५	९ १९	११ ४१	१४ ०१	१६ १९	१८ ४०	२१ ०१	२३ ०५	० ४६	२ ११	३ ३४	५ ०६
	२१	८	७ ०१	९ १५	११ ३७	१३ ५७	१६ १५	१८ ३६	२० ५७	२३ ०१	० ४२	२ ०७	३ ३०	५ ०२
	२२	९	६ ५७	९ ११	११ ३३	१३ ५३	१६ ११	१८ ३३	२० ५३	२२ ५७	० ३८	२ ०३	३ २६	४ ५८
	२३	१०	६ ५३	९ ०७	११ २९	१३ ४९	१६ ०७	१८ २९	२० ४९	२२ ५३	० ३४	१ ५९	३ २२	४ ५४
	२४	११	६ ४९	९ ०३	११ २५	१३ ४५	१६ ०३	१८ २५	२० ४५	२२ ४९	० ३०	१ ५५	३ १८	४ ५०
	२५	१२	६ ४५	८ ५९	११ २२	१३ ४१	१५ ५९	१८ २१	२० ४१	२२ ४५	० २६	१ ५१	३ १४	४ ४७
	२६	१३	६ ४१	८ ५५	११ १८	१३ ३८	१५ ५५	१८ १७	२० ३७	२२ ४२	० २२	१ ४८	३ १०	४ ४३
	२७	१४	६ ३७	८ ५१	११ १४	१३ ३४	१५ ५१	१८ १३	२० ३३	२२ ३८	० १९	१ ४४	३ ०६	४ ३९
	२८	१५	६ ३३	८ ४७	११ १०	१३ ३०	१५ ४७	१८ ०९	२० २९	२२ ३४	० १५	१ ४०	३ ०२	४ ३५
	२९	१६	६ २९	८ ४४	११ ०६	१३ २६	१५ ४३	१८ ०५	२० २५	२२ ३०	० ११	१ ३६	२ ५८	४ ३१
	३०	१७	६ २५	८ ४०	११ ०२	१३ २२	१५ ४०	१८ ०१	२० २१	२२ २६	० ०७	१ ३२	२ ५४	४ २७
	३१	१८	६ २२	८ ३६	१० ५८	१३ १८	१५ ३६	१७ ५७	२० १७	२२ २२	० ०३	१ २८	२ ५०	४ २३
जून	१	१९	६ १८	८ ३२	१० ५४	१३ १४	१५ ३२	१७ ५३	२० १३	२२ १८	२३ ५९	१ २४	२ ४६	४ १९
	२	२०	६ १४	८ २८	१० ५०	१३ १०	१५ २८	१७ ४९	२० ०९	२२ १४	२३ ५५	१ २०	२ ४२	४ १५
	३	२१	६ १०	८ २४	१० ४६	१३ ०६	१५ २४	१७ ४५	२० ०५	२२ १०	२३ ५१	१ १६	२ ३८	४ ११
	४	२२	६ ०६	८ २०	१० ४२	१३ ०२	१५ २०	१७ ४१	२० ०२	२२ ०६	२३ ४७	१ १२	२ ३५	४ ०७
	५	२३	६ ०२	८ १६	१० ३८	१२ ५८	१५ १६	१७ ३७	१९ ५८	२२ ०२	२३ ४३	१ ०८	२ ३१	४ ०३
	६	२४	५ ५८	८ १२	१० ३४	१२ ५४	१५ १२	१७ ३४	१९ ५४	२१ ५८	२३ ३९	१ ०४	२ २७	३ ५९
	७	२५	५ ५४	८ ०८	१० ३०	१२ ५०	१५ ०८	१७ ३०	१९ ५०	२१ ५४	२३ ३५	१ ००	२ २३	३ ५५
	८	२६	५ ५०	८ ०४	१० २६	१२ ४६	१५ ०४	१७ २६	१९ ४६	२१ ५०	२३ ३१	० ५६	२ १९	३ ५१
	९	२७	५ ४६	८ ००	१० २३	१२ ४३	१५ ००	१७ २२	१९ ४२	२१ ४६	२३ २७	० ५२	२ १५	३ ४८
	१०	२८	५ ४२	७ ५६	१० १९	१२ ३९	१४ ५६	१७ १८	१९ ३८	२१ ४३	२३ २३	० ४९	२ ११	३ ४४
	११	२९	५ ३८	७ ५२	१० १५	१२ ३५	१४ ५२	१७ १४	१९ ३४	२१ ३९	२३ २०	० ४५	२ ०७	३ ४०
	१२	३०	५ ३४	७ ४९	१० ११	१२ ३१	१४ ४८	१७ १०	१९ ३०	२१ ३५	२३ १६	० ४१	२ ०३	३ ३६
	१३	३१	५ ३०	७ ४५	१० ०७	१२ २७	१४ ४५	१७ ०६	१९ २६	२१ ३१	२३ १२	० ३७	१ ५९	३ ३२
	१४	आ१	५ २६											

दैनिक लग्नसारणी, चण्डीगढ़ (U.T.) में लग्नों का समाप्तिकाल [भा.स्टैं.टा.]

आषाढ़

अंग्रेज़ी तारीख		आषाढ़ प्रविष्टे	मिथुन घं. मि.	कर्क घं. मि.	सिंह घं. मि.	कन्या घं. मि.	तुला घं. मि.	वृश्चिक घं. मि.	धनु घं. मि.	मकर घं. मि.	कुम्भ घं. मि.	मीन घं. मि.	मेष घं. मि.	वृष घं. मि.
जून	१४	१	७ ४१	१० ०३	१२ २३	१४ ४१	१७ ०२	१९ २२	२१ २७	२३ ०८	० ३३	१ ५५	३ २८	५ २३
	१५	२	७ ३७	९ ५९	१२ १९	१४ ३७	१६ ५८	१९ १८	२१ २३	२३ ०४	० २९	१ ५१	३ २४	५ १९
	१६	३	७ ३३	९ ५५	१२ १५	१४ ३३	१६ ५४	१९ १४	२१ १९	२३ ००	० २५	१ ४७	३ २०	५ १५
	१७	४	७ २९	९ ५१	१२ ११	१४ २९	१६ ५०	१९ १०	२१ १५	२२ ५६	० २१	१ ४३	३ १६	५ ११
	१८	५	७ २५	९ ४७	१२ ०७	१४ २५	१६ ४६	१९ ०६	२१ ११	२२ ५२	० १७	१ ३९	३ १२	५ ०७
	१९	६	७ २१	९ ४३	१२ ०३	१४ २१	१६ ४२	१९ ०३	२१ ०७	२२ ४८	० १३	१ ३६	३ ०८	५ ०३
	२०	७	७ १७	९ ३९	११ ५९	१४ १७	१६ ३९	१८ ५९	२१ ०३	२२ ४४	० ०९	१ ३२	३ ०४	४ ५९
	२१	८	७ १३	९ ३५	११ ५५	१४ १३	१६ ३५	१८ ५५	२० ५९	२२ ४०	० ०५	१ २८	३ ००	४ ५५
	२२	९	७ ०९	९ ३१	११ ५१	१४ ०९	१६ ३१	१८ ५१	२० ५५	२२ ३६	० ०१	१ २४	२ ५६	४ ५१
	२३	१०	७ ०५	९ २७	११ ४७	१४ ०५	१६ २७	१८ ४७	२० ५१	२२ ३२	२३ ५७	१ २०	२ ५३	४ ४७
	२४	११	७ ०१	९ २४	११ ४४	१४ ०१	१६ २३	१८ ४३	२० ४८	२२ २८	२३ ५४	१ १६	२ ४९	४ ४३
	२५	१२	६ ५७	९ २०	११ ४०	१३ ५७	१६ १९	१८ ३९	२० ४४	२२ २५	२३ ५०	१ १२	२ ४५	४ ३९
	२६	१३	६ ५३	९ १६	११ ३६	१३ ५३	१६ १५	१८ ३५	२० ४०	२२ २१	२३ ४६	१ ०८	२ ४१	४ ३५
	२७	१४	६ ५०	९ १२	११ ३२	१३ ४९	१६ ११	१८ ३१	२० ३६	२२ १७	२३ ४२	१ ०४	२ ३७	४ ३१
	२८	१५	६ ४६	९ ०८	११ २८	१३ ४६	१६ ०७	१८ २७	२० ३२	२२ १३	२३ ३८	१ ००	२ ३३	४ २७
	२९	१६	६ ४२	९ ०४	११ २४	१३ ४२	१६ ०३	१८ २३	२० २८	२२ ०९	२३ ३४	० ५६	२ २९	४ २४
	३०	१७	६ ३८	९ ००	११ २०	१३ ३८	१५ ५९	१८ १९	२० २४	२२ ०५	२३ ३०	० ५२	२ २५	४ २०
जुलाई	१	१८	६ ३४	८ ५६	११ १६	१३ ३४	१५ ५५	१८ १५	२० २०	२२ ०१	२३ २६	० ४८	२ २१	४ १६
	२	१९	६ ३०	८ ५२	११ १२	१३ ३०	१५ ५१	१८ ११	२० १६	२१ ५७	२३ २२	० ४४	२ १७	४ १२
	३	२०	६ २६	८ ४८	११ ०८	१३ २६	१५ ४७	१८ ०८	२० १२	२१ ५३	२३ १८	० ४१	२ १३	४ ०८
	४	२१	६ २२	८ ४४	११ ०४	१३ २२	१५ ४३	१८ ०४	२० ०८	२१ ४९	२३ १४	० ३७	२ ०९	४ ०४
	५	२२	६ १८	८ ४०	११ ००	१३ १८	१५ ४०	१८ ००	२० ०४	२१ ४५	२३ १०	० ३३	२ ०५	४ ००
	६	२३	६ १४	८ ३६	१० ५६	१३ १४	१५ ३६	१७ ५६	२० ००	२१ ४१	२३ ०६	० २९	२ ०१	३ ५६
	७	२४	६ १०	८ ३२	१० ५२	१३ १०	१५ ३२	१७ ५२	१९ ५६	२१ ३७	२३ ०२	० २५	१ ५७	३ ५२
	८	२५	६ ०६	८ २९	१० ४९	१३ ०६	१५ २८	१७ ४८	१९ ५२	२१ ३३	२२ ५८	० २१	१ ५४	३ ४८
	९	२६	६ ०२	८ २५	१० ४५	१३ ०२	१५ २४	१७ ४४	१९ ४९	२१ २९	२२ ५५	० १७	१ ५०	३ ४४
	१०	२७	५ ५८	८ २१	१० ४१	१२ ५८	१५ २०	१७ ४०	१९ ४५	२१ २६	२२ ५१	० १३	१ ४६	३ ४०
	११	२८	५ ५५	८ १७	१० ३७	१२ ५४	१५ १६	१७ ३६	१९ ४१	२१ २२	२२ ४७	० ०९	१ ४२	३ ३६
	१२	२९	५ ५१	८ १३	१० ३३	१२ ५०	१५ १२	१७ ३२	१९ ३७	२१ १८	२२ ४३	० ०५	१ ३८	३ ३२
	१३	३०	५ ४७	८ ०९	१० २९	१२ ४७	१५ ०८	१७ २८	१९ ३३	२१ १४	२२ ३९	० ०१	१ ३४	३ २९
	१४	३१	५ ४३	८ ०५	१० २५	१२ ४३	१५ ०४	१७ २४	१९ २९	२१ १०	२२ ३५	२३ ५७	१ ३०	३ २५
	१५	३२	५ ३९	८ ०१	१० २१	१२ ३९	१५ ००	१७ २०	१९ २५	२१ ०६	२२ ३१	२३ ५३	१ २६	३ २१
	१६	श्राव.	५ ३५											

श्रावण

अंग्रेज़ी तारीख		श्रावण प्रविष्टे	कर्क घं. मि.	सिंह घं. मि.	कन्या घं. मि.	तुला घं. मि.	वृश्चिक घं. मि.	धनु घं. मि.	मकर घं. मि.	कुम्भ घं. मि.	मीन घं. मि.	मेष घं. मि.	वृष घं. मि.	मिथुन घं. मि.
जुलाई	१६	१	७ ५७	१० १७	१२ ३५	१४ ५६	१७ १६	१९ २१	२१ ०२	२२ २७	२३ ४९	१ २२	३ १७	५ ३१
	१७	२	७ ५३	१० १३	१२ ३१	१४ ५२	१७ १२	१९ ०७	२० ५८	२२ २३	२३ ४५	१ १८	३ १३	५ २७
	१८	३	७ ४९	१० ०९	१२ २७	१४ ४८	१७ ०९	१९ १३	२० ५४	२२ १९	२३ ४१	१ १४	३ ०९	५ २३
	१९	४	७ ४५	१० ०५	१२ २३	१४ ४५	१७ ०५	१९ ०९	२० ५०	२२ १५	२३ ३८	१ १०	३ ०५	५ १९
	२०	५	७ ४१	१० ०१	१२ १९	१४ ४१	१७ ०१	१९ ०५	२० ४६	२२ ११	२३ ३४	१ ०६	३ ०१	५ १५
	२१	६	७ ३७	९ ५७	१२ १५	१४ ३७	१६ ५७	१९ ०१	२० ४२	२२ ०७	२३ ३०	१ ०२	२ ५७	५ ११
	२२	७	७ ३३	९ ५३	१२ ११	१४ ३३	१६ ५३	१८ ५७	२० ३८	२२ ०३	२३ २६	० ५८	२ ५३	५ ०७
	२३	८	७ ३०	९ ५०	१२ ०७	१४ २९	१६ ४९	१८ ५३	२० ३४	२१ ५९	२३ २२	० ५५	२ ४९	५ ०३
	२४	९	७ २६	९ ४६	१२ ०३	१४ २५	१६ ४५	१८ ५०	२० ३०	२१ ५६	२३ १८	० ५१	२ ४५	४ ५९
	२५	१०	७ २२	९ ४२	११ ५९	१४ २१	१६ ४१	१८ ४६	२० २७	२१ ५२	२३ १४	० ४७	२ ४१	४ ५६
	२६	११	७ १८	९ ३८	११ ५५	१४ १७	१६ ३७	१८ ४२	२० २३	२१ ४८	२३ १०	० ४३	२ ३७	४ ५२
	२७	१२	७ १४	९ ३४	११ ५२	१४ १३	१६ ३३	१८ ३८	२० १९	२१ ४४	२३ ०६	० ३९	२ ३३	४ ४८
	२८	१३	७ १०	९ ३०	११ ४८	१४ ०९	१६ २९	१८ ३४	२० १५	२१ ४०	२३ ०२	० ३५	२ ३०	४ ४४
	२९	१४	७ ०६	९ २६	११ ४४	१४ ०५	१६ २५	१८ ३०	२० ११	२१ ३६	२२ ५८	० ३१	२ २६	४ ४०
	३०	१५	७ ०२	९ २२	११ ४०	१४ ०१	१६ २१	१८ २६	२० ०७	२१ ३२	२२ ५४	० २७	२ २२	४ ३६
	३१	१६	६ ५८	९ १८	११ ३६	१३ ५७	१६ १७	१८ २२	२० ०३	२१ २८	२२ ५०	० २३	२ १८	४ ३१
अगस्त	१	१७	६ ५४	९ १४	११ ३२	१३ ५३	१६ १३	१८ १८	१९ ५९	२१ २४	२२ ४७	० १९	२ १४	४ २८
	२	१८	६ ५०	९ १०	११ २८	१३ ४९	१६ १०	१८ १४	१९ ५५	२१ २०	२२ ४३	० १५	२ १०	४ २४
	३	१९	६ ४६	९ ०६	११ २४	१३ ४६	१६ ०६	१८ १०	१९ ५१	२१ १६	२२ ३९	० ११	२ ०६	४ २०
	४	२०	६ ४२	९ ०२	११ २०	१३ ४२	१६ ०२	१८ ०६	१९ ४७	२१ १२	२२ ३५	० ०७	२ ०२	४ १६
	५	२१	६ ३८	८ ५८	११ १६	१३ ३८	१५ ५८	१८ ०२	१९ ४३	२१ ०८	२२ ३१	० ०३	१ ५८	४ १२
	६	२२	६ ३४	८ ५४	११ १२	१३ ३४	१५ ५४	१७ ५८	१९ ३९	२१ ०४	२२ २७	० ००	१ ५४	४ ०८
	७	२३	६ ३१	८ ५१	११ ०८	१३ ३०	१५ ५०	१७ ५५	१९ ३५	२१ ०१	२२ २३	२३ ५६	१ ५०	४ ०४
	८	२४	६ २७	८ ४७	११ ०४	१३ २६	१५ ४६	१७ ५१	१९ ३२	२० ५७	२२ १९	२३ ५२	१ ४६	४ ००
	९	२५	६ २३	८ ४३	११ ००	१३ २२	१५ ४२	१७ ४७	१९ २८	२० ५३	२२ १५	२३ ४८	१ ४२	३ ५७
	१०	२६	६ १९	८ ३९	१० ५६	१३ १८	१५ ३८	१७ ४३	१९ २४	२० ४९	२२ ११	२३ ४४	१ ३८	३ ५३
	११	२७	६ १५	८ ३५	१० ५३	१३ १४	१५ ३४	१७ ३९	१९ २०	२० ४५	२२ ०७	२३ ४०	१ ३४	३ ४९
	१२	२८	६ ११	८ ३१	१० ४९	१३ १०	१५ ३०	१७ ३५	१९ १६	२० ४१	२२ ०३	२३ ३६	१ ३१	३ ४५
	१३	२९	६ ०७	८ २७	१० ४५	१३ ०६	१५ २६	१७ ३१	१९ १२	२० ३७	२१ ५९	२३ ३२	१ २७	३ ४१
	१४	३०	६ ०३	८ २३	१० ४१	१३ ०२	१५ २२	१७ २७	१९ ०८	२० ३३	२१ ५५	२३ २८	१ २३	३ ३७
	१५	३१	५ ५९	८ १९	१० ३७	१२ ५८	१५ १८	१७ २३	१९ ०४	२० २९	२१ ५१	२३ २४	१ १९	३ ३३
	१६	[illegible]	५ ५५											

दैनिक लग्नसारणी, चण्डीगढ़ (U.T.) में लग्नों का समाप्तिकाल [भा.स्टैं.टा.]

भाद्रपद

मास	अंग्रेज़ी तारीख	भाद्रपद प्रविष्टे	सिंह घं. मि.	कन्या घं. मि.	तुला घं. मि.	वृश्चिक घं. मि.	धनु घं. मि.	मकर घं. मि.	कुम्भ घं. मि.	मीन घं. मि.	मेष घं. मि.	वृष घं. मि.	मिथुन घं. मि.	कर्क घं. मि.
अगस्त	१६	१	८ १५	१० ३३	१२ ५४	१५ १५	१७ १९	१९ ००	२० २५	२१ ४८	२३ २०	१ १५	३ २९	५ ५१
	१७	२	८ ११	१० २९	१२ ५०	१५ ११	१७ १५	१८ ५६	२० २१	२१ ४४	२३ १६	१ ११	३ २५	५ ४७
	१८	३	८ ०७	१० २५	१२ ४७	१५ ०७	१७ ११	१८ ५२	२० १७	२१ ४०	२३ १२	१ ०७	३ २१	५ ४३
	१९	४	८ ०३	१० २१	१२ ४३	१५ ०३	१७ ०७	१८ ४८	२० १३	२१ ३६	२३ ०८	१ ०३	३ १७	५ ३९
	२०	५	७ ५९	१० १७	१२ ३९	१४ ५९	१७ ०३	१८ ४४	२० ०९	२१ ३२	२३ ०४	० ५९	३ १३	५ ३६
	२१	६	७ ५६	१० १३	१२ ३५	१४ ५५	१६ ५९	१८ ४०	२० ०५	२१ २८	२३ ०१	० ५५	३ ०९	५ ३२
	२२	७	७ ५२	१० ०९	१२ ३१	१४ ५१	१६ ५६	१८ ३६	२० ०२	२१ २४	२२ ५७	० ५१	३ ०५	५ २८
	२३	८	७ ४८	१० ०५	१२ २७	१४ ४७	१६ ५२	१८ ३३	१९ ५८	२१ २०	२२ ५३	० ४७	३ ०२	५ २४
	२४	९	७ ४४	१० ०१	१२ २३	१४ ४३	१६ ४८	१८ २९	१९ ५४	२१ १६	२२ ४९	० ४३	२ ५८	५ २०
	२५	१०	७ ४०	९ ५७	१२ १९	१४ ३९	१६ ४४	१८ २५	१९ ५०	२१ १२	२२ ४५	० ३९	२ ५४	५ १६
	२६	११	७ ३६	९ ५४	१२ १५	१४ ३५	१६ ४०	१८ २१	१९ ४६	२१ ०८	२२ ४१	० ३६	२ ५०	५ १२
	२७	१२	७ ३२	९ ५०	१२ ११	१४ ३१	१६ ३६	१८ १७	१९ ४२	२१ ०४	२२ ३७	० ३२	२ ४६	५ ०८
	२८	१३	७ २८	९ ४६	१२ ०७	१४ २७	१६ ३२	१८ १३	१९ ३८	२१ ००	२२ ३३	० २८	२ ४२	५ ०४
	२९	१४	७ २४	९ ४२	१२ ०३	१४ २३	१६ २८	१८ ०९	१९ ३४	२० ५६	२२ २९	० २४	२ ३८	५ ००
	३०	१५	७ २०	९ ३८	११ ५९	१४ १९	१६ २४	१८ ०५	१९ ३०	२० ५२	२२ २५	० २०	२ ३४	४ ५६
	३१	१६	७ १६	९ ३४	११ ५५	१४ १६	१६ २०	१८ ०१	१९ २६	२० ४९	२२ २१	० १६	२ ३०	४ ५२
सितम्बर	१	१७	७ १२	९ ३०	११ ५२	१४ १२	१६ १६	१७ ५७	१९ २२	२० ४५	२२ १७	० १२	२ २६	४ ४८
	२	१८	७ ०८	९ २६	११ ४८	१४ ०८	१६ १२	१७ ५३	१९ १८	२० ४१	२२ १३	० ०८	२ २२	४ ४४
	३	१९	७ ०४	९ २२	११ ४४	१४ ०४	१६ ०८	१७ ४९	१९ १४	२० ३७	२२ ०९	० ०४	२ १८	४ ४०
	४	२०	७ ००	९ १८	११ ४०	१४ ००	१६ ०४	१७ ४५	१९ १०	२० ३३	२२ ०६	० ००	२ १४	४ ३७
	५	२१	६ ५७	९ १४	११ ३६	१३ ५६	१६ ००	१७ ४१	१९ ०६	२० २९	२२ ०२	२३ ५६	२ १०	४ ३३
	६	२२	६ ५३	९ १०	११ ३२	१३ ५२	१५ ५७	१७ ३८	१९ ०३	२० २५	२१ ५८	२३ ५२	२ ०६	४ २९
	७	२३	६ ४९	९ ०६	११ २८	१३ ४८	१५ ५३	१७ ३४	१८ ५९	२० २१	२१ ५४	२३ ४८	२ ०३	४ २५
	८	२४	६ ४५	९ ०२	११ २४	१३ ४४	१५ ४९	१७ ३०	१८ ५५	२० १७	२१ ५०	२३ ४४	१ ५९	४ २१
	९	२५	६ ४१	८ ५९	११ २०	१३ ४०	१५ ४५	१७ २६	१८ ५१	२० १३	२१ ४६	२३ ४०	१ ५५	४ १७
	१०	२६	६ ३७	८ ५५	११ १६	१३ ३६	१५ ४१	१७ २२	१८ ४७	२० ०९	२१ ४२	२३ ३७	१ ५१	४ १३
	११	२७	६ ३३	८ ५१	११ १२	१३ ३२	१५ ३७	१७ १८	१८ ४३	२० ०५	२१ ३८	२३ ३३	१ ४७	४ ०९
	१२	२८	६ २९	८ ४७	११ ०८	१३ २८	१५ ३३	१७ १४	१८ ३९	२० ०१	२१ ३४	२३ २९	१ ४३	४ ०५
	१३	२९	६ २५	८ ४३	११ ०४	१३ २४	१५ २९	१७ १०	१८ ३५	१९ ५७	२१ ३०	२३ २५	१ ३९	४ ०१
	१४	३०	६ २१	८ ३९	११ ००	१३ २१	१५ २५	१७ ०६	१८ ३१	१९ ५४	२१ २६	२३ २१	१ ३५	३ ५७
	१५	३१	६ १७	८ ३५	१० ५६	१३ १७	१५ २१	१७ ०२	१८ २७	१९ ५०	२१ २२	२३ १७	१ ३१	३ ५३
	१६	आ. १	६ १३											

आश्विन

मास	अंग्रेज़ी तारीख	आश्विन प्रविष्टे	कन्या घं. मि.	तुला घं. मि.	वृश्चिक घं. मि.	धनु घं. मि.	मकर घं. मि.	कुम्भ घं. मि.	मीन घं. मि.	मेष घं. मि.	वृष घं. मि.	मिथुन घं. मि.	कर्क घं. मि.	सिंह घं. मि.
सितम्बर	१६	१	८ ३१	१० ५३	१३ १३	१५ १७	१६ ५८	१८ २३	१९ ४६	२१ १८	२३ १३	१ २७	३ ४९	६ ०९
	१७	२	८ २७	१० ४९	१३ ०९	१५ १३	१६ ५४	१८ १९	१९ ४२	२१ १४	२३ ०९	१ २३	३ ४५	६ ०५
	१८	३	८ २३	१० ४५	१३ ०५	१५ ०९	१६ ५०	१८ १५	१९ ३८	२१ १०	२३ ०५	१ १९	३ ४२	६ ०१
	१९	४	८ १९	१० ४१	१३ ०१	१५ ०५	१६ ४६	१८ ११	१९ ३४	२१ ०७	२३ ०१	१ १५	३ ३८	५ ५८
	२०	५	८ १५	१० ३७	१२ ५७	१५ ०२	१६ ४२	१८ ०८	१९ ३०	२१ ०३	२२ ५७	१ ११	३ ३४	५ ५४
	२१	६	८ ११	१० ३३	१२ ५३	१४ ५८	१६ ३९	१८ ०४	१९ २६	२० ५९	२२ ५३	१ ०७	३ ३०	५ ५०
	२२	७	८ ०७	१० २९	१२ ४९	१४ ५४	१६ ३५	१८ ००	१९ २२	२० ५५	२२ ४९	१ ०४	३ २६	५ ४६
	२३	८	८ ०३	१० २५	१२ ४५	१४ ५०	१६ ३१	१७ ५६	१९ १८	२० ५१	२२ ४५	१ ००	३ २२	५ ४२
	२४	९	८ ००	१० २१	१२ ४१	१४ ४६	१६ २७	१७ ५२	१९ १४	२० ४७	२२ ४१	० ५६	३ १८	५ ३८
	२५	१०	७ ५६	१० १७	१२ ३७	१४ ४२	१६ २३	१७ ४८	१९ १०	२० ४३	२२ ३८	० ५२	३ १४	५ ३४
	२६	११	७ ५२	१० १३	१२ ३३	१४ ३८	१६ १९	१७ ४४	१९ ०६	२० ३९	२२ ३४	० ४८	३ १०	५ ३०
	२७	१२	७ ४८	१० ०९	१२ २९	१४ ३४	१६ १५	१७ ४०	१९ ०२	२० ३५	२२ ३०	० ४४	३ ०६	५ २६
	२८	१३	७ ४४	१० ०५	१२ २५	१४ ३०	१६ ११	१७ ३६	१८ ५८	२० ३१	२२ २६	० ४०	३ ०२	५ २२
	२९	१४	७ ४०	१० ०१	१२ २२	१४ २६	१६ ०७	१७ ३२	१८ ५५	२० २७	२२ २२	० ३६	२ ५८	५ १८
	३०	१५	७ ३६	९ ५७	१२ १८	१४ २२	१६ ०३	१७ २८	१८ ५१	२० २३	२२ १८	० ३२	२ ५४	५ १४
अक्तूबर	१	१६	७ ३२	९ ५४	१२ १४	१४ १८	१५ ५९	१७ २४	१८ ४७	२० १९	२२ १४	० २८	२ ५०	५ १०
	२	१७	७ २८	९ ५०	१२ १०	१४ १४	१५ ५५	१७ २०	१८ ४३	२० १५	२२ १०	० २४	२ ४६	५ ०६
	३	१८	७ २४	९ ४६	१२ ०६	१४ १०	१५ ५१	१७ १६	१८ ३९	२० ११	२२ ०६	० २०	२ ४३	५ ०३
	४	१९	७ २०	९ ४२	१२ ०२	१४ ०६	१५ ४७	१७ १२	१८ ३५	२० ०८	२२ ०२	० १६	२ ३९	४ ५९
	५	२०	७ १६	९ ३८	११ ५८	१४ ०३	१५ ४३	१७ ०९	१८ ३१	२० ०४	२१ ५८	० १२	२ ३५	४ ५५
	६	२१	७ १२	९ ३४	११ ५४	१३ ५९	१५ ४०	१७ ०५	१८ २७	२० ००	२१ ५४	० ०८	२ ३१	४ ५१
	७	२२	७ ०८	९ ३०	११ ५०	१३ ५५	१५ ३६	१७ ०१	१८ २३	१९ ५६	२१ ५०	० ०५	२ २७	४ ४७
	८	२३	७ ०५	९ २६	११ ४६	१३ ५१	१५ ३२	१६ ५७	१८ १९	१९ ५२	२१ ४६	० ०१	२ २३	४ ४३
	९	२४	७ ०१	९ २२	११ ४२	१३ ४७	१५ २८	१६ ५३	१८ १५	१९ ४८	२१ ४३	२३ ५७	२ १९	४ ३९
	१०	२५	६ ५७	९ १८	११ ३८	१३ ४३	१५ २४	१६ ४९	१८ ११	१९ ४४	२१ ३९	२३ ५३	२ १५	४ ३५
	११	२६	६ ५३	९ १४	११ ३४	१३ ३९	१५ २०	१६ ४५	१८ ०७	१९ ४०	२१ ३५	२३ ४९	२ ११	४ ३१
	१२	२७	६ ४९	९ १०	११ ३०	१३ ३५	१५ १६	१६ ४१	१८ ०३	१९ ३६	२१ ३१	२३ ४५	२ ०७	४ २७
	१३	२८	६ ४५	९ ०६	११ २६	१३ ३१	१५ १२	१६ ३७	१७ ५९	१९ ३२	२१ २७	२३ ४१	२ ०३	४ २३
	१४	२९	६ ४१	९ ०२	११ २३	१३ २७	१५ ०८	१६ ३३	१७ ५६	१९ २८	२१ २३	२३ ३७	१ ५९	४ १९
	१५	३०	६ ३७	८ ५९	११ १९	१३ २३	१५ ०४	१६ २९	१७ ५२	१९ २४	२१ १९	२३ ३३	१ ५५	४ १५
	१६	का. १	६ ३३											

दैनिक लग्नसारणी, चण्डीगढ़ (U.T.) में लग्नों का समाप्तिकाल [भा.स्टैं.टा.]

आषाढ़

मास	अंग्रेज़ी तारीख	आषाढ़ प्रविष्टे	मिथुन घं. मि.	कर्क घं. मि.	सिंह घं. मि.	कन्या घं. मि.	तुला घं. मि.	वृश्चिक घं. मि.	धनु घं. मि.	मकर घं. मि.	कुम्भ घं. मि.	मीन घं. मि.	मेष घं. मि.	वृष घं. मि.
जून	१४	१	७ ४१	१० ०३	१२ २३	१४ ४१	१७ ०२	१९ २२	२१ २७	२३ ०८	० ३३	१ ५५	३ २८	५ २३
	१५	२	७ ३७	९ ५९	१२ १९	१४ ३७	१६ ५८	१९ १८	२१ २३	२३ ०४	० २९	१ ५१	३ २४	५ १९
	१६	३	७ ३३	९ ५५	१२ १५	१४ ३३	१६ ५४	१९ १४	२१ १९	२३ ००	० २५	१ ४७	३ २०	५ १५
	१७	४	७ २९	९ ५१	१२ ११	१४ २९	१६ ५०	१९ १०	२१ १५	२२ ५६	० २१	१ ४३	३ १६	५ ११
	१८	५	७ २५	९ ४७	१२ ०७	१४ २५	१६ ४६	१९ ०६	२१ ११	२२ ५२	० १७	१ ३९	३ १२	५ ०७
	१९	६	७ २१	९ ४३	१२ ०३	१४ २१	१६ ४२	१९ ०३	२१ ०७	२२ ४८	० १३	१ ३६	३ ०८	५ ०३
	२०	७	७ १७	९ ३९	११ ५९	१४ १७	१६ ३९	१८ ५९	२१ ०३	२२ ४४	० ०९	१ ३२	३ ०४	४ ५९
	२१	८	७ १३	९ ३५	११ ५५	१४ १३	१६ ३५	१८ ५५	२० ५९	२२ ४०	० ०५	१ २८	३ ००	४ ५५
	२२	९	७ ०९	९ ३१	११ ५१	१४ ०९	१६ ३१	१८ ५१	२० ५५	२२ ३६	० ०१	१ २४	२ ५६	४ ५१
	२३	१०	७ ०५	९ २७	११ ४७	१४ ०५	१६ २७	१८ ४७	२० ५१	२२ ३२	२३ ५७	१ २०	२ ५३	४ ४७
	२४	११	७ ०१	९ २४	११ ४४	१४ ०१	१६ २३	१८ ४३	२० ४८	२२ २८	२३ ५४	१ १६	२ ४९	४ ४३
	२५	१२	६ ५७	९ २०	११ ४०	१३ ५७	१६ १९	१८ ३९	२० ४४	२२ २५	२३ ५०	१ १२	२ ४५	४ ३९
	२६	१३	६ ५३	९ १६	११ ३६	१३ ५३	१६ १५	१८ ३५	२० ४०	२२ २१	२३ ४६	१ ०८	२ ४१	४ ३५
	२७	१४	६ ५०	९ १२	११ ३२	१३ ४९	१६ ११	१८ ३१	२० ३६	२२ १७	२३ ४२	१ ०४	२ ३७	४ ३१
	२८	१५	६ ४६	९ ०८	११ २८	१३ ४६	१६ ०७	१८ २७	२० ३२	२२ १३	२३ ३८	१ ००	२ ३३	४ २७
	२९	१६	६ ४२	९ ०४	११ २४	१३ ४२	१६ ०३	१८ २३	२० २८	२२ ०९	२३ ३४	० ५६	२ २९	४ २४
	३०	१७	६ ३८	९ ००	११ २०	१३ ३८	१५ ५९	१८ १९	२० २४	२२ ०५	२३ ३०	० ५२	२ २५	४ २०
जुलाई	१	१८	६ ३४	८ ५६	११ १६	१३ ३४	१५ ५५	१८ १५	२० २०	२२ ०१	२३ २६	० ४८	२ २१	४ १६
	२	१९	६ ३०	८ ५२	११ १२	१३ ३०	१५ ५१	१८ ११	२० १६	२१ ५७	२३ २२	० ४४	२ १७	४ १२
	३	२०	६ २६	८ ४८	११ ०८	१३ २६	१५ ४७	१८ ०८	२० १२	२१ ५३	२३ १८	० ४१	२ १३	४ ०८
	४	२१	६ २२	८ ४४	११ ०४	१३ २२	१५ ४३	१८ ०४	२० ०८	२१ ४९	२३ १४	० ३७	२ ०९	४ ०४
	५	२२	६ १८	८ ४०	११ ००	१३ १८	१५ ४०	१८ ००	२० ०४	२१ ४५	२३ १०	० ३३	२ ०५	४ ००
	६	२३	६ १४	८ ३६	१० ५६	१३ १४	१५ ३६	१७ ५६	२० ००	२१ ४१	२३ ०६	० २९	२ ०१	३ ५६
	७	२४	६ १०	८ ३२	१० ५२	१३ १०	१५ ३२	१७ ५२	१९ ५६	२१ ३७	२३ ०२	० २५	१ ५७	३ ५२
	८	२५	६ ०६	८ २९	१० ४९	१३ ०६	१५ २८	१७ ४८	१९ ५२	२१ ३३	२२ ५८	० २१	१ ५४	३ ४८
	९	२६	६ ०२	८ २५	१० ४५	१३ ०२	१५ २४	१७ ४४	१९ ४९	२१ २९	२२ ५५	० १७	१ ५०	३ ४४
	१०	२७	५ ५८	८ २१	१० ४१	१२ ५८	१५ २०	१७ ४०	१९ ४५	२१ २६	२२ ५१	० १३	१ ४६	३ ४०
	११	२८	५ ५५	८ १७	१० ३७	१२ ५४	१५ १६	१७ ३६	१९ ४१	२१ २२	२२ ४७	० ०९	१ ४२	३ ३६
	१२	२९	५ ५१	८ १३	१० ३३	१२ ५०	१५ १२	१७ ३२	१९ ३७	२१ १८	२२ ४३	० ०५	१ ३८	३ ३२
	१३	३०	५ ४७	८ ०९	१० २९	१२ ४७	१५ ०८	१७ २८	१९ ३३	२१ १४	२२ ३९	० ०१	१ ३४	३ २९
	१४	३१	५ ४३	८ ०५	१० २५	१२ ४३	१५ ०४	१७ २४	१९ २९	२१ १०	२२ ३५	२३ ५७	१ ३०	३ २५
	१५	३२	५ ३९	८ ०१	१० २१	१२ ३९	१५ ००	१७ २०	१९ २४	२१ ०६	२२ ३१	२३ ५३	१ २६	३ २१
	१६	श्रा१	५ ३५											

श्रावण

मास	अंग्रेज़ी तारीख	श्रावण प्रविष्टे	कर्क घं. मि.	सिंह घं. मि.	कन्या घं. मि.	तुला घं. मि.	वृश्चिक घं. मि.	धनु घं. मि.	मकर घं. मि.	कुम्भ घं. मि.	मीन घं. मि.	मेष घं. मि.	वृष घं. मि.	मिथुन घं. मि.
जुलाई	१६	१	७ ५७	१० १७	१२ ३५	१४ ५६	१७ १६	१९ २१	२१ ०२	२२ २७	२३ ४९	१ २२	३ १७	५ ३१
	१७	२	७ ५३	१० १३	१२ ३१	१४ ५२	१७ १२	१९ १७	२० ५८	२२ २३	२३ ४५	१ १८	३ १३	५ २७
	१८	३	७ ४९	१० ०९	१२ २७	१४ ४८	१७ ०९	१९ १३	२० ५४	२२ १९	२३ ४१	१ १४	३ ०९	५ २३
	१९	४	७ ४५	१० ०५	१२ २३	१४ ४५	१७ ०५	१९ ०९	२० ५०	२२ १५	२३ ३८	१ १०	३ ०५	५ १९
	२०	५	७ ४१	१० ०१	१२ १९	१४ ४१	१७ ०१	१९ ०५	२० ४६	२२ ११	२३ ३४	१ ०६	३ ०१	५ १५
	२१	६	७ ३७	९ ५७	१२ १५	१४ ३७	१६ ५७	१९ ०१	२० ४२	२२ ०७	२३ ३०	१ ०२	२ ५७	५ ११
	२२	७	७ ३३	९ ५३	१२ ११	१४ ३३	१६ ५३	१८ ५७	२० ३८	२२ ०३	२३ २६	० ५८	२ ५३	५ ०७
	२३	८	७ ३०	९ ५०	१२ ०७	१४ २९	१६ ४९	१८ ५३	२० ३४	२१ ५९	२३ २२	० ५५	२ ४९	५ ०३
	२४	९	७ २६	९ ४६	१२ ०३	१४ २५	१६ ४५	१८ ५०	२० ३०	२१ ५६	२३ १८	० ५१	२ ४५	४ ५९
	२५	१०	७ २२	९ ४२	११ ५९	१४ २१	१६ ४१	१८ ४६	२० २७	२१ ५२	२३ १४	० ४७	२ ४१	४ ५६
	२६	११	७ १८	९ ३८	११ ५५	१४ १७	१६ ३७	१८ ४२	२० २३	२१ ४८	२३ १०	० ४३	२ ३७	४ ५२
	२७	१२	७ १४	९ ३४	११ ५२	१४ १३	१६ ३३	१८ ३८	२० १९	२१ ४४	२३ ०६	० ३९	२ ३३	४ ४८
	२८	१३	७ १०	९ ३०	११ ४८	१४ ०९	१६ २९	१८ ३४	२० १५	२१ ४०	२३ ०२	० ३५	२ ३०	४ ४४
	२९	१४	७ ०६	९ २६	११ ४४	१४ ०५	१६ २५	१८ ३०	२० ११	२१ ३६	२२ ५८	० ३१	२ २६	४ ४०
	३०	१५	७ ०२	९ २२	११ ४०	१४ ०१	१६ २१	१८ २६	२० ०७	२१ ३२	२२ ५४	० २७	२ २२	४ ३६
	३१	१६	६ ५८	९ १८	११ ३६	१३ ५७	१६ १७	१८ २२	२० ०३	२१ २८	२२ ५०	० २३	२ १८	४ ३२
अगस्त	१	१७	६ ५४	९ १४	११ ३२	१३ ५३	१६ १३	१८ १८	१९ ५९	२१ २४	२२ ४७	० १९	२ १४	४ २८
	२	१८	६ ५०	९ १०	११ २८	१३ ४९	१६ १०	१८ १४	१९ ५५	२१ २०	२२ ४३	० १५	२ १०	४ २४
	३	१९	६ ४६	९ ०६	११ २४	१३ ४६	१६ ०६	१८ १०	१९ ५१	२१ १६	२२ ३९	० ११	२ ०६	४ २०
	४	२०	६ ४२	९ ०२	११ २०	१३ ४२	१६ ०२	१८ ०६	१९ ४७	२१ १२	२२ ३५	० ०७	२ ०२	४ १६
	५	२१	६ ३८	८ ५८	११ १६	१३ ३८	१५ ५८	१८ ०२	१९ ४३	२१ ०८	२२ ३१	० ०३	१ ५८	४ १२
	६	२२	६ ३४	८ ५४	११ १२	१३ ३४	१५ ५४	१७ ५८	१९ ३९	२१ ०४	२२ २७	० ००	१ ५४	४ ०८
	७	२३	६ ३१	८ ५१	११ ०८	१३ ३०	१५ ५०	१७ ५५	१९ ३४	२१ ०१	२२ २३	२३ ५६	१ ५०	४ ०४
	८	२४	६ २७	८ ४७	११ ०४	१३ २६	१५ ४६	१७ ५१	१९ ३२	२० ५७	२२ १९	२३ ५२	१ ४६	४ ००
	९	२५	६ २३	८ ४३	११ ००	१३ २२	१५ ४२	१७ ४७	१९ २८	२० ५३	२२ १५	२३ ४८	१ ४२	३ ५७
	१०	२६	६ १९	८ ३९	१० ५६	१३ १८	१५ ३८	१७ ४३	१९ २४	२० ४९	२२ ११	२३ ४४	१ ३८	३ ५३
	११	२७	६ १५	८ ३५	१० ५३	१३ १४	१५ ३४	१७ ३९	१९ २०	२० ४५	२२ ०७	२३ ४०	१ ३४	३ ४९
	१२	२८	६ ११	८ ३१	१० ४९	१३ १०	१५ ३०	१७ ३५	१९ १६	२० ४१	२२ ०३	२३ ३६	१ ३१	३ ४५
	१३	२९	६ ०७	८ २७	१० ४५	१३ ०६	१५ २६	१७ ३१	१९ १२	२० ३७	२१ ५९	२३ ३२	१ २७	३ ४१
	१४	३०	६ ०३	८ २३	१० ४१	१३ ०२	१५ २२	१७ २७	१९ ०८	२० ३३	२१ ५५	२३ २८	१ २३	३ ३७
	१५	३१	५ ५९	८ १९	१० ३७	१२ ५८	१५ १८	१७ २३	१९ ०४	२० २९	२१ ५१	२३ २४	१ १९	३ ३३
	१६	भा१	५ ५५											

दैनिक लग्नसारणी, चण्डीगढ़ (U.T.) में लग्नों का समाप्तिकाल [भा.स्टैं.टा.]

भाद्रपद

अंग्रेज़ी तारीख		भाद्रपद	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क
			घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
अगस्त	१६	१	८ १५	१० ३३	१२ ५४	१५ १५	१७ १९	१९ ००	२० २५	२१ ४८	२३ २०	१ १५	३ २९	५ ५१
	१७	२	८ ११	१० २९	१२ ५०	१५ ११	१७ १५	१८ ५६	२० २१	२१ ४४	२३ १६	१ ११	३ २५	५ ४७
	१८	३	८ ०७	१० २५	१२ ४७	१५ ०७	१७ ११	१८ ५२	२० १७	२१ ४०	२३ १२	१ ०७	३ २१	५ ४३
	१९	४	८ ०३	१० २१	१२ ४३	१५ ०३	१७ ०७	१८ ४८	२० १३	२१ ३६	२३ ०८	१ ०३	३ १७	५ ३९
	२०	५	७ ५९	१० १७	१२ ३९	१४ ५९	१७ ०३	१८ ४४	२० ०९	२१ ३२	२३ ०४	० ५९	३ १३	५ ३६
	२१	६	७ ५६	१० १३	१२ ३५	१४ ५५	१६ ५९	१८ ४०	२० ०५	२१ २८	२३ ०१	० ५५	३ ०९	५ ३२
	२२	७	७ ५२	१० ०९	१२ ३१	१४ ५१	१६ ५६	१८ ३६	२० ०२	२१ २४	२२ ५७	० ५१	३ ०५	५ २८
	२३	८	७ ४८	१० ०५	१२ २७	१४ ४७	१६ ५२	१८ ३३	१९ ५८	२१ २०	२२ ५३	० ४७	३ ०२	५ २४
	२४	९	७ ४४	१० ०१	१२ २३	१४ ४३	१६ ४८	१८ २९	१९ ५४	२१ १६	२२ ४९	० ४३	२ ५८	५ २०
	२५	१०	७ ४०	९ ५७	१२ १९	१४ ३९	१६ ४४	१८ २५	१९ ५०	२१ १२	२२ ४५	० ३९	२ ५४	५ १६
	२६	११	७ ३६	९ ५४	१२ १५	१४ ३५	१६ ४०	१८ २१	१९ ४६	२१ ०८	२२ ४१	० ३६	२ ५०	५ १२
	२७	१२	७ ३२	९ ५०	१२ ११	१४ ३१	१६ ३६	१८ १७	१९ ४२	२१ ०४	२२ ३७	० ३२	२ ४६	५ ०८
	२८	१३	७ २८	९ ४६	१२ ०७	१४ २७	१६ ३२	१८ १३	१९ ३८	२१ ००	२२ ३३	० २८	२ ४२	५ ०४
	२९	१४	७ २४	९ ४२	१२ ०३	१४ २३	१६ २८	१८ ०९	१९ ३४	२० ५६	२२ २९	० २४	२ ३८	५ ००
	३०	१५	७ २०	९ ३८	११ ५९	१४ १९	१६ २४	१८ ०५	१९ ३०	२० ५२	२२ २५	० २०	२ ३४	४ ५६
	३१	१६	७ १६	९ ३४	११ ५५	१४ १६	१६ २०	१८ ०१	१९ २६	२० ४९	२२ २१	० १६	२ ३०	४ ५२
सितम्बर	१	१७	७ १२	९ ३०	११ ५२	१४ १२	१६ १६	१७ ५७	१९ २२	२० ४५	२२ १७	० १२	२ २६	४ ४८
	२	१८	७ ०८	९ २६	११ ४८	१४ ०८	१६ १२	१७ ५३	१९ १८	२० ४१	२२ १३	० ०८	२ २२	४ ४४
	३	१९	७ ०४	९ २२	११ ४४	१४ ०४	१६ ०८	१७ ४९	१९ १४	२० ३७	२२ ०९	० ०४	२ १८	४ ४०
	४	२०	७ ००	९ १८	११ ४०	१४ ००	१६ ०४	१७ ४५	१९ १०	२० ३३	२२ ०६	० ००	२ १४	४ ३७
	५	२१	६ ५७	९ १४	११ ३६	१३ ५६	१६ ००	१७ ४१	१९ ०६	२० २९	२२ ०२	२३ ५६	२ १०	४ ३३
	६	२२	६ ५३	९ १०	११ ३२	१३ ५२	१५ ५७	१७ ३८	१९ ०३	२० २५	२१ ५८	२३ ५२	२ ०६	४ २९
	७	२३	६ ४९	९ ०६	११ २८	१३ ४८	१५ ५३	१७ ३४	१८ ५९	२० २१	२१ ५४	२३ ४८	२ ०३	४ २५
	८	२४	६ ४५	९ ०२	११ २४	१३ ४४	१५ ४९	१७ ३०	१८ ५५	२० १७	२१ ५०	२३ ४४	१ ५९	४ २१
	९	२५	६ ४१	८ ५९	११ २०	१३ ४०	१५ ४५	१७ २६	१८ ५१	२० १३	२१ ४६	२३ ४०	१ ५५	४ १७
	१०	२६	६ ३७	८ ५५	११ १६	१३ ३६	१५ ४१	१७ २२	१८ ४७	२० ०९	२१ ४२	२३ ३७	१ ५१	४ १३
	११	२७	६ ३३	८ ५१	११ १२	१३ ३२	१५ ३७	१७ १८	१८ ४३	२० ०५	२१ ३८	२३ ३३	१ ४७	४ ०९
	१२	२८	६ २९	८ ४७	११ ०८	१३ २८	१५ ३३	१७ १४	१८ ३९	२० ०१	२१ ३४	२३ २९	१ ४३	४ ०५
	१३	२९	६ २५	८ ४३	११ ०४	१३ २४	१५ २९	१७ १०	१८ ३५	१९ ५७	२१ ३०	२३ २५	१ ३९	४ ०१
	१४	३०	६ २१	८ ३९	११ ००	१३ २१	१५ २५	१७ ०६	१८ ३१	१९ ५४	२१ २६	२३ २१	१ ३५	३ ५७
	१५	३१	६ १७	८ ३५	१० ५६	१३ १७	१५ २१	१७ ०२	१८ २७	१९ ५०	२१ २२	२३ १७	१ ३१	३ ५३
	१६	आ. १	६ १३											

आश्विन

अंग्रेज़ी तारीख		आश्विन	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह
			घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
सितम्बर	१६	१	८ ३१	१० ५३	१३ १३	१५ १७	१६ ५८	१८ २३	१९ ४६	२१ १८	२३ १३	१ २७	३ ४९	६ ०९
	१७	२	८ २७	१० ४९	१३ ०९	१५ १३	१६ ५४	१८ १९	१९ ४२	२१ १४	२३ ०९	१ २३	३ ४५	६ ०५
	१८	३	८ २३	१० ४५	१३ ०५	१५ ०९	१६ ५०	१८ १५	१९ ३८	२१ १०	२३ ०५	१ १९	३ ४२	६ ०१
	१९	४	८ १९	१० ४१	१३ ०१	१५ ०५	१६ ४६	१८ ११	१९ ३४	२१ ०७	२३ ०१	१ १५	३ ३८	५ ५८
	२०	५	८ १५	१० ३७	१२ ५७	१५ ०२	१६ ४२	१८ ०८	१९ ३०	२१ ०३	२२ ५७	१ ११	३ ३४	५ ५४
	२१	६	८ ११	१० ३३	१२ ५३	१४ ५८	१६ ३९	१८ ०४	१९ २६	२० ५९	२२ ५३	१ ०७	३ ३०	५ ५०
	२२	७	८ ०७	१० २९	१२ ४९	१४ ५४	१६ ३५	१८ ००	१९ २२	२० ५५	२२ ४९	१ ०४	३ २६	५ ४६
	२३	८	८ ०३	१० २५	१२ ४५	१४ ५०	१६ ३१	१७ ५६	१९ १८	२० ५१	२२ ४५	१ ००	३ २२	५ ४२
	२४	९	८ ००	१० २१	१२ ४१	१४ ४६	१६ २७	१७ ५२	१९ १४	२० ४७	२२ ४१	० ५६	३ १८	५ ३८
	२५	१०	७ ५६	१० १७	१२ ३७	१४ ४२	१६ २३	१७ ४८	१९ १०	२० ४३	२२ ३८	० ५२	३ १४	५ ३४
	२६	११	७ ५२	१० १३	१२ ३३	१४ ३८	१६ १९	१७ ४४	१९ ०६	२० ३९	२२ ३४	० ४८	३ १०	५ ३०
	२७	१२	७ ४८	१० ०९	१२ २९	१४ ३४	१६ १५	१७ ४०	१९ ०२	२० ३५	२२ ३०	० ४४	३ ०६	५ २६
	२८	१३	७ ४४	१० ०५	१२ २५	१४ ३०	१६ ११	१७ ३६	१८ ५८	२० ३१	२२ २६	० ४०	३ ०२	५ २२
	२९	१४	७ ४०	१० ०१	१२ २२	१४ २६	१६ ०७	१७ ३२	१८ ५५	२० २७	२२ २२	० ३६	२ ५८	५ १८
	३०	१५	७ ३६	९ ५७	१२ १८	१४ २२	१६ ०३	१७ २८	१८ ५१	२० २३	२२ १८	० ३२	२ ५४	५ १४
अक्टूबर	१	१६	७ ३२	९ ५४	१२ १४	१४ १८	१५ ५९	१७ २४	१८ ४७	२० १९	२२ १४	० २८	२ ५०	५ १०
	२	१७	७ २८	९ ५०	१२ १०	१४ १४	१५ ५५	१७ २०	१८ ४३	२० १५	२२ १०	० २४	२ ४६	५ ०६
	३	१८	७ २४	९ ४६	१२ ०६	१४ १०	१५ ५१	१७ १६	१८ ३९	२० ११	२२ ०६	० २०	२ ४३	५ ०३
	४	१९	७ २०	९ ४२	१२ ०२	१४ ०६	१५ ४७	१७ १२	१८ ३५	२० ०८	२२ ०२	० १६	२ ३९	४ ५९
	५	२०	७ १६	९ ३८	११ ५८	१४ ०३	१५ ४३	१७ ०९	१८ ३१	२० ०४	२१ ५८	० १२	२ ३५	४ ५५
	६	२१	७ १२	९ ३४	११ ५४	१३ ५९	१५ ४०	१७ ०५	१८ २७	२० ००	२१ ५४	० ०८	२ ३१	४ ५१
	७	२२	७ ०८	९ ३०	११ ५०	१३ ५५	१५ ३६	१७ ०१	१८ २३	१९ ५६	२१ ५०	० ०५	२ २७	४ ४७
	८	२३	७ ०५	९ २६	११ ४६	१३ ५१	१५ ३२	१६ ५७	१८ १९	१९ ५२	२१ ४६	० ०१	२ २३	४ ४३
	९	२४	७ ०१	९ २२	११ ४२	१३ ४७	१५ २८	१६ ५३	१८ १५	१९ ४८	२१ ४३	२३ ५७	२ १९	४ ३९
	१०	२५	६ ५७	९ १८	११ ३८	१३ ४३	१५ २४	१६ ४९	१८ ११	१९ ४४	२१ ३९	२३ ५३	२ १५	४ ३५
	११	२६	६ ५३	९ १४	११ ३४	१३ ३९	१५ २०	१६ ४५	१८ ०७	१९ ४०	२१ ३५	२३ ४९	२ ११	४ ३१
	१२	२७	६ ४९	९ १०	११ ३०	१३ ३५	१५ १६	१६ ४१	१८ ०३	१९ ३६	२१ ३१	२३ ४५	२ ०७	४ २७
	१३	२८	६ ४५	९ ०६	११ २६	१३ ३१	१५ १२	१६ ३७	१७ ५९	१९ ३२	२१ २७	२३ ४१	२ ०३	४ २३
	१४	२९	६ ४१	९ ०२	११ २३	१३ २७	१५ ०८	१६ ३३	१७ ५६	१९ २८	२१ २३	२३ ३७	१ ५९	४ १९
	१५	३०	६ ३७	८ ५९	११ १९	१३ २३	१५ ०४	१६ २९	१७ ५२	१९ २४	२१ १९	२३ ३३	१ ५५	४ १५
	१६	का.१	६ ३३											

दैनिक लग्नसारणी, चण्डीगढ़ (U.T.) में लग्नों का समाप्तिकाल [भा.स्टैं.टा.]

कार्तिक

माह	अंग्रेज़ी तारीख	कार्तिक प्रविष्टे	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या
			घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
अक्टूबर	१६	१	८ ५५	११ १५	१३ १९	१५ ००	१६ २५	१७ ४८	१९ २०	२१ १५	२३ २९	१ ५१	४ ११	६ २९
	१७	२	८ ५१	११ ११	१३ १५	१४ ५६	१६ २१	१७ ४४	१९ १६	२१ ११	२३ २५	१ ४७	४ ०७	६ २५
	१८	३	८ ४७	११ ०७	१३ ११	१४ ५२	१६ १७	१७ ४०	१९ १३	२१ ०७	२३ २१	१ ४४	४ ०४	६ २१
	१९	४	८ ४३	११ ०३	१३ ०८	१४ ४८	१६ १४	१७ ३६	१९ ०९	२१ ०३	२३ १७	१ ४०	४ ००	६ १७
	२०	५	८ ३९	१० ५९	१३ ०४	१४ ४५	१६ १०	१७ ३२	१९ ०५	२० ५९	२३ १३	१ ३६	३ ५६	६ १३
	२१	६	८ ३५	१० ५५	१३ ००	१४ ४१	१६ ०६	१७ २८	१९ ०१	२० ५५	२३ ०९	१ ३२	३ ५२	६ ०९
	२२	७	८ ३१	१० ५१	१२ ५६	१४ ३७	१६ ०२	१७ २४	१८ ५७	२० ५१	२३ ०६	१ २८	३ ४८	६ ०६
	२३	८	८ २७	१० ४७	१२ ५२	१४ ३३	१५ ५८	१७ २०	१८ ५३	२० ४७	२३ ०२	१ २४	३ ४४	६ ०२
	२४	९	८ २३	१० ४३	१२ ४८	१४ २९	१५ ५४	१७ १६	१८ ४९	२० ४४	२२ ५८	१ २०	३ ४०	५ ५८
	२५	१०	८ १९	१० ३९	१२ ४४	१४ २५	१५ ५०	१७ १२	१८ ४५	२० ४०	२२ ५४	१ १६	३ ३६	५ ५४
	२६	११	८ १५	१० ३५	१२ ४०	१४ २१	१५ ४६	१७ ०८	१८ ४१	२० ३६	२२ ५०	१ १२	३ ३२	५ ५०
	२७	१२	८ ११	१० ३१	१२ ३६	१४ १७	१५ ४२	१७ ०४	१८ ३७	२० ३२	२२ ४६	१ ०८	३ २८	५ ४६
	२८	१३	८ ०७	१० २८	१२ ३२	१४ १३	१५ ३८	१७ ०१	१८ ३३	२० २८	२२ ४२	१ ०४	३ २४	५ ४२
	२९	१४	८ ०३	१० २४	१२ २८	१४ ०९	१५ ३४	१६ ५७	१८ २९	२० २४	२२ ३८	१ ००	३ २०	५ ३८
	३०	१५	८ ००	१० २०	१२ २४	१४ ०५	१५ ३०	१६ ५३	१८ २५	२० २०	२२ ३४	० ५६	३ १६	५ ३४
	३१	१६	७ ५६	१० १६	१२ २०	१४ ०१	१५ २६	१६ ४९	१८ २१	२० १६	२२ ३०	० ५२	३ १२	५ ३०
नवम्बर	१	१७	७ ५२	१० १२	१२ १६	१३ ५७	१५ २२	१६ ४५	१८ १७	२० १२	२२ २६	० ४८	३ ०९	५ २६
	२	१८	७ ४८	१० ०८	१२ १२	१३ ५३	१५ १८	१६ ४१	१८ १३	२० ०८	२२ २२	० ४५	३ ०५	५ २२
	३	१९	७ ४४	१० ०४	१२ ०९	१३ ४९	१५ १५	१६ ३७	१८ ०९	२० ०४	२२ १८	० ४१	३ ०१	५ १८
	४	२०	७ ४०	१० ००	१२ ०५	१३ ४६	१५ ११	१६ ३३	१८ ०६	२० ००	२२ १५	० ३७	२ ५७	५ १४
	५	२१	७ ३६	९ ५६	१२ ०१	१३ ४२	१५ ०७	१६ २९	१८ ०२	१९ ५६	२२ ११	० ३३	२ ५३	५ १०
	६	२२	७ ३२	९ ५२	११ ५७	१३ ३८	१५ ०३	१६ २५	१७ ५८	१९ ५२	२२ ०७	० २९	२ ४९	५ ०७
	७	२३	७ २८	९ ४८	११ ५३	१३ ३४	१४ ५९	१६ २१	१७ ५४	१९ ४९	२२ ०३	० २५	२ ४५	५ ०३
	८	२४	७ २४	९ ४४	११ ४९	१३ ३०	१४ ५५	१६ १७	१७ ५०	१९ ४५	२१ ५९	० २१	२ ४१	४ ५९
	९	२५	७ २०	९ ४०	११ ४५	१३ २६	१४ ५१	१६ १३	१७ ४६	१९ ४१	२१ ५५	० १७	२ ३७	४ ५५
	१०	२६	७ १६	९ ३६	११ ४१	१३ २२	१४ ४७	१६ ०९	१७ ४२	१९ ३७	२१ ५१	० १३	२ ३३	४ ५१
	११	२७	७ १२	९ ३२	११ ३७	१३ १८	१४ ४३	१६ ०५	१७ ३८	१९ ३३	२१ ४७	० ०९	२ २९	४ ४७
	१२	२८	७ ०८	९ २९	११ ३३	१३ १४	१४ ३९	१६ ०२	१७ ३४	१९ २९	२१ ४३	० ०५	२ २५	४ ४३
	१३	२९	७ ०५	९ २५	११ २९	१३ १०	१४ ३५	१५ ५८	१७ ३०	१९ २५	२१ ३९	० ०१	२ २१	४ ३९
	१४	३०	७ ०१	९ २१	११ २५	१३ ०६	१४ ३१	१५ ५४	१७ २६	१९ २१	२१ ३५	२३ ५७	२ १७	४ ३५
	१५	मा. १	६ ५७											

मार्गशीर्ष

माह	अंग्रेज़ी तारीख	मार्गशीर्ष प्रविष्टे	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला
			घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
नवम्बर	१५	१	९ १७	११ २१	१३ ०२	१४ २७	१५ ५०	१७ २२	१९ १७	२१ ३१	२३ ५३	२ १३	४ ३१	६ ५३
	१६	२	९ १३	११ १७	१२ ५८	१४ २३	१५ ४६	१७ १८	१९ १३	२१ २७	२३ ५०	२ १०	४ २७	६ ४९
	१७	३	९ ०९	११ १३	१२ ५४	१४ १९	१५ ४२	१७ १५	१९ ०९	२१ २३	२३ ४६	२ ०६	४ २३	६ ४५
	१८	४	९ ०५	११ १०	१२ ५०	१४ १६	१५ ३८	१७ ११	१९ ०५	२१ १९	२३ ४२	२ ०२	४ १९	६ ४१
	१९	५	९ ०१	११ ०६	१२ ४७	१४ १२	१५ ३४	१७ ०७	१९ ०१	२१ १६	२३ ३८	१ ५८	४ १५	६ ३७
	२०	६	८ ५७	११ ०२	१२ ४३	१४ ०८	१५ ३०	१७ ०३	१८ ५७	२१ १२	२३ ३४	१ ५४	४ १२	६ ३३
	२१	७	८ ५३	१० ५८	१२ ३९	१४ ०४	१५ २६	१६ ५९	१८ ५३	२१ ०८	२३ ३०	१ ५०	४ ०८	६ २९
	२२	८	८ ४९	१० ५४	१२ ३५	१४ ००	१५ २२	१६ ५५	१८ ५०	२१ ०४	२३ २६	१ ४६	४ ०४	६ २५
	२३	९	८ ४५	१० ५०	१२ ३१	१३ ५६	१५ १८	१६ ५१	१८ ४६	२१ ००	२३ २२	१ ४२	४ ००	६ २१
	२४	१०	८ ४१	१० ४६	१२ २७	१३ ५२	१५ १४	१६ ४७	१८ ४२	२० ५६	२३ १८	१ ३८	३ ५६	६ १७
	२५	११	८ ३७	१० ४२	१२ २३	१३ ४८	१५ १०	१६ ४३	१८ ३८	२० ५२	२३ १४	१ ३४	३ ५२	६ १३
	२६	१२	८ ३३	१० ३८	१२ १९	१३ ४४	१५ ०७	१६ ३९	१८ ३४	२० ४८	२३ १०	१ ३०	३ ४८	६ ०९
	२७	१३	८ ३०	१० ३४	१२ १५	१३ ४०	१५ ०३	१६ ३५	१८ ३०	२० ४४	२३ ०६	१ २६	३ ४४	६ ०६
	२८	१४	८ २६	१० ३०	१२ ११	१३ ३६	१४ ५९	१६ ३१	१८ २६	२० ४०	२३ ०२	१ २२	३ ४०	६ ०२
	२९	१५	८ २२	१० २६	१२ ०७	१३ ३२	१४ ५५	१६ २७	१८ २२	२० ३६	२२ ५८	१ १८	३ ३६	५ ५८
	३०	१६	८ १८	१० २२	१२ ०३	१३ २८	१४ ५१	१६ २३	१८ १८	२० ३२	२२ ५४	१ १४	३ ३२	५ ५४
दिसम्बर	१	१७	८ १४	१० १८	११ ५९	१३ २४	१४ ४७	१६ २०	१८ १४	२० २८	२२ ५१	१ ११	३ २८	५ ५०
	२	१८	८ १०	१० १५	११ ५५	१३ २१	१४ ४३	१६ १६	१८ १०	२० २४	२२ ४७	१ ०७	३ २४	५ ४६
	३	१९	८ ०६	१० ११	११ ५२	१३ १७	१४ ३९	१६ १२	१८ ०६	२० २०	२२ ४३	१ ०३	३ २०	५ ४२
	४	२०	८ ०२	१० ०७	११ ४८	१३ १३	१४ ३५	१६ ०८	१८ ०२	२० १७	२२ ३९	० ५९	३ १६	५ ३८
	५	२१	७ ५८	१० ०३	११ ४४	१३ ०९	१४ ३१	१६ ०४	१७ ५८	२० १३	२२ ३५	० ५५	३ १३	५ ३४
	६	२२	७ ५४	९ ५९	११ ४०	१३ ०५	१४ २७	१६ ००	१७ ५४	२० ०९	२२ ३१	० ५१	३ ०९	५ ३०
	७	२३	७ ५०	९ ५५	११ ३६	१३ ०१	१४ २३	१५ ५६	१७ ५१	२० ०५	२२ २७	० ४७	३ ०५	५ २६
	८	२४	७ ४६	९ ५१	११ ३२	१२ ५७	१४ १९	१५ ५२	१७ ४७	२० ०१	२२ २३	० ४३	३ ०१	५ २२
	९	२५	७ ४२	९ ४७	११ २८	१२ ५३	१४ १५	१५ ४८	१७ ४३	१९ ५७	२२ १९	० ३९	२ ५७	५ १८
	१०	२६	७ ३८	९ ४३	११ २४	१२ ४९	१४ ११	१५ ४४	१७ ३९	१९ ५३	२२ १५	० ३५	२ ५३	५ १४
	११	२७	७ ३५	९ ३९	११ २०	१२ ४५	१४ ०८	१५ ४०	१७ ३५	१९ ४९	२२ ११	० ३१	२ ४९	५ १०
	१२	२८	७ ३१	९ ३५	११ १६	१२ ४१	१४ ०४	१५ ३६	१७ ३१	१९ ४५	२२ ०७	० २७	२ ४५	५ ०७
	१३	२९	७ २७	९ ३१	११ १२	१२ ३७	१४ ००	१५ ३२	१७ २७	१९ ४१	२२ ०३	० २३	२ ४१	५ ०३
	१४	३०	७ २३	९ २७	११ ०८	१२ ३३	१३ ५६	१५ २८	१७ २३	१९ ३७	२१ ५९	० १९	२ ३७	४ ५९

दैनिक लग्नसारणी, चण्डीगढ़ (U.T.) में लग्नों का समाप्तिकाल [भा.स्टैं.टा.]

अंग्रेज़ी तारीख		पौष प्रविष्टे	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक
			घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
दिसम्बर	१५	१	९ २३	११ ४	१२ २९	१३ ५२	१५ २४	१७ १९	१९ ३३	२१ ५६	० १६	२ ३३	४ ५५	७ १५
	१६	२	९ १९	११ ००	१२ २५	१३ ४८	१५ २१	१७ १५	१९ २९	२१ ५२	० १२	२ २९	४ ५१	७ ११
	१७	३	९ १६	१० ५६	१२ २२	१३ ४४	१५ १७	१७ ११	१९ २५	२१ ४८	० ०८	२ २५	४ ४७	७ ०७
	१८	४	९ १२	१० ५३	१२ १८	१३ ४०	१५ १३	१७ ०७	१९ २२	२१ ४४	० ०४	२ २१	४ ४३	७ ०३
	१९	५	९ ०८	१० ४९	१२ १४	१३ ३६	१५ ०९	१७ ०३	१९ १८	२१ ४०	० ००	२ १७	४ ३९	६ ५९
	२०	६	९ ०४	१० ४५	१२ १०	१३ ३२	१५ ०५	१६ ५९	१९ १४	२१ ३६	२३ ५६	२ १४	४ ३५	६ ५५
	२१	७	९ ००	१० ४१	१२ ०६	१३ २८	१५ ०१	१६ ५६	१९ १०	२१ ३२	२३ ५२	२ १०	४ ३१	६ ५१
	२२	८	८ ५६	१० ३७	१२ ०२	१३ २४	१४ ५७	१६ ५२	१९ ०६	२१ २८	२३ ४८	२ ०६	४ २७	६ ४७
	२३	९	८ ५२	१० ३३	११ ५८	१३ २०	१४ ५३	१६ ४८	१९ ०२	२१ २४	२३ ४४	२ ०२	४ २३	६ ४३
	२४	१०	८ ४८	१० २९	११ ५४	१३ १६	१४ ४९	१६ ४४	१८ ५८	२१ २०	२३ ४०	१ ५८	४ १९	६ ३९
	२५	११	८ ४४	१० २५	११ ५०	१३ १२	१४ ४५	१६ ४०	१८ ५४	२१ १६	२३ ३६	१ ५४	४ १५	६ ३६
	२६	१२	८ ४०	१० २१	११ ४६	१३ ०९	१४ ४१	१६ ३६	१८ ५०	२१ १२	२३ ३२	१ ५०	४ १२	६ ३२
	२७	१३	८ ३६	१० १७	११ ४२	१३ ०५	१४ ३७	१६ ३२	१८ ४६	२१ ०८	२३ २८	१ ४६	४ ०८	६ २८
	२८	१४	८ ३२	१० १३	११ ३८	१३ ०१	१४ ३३	१६ २८	१८ ४२	२१ ०४	२३ २४	१ ४२	४ ०४	६ २४
	२९	१५	८ २८	१० ०९	११ ३४	१२ ५७	१४ २९	१६ २४	१८ ३८	२१ ००	२३ २०	१ ३८	४ ००	६ २०
	३०	१६	८ २४	१० ०५	११ ३०	१२ ५३	१४ २६	१६ २०	१८ ३४	२० ५७	२३ १७	१ ३४	३ ५६	६ १६
	३१	१७	८ २०	१० ०१	११ २६	१२ ४९	१४ २२	१६ १६	१८ ३०	२० ५३	२३ १३	१ ३०	३ ५२	६ १२
जनवरी	१	१८	८ १६	९ ५७	११ २२	१२ ४४	१४ १७	१६ ११	१८ २६	२० ४८	२३ ०८	१ २५	३ ४७	६ ०७
	२	१९	८ १२	९ ५३	११ १८	१२ ४०	१४ १३	१६ ०७	१८ २२	२० ४४	२३ ०४	१ २१	३ ४३	६ ०३
	३	२०	८ ०८	९ ४९	११ १४	१२ ३६	१४ ०९	१६ ०३	१८ १८	२० ४०	२३ ००	१ १७	३ ३९	५ ५९
	४	२१	८ ०४	९ ४५	११ १०	१२ ३२	१४ ०५	१५ ५९	१८ १४	२० ३६	२२ ५६	१ १४	३ ३५	५ ५५
	५	२२	८ ००	९ ४१	११ ०६	१२ २८	१४ ०१	१५ ५६	१८ १०	२० ३२	२२ ५२	१ १०	३ ३१	५ ५१
	६	२३	७ ५६	९ ३७	११ ०२	१२ २४	१३ ५७	१५ ५२	१८ ०६	२० २८	२२ ४८	१ ०६	३ २७	५ ४७
	७	२४	७ ५२	९ ३३	१० ५८	१२ २०	१३ ५३	१५ ४८	१८ ०२	२० २४	२२ ४४	१ ०२	३ २३	५ ४३
	८	२५	७ ४८	९ २९	१० ५४	१२ १६	१३ ४९	१५ ४४	१७ ५८	२० २०	२२ ४०	० ५८	३ १९	५ ३९
	९	२६	७ ४४	९ २५	१० ५०	१२ १३	१३ ४५	१५ ४०	१७ ५४	२० १६	२२ ३६	० ५४	३ १५	५ ३६
	१०	२७	७ ४०	९ २१	१० ४६	१२ ०९	१३ ४१	१५ ३६	१७ ५०	२० १२	२२ ३२	० ५०	३ १२	५ ३२
	११	२८	७ ३६	९ १७	१० ४२	१२ ०५	१३ ३७	१५ ३२	१७ ४६	२० ०८	२२ २८	० ४६	३ ०८	५ २८
	१२	२९	७ ३२	९ १३	१० ३८	१२ ०१	१३ ३३	१५ २८	१७ ४२	२० ०४	२२ २४	० ४२	३ ०४	५ २४
	१३	माघ १	७ २८											

अंग्रेज़ी तारीख		माघ प्रविष्टे	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु
			घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
जनवरी	१३	१	९ ०९	१० ३४	११ ५७	१३ २९	१५ २४	१७ ३८	२० ००	२२ २०	० ३८	३ ००	५ २०	७ २४
	१४	२	९ ०५	१० ३०	११ ५३	१३ २६	१५ २०	१७ ३४	१९ ५७	२२ १७	० ३४	२ ५६	५ १६	७ २०
	१५	३	९ ०१	१० २७	११ ४९	१३ २२	१५ १६	१७ ३०	१९ ५३	२२ १३	० ३०	२ ५२	५ १२	७ १७
	१६	४	८ ५८	१० २३	११ ४५	१३ १८	१५ १२	१७ २६	१९ ४९	२२ ०९	० २६	२ ४८	५ ०८	७ १३
	१७	५	८ ५४	१० १९	११ ४१	१३ १४	१५ ०८	१७ २३	१९ ४५	२२ ०५	० २२	२ ४४	५ ०४	७ ०९
	१८	६	८ ५०	१० १५	११ ३७	१३ १०	१५ ०४	१७ १९	१९ ४१	२२ ०१	० १९	२ ४०	५ ००	७ ०५
	१९	७	८ ४६	१० ११	११ ३३	१३ ०६	१५ ०१	१७ १५	१९ ३७	२१ ५७	० १५	२ ३६	४ ५६	७ ०१
	२०	८	८ ४२	१० ०७	११ २९	१३ ०२	१४ ५७	१७ ११	१९ ३३	२१ ५३	० ११	२ ३२	४ ५२	६ ५७
	२१	९	८ ३८	१० ०३	११ २५	१२ ५८	१४ ५३	१७ ०७	१९ २९	२१ ४९	० ०७	२ २८	४ ४८	६ ५३
	२२	१०	८ ३४	९ ५९	११ २१	१२ ५४	१४ ४९	१७ ०३	१९ २५	२१ ४५	० ०३	२ २४	४ ४४	६ ४९
	२३	११	८ ३०	९ ५५	११ १७	१२ ५०	१४ ४५	१६ ५९	१९ २१	२१ ४१	२३ ५९	२ २०	४ ४१	६ ४५
	२४	१२	८ २६	९ ५१	११ १४	१२ ४६	१४ ४१	१६ ५५	१९ १७	२१ ३७	२३ ५५	२ १६	४ ३७	६ ४१
	२५	१३	८ २२	९ ४७	११ १०	१२ ४२	१४ ३७	१६ ५१	१९ १३	२१ ३३	२३ ५१	२ १३	४ ३३	६ ३७
	२६	१४	८ १८	९ ४३	११ ०६	१२ ३८	१४ ३३	१६ ४७	१९ ०९	२१ २९	२३ ४७	२ ०९	४ २९	६ ३३
	२७	१५	८ १४	९ ३९	११ ०२	१२ ३४	१४ २९	१६ ४३	१९ ०५	२१ २५	२३ ४३	२ ०५	४ २५	६ २९
	२८	१६	८ १०	९ ३५	१० ५८	१२ ३०	१४ २५	१६ ३९	१९ ०२	२१ २२	२३ ३९	२ ०१	४ २१	६ २५
	२९	१७	८ ०६	९ ३१	१० ५४	१२ २७	१४ २१	१६ ३५	१८ ५८	२१ १८	२३ ३५	१ ५७	४ १७	६ २२
	३०	१८	८ ०२	९ २८	१० ५०	१२ २३	१४ १७	१६ ३१	१८ ५४	२१ १४	२३ ३१	१ ५३	४ १३	६ १८
	३१	१९	७ ५९	९ २४	१० ४६	१२ १९	१४ १३	१६ २८	१८ ५०	२१ १०	२३ २७	१ ४९	४ ०९	६ १४
फरवरी	१	२०	७ ५५	९ २०	१० ४२	१२ १५	१४ ०९	१६ २४	१८ ४६	२१ ०६	२३ २३	१ ४५	४ ०५	६ १०
	२	२१	७ ५१	९ १६	१० ३८	१२ ११	१४ ०५	१६ २०	१८ ४२	२१ ०२	२३ २०	१ ४१	४ ०१	६ ०६
	३	२२	७ ४७	९ १२	१० ३४	१२ ०७	१४ ०२	१६ १६	१८ ३८	२० ५८	२३ १६	१ ३७	३ ५७	६ ०२
	४	२३	७ ४३	९ ०८	१० ३०	१२ ०३	१३ ५८	१६ १२	१८ ३४	२० ५४	२३ १२	१ ३३	३ ५३	५ ५८
	५	२४	७ ३९	९ ०४	१० २६	११ ५९	१३ ५४	१६ ०८	१८ ३०	२० ५०	२३ ०८	१ २९	३ ४९	५ ५४
	६	२५	७ ३५	९ ००	१० २२	११ ५५	१३ ५०	१६ ०४	१८ २६	२० ४६	२३ ०४	१ २५	३ ४५	५ ५०
	७	२६	७ ३१	८ ५६	१० १९	११ ५१	१३ ४६	१६ ००	१८ २२	२० ४२	२३ ००	१ २१	३ ४२	५ ४६
	८	२७	७ २७	८ ५२	१० १५	११ ४७	१३ ४२	१५ ५६	१८ १८	२० ३८	२२ ५६	१ १७	३ ३८	५ ४२
	९	२८	७ २३	८ ४८	१० ११	११ ४३	१३ ३८	१५ ५२	१८ १४	२० ३४	२२ ५२	१ १४	३ ३४	५ ३८
	१०	२९	७ १९	८ ४४	१० ०७	११ ३९	१३ ३४	१५ ४८	१८ १०	२० ३०	२२ ४८	१ १०	३ ३०	५ ३४
	११	३०	७ १५	८ ४०	१० ०३	११ ३५	१३ ३०	१५ ४४	१८ ०६	२० २६	२२ ४४	१ ०६	३ २६	५ ३०
	१२	फा.१	७ ११											

दैनिक लग्नसारणी, चण्डीगढ़ (U.T.) में लग्नों का समाप्तिकाल [भा.स्टैं.टा.]

फाल्गुन

अंग्रेज़ी तारीख (मास)	अंग्रेज़ी तारीख	फाल्गुन प्रविष्टे	कुम्भ घं. मि.	मीन घं. मि.	मेष घं. मि.	वृष घं. मि.	मिथुन घं. मि.	कर्क घं. मि.	सिंह घं. मि.	कन्या घं. मि.	तुला घं. मि.	वृश्चिक घं. मि.	धनु घं. मि.	मकर घं. मि.
फरवरी	१२	१	८ ३६	९ ५९	११ ३२	१३ २६	१५ ४०	१८ ०३	२० २३	२२ ४०	१ ०२	३ २२	५ २६	७ ०७
	१३	२	८ ३३	९ ५५	११ २८	१३ २२	१५ ३६	१७ ५९	२० १९	२२ ३६	० ५८	३ १८	५ २३	७ ०४
	१४	३	८ २९	९ ५१	११ २४	१३ १८	१५ ३२	१७ ५५	२० १५	२२ ३२	० ५४	३ १४	५ १९	७ ००
	१५	४	८ २५	९ ४७	११ २०	१३ १४	१५ २९	१७ ५१	२० ११	२२ २८	० ५०	३ १०	५ १५	६ ५६
	१६	५	८ २१	९ ४३	११ १६	१३ १०	१५ २५	१७ ४७	२० ०७	२२ २५	० ४६	३ ०६	५ ११	६ ५२
	१७	६	८ १७	९ ३९	११ १२	१३ ०६	१५ २१	१७ ४३	२० ०३	२२ २१	० ४२	३ ०२	५ ०७	६ ४८
	१८	७	८ १३	९ ३५	११ ०८	१३ ०३	१५ १७	१७ ३९	१९ ५९	२२ १७	० ३८	२ ५८	५ ०३	६ ४४
	१९	८	८ ०९	९ ३१	११ ०४	१२ ५९	१५ १३	१७ ३५	१९ ५५	२२ १३	० ३४	२ ५४	४ ५९	६ ४०
	२०	९	८ ०५	९ २७	११ ००	१२ ५५	१५ ०९	१७ ३१	१९ ५१	२२ ०९	० ३०	२ ५०	४ ५५	६ ३६
	२१	१०	८ ०१	९ २३	१० ५६	१२ ५१	१५ ०५	१७ २७	१९ ४७	२२ ०५	० २६	२ ४६	४ ५१	६ ३२
	२२	११	७ ५७	९ २०	१० ५२	१२ ४७	१५ ०१	१७ २३	१९ ४३	२२ ०१	० २२	२ ४३	४ ४७	६ २८
	२३	१२	७ ५३	९ १६	१० ४८	१२ ४३	१४ ५७	१७ १९	१९ ३९	२१ ५७	० १९	२ ३९	४ ४३	६ २४
	२४	१३	७ ४९	९ १२	१० ४४	१२ ३९	१४ ५३	१७ १५	१९ ३५	२१ ५३	० १५	२ ३५	४ ३९	६ २०
	२५	१४	७ ४५	९ ०८	१० ४०	१२ ३५	१४ ४९	१७ ११	१९ ३१	२१ ४९	० ११	२ ३१	४ ३५	६ १६
	२६	१५	७ ४१	९ ०४	१० ३६	१२ ३१	१४ ४५	१७ ०७	१९ २७	२१ ४५	० ०७	२ २७	४ ३१	६ १२
	२७	१६	७ ३७	९ ००	१० ३३	१२ २७	१४ ४१	१७ ०४	१९ २४	२१ ४१	० ०३	२ २३	४ २८	६ ०८
	२८	१७	७ ३४	८ ५६	१० २९	१२ २३	१४ ३७	१७ ००	१९ २०	२१ ३७	२३ ५९	२ १९	४ २४	६ ०४
मार्च	१	१८	७ ३०	८ ५२	१० २५	१२ १९	१४ ३३	१६ ५६	१९ १६	२१ ३३	२३ ५५	२ १५	४ २०	६ ०१
	२	१९	७ २६	८ ४८	१० २१	१२ १५	१४ ३०	१६ ५२	१९ १२	२१ २९	२३ ५१	२ ११	४ १६	५ ५७
	३	२०	७ २२	८ ४४	१० १७	१२ ११	१४ २६	१६ ४८	१९ ०८	२१ २६	२३ ४७	२ ०७	४ १२	५ ५३
	४	२१	७ १८	८ ४०	१० १३	१२ ०८	१४ २२	१६ ४४	१९ ०४	२१ २२	२३ ४३	२ ०३	४ ०८	५ ४९
	५	२२	७ १४	८ ३६	१० ०९	१२ ०४	१४ १८	१६ ४०	१९ ००	२१ १८	२३ ३९	१ ५९	४ ०४	५ ४५
	६	२३	७ १०	८ ३२	१० ०५	१२ ००	१४ १४	१६ ३६	१८ ५६	२१ १४	२३ ३५	१ ५५	४ ००	५ ४१
	७	२४	७ ०६	८ २८	१० ०१	११ ५६	१४ १०	१६ ३२	१८ ५२	२१ १०	२३ ३१	१ ५१	३ ५६	५ ३७
	८	२५	७ ०२	८ २४	९ ५७	११ ५२	१४ ०६	१६ २८	१८ ४८	२१ ०६	२३ २७	१ ४८	३ ५२	५ ३३
	९	२६	६ ५८	८ २१	९ ५३	११ ४८	१४ ०२	१६ २४	१८ ४४	२१ ०२	२३ २३	१ ४४	३ ४८	५ २९
	१०	२७	६ ५४	८ १७	९ ४९	११ ४४	१३ ५८	१६ २०	१८ ४०	२० ५८	२३ २०	१ ४०	३ ४४	५ २५
	११	२८	६ ५०	८ १३	९ ४५	११ ४०	१३ ५४	१६ १६	१८ ३६	२० ५४	२३ १६	१ ३६	३ ४०	५ २१
	१२	२९	६ ४६	८ ०९	९ ४१	११ ३६	१३ ५०	१६ १२	१८ ३२	२० ५०	२३ १२	१ ३२	३ ३६	५ १७
	१३	३०	६ ४२	८ ०५	९ ३८	११ ३२	१३ ४६	१६ ०९	१८ २९	२० ४६	२३ ०८	१ २८	३ ३२	५ १३
	१४	चै.१	६ ३८											

चैत्र

अंग्रेज़ी तारीख (मास)	अंग्रेज़ी तारीख	चैत्र प्रविष्टे	मीन घं. मि.	मेष घं. मि.	वृष घं. मि.	मिथुन घं. मि.	कर्क घं. मि.	सिंह घं. मि.	कन्या घं. मि.	तुला घं. मि.	वृश्चिक घं. मि.	धनु घं. मि.	मकर घं. मि.	कुम्भ घं. मि.
मार्च	१४	१	८ ०१	९ ३४	११ २८	१३ ४२	१६ ०५	१८ २५	२० ४२	२३ ०४	१ २४	३ २९	५ ०९	६ ३५
	१५	२	७ ५७	९ ३०	११ २४	१३ ३८	१६ ०१	१८ २१	२० ३८	२३ ००	१ २०	३ २५	५ ०६	६ ३१
	१६	३	७ ५३	९ २६	११ २०	१३ ३५	१५ ५७	१८ १७	२० ३४	२२ ५६	१ १६	३ २१	५ ०२	६ २७
	१७	४	७ ४९	९ २२	११ १६	१३ ३१	१५ ५३	१८ १३	२० ३०	२२ ५२	१ १२	३ १७	४ ५८	६ २३
	१८	५	७ ४५	९ १८	११ १२	१३ २७	१५ ४९	१८ ०९	२० २७	२२ ४८	१ ०८	३ १३	४ ५४	६ १९
	१९	६	७ ४१	९ १४	११ ०९	१३ २३	१५ ४५	१८ ०५	२० २३	२२ ४४	१ ०४	३ ०९	४ ५०	६ १५
	२०	७	७ ३७	९ १०	११ ०५	१३ १९	१५ ४१	१८ ०१	२० १९	२२ ४०	१ ००	३ ०५	४ ४६	६ ११
	२१	८	७ ३३	९ ०६	११ ०१	१३ १५	१५ ३७	१७ ५७	२० १५	२२ ३६	० ५६	३ ०१	४ ४२	६ ०७
	२२	९	७ २९	९ ०२	१० ५७	१३ ११	१५ ३३	१७ ५३	२० ११	२२ ३२	० ५२	२ ५७	४ ३८	६ ०३
	२३	१०	७ २५	८ ५८	१० ५३	१३ ०७	१५२९	१७ ४९	२० ०७	२२ २८	० ४९	२ ५३	४ ३४	५ ५९
	२४	११	७ २२	८ ५४	१० ४९	१३ ०३	१५ २५	१७ ४५	२० ०३	२२ २५	० ४५	२ ४९	४ ३०	५ ५५
	२५	१२	७ १८	८ ५०	१० ४५	१२ ५९	१५ २१	१७ ४१	१९ ५९	२२ २१	० ४१	२ ४५	४ २६	५ ५१
	२६	१३	७ १४	८ ४६	१० ४१	१२ ५५	१५ १७	१७ ३७	१९ ५५	२२ १७	० ३७	२ ४१	४ २२	५ ४७
	२७	१४	७ १०	८ ४२	१० ३७	१२ ५१	१५ १३	१७ ३३	१९ ५१	२२ १३	० ३३	२ ३७	४ १८	५ ४३
	२८	१५	७ ०६	८ ३८	१० ३३	१२ ४७	१५ १०	१७ ३०	१९ ४७	२२ ०९	० २९	२ ३३	४ १४	५ ३९
	२९	१६	७ ०२	८ ३५	१० २९	१२ ४३	१५ ०६	१७ २६	१९ ४३	२२ ०५	० २५	२ ३०	४ १०	५ ३६
	३०	१७	६ ५८	८ ३१	१० २५	१२ ३९	१५ ०२	१७ २२	१९ ४०	२२ ०१	० २१	२ २६	४ ०७	५ ३२
	३१	१८	६ ५४	८ २७	१० २१	१२ ३६	१४ ५८	१७ १८	१९ ३६	२१ ५७	० १७	२ २२	४ ०३	५ २८
अप्रैल	१	१९	६ ५०	८ २३	१० १७	१२ ३२	१४ ५४	१७ १४	१९ ३२	२१ ५३	० १३	२ १८	३ ५९	५ २४
	२	२०	६ ४६	८ १९	१० १३	१२ २८	१४ ५०	१७ १०	१९ २८	२१ ४९	० ०९	२ १४	३ ५५	५ २०
	३	२१	६ ४२	८ १५	१० १०	१२ २४	१४ ४६	१७ ०६	१९ २४	२१ ४५	० ०५	२ १०	३ ५१	५ १६
	४	२२	६ ३८	८ ११	१० ०६	१२ २०	१४ ४२	१७ ०२	१९ २०	२१ ४१	० ०१	२ ०६	३ ४७	५ १२
	५	२३	६ ३४	८ ०७	१० ०२	१२ १६	१४ ३८	१६ ५८	१९ १६	२१ ३७	२३ ५७	२ ०२	३ ४३	५ ०८
	६	२४	६ ३०	८ ०३	९ ५८	१२ १२	१४ ३४	१६ ५४	१९ १२	२१ ३३	२३ ५३	१ ५८	३ ३९	५ ०४
	७	२५	६ २७	७ ५९	९ ५४	१२ ०८	१४ ३०	१६ ५०	१९ ०८	२१ २९	२३ ५०	१ ५४	३ ३५	५ ००
	८	२६	६ २३	७ ५५	९ ५०	१२ ०४	१४ २६	१६ ४६	१९ ०४	२१ २६	२३ ४६	१ ५०	३ ३१	४ ५६
	९	२७	६ १९	७ ५१	९ ४६	१२ ००	१४ २२	१६ ४२	१९ ००	२१ २२	२३ ४२	१ ४६	३ २७	४ ५२
	१०	२८	६ १५	७ ४७	९ ४२	११ ५६	१४ १८	१६ ३८	१८ ५६	२१ १८	२३ ३८	१ ४२	३ २३	४ ४८
	११	२९	६ ११	७ ४३	९ ३८	११ ५२	१४ १४	१६ ३४	१८ ५२	२१ १४	२३ ३४	१ ३८	३ १९	४ ४४
	१२	३०	६ ०७	७ ४०	९ ३४	११ ४८	१४ ११	१६ ३१	१८ ४८	२१ १०	२३ ३०	१ ३४	३ १५	४ ४१
	१३	वै.१	६ ०३											

भारत के प्रमुख-प्रमुख नगरों में लग्नों का समाप्तिकाल

यहां पीछे जो दैनिक लग्नसारणी दी गई है, वह चण्डीगढ़ में लग्नों का समाप्तिकाल (भा.स्टै.टा.) बतलाती है। इसी लग्नसारणी से नीचे दिए गए कोष्ठक की सहायता से भारत के प्रमुख-प्रमुख नगरों में लग्नों का समाप्तिकाल (भा.स्टै.टा.) आसानी से इस प्रकार जाना जा सकता है :-दैनिक लग्नसारणी से अपनी अभीष्ट तारीख को चण्डीगढ़ में लग्न का समाप्तिकाल जान लीजिए और उसमें अपने नगर के आगे और लग्न के नीचे इस कोष्ठक में लिखे मिनटों को चिह्न के अनुसार जोड़ने या घटाने से उस नगर में लग्न का समाप्ति काल मालूम हो जाएगा। जैसे-मद्रास में ९ अप्रैल को मिथुन लग्न का समाप्ति काल जानना है। ९ अप्रैल को चण्डीगढ़ में मिथुन का समाप्तिकाल १२ घं. ० मि. है, यह हमने दैनिक लग्नसारणी से ज्ञात किया। नीचे कोष्ठक में मद्रास, के आगे मिथुन के नीचे +१९ मिनट लिखे हैं। + होने से १९ मिनटों को १२ घं. ० मिनट में जोड़ने पर १२ घं. १९ मिनट मद्रास में ९ अप्रैल को मिथुनलग्न का समाप्तिकाल (भा.स्टै.टा.) बन गया।

नगर \ लग्न	मेष मि.	वृष मि.	मिथुन मि.	कर्क मि.	सिंह मि.	कन्या मि.	तुला मि.	वृश्चिक मि.	धनु मि.	मकर मि.	कुंभ मि.	मीन मि.
अजमेर	+१७	+१८	+१७	+१४	+१०	+६	+१	-१	०	+४	+८	+१२
अम्बाला	०	०	०	०	०	०	-१	-१	-१	०	०	०
अमृतसर	+७	+६	+६	+७	+८	+९	+१०	+१०	+१०	+९	+८	+७
अलवर	+७	+८	+७	+५	+२	-२	-५	-६	-६	-३	०	+४
अलीगढ़	+१	+२	+१	-१	-४	-८	-११	-१२	-१२	-९	-६	-२
अहमदाबाद	+३०	+३३	+३१	+२५	+१८	+११	+४	-१	+१	+८	+१५	+२३
आगरा	+१	+३	+२	-१	-४	-८	-११	-१३	-१३	-९	-६	-२
उज्जैन	+१८	+२१	+१९	+१३	+६	-१	-८	-१३	-११	-४	+३	+११
उदयपुर	+२४	+२६	+२५	+२०	+१४	+८	+२	-२	०	+५	+१२	+१८
इन्दौर	+१८	+२२	+२०	+१४	+५	-३	-१०	-१५	-१३	-६	+३	+१०
करनाल	+१	+१	+१	०	०	-१	-२	-२	-२	-१	-१	०
कलकत्ता	-३२	-२८	-३०	-३६	-४५	-५३	-६०	-६५	-६३	-५६	-४७	-४०
कांगड़ा	०	-१	-१	+१	+२	+३	+५	+६	+५	+४	+३	+१
कानपुर	-६	-५	-६	-९	-१३	-१७	-२२	-२४	-२३	-१९	-१५	-११
काशी	-१५	-१३	-१४	-१८	-२४	-२९	-३४	-३७	-३६	-३१	-२५	-२०
कुरुक्षेत्र	+२	+२	+२	+१	+१	०	-१	-१	-१	०	०	+१
कोटा	+१४	+१६	+१५	+११	+५	०	-५	-८	-७	-२	+४	+९
गुड़गांव	+४	+४	+४	+२	०	-२	-४	-५	-५	-३	-१	+१
गुरदासपुर	+३	+२	+२	+४	+५	+६	+८	+९	+८	+७	+६	+४
गोरखपुर	-१८	-१७	-१८	-२१	-२५	-२९	-३४	-३६	-३५	-३१	-२७	-२३
ग्वालियर	+३	+५	+४	०	-४	-९	-१३	-१६	-१५	-११	-६	[illegible]
चम्बा	-१	-२	-१	०	+२	+५	+७	+८	+७	+६	+३	+१
जम्मू	+४	+३	+४	+५	+७	+१०	+१२	+१३	+१२	+११	+८	+६
जयपुर	+११	+१२	+११	+८	+५	+१	-३	-५	-४	०	+३	+७
जालन्धर	+५	+५	+५	+६	+६	+६	+६	+६	+६	+६	+६	+५
जीन्द	+५	+६	+५	+४	+३	+१	०	-१	-१	+१	+२	+४
जैसलमेर	+३१	+३२	+३१	+२८	+२५	+२१	+१७	+१५	+१६	+२०	+२३	+२७
जोधपुर	+२३	+२५	+२४	+२०	+१६	+११	+७	+४	+५	+९	+१४	+१८
झांसी	+३	+५	+४	०	-६	-११	-१६	-१९	-१८	-१३	-७	-२
दिल्ली	+३	+३	+३	+१	-१	-३	-५	-६	-६	-४	-२	०
देहरादून	-५	-५	-५	-५	-५	-५	-६	-६	-६	-५	-५	-५
नागपुर	+८	+११	+१०	+२	-७	-१७	-२६	-३१	-३१	-२०	-११	-२
नाभा	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+२	+२	+२	+२	+३	+३

नगर \ लग्न	मेष मि.	वृष मि.	मिथुन मि.	कर्क मि.	सिंह मि.	कन्या मि.	तुला मि.	वृश्चिक मि.	धनु मि.	मकर मि.	कुंभ मि.	मीन मि.
नैनीताल	-८	-७	-८	-९	-१०	-१२	-१३	-१४	-१४	-१२	-११	-९
पटियाला	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+१	+१	+१	+२	+२	+२
पठानकोट	+१	+१	+१	+३	+४	+६	+८	+९	+८	+७	+५	+३
पटना	-२४	-२२	-२३	-२७	-३२	-३८	-४३	-४५	-४४	-३९	-३४	-२९
पुंछ	+४	+३	+४	+७	+१०	+१४	+१८	+२०	+१९	+१५	+१२	+८
प्रयाग	-११	-९	-१०	-१४	-१९	-२४	-२९	-३१	-३१	-२६	-२१	-१६
फरीदकोट	+८	+८	+८	+८	+८	+८	+८	+८	+८	+८	+८	+८
फिरोजपुर	+९	+९	+९	+९	+९	+९	+९	+९	+९	+९	+९	+९
बम्बई	+३६	+४१	+३८	+२९	+१८	+७	-४	-१०	-८	+३	+१४	+२५
बरेली	-६	-६	-६	-८	-१०	-१२	-१४	-१५	-१५	-१३	-११	-९
बंगलौर	+२६	+३३	+३०	+१७	०	-१६	-३२	-४०	-३७	-२२	-६	+११
बुलन्दशहर	०	०	०	-२	-४	-६	-८	-९	-९	-७	-५	-३
भटिण्डा	+८	+८	+८	+८	+८	+८	+७	+७	+७	+८	+८	+८
भरतपुर	+३	+५	+४	+१	-२	-६	-९	-११	-११	-७	-४	०
भुवनेश्वर	-१८	-१४	-१६	-२४	-३४	-४४	-५४	-५८	-५७	-४८	-३८	-२८
भोपाल	+११	+१४	+१२	+६	-१	-८	-१५	-२०	-१८	-११	-४	+४
मद्रास	+१५	+२२	+१९	+६	-११	-२७	-४३	-५१	-४८	-३३	-१७	०
मथुरा	+३	+४	+३	+१	-२	-६	-९	-१०	-१०	-७	-४	०
मण्डी (हि.प्र.)	-२	-३	-३	-२	-१	०	+२	+२	+२	+१	०	-१
मलेरकोटला	+४	+४	+४	+४	+४	+४	+३	+३	+३	+४	+४	+४
मेरठ	-१	०	-१	-२	-३	-५	-६	-७	-७	-५	-४	-२
रोपड़	+१	+१	+१	+१	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+१
रोहतक	+४	+५	+४	+३	+१	०	-२	-३	-३	-१	+१	+२
लखनऊ	-९	-८	-९	-१२	-१५	-१९	-२३	-२५	-२४	-२०	-१७	-१३
लुधियाना	+३	+३	+३	+३	+४	+४	+४	+४	+४	+४	+४	+३
शिमला	-२	-२	-२	-२	-१	-१	-१	-१	-१	-१	-१	-२
श्रीनगर (का.)	+१	०	+१	+४	+७	+११	+१५	+१७	+१६	+१२	+९	+५
सहारनपुर	-१	-१	-१	-२	-२	-३	-४	-४	-४	-३	-३	-२
हरिद्वार	-४	-४	-४	-५	-५	-६	-७	-७	-७	-६	-६	-५
हिसार	+७	+८	+७	+६	+५	+३	+२	+१	+१	+३	+४	+६
हैदराबाद	+१५	+२१	+१८	+८	-५	-१७	-२९	-३५	-३३	-२२	-९	+३
होशियारपुर	+२	+१	+१	+२	+३	+४	+५	+५	+५	+४	+३	+२

प्राचीन पद्धति द्वारा लग्न एवं दशम का साधन

जन्मपत्री एवं वर्षफल आदि की गणित में शुद्ध लग्न का साधन सबसे अधिक महत्वपूर्ण एवं श्रमसाध्य विषय है। इसके लिए ज्योतिषी को स्थानीयकाल का ज्ञान होना चाहिए, नगरों के अक्षांश–रेखांशों की प्रामाणिक सूची भी उसके पास होनी चाहिए, किञ्च भिन्न–भिन्न अक्षांशो की लग्नसारणियां उसके पास होना नितान्त आवश्यक है, क्योंकि किसी स्थान पर लग्न स्पष्ट करने के लिए उस स्थान के अक्षांश की लग्नसारणी का ही प्रयोग होता है। आगे हमने साम्पातिक काल द्वारा लग्न एवं दशम लग्न स्पष्ट करने की नवीन विधि दी है। यह विधि अपेक्षाकृत अधिक सूक्ष्म और सुविधाजनक है। इस विधि में अभीष्ट नगर का सूर्योदय, सूर्योदयात् इष्ट काल, दिनमान और इष्टकालिक सूर्य की ज़रुरत नहीं होती, जबकि प्रीचीन विधि में इनकी ज़रूरत रहती है। यहां हम लग्न एवं दशम साधन की प्राचीन विधि दे रहे हैं।

लग्न साधनविधि

जिस नगर में लग्न स्पष्ट करना है, उस नगर में उस दिन का सूक्ष्म सूर्योदयकाल ज्ञात कीजिए। सूर्योदयकाल से अभीष्ट समय का सूर्योदयात् इष्ट (घ. प.) बना लीजिए और इष्टकालिक सूर्य स्पष्ट कर लीजिए। इस पंचांग में दी गई **"अक्षांशादि सारणी"** से अपने अभीष्ट नगर का अक्षांश ज्ञात कर लीजिए। अभीष्ट नगर के अक्षांश वाली लग्नसारणी द्वारा इस प्रकार लग्न स्पष्ट कीजिए:–

आगे 29, 30, 31 अक्षांशों की तीन लग्नसारणियां दी गई हैं, जो दिल्ली, पंजाब, तथा हरियाणा के लगभग सभी नगरों के लिए पर्याप्त हैं। अपने अभीष्ट नगर के अक्षांश वाली लग्नसारणी में इष्टकालिक स्पष्ट सूर्य की राशि के आगे और अंश के नीचे लिखे घड़ी, पलों को लेकर अलग लिख लीजिए। सारणी में इन घड़ी, पलों के दाईं ओर अगले अंश के नीचे जो घड़ी–पल दिए गए हैं, उनसे इन अलग लिखे गए घड़ी, पलों का अन्तर जानिए। अन्तर के इन पलों को **"सहायक सारणी"** (जो अगले पृष्ठ पर दी गई है) के बाईं ओर पहले कॉलम में देखिए। इसके आगे इस सारणी में जहां स्पष्ट सूर्य की कला–विकलाओं के बराबर या लगभग बराबर कला–विकलाएं लिखी हों, उनके बिल्कुल ऊपर सारणी की पहली लाईन में जो पल लिखे हों, उन्हें लेकर अलग लिखे हुए घड़ी, पलों में जोड दीजिए और उसमें इष्टकाल के घड़ीपल भी जोड़ दीजिए। इसे हम **"अभीष्ट घड़ी–पल"** कहेंगे। "अभीष्ट घड़ी–पल" यदि 60 घड़ी से अधिक हों तो उनमें से 60 घड़ी घटाकर, शेष ग्रहण करना चाहिए। "अभीष्ट घड़ी– पलों" के बराबर (बराबर न मिलें तो उनसे कुछ कम) घड़ी, पल लग्नसारणी में ढूंढिये, जिन्हें "सारणीस्थ घड़ी–पल" कहा जाएगा। "सारणीस्थ घड़ी–पलों" के बाईं ओर लग्नसारणी के पहले कॉलम में लिखी राशि और सबसे ऊपर लिखे अंशों को अलग लिख लीजिए। "सारणीस्थ घड़ी–पलों" के दाईं ओर सारणी के अगले अंश के नीचे दिए गए घड़ी–पलों का "सारणीस्थ घड़ी–पलों" से अन्तर कीजिए। इसे "सारणीस्थ अन्तर" कहेंगे। "सारणीस्थ घड़ी–पलों" और "अभीष्ट घड़ी–पलों" का भी अन्तर कीजिए। अन्तर के ये पल "सहायक सारणी" के बिल्कुल ऊपर वाली लाईन में जहां लिखे हैं, उसके नीचे "सारणीस्थ अन्तर" के बराबर पलों के आगे जो कला– विकला मिलें, उन्हें अलग लिखे राशि, अंशों में जोड़ दें। अब इसमें अगले पृष्ठ पर दी गई "अयनांश संस्कार सारणी" से अपने संवत् के आगे दी गई कलाओं को लेकर चिन्ह के अनुसार जोड़ने या घटाने पर निरयण लग्न स्पष्ट हो जाएगा।

उदाहरण– मान लीजिए– वि. सं. 2029 के वैशाख प्रविष्टे 3 को 58 घ. 45 प. इष्ट पर शिमला (हि.प्र.) में लग्न स्पष्ट करना है। इस समय स्पष्ट सूर्य 0 रा., 2 अंश 37 क. 47 वि. है। शिमला के अक्षांश 31 अंश 6 क. (उत्तर) हैं, अतः 31 अक्षांश वाली लग्नसारणी में स्पष्ट सूर्य की 0 (मेष) राशि के आगे 2 अंश के नीचे 2 घ. 55 प. हैं, इन्हें अलग लिखा। सारणी में 2 घ. 55 प. के दाईं ओर 3 अंश के नीचे 3 घ. 2 प. लिखे हैं। इनका 2 घ. 55 प. से अन्तर 7 पल है। "सहायक सारणी" के बाईं ओर पहले कॉलम में लिखे हुए 7 पल के आगे वाली पंक्ति में स्पष्ट सूर्य की 37 क. 47 वि. नहीं मिलीं। अतः सारणी में इनके लगभग बराबर 34 क. 17 वि. देखें, जिनके बिल्कुल ऊपर 4 पल लिखे हैं। इन्हें अलग लिखे 2 घ. 55 पल में जोड़ा और इष्टकाल के घ. प. भी इसमें जोड़े तो 61 घ. 44 प. (60 घ. घटाने पर 1 घ. 44 प.) 'अभीष्ट घड़ी–पल' हुए। लग्नसारणी में 'अभीष्ट घड़ी–पल' 1 घ. 44 प. नहीं हैं, अतः इससे कुछ कम 1 घ. 40 प. सारणी में देखें, जो "सारणीस्थ घड़ी पल" हैं। इनके बाईं ओर सारणी के पहले कॉलम में 11 राशि और बिल्कुल ऊपर की लाईन में 21 अंश लिखे हैं। इन 11 रा. 21 अं. को अलग लिखा। लग्न सारणी में "सारणीस्थ घड़ी–पलों" (1 घ. 40 प.) के दाईं ओर 22 अंश के नीचे 1 घ. 46 प. का 1 घ. 40 प. से अन्तर 6 पल 'सारणीस्थ अन्तर' है। "अभीष्ट घड़ी–पल" (1 घ. 44 प.) और सारणीस्थ घड़ी–पल (1 घ. 40 प.) का अन्तर 4 पल है। 'सहायक सारणी' की ऊपर वाली लाईन में लिखे गए 4 पल के नीचे सारणीस्थ अन्तर के बराबर 6 पल के आगे 40क. 00वि. लिखा है। इन्हें 11रा. 21 अं. में जोड़ने पर 11 रा. और 21अं. 40क. 00 वि. हुआ। "अयनांश संस्कार सारणी" में वि. सं. 2029 के आगे +1 कला लिखा है। इसे चिन्हानुसार 11 रा. 21 अं. 40 क. 0 वि. में जोडने पर 11 रा. 21 अं. 41 क. 00 वि. निरयण लग्न स्पष्ट हुआ।

दशम लग्नसाधन

आगे साम्पातिक काल द्वारा दशम लग्न साधन की सरल पद्धति दी है, जिससे अभीष्ट स्थल का सूर्योदय, दिनमान तथा तात्कालिक सूर्यस्पष्ट जानने की अवश्यकता नहीं होती है। प्राचीन पद्धति से, जिसका निर्देश यहां किया जा रहा है, इन सब की आवश्यकता रहती है।

सारणी (अक्षांश २९° उत्तर) (पलभा ६।३९।६)

दिल्ली, मेरठ, रोहतक, हिसार, जींद, नैनीताल, मुरादाबाद आदि के लिए।

अंश→	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
मेष घ.	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६
० प.	४८	५५	२	९	१६	२३	३०	३८	४६	५४	२	११	१९	२७	३५	४४	५२	०	८	१७	२५	३३	४२	५०	५८	६	१५	२३	३१	३९	४८
वृष घ.	६	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११
१ प.	४८	५६	४	१२	२१	२९	३७	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७
मि. घ.	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७
२ प.	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४८	५९	१०	२२	३३	४५	५६	८	१९	३१	४२	५४	५	१७	२८	४०	५१	२	१४	२५	३७	४८	०	११
क. घ.	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२३
३ प.	११	२३	३४	४६	५७	९	२०	३२	४३	५५	७	१८	३०	४२	५३	५	१७	२८	४०	५२	३	१५	२७	३८	५०	२	१३	२५	३७	४८	०
सिं. घ.	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
४ प.	०	१२	२३	३५	४७	५८	१०	२२	३३	४५	५६	७	१९	३०	४१	५३	४	१६	२७	३८	५०	१	१३	२४	३५	४७	५८	१०	२१	३२	४४
क. घ.	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४
५ प.	४४	५५	७	१८	२९	४१	५२	४	१५	२६	३८	४९	१	१२	२३	३५	४६	५८	९	२०	३२	४३	५५	६	१७	२९	४०	५२	३	१४	२६
तु. घ.	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०
६ प.	२६	३७	४९	०	११	२३	३४	४६	५७	९	२१	३२	४४	५६	७	१९	३१	४२	५४	६	१७	२९	४१	५२	४	१६	२७	३९	५१	२	१४
वृ. घ.	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४५
७ प.	१४	२६	३७	४९	१	१२	२४	३६	४७	५८	१०	२१	३३	४४	५६	७	१९	३०	४२	५३	५	१६	२८	३९	५०	२	१३	२५	३६	४८	५९
धनु घ.	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१
८ प.	५९	११	२२	३४	४५	५७	८	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११
म. घ.	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५
९ प.	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२२	३०	३८	४६	५५	३	११	१९	२८	३६	४४	५२	१	९	१७	२६	३४	४२	५०	५९	७	१५	२३	३२
कु. घ.	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९
१० प.	३२	४०	४८	५६	५	१३	२१	३०	३७	४४	५१	५८	५	१२	१९	२७	३४	४१	४८	५५	२	९	१७	२४	३१	३८	४५	५२	५९	६	१४
मी. घ.	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२
११ प.	१४	२१	२८	३५	४२	४९	५६	४	११	१८	२५	३२	३९	४६	५३	१	८	१५	२२	२९	३६	४३	५१	५८	५	१२	१९	२६	३३	४०	४८

लग्न सारणी ३०° उत्तर (पलभा ६।५५।४२)

अम्बाला, करनाल, कुरुक्षेत्र, देहरादून, नाभा, पटियाला, भटिण्डा, जैसलमेर, अल्मोड़ा, सहारनपुर और हरिद्वार आदि के लिए

अंश→	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
मेष घ.	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६
प.	४४	५१	५८	५	१२	१९	२६	३२	४१	४९	५७	५	१३	२१	२९	३८	४६	५४	२	१०	१८	२६	३४	४३	५१	५९	७	१५	२३	३१	४०
वृष घ.	६	६	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११
१ प.	४०	४८	५६	४	१२	२०	२८	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६
मि. घ.	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७
२ प.	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४८	०	११	२३	३४	४६	५७	९	२०	३२	४३	५५	६	१८	२९	४१	५३	४	१६	२७	३९	५०	२
क. घ.	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२
३ प.	२	१३	२५	३६	४८	५९	११	२२	३४	४६	५८	१०	२१	३३	४५	५७	९	२०	३२	४४	५६	८	१९	३१	४३	५५	७	१८	३०	४२	५४
सिं. घ.	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
४ प.	५४	६	१७	२९	४१	५३	५	१६	२८	४०	५१	३	१४	२६	३७	४९	१	१२	२४	३५	४७	५८	१०	२२	३३	४५	५६	८	१९	३१	४३
क. घ.	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४
५ प.	४३	५४	६	१७	२९	४०	५२	३	१५	२७	३८	५०	१	१३	२४	३६	४८	५९	११	२२	३४	४५	५७	९	२०	३२	४३	५५	६	१८	३०
तु. घ.	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०
६ प.	३०	४१	५३	४	१६	२७	३९	५०	२	१४	२६	३८	४९	१	१३	२५	३७	४८	०	१२	२४	३६	४७	५९	११	२३	३५	४६	५८	१०	२२
वृ. घ.	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४५	४६
७ प.	२२	३४	४५	५७	९	२१	३३	४४	५६	८	१९	३१	४३	५४	५	१७	२८	४०	५१	३	१४	२६	३७	४९	१	१३	२४	३५	४७	५८	१०
धनु घ.	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१
८ प.	१०	२१	३३	४४	५६	७	१९	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०
म. घ.	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५
९ प.	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	३९	४७	५५	३	११	१९	२७	३६	४४	५२	०	८	१६	२४	३२	४१	४९	५७	५	१३	२१	२९	३८
कु. घ.	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९	५९
१० प.	३८	४६	५४	२	१०	१८	२६	३४	४१	४८	५५	२	९	१६	२३	३०	३७	४४	५१	५८	५	१२	१९	२६	३३	४०	४७	५४	१	८	१५
मी. घ.	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	९	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२
११ प.	१५	२२	२९	३६	४३	५०	५७	३	१०	१७	२४	३१	३८	४५	५२	५९	३	१३	२०	२७	३४	४१	४८	५५	२	९	१६	२३	३०	३७	४४

लग्न सारणी (अक्षांश ३१ उत्तर) (पलभा ७।१२।३७)

कपूरथला, चण्डीगढ़, जालंधर, फरीदकोट, फिरोजपुर, रोपड़, लुधियाना, शिमला आदि के लिए

अंश →	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
मेष घ	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६
० प	४१	४८	५५	२	९	१६	२३	३०	३८	४६	५४	२	१०	१८	२६	३४	४२	५०	५८	६	१४	२२	३०	३८	४७	५५	३	११	१९	२७	[illegible]
वृष घ	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११
१ प	३५	४३	५१	५९	७	१५	२३	३१	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११	[illegible]
मि. घ	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६
२ प	२१	३१	४१	५१	१	१०	२०	३०	४२	५४	५	१७	२८	४०	५१	३	१५	२६	३८	४९	१	१३	२४	३५	४७	५९	१०	२२	३३	४५	[illegible]
क. घ	१६	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	[illegible]
३ प	५६	८	२०	३१	४३	५४	६	१७	२९	४१	५३	५	१७	२९	४०	५२	४	१६	२८	४०	५२	४	१५	२७	३९	५१	३	१५	२७	३८	[illegible]
सिं. घ	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	[illegible]
४ प	५०	२	१४	२६	३८	५०	२	१३	२५	३७	४८	०	१२	२३	३५	४७	५८	१०	२२	३३	४५	५७	८	२०	३२	४३	५५	७	१८	३०	[illegible]
क. घ	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	[illegible]
५ प	४२	५३	५	१७	२८	४०	५२	३	१५	२७	३८	५०	२	१३	२५	३७	४८	०	१२	२३	३५	४७	५८	१०	२२	३३	४५	५७	८	२०	[illegible]
तु. घ	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०	४०
६ प	३२	४३	५५	७	१८	३०	४२	५३	५	१७	२९	४१	५३	५	१६	२८	४०	५२	४	१६	२८	४०	५१	३	१५	२७	३९	५१	३	[illegible]	[illegible]
वृ. घ	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४६	[illegible]
७ प	२६	३८	५०	२	१४	२६	३८	४९	१	१३	२४	३६	४७	५९	१०	२२	३४	४५	५७	८	२०	३१	४३	५४	६	१८	२९	४१	५२	४	[illegible]
धनु घ	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१
८ प	१५	२७	३९	५०	२	१३	२५	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	[illegible]
म. घ	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५	[illegible]
९ प	२६	३६	४६	५६	६	१५	२५	३५	४४	५२	०	८	१६	२४	३२	४०	४८	५६	४	१२	२०	२८	३६	४४	५३	१	९	१७	२५	[illegible]	[illegible]
कु. घ	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९	[illegible]
१० प	४१	४९	५७	५	१३	२१	२९	३७	४४	५१	५८	५	१२	१९	२५	३२	३९	४६	५३	०	७	१४	२०	२७	३४	४१	४८	५५	२	८	[illegible]
मीं. घ	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२
११ प	१५	२२	२९	३६	४३	५०	५७	३	१०	१७	२४	३१	३८	४५	५१	५८	५	१२	१९	२६	३३	४०	४६	५३	०	७	१४	२१	२८	[illegible]	[illegible]

दशम लग्न सारणी (सर्वत्र उपयोगी)

अंश →	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
मेष घ	३	३	३	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८
० प	३८	४७	५६	६	१५	२४	३३	४३	५३	३	१३	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	[illegible]
वृष घ	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	[illegible]	[illegible]
१ प	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	३	१४	२५	३५	४६	५७	८	१९	२९	४०	५१	२	१२	२३	३४	४५	५५	६	१७	२८	[illegible]	[illegible]
मि. घ	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	[illegible]	[illegible]
२ प	४९	०	११	२२	३२	४३	५४	५	१५	२६	३७	४८	५८	९	२०	३१	४२	५२	३	१४	२५	३५	४६	५७	८	१८	२९	४०	५१	१	[illegible]
क. घ	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२४	[illegible]
३ प	१२	२३	३४	४५	५५	६	१७	२८	३८	४८	५८	७	१७	२७	३६	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	[illegible]
सिं. घ	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८	२८	२८	[illegible]
४ प	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३६	४५	५४	४	१३	२२	३१	४०	५०	५९	९	१८	२७	३६	४६	५५	४	१३	२३	३२	४१	५०	०
क. घ	२९	२९	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	[illegible]
५ प	०	९	१८	२८	३७	४६	५५	५	१४	२३	३२	४२	५१	०	९	१९	२८	३७	४७	५६	५	१४	२४	३३	४२	५१	१	१०	१९	२८	३८
तु. घ	३३	३३	३३	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	[illegible]
६ प	३८	४७	५६	६	१५	२४	३३	४३	५३	३	१३	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	[illegible]
वृ. घ	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	[illegible]
७ प	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	३	१४	२४	३५	४६	५७	८	१९	२९	४०	५१	२	१२	२३	३४	४५	५५	६	१७	२८	३८	[illegible]
धनु घ	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४९	[illegible]
८ प	४९	०	११	२२	३२	४३	५४	५	१५	२६	३७	४८	५८	९	२०	३१	४२	५२	३	१४	२५	३५	४६	५७	८	१८	२९	४०	५१	१	[illegible]
म. घ	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	[illegible]
९ प	१२	२३	३४	४५	५५	६	१७	२८	३८	४८	५८	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	[illegible]
कु. घ	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	[illegible]
१० प	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३६	४५	५५	४	१३	२२	३१	४१	५०	५९	९	१८	२७	३६	४६	५५	४	१३	२३	३२	४१	५०	०
मीं. घ	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	३	३	३	३	३
११ प	०	९	१८	२८	३७	४६	५५	५	१४	२३	३२	४२	५१	०	९	१९	२८	३७	४७	५६	५	१४	२४	३३	४२	५१	१	१०	१९	२८	[illegible]

दशमलग्न साधनविधि

इष्टकाल के घ. प. में से दिनार्ध (अभीष्ट नगर के दिनमान का आधा) घटाएं। यदि दिनार्ध से इष्ट कम हो तो इष्ट में ६० घड़ी जोड़कर दिनार्ध घटाएं, जो शेष बचे वह नतकाल होगा। नतकाल के घ. प. को इष्ट के घ. प. समझकर तात्कालिक स्पष्ट सूर्य द्वारा दशम लग्नसारणी से ठीक उसी तरह दशम लग्न स्पष्ट कीजिए जैसे कि ऊपर लग्नसारणी से लग्न स्पष्ट किया गया है। दशम लग्नसारणी सभी नगरों के लिए एक ही होती है।

दशमलग्न साधन का उदाहरणः— वि. सं. २०२६ के वैशाख प्रविष्टे ३ को शिमला में ५८घ. ४५ प. इष्ट पर दशमलग्न स्पष्ट करना है। इस समय स्पष्ट सूर्य ० रा. २ अं. ३७ क. ४७ वि. है। इस दिन शिमला में दिनमान ३१ घ. ५९ प. है, अतः दिनार्ध १६ घ. ० प. हुआ। इष्ट काल ५८ घ. ४५ प. में से दिनार्ध घटाने पर ४२ घ. ४५ प. नतकाल हुआ, जो दशमसाधन के लिए इष्टकाल है। दशमलग्न सारणी में स्पष्ट सूर्य की ० राशि के आगे २ अंश के नीचे ३ घ. ५६ प. मिला। इसे पृथक् लिखा। सारणी में ३ घ. ५६ प. के दाईं ओर (३ अं. के नीचे) ४ घ. ०६ प. लिखा है। ३।५६ और ४।६ का अन्तर १० पल है। सहायक सारिणी में १० पल के आगे स्पष्ट सूर्य की ३७ क. ४७ वि. के लगभग बराबर ३६ क. ०० वि. है। इसके ऊपर सारिणी में ६ पल लिखा है। इन ६ पलों को अलग लिखे ३ घ. ५६ प. में जोड़कर इसमें नतकाल जोड़ा तो ४६ घ. ४७ प. 'अभीष्ट घड़ी–पल' हुए। "दशम लग्नसारणी" में इन "अभीष्ट घड़ी–पलों" से कुछ कम घ. प. ४६।४२ 'सारणीस्थ घड़ी पल' धनु (८) राशि के आगे १६ अंश के नीचे लिखे हैं। अतः ८ रा. १६ अं. को अलग लिखा। सारणी में ४६।४२ के दाईं ओर (१७ अं. के नीचे) लिखे ४६।५२ का ४६।४२ से अन्तर १० पल का "सारणीस्थ अन्तर" हुआ। 'सारणीस्थ घड़ी–पल' ४६।४२ और अभीष्ट घड़ीपल ४६।४७ का अन्तर ५ पल है। अब 'सहायक सारणी' में १० पल के आगे ५ पल के नीचे ३० क. ०० वि. मिली। इन्हें अलग लिखे ८ रा. १६ अं. में जोड़ने पर ८ रा.१६ अं. में जोड़ने पर ८ रा. १६ अं. ३० क. ० वि. हुई। इसमें "अयनांश संस्कार सारणी" में वि. सं. २०२६ के आगे दिया गया अयनांश संस्कार + १क. चिह्नानुसार जोड़ने पर ८ रा. १६ अं. ३१ क. ०० वि. निरयण दशमलग्न स्पष्ट हुआ।

सहायक सारणी

पल	१		२		३		४		५		६		७		८		९		१०		११		१२		१३	
→ ↓	क.	वि.	क.	वि.	क.	वि.	क.	वि.	क.	वि.	क.	वि.	क.	वि.	क.	वि.	क.	वि.	क.	वि.	क.	वि.	क.	वि.	क.	वि.
६	१०	०	२०	०	३०	०	४०	०	५०	०	६०	०														
७	८	३४	१७	९	२५	४३	३४	१७	४२	५१	५१	२६	६०	०												
८	७	३०	१५	०	२२	३०	३०	०	३७	३०	४५	०	५२	३०	६०	०										
९	६	४०	१३	२०	२०	०	२६	४०	३३	२०	४०	०	४६	४०	५३	२०	६०	०								
१०	६	०	१२	०	१८	०	२४	०	३०	०	३६	०	४२	०	४८	०	५४	०	६०	०						
११	५	२७	१०	५५	१६	२२	२१	४९	२७	१६	३२	४४	३८	११	४३	३८	४९	५	५४	३३	६०	०				
१२	५	०	१०	०	१५	०	२०	०	२५	०	३०	०	३५	०	४०	०	४५	०	५०	०	५५	०	६०	०		
१३	४	३७	९	१४	१३	५१	१८	२८	२३	५	२७	४२	३२	१९	३६	५६	४१	३३	४६	१०	५०	४७	५५	२३	६०	०

अयनांश संस्कार सारणी

विक्रम संवत्	संस्कार कला	विक्रम संवत्	संस्कार कला	विक्रम संवत्	संस्कार कला	विक्रम संवत्	संस्कार कला	विक्रम संवत्	संस्कार कला	विक्रम संवत्	संस्कार कला	विक्रम संवत्	संस्कार कला
२०२३	+ ७	२०३१	०	२०३९	− ७	२०४७	− १३	२०५५	− २०	२०६३	−२६	२०७१	−३३
२०२४	+ ६	२०३२	− १	२०४०	− ८	२०४८	− १४	२०५६	− २१	२०६४	−२७	२०७२	−३४
२०२५	+ ५	२०३३	− २	२०४१	− ९	२०४९	− १५	२०५७	− २२	२०६५	−२८	२०७३	−३५
२०२६	+ ४	२०३४	− ३	२०४२	− ९	२०५०	− १६	२०५८	−२२	२०६६	−२९	२०७४	−३६
२०२७	+ ३	२०३५	− ४	२०४३	−१०	२०५१	− १७	२०५९	−२३	२०६७	−३०	२०७५	−३६
२०२८	+ २	२०३६	− ४	२०४४	−११	२०५२	− १८	२०६०	−२४	२०६८	−३१	२०७६	−३७
२०२९	+ १	२०३७	− ५	२०४५	−१२	२०५३	− १८	२०६१	−२५	२०६९	−३१	२०७७	−३८
२०३०	+ १	२०३८	− ६	२०४६	− १३	२०५४	− १९	२०६२	−२६	२०७०	−३२	२०७८	−३९

सूक्ष्म लग्न एवं दशमलग्न स्पष्ट करने की नवीन सरल विधि

यहां हम सूक्ष्म लग्न एवं दशमलग्न स्पष्ट करने की एक नवीन सरल विधी दे रहे है । स्पष्ट सूर्य द्वारा लग्न स्पस्ट करने में अधिक परिश्रम होता है, इसलिए इस विषय में पाश्चात्य ज्योतिषियों ने साम्पातिककाल' की पद्धति को अपनाया है । यहां हम "साम्पातिककाल क्या है"- इस विषय का कुछ सैद्धान्तिक- विवेचन न करते हुए, इससे लग्न स्पष्ट-करने की सर्व- साधारणोपयोगी विधि प्रस्तुत कर रहे हैं ।

विधि:- सां. का. (साम्पतिककाल)से लग्न स्पष्ट करने के लिए सर्वप्रथम नीचे लिखे उपकरण (चीजें), जो इस पंचांग में दिए गए कोष्ठकों (सारणियों)से बिना किसी परिश्रम के तैयार किए जा सकते है, तैयार करें

(१) अभीष्ट नगर के अक्षांश (उत्तर या दक्षिण)
(२) अभीष्ट नगर के रेखांश (पूर्व या पश्चिम)
(३) अभीष्ट नगर का स्टैण्डर्ड अन्तर(+या-)

ये तीनों उपकरण 'अक्षांशादि सारणी 'से उठाइये।

विशेष- यदि **"अक्षांशादि सारणी "** में अभीष्ट नगर न मिले तो उसके निकटतम किसी अन्य नगर के अक्षांशादि प्रयोग में लाए जा सकते है ।

ध्यान रहे- भारत के सभी नगरों के अक्षांश उत्तर और रेखांश पूर्व ही है ।

(४) अभीष्ट नगर का स्थानीयमध्यमकाल- जिस समय लग्न स्पष्ट करना हो उस समय के स्वदेशीय स्टैण्डर्ड - टाईम में अभीष्ट नगर (जहां का लग्न स्पष्ट करना हो, वहां) के स्टैण्डर्ड - अन्तर के मिनटादि(या घण्टादि) को चिन्हानुसार जोड़ने या घटाने से अभीष्ट नगर का **"स्थानीयमध्यमकाल"** बन जाता है + यह चिह्न जोड़ने की एवं- यह चिह्न घटाने की प्रक्रिया को बतलाता है ।

जैसे- चण्डीगढ में दोपहर के १२घं. ५७ मि. (भा. स्टैं टा.) पर स्थानीयमध्यकाल जानने के लिए इस (भा. स्टैं टा.)में से चण्डीगढ का स्टैण्डर्ड अन्तर -२२ मिनट ३२ सेकण्ड चिन्हानुसार घटाया, तो १२ घं. ३४ मि. २८ सें. स्थानीयमध्यमकाल बना।

१सितं.१९४२ ई. से १५ अक्तू १९४५ ई. तक भारत में युद्ध के कारण घड़ियां एक घण्टा आगे की गई थी । अतः इन दिनों में घड़ियों द्वारा जाने गए टाईम में से १ घण्टा घटा कर उसे भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम समझना चाहिए।

जैसे- सन्१९४४ की २० अग. को काई बच्चा भारत में युद्ध के समयानुसार दिन में १२ बज कर ४५ मि. पर पैदा हुआ । इसका जन्मपत्र बनाने के लिए हमें इस बच्चे का जन्म काल भा. स्टै.टा. के अनुसार ११ घं ४५ मि. मानना होगा ।

(५) अभीष्ट तारीख का अयनांश - आगे दो [नं.(१) और नं.(२)]अयनांशसारणियां दी गई है । अयनांशसारणी नं.(१) में से अभीष्ट सन् के आगे लिखाअंशादि अयनांश लें, और अयनांशसारणी नं. (२) में से अभीष्ट मास की अभीष्ट तारीख का विकलादि फल लेकर उसमें जोड़ दें; - यह अभीष्ट तारीख का अयनांश होगा ।

जैसे - १५ जुलाई १९६९ ई. को अयनांश जानने के लिए अयनांशसारणी नं.(१) में से सन् १९६९ ई. के आगे लिखा अयनांश २३अं.२५ क २६ वि. प्राप्त किया । इसमें अयनांशसारणी नं.(२)से प्राप्त की गई १५ जुलाई की २७ वि. जोड़ने पर २३ अं.२५क. ५६ वि. हमारा अभीष्ट अयनांश हुआ ।

(६) इष्टकालिक साम्पातिककाल - आगे साम्पातिककाल के चार कोष्ठक दिए गये है । इनके आधार पर इष्टकालिक साम्पातिककाल इस प्रकार सरलता से बनाया जा सकता है-

सां. का. कोष्ठक नं. (१) में से अभीष्ट सन् का सां. का. उठाएं। उसमें साम्पातिक काल कोष्ठक नं.(२)से अभीष्टमास की अभीष्ट तारीख का (लीप ईयर हो तो केवल फरवरी के बाद के महीनों में अभीष्ट तारीख की जगह उससे एक आगे की तारीख का) सां. का. लेकर जोड़ें । इसमें सां. का. कोष्ठक नं.(३)से अभीष्ट नगर के रेखांशों द्वारा सैकण्डात्मक संस्कार उठा कर चिन्हानुसार जोड़ें या घटाएं । इस प्रकार मिले सां. का के घं. मि. में अभीष्ट स्थानीयमध्यमकाल(जिसका साधन पहले बताया जा चुका है) के घण्टा- मिनटादि जोड़ें और फिर इस योगफल में स्थानीयमध्यमकाल के घण्टा- मिनटों द्वारा सां. का. कोष्ठक नं.(४)से प्राप्त किए गए मिनटादि जोड़ देने से इष्टसमय का घण्टादि सां. का बन जाएगा । इस प्रकार बना सां. का. यदि २४ घं. से अधिक हो तो उसमें से २४ घटा कर शेष ही ग्रहण करना चाहिए ।

साम्पातिककाल साधन का उदाहरण - यहां हम १५ जुलाई १९६९ को भा. स्टै.टा. के अनुसार प्रातः १०घं.४५मि. पर चम्बा (हि. प्र.)में सां. का. स्पष्ट करेंगें । अक्षांशादि सारणी में चम्बा के अक्षांश ३२ अं. २९ क. (उत्तर), रेखांश ७६ अं. १०क.(पूर्व)एंव स्टैं. अन्तर - २५ मि. २० से. है । स्टैण्डर्ड अन्तर ऋण चिह्न वाला है, अतः इसे १० घण्टे४५ मि. में से घटाने पर १० घं. १९ मि. ४० से. चम्बा का स्थानीयमध्यमकाल हुआ । सां. का . कोष्ठक नं. (१)से सन् १९६९ ई. का सां. का. (६घं.४१ मि. २ से.) लिया । इसमें कोष्ठक नं.(२)सें लिया गया १५ जुला. का सां का. (१२घं. ४८ मि. ४९ से.)जोड़ा तो १९ घं.२९ मि. ५१ सै. हुआ । चम्बा के रेखांश ७६अं.१० क. के लिए कोष्ठक नं.(३)वाला संस्कार तो० है। अब १९घं. २९ मि. ५१सैं. चम्बा का स्थानीयमध्यमकाल १०घं.१९मि ४० सै. जोडा तो २९घं. ४९मि. ३१ सै. हुए। इसमें कोष्ठक न. (४)से स्थानीयमध्यमकाल के १०घं. २० मि. उठाए गए १ मि. ४२सै. जोड़ने पर २९ घं. ५१ मि. १३ से. हुए । क्योंकि यहां घण्टे२४से अधिक हैं अतः२४ घं. घटाए तो ५घं. ५१मि. १३से. अभीष्ट साम्पातिककाल हुआ ।

साम्पातिककाल बनाते समय नीचे लिखी इन बातों को भी ध्यान में रखें:-

(१)यदि धन (+)चिह्न वाले स्टैण्डर्डअन्तर (स्टैं. अं.)के मिनटों को स्टैण्डर्ड टाईम में जोड़ने पर स्थानीयमध्यमकाल २४ घं. या इससे ज्यादा हो जाए तब उसमें से २४ घण्टा घटा दें और ऊपर बतलाई विधि से प्राप्त साम्पातिककाल में ४ मि. जोड कर उसे शुद्ध साम्पातिककाल समझें । जैसे - कलकत्ता में २जन. १९७४ ई. को २३ घंटा ५५ मि. (रात के ११ बज कर ५५ मि.)भा. स्टै. टा. पर साम्पातिककाल ज्ञात करना है । कलकत्ता का रेखांश ८८अं. २४ क, (पूर्व)और स्टैं अन्तर +२३ मि. ३६ से. है। स्थानीयमध्यमकाल बनाने के लिए२३ घं. ५५ मि. में २३ मि. ३६ सै. जोड़ने से २४ घं. १८ मि. ३६ से. हुए यह २४ घं. से ज्यादा हो गया है , अतः इसमें से २४ घं. घटाने पर ० घं. १८ मि. ३६ से.

स्थानीयमध्यमकाल हुआ । अब सां. का. बनाने के लिए कोष्टक नं.(१) से १९७४ के आगे लिखे ६ घं. ४० मि. १२ से. में कोष्ठक नं.(२) से लिए गए २ जन. के ० घं. ३ मि. ५७ से. जोड़ने पर ६ घं. ४४ मि. ९ से. हुए। इसमें कोष्ठक नं. (३) से कलकता के रेखांश ८८ से प्राप्त −८ से. चिह्न के अनुसार घटाए, तो ६ घं. ४४ मि. १ से. हुए। इसमें स्थानीयमध्यमकाल जोड़ने पर ७ घं. . २ मि. ३७ से. हुए । इसमें कोष्ठक नं.(४) से स्थानीयमध्यमकाल के ० घं. १९ मि. द्वारा प्राप्त ३ से. जोड़ने पर ७घं. २ मि. ४० से. हुए । क्योंकि स्टैं. टा. में स्टैं. अन्तर के मिनट जोड़ने पर स्थानीयमध्यमकाल २४ घं. से ज्यादा हो गया था । अतः उपरोक्त नियमानुसार इसमें ४ मि. और जोड़ने पर ७ घं. ६ मि. ४० से. हमारा अभीष्ट साम्पातिककाल बना । लग्न और दशम को स्पष्ट करने के लिए इसी सां. का. को प्रयोग में लाइए ।

(२) सां. का. बनाते समय दूसरी बात यह भी ध्यान में रखें कि यदि स्टैं. टा. से ऋण चिह्न वाले स्टैं. अन्तर के मिनट अधिक हों तो स्थानीयमध्यमकाल बनाने के लिए स्टैं. टा. में २४ घंटे जोड कर स्टैं. अन्तर घटाना चाहिए और ऐसी स्थिति में सा.का. कोष्ठक नं. (४)का प्रयोग नहीं करना चाहिए । जैसे- जयपुर में १५ मार्च १९७० को ०घं. १५ मि.(भा. स्टै. टा.) पर साम्पातिककाल ज्ञात करना है । जयपुर के रेखांश ७५ अं. ५२ क. (पूर्व) और स्टैं अं.- २६ मि. ३२ से. है । यहां स्टैं टा. के घं. मि. में से स्टैं. अं. ज्यादा है, अतः स्टै. टा. में २४ घं. जोड़ कर स्टैं अं. घटाने पर २३ घं. ४८ मि. २८ से. स्थानीयमध्यमकाल बना । सां. का. के कोष्ठक नं.(१)से प्राप्त १९७० ई. के ६ घं. ४० मि. ५ से. में कोष्ठक नं. (२) से प्राप्त १५ मार्च के ४ घं. ४७ मि. ४९ से जोड़ने पर ११ घं. २७ मि. ५४ से. हुए । जयपुर के रेखांश ७६ (पूर्व) का कोष्ठक नं. ३ वाला संस्कार लगभग ० है । अब ११ घं. २७ मि. ५४ से. में स्थानीयमध्यमकाल जोड़ा तो ३५ घं. १६ मि. २२ से. हुए । क्योंकि हमारा स्टैं. टा. हमारे नगर के ऋण स्टैं. अं. से कम था अतः यहां साम्पातिककाल कोष्ठक नं.(४)का प्रयोग हम नहीं करेंगे । इसलिए हमारा अभीष्ट साम्पातिककाल ११घं. १६ मि. २२ से. ही हुआ । यहां घंटे २४ से अधिक होने से उसमें से २४ घंटे घटा दिए गए हैं।

(३)जैसाकि हम पहिले भी लिख चुके हैं - लीप इयर (२९ फरवरी वाले साल)में फरवरी के बाद के महीनों की किसी तारीख का सां. का. बनाना हो तो उस तारीख में एक जोड़ कर साम्पातिककाल कोष्ठक नं. (२) को प्रयोग में लाना चाहिए। जैसे -मान लीजिए, १५ मार्च सन् १९४४ को किसी नगर में सां. का. स्पष्ट करना है। साम्पातिककाल कोष्ठक नं. (१) में सन् १९४४ के आगे लिखे ६ घं. ३७ मि. १७ से. मिलें । क्योंकि हमारा सन् लीप इयर है और हमारी तारीख (१५ मार्च)फरवरी के बाद की भी है, इसलिए ''साम्पातिककाल कोष्ठक नं. (२)'' में से हम १५ मार्च की जगह १६ मार्च के घं. मि. सै. (४ घं.५१ मि. ४५ से.)ही लेगें और इन्हें ही ६ घं. ३७मि. १७ से. में जोड़ेंगे । ध्यान रहे- यदि सन् १९४४ की १० फर. को हमें सां. का. स्पष्ट करना हो तो ''साम्पातिककाल कोष्ठक नं.(२)''से १० फर.के ही घं. मि. से. उठाने होगें ।

साम्पातिककाल से लग्नसाधन की विधिः-

उपर दी गई विधि से जाने गए अभीष्ट सां. का. (साम्पातिककाल) के घं. मि. को आगे दी गई लग्नसारणी के बाईं और वाले पहिले कालम में देखें । इसके आगे अभीष्ट नगर के अक्षांश के नीचे जो लग्न की अंश कला लिखी हैं, उन्हें अलग नोट कर लें। क्योंकि सारणी में मां. का. ३०-३० मिनटों के अन्तर पर और लग्नसारणी ३-३ अक्षांशों के अन्तर पर दी हुई है । अतः अधिकतर यहां सम्भव है कि आपको लग्न सारणी में अभीष्ट सां. का. के घं. मिं. न मिले और यह भी अधिकतर सभव है कि आपको लग्नसारणी में अभीष्ट सां का. के घं. मि. न मिलें और यह भी सम्भव है कि अभीष्ट अक्षांश वाली लग्नसारणी भी न मिले । ऐसी स्थिति में सारणी में अभीष्ट सां. का. के समीपतम (अभीष्ट सां. का. से कम)सां. का. के आगे और अपने अभीष्ट अक्षांश के समीपतम(अभीष्ट अक्षांश से कम) अक्षांश वाली लग्नसारणी में लिखीं लग्न की अंश - कलाएं नोट करें - यह ''स्थूलतम लग्न''है । अब ३० मि. में लग्न की गति सारणी से ही ज्ञात कीजिए, (अर्थात् यह ज्ञात कीजिए कि ३०मि. में लग्न कितना आगे बढ़ता है) ३० मि. की लग्नगति की कलाओं को सां. का. के शेष मिनटों से गुणा करके ३० से भाग देने पर कलाएं मिलेंगी । इन्हें ''स्थूलतम लग्न'' में जोड़ देने से ''स्थूललग्न'' बन जाएगा। अब सारणी से ही ३ अक्षांशों की लग्न की गति मालूम करें । ३ अक्षांशों में लग्न घटता है तो यह ''३ अक्षाशों की लग्नगति'' ऋण, अन्यथा धन होगी । अपने अक्षांश की शेष अंश−कलाओं की कलाएं बना कर उन्हें ''३ अक्षांशों की लग्नगति '' की कलाओं से गुणा करके १८० से भाग देने पर कलाएं मिलेंगी । इन्हें ''३ अक्षाशों की लग्नगति'' के धन,ऋण चिह्न के अनुसार स्थूललग्न में जोड़ने या घटाने से सायनलग्न स्पष्ट होगा । इसमें से उस दिन के अयनांश घटा देने पर फलितोपयोगी निरयण लग्न स्पष्ट हो जाएगा।

दशमलग्न स्पष्ट करने की विधि :- लग्नसारणी के दूसरे कालम में दशम (दशमलग्न)दिया गया है । इससे सभी नगरों में दशमलग्न स्पष्ट किया जा सकता है (अर्थात् -दशम स्पष्ट करने के लिए अक्षांशों की जरूरत नहीं होती।) अभीष्ट सां. का. के घं. मि. के आगे सारणी में दशम (दशमलग्न)की अंश-कलाएं उठा लें। यह ''स्थूलदशमलग्न'' है। सां.का. के शेष मिनटों से दशमलग्न की ३० मि. की गति की कलाओं को गुणा करके ३०से भाग देने पर कलाएं मिलेगी। इन्हें ''स्थूलदशमलग्न'' में जोड़ने पर इष्टकालिक सायनदशम होगा । इसमें से उसदिन का अयनांश घटा देने पर निरयण दशमलग्न स्पष्ट हो जाएगा।

लग्नसाधन का उदाहरणः-चम्बा (हि.प्र.) में १५ जुलाई सन् १९६९ को प्रातः १० घं. ४५ मि. (भा. स्टै. टा.)पर लग्न स्पष्ट करना है ।

ऊपर हमने चम्बा में १५ जुलाई १९६९ को प्रातः १० घंटे ४५मि. (भा. स्टै. टा.)पर सां.का. ५ घं. ५१ मि. १३ सै. स्पष्ट किया है । चम्बा के अक्षांश ३२ अं.२९ क. है। लग्नसारणी में अक्षांश ३२ के नीचे सां. का. ५ घं. ३० मि. के आगे लग्न १७३ अं. ३४ क. लिखा है । यह ''स्थूलतम लग्न''है। लग्नसारणी में अक्षांश ३२ के नीचे सां. का. ५ घ. ३० मि. के आगे १७३ अं. ३४ क. और सां. का.६घं. ० मि. के आगे १८० अं.० क. लिखा है । इन दोनों का अन्तर ६अं. २६ क. (=३८६क.) लग्न की ३० मि. की गति है । हमारे अभीष्ट सां. का. ५ घं. ५१ मि. और ५ घं. ३० मि. का अन्तर २१ मि. है । इन २१ मि. (सा.का.के शेष मिनटों) से लग्न की ३० मिनट की गति कलाओं (३८६) को गुणा करके ३० का भाग देने पर २७० क. (= ४ अं. ३० क.) मिलीं। इन्हें '' स्थूलतम लग्न '' में जोड़ने पर १७८ अं. ४ क. ''स्थूल लग्न '' हुआ ।

लग्न सारणी (पूरे भारत के लिए) {भाग १ म}

साम्पातिक काल		सभी स्थलों के लिए		अक्षांश ८°(उ.)		अक्षांश ११°(उ.)		अक्षांश १४°(उ.)		अक्षांश १७°(उ.)		अक्षांश २०°(उ.)	
		दशम		लग्न		लग्न		लग्न		लग्न		लग्न	
घं.	मि.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.
०	०	०	०	९३	१२	९४	३५	९५	४०	९६	५६	९८	१४
०	३०	८	१०	१००	३	१०१	१५	१०२	२७	१०३	४१	१०४	५७
१	०	१६	१७	१०६	५४	१०८	३	१०९	१३	११०	२४	१११	३६
१	३०	२४	१८	११३	४७	११४	५३	११५	५९	११७	६	११८	१४
२	०	३२	११	१२०	४३	१२१	४५	१२२	४७	१२३	५०	१२४	५२
२	३०	३९	५५	१२७	४५	१२८	४३	१२९	४०	१३०	३६	१३१	३३
३	०	४७	२८	१३४	५४	१३५	४५	१३६	३६	१३७	२७	१३८	१८
३	३०	५४	५१	१४२	१०	१४२	५५	१४३	३९	१४४	२२	१४५	६
४	०	६२	५	१४९	३३	१५०	१०	१५०	४६	१५१	२३	१५१	५८
४	३०	६९	१२	१५७	३	१५७	३१	१५८	०	१५८	२७	१५८	५५
५	०	७६	११	१६४	३८	१६४	५८	१६५	१७	१६५	३६	१६५	५४
५	३०	८३	७	१७२	१८	१७२	२८	१७२	३८	१७२	४७	१७२	५७
६	०	९०	०	१८०	०	१८०	०	१८०	०	१८०	०	१८०	०
६	३०	९६	५३	१८७	४२	१८७	३२	१८७	२२	१८७	१३	१८७	३
७	०	१०३	४९	१९५	२२	१९५	२	१९४	४३	१९४	२४	१९४	६
७	३०	११०	४८	२०२	५२	२०२	२९	२०२	०	२०१	३३	२०१	५
८	०	११७	५५	२१०	२७	२०९	५०	२०९	१४	२०८	३७	२०८	२
८	३०	१२५	९	२१७	५०	२१७	५	२१६	२१	२१५	३८	२१४	५४
९	०	१३२	३२	२२५	६	२२४	१५	२२३	२४	२२२	३३	२२१	४२
९	३०	१४०	५	२३२	१५	२३१	१७	२३०	२०	२२९	२४	२२८	२७
१०	०	१४७	४९	२३९	१७	२३८	१५	२३७	१३	२३६	१०	२३५	८
१०	३०	१५५	४२	२४६	१३	२४५	७	२४४	१	२४२	५४	२४१	४६
११	०	१६३	४३	२५३	६	२५१	५७	२५०	४७	२४९	३६	२४८	२४
११	३०	१७१	५०	२५९	५७	२५८	४५	२५७	३३	२५६	१९	२५५	३
१२	०	१८०	०	२६६	४८	२६५	३५	२६४	२०	२६३	४	२६१	४६

साम्पातिक काल		सभी स्थलों के लिए		अक्षांश ८°(उ.)		अक्षांश ११°(उ.)		अक्षांश १४°(उ.)		अक्षांश १७°(उ.)		अक्षांश २०°(उ.)	
		दशम		लग्न		लग्न		लग्न		लग्न		लग्न	
घं.	मि.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.
१२	०	१८०	०	२६६	४८	२६५	३५	२६४	२०	२६३	४	२६१	४६
१२	३०	१८८	१०	२७३	४१	२७२	२७	२७१	११	२६९	५३	२६८	३३
१३	०	१९६	१७	२८०	३१	२७९	२५	२७८	९	२७६	५०	२७५	२१
१३	३०	२०४	२८	२८७	४३	२८६	३०	२८५	१५	२८३	५७	२८२	३५
१४	०	२१२	११	२९४	५७	२९३	४६	२९२	३३	२९१	१६	२८९	५५
१४	३०	२१९	५५	३०२	२१	३०१	१४	३००	४	२९८	५०	२९७	३३
१५	०	२२७	२८	३०९	५८	३०८	५६	३०७	५१	३०६	४२	३०५	२८
१५	३०	२३४	५१	३१७	४९	३१६	५४	३१५	५५	३१४	५३	३१३	४५
१६	०	२४२	५	३२५	५४	३२५	७	३२४	१७	३२३	२३	३२२	२५
१६	३०	२४९	१२	३३४	१२	३३३	३५	३३२	५५	३३२	१२	३३१	२६
१७	०	२५६	११	३४२	४१	३४२	१५	३४१	४८	३४१	१८	३४०	४५
१७	३०	२६३	७	३५१	१८	३५१	५	३५०	५१	३५०	३६	३५०	१९
१८	०	२७०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
१८	३०	२७६	५३	८	४१	८	५५	९	९	९	२४	९	४१
१९	०	२८३	४९	१७	१९	१७	४५	१८	१२	१८	४२	१९	१५
१९	३०	२९०	४८	२५	४८	२६	२५	२७	५	२७	४८	२८	३४
२०	०	२९७	५५	३४	६	३४	५३	३५	४३	३६	३७	३७	३५
२०	३०	३०५	९	४२	११	४३	६	४४	५	४५	७	४६	१४
२१	०	३१२	३२	५०	२	५१	४	५२	९	५३	१८	५४	३२
२१	३०	३२०	५	५७	३९	५८	४६	५९	५६	६१	१०	६२	२८
२२	०	३२७	४९	६५	३	६६	१४	६७	२७	६८	४४	७०	५
२२	३०	३३५	४२	७२	१७	७३	३०	७४	४५	७६	३	७७	२५
२३	०	३४३	४३	७९	२१	८०	३५	८१	५१	८३	१०	८४	३१
२३	३०	३५१	५०	८६	१९	८७	३३	८८	४९	९०	७	९१	२७
२४	०	०	०	९३	१२	९४	२५	९५	४०	९६	५६	९८	१४

अब लग्न सारणी में ३२ अक्षांश और ३५ अक्षांश वाले कालमों में सां.का. ५ घं. ३० मि. के आगे क्रमश: १७३ अं. ३४ क. और १७३ अं. ४४ क. लिखा है। इन दोनों का अन्तर १० क. हुआ। यह लग्न की ''३ अक्षांश की गति'' है। क्योंकि लग्न ३५ अक्षांश में बढ़ रहा है। अत: यह गति धन है। ३२ अक्षांश और चम्बा के अक्षांश ३२ अं. २९ क. का अन्तर २९ क. है। इससे ३ अक्षांश की लग्न की गति कलाओं (१०) को गुणा करके १८० से भाग देने पर लब्धि १ क. मिली। क्योंकि ३ अक्षांशों की लग्न गति धन है अत: इसे ''स्थूल लग्न'' में जोड़ने पर १७८ अं. ५ क. सायन लग्न हुआ। इसमें से इस दिन का अयनांश २३अं. २६क. घटा देने पर १५४ अं. ३९ क. (= ५ रा ४ अं. ३९ क.) निरयणलग्न बन गया।

दशमलग्न साधन का उदाहरण- १५ जुला. १९६९ ई. को प्रात: १० घं. ४५ मि. (भा.स्टै.टा.) पर ही चम्बा हि.प्र. में दशमलग्न स्पष्ट करना है। इस समय चम्बा में सां.का. ५ घं. ५१ मि. है। लग्नसारणी के दूसरे कालम में सा.का. ५ घं. ३० मिनट के आगे दशमलग्न ८३ अं. ७क. है, यह ''स्थूल दशमलग्न'' है। सारणी में सां.का. ५ घं.३०मि. और ६ घं. ० मि. के आगे क्रमश: ८३ अं. ७ क. एवं ९० अं. ० क. है इन दोनों का अन्तर ६ अं. ५३ क. (= ४१३ क.) है, यह ३० मि. की दशमलग्न की गति है। इन कलाओं को सां. का. के शेष मि. (५ घं. ५१ मि.- ५घं. ३० मि.=२१ मि.) से गुणा करके ३० का भाग देने पर २८९ क. (=४अं.४९क.) मिली। इन्हें ''स्थूलदशमलग्न'' में जोड़ने पर ८७ अं. ५६ क. सायन दशमलग्न स्पष्ट हुआ। इसमें से इस दिन का अयनांश २३ अं. २६ क. घटा देने पर ६४ अं.३० क. (=२ रा.४अं. ३०क.) इष्टकालिक निरयण दशम लग्न हुआ।

ध्यान दें- यहां हमने सां.का. के सेकण्ड और अयनांश की विकलाओं को अनावश्यक समझकर छोड़ दिया है। क्योंकि लग्न और दशम में विकलाओं तक की सूक्ष्मता लाने का प्रयास वस्तुत: अर्थहीन है। कला तक की सूक्ष्मता भी लग्न में संभव नहीं है; इस तथ्य का विस्तार पूर्वक स्पष्टीकरण गणित द्वारा ''गणकमार्तण्ड'' में हमने किया है वहाँ पढ़ें।

लग्न सारणी (पूरे भारत के लिए) {भाग २ य}

साम्पातिक काल घं. मि.	सभी स्थलों के लिए दशम अं. क.	अंक्षाश २३° (उ.) लग्न अं. क.	अंक्षाश २६° (उ.) लग्न अं. क.	अंक्षाश २९° (उ.) लग्न अं. क.	अंक्षाश ३२° (उ.) लग्न अं. क.	अंक्षाश ३५° (उ.) लग्न अं. क.
० ०	० ०	९९ ३५	१०० ५९	१०२ २६	१०३ ५७	१०५ ३४
० ३०	८ १०	१०६ १४	१०७ ३४	१०८ ५७	११० २४	१११ ५३
१ ०	१६ १७	११२ ४९	११४ ४	११५ २२	११६ ४३	११८ ७
१ ३०	२४ १८	११९ २२	१२० ३३	१२१ ४५	१२३ ०	१२४ १७
२ ०	३२ ११	१२५ ५६	१२७ ०	१२८ ७	१२९ १७	१३० २५
२ ३०	३९ ५५	१३२ ३१	१३३ २९	१३४ २९	१३५ ३०	१३६ ३२
३ ०	४७ २८	१३९ ३	१४० ००	१४० ५२	१४१ ४५	१४२ ४०
३ ३०	५४ ५१	१४५ ५०	१४६ ३४	१४७ १८	१४८ ४	१४८ ५०
४ ०	६२ ५	१५२ ३४	१५३ १०	१५३ ४७	१५४ २४	१५५ १
४ ३०	६९ १२	१५९ २२	१५९ ५०	१६० १७	१६० ४६	१६१ १४
५ ०	७६ ११	१६६ १३	१६६ ३२	१६६ ५०	१६७ ९	१६७ २८
५ ३०	८३ ७	१७३ ६	१७३ १५	१७३ २५	१७३ ३४	१७३ ४४
६ ०	९० ०	१८० ००	१८० ००	१८० ०	१८० ०	१८० ०
६ ३०	९६ ५३	१८६ ५४	१८६ ४५	१८६ ३५	१८६ २६	१८६ १६
७ ०	१०३ ४९	१९३ ४७	१९३ २८	१९३ १०	१९२ ५१	१९२ ३२
७ ३०	११० ४८	२०० ३८	२०० १०	१९९ ४३	१९९ १४	१९८ ४६
८ ०	११७ ५५	२०७ २६	२०६ ५०	२०६ १३	२०५ ३६	२०४ ५९
८ ३०	१२५ ५९	२१४ १०	२१३ २६	२१२ ४२	२११ ५६	२११ १०
९ ०	१३२ ३२	२२० ५१	२२० ००	२१९ ८	२१८ १५	२१७ २०
९ ३०	१४० ५	२२७ २९	२२६ ३१	२२५ ३१	२२४ ३०	२२३ २८
१० ००	१४७ ४९	२३४ ४	२३३ ०	२३१ ५३	२३० ४५	२२९ ३५
१० ३०	१५५ ४२	२४० ३८	२३९ २७	२३८ १५	२३७ ०	२३५ ४३
११ ०	१६३ ४३	२४७ ११	२४५ ५६	२४४ ३८	२४३ १७	२४१ ५३
११ ३०	१७१ ५०	२५३ ४६	२५२ २६	२५१ ३	२४९ ३६	२४८ ७
१२ ०	१८० ००	२६० २५	२५९ ३	२५७ ३४	२५६ ३	२५४ २६

साम्पातिक काल घं. मि.	सभीस्थलों के लिए दशम अं. क.	अंक्षाश २३° (उ.) लग्न अं. क.	अंक्षाश २६° (उ.) लग्न अं. क.	अंक्षाश २९° (उ.) लग्न अं. क.	अंक्षाश ३२° (उ.) लग्न अं. क.	अंक्षाश ३५° (उ.) लग्न अं. क.
१२ ०	१८० ००	२६० २५	२५९ १	२५७ ३४	२५६ ३	२५४ २६
१२ ३०	१८८ १०	२६७ १०	२६५ ४३	२६४ १२	२६२ ३६	२६० ५४
१३ ०	१९६ १७	२७४ ३	२७२ ३४	२७१ ०	२६९ २१	२६७ ३३
१३ ३०	२०४ १८	२८१ ९	२७९ ३९	२७८ २	२७६ १९	२७४ २९
१४ ०	२१२ ११	२८८ ३०	२८६ ५९	२८५ २२	२८३ ३६	२८१ ४५
१४ ३०	२१९ ५५	२९६ ९	२९४ ४०	२९३ ४	२९१ २०	२८९ २६
१५ ००	२२७ २८	३०४ १०	३०२ ४४	३०१ १२	२९९ २८	२९७ ३८
१५ ३०	२३४ ५१	३१२ ३३	३११ १५	३०९ ४८	३०८ १३	३०६ २५
१६ ०	२४२ ५	३२१ २२	३२० १३	३१८ ५६	३१७ ३०	३१५ ५४
१६ ३०	२४९ १२	३३० ३५	३२९ ३९	३२८ ३६	३२७ २५	३२६ ४
१७ ०	२५६ ११	३४० ९	३३९ ३०	३३८ ४५	३३७ ५४	३३६ ५५
१७ ३०	२६३ ७	३५० ००	३४९ ४०	३४९ १६	३४८ ४९	३४८ १९
१८ ०	२७० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०
१८ ३०	२७६ ५३	१० ०	१४ २०	१० ४४	११ ११	११ ४१
१९ ०	२८३ ४९	१९ ५१	२० ३०	२१ १५	२२ ६	२३ ४
१९ ३०	२९० ४८	२९ २५	३० २१	३१ २४	३२ ३५	३३ ५६
२० ०	२९७ ५५	३८ ३८	३९ ४७	४१ ४	४२ ३०	४४ ६
२० ३०	३०५ ९	४७ २७	४८ ४५	५० १२	५१ ४७	५३ ३५
२१ ०	३१२ ३२	५५ ५०	५७ १६	५८ ४८	६० ३२	६२ २२
२१ ३०	३२० ५	६३ ५१	६५ २०	६६ ५६	६८ ४०	७० ३४
२२ ०	३२७ ४९	७१ ३०	७३ १	७४ ३८	७६ २४	७८ १५
२२ ३०	३३५ ४२	७८ ५१	८० २१	८१ ५८	८३ ४१	८५ ३१
२३ ०	३४३ ४३	८५ ५६	८७ २६	८९ ०	९० ३९	९२ २६
२३ ३०	३५१ ५०	९२ ५०	९४ १७	९५ ४८	९७ २४	९९ ६
२४ ०	००० ०	९९ ३५	१०० ५९	१०२ २६	१०३ ५७	१०५ ३४

साम्पातिककाल कोष्ठक नं. १

सन्	घं. मि. से.	सन्	घं. मि. से.	सन्	घं. मि. से.	सन्	घं. मि. से.	सन्	घं. मि. से.	सन्	घं. मि. से.	सन्	घं. मि. से.	सन्	घं. मि. से.
१९७१	६ ३९ ०७	१९७८	६ ४० १६	१९८५	६ ४१ ३२	१९९२	६ ३८ ४७	१९९९	६ ३९ ५९	२००६	६ ४१ ११	२०१३	६ ४२ २३	२०२०	६ ३९ ३९
१९७२	६ ३८ १०	१९७९	६ ३९ २२	१९८६	६ ४० ३५	१९९३	६ ४१ ४६	२०००	६ ३९ ०२	२००७	६ ४० १४	२०१४	६ ४१ २६	२०२१	६ ४२ ३८
१९७३	६ ४१ १०	१९८०	६ ३८ २४	१९८७	६ ३९ ३८	१९९४	६ ४० ४९	२००१	६ ४२ ०१	२००८	६ ३९ १७	२०१५	६ ४० २९	२०२२	६ ४१ ४०
१९७४	६ ४० १२	१९८१	६ ४१ २३	१९८८	६ ३८ ४०	१९९५	६ ३९ ५२	२००२	६ ४१ ०४	२००९	६ ४२ १६	२०१६	६ ३९ ३१	२०२३	६ ४० ४३
१९७५	६ ३९ १५	१९८२	६ ४० २६	१९८९	६ ४१ ३९	१९९६	६ ३८ ५४	२००३	६ ४० ०७	२०१०	६ ४१ १९	२०१७	६ ४२ ३१	२०२४	६ ३९ ४६
१९७६	६ ३८ १७	१९८३	६ ३९ २९	१९९०	६ ४० ४१	१९९७	६ ४१ ५३	२००४	६ ३९ ०९	२०११	६ ४० २१	२०१८	६ ४१ ३३	२०२५	६ ४२ ४५
१९७७	६ ४१ १६	१९८४	६ ३८ ३२	१९९१	६ ३९ ४४	१९९८	६ ४० ५६	२००५	६ ४२ ०९	२०१२	६ ३९ २४	२०१९	६ ४० ३६	२०२६	६ ४१ ४८

साम्पातिक काल कोष्ठक नं० २

ता.	जनवरी	फरवरी	मार्च	अप्रैल	मई	जून	जुलाई	अगस्त	सितम्बर	अक्तूबर	नवम्बर	दिसम्बर	ता.
↓	घं. मि. से.	घं. मि. से.	घं. मि. से.	घं. मि. से.	घं. मि. से.	घं. मि. से.	घं. मि. से.	घं. मि. से.	घं. मि. से.	घं. मि. से.	घं. मि. से.	घं. मि. से.	↓
१	० ० ०	२ २ १३	३ ५२ ३७	५ ५४ ५१	७ ५३ ७	९ ५५ २१	११ ५३ ३८	१३ ५५ ५०	१५ [illegible] ४	१७ ५६ २१	१९ ५८ ३४	२१ ५६ ५०	१
२	० ३ ५७	२ ६ ९	३ ५६ ३३	५ ५८ ४७	७ ५७ ४	९ ५९ १७	११ ५७ ३४	१३ ५९ ४७	१६ २ ०	१८ ० १७	२० २ ३१	२२ ० ४७	२
३	० ७ ५३	२ १० ६	४ ० ३०	६ २ ४३	८ १ ०	१० ३ १४	१२ १ ३१	१४ ३ ४४	१६ ५ ५७	१८ ४ १४	२० ६ २७	२२ ४ ४३	३
४	० ११ ५०	२ १४ २	४ ४ २६	६ ६ ४०	८ ४ ५७	१० ७ १०	१२ ५ २७	१४ ७ ४०	१६ ९ ५३	१८ ८ १०	२० १० २४	२२ ८ ४०	४
५	० १५ ४६	२ १७ ५९	४ ८ २३	६ १० ३६	८ ८ ५३	१० ११ ७	१२ ९ २४	१४ ११ ३६	१६ १३ ५०	१८ १२ ७	२० १४ २०	२२ १२ ३६	५
६	० १९ ४३	२ २१ ५५	४ १२ १९	६ १४ ३३	८ १२ ५०	१० १५ ३	१२ १३ २१	१४ १५ ३३	१६ १७ ४६	१८ १६ ३	२० १८ १७	२२ १६ ३३	६
७	० २३ ३९	२ २५ ५२	४ १६ १६	६ १८ २९	८ १६ ४६	१० १९ ०	१२ १७ १७	१४ १९ २९	१६ २१ ४३	१८ २० ०	२० २२ १३	२२ २० ३०	७
८	० २७ ३६	२ २९ ४८	४ २० १२	६ २२ २६	८ २० ४३	१० २२ ५६	१२ २१ १४	१४ २३ २६	१६ २५ ४०	१८ २३ ५७	२० २६ १०	२२ २४ २७	८
९	० ३१ ३२	२ ३३ ४५	४ २४ ९	६ २६ २२	८ २४ ३९	१० २६ ५३	१२ २५ १०	१४ २७ २३	१६ २९ ३७	१८ २७ ५४	२० ३० ६	२२ २८ २३	९
१०	० ३५ २९	२ ३७ ४२	४ २८ ५	६ ३० १९	८ २८ ३६	१० ३० ४९	१२ २९ ६	१४ ३१ २०	१६ ३३ ३३	१८ ३१ ५०	२० ३४ ३	२२ ३२ २०	१०
११	० ३९ २५	२ ४१ ३९	४ ३२ २	६ ३४ १६	८ ३२ ३२	१० ३४ ४६	१२ ३३ ३	१४ ३५ १६	१६ ३७ ३०	१८ ३५ ४७	२० ३८ ०	२२ ३६ १६	११
१२	० ४३ २२	२ ४५ ३५	४ ३५ ५९	६ ३८ १३	८ ३६ २९	१० ३८ ४२	१२ ३६ ५९	१४ ३९ १३	१६ ४१ २६	१८ ३९ ४३	२० ४१ ५६	२२ ४० १३	१२
१३	० ४७ १८	२ ४९ ३२	४ ३९ ५६	६ ४२ ९	८ ४० २५	१० ४२ ३९	१२ ४० ५६	१४ ४३ ९	१६ ४५ २३	१८ ४३ ४०	२० ४५ ५२	२२ ४४ ९	१३
१४	० ५१ १५	२ ५३ २८	४ ४३ ५२	६ ४६ ६	८ ४४ ४२	१० ४६ ३५	१२ ४४ ५२	१४ ४७ ६	१६ ४९ १९	१८ ४७ ३७	२० ४९ ४९	२२ ४८ ६	१४
१५	० ५५ १२	२ ५७ २५	४ ४७ ४९	६ ५० २	८ ४८ १८	१० ५० ३२	१२ ४८ ४९	१४ ५१ २	१६ ५३ १६	१८ ५१ ३३	२० ५३ ४५	२२ ५२ २	१५
१६	० ५९ ८	३ १ २१	४ ५१ ४५	६ ५३ ५९	८ ५२ १५	१० ५४ २८	१२ ५२ ४५	१४ ५४ ५९	१६ ५७ १२	१८ ५५ ३०	२० ५७ ४२	२२ ५५ ५९	१६
१७	१ ३ ४	३ ५ १८	४ ५५ ४२	६ ५७ ५५	८ ५६ ११	१० ५८ २५	१२ ५६ ४२	१४ ५८ ५५	१७ १ ९	१८ ५९ २६	२१ १ ३९	२२ ५९ ५६	१७
१८	१ ७ १	३ ९ १४	४ ५९ ३८	७ १ ५२	९ ० ८	११ २ २१	१३ ० ३८	१५ २ ५२	१७ ५ ५	१९ ३ २२	२१ ५ ३६	२३ ३ ५३	१८
१९	१ १० ५७	३ १३ ११	५ ३ ३५	७ ५ ४८	९ ४ ४	११ ६ १८	१३ ४ ३५	१५ ६ ४८	१७ ९ २	१९ ७ १९	२१ ९ ३२	२३ ७ ४९	१९
२०	१ १४ ५४	३ १७ ८	५ ७ ३१	७ ९ ४५	९ ८ १	११ १० १५	१३ ८ ३२	१५ १० ४५	१७ १२ ५८	१९ ११ १५	२१ १३ २९	२३ ११ ४६	२०
२१	१ १८ ५१	३ २१ ५	५ ११ २८	७ १३ ४१	९ ११ ५८	११ १४ ११	१३ १२ २१	१५ १४ ४१	१७ १६ ५५	१९ १५ १२	२१ १७ २५	२३ १५ ४२	२१
२२	१ २२ ४८	३ २५ १	५ १५ २५	७ १७ ३८	९ १५ ५५	११ १८ ८	१३ १६ २५	१५ १८ ३८	१७ २० ५१	१९ १९ ८	२१ २१ २२	२३ १९ ३९	२२
२३	१ २६ ४४	३ २८ ५८	५ १९ २२	७ २१ ३४	९ १९ ५१	११ २२ ५	१३ २० २२	१५ २२ ३४	१७ २४ ४८	१९ २३ ५	२१ २५ १८	२३ २३ ३५	२३
२४	१ ३० ४१	३ ३२ ५४	५ २३ १८	७ २५ ३१	९ २३ ४८	११ २६ १	१३ २४ १८	१५ २६ ३१	१७ २८ ४४	१९ २७ १	२१ २९ १५	२३ २७ ३२	२४
२५	१ ३४ ३७	३ ३६ ५१	५ २७ १५	७ २९ २८	९ २७ ४४	११ २९ ५८	१३ २८ १५	१५ ३० २७	१७ ३२ ४१	१९ ३० ५८	२१ ३३ ११	२३ ३१ २८	२५
२६	१ ३८ ३४	३ ४० ४७	५ ३१ ११	७ ३३ २४	९ ३१ ४१	११ ३३ ५४	१३ ३२ ११	१५ ३४ २४	१७ ३६ ३७	१९ ३४ ५४	२१ ३७ ८	२३ ३५ २५	२६
२७	१ ४२ ३०	३ ४४ ४४	५ ३५ ८	७ ३७ २०	९ ३५ ३७	११ ३७ ५१	१३ ३६ ८	१५ ३८ २०	१७ ४० ३४	१९ ३८ ५१	२१ ४१ ४	२३ ३९ २१	२७
२८	१ ४६ २७	३ ४८ ४०	५ ३९ ५	७ ४१ १७	९ ३९ ३४	११ ४१ ४७	१३ ४० ४	१५ ४२ १७	१७ ४४ ३१	१९ ४२ ४८	२१ ४५ १	२३ ४३ १८	२८
२९	१ ५० २३	३ ५२ ३७	५ ४३ १	७ ४५ १३	९ ४३ ३०	११ ४५ ४४	१३ ४४ १	१५ ४६ १४	१७ ४८ २८	१९ ४६ ४५	२१ ४८ ५७	२३ ४७ १४	२९
३०	१ ५४ २०		५ ४६ ५८	७ ४९ १०	९ ४७ २७	११ ४९ ४१	१३ ४८ ५७	१५ ५० ११	१७ ५२ २४	१९ ५० ४१	२१ ५२ ५४	२३ ५१ ११	३०
३१	१ ५८ १६		५ ५० ५४		९ ५१ २४		१३ ५१ ५४	१५ ५४ ७		१९ ५४ ३८		२३ ५५ ७	३१
												२३ ५९ ३	३२

लीप इयर हो तो केवल फरवरी के बाद के महीनों में अभीष्ट तारीख में एक जोड़ कर कोष्ठक नं० २ को प्रयोग में लाइए ।

साम्पातिक काल कोष्ठक नं० ३

रेखांश	०°	पू.२०°	पू.४०°	पू.६०°	पू.८०°	पू.१००°	पू.१२०°	पू.१४०°	पू.१६०°
संस्कार सेकण्ड	+५०	+३७	+२४	+११	-१	-१५	-२८	-४१	-५४
रेखांश	१८०°	प.१६०°	प.१४०°	प.१२०°	प.१००°	प.८०	प.६०°	प.४०°	प.२०°
संस्कार सेकण्ड	-६७/+१६१	+१५६	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	+८९	+७७	+६२

साम्पातिक काल कोष्ठक नं० ४

मि. / घं.	०	५	१०	१५	२०	२५	३०	३५	४०	४५	५०	५५
	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.
०	० ००	० १	० २	० २	० ३	० ४	० ५	० ६	० ७	० ७	० ८	० ९
१	० १०	० ११	० ११	० १२	० १३	० १४	० १५	० १६	० १६	० १७	० १८	० १९
२	० २०	० २१	० २१	० २२	० २३	० २४	० २५	० २५	० २६	० २७	० २८	० २९
३	० ३०	० ३०	० ३१	० ३२	० ३३	० ३४	० ३४	० ३५	० ३६	० ३७	० ३८	० ३९
४	० ३९	० ४०	० ४१	० ४२	० ४३	० ४४	० ४४	० ४५	० ४६	० ४७	० ४८	० ४८
५	० ४९	० ५०	० ५१	० ५२	० ५३	० ५३	० ५४	० ५५	० ५६	० ५७	० ५७	० ५८
६	० ५९	१ ००	१ १	१ २	१ २	१ ३	१ ४	१ ५	१ ६	१ ७	१ ७	१ ८
७	१ ९	१ १०	१ ११	१ ११	१ १२	१ १३	१ १४	१ १५	१ १६	१ १६	१ १७	१ १८
८	१ १९	१ २०	१ २०	१ २१	१ २२	१ २३	१ २४	१ २५	१ २५	१ २६	१ २७	१ २८
९	१ २९	१ ३०	१ ३०	१ ३१	१ ३२	१ ३३	१ ३४	१ ३४	१ ३५	१ ३६	१ ३७	१ ३८
१०	१ ३९	१ ३९	१ ४०	१ ४१	१ ४२	१ ४३	१ ४३	१ ४४	१ ४५	१ ४६	१ ४७	१ ४८
११	१ ४८	१ ४९	१ ५०	१ ५१	१ ५२	१ ५३	१ ५३	१ ५४	१ ५५	१ ५६	१ ५७	१ ५७
१२	१ ५८	१ ५९	२ ०	२ १	२ २	२ २	२ ३	२ ४	२ ५	२ ६	२ ६	२ ७
१३	२ ८	२ ९	२ १०	२ ११	२ ११	२ १२	२ १३	२ १४	२ १५	२ १६	२ १६	२ १७
१४	२ १८	२ १९	२ २०	२ २०	२ २१	२ २२	२ २३	२ २४	२ २५	२ २५	२ २६	२ २७
१५	२ २८	२ २९	२ २९	२ ३०	२ ३१	२ ३२	२ ३३	२ ३४	२ ३४	२ ३५	२ ३६	२ ३७
१६	२ ३८	२ ३९	२ ३९	२ ४०	२ ४१	२ ४२	२ ४३	२ ४३	२ ४४	२ ४५	२ ४६	२ ४७
१७	२ ४८	२ ४८	२ ४९	२ ५०	२ ५१	२ ५२	२ ५२	२ ५३	२ ५४	२ ५५	२ ५६	२ ५७
१८	२ ५७	२ ५८	२ ५९	३ ०	३ १	३ २	३ २	३ ३	३ ४	३ ५	३ ६	३ ६
१९	३ ७	३ ८	३ ९	३ १०	३ ११	३ ११	३ १२	३ १३	३ १४	३ १५	३ १५	३ १६
२०	३ १७	३ १८	३ १९	३ २०	३ २०	३ २१	३ २२	३ २३	३ २४	३ २५	३ २५	३ २६
२१	३ २७	३ २८	३ २९	३ २९	३ ३०	३ ३१	३ ३२	३ ३३	३ ३४	३ ३४	३ ३५	३ ३६
२२	३ ३७	३ ३८	३ ३८	३ ३९	३ ४०	३ ४१	३ ४२	३ ४३	३ ४३	३ ४४	३ ४५	३ ४६
२३	३ ४७	३ ४८	३ ४८	३ ४९	३ ५०	३ ५१	३ ५२	३ ५२	३ ५३	३ ५४	३ ५५	३ ५६

अयनांश सारणी नं० १

ई. सन्	अयनांश	ई. सन्	अयनांश	ई. सन्	अयनांश
	अं. क. वि.		अं. क. वि.		अं. क. वि.
१९५१	२३ १० २१	१९७५	२३ ३० २८	१९९९	२३ ५० ३४
१९५२	२३ ११ १२	१९७६	२३ ३१ १७	२०००	२३ ५१ २४
१९५३	२३ १२ ०२	१९७७	२३ ३२ ०८	२००१	२३ ५२ १५
१९५४	२३ १२ ५२	१९७८	२३ ३२ ५६	२००२	२३ ५३ ०५
१९५५	२३ १३ ४२	१९७९	२३ ३३ ४६	२००३	२३ ५३ ५५
१९५६	२३ १४ ३३	१९८०	२३ ३४ ३६	२००४	२३ ५४ ४६
१९५७	२३ १५ २३	१९८१	२३ ३५ २६	२००५	२३ ५५ ३६
१९५८	२३ १६ १३	१९८२	२३ ३६ २०	२००६	२३ ५६ २६
१९५९	२३ १७ ०३	१९८३	२३ ३७ १०	२००७	२३ ५७ १७
१९६०	२३ १७ ५४	१९८४	२३ ३८ ००	२००८	२३ ५८ ०७
१९६१	२३ १८ ४४	१९८५	२३ ३८ ५१	२००९	२३ ५८ ५७
१९६२	२३ १९ ३५	१९८६	२३ ३९ ४१	२०१०	२३ ५९ ४८
१९६३	२३ २० २५	१९८७	२३ ४० ३१	२०११	२४ ०० ३
१९६४	२३ २१ १५	१९८८	२३ ४१ २१	२०१२	२४ ०१ २८
१९६५	२३ २२ ०५	१९८९	२३ ४२ १२	२०१३	२४ ०२ १८
१९६६	२३ २२ ५५	१९९०	२३ ४३ ०२	२०१४	२४ ०३ ०९
१९६७	२३ २३ ४६	१९९१	२३ ४३ ५२	२०१५	२४ ०३ ५९
१९६८	२३ २४ ३६	१९९२	२३ ४४ ४२	२०१६	२४ ०४ ४९
१९६९	२३ २५ २६	१९९३	२३ ४५ ३३	२०१७	२४ ०५ ४०
१९७०	२३ २६ १६	१९९४	२३ ४६ २३	२०१८	२४ ०६ ३०
१९७१	२३ २७ ०७	१९९५	२३ ४७ १३	२०१९	२४ ०७ २०
१९७२	२३ २७ ५७	१९९६	२३ ४८ ०३	२०२०	२४ ०८ १०
१९७३	२३ २८ ४७	१९९७	२३ ४८ ५४	२०२१	२४ ०९ ०१
१९७४	२३ २९ ३७	१९९८	२३ ४९ ४४	२०२२	२४ ०९ ५१

अयनांश सारणी नं. २

तारीख	१	४	७	१०	१३	१६	१९	२२	२५	२८
	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.
जनवरी	०	१	१	१	२	२	३	३	३	४
फरवरी	४	५	५	६	६	६	७	७	८	८
मार्च	८	९	९	१०	१०	१०	११	११	१२	१२
अप्रैल	१३	१३	१३	१४	१४	१५	१५	१५	१६	१६
मई	१७	१७	१७	१८	१८	१९	१९	२०	२०	२०
जून	२१	२१	२२	२२	२३	२३	२३	२४	२४	२५

तारीख	१	४	७	१०	१३	१६	१९	२२	२५	२८
	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.
जुलाई	२५	२५	२६	२६	२७	२७	२८	२८	२८	२९
अगस्त	२९	३०	३०	३१	३१	३१	३२	३२	३३	३३
सितम्बर	३४	३४	३४	३५	३५	३६	३६	३६	३७	३७
अक्तूबर	३८	३८	३९	३९	३९	४०	४०	४१	४१	४१
नवम्बर	४२	४२	४३	४३	४४	४४	४४	४५	४५	४६
दिसम्बर	४६	४७	४७	४७	४८	४८	४९	४९	४९	५०

महर्षि–पराशरोक्त विंशोत्तरी महादशान्तर्दशा ज्ञान–चक्र

सूर्यदशा वर्ष ६ एक घड़ी में ३६ दिन	चंद्रदशा वर्ष १० एक घड़ी में ६० दिन	भौम दशा वर्ष ७ एक घड़ी में ४२ दिन	राहु दशा वर्ष १८ एक घड़ी में १०८ दिन	गुरु दशा वर्ष १६ एक घड़ी में ९६ दिन	शनिदशा वर्ष १९ एक घड़ी में ११४ दिन	बुधदशा वर्ष १७ एक घड़ी में १०२ दिन	केतुदशा वर्ष ७ एक घड़ी में ४२ दिन	शुक्रदशा वर्ष २० एक घड़ी में १२० दिन
कृ. उ.फा. उ.षा.	रो. ह. श्रव.	मृ. चि. ध.	आर्द्रा स्वा. श.	पुन. वि. पू.भा.	पु. अनु. उ.भा.	आश्ले. ज्ये. रे.	म. मू. अश्वि.	पू.फा. पूषा. भ.
तन्मध्येऽन्तरम्	तन्मध्येऽन्तरम्	तन्मध्येऽन्तरम्	तन्मध्येऽन्तरम्	तन्मध्येऽन्तरम्	तन्मध्येऽन्तरम्	तन्मध्येऽन्तरम्	तन्मध्येऽन्तरम्	तन्मध्येऽन्तरम्
ग्र. व. मा. दि.	ग्र. व. मा. दि.	ग्र. व. मा. दि.	ग्र. व. मा. दि.	ग्र. व. मा. दि.	ग्र. व. मा. दि.	ग्र. व. मा. दि.	ग्र. व. मा. दि.	ग्र. व. मा. दि.
र. ० ३ १८	चं. ० १० ०	मं. ० ४ २७	रा. २ ८ १२	बृ. २ १ १८	श. ३ ० ३	बु. २ ४ २७	के. ० ४ २७	शु. ३ ४ ०
चं. ० ६ ०	मं. ० ७ ०	रा. १ ० १८	बृ. २ ४ २४	श. २ ६ १२	बु. २ ८ ९	के. ० ११ २७	शु. १ २ ०	र. १ ० ०
मं. ० ४ ६	रा. १ ६ ०	बृ. ० ११ ६	श. २ १० ६	बु. २ ३ ६	के. १ १ ९	शु. २ १० ०	र. ० ४ ६	चं. १ ८ ०
रा. ० १० २४	बृ. १ ४ ०	श. १ १ ९	बु. २ ६ १८	के. ० ११ ६	शु. ३ २ ०	र. ० १० ६	चं. ० ७ ०	मं. १ २ ०
बृ. ० ९ १८	श. १ ७ ०	बु. ० ११ २७	के. १ ० १८	शु. २ ८ ०	र. ० ११ १२	चं. १ ५ ०	मं. ० ४ २७	रा. ३ ० ०
श. ० ११ १२	बु. १ ५ ०	के. ० ४ २७	शु. ३ ० ०	र. ० ९ १८	चं. १ ७ ०	मं. ० ११ २७	रा. १ ० १८	बृ. २ ८ ०
बु. ० १० ६	के. ० ७ ०	शु. १ २ ०	र. ० १० २४	चं. १ ४ ०	मं. १ १ ९	रा. २ ६ १८	बृ. ० ११ ६	श. ३ २ ०
के. ० ४ ६	शु. १ ८ ०	र. ० ४ ६	चं. १ ६ ०	मं. ० ११ ०६	रा. २ १० ६	बृ. २ ३ ६	श. १ १ ९	बु. २ १० ०
शु. १ ० ०	र. ० ६ ०	चं. ० ७ ०	मं. १ ० १८	रा. २ ४ २४	बृ. २ ६ १२	श. २ ८ ९	बु. ० ११ २७	के. १ २ ०

शिवोक्त योगिनी–दशाऽन्तर्दशा ज्ञानार्थ चक्र

मंगला व. १	पिंगला व. २	धान्या व. ३	भ्रामरी व. ४	भद्रा व. ५	उल्का व. ६	सिद्धा व. ७	संकटा व. ८	दशा तथा वर्ष
चन्द्र	सूर्य	गुरु	मंगल	बुध	शनि	शुक्र	केतु	दशेश ग्रह
आर्द्रा चि. श्रव.	पुन. स्वा. ध.	पुष्य वि. श.	अश्वि आश्ले अनु पूभा	भ. म. ज्ये. उ.भा.	कृ. पूफा. मू. रे.	रो. उ.फा. पू.षा.	मृ. ह. उ.षा.	जन्म नक्षत्र
मं. ० १०	पिं. १ १०	धा. ३ ०	भ्रा. ५ १०	भ. ८ १०	उ. १२ ०	सि. १६ १०	सं. २१ १०	
पिं. ० २०	धा. २ ०	भ्रा. ४ ०	भ. ६ २०	उ. १० ०	सि. १४ ०	सं. १८ २०	मं. २ २०	
धा. १ ०	भ्रा. २ २०	भ. ५ ०	उ. ८ ०	सि. ११ २०	सं. १६ ०	मं. २ १०	पिं. ५ १०	
भ्रा. १ १०	भ. ३ १०	उ. ६ ०	सि. ९ १०	सं. १३ १०	मं. २ ०	पिं. ४ २०	धा. ८ ०	अन्तर्दशा के मास, दिन
भ. १ २०	उ. ४ ०	सि. ७ ०	सं. १० २०	मं. १ २०	पिं. ४ ०	धा. ७ ०	भ्रा. १० २०	
उ. २ ०	सि. ४ २०	सं. ८ ०	मं. १ १०	पिं ३ १०	धा. ६ ०	भ्रा. ९ १०	भ. १३ १०	
सि. २ १०	सं. ५ १०	मं. १ ०	पिं. २ २०	धा. ५ ०	भ्रा. ८ ०	भ. ११ २०	उ. १६ ०	
सं. २ २०	मं. ० २०	पिं. २ ०	धा. ४ ०	भ्रा. ६ २०	भ. १० ०	उ. १४ ०	सि. १८ २०	

वर्षकुण्डली में १२ भावों में स्थित ग्रहों का फल

ग्रह	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
सूर्य	चिन्ता	नृपभय	धनलाभ	हानि	कष्ट	शत्रुनाश	पीड़ा	कष्ट	धर्मनाश	सुख	धनलाभ	पीड़ा
चन्द्र	पीड़ा	धनलाभ	हर्ष	शत्रुनाश	सुख	पीड़ा	कष्ट	दुःख	भाग्योदय	विजय	धनलाभ	व्यय
भौम	ज्वर	धननाश	जय	व्यसन	दुर्गति	शत्रुनाश	स्त्रीकष्ट	पीड़ा	पुण्योदय	राज्यलाभ	धनलाभ	विरोध
बुध	सुख	धनलाभ	सुख	द्रव्यलाभ	पुत्रलाभ	कलह	धनलाभ	व्यग्रता	सुख	मानलाभ	सुखलाभ	विग्रह
गुरु	सुख	धनलाभ	जय	वाहनलाभ	पुत्रलाभ	कष्ट	सुख	रोग	धर्मलाभ	राज्यलाभ	धनलाभ	शोक
शुक्र	मानप्राप्ति	धनप्राप्ति	कीर्तिलाभ	सुखलाभ	धनलाभ	शत्रुभीति	स्त्रीसुख	कष्ट	धर्मोदय	मानलाभ	धनलाभ	व्यय
शनि	वायुरोग	पीड़ा	धनलाभ	दुःख	पुत्रप्राप्ति	जय	स्त्रीकष्ट	रोग	भाग्यहानि	धनहानि	धनलाभ	चिन्ता
राहु	सिरदर्द	राजभय	सुख	दुःख	बुद्धिनाश	शत्रुनाश	रोगभय	दुःख	हानि	विजय	सुखलाभ	व्याधि
केतु	चिन्ता	क्लेश	आरोग्य	राजभय	दुर्बुद्धि	सुख	कलेश	पीड़ा	भाग्यनाश	धनलाभ	लाभ	शोक
मुन्था	सुख	यश, अर्थ	पुष्टि	दुःख	सुखप्राप्ति	कष्ट	व्यसन	दुःख	भाग्योदय	राज्यप्राप्ति	लाभ	कष्ट

दशा का भुक्तभोग्य

गत नक्षत्र की घट्यादि को ६० में से घटाकर इष्ट–घटीपल जोड़ने से भयात होता है। ६० में से घटाए हुए अंकों में प्रवेश नक्षत्र के घट्यादि जोड़ने से भभोग होता है। भयात और भभोग की घटियों को ६० से गुणा कर पल बना लें। भयात के पलों को दशा के वर्षों से गुणाकर भभोग के पलों से भाग दें, लब्ध अंक वर्ष; फिर शेषांक को १२ से गुणा करें, भभोग के पलों से भाग दें, लब्ध मास; फिर शेषांक को ३० से गुणाकर भभोग के पलों से भाग दें, लब्ध दिन; फिर शेषांक को ६० से गुणाकर भभोग के पलों का भाग दें, लब्धांक घटी; फिर शेषांक को ६० से गुणाकर भभोग के पलों से भाग दें, लब्ध पल होंगे। यह वर्षादि दशा का भुक्त होता है। इसको दशा के वर्षों में से घटाने पर भोग्य दशा होगी।

वर्षादि दशा का भुक्त होता है। इसको दशा के ... के पलों से भाग दें, लब्ध पल होंगे। यह

सूर्यसिद्धान्तीय वर्षप्रवेश–सारणी

गताब्द	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५
वार	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	२	४	५	६	०	२	३
घटी	१५	३१	४६	२	१७	३३	४८	४	१९	३५	५०	६	२१	३७	५२	८	२३	३९	५४	१०	२६	४१	५७	१२	२८
पल	३१	३	३४	६	३७	९	४०	१२	४३	१५	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०	१	३३	४	३६	७
विपल	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०

गताब्द	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०
वार	४	५	०	१	२	४	५	६	०	२	३	४	५	०	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६
घटी	४३	५९	१४	३०	४५	१	१६	३२	४७	३	१८	३४	४९	५	२१	३६	५२	७	२३	३८	५४	९	२५	४०	५६
पल	३९	१०	४२	१३	४५	१६	४८	१९	५१	२२	५४	२५	५७	२८	०	३१	३	३४	६	३७	९	४०	१२	४३	१५
विपल	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०

गताब्द	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५
वार	१	२	३	४	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	२	४	५	६	०	२	३
घटी	११	२७	४२	५८	१३	२९	४४	०	१५	३१	४७	२	१८	३३	४९	४	२०	३५	५१	६	२२	३७	५३	८	२४
पल	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०	१	३३	४	३६	७	३९	१०	४२	१३	४५	१६	४८	१९	५१	२२
विपल	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०

गताब्द	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०	९१	९२	९३	९४	९५	९६	९७	९८	९९	१००
वार	४	५	०	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	०	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६
घटी	३९	५५	१०	२६	४२	५७	१३	२८	४४	५९	१५	३०	४६	१	१७	३२	४८	३	१९	३४	५०	५	२१	३६	५२
पल	५४	२५	५७	२८	०	३१	३	३४	६	३७	९	४०	१२	४३	१५	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०
विपल	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०

सूचना– वेधसिद्ध वर्षमान सूर्य सिद्धान्तीय वर्षभान से ८.५पल कम है। अतः सूक्ष्म–वर्षप्रवेशकालिक इष्ट निकालने के लिए गताब्दों को ८.५ से गुणा करके पलात्मक फल को सारणी से साधित इष्ट में से घटा देना चाहिए। यही सूक्ष्म–वर्ष मानानुसारी इष्ट होगा, चाहो तो इस इष्ट पर भी फल अनुभव करें।

वर्षफलसाधन–प्रकारः– (१) अभीष्ट संवत् (जिस संवत् का वर्ष निकालना हो) में से जन्म समय का संवत् हीन करने से जो शेष बचे उसे गतवर्ष, (गताब्द) जानें। स्मरण रहे, कि–मेषार्कप्रवेश से प्रथम और चैत्र शुक्ल प्रतिपदा के अनंतर का यदि वर्ष करना हो तो पिछले संवत् से करना होगा–**वर्षायनर्तुयुगपूर्वकमत्र सौरात्–** इस प्रकार गताब्द निकालकर उसी गताब्द अंक के नीचे सारणी में जो वारादि अंक हैं, उनमें जन्म का वार, इष्ट, घड़ी, पल जोड़ने से वर्षप्रवेशकालिक वारादि इष्ट ज्ञात हो जाता है। यदि नीचे घट्यादि अंक साठ से अधिक हों तो ६० का भाग देने से लब्धांक को ऊपर युक्त करते जाना। ऊपर से वारांक में सात से अधिक आ जाए तो सात का भाग देकर लब्ध त्याग देने से शेष को वर्षप्रवेश समय का स्पष्ट वारादि इष्ट समझें।

(२) जिस दिन जन्म समय के स्पष्ट सूर्यतुल्य वर्ष में सूर्य मिले, उसी दिन वर्षप्रवेश जानना। प्रविष्टों के अनुसार कभी–कभी वार नहीं मिलता। वहां पर गणितागत वार को ठीक जानें। इस इष्ट के अनुसार स्वदेशीय लग्नसारणी से लग्नसाधन करके वर्षकुण्डली लगाएं।

मुन्थानयनप्रकार– गताब्दसंख्या में जन्मलग्न जोड़कर उसमें १२ का भाग देना, जो शेष बचे उसे मुन्था जानें। यह मुन्था प्रति दिन पांच कला चलती है।

मुद्दा दशा– गत वर्ष में जन्मनक्षत्र जोड़कर, उसमें से दो घटाएं, ९ का भाग देने से जो शेष बचे उसे दशा समझें। १ शेष से सूर्य, २ से चन्द्रमा, ३ से मंगल, ४ से राहु, ५ से गुरु, ६ से शनि, ७ से बुध, ८ से केतु, और ९ शेष से शुक्र की दशा जानें।

दशा के दिन– सूर्य के १८ दिन, चन्द्रमा के ३०, मंगल २१, राहु ५४, गुरु ४८, शनि ५७, बुध ५१, केतु २१, शुक्र ६० – ये दशा के दिन हैं।

हर्ष स्थान बल– सूर्य वर्ष लग्न से ९, चन्द्रमा ३, मंगल ६, बुध १, गुरु ११वें, शुक्र ५वें और शनि १२ वें स्थान में हो तो ५ हर्ष बल देते हैं।

स्वोच्च बल– सू. १।५, चं. २।४, मं. १।८।१०, बुध ३।६, गुरु ९।१२।४, शु. २।७।१२ तथा श. १०।११ ७ राशियों में ५ बल देते हैं।

पुरुषस्त्री–ग्रह–बल– स्त्रीग्रह (चं., बु., शु., श.) १।२।३।७।८।९ और पुरुष ग्रह (सू., म., बृ.) ४।५।६।१०।११।१२वें स्थानों में ५ बल देते हैं। **दिनरात्रि बल–**दिन के वर्षेष्ट में पुरुषग्रह ५ बल देते हैं और रात्रि के इष्ट में स्त्रीग्रह ५ बल देते हैं।

त्रिराशिपति चक्र

राशि→	मे.	वृ.	मि.	क.	सि.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.
दिनलग्नपति→	सू.	शु.	श.	शु.	गु.	चं.	बु.	मं.	श.	मं.	गु.	च.
रात्रिलग्नपति→	गु.	चं.	बु.	मं.	सू.	शु.	श.	शु.	श.	म.	गु.	चं.

वर्ष में दृष्टि–ज्ञान और फल

☘ वर्ष में जो ग्रह जिस भाव में पडा हो उस भाव से ५वें, ९वें भाव को प्रत्यक्ष मित्र दृष्टि से देखता है। फल– कार्य में शीघ्र सफलता, सुख, प्रेम, लाभ और जिन मनुष्यों के साथ पहले शत्रुता होती है, उनसे प्रेम होता है। ☘ तीसरे ग्यारहवें गुप्त मित्र दृष्टि से देखता है। फल– कार्य कठिनता से एवं गुप्त भाव से सफल हो।☘ पहले, सातवें प्रत्यक्ष शत्रु दृष्टि होती है। फल– शत्रुता करे, मित्र से बैर, धनहानि, बनते काम को बिगड़ना आदि फल होते हैं।☘ ४–१०वें गुप्तशत्रु दृष्टि से देखता है। फल– कार्य बड़ी कठिनता से सफल हो, गुप्तरूप से शत्रु भी उत्पन्न होते हैं।

अथ वर्षेश निर्णयः– जन्म लग्नेश १, वर्ष लग्नेश २, मुन्थेश ३, त्रैराशीश ४, समयेश ५ (दिन में वर्ष प्रवेश हो तो सूर्य जिस राशि पर हो उस राशि का स्वामी और रात्रि में हो तो चन्द्रराशि का स्वामी समयेश होता है।) इन पांच अधिकारियों में से जो सबसे बलवान् हो और लग्न को देखे वह वर्षेश होता है। यदि पांचों में से कोई भी लग्न को न देखता हो तो उन में से जो अधिक बलवान् हो वही वर्षेश्वर होगा। कई ग्रहों का बल समान हों तो जिसकी लग्न पर अधिक दृष्टि हो वह और बल, दृष्टि, अधिकार– तीनों समान हों तो मुन्थेश ही वर्षेश हो। यदि चन्द्रमा वर्षेश प्राप्त हो तो जिससे वह इत्थशाल करे या जिसकी राशि में बैठा हो वही वर्षेश हो। फल– वर्षेश ६।८।१२ वें व अस्तंगत, हीनबली हो तो वर्ष में दुःख, शोक, चिन्ता, भयविशेष होगा। यदि बलिष्ठ होकर शुभ स्थान में सुयोग के साथ बैठा हो तो वर्ष में सुखैश्वर्य की वृद्धि हो।

वर्ष में तबदीली का योग– वर्षकुण्डली में लग्नेश– तृतीयेश वा चतुर्थेश–नवमेश एक घर में हों या एक–दूसरे को मित्रदृष्टि से देखें तो उस वर्ष तबदीली होगी। अगर वर्षलग्नेश वक्री हो और वह मित्रग्रह से दृष्ट हो तो भी तबदीली का योग बनेगा।

सूक्ष्म, शुद्ध वर्षमान के अनुसार वर्षप्रवेशकाल

वेध द्वारा यह सिद्ध हो चुका है कि– सूर्यसिद्धान्तीय वर्षमान वास्तविक (शुद्ध) वर्षमान से १/२ मिनट अधिक है। शुद्ध वर्षफल बनाने के लिए सूक्ष्म वर्षप्रवेशकाल का होना आवश्यक है। हम यहां "सूक्ष्म वर्ष–प्रवेश–सारणी" दे रहे हैं। जो दैवज्ञ वर्षफल के लिए सूक्ष्म वर्षप्रवेशकाल जानना चाहते हैं, उन्हें इसी सारणी का प्रयोग करना चाहिए।

इस सारणी में घं. मि. का प्रयोग है, अतः इससे वर्षप्रवेशकाल जानने के लिए जातक के जन्म का स्टैं. टा. ही यहां प्रयोग में लाना होगा। जैसे– मान लीजिए, किसी व्यक्ति के दसवें वर्ष का प्रवेशकाल जानना है। उस व्यक्ति के जन्म का वार चन्द्र और जन्मकाल (भा. स्टैं. टा.) ८घं. २०मि. (प्रातः) है। उसके वारादि जन्मकाल (2 वा. 8 घं. 20 मि.) में सारणी से गताब्द 9 द्वारा प्राप्त वारादि काल 4 वा. 7 घं. 22 मि. जोड़ने पर 6 वा. 15 घं. 42 मि. मिले। इसका अर्थ हुआ कि इस व्यक्ति के दसवें वर्ष का प्रवेश शुक्रवार को 15 घं. 42 मि. (भा. स्टैं. टा.) पर होगा।

ध्यान रहे– इस सारणी के प्रयोग से प्राप्त वार रात्रि के 12 बजे बदलने वाला होगा। अतः यहां प्रयोग में लाया जाने वाला जन्मकालिक वार भी इसी प्रकार होना चाहिए।

सूक्ष्म वर्षप्रवेश सारणी

गताब्द	वार घं. मि.	गताब्द	वार घं. मि.	गताब्द	वार घं. मि.	गताब्द	वार घं. मि.	गताब्द	वार घं. मि.	गताब्द	वार घं. मि.	गताब्द	वार घं. मि.	गताब्द	वार घं. मि.	गताब्द	वार घं. मि.	गताब्द	वार घं. मि.
१	१/६/९	१३	२/७/५९	२५	३/९/४९	३७	४/११/३९	४९	५/१३/२९	६१	६/१५/१९	७३	०/१७/९	८५	१/१८/५९	९७	२/२०/४९	१०९	३/२२/३९
२	२/१२/१८	१४	३/१४/८	२६	४/१५/५८	३८	५/१७/४८	५०	६/१९/३८	६२	०/२१/२८	७४	१/२३/१८	८६	३/१/८	९८	४/२/५८	११०	५/४/४८
३	३/१८/२७	१५	४/२०/१७	२७	५/२२/७	३९	६/२३/५७	५१	१/१/४७	६३	२/३/३७	७५	३/५/२७	८७	४/७/१७	९९	५/९/७	१११	६/१०/५७
४	५/०/३७	१६	६/२/२७	२८	०/४/१६	४०	१/६/६	५२	२/७/५६	६४	३/९/४६	७६	४/११/३६	८८	५/१३/२६	१००	६/१५/१६	११२	०/१७/६
५	६/६/४६	१७	०/८/३६	२९	१/१०/२६	४१	२/१२/१६	५३	३/१४/०६	६५	४/१५/५६	७७	५/१७/४५	८९	६/१९/३५	१०१	०/२१/२५	११३	१/२३/१५
६	०/१२/५५	१८	१/१४/४५	३०	२/१६/३५	४२	३/१८/२५	५४	४/२०/१५	६६	५/२२/५	७८	६/२३/५५	९०	१/१/४५	१०२	२/३/३४	११४	३/५/२४
७	१/१९/०४	१९	२/२०/५४	३१	३/२२/४४	४३	५/०/३४	५५	६/२/२४	६७	०/४/१४	७९	१/६/४	९१	२/७/५४	१०३	३/९/४४	११५	४/११/३४
८	३/१/१३	२०	४/३/३	३२	५/४/५३	४४	६/६/४३	५६	०/८/३३	६८	१/१०/२३	८०	२/१२/१३	९२	३/१४/३	१०४	४/१५/५३	११६	५/१७/४३
९	४/७/२२	२१	५/९/१२	३३	६/११/२	४५	०/१२/५२	५७	१/१४/४२	६९	२/१६/३२	८१	३/१८/२२	९३	४/२०/१२	१०५	५/२२/२	११७	६/२३/५२
१०	५/१३/३२	२२	६/१५/२२	३४	०/१७/११	४६	१/१९/१	५८	२/२०/५१	७०	३/२२/४१	८२	५/०/३१	९४	६/२/२१	१०६	०/४/११	११८	१/६/१
११	६/१९/४१	२३	०/२१/३१	३५	१/२३/२१	४७	३/१/११	५९	४/०३/१	७१	५/४/५०	८३	६/६/४०	९५	०/८/३०	१०७	१/१०/२०	११९	२/१२/१०
१२	१/१/५०	२४	२/३/४०	३६	३/५/३०	४८	४/७/२०	६०	५/९/१०	७२	६/११/०	८४	०/१२/५०	९६	१/१४/४०	१०८	२/१६/२९	१२०	३/१८/१९

वर्षप्रवेश का लग्न किस स्थान का होना चाहिए।

जिस प्रकार जातक का जन्म जिस स्थान पर होता है उसी स्थान के अक्षांश–रेखांशानुसार ही लग्न का निर्णय किया जाता है, ठीक उसी प्रकार वर्षप्रवेश के समय जातक जिस स्थान पर हो उसी स्थान के अक्षांश–रेखांशानुसार ही वर्षप्रवेश का लग्न होना चाहिए, क्योंकि वर्ष प्रवेश भी जातक का एक 'उपजन्म' ही है। इस प्रकार न्यूयार्क (अमेरिका) में जन्म लेने वाला जातक यदि अपने किसी वर्ष के प्रवेश के समय दिल्ली (भारत) में मौजूद है तो उसके उस वर्ष का प्रवेशकालीन लग्न दिल्ली के अक्षांश–रेखांशानुसार ही लगाना चाहिए। इसी तरह यदि दिल्ली में जन्म लेने वाला जातक वर्षप्रवेश के समय न्यूयार्क में हो तो उसके उस वर्ष का प्रवेशकालीन लग्न न्यूयार्क के अक्षांश–रेखांशानुसार ही होना चाहिए। क्योंकि प्राचीनकाल में अधिकतर लोग अपने जन्मस्थान को छोड़कर बहुत कम दूसरे स्थान पर जाते थे, अतः ज्योतिषी लोगों में वर्षप्रदेश के लग्न को जन्मस्थान से ही जोड़ने की परम्परा बन गई, जो तर्कसंगत नहीं है।

इस विषय को स्पष्टता से जानने के लिए 'सं. 2052 वि. के' ''श्रीमार्त्तण्ड पंचांग'' में पृ. 41/42 पर मेरा लेख ''वर्षप्रवेश का लग्न किस स्थान का होना चाहिए?'' पढ़ें।

मास प्रवेशकाल

भिन्न–भिन्न राशियों में संचार करता हुआ सूर्य जब–जब जातक के जन्म–कालिक स्पष्ट सूर्य की अंश, कला, विकलाओं के तुल्य अंश, कला, विकलाओं पर आता है, तब–तब जातक के मासों का प्रारम्भ (मासप्रवेश) होता है। उदाहरणार्थ– यदि जातक का जन्मकालिक स्पष्ट सूर्य 2 रा. 10 अं. 25 क. 40 वि. है, तो जब जब (सूर्य) जातक की आयु के विभिन्न वर्षों में मेष आदि राशियों के 10 अं. 25 क. 40 वि. पर पहुँचेगा– इसका निर्णय सूर्य की मास–प्रवेश वाले दिन की गति और उस दिन के पंचांगस्थ दैनिक सूर्य तथा मास–प्रवेशकालिक सूर्य के अन्तर से त्रैराशिक द्वारा किया जा सकता है। (इसके लिए सं. 2050 वि. के ''श्रीमार्त्तण्ड पंचांग'' में पृष्ठ 41 पर दिया गया मेरा लेख ''स्पष्टमान से मास–प्रवेशकाल'' पढ़ें।)

–प्रियव्रत शर्मा

में पृ. 41/42 पर मेरा लेख 'वर्षप्रवेश का लग्न ... –प्रियव्रत शर्मा

ग्रहशील-चक्र

रवि	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु	ग्रहाः
३/१०	३/१०	३/१०	३/१०	३/१०	३/१०	०	३/१०	३/१०	एकपाददृष्टिः
५/९	५/९	५/९	५/९	०	५/९	५/९	५/९	५/९	द्विपाददृष्टिः
४/८	४/८	०	४/८	४/८	४/८	४/८	४/८	४/८	त्रिपाददृष्टिः
७	७	४/७/८	७	५/७/९	७	३/७/१०	७	७	सम्पूर्णदृष्टिः
चं. मं. गु.	र. बु.	र. बृ. चं.	र. रा. शु.	र. चं. मं.	बु. रा. श.	बु. रा. शु.	बु. श. शु.	बुध	मित्र—ग्रहाः
बु.	मं.श.गु.शु.	शु. श.	मं. गु. श.	रा. श.	मं. गु.	गु.	गु.	०	समग्रहाः
श. रा. शु.	रा.	बु. रा.	चं.	बु. शु.	र. चं.	र. चं. मं.	र. चं. मं.	०	शत्रुग्रहाः
मेष	वृष	मकर	कन्या	कर्क	मीन	तुला	मिथुन	धनु	उच्चराशयः
१०	३	२८	१५	५	२७	२०	१५	१५	परमोच्चांशाः
तुला	वृश्चिक	कर्क	मीन	मकर	कन्या	मेष	धनु	मिथुन	नीचराशयः
१०	३	२८	१५	५	२७	२०	१५	१५	नीचांशाः
सिंह	कर्क	मे., वृश्चि.	मि., क.	ध., मी.	वृष, तुला	म., कुं.	कन्या	मीन	स्वगृहाणि
सिंह	वृष	मेष	कन्या	धनु	तुला	कुम्भ	कर्क	मकर	मूलत्रिकोण
क्षत्रिय	वैश्य	क्षत्रिय	शूद्र	विप्र	विप्र	शूद्र निषाद	निषाद	निषाद	वर्णः
पुरुष	स्त्री	पुरुष	नपुंसक	पुरुष	स्त्री	नपुंसक	पुरुष	पुरुष	पुरुष, स्त्री, नपुंसकः
मध्याह्न	अपराह्न	मध्याह्न	प्रभात	प्रभात	अपराह्न	अपराह्न	अपराह्न	अपराह्न	समय
पूर्व	वायव्य	दक्षिण	उत्तर	ईशान	आग्नेय	पश्चिम	नैर्ऋत्य	नैर्ऋत्य	दिशा
सुवर्ण	रौप्य	सुवर्ण	कांस्य	सुवर्ण	रौप्य	लौह	लौह	लौह	धातु
चतुष्पद्	बहुपद्	चतुष्पद्	द्विपद्	द्विपद्	द्विपद्	भुजंगपद्	अपद्	अपद्	पाद्
उग्र	सौम्य	उग्र	शुभ	शुभ	शुभ	पाप	पाप	पाप	सौम्यादि
सत्त्व	सत्त्व	तम	रज	सत्त्व	रज	तम	तम	तम	गुण
स्थिर	चर	चर	द्विस्व.	स्थिर	चर	पक्षी,स्थिर	चर	पक्षी	चरादि
तिक्त	क्षार	कटु	सर्वरस	मधुर	अम्ल	कषाय	कषाय	कषाय	रस
पशु	जलभू.	दुग्ध	श्मशान	वाणी	जल	उत्कट	ऊषर	ऊषर	भूमि
पित्त	श्लेष्म	पित्त	समधातु	समधातु	कफशुक्र	वायु	धूम्र	वायु	पित्तादि
वृद्ध	युवा	युवा	युवा	वृद्ध	युवा	अतिवृद्ध	वृद्ध	वृद्ध	अवस्था
पाटल	गौरश्वेत	रक्त	नील	पीत	श्वेत	नील	धूम्र	धूम्र	रंग
मूल	जीव	धातु	जीव	जीव	मूल	मूल	धातु	धातु	धात्वादि
वन	जल	वन	ग्राम	ग्राम	ग्राम	सन्धि	विवर.	विवर	स्थानम्

वर्ष में योगिनी के लिए जन्म–नक्षत्रसंख्या में गताब्द जोड़ें, 3 और जोड़ें, 8 से भाग दें, तो शेष मंगलादि योगिनी दशा होती है।

वर्षयोगिनीमतेन मुद्दादशा (मास–दिन)

मं.	पिं.	धा.	भ्रा.	भ.	उ.	सि.	सं.
०	०	१	१	१	२	२	२
१०	२०	०	१०	२०	०	१०	२०

गर्भयोग—

वर्ष–कुण्डली में लग्नेश पांचवें या सातवें पड़ा हो व पंचमेश और सप्तमेश लग्न में पड़े हों तो उस वर्ष गर्भयोग होता है। मुंथेश और चन्द्रमा बली होकर पांचवें हो और पंचमेश भी बली हो तो गर्भ होता है।

जन्मपत्री न हो तो वर्ष बनाने की रीति

स्पष्ट प्रश्नलग्न की राशि को छोड़कर अंशादिक की कला करें, फिर उसमें १५० (डेढ़ सौ) का भाग दें। लब्ध, जो राश्यादि चार फल आवे उसकी राशि के अंक में प्रश्नलग्न की राशि के अंक मिलाएं। प्राप्तांक को मुन्था का स्पष्ट लग्न समझें और प्रश्नलग्न से चतुर्थराशि के स्वामी को जन्मलग्नेश जानें अर्थात् पंचाधिकारियों में जन्मलग्नपति के स्थान में प्रश्नलग्न से चतुर्थराशि का स्वामी जो हो उसे लग्नेश समझिए। प्रश्नपत्र पर वर्ष बनाने में इतना ही विशेष है। अन्य सर्व रीति में कुछ न्यूनाधिक नहीं है।

अरिष्ट योग

यदि जन्मलग्न ही वर्ष लग्न हो और जन्मनक्षत्र भी वर्ष में आ जाए तो यह द्विजन्मा वर्ष अशुभ है। वर्ष में गुरु, चन्द्र शुभ न हों तो अशुभ, कष्टभय होता है। वर्ष में गुरु, चन्द्र शुभ हों तो अशुभ फल नहीं होगा।

आवश्यक मुहूर्त्त

कोई भी कार्य यदि शास्त्र–सम्मत शुभ–मुहूर्त्त में किया जाए तो वह अवश्य सफल होकर सुखप्रद होता है। गया–गोदावरी–यात्रा में, नवरात्रकृत्य में एवम् चातुर्मास्य व्रत में गुरु–शुक्रास्त का दोष नहीं होता।

गर्भाधान संस्कार का मुहूर्त्त

शुभ तिथियां– १, २, ३, ५, ७, १०, ११, १२, १३। **शुभ नक्षत्र–** तीनों उत्तरा, मृ., ह., अनु., रो., स्वा., श्र., ध., श.। **शुभ लग्न–** जब लग्न और ४, ५, ७, ९, १० स्थानों में शुभग्रह हों; ३, ६, ११ स्थानों में पापग्रह हों; सूर्य, मंगल या गुरु लग्न को देखते हों, विषम राशि के नवांश में चन्द्रमा हो, रजोदर्शनकाल से पहली चार रात्रि छोड़ कर १६ रात्रि तक समरात्रि में गर्भ हो तो पुत्र, विषम में हो तो कन्या होती है।

चित्रा, पुन. पुष्य, अश्विनी गर्भाधान के लिए मध्यम हैं।

गर्भाधान के लिए अशुभकाल

भद्रा; ४, ६, ८, ९, १४, १५, ३० तिथियां; संक्रान्ति का दिन, सन्ध्याकाल, मंगल, रवि, शनिवार, रजोदर्शनकाल की पहली चार रात्रियां; ज्येष्ठा, रेवती और आश्लेषा नक्षत्रों के अन्त की दो–दो घड़ी; मूल, अश्विनी और मघा के आदि की २–२ घडी; ४, ८, १२ लग्नों के अन्त की आधी–आधी घड़ी; ५, ९, १ लग्नों की आधी–आधी घड़ी; ५, ९, १५ तिथियों के अन्त की एक–एक घड़ी; ६, ११, १ तिथियों के आदि की एक–एक घड़ी; निर्बल तारा, जन्मनक्षत्र, मूल, भरणी, अश्विनी, रेवती, मघा नक्षत्र एवम् ग्रहण के दिन, व्यतिपात, वैधृति योग; माता–पिता के श्राद्ध का दिन; दिन का समय; परिघ योग का आधा भाग; उत्पात से हत नक्षत्र; जन्मराशि से अष्टमलग्न; पापयुक्त लग्न तथा पापाकान्त नक्षत्र गर्भाधान के लिए वर्जित है।

गर्भमासों के स्वामी

मास	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
स्वामी	शुक्र	मंगल	गुरु	सूर्य	चन्द्रमा	शनि	बुध	गर्भाधान समय का लग्नेश	चन्द्रमा	सूर्य

स्त्री–पुरुष के चन्द्रबल की विशेषता

गर्भाधान संस्कार में स्त्री का चन्द्रबल देखना चाहिए और अन्यकार्यों में पति का चन्द्रबल देखना चाहिए– यह सदा स्मरण रखें।

पुंसवन संस्कार का मुहूर्त्त

यह संस्कार गर्भाधान के तीसरे मास में गुरु, रवि, मंगलवार को मृग., पुन., पु., ह., मू. और श्रवण नक्षत्रों में; १, २, ३, ५, ७, १०, ११, १३ १५ तिथियों में जब लग्न से १, ४, ५, ७, ९ और १० स्थानों में शुभग्रह और ३, ६, ११ स्थानों में पापग्रह हों तो शुभ होता है। तीनों उत्तरा, रोहिणी, रेवती नक्षत्र तथा सोम, बुध और शुक्रवार भी शुभ हैं।

सीमान्त संस्कार का मुहूर्त्त

गर्भाधान के छठे या आठवें मास में जब मास का स्वामी बली हो तब पुंसवन के मुहूर्त्त में निर्दिष्ट तिथियों, वारों, नक्षत्रों और लग्नों में सीमान्त शुभ होता है। **"सीमान्त जातकादीनि प्राशनान्तानि यानि वै। न दोषो मलमासस्य मौढ्यस्य गुरुशुक्रयोः।।"**

गर्भ–रक्षा के लिए विष्णुपूजा

गर्भाधान के आठवें मास में श्रवण, रोहिणी और पुष्य नक्षत्र में; शुभ लग्न, वार और तिथियों में जब लग्न से आठवां स्थान शुद्ध हो तब गर्भ की रक्षा के लिए विष्णु की पूजा करनी चाहिए।

मेधाजनन संस्कार

बालक के उत्पन्न होने के अनन्तर नाल काटने से पहले दाहिने हाथ की अनामिका अंगुली के अग्रभाग में सुवर्ण लगाकर सुवर्णसहित अंगुली से शहद और गौ के घी को मिलाकर **"ॐ भूस्त्वयि दधामि, ॐ भुवस्त्वयि दधामि, ॐ स्वस्त्वयि दधामि, ॐ भू र्भुवः स्वस्त्वयि दधामि, ॐ भूर्भुवः स्वः सर्व त्वयि दधामि"**– इन पांचों मन्त्रों से बालक को थोड़ा–थोड़ा चार बार मधु चटावें– ऐसा करने से बालक बुद्धिमान् और यशस्वी होता है।

स्तनपान कराने व सूतिकापथ्य का मुहूर्त

रिक्ता., अमा, भद्रा, व्यतिपात एवं वैधृति को छोड़कर शुभ तिथियां हों; वार चं. बु. गु. श. हों; नक्षत्र मृग., पुन., पु., श्र., रे., म. हों– तब स्तनपान कराना शुभ है। आगे अन्नप्राशन में कही गई तिथि, नक्षत्रों में सूतिकापथ्य शुभ है।

प्रसूता स्त्री के स्नान का मुहूर्त्त

रेवती, तीनों उत्तरा, रोहिणी, मृग., ह., स्वा., अश्वि. और अनु. नक्षत्रों में; रवि, गुरु और भोम वारों में; १, २, ३, ५, ७, १०, ११, १३, १५ तिथियों में शुभ हैं। आर्द्रा, पुन., पु., श्र., म., भ., कृ., वि. मू. और चित्रा नक्षत्र तथा शनि और बुधवार त्याज्य हैं। अन्य नक्षत्र और वार मध्यम हैं।

प्रसूता स्त्री द्वारा जलपूजन का मुहूर्त्त

मास समाप्त होने पर बुध, गुरु या चन्द्रवार को ४, ९., १४, तिथियों को छोड़कर अन्य तिथियों में श्र., पुन., पु., मृ., ह., मू., अनु., नक्षत्रों में जलपूजन उत्तम है। परन्तु गुरु और शुक्र के अस्त में; चैत्र, पौष या अधिक मास में (मास पूरा होने पर भी) जलपूजन नहीं करना चाहिए।

जातकर्म और नामकरण का मुहूर्त्त

संक्रान्तिदिन, भद्रा और व्यतिपात को छोड़कर १, २, ३, ५, ७, १०, ११ १२, १३ तिथियों में जन्मकाल से ११वें या १२वें दिन सोम, बुध और शुक्रवार को मृ., रे., चि., अनु., तीनों उत्तरा, रो., ह., अश्विनी, पुष्य, अभि., स्वा., पुन., श्र., ध., श., नक्षत्रों में, जब लग्न से १, ४, ५, ७, १० स्थानों में शुभग्रह तथा ३, ६, ११ स्थानों में पापग्रह हों तब शुभ होता है।

अथ दोला (झूला) आरोहणमुहूर्त्त

जन्म दिन से १०, १२, १६, १८, ३२वें दिन शुक्रवार में; मृ., रे., चि., अनु., ह., अश्वि., पुष्य, अभि., तीनों उत्तरा, रो. नक्षत्रों में ४, ९, १४, ३० तिथियों के अलावा अन्य तिथियों में; १, ४, ७, १० लग्नों में शुभग्रह से युक्त होने पर एवं १, ४, ५, ६, ७, ९, १०, ११ वें शुभग्रह हों तथा ,३, ६, ११ वें पापग्रह हो तो उत्तम होता है।

निष्क्रमण का मुहूर्त्त

स्वा., अश्वि., पुन., ह., मू., पु., अनु., श्र., रो., ध. नक्षत्रों में; भौम एवं शनि को छोड़कर अन्य वारों में, रिक्ता, अमा, भद्रादि से रहित शुभ दिन में; तीसरे, चौथे मास में शुभ है। शीघ्रता होने पर १२वें दिन बालक का निष्क्रमण करें; इसी दिन सूर्य और नक्षत्र पूजन पूर्वक सूर्य नक्षत्रों का दर्शन करा दें।

सूर्य नक्षत्र से चन्द्रनक्षत्र तक गिनें				
५ नैरोग्य	५ मरण	५ कृषता	५ व्याधि	७ सौख्य

भूम्युपवेशन–मुहूर्त्त

पांचवें महीने में पृथ्वी, वाराह का पूजन करके भौम के पूर्ण बल में तीनों उत्तरा, रो., मृग., ज्ये., अनु., अश्वि., हस्त, पुष्य, अभि– इन नक्षत्रों में; ४, ९, १४, ३०– इन तिथियों को छोड़कर स्थिर लग्न एवं शुभ दिन में बालक के करधनी का त्रिसूत्र बांधकर पृथ्वी पर बैठाएं।

भूम्युपवेशन के लिए मंत्र– " रक्षैनं वसुधे देवि सदा सर्वगतं शुभे। आयुः प्रमाणं सकलं निक्षिपस्व हरिप्रिये।" इति।।

इसी समय बालक के सामने पुस्तक, कलम, वस्त्र, शस्त्र, स्वर्ण, चांदी, तुला आदि वस्तु रखें। जिसको बालक ग्रहण करे उससे उसकी आजीविका होती है।

अन्नप्राशन का मुहूर्त्त

जन्ममास से ६, ८, १० या १२वें मास में पुत्र का और ५, ७, ९ या ११ वें मास में कन्या का भद्रादि दोषरहित १, ३, ५, ७, १०, १३, १५ तिथियों में; सोम, बुध, गुरु और शुक्रवार को म., रे., चि., अनु., ह., अश्वि., पु., अभि., स्वा., पुन., श्र., ध., श., तीनों उत्तरा, रोहिणी नक्षत्रों में; जन्मराशि या जन्मलग्न से आठवें लग्न या नवांशक तथा मेष, वृश्चिक और मीन लग्न को छोड़कर शेष लग्नों में; १, ३, ४, ५, ७, ९, १० स्थानों में शुभ ग्रह हों या शुभ ग्रह की दृष्टि हो; ३, ६, ११ स्थानों में पापग्रह हों; दशम स्थान पापग्रहरहित हो; १, ६, ८ स्थान में चन्द्रमा न हो तो शुभ होता है। किसी–किसी के मत से जन्मनक्षत्र अनु., शततारिका (शतभिषा) और स्वाती अशुभ हैं।

कर्णवेध का मुहूर्त्त

चैत्र, पौष देवशयन (आषाढ़ शुक्ल ११ से कार्त्तिक शुक्ल ११ तक), जन्ममास, जन्मनक्षत्र, ४, ९, १४ तिथियां, जन्मतारा, क्षयतिथि और सम वर्षों को छोड़कर जन्म के १२वें या १६वें दिन; ६वें, ७वें, ८वें मास या विषम वर्षों में सोम, बुध, गुरु, शुक्रवार को श्र., ध., पुन., मृ., रे., चि., अनु., ह., अश्वि., पुष्य, अभि. नक्षत्रों में जब लग्न से अष्टम स्थान शुद्ध हो; १, ४, ५, ७, ९, १० स्थानों में शुभ ग्रह हों; ३, ६, ११ स्थानों में पापग्रह हों, तुला, वृष, धनु या मीन लग्न में बृहस्पतिवार हो तो कर्णच्छेदन श्रेष्ठ है। इस संस्कार के समय पर करने से मनुष्य के हर्निया (अंत्रवृद्धि) जैसे भयानक रोग की जड़ ही कट जाती है।

कन्या के नासिकाच्छेदन का मुहूर्त्त

कर्णवेधोक्त नक्षत्रों में तथा उत्तरा ३, शत., स्वा. में शुभ तिथ्यादिक, शुक्लपक्ष में दिन के प्रथम प्रहर के समय नासिका वेध शुभ है।

मुण्डनमुहूर्त्त

गर्भाधानकाल से या जन्मकाल से विषम अर्थात् ३रे, ५वें, ७वें वर्ष में (मनु जी के मत से प्रथम वर्ष में भी) चैत्र को छोड़कर उत्तरायण सूर्य में चन्द्र, बुध, गुरु और शुक्रवार, लग्न तथा नवांशक में, जन्मराशि या जन्मलग्न से अष्टम लग्न को छोड़कर; २, ३, ५, ७, १०, ११, १३ तिथियों में संक्रान्तिदिन को छोड़कर जब लग्न से आठवां स्थान शुद्ध (ग्रहरहित) हो; ३, ६, ११ स्थानों में पापग्रह हों; ज्ये., मृ., रे., चि., स्वा., पुन., श्र., ध., श., ह., अश्वि., पुष्य और अभिजित् नक्षत्रों में मुण्डन शुभ है।

ध्यान रहे– लड़के की माता को पांच मास का गर्भ हो तो मुण्डन निषिद्ध है, परन्तु पांच वर्ष से अधिक अवस्था के बालक के लिए निषेध नहीं है। जेठे लड़के का मुण्डन ज्येष्ठ मास में नहीं करना चाहिए।

मुण्डनकर्म में विशेष–स्वकुल–शिष्टाचारानुसार पूर्वोक्त नक्षत्र, तिथ्यादि; शुभ समय में अपने–अपने इष्टदेव के स्थानों में मुण्डन तथा कर्णवेध का होना देखा जाता है जो **"यथा कुलधर्मं वः"**– इस स्मृति के अनुसार से ठीक ही है।

क्षौर बनवाने का मुहूर्त्त

मुण्डन के लिए जो तिथियां और नक्षत्र शुभ बतलाये गए हैं वे ही हजामत बनवाने के लिए शुभ हैं– वर्जित काल–शनि, रवि, भौमवार; हजामत में नौवें दिन, संध्याकाल, ४, ८, ९, १४, १५, ३० तिथियां, संक्रान्तिदिन, रात्रि में, बिना आसन, संग्राम में, यात्रा करने के दिन, स्नान करके, शरीर में उबटन लगवाकर और भोजन के पीछे हजामत बनवाना अशुभ है।

विशेष फल– यज्ञ, विवाह, मृतककर्म में, कारागार से छूटने पर, ब्राह्मण और राजा की आज्ञा से किसी भी समय(बिना मुहूर्त्त के भी) हजामत बनवाई जा सकती है। किसी–किसी आचार्य का मत है कि जो लोग राजकार्य में नियुक्त हैं वे रूपजीवी (जैसे– नट–भांड आदि) किसी भी दिन हजामत बनवा सकते हैं।

कर्णवेध और क्षौर का वार– ब्राह्मण रविवार को,, क्षत्रिय सोमवार को वैश्य और शूद्र शनिवार को क्षौरोक्त तिथ्यादि में हजामत बनवा सकते हैं।

अक्षरारम्भ का मुहूर्त्त

जन्म से ५वें या ७वें वर्ष में उत्तरायण सूर्य में गणेश, विष्णु, सरस्वती और लक्ष्मी का पूजन करके सोम, बुध, गुरु और शुक्रवार को हस्त, अश्वि., पुष्य, अभि., श्र., स्वा., रे., पुन., आर्द्रा, चित्रा, अनुराधा नक्षत्रों में बुरे योगों और भद्रा को छोड़कर २, ३, ५, ६, १०, ११, १२ तिथियों में (शुक्लपक्ष उत्तम) अक्षरारम्भ शुभ होता है; लग्न में मेष, कर्क तुला और मकर राशियां [illegible]

विद्यारम्भ का मुहूर्त्त

उत्तरायण में (कुम्भ के सूर्य को छोड़कर) रवि, बुध, गुरु और शुक्रवार को; २, ३, ५, ६, १०, ११, १२ तिथियों में; भ.., आर्द्रा, पुन., हस्त, चि., स्वा., श्र., ध., शत., अश्वि., म., तीनों पूर्वा, तीनों उत्तरा, रो., पुष्य, आश्ले., अनु., रेवती नक्षत्रों में; जब लग्न से १, ४, ५, ७, ९, १० स्थानों में शुभ ग्रह हों तो विद्यारम्भ शुभ है।

फारसी, अंग्रेज़ी विद्यारम्भ का मुहूर्त्त

सूर्य, भौम, शनिवार हों; ४, ९, १४ तिथि हों; ज्ये., आश्ले., म., तीनों पूर्वा, भ., कृ., वि., आर्द्रा, उ. षा., शत. नक्षत्र शुभ हैं।

सीने–पिरोने (सूचिकर्म) का मुहूर्त्त

अश्वि., पु., चि., अनु., ध. नक्षत्र; सूर्य, बुध, चन्द्र, गुरु, शनि वार एवम् १; २, ३, ४, ५, ६, ७, ८, ९ १०, ११, १३, १५ तिथियां शुभ हैं।

यज्ञोपवीत संस्कार का मुहूर्त्त

यज्ञ और उपवीत– इन दो शब्दों से यज्ञोपवीत बना है। देवताओं की पूजा, संगति (सम्मेलन या कान्फ्रेंस) और जिसमें दान हों, उसे यज्ञ कहते हैं। उपवीत का अर्थ है– पिरो देने वाला अर्थात् देवपूजा, सम्मेलन और दान के साथ पुरुष को मिला देने वाला संस्कृत (तन्तु–धागाविशेष)– यह यज्ञोपवीत का अर्थ हुआ। बालक को गुरु, चन्द्र शुद्धि देखकर जन्म से या गर्भ से **(गर्भाज्जनेर्वा इति पारस्करमन्वादीनां मते विकल्पः)** ब्राह्मण आठवें वर्ष, क्षत्रिय ११वें, वैश्य १२वें, वर्ष में करें। यदि इन वर्षों में न किया जा सके तो ब्राह्मण १६, क्षत्रिय २२ और वैश्य २५वें वर्ष तक संस्कार कर सकते हैं। उसके बाद सावित्रीपतित व्रात्य संज्ञा वाले होते हैं। माघादि पांच मासों में देवशयनी से पूर्व ह., अश्वि., पुष्य, अभि., ३ उत्तरा, रो., आश्ले., स्वा., श्र., ध., मू., मृग., रे., चि., अनु., तीनों पूर्वा, आर्द्रा वेधरहित, इन नक्षत्रों में (क्षत्रिय, वैश्यों के लिए पुनर्वसु भी ग्राह्य है) सू., चं., बु., (बुधास्त हो तो बुधवार त्याज्य) श., गुरुवार को शुक्ल २, ३, १०, ११, १२ तथा कृष्ण पक्ष की २, ३, ५ तिथियों में शुभ है। किन्तु सोपपदा तिथि (जैसे– आषाढ़ शुक्ल १०, ज्येष्ठ शुक्ल २, पौष शुक्ल ११, माघ शुक्ल १२), संक्रान्तिदिन तथा रोगबाण को छोड़कर मध्याह्न से पहले शुभ है। शु., गु., चं. और लग्नेश ६, ८ स्थानों में चं., शु. १२वें स्थान में और १, ५, ८वें भावों में पापग्रह अशुभ है। शुभ ग्रह ६, ८, १२ स्थानों के सिवाय अन्य स्थानों में; पाप ग्रह ३, ६, ११ स्थानों; वृष या कर्क का पूर्ण चन्द्रमा लग्न में हो तो शुभ होता है। गुरु, शुक्र के बाल्य–वृद्धत्त्व–अस्त के समय को छोड़कर उपनयन शुभ है। यदि गोचराष्टक वर्ग से बालक के उपनयन संस्कार के लिए **समयशुद्धि न मिले अथवा** सिंह, मकर किंवा अशुभ स्थान में गुरु हो तो सौर चैत्र में [illegible] संस्कार किया जा सकता है–ऐसी शास्त्र की आज्ञा है।

छोड़कर २, ३, ५, ६, १०, ११, १२ तिथियों में (शुक्लपक्ष उत्तम) अक्षरारम्भ शुभ होता है; लग्न में मेष, कर्क तुला और मकर राशियां नहीं होनी चाहिए।

समयशुद्धि न मिले अथवा सिंह, मकर किंवा अशुभ स्थान में गुरु हो तो सौर चैत्र में ... किया जा सकता है-ऐसी शास्त्र की आज्ञा है।

मेलापक सारणी देखने की रीति और अष्टकूट दोषों के परिहार

लेखक:- प्रियव्रत शर्मा

आगे चार पृष्ठों पर 'मेलापक सारणी' दी गई है । इसके बाईं ओर पहिले, दूसरे कालमों में लड़की की और सबसे ऊपर वाली पहिली, दूसरी पंक्तियों में लड़के की राशियां तथा चरण-नक्षत्र दिए गए हैं । लड़की के नक्षत्र चरण के आगे लड़के के नक्षत्र-चरण के नीचे वर्ण आदि अष्टकूटों के गुण और मिलान में होने वाले वर्ण आदि दोषों का निर्देश है । वर्ण आदि दोषों के लिए नीचे लिखे सांकेतिक अक्षरों का इस सारणी में प्रयोग किया गया है:-

वर्ण दोष के लिए	= ब	राशीश दोष के लिए	= र
वश्य दोष के लिए	= व	गण दोष के लिए	= ग
तारा दोष के लिए	= त	भकूट दोष के लिए	= भ
योनि दोष के लिए	= य	नाडी दोष के लिए	= न

उदाहरणार्थ - यदि लड़की का जन्म चित्रा के ४ र्थ चरण में और लड़के का पू. भा. के २ य चरण में हुआ हो तो इनके मिलान में इस मेलापक सारणीसे अष्टकूटों के गुण १८ ½ मिले, और ज्ञात हुआ कि इस मिलान में त (तारा), य (योनि), ग (गण), तथा भ (भकूट) दोष हैं ।

अष्टकूट दोषों के परिहार-

वर, कन्या के राशीशों अथवा नवमांशेशों की मैत्री तथा राशीशों, नवशांशेशों की एकता द्वारा नाड़ी दोष के अलावा शेष सभी दोषों का परिहार हो जाता है । राशीश-नवमांशेशों की मैत्री-एकता के अलावा अन्य और भी अनेक परिहार हैं, जिनसे वर्ण आदि दोष दूर हो जाते हैं । इनका विवरण नीचे दिया जा रहा है -

(१) वर्ण दोष का परिवार:- वर की राशि के वर्ण से कन्या की राशि का वर्ण उत्तम होने पर वर्ण दोष होता है । लेकिन यदि वर के राशीश का वर्ण कन्या के राशीश के वर्ण से उत्तम हो तो वर्ण दोष का परिहार हो जाता है । सभी ग्रहों के वर्ण इस प्रकार हैं:-

रवि का वर्ण क्षत्रिय, चन्द्र का वैश्य, मंगल का क्षत्रिय, बुध का शूद्र, गुरु का ब्राह्मण, शुक्र का ब्राह्मण और शनि का शूद्र है ।

(२) वश्य दोष का परिहार:- वर कन्या की राशियों की योनिमैत्री होने पर वश्य दोष दूर हो जाता है ।

(३) तारा दोष का परिहार:-वर कन्या के राशीशों, नवमांशेशों की मैत्री या एकता के अलावा तारा दोष का दूसरा कोई परिहार नहीं है ।

(४) योनि दोष का परिहार:- भकूट और वश्य कूटों में से कोई एक भी यदि शुभ(ठीक) हों तो योनिदोष का परिहार हो जाता है ।

(५) राशीश दोष का परिहार:- भकूट शुभ होने पर (यानि द्विर्द्वादश, नवपंचम और षडष्टक का अभाव होने पर) राशीश दोष दूर हो जाता है ।

(६) गण दोष का परिहार:- वर -कन्या की राशि एक और नक्षत्र भिन्न-भिन्न हों या भकूट दोष न हों तो गण दोष दूर हो जाता है।

(७) भकूट दोष का परिहार :- वर कन्या के राशीशों, नवांशेशों की मैत्री या एकता ही भकूट दोष का प्रमुख परिहार है। यदि इसके साथ ताराशुद्धि या वश्यशुद्धि भी हो तो भकूट दोष का उत्तम परिहार माना जाता है ।

(८) नाड़ी दोष का परिहार :- वर, कन्या की राशि एक और नक्षत्र भिन्न-भिन्न हों, अथवा नक्षत्र एक और राशियां, भिन्न-भिन्न हों तो नाड़ी दोष दूर हो जाता है । दोनों के नक्षत्रों के चरणों का वेध न होने की स्थिति में भी नाड़ी दोष का परिहार माना जाता है ।

नाड़ी दोष के परिहार के प्रसंगमें वर-कन्या में से किसी एक का जन्म नक्षत्र के प्रथम चरण में और दूसरे का चतुर्थ चरण में अथवा एक का द्वितीय चरण में और दूसरे का तृतीय चरण में हुआ हो तो पादवेध मान लिया जाता है । लेकिन यह नियम सर्वत्र लागू नहीं होता । इसके स्पष्टीकरण के लिए सं. २०४७ के 'श्री मार्त्तण्ड पंचांग' में पृष्ठ ३४ पर दिया गया मेरा लेख **''पाद वेध द्वारा नाड़ी दोष के परिहार में परम्परागत एक भ्रांति''** पढ़ना चाहिए । यह लेख मेरी पुस्तक **'ग्रहयोग एवं दाम्पत्य जीवन'** में भी है ।

ध्यान दें:-जैसा कि ऊपर भी बता चुके हैं, वर, कन्या के राशीशों, नवमांशों की मैत्री और एकता तो वर्ण, वश्य, तारा, योनि, राशीश, गण और भकूट दोषों का परिहार कर देती है, लेकिन नाड़ी दोष का परिहार इससे नहीं होता । नाड़ी दोष का परिहार तो केवल उपरोक्त स्थितियों में ही होता है ।

दैवज्ञ को यह विशेष रूप से ध्यान में रखना चाहिए, कि नाड़ीदोष का यदि परिहार नहीं मिले तो किसी भी स्थिति में (भले ही अन्य सातों कूट शुद्ध क्यों न हों, मिलान में गुण अठाईस भी क्यों न प्राप्त हों), सम्बन्ध करने की अनुमति नहीं देनी चाहिए । इस बारे में मुहूर्तशास्त्रकारों का यही स्पष्ट निर्णय है ।

'नाड़ीदोषस्तु विप्राणाम्' -वाक्य को संहिताकारों ने मान्यता नहीं दी है । 'मुहूर्त चिन्तामणि' आदि अन्य प्रामाणिक मुहूर्तग्रन्थों ने भी इसकी उपेक्षा की है, अतः इसे मान्यता नहीं दी जा सकती।

'एकनक्षत्र जातानां नाड़ीदोषो न विद्यते'- वाक्य भी प्रामाणिक नहीं है । एक ही नक्षत्र में उत्पन्न वर, कन्या को नाड़ी दोष तब नहीं माना जाता, जबकि उनका जन्म भिन्न-भिन्न चरणों में हुआ हो । 'मुहूर्तचिन्तामणि' का वाक्य है -**'नक्षत्रैक्ये पादभेदे शुभं स्यात्'** (अर्थात् दोनों का नक्षत्र एक होने पर दोष (नाड़ीदोष) की निवृत्ति तभी होती है, जबकि दोनों के चरण भिन्न-भिन्न हों)। ध्यान रहे, दोनों का जन्म एक ही नक्षत्र के एक ही चरण में होने पर नाड़ी दोष परमाधिक माना जाता है। एक ही नक्षत्र में पादवेध भी नहीं माना जाता ।

दोषपूर्ण अष्टकूटों के ,परिहारों को प्रमाणित करने वाले शास्त्रवाक्य बहुत हैं, उनको विस्तारभय से यहां उद्धृत नहीं किया गया। उन्हें मेरी पुस्तक **''ग्रहयोग एवं दाम्पत्यजीवन''** में आप देख सकते हैं)

सरलता पूर्वक एक ही दृष्टि में सभी अष्टकूटों के परिहार आ जाएं- इसके लिए नीचे दिया गया यह कोष्ठक देखें :-

अष्टकूट परिहार कोष्ठक

कूट	परिहार
वर्ण	१ राशीशों या नवमाशेशों की मैत्री या एकता हो। २ वर के राशीश का वर्ण कन्या के राशीश के वर्ण से उत्तम हो।
वश्य	१ राशीशौं या नवमांशेशों की मैत्री या एकता हो। २ योनिमैत्री हो ।
तारा	१ राशीशों या नवमांशेशों की मैत्री या एकता हो।
योनि	१ राशीशों या नवमांशेशों की मैत्री या एकता हो। २ वश्यशुद्धि हो। ३ सद्भकूट हो।
राशीश	१ दोनों के नवमांशेशों में मैत्री या एकता हो। २ भकूट दोष न हो।
गण	१ राशीशों या नवमांशेशों की मैत्री या एकता हो। २ भकूट दोष न हो। ३ दोनों की राशि एक और नक्षत्र भिन्न-भिन्न हों ।
भकूट	१ राशीशों या नवमांशेशों की मैत्री या एकता हो।*
नाडी	१ दोनों की राशि एक और नक्षत्र भिन्न - भिन्न हों । २ दोनों का नक्षत्र एक और राशियां भिन्न-भिन्न हों । ३ दोनों का नक्षत्र एक और चरण भिन्न - भिन्न हों । ४ पाद वेध न हो।

* यदि इस परिहार के साथ ताराशुद्धि , वश्यशुद्धि में से कोई एक भी हो तो यह परिहार उत्तम माना जाता है।

परिहृत कूट के गुण

वर्ण आदि जो कूट दोषपूर्ण होता है, उसके लिए निर्धारित पूरे गुणों को छोड़ दिया जाता है। जब उस दोषपूर्ण कूट का कोई उपरोक्त परिहार मिल जाए तब उसके पूरे गुणों को पुनः स्वीकार कर उन्हें मेलापक सारणी से प्राप्त गुण संख्या में जोड़कर उस गुणसंख्या को वास्तविक गुणसंख्या माना जाए- ऐसा कुछ आचार्यों का मत है । कुछ आचार्यों का मत है कि परिहार द्वारा दोष का पूरा नहीं अपितु आंशिक निवारण होता है,अतः परिहृत कूट के आधे गुणों को ही स्वीकार करना चाहिए । यह (दूसरा)मत तर्कसंगत है। इसके अनुसार परिहृत कूट के आधे गुण(उस कूट के लिए निर्धारित पूरे गुणों का आधा भाग)मेलापक सारणी से मिली गुणसंख्या में जोड़कर उसे ही यथार्थ गुणसंख्या मानना युक्तियुक्त है ।

कितने गुण मिलने पर सम्बन्ध कर देना चाहिए ?

परिहृत कूटों की आधी गुणसख्या को मेलापक सारणी में उपलब्ध गुणसंख्या में जोड़ने. पर मिली गुणसंख्या यदि १६ $\frac{1}{2}$ से कम है तो सम्बन्ध नहीं करना चाहिए । यदि षडष्टक भकूट का परिहार न मिल रहा हो तब २० से कम गुण संख्या होने पर सम्बन्ध नहीं करना चाहिए । ध्यान रहे- यहां प्रत्येक स्थिति में नाड़ी दोष का परिहार मिलना नितान्त आवश्यक है। यदि नाड़ी दोष के उपरोक्त परिहारों में से कोई एक भी परिहार न मिल रहा हो तब तो २८ गुण मिलने पर भी सम्बन्ध करने की अनुमति शास्त्रकारों ने नहीं दी है ।

यदि किसी विशेष कारण (विवशता) वश सम्बन्ध करना आवश्यक (अपरिहार्य)हो जाए, तब १६ से कम गुणों और षडष्टक तथा नाड़ीदोष के अपरिहार की स्थिति में भी गाय,अन्न,वस्त्र,सुवर्ण का यथाशक्ति दान, तथा जप -शान्ति करके सम्बन्ध किया जा सकता है । इस स्थिति में कन्या का नाम बदलकर मिलान को अनुकूल बनाने की भी परम्परा है । लेकिन दान,जप,शान्ति करना भी इस स्थिति में अत्यन्त आवश्यक है । साधाराण स्थिति में (नितान्त विवशता की स्थिति के अभाव में) लड़की का नाम बदलकर मिलान को अनुकूल बनाना सर्वथा अशास्त्रीय है । नाम बदलकर मिलान को अनुकूल बनाने का 'सिद्धान्त' अपनाने पर तो किसी भी लड़की का किसी भी लड़के के साथ और किसी भी लड़के का किसी भी लड़की के साथ सम्बन्ध बेरोक-टोक किया जा सकता है और वहां अष्टकूटों के गुण इच्छानुसार अधिकाधिक प्राप्त किए जा सकते हैं, जिससे दोषपूर्ण कूटों का परिहार बतलाने वाले सभी शास्त्रवाक्य अर्थहीन हो जायेंगे।

मिलान में कुछ और विचार्य विषय

यद्यपि संहिताओं में इन आठ कूटों के अतिरिक्त अनेक और भी विचार्य विषय मिलते हैं, लेकिन वर्गमैत्री और नृदूरत्व भी विचार करने की भी कुछ दैवज्ञों में परम्परा हैं,इन दोनों का विवेचन इस प्रकार है-

वर्गमैत्री-।

वर्गमैत्री का विचार वर कन्या के नाम के आदिम वर्णो से सम्बद्ध है। हिन्दी वर्णमाला के अकार आदि स्वर अवर्ग क आदि पांच वर्ण 'कवर्ग च' आदि पांच वर्ण चवर्ग ट आदि पाँच वर्ण टवर्ग त आदि पाच वर्ण तवर्ग प आदि पांच वर्ण 'पवर्ग य आदि पांच वर्ण यवर्ग तथा श' आदि पांच वर्ण 'शवर्ग' कहलाते हैं। इन अवर्ग आदि आठ वर्गों को उपरोक्त क्रमानुसार क्रमशः प्रथम [illegible] संख्याएं दी गई हैं। इन आठ वर्गों के स्वामी क्रमशः गरुड़, मार्जार,सिंह, श्वान,

सर्प, मूषक, मृग और मेष माने गये हैं । प्रत्येक वर्गेश अपने से पंचम वर्ग के स्वामी का शत्रु माना गया है । जैसे :- गरुड़ और सर्प तथा मूषक और मार्जार परस्पर शत्रु हैं ।

नामाक्षरों से वर्ग ज्ञान कोष्ठक :

वर्ग	अवर्ग	कवर्ग	चवर्ग	टवर्ग	तवर्ग	पवर्ग	यवर्ग	शवर्ग
वर्ग के वर्ण	अ, इ, उ,ए	क, ख, ग, घ,ङ	च,छ,ज, झ,ञ	ट,ठ,ड, ढ,ण	त,थ,द, ध,न	प, फ,ब, भ,म	य,र, ल,व	श,ष, स,ह
वर्गेश	गरुड	मार्जार	सिंह	श्वान	सर्प	मूषक	मृग	मेष

वर, कन्या के नामों के आदिम वर्णों के वर्गो के स्वामी परस्पर शत्रु हों तो अच्छा नहीं माना जाता, उनका जीवन दुःखमय रहता है ।

यदि वर्गेशों में शत्रुता है तो अष्टकूटों से प्राप्त गुण १७ से अधिक होने पर ही सम्बन्ध करना चाहिए। यदि मिलान में अष्टकूटों से प्राप्त गुण लगभग १४,१५ ही हों और नाडी दोष न हो तब वर्गेश की एकता (अभिन्नता) होने पर सम्बन्ध किया जा सकता है-ऐसा कुछ लोगों का मत है

नृदूर

वर का नक्षत्र या नक्षत्र चरण यदि कन्या के नक्षत्र या नक्षत्र चरण से तुरन्त परवर्ती हो तो 'नृदूर' दोष कहलाता है। जैसे - कन्या का जन्म नक्षत्र अश्विनी और वर का भरणी, अथवा कन्या का जन्म अश्विनी के प्रथम चरण में और वर का अश्विनी के द्वितीय चरण में हो तो भी नृदूर दोष होगा।'नृदूर' दोष का फल मुहूर्त्त शास्त्रों में बहुत अशुभ लिखा है।

दोनों (वर ,कन्या) की राशि एक और नक्षत्र भिन्न-भिन्न या दोनों का नक्षत्र एक और राशियां भिन्न-भिन्न हों तो नृदूर का परिहार हो जाता है।

अष्टकूटों से प्राप्त गुण लगभग १६ $\frac{१}{२}$,१७,१८ हों और 'नृदूर' दोष का परिहार न मिले, तब नाड़ी दोष के अभाव में भी मिलान को कुछ मुहूर्त्तकार अच्छा नहीं मानते ।१८ से अधिक गुण होने पर 'नृदूर' की उपेक्षा की जा सकती है।

नामराशि से अष्टकूटों का निर्णय

वर और कन्या-दोनों का यदि जन्मकाल ज्ञात न हो, तब दोनों की नामराशि, नामनक्षत्रों (नामों के आदिम अक्षरों से अबकहड़ा चक्र द्वारा निर्णीत राशि और नक्षत्रों) के आधार पर ही मेलापक सारणी से अष्ट कूटों के गुणों का निर्णय करना चाहिए। अपिच यदि वर, कन्या-दोनों में से किसी एक का जन्मकाल ज्ञात न हो तो भी दोनों की नामराशि, नामनक्षत्रों के आधार पर ही अष्टकूटों का निर्णय करना चाहिए। एक की जन्मराशि, जन्मनक्षत्र और दूसरे की नामराशि, नाम नक्षत्र के आधार पर अष्टकूटों का निर्णय करने की अनुमति शास्त्र नहीं देते।

कुज (मंगली) दोष–

निम्नलिखित स्थितियों में कुजदोष (मंगली दोष) माना गया है -

(१) जन्म कुण्डली में १,४,७,८,१२ वें भावमें मंगल या अन्य कोई क्रूर ग्रह हो।
(२) चन्द्र कुण्डली में १,४,७,८,१२ वें भाव में मंगल या कोई क्रूर ग्रह हो ।
(३) शुक्र से १,४,७,८,१२ वें भाव में मंगल या अन्य कोई क्रूर ग्रह हो ।

कुजदोष बनाने वाला ग्रह अस्त, नीचस्थ या शत्रुराशिस्थ हो तो कुजदोष का फल अधिक माना गया है । कुजदोष दाम्पत्य जीवन के लिए अच्छा नहीं माना जाता ।

कुजदोष के सामान्य कुछ परिहार -

इन स्थितियों में वर, कन्या का कुज दोष दूर हो जाता है

(१) कुजदोष बनाने वाला ग्रह (क्रूरग्रह) उच्चस्थ स्वराशिस्थ, स्वनवांशस्थ, मित्रराशिस्थ, उच्चनवांश या मित्रनवांश में हो।
(२) कुजदोष बनाने वाले ग्रह पर वृहस्पति की पूर्णदृष्टि हो ।
(३) वर-कन्या दोनों की कुण्डलियों में कुजदोष विद्यमान हो तो दोनों के कुजदोष समाप्त हो जाते हैं।

ध्यान रहे, कुजदोष वाले वर और कन्या दोनों की कुण्डलियों में कुजदोषों का परिहार मिलने पर कुजदोष का कुफल समाप्त हो जाता है ।दोनों की कुण्डलियों में से किसी एक की कुण्डली में ही कुजदोष परिहार हो तो कुजदोष का कुप्रभाव रहता है ।

कुण्डली मिलान की प्रामाणिकता

हमारे ज्योतिष के मानक ग्रन्थों (संहिता, जातक, मुहूर्त्त ग्रन्थों)-में वर, कन्या का सम्बन्ध करने से पूर्व उनकी कुण्डलियों में ग्रहस्थितियों के मिलान द्वारा कुजदोष के परिहार की चर्चा कहीं भी नहीं की गई है। पुनरपि कुण्डली मिलान की परम्परा सभी भारतीय प्रदेशों में प्रचलित है ।इसका शास्त्रीय मूल अभी तक अज्ञात है। आश्चर्य है-सभी वशिष्ठ, नारद, गर्ग आदि की संहिताओं, मुहूर्त्तमार्तण्ड, मुहूर्त्तचिन्तामणि आदि मुहूर्त्तग्रन्थों तथा वर-कन्या के सम्बन्ध की अनुकूलता के परीक्षण के लिए रचित 'विवाहवृन्दावन' आदि सभी ग्रन्थों में वर-कन्या के सम्बन्ध के लिए केवल अष्टकूटों के परीक्षण का ही निर्देश है, कुण्डली मिलान का कहीं भी नहीं ।

षट्कूट चक्र

वर्ण, वश्य, योनि, राशीश, गण और नाड़ी ज्ञापक चक्र।

राशि	मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या		
नक्षत्र	अश्वि.	भर	कृ.	कृ.	रो.	मृ.	मृ.	आर्द्रा	पुन.	पुन.	पुष्य	आश्ले.	मघा	पू.फा.	उ.फा.	उ.फा.	ह.	चि.
चरण	१,२ ३,४	१,२ ३,४	१	२,३ ४	१,२ ३,४	१,२	३,४	१,२ ३,४	१,२ ३	४	१,२ ३,४	१,२ ३,४	१,२ ३,४	१,२ ३,४	१	२,३ ४	१,२ ३,४	१,२
वर्ण	क्ष.	क्ष.	क्ष.	वै.	वै.	वै.	शू.	शू.	शू.	ब्रा.	ब्रा.	ब्रा.	क्ष.	क्ष.	क्ष.	वै.	वै.	वै.
वश्य	च.	च.	च.	च.	च.	च.	द्वि.	द्वि.	द्वि.	ज.	ज.	ज.	व.	व.	व.	द्वि.	द्वि.	द्वि.
योनि	अ.	ग.	मे.	मे.	स.	स.	स.	श्वा.	मा.	मा.	मे.	मा.	मू.	मू.	गौ.	गौ.	म	व्या.
राशीश	म.	म.	म.	शु.	शु.	शु.	ब.	बु.	बु.	चं.	च.	च.	सू.	सू.	सू.	तु.	बु.	बु.
गण	दे.	म.	रा.	रा.	म.	दे.	दे.	म.	द.	दे.	दे.	रा.	रा.	म.	म.	म.	दे.	रा.
नाड़ी	आ.	म.	अ.	अ.	अ.	म.	म	आ.	आ.	आ.	म.	अ.	अ.	म.	आ.	आ.	आ.	म.

राशि	तुला			वृश्चिक			धनु			मकर			कुम्भ			मीन		
नक्षत्र	चि.	स्वा	वि.	वि.	अनु.	ज्ये.	मू.	पू.षा.	उ.षा.	उ.षा.	श्रव.	ध.	ध.	श.	पू.भा.	पू.भा.	उ.भा	रेव.
चरण	३,४	१,२ ३,४	१,२ ३	४	१,२ ३,४	१,२ ३,४	१,२ ३,४	१,२ ३,४	१	२,३ ४	१,२ ३,४	१,२	३,४	१,२ ३,४	१,२ ३	४	१,२ ३,४	१,२ ३,४
वर्ण	शू.	शू.	शू.	ब्रा.	ब्रा.	ब्रा.	क्ष.	क्ष.	क्ष.	वै.	वै.	वै.	शू.	शू.	शू.	ब्रा.	ब्रा.	ब्रा.
वश्य	द्वि.	द्वि.	द्वि.	की.	की.	की.	द्वि.	द्वि.	द्वि.	ज.	ज.	ज.	द्वि.	द्वि.	द्वि.	ज.	ज.	ज.
योनि	व्या.	म.	व्या.	व्या.	मृ.	मृ.	श्वा.	वा.	न.	न.	वा.	सि.	सि.	अ.	सि.	सि	गौ.	ग.
राशीश	शु.	शु.	शु.	म.	म.	म.	गु.	गु.	गु.	श.	श.	श.	श.	श.	श.	गु.	गु.	गु.
गण	रा.	दे.	रा.	रा.	दे.	रा.	रा.	म.	म.	म.	दे.	रा.	रा.	रा.	म.	म.	म.	दे.
नाड़ी	म.	अं.	अं.	अं.	म.	आ.	आ.	म.	अं.	अं.	अं.	म.	म.	आ.	आ.	आ.	म.	अं.

वर्ण- ब्रा.= ब्राह्मण, क्ष= क्षत्रिय, वै= वैश्य, शू.=शूद्र

योनि- अ.=अश्व, ग=गज, मे=मेष, स=सर्प, श्वा.=श्वान, मा.=मार्जार, मू = मूषक,म=महिष, व्या=व्याघ्र, मृ=मृग, वा=वानर, न=नकुल, सिं=सिंह

गण- दे=देव, म=मनुष्य, रा=राक्षस

वश्य- च=चतुष्पद, की=कीट, व= वनचर, द्वि=द्विपद, ज=जलचर

राशीश-सू=सूर्य, चं=चन्द्र, मं.=मंगल, बु=बुध, गु=गुरु, शु=शुक्र, श=शनि

नाड़ी- आ=आद्य, म=मध्य, अं=अन्त्य

मेलापक सारणी (भाग 1)

वर / कन्या		मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या		
		अश्वि. 1,2,3,4	भर. 1,2,3,4	कृत्ति. 1	कृत्ति. 2,3,4	रोहि. 1,2,3,4	मृग. 1,2	मृग. 3,4	आर्द्रा 1,2,3,4	पुन. 1,2,3	पुन. 4	पुष्य 1,2,3,4	आश्ले. 1,2,3,4	मघा 1,2,3,4	पू.फा. 1,2,3,4	उ.फा. 1	उ.फा. 2,3,4	हस्त 1,2,3,4	चित्रा 1,2
मेष	अश्वि. 1,2,3,4	28 न	33	28½ त	18½ ब भ त	21½ ब भ त	22½ ब भ त	26 ब त र	17 ब न त र	19 ब न त र	23½ न त	31½ त	28 ग	21 व भ ग	25 व भ	15½ व म न त	11 ब भ नतर	9 तबम यनर	13 व भ त र
	भर. 1,2,3,4	34	28 न	29 ग	19 ब ग भ	21½ ब भ त	14½ ब भ त न	18 न ब त र	26 ब त र	27 ब त र	31½ त	23½ न त	25½ ग त	20 ग व भ	18 व भ न	26 व भ	21½ ब भ र	20 ब भ र त	4 बभग नतर
	कृत्ति. 1	27½ ग त	29 ग	28 न	18 ब भ न	10 ग ब न भ	16½ ग ब भ त	20 ग ब त	20 ग ब त	21 ग ब त र	25½ ग त	26½ ग त	23½ न त	16½ व भ न त	20 ग द भ	20 ग व भ	15½ ग व म	15½ ग व भ र	18 ब भ त
वृष	कृत्ति. 2,3,4	18½ ग भ त	20 ग भ	19 भ न	28 न	20 ग न	26½ ग त	17½ ग ब भ त	17½ ब ग भ त	18½ ग ब भ त	22 ग त र	23 ग त र	20 न त र	18½ न व त र	22 र व ग	22 र व ग	21 ग भ	21 ग भ	23½ भ त
	रोहि. 1,2,3,4	23½ भ त	23½ भ त	11 ग भ न	20 ग न	28 न	36	27½ ब भ	23½ ब भ त	22½ भ ब त य	26 त र य	27 त र	12 ग न तरय	10½ रवग नतय	24½ र व त य	27 र व	26 भ	26 भ	20 ग भ
	मृग. 1,2	23½ भ त	14½ भ न त	18½ भ त ग	27½ त ग	35	28 न	19 ब भ न	24 ब भ	22½ ब भ त य	26 त य र	19 त र न	21 त र य ग	19½ गरव त य	15½ र व नतय	24½ र व त	23½ भ त	26 भ	13 भ न ग
मिथुन	मृग. 3,4	27 तर	18 न त र	22 त र ग	19½ भ ग त	27 भ	20 भ न	28 न	33	31½ त य	19 भ व तयर	12 भ न वतर	14 भवत यगर	23½ व त य ग	19½ व न त य	28½ व त	31½ त	34	21 न ग
	आर्द्रा 1,2,3,4	19 त र न	27 त र	21 त र ग	18½ ग भ त	24½ भ त	26 भ	34	28 न	25 न य	12½ भ न तयर	20 भ व त र	13 गमर वतय	23½ ग त व	29½ व त	21½ न व त	24½ न त	24½ न त	27 ग य
	पुन. 1,2,3	20 न त र	27 त र	23 त र	20½ भ त ग	22½ भ त	23½ भ त य	31½ त य	24 न य	28 न	15½ न भ द र	22½ भ व र	17 भ व तरग	22½ य व त ग	26½ य व त	21½ न व त	24½ न त	25½ न त	27½ त ग
कर्क	पुन. 4	22½ ब न त	29½ ब त	25½ ब त ग	22 उ ग त र	24 ब त य र	25 ब त य र	18 बभव रतय	10½ बभव नयर	14½ ब भ रनत	28 न	35	29½ त ग	16½ बभय ग त	20½ ब भ त य	15½ ब भ न त	18 न भ त र	19 न ब वतर	21 ब ग वतर
	पुष्य 1,2,3,4	30½ ब त	21½ ब न त	26½ ब त ग	23 ब त र ग	25 ब त र	18 ब न त र	11 बभन वतर	18 ब भ वतर	21½ ब भ व र	35	28 न	30 ग	19½ ब भ ग त	15½ ब भ न त	23½ ब भ त	26 ब व त र	27 ब व त र	12 नबवय तरग
	आश्ले. 1,2,3,4	26 ब ग	24½ ब ग त	22½ न ब त	19 न ब त र	11 गबत नयर	19 ग ब तयर	12 गबत भवयर	12 गबभ वतयर	15 गबत भवर	28½ ग त	29 ग	28 न	15 य ब भ न	15½ गबय भ त	18½ ग द भ त	21 ग ब वतर	21 ग ब वतर	26 ब व त र
सिंह	मघा 1,2,3,4	20 ग व भ	20 ग व भ	16½ व भ न त	17½ दब रनत	9½ वबत गरनय	17½ वबत गरय	21½ व ब गतय	22½ व ब ग त	20½ व ब गयत	16½ ग भ य त	19½ ग भ त	16 न भ य	28 न	30 ग	27½ ग त	16½ व ब गभत	16½ व ब गभत	21½ व ब भ त
	पू.फा. 1,2,3,4	26 व भ	18 व भ न	20 ग व भ	21 ब व र ग	23½ व ब रतय	15½ वबन रतय	19½ व ब नतय	28½ व ब त	26½ व ब त य	22½ य भ त	17½ भ न त	16½ ग भ य त	30 ग	28 न	35	24 व ब भ	22½ व ब भ त	7½ वबत गनभ
	उ.फा. 1	16½ व भ त न	26 व भ	20 व ग भ	21 व ब ग र	26 व ब र	24½ व ब र त	28½ व ब त	20½ व ब न त	21½ व ब न त	17½ भ न त	25½ भ त	19½ ग भ त	27½ ग त	35	28 न	17 व ब भ न	16 व ब भ न	13½ वयब तगभ
कन्या	उ.फा. 2,3,4	13 भ न त र	22½ भ र	16½ ग भ र	21 ग भ	26 भ	24½ भ त	31½ ब त	23½ न ब त	24½ न ब त	20 न व त र	28 व त र	22 ग व त र	17½ ग व भ त	25 भ व	18 व भ न	28 न	27 न	24½ य ग त
	हस्त 1,2,3,4	10 य भ नतर	20 भ त र	17½ भ र ग	22 भ ग	25 भ	26 भ	33 ब	22½ न ब त	24½ न ब त	20 न व त र	28 व त र	23 व त र ग	18½ व भ त ग	22½ व भ त	16 व भ न	26 न	28 न	28 य ग
	चित्रा 1,2	13 गभत यर	5 गभन तयर	19 भ त य र	23½ भ त य	.20 ग भ	12 ग भ न	19 ग ब न	26 ग ब य	25½ ग ब त	21 ग व त र	12 गनव तयर	27 व त र	22½ व भ त	8½ ग व भनत	14½ व य गभत	24½ ग य त	27 ग य	28 न

(ब =वर्णदोष। व =वश्यदोष। त =तारादोष। य =योनिदोष। र =राशीदोष। ग =गणदोष। भ =भकूट दोष। न =नाडी दोष।)

षट्कूट चक्र

वर्ण, वश्य, योनि, राशीश, गण और नाड़ी ज्ञापक चक्र।

राशि	मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या		
नक्षत्र	अश्वि.	भर	कृ.	कृ.	रो.	मृ.	मृ.	आर्द्रा	पुन.	पुन.	पुष्य	आश्ले.	मघा	पू.फा.	उ.फा.	उ.फा.	ह.	चि.
चरण	१, २ ३,४	१,२ ३,४	१	२,३ ४	१,२ ३,४	१,२	३,४	१,२ ३,४	१,२ ३	४	१,२ ३,४	१,२ ३,४	१,२ ३,४	१,२ ३,४	१	२,३ ४	१,२ ३,४	१,२
वर्ण	क्ष.	क्ष.	क्ष.	वै.	वै.	वै.	शू.	शू.	शू.	ब्रा.	ब्रा.	ब्रा.	क्ष.	क्ष.	क्ष.	वै.	वै.	वै.
वश्य	च.	च.	च.	च.	च.	च.	द्वि.	द्वि.	द्वि.	ज.	ज.	ज.	व.	व.	व.	द्वि.	द्वि.	द्वि.
योनि	अ.	ग.	मे.	मे.	स.	स.	स.	श्वा.	मा.	मा.	मे.	मा.	मू.	मू.	गौ.	गौ.	म	व्या.
राशीश	म.	म.	म.	शु.	शु.	शु.	बु.	बु.	बु.	चं.	चं.	चं.	सू.	सू.	सू.	बु.	बु.	बु.
गण	दे.	म.	रा.	रा.	म.	दे.	दे.	म.	दे.	दे.	दे.	रा.	रा.	म.	म.	म.	दे.	रा.
नाड़ी	आ.	म.	अ.	अ.	अ.	म.	म	आ.	आ.	आ.	म.	अ.	अ.	म.	आ.	आ.	आ.	म.

राशि	तुला			वृश्चिक			धनु			मकर			कुम्भ			मीन		
नक्षत्र	चि.	स्वा	वि.	वि.	अनु.	ज्ये.	मू.	पू.षा.	उ.षा.	उ.षा.	श्रव.	ध.	ध.	श.	पू.भा.	पू.भा.	उ.भा	रेव.
चरण	३,४	१,२ ३,४	१,२ ३	४	१,२ ३,४	१,२ ३,४	१,२ ३,४	१,२ ३,४	१	२,३ ४	१,२ ३,४	१,२	३,४	१,२ ३,४	१,२ ३	४	१,२ ३,४	१,२ ३,४
वर्ण	शू.	शू.	शू.	ब्रा.	ब्रा.	ब्रा.	क्ष.	क्ष.	क्ष.	वै.	वै.	वै.	शू.	शू.	शू.	ब्रा.	ब्रा.	ब्रा.
वश्य	द्वि.	द्वि.	द्वि.	की.	की.	की.	द्वि.	द्वि.	द्वि.	ज.	ज.	ज.	द्वि.	द्वि.	द्वि.	ज.	ज.	ज.
योनि	व्या.	म.	व्या.	व्या.	मृ.	मृ.	श्वा.	वा.	न.	न.	वा.	सि.	सि.	अ.	सि.	सि	गौ.	ग.
राशीश	शु.	शु.	शु.	म.	म.	म.	गु.	गु.	गु.	श.	श.	श.	श.	श.	श.	गु.	गु.	गु.
गण	रा.	दे.	रा.	रा.	दे.	रा.	रा.	म.	म.	म.	दे.	रा.	रा.	रा.	म.	म.	म.	दे.
नाड़ी	म.	अं.	अं.	अं.	म.	आ.	आ.	म.	अं.	अं.	अं.	म.	म.	आ.	आ.	आ.	म.	अं.

वर्ण- ब्रा.= ब्राह्मण, क्ष= क्षत्रिय, वै= वैश्य, शू.=शूद्र

योनि- अ.=अश्व, ग=गज, मे=मेष, स=सर्प, श्वा.=श्वान, मा.=मार्जार, मू = मूषक,म=महिष, व्या=व्याघ्र, मृ=मृग, वा=वानर, न=नकुल, सिं=सिंह

गण- दे=देव, म=मनुष्य, रा=राक्षस

वश्य- च=चतुष्पद, की=कीट, व= वनचर, द्वि=द्विपद, ज=जलचर

राशीश- सू=सूर्य, चं=चन्द्र, मं.=मंगल, बु=बुध, गु=गुरु, शु=शुक्र, श=शनि

नाड़ी- आ=आद्य, म=मध्य, अं=अन्त्य

मेलापक सारणी (भाग 1)

वर / कन्या		मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या		
		अश्वि. 1,2,3,4	भर. 1,2,3,4	कृत्ति. 1	कृत्ति. 2,3,4	रोहि. 1,2,3,4	मृग. 1,2	मृग. 3,4	आर्द्रा 1,2,3,4	पुन. 1,2,3	पुन. 4	पुष्य 1,2,3,4	आश्ले. 1,2,3,4	मघा 1,2,3,4	पू.फा. 1,2,3,4	उ.फा. 1	उ.फा. 2,3,4	हस्त 1,2,3,4	चित्रा 1,2
मेष	अश्वि. 1,2,3,4	28 न	33	28½ त	18½ ब भ त	21½ ब भ त	22½ ब भ त	26 ब त र	17 ब न त र	19 ब न त र	23½ न त	31½ त	28 ग	21 व भ ग	25 व भ	15½ व भ न त	11 ब भ नतर	9 तबभ यनर	13 व भ त र
	भर. 1,2,3,4	34	28 न	29 ग	19 ब ग भ	21½ ब भ त	14½ ब भ त न	18 न ब त र	26 ब त र	27 ब त र	31½ त	23½ न त	25½ ग त	20 ग व भ	18 व भ न	26 व भ	21½ ब भ र	20 ब भ र त	4 बभग नतर
	कृत्ति. 1	27½ ग त	29 ग	28 न	18 ब भ न	10 ग ब न भ	16½ ग ब भ त	20 ग ब त	20 ग ब त	21 ग ब त र	25½ ग त	26½ ग त	23½ न त	16½ व भ न त	20 ग व भ	20 ग व भ	15½ ग व भ	15½ ग व भ र	18 ब भ त
वृष	कृत्ति. 2,3,4	18½ ग भ त	20 ग भ	19 भ न	28 न	20 ग न	26½ ग त	17½ ग ब भ त	17½ ब ग भ त	18½ ग ब भ त	22 ग त र	23 ग त र	20 न त र	18½ न व त र	22 र व ग	22 र व ग	21 ग भ	21 ग भ	23½ भ त
	रोहि. 1,2,3,4	23½ भ त	23½ भ त	11 ग भ न	20 ग न	28 न	36	27½ ब भ	23½ ब भ त	22½ भ ब त य	26 त र य	27 त र	12 ग न तरय	10½ रवग नतय	24½ र व त य	27 र व	26 भ	26 भ	20 ग भ
	मृग. 1,2	23½ भ त	14½ भ न त	18½ भ त ग	27½ त ग	35	28 न	19 ब भ न	24 ब भ	22½ ब भ त य	26 त य र	19 त र न	21 त र य ग	19½ गरव त य	15½ र व नतय	24½ र व त	23½ भ त	26 भ	13 भ न ग
मिथुन	मृग. 3,4	27 तर	18 न त र	22 त र ग	19½ भ ग त	27 भ	20 भ न	28 न	33	31½ त य	19 भ व तयर	12 भ न वतर	14 भवत यगर	23½ व त य ग	19½ व न त य	28½ व त	31½ त	34	21 न ग
	आर्द्रा 1,2,3,4	19 त र न	27 त र	21 त र ग	18½ ग भ त	24½ भ त	26 भ	34	28 न	25 न य	12½ भ न तयर	20 भ व त र	13 गभर वतय	23½ ग त व	29½ व त	21½ न व त	24½ न त	24½ न त	27 ग य
	पुन. 1,2,3	20 न त र	27 त र	23 त र	20½ भ त ग	22½ भ त	23½ भ त य	31½ त य	24 न य	28 न	15½ न भ द र	22½ भ व र	17 भ व तरग	22½ य व त ग	26½ य व त	21½ न व त	24½ न त	25½ न त	27½ त ग
कर्क	पुन. 4	22½ ब न त	29½ ब त	25½ ब त ग	22 ज ग त र	24 ब त य र	25 ब त य र	18 बभव रतय	10½ बभव नयर	14½ ब भ रनत	28 न	35	29½ त ग	16½ बभय ग त	20½ ब भ त य	15½ ब भ न त	18 न भ त र	19 न ब वतर	21 ब ग वतर
	पुष्य 1,2,3,4	30½ ब त	21½ ब न त	26½ ब त ग	23 ब त र ग	25 ब त र	18 ब न त र	11 बभन वतर	18 ब भ वतर	21½ ब भ व र	35	28 न	30 ग	19½ ब भ ग त	15½ ब भ न त	23½ ब भ त	26 ब व त र	27 ब व त र	12 नबवय तरग
	आश्ले. 1,2,3,4	26 ब ग	24½ ब ग त	22½ न ब त	19 न ब त र	11 गबत नयर	19 ग ब तयर	12 गबत भवयर	12 गबभ वतयर	15 गबत भवर	28½ ग त	29 ग	28 न	15 य ब भ न	15½ गबय भ त	18½ ग ए भ त	21 ग ब वतर	21 ग ब वतर	26 ब व त र
सिंह	मघा 1,2,3,4	20 ग व भ	20 ग व भ	16½ व भ न त	17½ वब रनत	9½ दबत गरनय	17½ वबत गरय	21½ व ब गतय	22½ व ब ग त	20½ व ब गयत	16½ ग भ य त	19½ ग भ त	16 न भ य	28 न	30 ग	27½ ग त	16½ व ब गभत	16½ व ब गभत	21½ व ब भ त
	पू.फा. 1,2,3,4	26 व भ	18 व भ न	20 ग व भ	21 ब व र ग	23½ व ब रतय	15½ वबन रतय	19½ व ब नतय	28½ व ब त	26½ व ब त य	22½ य भ त	17½ भ न त	16½ ग भ य त	30 ग	28 न	35	24 व ब भ	22½ व ब भ त	7½ दबत गनभ
	उ.फा. 1	16½ व भ त न	26 व भ	20 व ग भ	21 व ब ग र	26 व ब र	24½ व ब र त	28½ व ब त	20½ व ब न त	21½ व ब न त	17½ भ न त	25½ भ त	19½ ग भ त	27½ ग त	35	28 न	17 व ब भ न	16 व ब भ न	13½ वयब तगभ
कन्या	उ.फा. 2,3,4	13 भ न त र	22½ भ र	16½ ग भ र	21 ग भ	26 भ	24½ भ त	31½ ब त	23½ न ब त	24½ न ब त	20 न व त र	28 व त र	22 ग व त र	17½ ग व भ त	25 भ व	18 व भ न	28 न	27 न	24½ य ग त
	हस्त 1,2,3,4	10 य भ नतर	20 भ त र	17½ भ र ग	22 भ ग	25 भ	26 भ	33 ब	22½ न ब त	24½ न ब त	20 न व त र	28 व त र	23 व त र ग	18½ व भ त ग	22½ व भ त	16 व भ न	26 न	28 न	28 य ग
	चित्रा 1,2	13 गभत यर	5 गभन तयर	19 भ त य र	23½ भ त य	20 ग भ	12 ग भ न	19 ग ब न	26 ग ब य	25½ ग ब त	21 ग व त र	12 गनव तयर	27 व त र	22½ व भ त	8½ ग व भनत	14½ व य गभत	24½ ग य त	27 ग य	28 न

(ब =वर्णदोष। व =वश्यदोष। त =तारादोष। य =योनिदोष। र =राशीदोष। ग =गणदोष। भ =भकूट दोष। न =नाडी दोष।)

मेलापक सारणी (भाग 2)

वर / कन्या		तुला चित्रा 3,4	तुला स्वाती 1,2,3,4	तुला विशा. 1,2,3	वृश्चिक विशा. 4	वृश्चिक अनु. 1,2,3,4	वृश्चिक ज्ये. 1,2,3,4	धनु मूल 1,2,3,4	धनु पूषा. 1,2,3,4	धनु उ.षा. 1	मकर उ.षा. 2,3,4	मकर श्रव. 1,2,3,4	मकर धनि. 1,2	कुम्भ धनि. 3,4	कुम्भ शत. 1,2,3,4	कुम्भ पूभा. 1,2,3	मीन पूभा. 4	मीन उ.भा. 1,2,3,4	मीन रेव. 1,2,3,4
मेष	अश्वि. 1,2,3,4	22½ ब य त ग	26½ ब य त	22½ त ब य ग	18½ ग भ त य	25½ भ त	14 भ न ग	13½ भ न ग	25 भ	23½ भ त	25 ब त र	26 ब त र	20 ब त यरग	20 ब त यरग	15 ब न तरग	16 ब न तयर	14½ न भ त य	24½ भ त	26 भ
	भर. 1,2,3,4	13½ बगन तय	29½ ब त	21½ ग ब त य	17½ ग भ त य	17½ न भ त	19½ ग भ त	20 ग भ	18 न भ	26 भ	27½ ब र	26 ब त र	10 ब य गनतर	10 ब य गनतर	20 ग ब त र	24 ब य त र	22½ त भ य	17½ न भ त	26½ भ त
	कृत्ति. 1	27½ ब त य	15½ ब ग न त	19½ ब न त य	15½ भ न त य	19½ ग भ त	25½ भ त	24½ भ त	18 ग भ य	12 ग भ न	13½ ब ग न र	11½ ब य रगन	25 ब त य र	25 ब त य र	27 ब त र	19 ब ग तयर	17½ ग भ त य	19½ ग भ त	11½ [illegible]
वृष	कृत्ति. 2,3,4	22½ ब भ त य	10½ ग ब भनत	14½ ब भ तनय	20½ न त य	24½ ग त	30½ त	20 भ तर	13½ य ग भ र	7½ ग भ न र	12 ग भ न	10 य ग भ न	23½ भ त य	29½ ब त य	31½ ब त	23½ ग ब त य	20 ग त य र	22 ग त र	14 [illegible]
	रोहि. 1,2,3,4	19 ग ब भ	15½ ब भ न त	9½ तबग न भ	15½ ग न त	29½ त	23½ ग त	14 ग भ त र	19 र भ त य	11½ य भ न र	16 भ य न	17 न भ य	20 ग भ	26½ ग ब	24½ ग ब त	30½ ब त	27 त र	27 त र	[illegible]
	मृग. 1,2	12 ब भ न ग	25 ब भ	18½ ब भ त ग	24½ त ग	21½ न त	24½ त ग	15 भ त र ग	10 न भ तयर	17 य भ तर	21½ भ य त	25 भ य	13 न भ ग	19 ब ग न	27 ब ग	29½ ब त	26 त र	18 न त र	[illegible]
मिथुन	मृग. 3,4	14 न भ ग	27 भ	20½ भ त ग	14 भ व तरग	11 भवन त र	14 भ व तरग	23 त र ग	18 न त य र	25 य त र	20 भ य व त	23½ भ व य	11½ न भ व ग	13 न भ ग	21 भ ग	23½ भ त	25½ त व र	17½ न व त र	[illegible]
	आर्द्रा 1,2,3,4	20 ग भ य	27 भ	20 ग भ य	13½ रगव भ य	17 त भ वयर	3 यतगव मनर	16 ग न त र	28 त र	28 त र	23 भ व त	23 भ व त	17½ ग भ व य	19 ग भ य	12 ग भ न	17 न भ य	19 न र व य	26½ व त र	[illegible]
	पुन. 1,2,3	20½ भ त ग	28 भ	22 भ ग	15½ व भ र ग	21½ व भ र	7 रगव भनत	14 यरत न ग	27 त र	27 त र	22 व त भ	23 व त भ	17 वतभ य ग	18½ भ ग त य	14 न भ ग	16 न भ य	18 र न य व	28 र व	[illegible]
कर्क	पुन. 4	20½ ब त र ग	28 व र ब	22 व र ब ग	20 ग भ	26 भ	11½ त ग भ न	8 वतब भगनय	21 ब भ व त	21 ब भ व त	26 ब त र	27 ब त र	21 बगत य र	12½ बभव तयगर	8 बभव नगर	10 बभर नवय	16 न भ य	20 भ	[illegible]
	पुष्य 1,2,3,4	11½ गनबव तयर	26½ ब व त र	21 रबग व य	19 भ य ग	18 भ न	21 भ ग	17 गबभ व त	11 यबभ तनव	21 ब भ व त	26 ब त र	25 ब य त र	13 गबन तयर	4½ भबगय वनतर	14½ बवत रगभ	18 बभव य र	24 भ य	18 न भ	
	आश्ले. 1,2,3,4	25½ ब व त र	12½ गबव तरन	17½ नबव त र	15½ न भ त	20 ग भ	26 भ	22½ ब भ व य	16 गबव भ त	8 गबव भनत	13 गबर न त	13 बगत न र	26 ब त य र	17½ बभव तरय	19½ बभव त र	11½ गबभ वतयर	17½ ग भ त य	21 ग भ	
सिंह	मघा 1,2,3,4	24½ ब व त र	11½ बवत रगन	16½ बवत र न	22½ न व त	25½ ग व त	33 व	25 भ व	19 ग व भ	8½ वगभ नतय	3½ बरतय गभन	4½ बरत गभन	18½ ब र त भ	24½ ब व त र	25½ ब व त र	18½ बवर ग त	18½ ग भ त	19½ ग भ त	
	पूफा. 1,2,3,4	10½ बवत रगन	25½ ब व त र	18½ बवर ग त	24½ ग व त	23½ न व त	25½ ग व त	19 ग व भ	17 भ व न	24 भ व न	17 ब र भ य	18½ ब त भ त	4½ बरत गभन	10½ बवत रगन	19½ बवर ग त	24½ ब व र त	24½ भ त	17½ न भ त	
	उ.फा. 1	16½ बवत यगर	25½ ब व त र	16½ बवय गतर	22½ य व ग त	31½ व त	17½ ग व त न	9½ ग व नभत	25 भ व	25 भ व	20 ब र भ	20 ब र भ	11½ बरत गभय	17½ बवत गरय	11½ बवत गनर	15½ बवत नरय	15½ न भ त य	26½ भ त	
कन्या	उ.फा. 2,3,4	16½ गबय भ त	25½ ब भ त	16½ गबय भ त	18 यवत ग र	27 व त र	13 गवत न र	14 ग न त र	29½ र	29½ र	24½ भ व	24½ भ व	16 ग भ वतय	16½ गबभ त य	10½ गबन भ त	14½ बभन तय	17½ तनव य र	28½ व त र	
	हस्त 1,2,3,4	20 ब भ य ग	26½ ब भ त	18½ ब भ तयग	20 व ग तयर	26 व त र	13 न व तरग	15 न त र ग	27 त र	28½ र	23½ भ व	24½ भ व	18½ भ ग व य	19 ब भ य ग	8½ ययभ नतग	13½ ब भ नतय	16½ वनत य र	26½ व त र	
	चित्रा 1,2	20 ब भ न	19 ग ब भ य	26½ ब भ त	28 व त र	11 गवन तयर	25 ब त य र	27 त य र	14 ग न त र	22 ग त र	17 ग भ त	18½ ग भ व	15½ भ व न य	16 ब य भ न	24 ब भ य	16½ गबत भ य	19½ गवत य र	10½ गयव नतर	

(ब = [illegible]दोष। व =वश्यदोष। त =तारादोष। य =योनिदोष। र =राशीशदोष। ग =गणदोष। भ =भकट दोष। न =नाड़ी दोष।)

मेलापक सारणी (भाग 3)

कन्या \ वर		मेष			वृष			मिथुन		
		अश्वि. 1,2,3,4	भर. 1,2,3,4	कृत्ति. 1	कृत्ति. 2,3,4	रोहि. 1,2,3,4	मृग. 1,2	मृग. 3,4	आर्द्रा 1,2,3,4	पुन. 1,2,3
तुला	चित्रा 3,4	22½ गतय	14½ गनतय	28½ तय	23½ भतय	20 गभ	12 गभन	13 गभन	21 गभ	19½ गभत
	स्वाती 1,2,3,4	27½ यत	29½ त	17½ नत	12½ भनत	15½ भनत	26 भ	27 भ	26 भ	28 भ
	विशा. 1, 2,3	22½ तयग	22½ तयग	20½ तयन	15½ तभनय	10½ गभतन	18½ गभत	19½ गभत	20 गभय	21 गभ
वृश्चिक	विशा. 4	16½ बगभयत	16½ बगभयत	14½ बभनयत	19½ बनयत	14½ बगनत	22½ बगत	12 बवरगभत	12½ वबयगभर	13½ बवगभर
	अनु. 1,2,3,4	24½ बभत	15½ बभनत	19½ बभगत	24½ बतग	27½ बत	20½ बनत	10 बवतनभर	15½ तबवरभय	20½ बवभर
	ज्येष्ठा 1,2, 3,4	12 बगभन	18½ बगतभ	24½ बभत	29½ बत	22½ बगत	22½ बगत	12 तबवगभर	2 तवबयगभनर	5 तबवरगभन
धनु	मूल 1,2,3,4	12 गभन	20 गभ	24½ भत	19 बभतर	13 बगतभर	13 रबगतभ	21 बगतर	15 बगनतर	12 रबगतनय
	पूषा. 1,2,3,4	26 भ	18 भन	18 गभय	12½ बयगभर	18 बभतयर	10 रबभतनय	18 बनतयर	27 बतर	27 बतर
	उ.षा 1	24½ भत	26 भ	12 गभन	6½ रबयभन	10½ बयरभन	17 बयतभर	25 बयतर	27 बतर	27 बतर
मकर	उ.षा. 2,3,4	27 तर	28½ र	14½ गनर	12 गभन	16 भनय	22½ यभत	20 बयतभ	22 बभत	22 बभवत
	श्रव. 1,2,3,4	27 तर	26 तर	13½ यनर	11 यभगन	16 भनय	25 भय	22½ बभवय	21 बभवत	22 बभवत
	धनि. 1,2	20 गतयर	11 यगनतर	26 तयर	23½ भतय	20 गभ	12 गभन	9½ वबगभन	16½ वयबगभ	16 बगवतभ
कुम्भ	धनि. 3,4	20 गतयर	11 यगतनर	26 तयर	30½ तय	27 ग	19 गन	12 गभन	19 गभय	18½ गभत
	शत. 1,2,3,4	15 गनतर	21 गतर	28 तर	32½ त	25½ गत	27 ग	20 गभ	12 गभन	13 गभन
	पूभा. 1,2,3	18 नतयर	25 यतर	20 गरतय	24½ गतय	31½ त	31½ त	24½ भत	17 भनय	18 भन
मीन	पूभा. 4	14½ बभतनय	21½ बयतभ	16½ गबतभय	19 गबतयर	26 बतर	26 बतर	25½ बवतर	18 बनवयर	19 नबवर
	उ.भा. 1,2,3,4	24½ बभत	16½ बभतन	18½ गबतभ	21 गबतर	26 बतर	18 नबतर	17½ नबवतर	25½ बरवत	28 बवर
	रेव. 1,2,3,4	25 बभ	24½ बभत	11½ तगबभन	14 गबनतर	17 वनतर	26 बतर	25½ बरवत	24½ रबवत	26½ रबवत

कन्या \ वर		कर्क			सिंह			कन्या		
		पुन. 4	पुष्य 1,2,3,4	आश्ले. 1,2,3,4	मघा 1,2,3,4	पू.फा. 1,2,3,4	उ.फा. 1	उ.फा. 2,3,4	हस्त 1,2,3,4	चित्रा 1,2
तुला	चित्रा 3,4	20½ गरवत	11½ गनयवरत	26½ वतर	25½ वरत	11½ वरगनत	17½ वयगरत	17½ यगभत	20 गभय	21 भन
	स्वाती 1,2,3,4	29 वर	27½ वतर	14½ नवतर	13½ वनतग	25½ वरत	25½ वरत	25½ भत	27½ भत	21 भयग
	विशा. 1, 2,3	22 गवर	21 गतर	18½ नवतर	17½ वरतन	19½ वरतग	17½ वयरगत	17½ यगभत	18½ गभतय	27½ भत
वृश्चिक	विशा. 4	19 गभ	18 गभय	15½ भनत	21½ बवनत	23½ बवगत	21½ बवगयत	17 तबवगयर	18 बवगतयर	27 बवतर
	अनु. 1,2,3,4	26 भ	18 भन	21 भग	24½ बवतग	20½ बवतन	29½ बवत	25 बवतर	26 बवत	11 बरवनतय
	ज्येष्ठा 1,2, 3,4	10½ तगभन	20 गभ	26 भ	31 बव	23½ बवगत	16½ तबवगन	12 तबवगनर	12 तबवगनर	24 बवतयर
धनु	मूल 1,2,3,4	8 यगभवनत	17 गभवत	23½ भवय	25 वभ	19 वगभ	9½ तवगभन	13 तरबगन	13 तरबगन	26 रबतय
	पूषा. 1,2,3,4	23 भवत	13 यभनवत	17 गभवत	19 वगभ	17 वभन	25 वभ	28½ बर	27 बतर	13 तबगनर
	उ.षा 1	23 भवत	23 भवत	9 गभवनत	8½ तगवयभन	24 वभय	25 वभ	28½ बर	28½ बर	21 गबतर
मकर	उ.षा. 2,3,4	28 तर	28 तर	14 गनतर	4½ तयरगभन	20 रभय	21 रभ	24½ भत	24½ वभ	17 गभवत
	श्रव. 1,2,3,4	28 त	26 यतर	15 नतर	6½ तगरभन	18½ रभत	20 भर	23½ भव	24½ भव	19½ भव
	धनि. 1,2	22 गतर	13 रगनतय	28 तर	19½ रभत	5½ तगरभन	12½ तयरगभ	16 गभवतय	17½ गभव	15½ भनवय
कुम्भ	धनि. 3,4	13½ गभवतर	4½ तयरगभनव	19½ भवतर	25½ वतर	11½ वतरगन	18½ वरगतय	17½ गभतय	19 गभय	17 यभन
	शत. 1,2,3,4	8 गभवनर	14½ गभवतर	20½ वभतर	26½ वरत	20½ वरगत	12½ वरतगन	11½ तगनभ	8½ तयगनभ	25 भय
	पूभा. 1,2,3	13 भनव	20 भरवय	13½ गभवतर	19½ वरतग	25½ वरत	16½ वरयनत	15½ भनत	15½ भनतय	17½ गभतय
मीन	पूभा. 4	18 नभ	25 भय	18½ गभत	17½ बगतभ	23½ बभत	14½ बभतनय	16½ रबनवतय	16½ रबनवतय	18½ रबगवतय
	उ.भा. 1,2,3,4	27 भ	19 भन	21 गभ	18½ गबतभ	16½ बभन	25½ बभत	27½ बवतर	26½ बवतर	9½ बतरवयगन
	रेव. 1,2,3,4	25½ भत	27 भ	14 भनग	13 बभगन	23½ बभत	23½ बभत	25½ बरवत	26½ बरवत	19½ बयरवतग

(ब =वर्णदोष। व =वश्यदोष। त =तारादोष। य =योनिदोष। र =राशीदोष। ग =गणदोष। भ =भकूट दोष। न =नाडी दोष।)

मेलापक सारणी (भाग 4)

कन्या \ वर		तुला			वृश्चिक			धनु			मकर			कुम्भ			मीन		
		चित्रा 3,4	स्वाती 1,2,3,4	विशा. 1,2,3	विशा. 4	अनु. 1,2,3,4	ज्ये. 1,2,3,4	मूल 1,2,3,4	पूषा. 1,2,3,4	उ.षा. 1,	उ.षा. 2,3,4	श्रव. 1,2,3,4	धनि. 1,2,	धनि. 3,4	शत. 1,2,3,4	पूभा. 1,2,3	पूभा. 4	उ.भा. 1,2,3,4	रेव. 1,2,3,4
तुला	चित्रा 3,4	28 न	27 ग य	34½ त	23½ भ द त	6½ यगव तनभ	20½ भ व त य	27 त य र	14 ग भ त र	22 ग त र	25 ग त व	26½ ग व	23½ न व य	18 न भ य	26 भ य	18½ ग भ त य	12½ गभव तयर	3½ वतयग भनर	12½ यरग भवत
	स्वाती 1,2,3,4	28 य ग	28 न	20 न य ग	9 भवय न ग	21½ भ व त	16½ भ व त ग	23 त र ग	27 त र ग	19 त न र	22 न व त	23 न व त	26½ व य ग	21 य ग भ	20 ग य भ	25 य भ	19 व भ य र	19½ व त भ र	12½ वतभ न र
	विशा. 1,2,3	34½ त	19 ग न य	28 न	17 भ व न	16 ग व भ य	20½ भ व त य	27 त य र	22 ग त र	14 ग न त र	17 ग न व त	17 ग न व त	30 व त य	24½ भ त य	26 भ य	20 ग भ य	14 गभव य र	13 गयभ त र	4½ गभव नतयर
वृश्चिक	विशा. 4	22½ ब व भ त	7 बवग नभय	16 ब व न भ	28 न	27 ग य	31½ त य	21½ बवत य भ	16½ बवग भ त	8½ दवग नभत	12 गबन त र	12 बनग त र	25 ब त य र	24 बवत य र	25½ ब व य र	19½ बवग य र	19 ग भ य	18 ग य भ	9½ गभन त य
	अनु. 1,2,3,4	6½ बवतभ यगन	21½ ब व भ त	16 बवभ य ग	28 य ग	28 न	31 ग	15½ बवत गयभ	13½ तबव न भ	21½ ब व त भ	25 ब त र	26 ब त र	12 तयब नरग	11 तयबव नरग	21 बवत र ग	24½ ब व य र	24 भ य	18 न भ	27 भ
	ज्येष्ठा 1,2,3,4	19½ बवत भ य	15½ तबव ग भ	19½ बवभ त य	31½ त य	30 ग	28 न	14 बवन भ य	16½ बवत ग भ	16½ बवत ग भ	20 ग व त र	20 ग ब त र	25 ब त य र	24 बवत य र	18 बवन र त	10 तबवय गनर	9½ गभत न य	21 ग भ	21 ग भ
धनु	मूल 1,2,3,4	26 त ब य र	21 ग ब त र	26 त ब य र	22½ भ व त य	15½ गवभ य त	15 य व न भ	28 न	28 ग	26½ ग त	15 गबभ व त	15 गबभ व त	20 बभव त य	28½ ब व य	21½ ब न त	14½ गनब त य	16 गनव त य	25 ग व त	26 ग व
	पूषा. 1,2,3,4	13 गबत न र	27 ब त र	21 ग ब त र	17½ ग व भ त	15½ भ व न त	17½ ग व भ त	28 ग	28 न	34	22½ ब भ व	23 ब भ व त	6 गबवभ नतय	14½ गबत न य	23½ ग ब त	28½ ब त य	30 व त य	23 न व त	31 व त
	उ.षा 1	21 ग ब त र	19 न ब त र	13 गबन त र	9½ गवभ न त	23½ भ व त	17½ ग व भ त	26½ ग त	34	28 न	16½ ब भ व न	14½ ब भ व न	15 गबव भ त	23½ ग ब त	23½ ग ब त	29½ ब त	31 व त	31 व त	23 न व त
मकर	उ.षा. 2,3,4	24 ग ब त	22 न ब व त	16 ग ब न त	13 ग न त र	27 त र	21 ग त र	16 ग भ व त	23½ भ व	17½ न भ व	28 न	26 न	26½ ग त	17 गबभ व त	17 गबव भ त	23 ब भ व त	30½ त	30½ त	22½ न त
	श्रव. 1,2,3,4	26½ ब व ग	22 न ब व त	17 नबग व त	14 न त र	27 त र	22 त र	17 भ व त ग	23 भ व त	14½ न भ व	25 न	28 न	28 य ग	18½ बभव य ग	18 बभव त ग	21 बभव त य	28½ त य	29½ त	22½ न त
	धनि. 1,2	22½ न ब व य	24½ ग ब व य	29 ब व त य	26 त य र	12 गनत य र	26 त य र	21 भ व त य	7 गभय वनत	16 ग भ व त	26½ ग त	27 ग य	28 न	18½ ब भ न व	23½ ब भ व य	19 गबव त भ	26½ ग त	15½ ग न त य	22½ ग य त
कुम्भ	धनि. 3,4	18 न भ य	20 ग भ य	24½ भ त य	25 त व य र	11 गवय तनर	25 त व य र	29½ त य	15½ ग त न य	24½ त ग	18 ग भ व त	18½ ग भ व य	19½ भ व न	28 न	33 य	28½ ग त	18 ग भ व त	7 तगभ वनय	14 गयव भ त
	शत. 1,2,3,4	26 भ य	19 भ य ग	26 भ य	26½ य व र	21 ग व त र	19 न व त र	22½ न त	24½ ग त	24½ ग त	18 ग भ व त	18 ग भ व त	24½ भ व य	33 य	28 न	19 ग न य	8½ गभव न य	17 ग भ व त	16 ग भ व त
	पूभा. 1,2,3	18½ ग भ त य	26 भ य	20 ग भ य	20½ ग व य र	26½ व य र	11 गवत यनर	15½ न ग त य	29½ त य	30½ त	24 भ व त	23 भ व त य	20 भ ग व त	28½ ग त	19 न ग य	28 न	17½ न भ व	22½ भ व य	20 भ य व त
मीन	पूभा. 4	11½ गबवभ तयर	19 बभव य र	13 गबव भयर	19 ग भ य	25 भ य	9½ गभन त य	15 गबत न य	29 ब व त य	30 ब व त	29½ ब त	28½ ब त य	25½ ग ब त	17 ग ब भ त	7½ गबय भतन	16½ ब भ त न	28 न	33 य	30½ य त
	उ.भा. 1,2,3,4	2½ यवबर गभनत	19½ भवब त र	12 गवर भयब	18 ग य भ	19 न भ	21 ग भ	24 ग ब व त	22 न ब व त	30 ब व त	29½ ब त	29½ ब त	14½ गबत न य	6 गबवन भतय	16 गबव भ त	21½ ब भ त य	33 य	28 न	35
	रेव. 1,2,3,4	12½ बभव तयर	11½ बभत दनर	4½ बभवन तगयर	10½ नभत य ग	27 भ	22 भ ग	26½ ब ग व	29 ब व त	21 न ब व त	20½ न ब त	21½ न ब त	22½ ब य त ग	14 बवय भतग	16 बभव त ग	18 बयभ वत	29½ य त	34	28 न

(ब =वर्णदोष। व =वश्यदोष। त =तारादोष। य =योनिदोष। र =राशीदोष। ग =गणदोष। भ =भकूट दोष। न =नाड़ी दोष।)

लग्न–गण्डान्त

कर्क, सिंह, वृश्चिक, धनु, मीन और मेष के अन्त एवम् आदि की आधी–आधी घड़ी लग्नगण्डान्त होता है। वह जन्म में ही भयप्रद होता है।

अथ विवाहमासाः–आचार्य चूड़ामणौ–"माङ्गल्येषु विवाहेषु कन्या–संवरणेषु च। दशमासाः प्रशस्यन्ते चैत्र–पौष–विवर्जिताः॥" वर्षासु पाणिग्रहणं न केचित् केचिद्वदन्तीत्यपरो विशेषः। तस्मात्सदाचार इह प्रमाणं देशे यथा यत्र तथैव तत्र॥ केशवेन यदि नोररीकृतं श्रावणादिषु च पाणिपीडनम्। तेन चोक्तमपरैरुदाहृतं तद्विकल्प इति मन्यते मया॥

अथ जन्म–मासादिषु निषेधः– सबसे बड़े (जेठे) लड़के अथवा सबसे बड़ी लड़की (जेठी) के जन्ममास (अर्थात् जन्मतिथि से ३० दिन) जन्मनक्षत्र अथवा जन्मतिथि में विवाह करना शुभ नहीं है। द्वितीयादि गर्भोत्पन्न को दोष नहीं है। **अत्यावश्यके परिहारः–** जातं दिनं दूषयते वशिष्ठः पञ्चैव गर्गस्त्रिदिनं तथात्रिः। तज्जन्मपक्षं किल भागुरिश्च व्रते विवाहे गमने क्षुरे च॥

यदि दो कार्यों की आवश्यकता हो तो– एक घर में दो शुभ काम करना मना है, परन्तु अति आवश्यकता में ९ दिन का अन्तर देकर दो घरों में अलग–अलग मण्डप गाड़कर और जो पुरोहित पहला कार्य करा चुका हो, उसी से दूसरा कार्य न करावें, दूसरे आचार्य से करावें। इसी प्रकार जिस गृह में पहला कार्य हुआ हो तो दूसरे कार्य में दूसरे घर में मण्डप गाड़कर कार्य को करें।

अथ ज्येष्ठ विचारः– ज्येष्ठ पुत्र व कन्या का ज्येष्ठ मास में विवाह करना अशुभ है। अत्यावश्यक्ता में कृत्तिका के सूर्य को छोड़कर दानादि पूर्वक करें।

षट्मास के भीतर दो विवाह आदि का निर्णय– दो सगी बहनों का विवाह एक साथ या छः मास के अन्दर करें तो निस्संदेह ३ वर्ष के अन्दर अशुभ फल हो। पुत्र के विवाह के पीछे षट्मास तक कन्या का विवाह न करें और कन्या व पुत्र के पीछे छः मास तक यज्ञोपवीत न करें, अर्थात् पहले कर लें और मंगलकार्य के पीछे अमंगल अर्थात् श्राद्ध, तिलतर्पण भी न करें। मुण्डन भी विवाह, जनेऊ के पीछे न करें। वर्ष पलटने पर फिर भले ही शुभकार्य कर लें। वहां छः मास का विचार नहीं है। यह ६ महीने का निषेध तीन पीढ़ी तक ही है।

विवाहादि शुभ कार्यों में मरणाशौच– साहे चिट्ठी (कुंकम पत्रिका) आने पर विवाह दिन निश्चित हो जाने पर किसी की मृत्यु हो जावे तो माता के मरण से ६ मास, पिता के मरण से एक साल, स्त्री के मरण से तीन मास, भाई व पुत्र के मरण से १ १/२ मास, कुल वालों के मरण से २२ १/२ दिन तक कोई शुभ कार्य न करें। अति संकट में ३० दिन बाद शान्ति करके अथवा विशेष शान्ति और गोदान करके अशौच के बाद करें।

त्रिबल शुद्धि विचार

विवाह के शुद्ध मुहूर्त पंचांग के अन्त में दिए गए हैं। उनमें से उत्तम मुहूर्त देखकर और उसी दिन वर की राशि से सूर्य, चन्द्र देखिए तथा कन्या राशि से चन्द्र, गुरु देखिए। बस, इसी को त्रिबलशुद्धि कहते है। यह त्रिबलशुद्धि जिस उत्तम विवाहलग्न के दिन मिले वही विवाह–दिन उत्तम है। यदि रवि, गुरु पूज्य हों तो मध्यम है, यदि सूर्य नेष्ट हो तो विवाह नहीं बनेगा–ऐसा समझें। इसी प्रकार कुमार के उपनयन में भी त्रिबल (गु.सू.चं.) शुद्धि प्रथम देखें– **"झष–चाप–कुलीरस्थो जीवोप्यशुभगोचरः अतिशोभनतां दद्याद्विवाहोपनयनादिषु॥ (बृहस्पतिः)॥** अत्यावश्यकता में **"द्विरर्च्यो द्वादशस्तुर्योऽथाष्टमस्त्रिगुणार्चनात्। उच्च उच्चांशके ग्राह्यः चन्द्रादष्टमगो रविः। नीचे नीचांशके त्याज्यः अरिलाभादिगोऽपि चेत्॥"**

तुलाराशौ अपूज्यःरविः–धर्म–धी–धनगतो दिवाकरस्तौलिराशि–जनितस्य शोभनः।।

आवश्यके पूज्यरवि–परिहारः– गार्ग्याङ्गिरोवत्स वशिष्ठ गौतम पराशराद्याः मुनयो वदन्ति। द्वितीयपञ्चांकगतो दिवाकरस्त्रयोदशाहात्परतः शुभावहः॥ (मु.प्र.सा.)।

विवाहादौ त्रिबल–शोधनम्

पूज्यगुरुः– १०/६/३/१
श्रेष्ठगुरुः–९/५/११/२/७
नेष्टगुरुः– ४/८/१२
श्रेष्ठरविः– ३/६/१०/११
पूज्यरविः– २/५/९
विशेष पूज्य रविः– १/७
नेष्टरविः– ४/८/१२
नेष्टचन्द्रः– ४/८
श्रेष्ठचन्द्रः–१/२/३/५/६/ /७/९/१०/११/१२

कन्या–वरयोःतैलादि–लापन (बन्न)–दिन–संख्या

राशि →	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
तैल सं.	७	१०	५	१०	५	७	७	५	५	५	५	७

अथ विवाहे तिथि–वार–नक्षत्राणि–रो., मृ., उत्तरा. ३, म., ह., स्वा., अनु., मू., रे. एतद्वेध–रहितेषु शुभेऽह्नि। अमाक्षय–रहित–तिथिषु कात्यायनमते अश्वि., चि., श्र., धनिष्ठास्वपि शुभम्॥

अथ विवाहांगकृत्यारम्भ मुहूर्त्तः

वर, कन्या की चन्द्रशुद्धि विचार कर विवाहदिन से पहिले ३/६/९– इन दिनों को छोड़कर विवाह के नक्षत्रों में चन्द्रशुद्धि वाली सौभाग्यवती स्त्री के प्रथमोद्योग से हल्दी हाथ, दलना, पीसना, कूटना, मंगलकशादि स्थापन करना, घर लीपना, आंगनसफाई, भूषण घढ़ाना, वस्त्र सिलाना, वेदी रचना, चन्दोया बांधना, गणेशादि पूजन और नान्दीश्राद्ध, मंगलस्नानादि सर्वकार्य का आरम्भ करना शुभ होता है।

विवाह–मुहूर्त्त में दस दोषों का विचार

विवाह के मुहूर्त्त में लत्ता, पात, युति, वेध, जामित्र, पञ्चवाण, एकार्गल, उपग्रह, क्रान्तिसाम्य और दग्धातिथि– इन दस दोषों का विचार करना आवश्यक है। इन सबका विचार करके इस वर्ष के विवाहमुहूर्त्त लग्न दिए हुए हैं। इन दसों दोषों में जो दोष जिस मुहूर्त्त में हैं, वे क्रमानुसार टेढ़ी रेखा से सूचित किए गए हैं। उक्त दसों दोषों का विचार इस प्रकार किया जाता है।

(१) लत्तादोष–ज्ञान चक्र

सूर्य	पूर्णचन्द्र	भौम	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	ग्रहाः
१२	२२	३	७	६	५	८	९	← लग्न नक्षत्र
दक्षिण	वाम	दक्षिण	वाम	दक्षिण	वाम	दक्षिण	वाम	← दिशा
धननाशः	भयम्	मृत्युः	भयम्	बन्धुनाशः	कार्यहानिः	कुलक्षयः	मरणम्	← फलम्

यथा–सूर्य अश्विनी नक्षत्र पर हो और विवाह उ.फा. का हो। सूर्यस्थित अश्विनी नक्षत्र से गिना तो, उ.फा. १२वां हुआ, यह सूर्य की लत्तादोषयुक्त साहा हुआ। इसी प्रकार अन्य ग्रहों की लत्ता भी जानें।

(२) पातदोष ज्ञानचक्र

रो.	मृ.	मघा	उ.फा.	ह.	स्वा.	अनु.	मू.	उ.षा.	उ.भा.	रे.	विवाह नक्षत्र
आर्द्रा पुन. श. पू.फा. चि. मू.	मृ. आ. ज्ये. ध. म. ह.	अ. मृ. ज्ये. पुष्य ह. रे.	कृ. आ. वि. पू.फा. उ.भा. पू.भा.	भ. मृ. श. पू.भा. स्वा. म.	कृ. श्र. ध. पुष्य ह. रे.	अ. आ. उ.षा. पू.भा. पू.षा. पू.फा.	रो. ज्ये. ध. आश्ले. मू. उ.भा.	भ. पुन. श. वि. अनु. उ.षा.	भ. श. वि. उ.फा. पू.फा. मू.	अ. ज्ये. ध. म. पू.फा. स्वा.	सूर्याधिष्ठित नक्षत्र

हर्षण, वैधृति, साध्य, व्यतिपात, गंड और शूल योगों का अन्त जिस नक्षत्र में हो वह पात से दूषित होता है। इन नक्षत्रों में विवाह करने से पात दोष होता है।

(३) युतिदोष

जिस नक्षत्र का विवाह हो उसी नक्षत्र में यदि कोई ग्रह हो तो वहां उस ग्रह की युति का दोष समझा जाता है। चन्द्र उच्च, मित्र वा स्वक्षेत्री हो तो युति दोष नहीं होता, किन्तु श्रेष्ठ है। सू., मं., शु., श., रा., के. की युति दारिद्र्य, मृत्यु आदि भयप्रद मानी गई है। शुक्र की युति विशेष करके वर्जित है।

(४) वेध दोषचक्र

अश्वि.	रोहि.	मृग.	मघा	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वा.	अनु.	मूल	उ.षा.	श्रव.	धनि.	उ.भा.	रेव.
पू. फा.	अभि.	उ. षा.	श्रव.	रेव.	उ. भा.	पू. भा.	शत.	भर.	पुन.	मृग.	मघा	आश्ले.	हस्त	उ. फा.

ऊपर के नक्षत्र का विवाह हो और नीचे के नक्षत्र पर ग्रह हो तो वेधदोष होता है। यह सर्वत्र अवश्य ही त्याग देना चाहिए।

(५) जामित्र दोषचक्र

विवाह नक्षत्र→	रो.	मृग.	म.	उ.फा.	ह.	स्वा.	अनु.	मू.	उ.षा.	उ.भा.	रे.
ग्रह नक्षत्र→	अनु.	ज्ये.	ध.	पू.भा.	उ.भा.	अ.	कृ.	मृग.	पुन.	उ.फा.	ह.

विवाहलग्न से सातवें ग्रह होने से जामित्रदोष होता है। ऊपर वैवाहिक नक्षत्र और नीचे ग्रह नक्षत्र हैं। यानी 14वें नक्षत्र में पापी ग्रह का जामित्रदोष वर्जनीय है।

(६) बाणज्ञान–चक्र

बाण नाम	गतांशाः प्रति राशौ अर्कस्य	कर्मसु वर्ज्याः	वारे वर्ज्याः	समयपरत्वेन वर्ज्याः
रोगः	८/१७/२६	व्रतबंध	रवौ	रात्रौ त्याज्यम्
अग्निः	२/११/२०/२९	गेहगोपे	भौमे	सदैव वर्ज्यम्
नृपः	४/१३/२२	नृपसेवायम्	मन्दे	दिवा त्याज्यम्
चौरः	६/१५/२४	यात्रायाम्	भौमे	रात्रौ वर्ज्यम्
मृत्युः	१/१०/१९/२८	विवाहे	बुधे	संध्यायोः वर्ज्यम्

(७) एकार्गल दोष

व्याघात, गण्ड, व्यतिपात, विष्कम्भ, शूल, वैधृति, वज्र, परिघ, अतिगण्ड–ये योग हों और सूर्य के नक्षत्र से विवाह का नक्षत्र अभिजित् सहित गिनने से विषम हो तो एकार्गल दोष होता है।

(८) उपग्रहदोष

सूर्य के नक्षत्र से ५, ७, ८, १०, १४, १५, १८, १९, २१, २२, २३, २४ और २५वें नक्षत्र पर चन्द्रमा हो तो उपग्रह दोष होता है।

(९) स्थूल–क्रान्तिसाम्य–दोषचक्र

मेष	वृष	मिथुन	कर्क	कन्या	तुला
सिंह	मकर	धनु	वृश्चि.	मीन	कुम्भ

नीचे और ऊपर की राशि पर कहीं भी सूर्य एवं चन्द्रमा हो तो स्थूल रूप से क्रान्तिसाम्य दोष होता है। यह सर्वत्र वर्जित है। जैसे–मेष के सूर्य और सिंह के चन्द्रमा में या सिंह के सूर्य और मेष के चन्द्रमा में। सूक्ष्म क्रान्तिसाम्य ही सर्वत्र वर्जित है। जिसका निर्णय महापातगणित से करना चाहिए।

(१०) दग्धातिथि–दोषचक्र

९	२	४	६	५	१०	← सूर्य
१२	११	१	३	८	७	राशयः
२	४	६	८	१०	१२	← तिथयः

इन संक्रान्तियों में ये तिथियां दग्धा होती हैं। विशेषतः ये मध्यप्रदेश में ही वर्ज्य हैं।

"भुजंगं क्रान्तिसाम्यञ्च बाणवेधं तथैव च। लग्नहीन–विवाहन्तु कलौ पञ्च विवर्जयेत्।। *–कश्यपः*

लत्तादि–दोषाणां परिहारवाक्यानि

लत्ता मालवके (उज्जैन प्रान्ते) देशे, पातश्च कुरु (कुरुक्षेत्रबांगरे) जांगले (फिरोज़पुर–भटिण्डाप्रान्ते)। एकार्गलं च काश्मीरे वेधं सर्वत्र वर्जयेत्।। उपग्रहर्क्षं कुरुवाह्लिकेषु (कुरुक्षेत्र, आगराप्रान्ते) कलिंगबंगेषु (जगन्नाथपुरी–बंगाल–अयोध्यायां) च पातितं भम्। सौराष्ट्रे (काठियावाड़े) शाल्वे (उज्जैनप्रान्ते) च लत्तितं भं त्यजेत्तु विद्धं किल सर्वदेशे।। युतिदोषो भवेद्गौडे (बंगाले) जामित्रस्य च यामुने (मथुराप्रान्ते)। मासदग्धाश्च तिथयो मध्यदेशे विवर्जिताः।।

विशेष परिहारः– चित्रांगते पातविचित्रदेशे मैत्रे मघा मालवके निषिद्धाः पौष्णश्रुतिश्चोत्तरदेशजातः सर्वत्र वर्ज्यश्च भुजंगपातः।।

युतिपरिहारः–स्वक्षेत्रगः स्वोच्चगो वा मित्रक्षेत्रगतो विधुः।
युतिदोषाय न भवेद्दम्पत्योः श्रेयसे तदा ॥

अत्यावश्यके वेध–परिहारः–"पादमेकं शुभैर्विद्धमशुभैर्नैव कृत्स्नतः।" –(नारदः)

ग्रह प्रथम चरण में हो तो चतुर्थ चरण में वेध होता है, यदि चतुर्थ चरण में हो तो प्रथम चरण विद्ध होता है। द्वितीय में हो तो तृतीय, तथा तृतीय चरण में ग्रह हो तो द्वितीय चरण विद्ध होता है। आवश्यकता में चरणमात्र का त्याग किया जाता है– भुक्तं भोग्यं तथाक्रान्तं विद्धं पापग्रहेण च। शुभाशुभेषु कार्येषु वर्जनीयं प्रयत्नतः ॥

अस्यापवादः– ऋक्षाणि क्रूरविद्धानि क्रूरयुक्तादिकानि च। भुक्त्वा चन्द्रेण युक्तानि शुभार्हाणि प्रचक्षते।।

एकार्गलोपग्रह-पात-लत्ता-जामित्रकर्तर्युदयास्त दोषाः। नश्यन्ति चन्द्रार्क-बलोपपन्ने लग्ने यथार्काभ्युदये तु दोषाः॥ – (मु.चिं.)

उक्तानुक्ताश्च ये दोषास्तान्निहन्ति बली गुरुः।
केन्द्रसंस्थः सितो वापि पन्नगान् गरुडो यथा।।

विवाहे लग्न–शुद्धिचक्रम्

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	←भावाः
चं. पाप.	०	शु.	रा.	०	चं. शु. लग्नेश	सर्वे	चं. मं. शुभाः लग्नेश	०	मं.	०	श.	← त्याज्याः
चं. मं.	कुलिकं क्रान्तिसाम्यश्च				चं.	मं.	चं. मं.	विद्धभश्च				← गोधूलौ त्याज्याः

लग्नभंगयोगा :– व्यये शनिः खेऽवनिजस्तृतीये भृगुस्तनौ चन्द्रखला न शस्ताः। लग्नेट् कविग्लौं च रिपौ मृतौ ग्लौ लग्नेट् शुभाराश्च मदे न सर्वे (अस्तेऽब्जगुरु समौ)॥ वर्गोत्तमं विनान्त्यांशो विवाहे न शुभप्रदः। वर्गोत्तमश्चेदन्त्यांशः पुत्रपौत्रादिवृद्धिदः॥ दम्पत्योरष्टमं लग्नन्त्वष्टमो राशिरेव च। यदि लग्नंगतः सोऽपि दम्पत्योर्निधनप्रदः॥ पंगुवन्धादिलग्नानां गौडमालवयोरेव त्यागः। बादरायणः मासशून्याह्वयास्तारा राशयो वधिरादयः। गौडमालवयोस्त्याज्यास्त्वन्यदेशे न गर्हिताः।।

कर्तरी दोषः– लग्नस्य पृष्ठाग्रगयोश्च साध्वोः सा कर्तरी स्यादृजुवक्रगत्योः। तावेव शीघ्रौ यदि वक्रचारौ न कर्तरी चेति पितामहोक्तिः॥ इय कर्तरी चन्द्रस्यपि द्रष्टव्या। **केषाञ्चिल्लग्नदोषाणां परिहाराः** –पापौ कर्तरिकारकौ रिपुगृहनीचास्तंगौ कर्तरी दोषो नैव सितेऽरिनीचगृहगे तत्पष्ठदोषेऽपि न। भौमेऽस्ते रिपुनीचगे नहि भवेद्: भौमोऽष्टमो दोषकृन्नीचे नीचनवांशके शशिनि रिःफाष्टारिदोषोऽपि न॥

दोषापवादाः ज्योतिर्निबन्धे– दोषाश्च बहव सन्ति गुणाः स्वल्पाः कलौ युगे। तथापि दोषा नश्यन्ति स्वापवादगुणैः सह॥

अपवादान्तरम्– उक्तानुक्ताश्च ये दोषस्तान्निहन्ति बली गुरुः। केन्द्र-संस्थः सितो वापि पन्नगान्गरुडो यथा॥ मुहूर्तलग्नषड्वर्गकुनवांश ग्रहोद्भवाः। ये दोषास्तान्निहन्त्येव यत्रैकादशगःशशी॥ अब्दायनर्तुमासोत्थाः पक्षतिथ्यृक्षसम्भवाः। ते सर्वे नाशमायान्ति केन्द्रसंस्थे शुभग्रहे॥ लग्नाधिपो यदा केन्द्रे लग्नादेकादशालये। सर्वग्रहकृतं रिष्टमेकोपि विलयं नयेत्॥ बलवान् केन्द्रगः सौम्यो हन्ति दोष–शतत्रयम्। द्यूनं विहाय दैत्येज्यः सहस्रं लक्षमंगिरा॥ स्मरण रहे कि– पूवोक्त अपवाद वाक्यों में सप्तमरहित केन्द्र (१/४/१०) ही ग्रहण करना चाहिए।

विवाहे ग्रहाणां रेखाप्रद–स्थानानि

र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.	ग्रहाः	मुहूर्त गणपतौ
३	२	३	१	१	१	३	३	३		लग्नं शुभं विवाहे स्याद
६	३	६	२	२	२	६	६	६		दशविंशोपकाधिकंम्।
८	११	११	३	३	४	८	८	८		
११			४	४	५	११	११	११		
			५	५	९					
			६	६	१०					
			९	९	११					
			१०	१०						
			११	११						
३॥	५	१॥	२	३	२	१॥	१॥	१॥		विंशोपकबलम्

अथ गोधूलि लग्नविचारः– लग्नशुद्धिर्यदा नास्ति कन्या यौवनशालिनी। तदा वै सर्ववर्णानां लग्नं गोधूलिकं शुभम्॥ लग्नं यदा नास्ति विशुद्धमन्यद् गोधूलिकं साधु तदा वदन्ति। लग्ने विशुद्धे सति वीर्ययुक्ते गोधूलिकं नैव फलं विधत्ते॥ मार्ग., माघ, फाल्गुन में संध्यासमय सूर्य गोलक समान दृष्टिगोचर होने पर चैत्र, वैशाख में गौओं की धूली से आकाश आच्छदित होने पर, ज्येष्ठ, आषाढ़ में सूर्य आधा अस्त होने पर, श्रावण भाद्रपद, आश्विन, कार्तिक में सूर्य पूर्ण अस्त होने पर गोधूलि लग्न होता है।

गोधूलिके त्याज्या दोषाः– कुलिकं क्रातिसाम्यञ्च लग्ने षष्ठेऽष्टमे शशी। तथा गोधूलिके त्याज्यं पञ्चदोषैस्तु दूषितम्। अस्तं याते गुरुदिवसे सौरे सार्के। अर्थात् बृहस्पतिवार को सूर्य अस्त होने के पीछे।क्योंकि सूर्य अस्त से पहले वारबेला होगी और शनिवार को सूर्य अस्त से पहले (क्योंकि सूर्य अस्त हो जाने में कुलिक मुहूर्त होगा) गोधूलि समझना चाहिए।

संकीर्ण वर्णसंकर चाण्डालादि जाति का विवाह मुहूर्त्त

कृष्णपक्ष क्रूरवार निषिद्ध नक्षत्र योगों में संकीर्ण जाति वालों का विवाह धन, पुत्र आयु प्रीती लाभ देता है। ऐसा शौनकादि मुनि कहते हैं।

पुनर्विवाहे (रीत) सूर्यभात् शुभाशुभज्ञानाय चक्रम्

नक्षत्र→	३	३	३	३	३	३	३	३
फल→	मृत्यु	धन	मरण	मृत्यु	पुत्र	दुर्भग	श्री	उन्नति

अन्यच्च– सूर्यभात् ४/११/१८/२५ संख्यकसाभिजिदभेषु पुनर्विवाहे मृत्युः। अत्र तिथि–मासवेध भृगु–गुर्वस्तादि दोषोऽपि नावलोकनीयः।

वधू प्रवेश का मुहूर्त्त

जब वधू विवाह होने पर पति के घर पहले आती है वह वधू प्रवेश कहा जाता है। विवाह के १६ दिन के भीतर सम दिनों में अथवा ५, ७, ९वें दिन; इनके उपरान्त एक मास तक विषम दिनों में; एकवर्ष के भीतर विषम मास में; एक वर्ष के उपरान्त ३रे, ५वें वर्ष में भी स्थिर लग्न में वधू प्रवेश शुभ है। ५वर्ष के उपरान्त जब चाहे तब शुभ मुहूर्त्त में हो सकता है। १६ दिन के भीतर पूर्वोक्त दिनों में तिथ्यादि पंचांगशुद्धि, चन्द्रबल, गुरुशुक्र के मूढत्व का भी विचार नहीं करना– व्यतिपाते क्षयतिथौ ग्रहणे वैधृतौ तथा अमासंक्रान्ति–तिथ्यादौ प्राप्तकालेऽपि नाचरेत्॥ रेव., अश्वि., रोहि., मृग., श्रव., धनि., हस्त, चित्रा, स्वा., मघा, मूल, उत्तरा ३, पुष्य, अनु., इन नक्षत्रो में और चं., बु., बृ. शु. श. इन वारों में १/२/३/५/६/७/८/१०/११/१२/१३/१५ तिथियों में, ५/८/११ लग्नों में चतुर्थाष्टम शुद्ध हों तो वधू प्रवेश शुभ है।

वधू-प्रवेश-समय

वधूप्रवेशो न दिवा–प्रशस्तः राजप्रवेशो न निशि–प्रशस्तः।
दिवा च रात्रौ च गृहप्रवेशः सत्कीर्तिदः स्यात्त्रिविधः प्रवेशः॥

विवाहतः प्रथम वर्षे वधू–निवासफलम्– विवाह के बाद आषाढ़ मास में कन्या पति के घर रहे तो अपनी सास को, क्षय मास में अपने शरीर को, ज्येष्ठ में ज्येष्ठ को, पौष में श्वसुर को और अधिक मास में पति को नाश करती है। विवाह के बाद चैत्र मास में पिता के घर रहे तो पिता को अशुभ है, सास आदि के अभाव में उस मास का कोई दोष नहीं होता।

द्विरागमन का मुहूर्त

प्योके (पितृगृह) से दूसरी बार पति के घर जाने को द्विरागमन कहते हैं। विवाह से एक वर्ष के भीतर अथवा तीसरे या पांचवें वर्ष वृश्चिक कुम्भ, मेष के सूर्य में जब सूर्य और बृहस्पति शुद्ध हो तब सोम, बुध, गुरु, शुक्रवार को २, ३, ६, ७ या १२ वीं राशि के लग्न में हस्त, अश्वि., पुष्य, अभिजित्, तीनों उत्तरा, रोहि. स्वा., पुन., श्रवण, धनि., शत., मूल, मृग., रेव., चित्रा, अनुराधा नक्षत्रों में शुभ है। शुक्र सामने या दाहिने हो तो अशुभ है।

विशेषः– द्विरागमं षोडशवासरान्ते एकादशाहे समवासरेषु। न चात्र ऋक्षं न तिथिर्न योगो न वारशुद्ध्यादि विचारणीयम्।।

शुक्र सम्मुख व दक्षिण में निषेध– सम्मुख या दक्षिण शुक्र में यदि नूतन वधू जावे तो वन्ध्या हो, छोटे बालक को साथ लेकर जावे तो बालक की मृत्यु हो, गर्भिणी जावे तो गर्भ का सुख न पावे। यदि ऐसे समय राजविद्रोह–राजपीड़न आदि उपद्रव या दुर्भिक्ष के दुःख से यात्रा करनी पड़े एवम् विवाह सम्बन्धी यात्रा में या देवतीर्थ यात्रा के सम्बन्ध में जाना पड़े तो सम्मुख या दक्षिण शुक्र का दोष नहीं होता। यदि रेवती से मृगशिर तक के चन्द्रमा में भी जावे तो दोष नहीं, क्योंकि तब तक शुक्र अन्धा होता है।

विशेषः– सिंहस्थे वा गुरौ शुक्रे सम्मुखेऽस्तंगतेऽपि वा। शुभो दीपोत्सवे वध्वाः प्रवेशः पतिमन्दिरे।।

अत्यावश्यकेऽभिमुखे शुक्रदोषनाशाय शान्तिः– राजते वाथ सौवर्णे कांस्यपात्रेऽथवा पुनः। शुक्लपुष्पांबरयुते श्वेततण्डुलपूरिते।। निधाय राजतं शुक्रं शुचिमुक्ता फलान्वितम्। महाश्वेत गवायुक्तं सामगाय निवेदयेत्।

प्रथम स्त्रीसंगम मुहूर्त्त

रजोदर्शनानन्तर १६ रात्रि पर्यन्त, ४ रात्रि के बाद समरात्रि में, (पञ्चदशवर्षोपरि रजोदर्शनाभावेऽपि) रो., मृ., पुष्य, ह., चि. अनु., ध., उत्तरा. ३, रिक्ता अमावस रहित तिथि में, शुभवार, रात्रि के प्रथम पहर को छोड़कर। शुभ समय में चित्त को प्रसन्न कर, प्रथम दिन स्त्री संगम करें।

मनुष्य का स्त्री के प्रति कर्त्तव्य–स्त्री का अपमान या तिरस्कार न करें, आदर सत्कार करें। विशेष गुप्त बात न कहें और विशेषाधिकार भी न दें, क्योंकि स्त्री जाति पुरुष की समान कोटि में नहीं आ सकती। अपवाद में एक–दो हो सकती है। प्रभुकृत शरीर रचना भी कोई वस्तु है, उसे समझना चाहिए। उसका दिल और दिमाग़ तथा ओज प्रकृति ने पुरुष से न्यून बनाया है। पशुओं में भी घोड़े, हाथी, सांड, भैंसा आदि अपनी स्त्री जाति पर पूर्ण प्रभुत्व रखते हैं।

नववधू द्वारा पाककर्म मुहूर्त्त

द्विरागमनोत्तरं मृग., उत्तरा. ३, पुष्य, कृ., ज्ये., श्रव., धनि., श., रो., वि., रे. एषु नक्षत्रेषु शुभवासरे (रविभौमवर्जिते), रिक्ताक्षयरहिततिथौ, २/५/८/११ लग्नेषु, चतुर्थाष्टमशुद्धे सप्तमभावे च बलान्विते सति पाक्कर्म शुभम्।

सधवा स्त्री का वस्त्र, सुवर्णरत्नभूषणादिधारण करने का मुहूर्त्त

हस्त., चित्रा., स्वा., अनु., धनि., रेवती., अश्वि. एषु भेषु, बु., गु., शु., वारेषु रिक्तामावस्यारहित तिथिषु, नूतन वस्त्रसौवर्णरत्नरजत–दन्तादि भूषणानां धारणं प्रशस्तम्।।

चूड़ीचक्र में विशेषः– सूर्य नक्षत्र से गणना करने पर ८ अशुभ। ३ शुभ। २ अशुभ। ७ शुभ। २ अशुभ। ४ शुभ। १ अशुभ। गुरुशुक्रोदय में शुभ।

वस्त्रधारणे विशेषः– विप्रादेशात्तथोद्वाहे क्ष्मापालने समर्पितम्। निन्द्येपि धिष्ण्ये वारादौ धारयेच्च नवाम्बरम्।।

आभूषण बनवाने का मुहूर्त्त

हस्त., अ., पुष्य, अभि., स्वा.. पुन. श्रव., धनि., शत., उत्तरा.३, रोहि. एषु नक्षत्रेषु रिक्तामाक्षयरहित तिथौ, शुभवासरे द्विपुष्करत्रिपुष्करयोगे वा भूषणं कार्यम्।।

दुकान खोलने का मुहूर्त्त

हस्त, चित्रा, रोहि., रेव., उत्तरा. ३, पुष्य, अश्वि., अभि. इन नक्षत्रों में ४। ९। १४। ३० इन तिथियों को छोड़कर अन्य तिथियों में, मंगलवार को छोड़कर अन्यवारों में, कुम्भ लग्न को छोड़कर अन्य लग्नों में, २। १०। ११ स्थानों में शुभ ग्रह बैठे हों, ३। ६ में पापग्रह हों, ८। १२ वां स्थान पाप रहित हो, शुभ दशा भी हो तो दुकान करना शुभ है, चन्द्र लग्न में हो तो अत्यन्त शुभ है।

भर्तृगृह से पितृ गृहागमन मुहूर्त्त

पूर्वा.३, भ., मू., म. ज्ये., आर्द्रा, आश्ले. एतदभिन्नेषु, चं., बु., शु., वारेषु सत्तिथौ शुभलग्ने कुयोगादिराहित्ये प्रशस्तः।।

घोड़े पर चढ़ने का मुहूर्त्त

भ., आर्द्रा, आश्ले., म., पूर्वा. 3, ज्ये., मू. इन नक्षत्रों को छोड़कर, शेष नक्षत्रों में रविवार को शुभ है।

हट्टचक्रः— सूर्य नक्षत्र से दुकान खेलने के दिन तक, नक्षत्र गिन कर चक्र से शुभाशुभ फल जानें।

हट्टचक्र								
नक्षत्र	२	३	४	४	३	४	४	४
स्थान	आसन	मुख	अग्नि	नैर्ऋत	सम्मुख	वायव्य	ईशान	मध्य
फल	सौख्य	विक्रयनाश	अर्थनाश	सुख	महाश्रेष्ठ	चोरभय	सर्वहानि	शुभप्रद

सेवाकर्म (नौकरी) मुहूर्त्त

अ., मृ., चि., ह., पुष्य, अनु., रे. एषु भेषु रिक्तामारहिततिथौ, र., बु., बृ., शु. वारेषु शुभः। लग्नस्थे, १०, ११ सूर्ये–भौमे वा स्वामिसेवकयोः राशीश–योनि–मैत्र्यां सत्यां शुभः।

व्यवहार (बही) पत्रारम्भ मुहूर्त्त

अश्वि., रो., मू., पुन., पु., उत्तरा. ३, ह., चि., अनु., श्रव., रे. एषु भेषु रिक्तामारहिततिथौ, सू., चं., बु., बृ., श. वारेषु शुभे युते शुभे लग्ने चरे द्विस्वभावे च व्यायाष्टरहिते पापैः केन्द्रकोणगैः शुभैः स्यात्।।

द्रव्यप्रयोगमुहूर्त्त

पुन., स्वा., मृग., रे., चि., अनु., वि., पुष्य., श्रव., ध., श., अश्वि. एषु नक्षत्रेषु १। ४। ७। १०, लग्नेषु ९। ८। ५ शुद्धिरहिते द्रव्यप्रयोगः शुभः। अत्रावसरे ९। ५ शुभः, ग्रहाणां तु न कोऽपि दोषः।।

ऋण लेने के लिए वर्जितकाल

मंगलवार, संक्रान्ति दिन, वृद्धियोग, हस्तनक्षत्रयुक्त रविवार को ऋण ले तो कभी मुक्त न हो। मंगलवार को ऋण चुकाना अच्छा है। बुधवार को धन न देना चाहिए। कृ., रो., आर्द्रा, आश्ले., उत्तरा ३, वि., ज्ये., मू. नक्षत्रों में भद्रा, व्यतिपात और अमावस में गया धन फिर मिलता नहीं या झगडे आदि पर उतारू होना पड़ता है।

श्रीकाशीनाथ के मत से क्रयविक्रय मुहूर्त्त

पुष्य, पू.भा., अनु., श्रव., ह., म., स्वा., उत्तरा.३, आश्ले., रे., एषु भेषु सत्तिथौ, शुभदिने उत्तमशकुनं विचार्य क्रयविक्रयणं कार्यम्।

वस्तु खरीदने के नक्षत्रः— रे., शत., अश्वि., स्वा., श्रव., चि., वारों में, बुध, रवि श्रेष्ठ माने गए हैं।

वस्तु बेचने के नक्षत्रः— पू. फा., पू. षा., पू. भा., वि., कृ., आश्ले., भ. ये ७ नक्षत्र और गुरुवार, चन्द्रवार श्रेष्ठ माने गए हैं।

नोटः— बेचने के नक्षत्रों में खरीदना और खरीदने के नक्षत्रों में बेचने वालों को ९५ फीसदी नुकसान रहेगा, इसमें संशय नहीं। इसी कारण खरीदने–बेचने के नक्षत्र दिखाए गए हैं, परन्तु सम्प्रति प्रचलित सट्टे जैसे भयानक व्यापार में तो धैर्य का काम ही नहीं, सिवाय घबराहट के दिन भर में ३० बार बेचना, ३० बार खरीदना। ऐसे व्यापारी क्या करेंगे, इन नक्षत्रों को।

लेकिन हमारा कहना है कि विश्वास करके परीक्षा तो कीजिये, बात कहां तक सच है। सट्टे में भी प्रथम बार व्यापार करने वाले व्यापारी अवश्य ध्यान करें तभी मालूम होगा कि ऋषियों के वाक्य कहां तक सत्य हैं।

प्रार्थनापत्र (अर्जी) देने का मुहूर्त्त

४। ९। १४ तिथि हों, मं., श. वार हों, कृ., आर्द्रा, भ., अश्वि., आश्ले., म., ज्ये., मू., वि., पूर्वा. ३ नक्षत्र हों, भद्रा होवे तो अत्युत्तम है।

गृहादि निर्माण में आय विचार

गृहस्वामी के हस्तादि लम्बाई–चौड़ाई को परस्परगुणाकर, आठ का भाग देवें, जो शेष रहे वह क्रम से ध्वजादि आय होते हैं। १ ध्वज, २ धुम्र, ३ सिंह, ४ श्वान, ५ वृषभ, ६ गर्दभ, ७ हस्ति, ८ (०)। इनमें एकादि विषम संख्या की आय शुभ और २ आदि सम संख्या को अशुभ जानना। गृह की भूमि को अन्दर से मापना चाहिए और देवस्थान की भूमि को बाहर से मापना चाहिए। ३२ हाथ चौड़े घर में आयादि विचार की आवश्यकता नहीं है और न चार द्वार वाले घर में ही। ब्राह्मण को ध्वजाय, क्षत्रिय को सिंहाय, वैश्य को गजाय और शुद्र को वृषभाय विशेष शुभ होती है। अन्य आय नीच जाति के लिए शुभ है।

ग्रामभात् वासकर्तुः नक्षत्रं यावद् साभिजित् गणना कार्या

स्थान	नक्षत्र	फलम्
मस्तके	७	धनलाभः
पृष्ठे	७	हानिःनैस्वम्
हृदये	७	सुखलाभः
पादे	७	पर्यटनम्

घर का नक्षत्र और व्यय ज्ञान

घर केक्षेत्रफल (हस्तादि लम्बाई–चौड़ाई के गुणन) को आठ से गुणाकर २७ का भाग दें। जो अंक शेष रहे, तदनुसार अश्विन्यादि गृह का नक्षत्र जानें। इस नक्षत्र को ८ से भाग देवें। शेषांक तुल्य व्यय जानें। आय से व्यय कम हो तो शुभ, अन्यथा अशुभ।

वास्तुभूमि का शुभाशुभ जानना

नई बस्ती में गृहादि बनाना हो तो भुमिपूजन पूर्वक शाम को एक हाथ चौड़ा, एक हाथ लम्बा और एक हाथ गहरा गड्ढा बनाकर, उसको जल से भर देवें। प्रातःकाल उसको देखें यदि जलयुक्त हो तो शुभ, निर्जल मध्यम, निर्जल फटा हुआ हो तो अशुभ है।

मकान बनाने के लिए पृथ्वी की शुभाशुभ परीक्षा

मकान की नींव को इतना गहरा खोदें कि जल दीखने लगे अथवा दूसरी मिट्टी जब तक निकले अथवा साढे तीन हाथ गहरी खोदें अर्थात् मनुष्य के बराबर खोदें। खोदते समय यदि ज़मीन में पत्थर निकले तो धन–आयु की वृद्धि हो; अगर गुठली निकले तो धननाश हो और अगर अस्थि, राख, बाल निकले तो मकान बनाने वाले को व्याधि–पीड़ा हो।

गृहारम्भमुहूर्त्त

वैशा., श्रा., मार्ग., माघ, फाल्गुन सौर महीने गृहारम्भ में श्रेष्ठ कहे हैं; भाद्रपद और कार्त्तिक मास मध्यम हैं। २। ३। ५। ६। ७। १०। ११। १२। १३। १५ और कृष्णपक्ष की प्रतिपदा, इन तिथियों में चं., बु., गु., शु., श., वारों में; रो., मृ., चि., ह., स्वा., अनु., उत्तरा. ३, ध., श., रे. वेधरहित नक्षत्रों में; २। ३। ५। ६। ८। ११। १२ लग्नों में; पञ्चवाण और भूमिशयन से रहित दिनों में; लग्न से केन्द्र त्रिकोण स्थानों में शुभग्रह और ३। ६। ११ वें स्थान में पापग्रह तथा अष्टम स्थान शुद्ध होने पर गृहारम्भ मुहूर्त्त शुभ होता है। केवल तृणमय गृहारम्भ में वत्सचक्र व मासादि का विचार नहीं करना।

गृहारम्भे वत्सचक्रम्

सूर्यनक्षत्र से गृहारम्भ नक्षत्र तक अभिजित् सहित गणना करें।

स्थानानि	न.	फलानि
शीर्षे	३	अग्निदाहः
अ. पादे	४	शून्यमसत्
पृ. पादे	४	स्थिरता
पृष्ठे	३	लक्ष्मीप्राप्तिः
द. कुक्षौ	४	लाभःशुभम्
पुच्छे	३	स्वामिनाशः
वामकुक्षौ	४	निर्धनता
मुखे	३	पीड़ा असत्

विशेषः– पुष्य, उत्तरा. ३, रो., म., आश्ले., पूषा., इनमें से जिस पर बृहस्पति हो, उस नक्षत्र में बृहस्पतिवार को गृहारम्भ हो तो पुत्र और सम्पत्तिदायक होता है। रो., ह., अ., उ. फा., चि. इनमें से जिस पर बुध हो उस नक्षत्र में बुधवार को गृहारम्भ हो तो सुख और पुत्र होते हैं। वि., अ., चि., ध., श., आर्द्रा इनमें से जिस पर शुक्र हो उस नक्षत्र में और शुक्रवार को गृहारम्भ हो तो धनधान्यदायक होता है।

भूमिप्रसुप्तज्ञानम्ः– "संक्रान्ति मिति दिन पांचवें सप्तम नवम जोय।

१०। २१। २४ में षड्दिन पृथ्वी सोय।। तत्रात्यावश्यके क्रमात् ५। ११। ७। ६। २। १० एताः घटिका भूमिकर्मण्यवश्यं वर्जनीयाः।" **अन्यच्च–** सूर्य के नक्षत्र से ५। ७। ९। १२। १९। २६ इतनी संख्या के नक्षत्रों में पृथ्वी शयन के कारण मकान की नींव, तड़ाग, वापी, कूपादि का खोदना उत्तम नहीं होता।

गृहमध्य में कूपविचार								
मध्य	ई.	पू.	आ.	द.	नै.	प.	उ.	वा.
र्थहानि	सुपुष्टि	सुप्राप्ति	पुत्रनाश	स्त्रीनाश	गृहेशनाश	संपत्	सुख	शत्रुभय

अथ चुल्लिचक्र–विचार

सूर्य के नक्षत्र से ६ नक्षत्रपीठ के सुखप्रद। ४ मस्तक के मृत्युप्रद। ८ बाहु के सुन्दर–सुख–भोगदायक। ५ गर्भ के नाशक। २ भुज के भोगदायक। २ चरण के नाशक। यह चुल्लिचक्र गर्गाचार्य ने कहा है, पण्डित जन विचार करें। उपरोक्त शुभ नक्षत्रों में चुल्हा बनावें तथा इन्हीं शुभ नक्षत्रों में प्रथम अग्नि जलावें।

नूतनगृह प्रवेश मुहूर्त्त

माघ–फाल्गुन–वैशाख–ज्येष्ठ मासेषु शोभनाः। प्रवेशो मध्यमो ज्ञेयः सौम्य (मार्ग.)कार्त्तिक मासयोः।। (यहां चन्द्रमास लेना) उत्तरा. ३, अनु., रो., मृ., चि., रे. इन नक्षत्रों में रिक्तामारहित तिथियों में। चं., बृ., श. इन वारों में। २। ५। ८। ११ लग्नों में; **अत्यावश्यके** ३। ६। ९। १२ लग्नों में भी; लग्न से १। २। ३। ५। ७। ९। १० इन स्थानों में शुभ ग्रह हों, ३। ६। ११ में क्रूर हों १। ६। ८। १२वें चन्द्रमा न हो; चौथा, ८वां स्थान शुद्ध हो; जन्म लग्न या जन्म राशि से ८वीं राशि लग्न में न हो; चन्द्र–तारा शुभ हो और कुम्भ चक्र की भी शुद्धि हो, तो आगे गौ, कन्या, जलपूर्ण–पुष्पमाला युक्तकलश, शंखध्वनि व मंगलगान के साथ दम्पति का गृह प्रवेश शुभ है।

गृहप्रवेश का विशेष मुहूर्त्त

पुराने अर्थात् जीर्ण या तृणकुटीर अथवा अग्नि–वर्षा इत्यादि के भय से बनवाये हुए नए घर में भी वैशाख., श्रावण, कार्तिक., मार्गशीर्ष और फाल्गुन मास में शत., पुष्य, स्वा. और धनि. नक्षत्रों तथा गुरु, शुक्र के अस्त में भी गृह प्रवेश हो सकता है।

सूर्यराशिवशात् खातज्ञानम्				
खाते राहोर्मुखात्पृष्ठदिग्भागःशुभदो भवेत्।				
राहुमुखम्	ऐशान्यां	वायव्यां	नैर्ऋत्यां	आग्नेय्यां
देवालयारम्भे सूर्यः	मीन, मेष, वृष	मिथुन, कर्क,सिंह	कन्या,तुला, वृश्चिक	धनु,मकर, कुम्भ
गृहारम्भे सूर्यः	सिंह, कन्या, तुला	वृश्चि., धनु, मकर	कुम्भ, मीन, मेष,	वृष, मिथुन, कर्क
जलाशयारम्भे सूर्यः	मकर,कुम्भ, मीन	मेष, वृष, मिथुन	कर्क, सिंह, कन्या	तुला,वृश्चि., धनु
खातदिशाज्ञानम्	आग्नेय्यां	ऐशान्यां	वायव्यां	नैर्ऋत्यां

द्वारशाखाचक्रम्		
सूर्यनक्षत्रात्		
स्थान.	न	फलानि
शिरसि	४	श्रीप्राप्तिः
कोणे	८	उद्वसनं
शाखा	८	सौख्यम्
देहल्यां	३	गृहेशनाशः
मध्ये	४	सौख्यम्

चक्रमिदं विलोक्य सुधिया द्वारं विधेयं शुभम्।

गृहप्रवेशे कुम्भचक्रम्			
सूर्यभात्			
५	८	८	६
अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ

कूप, तालाब और बावड़ी खुदवाने का मुहूर्त्त

अनु., हस्त., उत्तरा. ३, रोहि., धनि., शत., भरणी, पूषा., रेवती, पुष्य, मृग. नक्षत्र हों व चन्द्रमा मकर के उत्तरार्ध, मीन या कर्क में हो, लग्न में बुध या गुरु हो, शुक्र १०वें स्थान में हो और पापग्रह निर्बल हों तो शुभ है। यदि २। १०। ४। ११। १२ लग्न हों तो अत्यउत्तम है।

सूर्यनक्षत्रात्कूप–नलचक्रम्			सूर्यभात्तड़ागचक्रम्		
ईशान ३ क्षार जल	पूर्व ३ खण्डितजल	आग्ने. ३ सुजल	ईशान २ जलनाश	पूर्व २ शोक	आग्ने. २ जलाधिक्य
उत्तर ३ उत्तम जल	मध्य ३ स्वादु तथा शीघ्रजल	दक्षिण ३ निर्जल	उत्तर २ अमृतजल	मध्य ५ बहुजल	दक्षिण २ जलनाश
वायव्य ३ मिश्रितजल	पश्चिम ३ जल	नैर्ऋत्यां ३ अमृतजल	वायव्य ३ जलनाश	पश्चिम २ बहुजल	नैर्ऋत्य २ अमृतजल

गणनाक्रमः–मध्य–पूर्व–आग्नेय–दक्षिणादिक्रमेण बोध्यम्– अवशिष्टानि ६ नक्षत्राणि 'वारिवाह' संज्ञकानि सन्ति। तत्फलम्–वारिवाहे वारिहानिः। गणनाक्रमः– पूर्व, आग्नेय, दक्षिण, नैर्ऋत्य, पश्चिम, वायव्य, उत्तर, ईशान, मध्य में वारिवाह।

रोहिणीभात् वापीचक्रम्

ईशान अश्विनी, भरणी, कृत्तिका मध्यजलम्	पूर्व पुनर्वसु, पुष्य, आश्लेषा जलाभावः	आग्ने. मघा, पू.फा., उ.षा. मध्यजलम्
उत्तर पू.भा., उ.भा., रेवती मिष्ठजलम्	मध्य रोहिणी, मृगशिरा, आर्द्रा शीघ्रजलम्	दक्षिण हस्त, चित्रा., स्वाती जलाभाव
वायव्य श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा. क्षारजलम्	पश्चिम मूल, .पू.,षा., उ.षा. अमृतजलम्	नैर्ऋत्यां विशाखा, अनुराधा, ज्येष्ठा बहुजलम्

जलाशयारामदेवप्रतिष्ठामुहूर्त्त

"देवतारामवाप्यादिप्रतिष्ठामुत्तरायणे। माघादिपञ्चमासेषु कृष्णेऽप्यापञ्चमीदिने।। मातृ–भैरववाराहनारसिंहत्रिविक्रमाः। महिषासुरहंत्री च स्थाप्या वै दक्षिणायने।।"

अश्वि., रोहिणी, मृग., पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनु., श्रवण, धनि., शत., उत्तरा. 3, रेवती एषु भेषु कुजशनिवर्जितवारेषु २। ३। ५। ७। ८। १०। ११। १२। १३ तिथिषु शुक्ले १। २। ३। ५ तिथिषु कृष्णे, गुरुशुक्रयोः नीचनिर्बलास्तादिरहितकाले, कर्तुः सूर्यचन्द्रतारानुकूल्ये सति जन्मलग्नयोरष्टमराशिलग्नरहिते स्थिर (२। ५। ८। ११) लग्नेषु लग्नात् १। ४। ७। १०। ९। ५। २। ११ स्थानेषु शुभैः, ६। ११ सेन्दुभिः पापैः पूर्वाह्णे देवप्रतिष्ठा कार्या।

देवता–विशेषेण लग्नम्:– सिंहे सूर्यः शिवो द्वन्द्वे लग्ने स्थाप्यः स्त्रियां हरिः। कुम्भे वेधाश्चरे क्षुद्राद्यंगदेव्यः स्थिरेऽखिलाः।। यस्य देवस्य यत्तिथिवारनक्षत्रादिकं तद्दिनेयदि तस्य प्रतिष्ठा मुहूर्त्तो भवेत्तदा अत्युत्तमः।।

वास्तुशान्ति मुहूर्त्त

श्रव., धनि., मृग., मूल, अनु., रेवती, हस्त, चित्रा, स्वा., उत्तरा. 3, पुन., पुष्य, रोहि., अश्वि. एषु भेषु शुभेऽह्नि सत्तिथौ बलिदानपुरस्सरं वास्त्वर्चनं कार्यम्।

अग्नि का वास किस लोक में है

जिस दिन हवन करना हो, उस दिन तिथि और वार क संख्या जोड़कर एक और जोड़ना, पुनः ४ का भाग देना। यदि पूरा भाग लग जाए, (०–शेष रहे) अथवा तीन शेष रहे, तब अग्नि का वास पृथ्वी पर सुखकारक होता है, शेष १ बचने पर आकाश में प्राणहानिकारक, शेष २ बचने पर पाताल में धनहानि करता है। तिथि की गणना शुक्ल प्रतिपदा से तथा वार की गणना रविवार से करनी। इसके बाद आहुतिचक्र ज़रूर देखिए।

विशेषः– यात्राविवाहव्रतगोचरेषु चौलोपनीताद्याखिलव्रतेषु। दुर्गाविधानेषु सुतप्रसूतौ नैवाग्निचक्रं परिचिन्तनीयम्।। महारुद्रे व्रतेऽमायां ग्रस्तेन्द्वर्कास्तराहुणा। नित्यनैमित्तिके कार्ये अग्निचक्रं न दर्शयेत्।। दिग्दाहेप्यथवा घोरे ग्रहास्ते भूमिकम्पने। केतूनामुदये शान्तौ चक्रं यत्नेन चिन्तयेत्।। लक्षकोटिहवने मखेऽखिले चातिरुद्रकरणेमहाविधौ। देवखातभवने सुरालयादग्निचक्रमवलोकयेत्सुधीः।। दुर्गभंगे गृहे वापि विवादे शत्रुविग्रहे। शान्तिकार्ये नृपक्रोधे चक्रं तत्र निरीक्षयेत्।।

ग्रहमुखे होमाहुतिज्ञानाय चक्रम्

(सूर्य नक्षत्र से दिन नक्षत्र तक गिनना)

ग्रहाः	सू.	बु.	शु.	श.	चं.	मं.	गु.	रा.	के.
नक्षत्र	३	३	३	३	३	३	३	३	३
फलम्	नेष्ट	श्रेष्ठ	श्रेष्ठ	नेष्ट	श्रेष्ठ	नेष्ट	श्रेष्ठ	नेष्ट	नेष्ट

पापग्रहमुखे–हवने कृते शान्तिः–क्रूरग्रहमुखे चैव सञ्जाते हवने शुभे। शान्तिं विधाय गां दद्याद् ब्राहमणाय कुटुम्बिने। आयसीं प्रतिमां कृत्वा निक्षिपेतामधोमुखीम्। गोमूत्र–मधुगन्धाद्यैरर्चितां प्रतिमां ततः। कुण्डे निधाय सम्पूज्य तत्र होमो विधीयते।।

अथ ऋणी–धनी विचार– स्ववर्गं द्विगुणं कृत्व' परवर्गेण योजयेत्। अष्टभिश्च हरेद् भागं योऽधिकः स ऋणी भवेत्।।(अर्थात् अपने वर्ग को दूना कर, दूसरे के वर्ग में जोड़ना, फिर ८ का भाग देना। फिर दूसरे का वर्ग दूना करके, अपना वर्ग जोड़ना, फिर ८ का भाग देना। जिसका शेषांक अधिक बचे, वह दूसरे का ऋणी होगा।), लेकिन वशिष्ठ आदि का मत है कि जिसका शेषांक कम बचे, वह दूसरे का ऋणी होता है– यही प्रामाणिक है।

हलप्रवहण मुहूर्त्त

मृग., रेव., चित्रा, अनु., रोहि., उत्तरा.३, हस्त, अश्वि., पुष्य, अभि., स्वा., पुन., श्रवण, धनि., श., मूल, मघा, विशा. एषु भेषु रिक्तामाषष्ट्यष्ठमीरहित सत्तिथौ शुभ–ग्रहस्य वासरे, १। ५। ७। १०। ११ लग्नेषु भूमिशयन–भद्रादीन् वर्जयित्वा हलचक्रशुद्धौ सत्यां हलप्रवहणं शुभम्।

हलचक्रम्					बीजवपने राहुचक्रम्								
सूर्यभुक्तनक्षत्र से दिन नक्षत्र तक गिनें					राहुनक्षत्रात् दिनभं यावत् गणना कार्या								
नक्षत्र	३	७	९	८	८	३	१	३	१	३	१	३	४
फल	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ

बीजवपने मुहूर्त्त

हस्त, अश्वि., पुष्य, उत्तरा. 3, चित्रा, अनु., मृग., रेवती, स्वा., धनि., मघा, मूल एषु भेषु सत्तिथौ भौमातिरिक्तिवारेषु सुशकुने राहुचक्रशुद्धौ सत्यां शुभः।

विशेषः– रवौ रौद्रा(आर्द्रा) द्यपादस्थे भूमेः संजायते रजः।
तस्माद्दिनत्रयं तत्तु बीजवापे परित्यजेत्।।

नवान्न–भक्षण–मुहूर्त्त

मृग., रेवती, चित्रा, अनु., हस्त, अश्वि., पुष्य, अभि., स्वा., पुन., श्रवण, धनि., शत. एवम् विषघटी रहित नक्षत्रों में शुभ है, नन्दा–रिक्ता तिथियों और पौष–चैत्र को छोड़कर अन्य मासों में सू., बु., गु., शुक्रवार शुभ है।

गौ, बैल आदि पशु लेने का मुहूर्त्त

अश्वि., पुन., पुष्य, हस्त, विशा., ज्ये., धनि., शत., रेव. नक्षत्र में गौ लेना–बेचना। अन्य पशु पुन., पूर्वा. 3, हस्त, अनु., ज्ये., मूल, धनि., रेवती में लेना–बेचना शुभ है। गाय लेनी हो तो उ.फा. से दिन नक्षत्र तक गिने। ३ तक लाभदायक, ५ तक हानि, ११ तक अर्थलाभ, १६ तक सुख, २२ तक महालाभ, २३ तक वृद्धि, २७ तक भय होता है। वृषभ (बैल) लेना हो तो ६ नक्षत्र लाभदायक; फिर दो–दो के क्रम से गाय के समानफल जानें। महिषी (भैंस) लेनी हो तो भी गौ नक्षत्रगणना क्रम से शुभाशुभफल हेतु सूर्य नक्षत्र तक गिनें– नौमी चौदस चौथ चौपाया। मंगल हान करे घर आया।।

सूर्यनक्षत्रात्काष्ठादि (गुहारा आदि) संस्थापनचक्रम्							
नक्षत्र	६	२	४	४	४	४	४
संख्या	उत्तमपाक	शवदहन	सर्पभय	मित्रलाभ	रोगभय	क्वाथकर्म	सुख
फल	शुभ	नेष्ट	नेष्ट	शुभ	नेष्ट	नेष्ट	शुभ

लतावृक्षाद्यारोपण मुहूर्त्त

मृग., रेवती, चित्रा, अनु., उत्तरा. 3, रोहि., हस्त., पुष्य, अश्वि., शत., मूल, विशा. नक्षत्रों में रिक्तामारहित शुभ तिथियों में और चं., बु., बृ., शुक्रवार हों, शुक्लपक्ष में ४। १०। ११। १२ लग्न में शुभ हैं।

तृणकाष्ठादिसंग्रहे निषेधः – तृण–काष्ठ का सञ्चय और पलंग बनवाना आदि कर्म कुम्भ–मीन के चन्द्रमा (पञ्चककाल) में नहीं करना चाहिए।

औषधसेवन का मुहूर्त्त

हस्त, अ., पुष्य, अभि., मृग., रेवती, चित्रा, अनु., स्वा., पुन., श्रव., धनि., शत. व मूल में जन्मनक्षत्र को छोड़कर, इन नक्षत्रों में ४। ९। १४ को छोड़कर, शुभ तिथियों में, भौम–शनि को छोड़कर, अन्यवारों में शुभ है।

पौष–चैत्र को छोड़कर अन्य मासों में सू., बु., गु., शुक्रवार शुभ है।

अथ यात्रा–मुहूर्त्त–विचारः

हस्त, मृग., श्रव., अश्वि., पुष्य, पुन., धनि., अनु., रेवती, एषु भेषु यात्रा अत्युत्तमा; रोहि., उत्तरा. ३, पूर्वा. ३, एषु भेषु मध्या; भरणी, कृत्ति., आर्द्रा, आश्ले., मघा, चित्रा, स्वा., विशा., ज्ये., एतद्भेषु निन्द्याः। तत्रात्यावश्यकेऽपि यात्रायां भरण्यादि भानां क्रमात् ७। २१। १४। १४। ११। ४०। १४। १४। १४ एता घटिकाः गमन कर्मण्यवश्यं वर्जनीयाः। २। ३। ५। ७। १०। ११। १२ कृष्णपक्षस्य प्रतिपत्सु द्विग्द्वारलग्नेषु वा यात्रा शुभा।

द्विग्द्वारलग्नानि

दिशा→	पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर
शुभम्→	१। ५। ९	२। ६। १०	३। ७। ११	४। ८। १२
मध्यमम्→	२। ६ १०	३। ७। ११	४। ८। १२	१। ५। ९
भयम्→	४। ८ १२	१। ५। ९	२। ६। १०	३। ७। ११
महद्भयम्→	३। ७। ११	४। ८। १२	१। ५। ९	२। ६। १०

यात्रा में शुभाशुभ लग्नः– जन्मलग्न और जन्मराशि से अष्टमलग्न तथा कुम्भ या कुम्भ के नवांश में यात्रा कदापि न करें। शुभलग्न वह है, जब १। ४। ५। ७। ९। १० स्थानों में शुभ ग्रह और ३। ६। १०। ११ वें पापग्रह हों। अशुभ लग्न वह है– जब १। ६। ८। १२वें चन्द्रमा, १०वें शनि, ६वें शुक्र, १२। ६। ८वें लग्नेश हो। **अन्यच्च–** यात्रायामष्टमं शुद्धं विवाहे सप्तमं तथा। दशमं तु गृहारम्भे चतुर्थं तु प्रवेशने।।

जन्मलग्नेश, दशेश अस्त हों व मारकदशा हो तो सुमुहूर्त्त में भी दूर की यात्रा न करें, प्रथम तीर्थयात्रा व देवदर्शन गुरु–शुक्रास्त में वर्जित है।

दिक्शूलज्ञानाय चक्रम्									नक्षत्रशूलचक्रम्			
दिशा	पूर्व	आ.	दक्षि.	नैर्ऋ.	पश्चि.	वाय.	उत्तर	ईशा.	पू.	द.	प.	उ.
वार	चं.,श.	चं.,बृ.	गुरु	सू.,शु.	सू.,शु.	भौम	मं.	बु.,श.	ज्ये.	पू.भा.	रोहि.	उ.फा.

दिक्शूलपरिहारः– न वारदोषाः प्रभवन्ति रात्रौ देवेज्यदैत्येज्यदिवाकराणाम्। दिवा शशांकार्कजभूसुतानां सर्वत्र निन्द्यो बुधवारदोषः॥१॥ सूर्यवारे घृतं प्राश्य चन्द्रवारे पयस्तथा। गुड़मंगारके वारे बुधवारे तिलानपि। गुरुवारे दधि प्राश्यं शुक्रवारे यवानपि। माषान्भुक्त्वा शनेर्वारे शूले गच्छञ्छूले न दोषभाक् ॥२॥

यात्रायां कालज्ञान चक्रम्

सम्मुखे	शनौ	शुक्रे	गुरौ	बुधे	भौमे	चन्द्रे	रवौ
नेष्टः	पूर्वे	आग्नेय्या	दक्षिणे	नैर्ऋत्यां	पश्चिमे	वायव्ये	उत्तरे

योगिनीवास–चक्रम्

दिशा	पूर्व	आग्ने.	दक्षि.	नैर्ऋ.	पश्चि.	वाय.	उत्तर	ईशा.
तिथि	१। ९	३। ११	५। १३	४। १२	६। १४	७। १५	२। १०	८। ३०

योगिनी साधारण यात्रा में सामने और दाहिने अशुभ होती है, पीछे और बाएं की शुभ किंवा युद्ध यात्रा में बाएं ओर की और सम्मुख की विशेष त्याज्य है।

समयशूलः– उषाकाल में पूर्व को, गोधूलि में पश्चिम को, अर्द्धरात्रि में उत्तर को और मध्याह्नकाल में दक्षिण को नहीं जाना चाहिए।

गर्ग–गुरु–अङ्गिरामत– गर्ग जी के मत से ५ या ४ घड़ी रात रहे तो गमन करें। बृहस्पति के मत से अच्छा शकुन मिलने पर यात्रा करें। अङ्गिरा के मत से जब मन प्रफुल्लित हो तब ही चला जाए। भगवान् के मत से ब्राह्मण की आज्ञा लेकर यात्रा करने से शुभ होता है। **पंच–पंच (५५) उषाकालः सप्तपञ्चाशद (५७) रुणोदयः। अष्ट पंच (५८) भवेत्प्रातः शेषः सूर्योदयो भवेत्।।**

चन्द्रवासचक्रम्

पूर्वे	दक्षि.	पश्चि.	उत्तरे
मेष	वृष	मिथुन	कर्क
सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.
धनु	मकर	कुम्भ	मीन

एकस्मिन् राशौ आवश्यके तात्कालिक–यात्रायां घट्यात्मकं चन्द्रवासचक्रम्

दिशा	पू.	द.	प.	उ.	पू.	द.	प.	उ.
घटी	१७	१५	२१	१६	१७	१५	२०	१४

घट्यात्मक चन्द्रवास

जिस दिशा का चन्द्र होवे उस दिशा से गिनना चाहिए। कुम्भ और मीन के चन्द्रमा में दक्षिण को कदापि न जाएं।

चन्द्रफलम्ः– सम्मुखे अर्थलाभाय दक्षिणे सुख–सम्पदः। पृष्ठतो मरणं चैव वामे चन्द्रे धनक्षयः ॥१॥ सर्वे दोषाःलयं यान्ति पूर्णचन्द्रे हि सम्मुखे॥

सम्मुखे चन्द्रप्रशंसा–भगणदोषं वार–संक्रान्ति–दोषं **कुतिथिकुलिकदोषं** यामयामार्धदोषम्। कुजशनिरविदोषं राहुकेत्वादि दोषं हरति **सकलदोषं चन्द्रमाः सम्मुखस्थः॥**

सर्वाङ्कसिद्धियोग–यात्राकालिक शुक्लादि तिथि तथा वार की संख्या को जोड़कर तीन जगह रखें। क्रमशः ७। ८। ३ का भाग दें। शेष प्रथम स्थान में शून्य हो तो क्लेश, मध्य में हो तो धनक्षति और अन्त में हो तो मृत्यु होती है। सर्वत्र अङ्क आने से सौख्य, जयलाभ हो। विजयादशमी को बिना सर्वांकादि मुहूर्त्त के भी यात्रा सफल होती है। बायां स्वर चलते समय पूर्व व ईशान को, दायां चलते समय दक्षिण व नैर्ऋत्य को मत जाऐं, हानि होती है। जाने वाले का अच्छे मुहूर्त्त और अच्छे शकुन में भी जाने को मन न चाहे तो भी कदापि न जाएं, क्योंकि मुहूर्त्त एवम् शकुन से मन की इच्छा प्रबल है।

वर्ण के क्रम से प्रस्थान का विधान– यदि यात्रा मुहूर्त्त में किसी अत्यावश्यक कार्यवश विलम्ब हो जाय, तो उसी मुहूर्त्त में ब्राह्मण जनेऊ, माला, क्षत्रिय शस्त्र, वैश्य मधु–घृत व रुपया और शूद्र फल को अपने वस्त्र में बांध, किसी घर के या नगर के बाहर जाने की दिशा में प्रस्थान के समय रखे। अथवा मन की सबसे प्यारी वस्तु को रख देना चाहिए।

यात्रा से पहले त्याज्य वस्तुः– यात्रा के तीन दिन पहले दूध त्याग दें, पांच दिन पूर्व हजामत, तीन दिन पूर्व तैल, सात दिन पूर्व मैथुन और समर्थ न हो तो एक दिन पहले तो सब त्याज्य वस्तुओं का त्याग अवश्य ही करें।

दिने चतुर्घटिका मुर्हूत्तम्		रात्रौ चतुर्घटिका मुर्हूत्तम्
सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि	घटि.	सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि
उद्वेग, अमृत, रोग, लाभ, शुभ, चर, काल	३॥।	शुभ, चर, काल, उद्वेग, अमृत, रोग, लाभ
चर, काल, उद्वेग, अमृत, रोग, लाभ, शुभ	७॥	अमृत, रोग, लाभ, शुभ, चर, काल, उद्वेग
लाभ, शुभ, चर, काल, उद्वेग, अमृत, रोग	११।	चर, काल, उद्वेग, अमृत, रोग, लाभ, शुभ
अमृत, रोग, लाभ, शुभ, चर, काल, उद्वेग	१५	रोग, लाभ, शुभ, चर, काल, उद्वेग, अमृत
काल, उद्वेग, अमृत, रोग, लाभ, शुभ, चर	१८॥।	काल, उद्वेग, अमृत, रोग, लाभ, शुभ, चर,
शुभ, चर, काल, उद्वेग, अमृत, रोग, लाभ	२२॥	लाभ, शुभ, चर, काल, उद्वेग, अमृत, रोग
रोग, लाभ, शुभ, चर, काल, उद्वेग, अमृत	२६।	उद्वेग, अमृत, रोग, लाभ, शुभ, चर, काल
उद्वेग, अमृत, रोग, लाभ, शुभ, चर, काल	३०	शुभ, चर, काल, उद्वेग, अमृत, रोग, लाभ

सूचनाः– यदि ३० घटी से न्यूनाधिक दिन या रात्रि का मान हो तो उसमें ८ का भाग देने से एक भाग के घटी–पल ज्ञात होंगे।

यात्रा में शुभ शकुन– मृग बाएं ते दाहिने जो आवे तत्काल। अन्न धन लक्ष्मी बहू मिले चलते प्रातःकाल॥ विप्र, दो अश्व, गजमद, फल, अन्न, दुग्ध, गोदधि, सर्षप, कमल, निर्मलवस्त्र, वाद्य, वेश्या, मयूर, नकुल, सिंहासन, शस्त्र, मांस, दीप्ताग्नि, मत्स्य, ससुत–स्त्री, गोरी कन्या, धोबी, कार्यसिद्धि वाक्य, जलपूर्णघट। यात्रा पश्चात् रिक्तघट यात्रा के समय देखने में शुभ है।

यात्रा में अशुभ शकुन :– बन्ध्या स्त्री, चर्म, अस्थि, इन्धन, संन्यासी, भैंसों का युद्ध, सर्प, शत्रु, मार्जारयुद्ध, कुटुम्बकलह, विधवास्त्री, जातिभ्रष्ट, अङ्गहीन, छिक्का, दुष्टवाणी यात्रा के समय देखना अशुभ तथा कष्टप्रद है।

आवश्यके रामदैवज्ञोक्त यात्रामुहूर्त्तचक्रम्

पौ.	मा.	फा.	चै.	वै.	ज्ये.	आ.	श्रा.	भा.	आ.	का.	मा.	पूर्व	दक्षिण	पश्चि.	उत्तर
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	सौख्य	क्लेश	भीति	लाभ
२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	शून्य	दारिद्र्य	दारिद्र्य	मिश्र
३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	हानि	दुःख	लाभ	लाभ
४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	लाभ	सौख्य	शुभ	लाभ
५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	लाभ	लाभ	लाभ	सुख
६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	भय	लाभ	मृत्यु	लाभ
७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	लाभ	कष्ट	लाभ	सुख
८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	कष्ट	सौख्य	क्लेश	सुख
९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	सौख्य	लाभ	सिद्धि	कष्ट
१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	क्लेश	सिद्धि	लाभ	धन
११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	मृत्यु	लाभ	लाभ	शुभ
१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	शुभ	सौख्य	मृत्यु	कष्ट

तृतीया–त्रयोदशी, चतुर्थी–चतुर्दशी, पञ्चमी–पूर्णमासी का फल समान जानना। अमावस्या में यात्रा वर्जित है, पक्ष का विचार नहीं है।

यात्रा में सदैव चल रही नासिका के श्वास की ओर का पांव आगे उठाकर चले, इसी तरह सवारी पर चढ़े। कार्य सिद्ध हो, यात्रा सफल होगी।

उद्वेग, अमृत, रोग, लाभ, शुभ, चर, काल | ३० | शुभ, चर, काल, उद्वेग, अमृत, रोग, लाभ
उठाकर चलें, इसी तरह सवारी पर चढ़ें। कार्य सिद्ध हों, यात्री सफल होगा।

नौकायात्रा–मुहूर्त्तः

चित्रा, हस्त, पु., मृग., पूर्वा. 3, अनु., श्रव., धनि.–एषु भेषु सत्तिथौ शुभेऽहिन चन्द्र–तारानुकूल्ये सति शुभः।

यात्रानिवृत्तौ प्रवेशमुहूर्त्तः

मृग., रेवती, अनु., रोहि., उत्तरा. 3, हस्त, अश्वि., पुष्य, स्वा., श्रवण, धनि. –एषु भेषु; चं., बु., बृ., शु., श. वारेषु; १। २। ३। ५। ७। १०। ११। १३ तिथिषु; ३। ५। ८। ९। ११। १२ एषु लग्नेषु; १। ४। ७। १०। ५। ९ स्थानेषु शुभैः; ३। ६। ११ स्थानेषु पापैः; ४। ८ शुद्धौ शुभः। विशा., कृत्ति., पूर्वा. ३, भरणी, मघा, मूल, ज्ये., आर्द्रा, आश्ले., नक्षत्राणि; ४। ९। १४। ६। १२। ८। ३० तिथयः; सू., मं. वारौ; १। ४। ७। १० लग्नानि सर्वदा वर्जनीयानि।

मंगलवार को मिलाप कष्टप्रद सिद्ध होता है।

विशेषः– प्रवेशान्निर्गमश्चैव निर्गमाच्च प्रवेशनम्। नवमे जातु नो कुर्याद्दिने वारे तिथाविति।।

अथ घातचन्द्रवारादीनां चक्रम्

राशि→	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.
घात चन्द्र	मे.	क.	कु.	सिं.	म.	मि.	ध.	वृष	मी.	सिंह	ध.	कुम्भ
घात वार	र.	श.	चं.	बु.	श.	श.	बृ.	शु.	शु.	मं.	बृ.	शु.
घात नक्षत्र	म.	ह.	स्वा.	अनु.	मू.	श्र.	श.	रे.	भ.	रो.	आ.	आश्ले.
स्त्री चन्द्रघात	मे.	ध.	ध.	मि.	वृश्चि.	वृश्चि.	मी.	ध.	कन्या	वृश्चि.	मि.	मेष
घात मास	का.	मार्ग.	आषा.	पौ.	ज्ये.	भाद्र.	माघ	आश्वि.	श्राव.	वैशा.	चैत्र	फाल्गु.
घातयोग	वि.	सु.	प.	धृ.	प्री.	सु.	अ.गं.	वृ.	वै.	गं.	व्या.	वै.
घातलग्न	१	२	४	७	१०	१२	६	८	९	११	३	५
घाततिथि	१	५	२	२	३	५	४	१	३	४	३	५
घाततिथि	६	१०	७	७	८	१०	९	६	८	९	८	१०
घाततिथि	११	१५	१२	१२	१३	१५	१४	११	१३	४	१३	१५

युद्ध, विवाद, राजसेवा,वाहन, रोगादि कार्यों में घातचक्र देखना और तीर्थयात्रा तथा विवाहादि शुभ कार्यों में घाततिथि आदि देखने की आवश्यकता नहीं होती। **"घाततिथिर्घातवारः घातनक्षत्रमेव च। यात्रायां वर्जयेत्प्राज्ञैरन्यकर्मसु शोभनम्।।"**

वाम–दक्षिणनिर्देश

अग्रे चक्रोक्त सर्व फल पुरुषों के दक्षिण अंग में और स्त्रियों के वामांग में विचार करना, पुरुषों के वाम भाग में और स्त्रियों के दक्षिण भाग में विपरीत अशुभ, भयकारी फल होता है। जो फल पल्लीपात का है, वही सरट (गिरगिट) के चढ़ने का समझें। सरट के गिरने का तथा पल्ली के चढ़ने का फल वृथा होता है।

अथाङ्ग विभाग में पल्ली–(छिपकली, कोढ़किरली) पतन का फल

स्थानम्	फलम्	स्थानम्	फलम्	स्थानम्	फलम्
शिरसि	राज्यलाभः	भ्रूमध्ये	राज्यसंबंधः	वामपादे	नाशः
नासाग्रे	व्याधिः	वामकर्णे	बहुलाभः	अधरोष्ठे	ऐश्वर्यलाभः
वामभुजे	राज्यभयम्	स्तनयोः	दौर्भाग्यम्	दक्षिणभुजे	नृपतुल्यता
जानद्वये	शुभागमः	हस्तयोः	वस्त्रलाभः	पृष्ठदेशे	बुद्धिनाशः
कटिभागे	अश्वलाभः	वा. मणिबंधे	कीर्तिनाशः	नाभौ	बहुधनम्
गुल्फद्वये	बन्धनम्	दक्षिणपादे	गमनम्	मुखे	मिष्ठान्नभोजनम्
ललाटे	बन्धुदर्शनम्	उत्तरोष्ठे	धननाशः	पादमध्ये	स्त्रीनाशः
दक्षिणकर्णे	आयुवृद्धिः	नेत्रयोः	धनप्राप्तिः	पादान्ते	मृत्युः
कण्ठे	शत्रुनाशः	उदरे	भूषणलाभः	केशान्ते	रणम्
जंघयोः	शुभम्	स्कन्धयोः	विजयः	नखेषु	धान्यलाभः
द.मणिबंधे	मनस्तापः	हृदये	धनलाभः	दक्षिणांगुष्ठे	धनलाभः

पल्लीपतने प्रशस्तवारतिथ्यर्क्षाणि

यदि छिपकली १। २। ३। ५। ६। १०। ११। १२। १३– इन तिथियों में गिरे तो श्रेष्ठ फलदायक है तथा चं., बु., गु., शु.– इन वारों में भी शुभ फल देती है। पुष्य, अश्वि., रोहि., मूल, पुन., उ.फा., हस्त, चित्रा, स्वा., धनि., रेवती, अनु., शत– ये नक्षत्र शुभफलदायक हैं। इसके अलावा अन्य नक्षत्रों में गिरे तो शुभ नहीं– अतोऽन्यद्भेषु निन्द्याः।

पल्ली (किरली) पतनोपरान्त कर्तव्य—पल्ली (किरली) तथा सरट (गिरगिट) स्पर्श होने पर वस्त्रसहित स्नान करें। जन्मनक्षत्र, मृत्युयोग, दग्धा–तिथि, भद्रा आदि से दूषित दिन को पापग्रहयुक्त लग्न में तथा अष्टम चन्द्रमा से पल्ली आदि के स्पर्श होने से अरिष्ट होता है। उसकी शान्ति के लिए जप, होम, मृत्युञ्जय जाप एवम् तिल, स्वर्ण, दान और पञ्चगव्य से स्नान तथा घृत का छायापात्र दान भी करना उत्तम है।

छिक्का फलम्

छिक्का प्रायः सब दिशाओं की नेष्ट होती है। गौ की छिक्का मरण करती है— "**मदिरा के योग अथवा छींक सूंघनी छल कर लीन्हीं, पीन सरदी घास फल हीनी। छींक पीठी की कुशवाल उचारे; बाईं कारज सवै सवारे॥१॥ सम्मुख छींक लड़ाई भापै; छींक दाहिनी द्रव्य विनाशै ॥२॥ ऊंची छींक कहे जयकारी; नीची छींक होय भयकारी। अपनी छींक महा दुखदाई; ऐसे छींक विचारो भाई ॥३॥**

कन्या, विधवा, मालिन, धोबिन, रजस्वला, वैश्या, चमारी की छींक विशेष अशुभप्रद होती है। भोजनान्त में छींक होय तो दूसरे दिन प्रिय भोजन मिले।

अथ शुभ छिक्काः— आसने शयने शौचे दाने चैव तु भोजने। वामांगे पृष्ठतश्चैव षट् छिक्कास्तु शुभावहाः। एक नाक से दो छींक भी शुभ मानी जाती है— **एक नाक दो छींक; काम बने सब ठींक॥**

तीर्थ में मुण्डनविचार

मुण्डनं चोपवासञ्च सर्वतीर्थेष्वयं विधिः। वर्जयित्वा कुरुक्षेत्रं विशालां (उज्जयिनीं) गिरिजां गयाम्।।

अथ वारंपरत्वेन तैलाभ्यंगे फलं–विधिश्च								तैलाभ्यंगे वर्ज्यानि
सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	वाराः	तदत्राह—
तापम्	सुकीर्ति	मृतिः	श्री.	वित्त हानि	विपत्ति	सुख सुयोग	फलम्	रवौ भौमे व्यतिपाते संक्रांतौ वैधृतावपि। षष्ट्यष्टम्योश्च विष्ट्यां च तैलाभ्यंगो न पर्वसु।।
पुष्पं	०	मृत्तिका	०	दूर्वा	गोमय	०	पातनम्	

विशेष— यदि प्रतिदिन तेल लगाने का स्वभाव हो तब अथवा उत्सव के दिन व वातरोग में तेल लगाने में दोष नहीं है। अभिमन्त्रित औषधि में पकाया हुआ सरसों का तेल व सुगंधित तेल लगाने से किसी दिन दोष नहीं है।

अंग–स्फुरण का फल

पुरुषों का दायां और स्त्रियों का बायां अंग फरकना शुभ है।
मस्तक का स्फुरण (फरकना) स्त्री–पुरुष दोनों के लिए शुभ है।

स्थान	फल	स्थान	फल	स्थान	फल
मस्तक	पृथ्वीलाभ	वक्षस्थल	विजय	ओष्ठ	प्रियवस्तुप्राप्ति
ललाट	स्थानलाभ	हृदय	इष्टसिद्धि	हनु	महाभाग्य
स्कन्ध	भोगवृद्धि	कटि	प्रमाद	कण्ठ	ऐश्वर्यलाभ
भ्रूमध्य	सुखप्राप्ति	कटिपार्श्व	प्रीति	ग्रीवाधोभाग	शत्रुभय
भ्रूयुग्म	महत्सौख्य	नाभि	स्त्रीनाश	पृष्ठ	पराजय
कपोल	शुभप्राप्ति	आंत्रिक	कोषवृद्धि	मुख	मित्रप्राप्ति
नेत्र	धनप्राप्ति	भग	पतिप्राप्ति	भुज	मधुरभोजन
नेत्रकोण	लक्ष्मीलाभ	कुक्ष	सुप्रीति	भुजमध्य	धनागम
नेत्रसमीप	प्रियसंगम	उदर.	कोषलाभ	वरितदेश	भाग्योन्नति
नेत्रपक्षम	राज्यलाभ	लिंग	स्त्रीलाभ	ऊरु	वस्त्रलाभ
हस्त	सद्द्रव्यलाभ	गुदा	वाहनलाभ	जानु	शत्रुवृद्धि
नेत्रोर्ध्व	विजय	वृषण	पुत्रलाभ	जंघा	स्वामीप्रीति .
पादोर्ध्व	स्थानलाभ	पादतल	नृपत्व–बुद्धि		

इन्हीं अंगों में तिल, लसन, मस्सा हो व खुजली उठे तो भी चक्रोक्त फल जानें। पैर के तलुओं में खुजली उठे तो यात्रा हो। राजाओं के हाथ में तिल व खाज हो तो जय होती है। साधारण व्यक्ति को लाभ होता है।

काकस्पर्श का फल

मस्तक पर काक स्पर्श धननाश, मरण तथा कलह करता है। कमर, कन्धे पर अशुभ होता है। स्त्री के मस्तक पर काक बैठना पति–पुत्र का नाश करता है। वृक्ष के नीचे दहीं आदि के उत्तम भोजन के कारण काक का स्पर्श दोषकारक नहीं होता, किन्तु अकस्मात् स्पर्श दोष करता है। काकमैथुन का देखना छः मास में मृत्यु अथवा मृत्युतुल्य कष्ट व इच्छितकार्य का नाश करता है। इसके दोष दूर करने के निमित्त उड़द के आटे की काकप्रतिमा मृण्मय (मिट्टी के) पात्र में स्थापित कर उड़द, चावल, घी, मीठे का नैवेद्य देवें। ग्राम में दक्षिण की ओर बाहर चौराहे पर गन्ध, पुष्प, धूप, दीप, दक्षिणादि से पूजन कर मृत्युञ्जय मन्त्र का यथाशक्ति जप करें (या करावें), घृतच्छाया–पात्र दान, पञ्चगव्य से स्नान भी करे। इस विधान के करने से सम्पूर्ण दोष नष्ट होते हैं।

काकविष्ठा विचार :— शिरसि–मृत्युः वा कष्टम्। स्कन्धयोः रोगः। भुजयोः प्रियार्तिः। उदरे शोकः। गुह्ये सन्तानकष्टम्। जंघयोः वाहनपीड़ा। पादयोः प्रवासः।

कौवा उड़ता हुआ या किसी सूखे पेड़ पर बैठा हुआ किंवा पूर्व की तरफ बैठा हुआ अथवा दक्षिण दिशा की ओर मुंह किए किसी के ऊपर काली बीठ कर दे तो अशुभ होता है। यदि किसी हरे–भरे या फूले–फले पीपल, बड आदि श्रेष्ठ पेड पर बैठा हुआ सफेद बीठ कर दे तो शुभ जानिए।

विवाहादि मुहूर्त्त (सं. २०७९ वि.)

प्रो. प्रियव्रत शर्मा, 59/6 (अभिजित्), P.O. पंचकूला–134 109,

(इन विवाहादि मुहूर्त्तों के शोधन में नालाबलोग (पंचकूला) निवासी, मेरे योग्य शिष्य चि. सुरेशानन्द गौतम का पर्याप्त सहयोग मिला है।)

–: समयशुद्धि :–

शुक्र-अस्त :– इस वर्ष आश्वि. शु. ५ शु. से मार्ग. शु. २ शु. (३० सितं. से २५ नवं., २०२२ ई.) तक शुक्र अस्त रहेगा।

गुरु-अस्त :– गुरु इस संवत् २०७९ वि. में वर्षभर उदित रहेगा।

गुरु-शुक्र के अस्त का यह उपरोक्त काल पंजाब, हरियाणा, हि.प्र., दिल्ली आदि के लिए है। क्योंकि, अक्षांशभेद से इन ग्रहों के उदय-अस्त की तारीखें भिन्न-भिन्न होती हैं, इसलिए अपने अभीष्ट स्थल के अक्षांशानुसार उस स्थल के गुरु-शुक्र की उदय-अस्त की तारीख नीचे दिए गए कोष्ठक से जानकर विवाहादि मुहूर्त्तों का दैवज्ञ को निर्णय करना चाहिए।

अक्षांशभेद से भारत के विभिन्न स्थलों पर गुरु-शुक्र का उदय-अस्त 'सं. २०७९ वि.'

अक्षांश →	+५°	+१५°	+२५°	+३५°
शुक्र पूर्व में अस्त	२६ सितं., २२	२८ सितं., २२	३० सितं., २२	३० सितं., २२
शुक्र पश्चिम में उदित	१६ नवं., २२	१८ नवं., २२	२२ नवं., २२	२७ नवं., २२
गुरु अस्त	–	–	–	–
गुरु उदित	–	–	–	–

ध्यान रहे :– गुरु-शुक्र के अस्तकाल में तो शुभकृत्य वर्जित रहते हैं, इनके अस्तदिन से ३ दिन पहले **वार्धक्यदोष** और उदयदिन के ३ दिन बाद तक भी **बाल्यदोष** के कारण शुभकृत्य नहीं किए जाते।

ध्यान दें – मुहूर्त्तों में जिस लग्न का कुछ भाग किसी विशेष दोष के कारण वर्जित है, उस लग्न के आगे कोष्ठक में भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम के अनुसार यह निर्देश दिया गया है कि-इस लग्न को इस टाईम के बाद अथवा पहले ही मुहूर्त्तों में स्वीकार करें।

दैवज्ञ ध्यान दें–

(विवाहलग्नों की संख्या में वृद्धि)

इन आगे दिए जा रहे शुद्ध विवाहमुहूर्त्तों को देखने से आपको ज्ञात होगा कि-विगत कई वर्षों से शुद्ध विवाहलग्नों की संख्या हमारे पंचांग में पहले की अपेक्षा अधिक हो गई है। दैवज्ञों के लिए इस अधिक संख्या का कारण यहां स्पष्ट कर देना आवश्यक है।

भारत के अधिकतर पंचांगों में लग्नस्थ चन्द्र-पापग्रह, षष्ठस्थ चन्द्र-शुक्र-लग्नेश, सप्तमस्थ सूर्य-मंगल-बुध-शुक्र-शनि-राहु-केतु तथा अष्टमस्थ चन्द्र-मंगल-लग्नेश या शुभग्रह होने पर परम्परया लग्नभंग माना जा रहा है। ऐसी स्थिति में उस लग्न को पंचांगकार तभी विवाहयोग्य मानते हैं, जबकि वहां लग्नभंग का परिहार हो। इस परम्परा में लग्नस्थ चन्द्र और पापी ग्रह तथा षष्ठस्थ लग्नेश और सप्तमस्थ सूर्य-मंगल-बुध-शुक्र-शनि-राहु-केतु एवम् अष्टमस्थ लग्नेश का परिहार बिल्कुल नहीं माना जाता और इन स्थितियों में उस लग्न को विवाह में सर्वथा अयोग्य दैवज्ञ लोग मानते चले आते रहे हैं। लेकिन संहिताओं में अनेक ऐसे विशेष स्पष्ट वाक्य हमें मिलते हैं, जो सप्तमहीन केन्द्र-त्रिकोणस्थ बुध-शुक्र-गुरु, एकादशस्थ सूर्य-चन्द्र, सप्तमहीन केन्द्रस्थ या एकादशस्थ लग्नेश आदि दस ग्रहादि-स्थितियों को सभी प्रकार के लग्नभंगों का परिहारक घोषित करते हैं। लग्नभंग के इन संहितोक्त विशेष परिहारों में से यदि केवल एक भी परिहार लग्नकुण्डली में प्राप्त हो जाए तब संहिताकारों का कहना है कि-उस एकमात्र परिहार से ही वहां लग्नभंगकारक सभी दोष पूरी तरह नष्ट हो जाते हैं। ये परिहार दशमस्थ मंगल, चतुर्थस्थ राहु, तृतीयस्थ शुक्र, सप्तमस्थ गुरु-चन्द्र और द्वादशस्थ शनि की पूजा वाले दोषों का भी पूरी तरह निवारण करते हैं-यह भी इन परिहार वाक्यों से सुस्पष्ट है। संहिताओं के इन्हीं प्रबल प्रमाणवाक्यों के आधार पर हमने विगत कुछ वर्षों से लग्नभंगकारक दोषों के इन संहितोक्त विशेष परिहारों को भी दृष्टि में रखते हुए विवाहार्थ शुद्ध लग्नों का यहां निर्णय किया है, जिससे शुद्ध विवाहलग्नों की संख्या में यह वृद्धि हुई है।

ध्यान दें–पहले शुद्धविवाहलग्नों के आगे कोष्ठक में लग्नभंगकारक उन ग्रहों का निर्देश किया रहता था, जिनका वहां परिहार हुआ है। अब यह निर्देश अनावश्यक समझकर हमने छोड़ दिया है। विशेष स्पष्टता के लिए मेरी पुस्तक **''मुहूर्त्तगजानन''** के पृष्ठ १५१ पर दिया लेख **'लग्नभंगपरिहार (एक संशोधन)'** अवश्य पढ़िये। यह लेख सं. २०७० वि. के पंचांग में भी प्रकाशित हुआ है।

शुद्ध विवाह मुहूर्त्त (सं. २०७९ वि.)

मास-तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख २०२२ ई.	विवाह नक्षत्र	विवाह लग्न के समय			शुद्ध लग्न (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
				चन्द्रराशि	सूर्यराशि	गुरुराशि	
चैत्र शु. १४ शु.	वैशा. २	अप्रै. १५	उ.फा.	कन्या	मेष	मीन	दि.ल. २ (७/५५ तक),
चैत्र शु. १४ शु.	वैशा. २	अप्रै. १५	हस्त	कन्या	मेष	मीन	ल. गोधू., ८, ९, (मृत्यु-परिहार),
चैत्र शु. १५ श.	वैशा. ३	अप्रै. १६	चित्रा	कन्या/तुला	मेष	मीन	ल. गोधू., ८, ९, १२, (१४/२१ तक गुरुपादवेध),
वैशा. कृ. ३ मं.	वैशा. ६	अप्रै. १९	अनु.	वृश्चिक	मेष	मीन	ल. गोधू., ९, (बुध-पादवेधाभाव),
वैशा. कृ. ४ बु.	वैशा. ७	अप्रै. २०	मूल	धनु	मेष	मीन	ल. १२,
वैशा. कृ. ५ गु.	वैशा. ८	अप्रै. २१	मूल	धनु	मेष	मीन	दि. ल. २, ३, गोधू; ८ (२१/५१ तक),
वैशा. कृ. ६ शु.	वैशा. ९	अप्रै. २२	उ.षा.	धनु/मकर	मेष	मीन	ल. ८, १२,
वैशा. कृ. ७ श.	वैशा. १०	अप्रै. २३	उ.षा.	मकर	मेष	मीन	दि. ल. २, ३,
वैशा. कृ. ७ श.	वैशा. १०	अप्रै. २३	श्रव.	मकर	मेष	मीन	ल. गोधू; ८, ९, १२,
वैशा. कृ. ९ र.	वैशा. ११	अप्रै. २४	श्रव.	मकर	मेष	मीन	दि. ल. २, ३, (मृत्यु-परिहार),
वैशा. कृ. १२ बु.	वैशा. १४	अप्रै. २७	उ.भा.	मीन	मेष	मीन	दि. ल. ६ (१७/५ से १७/३५ तक),
वैशा. शु. २ चं.	वैशा. १९	मई २	रोहि.	वृष	मेष	मीन	ल. १० (२४/३३ बाद) (निर्बललग्न), १२,
वैशा. शु. ३ मं.	वैशा. २०	मई ३	रोहि.	वृष	मेष	मीन	दि. ल. ३, ४, रा. ल. ९, १० (निर्बल लग्न), (मृत्यु-परिहार),
वैशा. शु. ३ मं.	वैशा. २०	मई ३	मृग.	वृष	मेष	मीन	ल. १२ (२७/१७ बाद), (मृत्यु-परिहार),
वैशा. शु. ८ चं.	वैशा. २६	मई ९	मघा	सिंह	मेष	मीन	ल. गोधू; १० (२५/६ बाद) (निर्बल लग्न), १२,
वैशा. शु. ९ मं.	वैशा. २७	मई १०	मघा	सिंह	मेष	मीन	दि.ल. २, ३, ४,
वैशा. शु. १० बु.	वैशा. २८	मई ११	उ.फा.	सिंह/कन्या	मेष	मीन	ल. ९, १० (निर्बल लग्न), १२,
वैशा. शु. ११ गु.	वैशा. २९	मई १२	उ.फा.	कन्या	मेष	मीन	दि. ल. २ (७/११ तक), (१३/३३ बाद शुक्रपादवेध),
वैशा. शु. ११ गु.	वैशा. २९	मई १२	हस्त	कन्या	मेष	मीन	ल. ९, १० (निर्बल लग्न), (गुरु-पादवेधाभाव),
वैशा. शु. १४ र.	ज्ये. २	मई १५	स्वा.	तुला	वृष	मीन	दि. ल. ४ (९/४८ बाद),
वैशा. शु. १५ चं.	ज्ये. ३	मई १६	अनु.	वृश्चिक	वृष	मीन	ल. ९, १० (निर्बल लग्न), १२, (मृत्यु-परिहार),
ज्ये. कृ. १ मं.	ज्ये. ४	मई १७	अनु.	वृश्चिक	वृष	मीन	दि. ल. ३, ४ (१०/४६ तक),
ज्ये. कृ. ३ बु.	ज्ये. ५	मई १८	मूल	धनु	वृष	मीन	दि.ल. ३ (८/९ बाद), ४, रा. ल. १० (२३/३७ बाद) (निर्बल लग्न),
ज्ये. कृ. ५ शु.	ज्ये. ७	मई २०	उ.षा.	धनु/मकर	वृष	मीन	दि. ल. ३, ४, गोधू; ९,

शुद्ध विवाह मुहूर्त्त (सं. २०७९ वि.)

मास-तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख २०२२ ई.	विवाह नक्षत्र	विवाह लग्न के समय चन्द्रराशि	सूर्यराशि	गुरुराशि	शुद्ध लग्न (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
ज्ये. कृ. ६ श.	ज्ये. ८	मई २१	श्रव.	मकर	वृष	मीन	दि. ल. ३, ४,
ज्ये. कृ. ११ गु.	ज्ये. १३	मई २६	रेव.	मीन	वृष	मीन	दि. ल. ३, ४, गोधू; ९, १०, (मृत्यु-परिहार),
ज्ये. कृ. १२ शु.	ज्ये. १४	मई २७	अश्वि.	मेष	वृष	मीन	दि. ल. ३, ४,
ज्ये. शु. १ मं.	ज्ये. १८	मई ३१	मृग.	वृष/मिथुन	वृष	मीन	ल. गोधू; ९, १०,
ज्ये. शु. २ बु.	ज्ये. १९	जून १	मृग.	मिथुन	वृष	मीन	दि. ल. ४,
ज्ये. शु. ६ चं.	ज्ये. २४	जून ६	मघा	सिंह	वृष	मीन	दि. ल. ३, ४, गोधू; ९, १०,
ज्ये. शु. ८ बु.	ज्ये. २६	जून ८	उ.फा.	सिंह/कन्या	वृष	मीन	दि. ल. ३, ४, गोधू; ९, १०,
ज्ये. शु. १० शु.	ज्ये. २८	जून १०	चित्रा	कन्या	वृष	मीन	दि. ल. ३, ४,
ज्ये. शु. ११ श.	ज्ये. २९	जून ११	स्वा.	तुला	वृष	मीन	ल. गोधू; ९, १०,
ज्ये. शु. १४ चं.	ज्ये. ३१	जून १३	अनु.	वृश्चिक	वृष	मीन	दि.ल. ३, ४, रा.ल. ९ (२१/३ तक), (शुक्र-पादवेधाभाव), (मृत्यु-परिहार),
आषा. कृ. ७ चं.	आषा. ६	जून २०	उ.भा.	मीन	मिथुन	मीन	ल. २ (२८/३५ बाद),
आषा. कृ. ८ मं.	आषा. ७	जून २१	उ.भा.	मीन	मिथुन	मीन	दि. ल. ४, गोधू; १०, २,
आषा. कृ. १० गु.	आषा. ९	जून २३	अश्वि.	मेष	मिथुन	मीन	दि. ल. ४ (७/१९ से ९/१३ तक), रा. ल. १० (२१/४२ बाद), २,
आषा. कृ. ११ शु.	आषा. १०	जून २४	अश्वि.	मेष	मिथुन	मीन	दि. ल. ४ (८/३ तक),
आषा. शु. ४ र.	आषा. १९	जुला. ३	मघा	सिंह	मिथुन	मीन	ल. गोधू; १०, १२, २,
आषा. शु. ५ चं.	आषा. २०	जुला. ४	मघा	सिंह	मिथुन	मीन	दि. ल. ४ (८/४३ तक),
आषा. शु. ६ मं.	आषा. २१	जुला. ५	उ.फा.	सिंह/कन्या	मिथुन	मीन	दि. ल. ६ (१२/१४ बाद), गोधू; १०, १२, २, (मृत्यु-परिहार),
आषा. शु. ८ गु.	आषा. २३	जुला. ७	हस्त	कन्या	मिथुन	मीन	दि. ल. ४ (७/३९ बाद), (गुरु-पादवेधाभाव),
आषा. शु. ८ गु.	आषा. २३	जुला. ७	चित्रा	कन्या/तुला	मिथुन	मीन	ल. गोधू; १०, १२, २,
आषा. शु. ९ शु.	आषा. २४	जुला. ८	चित्रा	तुला	मिथुन	मीन	दि. ल. ४, ६ (१२/१३ तक),
आषा. शु. ९ शु.	आषा. २४	जुला. ८	स्वा.	तुला	मिथुन	मीन	दि. ल. ६ (१२/१३ बाद), गोधू., १०, १२, २,
आषा. शु. १० श.	आषा. २५	जुला. ९	स्वा.	तुला	मिथुन	मीन	दि. ल. ४, ६ (११/२४ तक),
श्राव. कृ. १ गु.	आषा. ३०	जुला. १४	उ.षा.	मकर	मिथुन	मीन	दि. ल. ५ (९/४७ बाद) (निर्बल लग्न), ६, ८, गोधू; (९/४७ तक शुक्र-पादवेध),
श्राव. कृ. १ गु.	आषा. ३०	जुला. १४	श्रव.	मकर	मिथुन	मीन	ल. ११, १२, २ (निर्बल लग्न), (मृत्यु-परिहार),

शुद्ध विवाह मुहूर्त्त (सं. २०७९ वि.)

मास-तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख २०२२ ई.	विवाह नक्षत्र	विवाह लग्न के समय			शुद्ध लग्न (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
				चन्द्रराशि	सूर्यराशि	गुरुराशि	
श्राव. कृ. ५ चं.	श्राव. ३	जुला. १८	उ.भा.	मीन	कर्क	मीन	दि.ल.८(१५/२५ तक), गोधू; ११, २(निर्बल लग्न), ३, (मृत्यु-परिहार),
श्राव. कृ. ६ मं.	श्राव. ४	जुला. १९	रेव.	मीन	कर्क	मीन	ल. ११, २(निर्बल लग्न), ३,
श्राव. कृ. ७ बु.	श्राव. ५	जुला. २०	रेव.	मीन	कर्क	मीन	दि. ल. ५(निर्बल लग्न), ६,
श्राव. कृ. ७ बु.	श्राव. ५	जुला. २०	अश्वि.	मेष	कर्क	मीन	दि. ल. ८, गोधू; ११, १२, २(निर्बल लग्न), ३,
श्राव. कृ. ८ गु.	श्राव. ६	जुला. २१	अश्वि.	मेष	कर्क	मीन	दि. ल. ५(निर्बल लग्न), ६,
श्राव. कृ. १० श.	श्राव. ८	जुला. २३	रोहि.	वृष	कर्क	मीन	ल. गोधू; ११, १२, ३,
श्राव. कृ. ११ र.	श्राव. ९	जुला. २४	रोहि.	वृष	कर्क	मीन	दि. ल. ५(निर्बल लग्न), ६, ८, गोधू; ११,
श्राव. कृ. ११ र.	श्राव. ९	जुला. २४	मृग.	वृष	कर्क	मीन	ल. १२(२२/० बाद), ३,
श्राव. कृ. १२ चं.	श्राव. १०	जुला. २५	मृग.	वृष/मिथुन	कर्क	मीन	दि. ल. ५(निर्बल लग्न), ६, ८(१५/२ तक),
श्राव. शु. २ श.	श्राव. १५	जुला. ३०	मघा	सिंह	कर्क	मीन	ल. ११, १२, २(निर्बल लग्न), ३,
श्राव. शु. ३ र.	श्राव. १६	जुला. ३१	मघा	सिंह	कर्क	मीन	दि. ल. ६, ८(१४/२० तक),
श्राव. शु. ५ मं.	श्राव. १८	अग. २	उ.फा.	कन्या	कर्क	मीन	दि. ल. ५(निर्बल लग्न), ८,
श्राव. शु. ५ मं.	श्राव. १८	अग. २	हस्त	कन्या	कर्क	मीन	ल. २(निर्बल लग्न), ३, (२३/४५ तक गुरु-पादवेध),
श्राव. शु. ६ बु.	श्राव. १९	अग. ३	हस्त	कन्या	कर्क	मीन	दि. ल. ५(निर्बल लग्न), ८, (गुरु-पादवेधाभाव),
श्राव. शु. ६ बु.	श्राव. १९	अग. ३	चित्रा	कन्या	कर्क	मीन	ल. गोधू; १२, २(निर्बल लग्न), ३,
श्राव. शु. ७ गु.	श्राव. २०	अग. ४	चित्रा	तुला	कर्क	मीन	दि. ल. ५(निर्बल लग्न), ६, ८,
श्राव. शु. ७ गु.	श्राव. २०	अग. ४	स्वा.	तुला	कर्क	मीन	ल. गोधू; १२, २(निर्बल लग्न), ३,
श्राव. शु. १२ मं.	श्राव. २५	अग. ९	मूल	धनु	कर्क	मीन	दि. ल. ५(निर्बल लग्न), ६(निर्बल लग्न), (शुक्र-पादवेधाभाव),
श्राव. शु. १३ बु.	श्राव. २६	अग. १०	उ.षा.	धनु/मकर	कर्क	मीन	दि. ल. ६(९/३९ बाद)(निर्बल लग्न), ८, ९, रा. ल. १२, २(निर्बल लग्न), ३,
श्राव. शु. १४ गु.	श्राव. २७	अग. ११	उ.षा.	मकर	कर्क	मीन	दि. ल. ५(६/५२ तक)(निर्बल लग्न),
श्राव. शु. १४ गु.	श्राव. २७	अग. ११	श्रव.	मकर	कर्क	मीन	दि. ल. ५ (६/५२ बाद) (निर्बल लग्न), ६(१०/३९ तक) (निर्बल लग्न), १२ (२०/५२ बाद), ३,
भाद्र. कृ. ३ र.	श्राव. ३०	अग. १४	उ.भा.	मीन	कर्क	मीन	ल. ३,
भाद्र. कृ. ४ चं.	श्राव. ३१	अग. १५	उ.भा.	मीन	कर्क	मीन	दि. ल. ५ (निर्बल लग्न), ६ (निर्बल लग्न), ९, गोधू; १२ (२१/६ तक), (मृत्यु-परिहार),

१२ (२१/६ तक), (मृत्यु-परिहार),

शुद्ध विवाह मुहूर्त्त (सं. २०७९ वि.)

मास-तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख २०२२ ई.	विवाह नक्षत्र	विवाह लग्न के समय			शुद्ध लग्न (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
				चन्द्रराशि	सूर्यराशि	गुरुराशि	
भाद्र. कृ. ४ चं.	श्राव. ३१	अग. १५	रेव.	मीन	कर्क	मीन	ल. १२ (२१/६ बाद), ३ (२५/२२ बाद), (मृत्यु-परिहार),
भाद्र. कृ. ८ शु.	भाद्र. ३	अग. १९	रोहि.	वृष	सिंह	मीन	ल. ३ (२५/५३ बाद),
भाद्र. कृ. ९ श.	भाद्र. ४	अग. २०	रोहि.	वृष	सिंह	मीन	दि. ल. ६ (निर्बल लग्न), ९, गोधू; १२, ३,
भाद्र. कृ. १० र.	भाद्र. ५	अग. २१	मृग.	वृष	सिंह	मीन	दि. ल. ६,
भाद्र. शु. १ र.	भाद्र. १२	अग. २८	उ.फा.	सिंह	सिंह	मीन	ल. ३,
भाद्र. शु. २ चं.	भाद्र. १३	अग. २९	उ.फा.	कन्या	सिंह	मीन	दि. ल. ९,
भाद्र. शु. २ चं.	भाद्र. १३	अग. २९	हस्त	कन्या	सिंह	मीन	ल. ३,
भाद्र. शु. ३ मं.	भाद्र. १४	अग. ३०	हस्त	कन्या	सिंह	मीन	दि. ल. ९, (११/२९ तक गुरुपादवेध),
भाद्र. शु. ३ मं.	भाद्र. १४	अग. ३०	चित्रा	कन्या	सिंह	मीन	ल. ३,
भाद्र. शु. ४ बु.	भाद्र. १५	अग. ३१	चित्रा	तुला	सिंह	मीन	ल. गोधू., (१३/५० से १७/५३ तक क्रान्तिसाम्य),
भाद्र. शु. ४ बु.	भाद्र. १५	अग. ३१	स्वा.	तुला	सिंह	मीन	ल. ३,
भाद्र. शु. ५ गु.	भाद्र. १६	सितं. १	स्वा.	तुला	सिंह	मीन	दि. ल. ६, ९, गोधू;
भाद्र. शु. ८ र.	भाद्र. १९	सितं. ४	मूल	धनु	सिंह	मीन	ल. ३,
भाद्र. शु. ९ चं.	भाद्र. २०	सितं. ५	मूल	धनु	सिंह	मीन	दि. ल. ६, गोधू;
भाद्र. शु. १२ बु.	भाद्र. २२	सितं. ७	उ.षा.	मकर	सिंह	मीन	दि. ल. ६, ९,
भाद्र. शु. १२ बु.	भाद्र. २२	सितं. ७	श्रव.	मकर	सिंह	मीन	ल. गोधू; (२१/२६ से २६/५३ तक शुक्र-पादवेध),
भाद्र. शु. १३ गु.	भाद्र. २३	सितं. ८	श्रव.	मकर	सिंह	मीन	दि. ल. ६, (शुक्र-पादवेधाभाव),
मार्ग. शु. ५ चं.	मार्ग. १३	नवं. २८	श्रव.	मकर	वृश्चिक	मीन	ल. गोधू; ३, ५ (२५/९ तक), (२५/९ बाद क्रान्तिसाम्य),
मार्ग. शु. ६ मं.	मार्ग. १४	नवं. २९	श्रव.	मकर	वृश्चिक	मीन	दि. ल. ९ (८/३८ तक),
मार्ग. शु. १० शु.	मार्ग. १७	दिसं. २	उ.भा.	मीन	वृश्चिक	मीन	दि. ल. ९, ११, गोधू; ३, ५, ६ (निर्बल लग्न),
मार्ग. शु. १२ र.	मार्ग. १९	दिसं. ४	अश्वि.	मेष	वृश्चिक	मीन	दि. ल. ९, ११, १२, रा. ल. ५, ६ (निर्बल लग्न),
मार्ग. शु. १४ बु.	मार्ग. २२	दिसं. ७	रोहि.	वृष	वृश्चिक	मीन	ल. ५, ६, (भौमयुति-परिहार),
मार्ग. शु. १५ गु.	मार्ग. २३	दिसं. ८	रोहि.	वृष	वृश्चिक	मीन	दि. ल. ९, ११ (१२/३२ तक) (निर्बल लग्न), (भौमयुति-परिहार),
मार्ग. शु. १५ गु.	मार्ग. २३	दिसं. ८	मृग.	वृष/मिथुन	वृश्चिक	मीन	दि. ल. ११ (१२/३२ बाद) (निर्बल लग्न), १२, रा. ल. ५, ६,
पौष. कृ. १ शु.	मार्ग. २४	दिसं. ९	मृग.	मिथुन	वृश्चिक	मीन	दि. ल. ९, ११ (निर्बल लग्न), १२,

शुद्ध विवाह मुहूर्त्त (सं. २०७९ वि.)

मास-तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख २०२२-२३ ई.	विवाह नक्षत्र	विवाह लग्न के समय			शुद्ध लग्न (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
				चन्द्रराशि	सूर्यराशि	गुरुराशि	
पौष. कृ. ६ बु.	मार्ग. २९	दिसं. १४	मघा	सिंह	वृश्चिक	मीन	दि. ल. ९ (८/६ बाद), (१०/४६ बाद मृत्युबाण),
माघ कृ. ८ र.	माघ २	जन. १५	चित्रा	तुला	मकर	मीन	दि. ल. ११ (निर्बल लग्न), १२, गोधू;
माघ शु. १ र.	माघ ९	जन. २२	श्रव.	मकर	मकर	मीन	ल. ६ (२२/२८ बाद) (निर्बल लग्न),
माघ शु. ४ बु.	माघ १२	जन. २५	उ.भा.	मीन	मकर	मीन	ल. ६ (निर्बल लग्न), ९,
माघ शु. ५ गु.	माघ १३	जन. २६	उ.भा.	मीन	मकर	मीन	ल. गोधू;
माघ शु. ५ गु.	माघ १३	जन. २६	रेव.	मीन	मकर	मीन	ल. ६ (निर्बल लग्न), ९,
माघ शु. ६ शु.	माघ १४	जन. २७	रेव.	मीन	मकर	मीन	ल. गोधू;
माघ शु. ६ शु.	माघ १४	जन. २७	अश्वि.	मेष	मकर	मीन	ल. ६ (निर्बल लग्न), ९,
माघ शु. ९ चं.	माघ १७	जन. ३०	रोहि.	वृष	मकर	मीन	ल. ६ (निर्बल लग्न), ९, (भौमयुति-परिहार),
माघ शु. १० मं.	माघ १८	जन. ३१	रोहि.	वृष	मकर	मीन	दि. ल. १२, गोधू; ६ (निर्बल लग्न), (भौमयुति-परिहार),
फाल्गु. कृ. १ चं.	माघ २४	फर. ६	मघा	सिंह	मकर	मीन	ल. ६ (निर्बल लग्न), ९, (१९/३९ तक सूर्यवेध),
फाल्गु. कृ. २ मं.	माघ २५	फर. ७	मघा	सिंह	मकर	मीन	दि. ल. १२, ३,
फाल्गु. कृ. ४ गु.	माघ २७	फर. ९	उ.फा.	कन्या	मकर	मीन	दि. ल. १२, ३, गोधू;
फाल्गु. कृ. ४ गु.	माघ २७	फर. ९	हस्त	कन्या	मकर	मीन	ल. ९ (२८/५७ बाद), (२८/५७ तक गुरुपादवेध),
फाल्गु. कृ. ४ शु.	माघ २८	फर. १०	हस्त	कन्या	मकर	मीन	दि. ल. १२, ३, (गुरु-पादवेधाभाव),
फाल्गु. कृ. ९ बु.	फाल्गु. ३	फर. १५	मूल	धनु	कुम्भ	मीन	ल. १० (२९/३३ बाद),
फाल्गु. कृ. ११ गु.	फाल्गु. ४	फर. १६	मूल	धनु	कुम्भ	मीन	दि. ल. १२, ३, गोधू.,
फाल्गु. शु. ३ बु.	फाल्गु.१०	फर. २२	उ.भा.	मीन	कुम्भ	मीन	दि. ल. ३, रा. ल. ९,
फाल्गु. शु. ३ बु.	फाल्गु.१०	फर. २२	रेव.	मीन	कुम्भ	मीन	ल. १० (२८/४९ बाद) (निर्बल लग्न),
फाल्गु. शु. ४ गु.	फाल्गु.११	फर. २३	रेव.	मीन	कुम्भ	मीन	दि. ल. ३ (१४/२९ तक), रा. ल. ९ (२७/४४ तक), (मृत्यु-परिहार),
चैत्र कृ. १ बु.	फाल्गु.२४	मार्च ८	हस्त	कन्या	कुम्भ	मीन	ल. १० (२८/१९ बाद) (निर्बल लग्न),
चैत्र कृ. २ गु.	फाल्गु.२५	मार्च ९	हस्त	कन्या	कुम्भ	मीन	दि. ल. १२, ३, ४, गोधू; ९ (२७/२३ बाद), १० (निर्बल लग्न),

आगामी सं. २०८० वि. में गुरु-शुक्रास्त-संवत् २०८० वि. में गुरु लगभग ३१ मार्च से ३० अप्रैल, २०२३ ई. तक अस्त रहेगा। शुक्र इस वर्ष में लगभग २ अगस्त, २०२३ ई. को पश्चिम में अस्त होकर १८ अगस्त, २०२३ ई. को पूर्व में उदित हो जाएगा।

विवाहमुहूर्त्तों के शोधन में मृत्युबाण–वेध–युति आदि दोषों के शास्त्रीय परिहार

इस पंचांग में दिये जाने वाले विवाहमुहूर्त्तों में जहां वेध, युति, कर्त्तरी, दग्धातिथि, षष्ठाष्टमस्थ चन्द्र, भौम, शुक्र के दोषों के परिहार मिल जाते हैं, वहां उन मुहूर्त्तों को शास्त्रानुसार शुद्ध मान लिया जाता है और विवाहलग्न लगा दिये जाते हैं। इन दोषों के परिहार निम्नांकित स्थितियों में माने गये हैं– ***मृत्युबाण का परिहार***–यहां विवाहमुहूर्त्तों में मृत्युबाण को तभी दोषकारक (त्याज्य) माना गया है, जबकि वह बुधवार को घटित हो, क्योंकि मुहूर्त्तकारों ने इसे इसी वार को त्याज्य लिखा है–**''बुधे मृत्युं परित्यजेत्।''** ***सौम्यग्रह द्वारा विद्ध नक्षत्र के दोष का परिहार***–मुहूर्त्तकारों ने क्रूरग्रह का वेध होने पर पूर्ण नक्षत्र को त्याज्य लिखा है, लेकिन शुभ ग्रह द्वारा विद्ध नक्षत्र के एक चरण को ही विद्ध माना गया है। **जैसे–वेधक नक्षत्र** के प्रथम, द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ चरण में स्थित शुभ ग्रह **विद्ध नक्षत्र** के क्रमशः चतुर्थ, तृतीय, द्वितीय, प्रथम चरण को ही वेधता है। लेकिन **'मुहूर्त्तमार्त्तण्ड'** कार एवं **वसिष्ठ** का मत है कि–यदि लग्नेश एकादश में हो, चन्द्र पर शुभग्रह की दृष्टि हो, लग्न में चन्द्ररहित कोई शुभग्रह हो या कालहोरा शुभग्रह की हो तो वेधदोष समाप्त हो जाता है–**''लग्नेशे भवगेऽथवा शशिनि सद्दृष्टे शुभे वांऽगगे। होरायां च शुभस्य वा व्यधमयं नास्तीति पूर्वे जगुः।।''** हमने शुभग्रह द्वारा विद्ध नक्षत्र के मुहूर्त्तशोधन में इस मत का भी प्रयोग किया है। वैसे तो क्रूरग्रह–विद्ध नक्षत्र–दोष का भी परिहार इस मतानुसार युक्तिसंगत सिद्ध होता है। ***युतिदोष का परिहार***–नक्षत्र के साथ सौम्यग्रह की युति का दोष सामान्य माना जाता है, लेकिन क्रूरग्रह की युति बहुत ही अशुभ फलप्रद मानी जाती है। यदि चन्द्रमा अपनी उच्च राशि (वृष) या मित्रराशि (सिंह, मिथुन, कन्या) में हो तो क्रूरग्रह की युति का दोष भी समाप्त हो जाता है। ***कर्त्तरीदोष का परिहार***–मुहूर्त्त के लग्न से सप्तमरहित केन्द्र या त्रिकोण में गुरु, शुक्र या बुध स्थित हो तो कर्त्तरीदोष का परिहार हो जाता है। कर्त्तरी बनाने वाले ग्रह यदि शत्रुराशि या अपनी नीचराशि में हों या दोनों अस्त हों तो भी लग्न का कर्त्तरीदोष नहीं रहता। यदि मुहूर्त्तलग्न से द्वितीय भाव में कोई शुभ ग्रह बैठा हो अथवा बारहवें भाव में गुरु बैठा हो तो भी कर्त्तरीदोष निष्प्रभाव हो जाता है और ऐसा कर्त्तरीदोष विवाहमुहूर्त्त को अग्राह्य नहीं बना सकता। चन्द्र–कत्तरीदोष का परिहार भी चन्द्रमा के स्थान को लग्न समझकर, इन्हीं योगों से देखना चाहिए। ***दग्धातिथि का परिहार***–मुहूर्त्त के लग्न से सप्तमरहित केन्द्र या त्रिकोण में गुरु, शुक्र या बुध बैठा हो तो दग्धातिथि का परिहार हो जाता है, इस परिहार की स्थिति में दग्धातिथि में विवाहलग्न शुद्ध माना जाता है। ***षष्ठाष्टमस्थ चन्द्र का परिहार***–नीचराशि (वृश्चिक) में चन्द्रमा हो तो वह लग्न से छठे या आठवें भाव में होने पर भी दोषकारक नहीं होता। यदि चन्द्रमा लग्नेश होकर षष्ठाष्टमस्थ हो तब तो उसका कोई परिहार शास्त्रों में नहीं मिलता। ***अष्टमस्थ मंगल का परिहार***–मंगल अस्त (अदृश्य) हो या वह नीचराशि (कर्क) अथवा शत्रु राशि (मिथुन या कन्या) में हो तो लग्न से अष्टमस्थ होने पर भी वह दोषकारक नहीं होता। यदि मंगल लग्नेश होकर अष्टम में हो तो किसी भी स्थिति में उसके दोष का परिहार नहीं माना जाता। **षष्ठाष्टमस्थ शुक्र का परिहार**–शुक्र यदि नीचराशि (कन्या) अथवा शत्रुराशि (कर्क या सिंह) में हो तो वह षष्ठाष्टमस्थ होने पर भी अशुभ फल नहीं करता। यदि शुक्र लग्नेश होकर षष्ठाष्टमस्थ हो तो उसका भी कोई परिहार नहीं है।

ध्यान रहे–उपरोक्त लग्नभंग के सामान्य (अपूर्ण) परिहार हैं, जिन्हें पंचांगकार परम्परया प्रयोग में लाते रहे हैं। लेकिन इनसे अतिरिक्त अन्य लग्नभंग के विशेष परिहार भी हैं, जिनका हमने सं. २०७० वि. से लग्नशोधन में प्रयोग करना प्रारम्भ किया है। इसकी विस्तृत जानकारी के लिए मेरी पुस्तक **''मुहूर्त्तगजानन''** में दिया **''लग्नभंग-परिहार (एक संशोधन)''** लेख पढ़ना चाहिए। यह लेख सं. २०७० वि. के पंचांग में भी प्रकाशित हुआ है।

वि. सं. 2080 में (22 मार्च, 2023 ई. से 8 अप्रैल, 2024 ई. तक) सम्भावित शुद्ध विवाहमुहूर्त्त

प्रतिवर्ष हमें ऐसे दैवज्ञों एवं अन्य अनेक लोगों के Phone Calls/पत्र आते हैं, जो यह जानना चाहते हैं कि-आगामी वर्ष में *शुद्ध विवाहमुहूर्त्त* किन-किन दिनों में संभावित हैं। उनकी इस जिज्ञासा की शान्ति के लिए यह स्तम्भ प्रारम्भ किया गया है। इससे यह पर्याप्त स्पष्टता से ज्ञात हो जाता है कि-आगामी वर्ष के किन-किन दिनों में *शुद्ध विवाहमुहूर्त्त* संभावित हैं और किन-किन दिनों में नहीं। यहां जिन तारीखों के आगे गुणनचिह्न (x) दिया गया है, उन दिनों में शुद्ध विवाहमुहूर्त्त बिल्कुल नहीं बनते। इनके अतिरिक्त जहां गुणनचिह्न (x) नहीं दिया है, उन दिनों में शुद्ध मुहूर्त्त बनने की पर्याप्त संभावना है। हालांकि इनमें कुछेक पदार्थों का विचार समयाभाव के कारण नहीं कर पाते, जिससे इनमें कुछ अन्तर भी संभव है। अभीष्ट वर्षीय पंचांग में तो सभी पदार्थों का विचार सूक्ष्मेक्षिकया किया जाता है-यह ध्यान रखें।

– प्रियव्रत शर्मा

तारीख	मार्च '23	अप्रै. '23	मई '23	जून '23	जुला. '23	अग. '23	सितं. '23	अक्तू. '23	नवं. '23	दिसं. '23	जन. '24	फर. '24	मार्च '24	अप्रै. '24	तारीख
1	–	x	x			x		x	x	x	x			x	1
2	–	x	x	x		x		x	x	x	x			x	2
3	–	x	x			x		x	x		x	x		x	3
4	–	x		x		x		x	x		x			x	4
5	–	x				x	x	x	x	x	x	x		x	5
6	–	x				x		x			x			x	6
7	–	x			x	x		x			x	x		x	7
8	–	x				x		x			x			x	8
9	–	x				x	x	x			x		x	–	9
10	–	x		x		x	x	x			x		x	–	10
11	–	x				x	x	x			x	x		–	11
12	–	x			x	x		x			x	x		–	12
13	–	x				x		x	x		x	x	x	–	13
14	–	x	x	x		x	x	x			x		x	–	14
15	–	x	x	x	x	x			x	x	x		x	–	15
16	–	x			x	x	x	x	x	x		x	x	–	16
17	–	x			x	x	x	x	x	x			x	–	17
18	–	x	x		x	x				x			x	–	18
19	–	x	x		x	x				x	x		x	–	19
20	–	x		x	x	x				x	x	x	x	–	20
21	–	x		x	x				x	x		x	x	–	21
22	x	x		x	x					x		x	x	–	22
23	x	x	x		x					x	x		x	–	23
24	x	x	x	x	x					x	x		x	–	24
25	x	x	x		x			x		x	x	x	x	–	25
26	x	x			x				x	x	x		x	–	26
27	x	x			x	x	x			x			x	–	27
28	x	x	x		x		x	x		x			x	–	28
29	x	x			x		x	x		x			x	–	29
30	x	x			x		x	x	x	x		–	x	–	30
31	x	–		–	x	x	–	x	–	x	[illegible]	–	x	–	31

इस वर्ष (सं. 2080 वि.) में इन निम्नांकित प्रमुख दोषों के कारण निम्नांकित ये तारीखें विवाहकृत्य के लिए स्पष्टरूप से सर्वथा वर्जित हैं-

मीनस्थ सूर्यदोष
(संवत् के. प्रारम्भ से 13 अप्रै., 2023 ई. तक)

गुरुलोप-दोष
(28 मार्च से 03 मई, 2023 ई. तक)

अधिकमास श्रावणदोष
(18 जुला. से 16 अग., 2023 ई. तक)

श्राद्ध (महालय) दोष
(29 सितं. से 14 अक्तू. 2023 ई. तक)

शुक्रलोप-दोष
(30 जुला. से 21 अग., 2023 ई. तक)

ग्रहणवेधदोष
(28 अक्तू. से 1 नवं., 2023 ई. तक)

धनुःस्थ सूर्यदोष
(16 दिसं.'23 से 13 जन., 2024 ई. तक)

होलाष्टक-दोष
(17 से 25 मार्च, 2024 ई. तक)

मीनस्थ सूर्यदोष
(14 मार्च से वर्षान्त (8 अप्रै.'24 ई.) तक)

ध्यान दें-इन उपरोक्त तारीखों तथा अन्य उन तारीखों को भी जो विवाहकृत्य में वर्जित हैं, इस बाईं ओर दिए कोष्ठक में गुणनचिह्न (x) से अंकित किया गया है।

सं. २०७९ वि. में भिन्न-भिन्न राशि वाले वरों और कन्याओं के विवाह-निर्णय के लिए त्रिबल-शुद्धि

(अर्थात् किस राशि वाले वर और कन्या के लिए सं. २०७९ वि. में कुल कितने विवाहमुहूर्त्त किन-किन तारीखों को शुद्ध (ग्राह्य) बनते हैं ?)

लोग अपनी सुविधा के अनुसार किसी खास महीने में या किसी खास तारीख के आस-पास ही विवाह-मुहूर्त्त (साहा) निकालने केलिए ज्योतिषियों से अनुरोध किया करते हैं। ऐसी स्थिति में ज्योतिषी को विवाहमुहूर्त्तों में जगह-जगह त्रिबल-शुद्धि जानने का झंझट करना पड़ता है। इस झंझट से ज्योतिषियों को छुटकारा दिलाने के लिए हम यहां नीचे '**त्रिबलशुद्धि कोष्ठक**' दे रहे हैं। **संवत् २०७९ वि. के शुद्ध विवाह-मुहूर्त्त इस पंचांग में पृ. 265 पर दिए गए हैं**। किस-किस महीने में किस-किस तारीख वाले विवाहमुहूर्त्त में, किस-किस राशि वाले लड़के-लड़कियों के विवाह हो सकते हैं, यह त्रिबलशुद्धि के अनुसार नीचे दिए गए '**त्रिबल-शुद्धि कोष्ठक**' में लिख दिया गया है। अमुक राशि वाले लड़के (वर) और अमुक राशि वाली कन्या के लिए इस वर्ष कुल कितने विवाहमुहूर्त्त किन-किन तारीखों को बनते हैं-इस कोष्ठक द्वारा साधारण व्यक्ति भी एक ही नजर में यह तुरन्त जान सकता है। इस कोष्ठक से यह भी तुरन्त जाना जा सकता है कि-अमुक राशि वाली लड़कियों और लड़कों का विवाह इस वर्ष किन-किन तारीखों वाले विवाहमुहूर्त्तों में हो सकता है। वर के लिए '**सूर्य की पूजा**' और कन्या के लिए '**गुरु की पूजा**' वाला समय भी इस कोष्ठक में दिया गया है।

लड़का-लड़की की राशियों वाले कॉलमों/कोष्ठकों में जो-जो तारीखें समानरूप से मिलती हों, उन तारीखों वाले विवाहमुहूर्त्तों में उस लड़के-लड़की का विवाह हो सकता है। **जैसे– मेषराशि** वाले लड़के और **सिंह राशि** वाली लड़की का विवाह सं. २०७९ वि. में अगस्त (२०२२ ई.) के महीने में किन-किन तारीखों वाले विवाहमुहूर्त्तों में हो सकता है ?-यह मालूम करना है। नीचे '**त्रिबल-शुद्धि कोष्ठक**' **देखें–**लड़के वाले कॉलम में जन्मराशि **मेष** के आगे अगस्त, २०२२ ई. की १९, २०, २१, २८, २९, ३०, ३१ तारीखें हैं, जबकि लड़की वाले कॉलम में जन्मराशि **सिंह** के आगे अगस्त की २, ३, ४, ९, १०, ११, २०, २१, २८, २९, ३०, ३१ तारीखें हैं। इसलिए यह समझना चाहिए कि अगस्त, २०२२ ई. में मेष राशि वाले लड़के और सिंह राशि वाली लड़की का विवाह त्रिबलशुद्धि के अनुसार अगस्त की केवल १९, २०, २०, २१, २८, २९, ३०, ३१ तारीखें हैं। इसलिए यह समझना चाहिए कि-अग., २०२२ ई. में **मेष** राशि वाले लड़के और **सिंह** राशि वाली लड़की का विवाह त्रिबलशुद्धि के अनुसार अग. की केवल १९, २०, २१, २८, २९, ३०, ३१ तारीखों वाले विवाहमुहूर्त्तों में ही हो सकता है, क्योंकि अगस्त की केवल यही तारीखें, दोनों (लड़का-लड़की) की राशियों (**मेष-सिंह**) वाले कॉलमों (कोष्ठकों) में एक-सी मिलती हैं। इस प्रकार विवाह की तारीखों का निश्चय करके शुद्ध विवाहमुहूर्त्तों से उस दिन विवाह के लग्न का निर्णय कर लीजिए। क्योंकि, आजकल लड़कियों का विवाह बड़ी अवस्था में होता है, अत: चतुर्थ-अष्टम-द्वादश गुरु को शास्त्रनिर्देशानुसार नेष्ट न मानकर पूज्य ही माना गया है।

ध्यान दें–लड़के की राशि से १, २, ५, ७, ९ वें स्थित सूर्य एवं कन्या की राशि से १, ३, ६, १०वें स्थित गुरु यदि स्वराशि, मित्रराशि या स्वोच्चराशि में हों तो उन्हें शास्त्र-निर्देशानुसार यहां पूज्य न मानकर शुभ ही माना जाता है। इस वर्ष गुरु स्वराशि मीन में ही विचरण करेगा। अत: यह सभी राशि वाली कन्याओं के लिए शुभ ही माना जाएगा।

नाम/ जन्म-राशि	त्रिबल-शुद्धि कोष्ठक (सं. २०७९ वि.) (२ अप्रैल सन् २०२२ ई. से २१ मार्च सन् २०२३ ई. तक) (कोष्ठकों में दिया गया काल भा. स्टैं. टा. है।)			इस वर्ष, जिस राशि में स्थित गुरु लड़की के लिए पूज्य है–
	लड़का	सौर मास, जिनमें लड़के के लिए सूर्य पूज्य है–	लड़की	
मेष	अप्रै. १५, १६, २०, २१, २२, २३, २४, २७; मई २, ३, ९, १०, ११, १२, १५, १८, २०, २१, २६, २७, ३१; जून १, ६, ८, १०, ११, २०, २१, २३, २४; जुला. ३, ४, ५, ७, ८, ९, १४; अग. १९, २०, २१, २८, २९, ३०, ३१; सितं. १, ४, ५, ७, ८; जन. १५, २२, २५, २६, २७, ३०, ३१; फर. ६, ७, ९, १०, १५, १६, २२, २३; मार्च ८, ९,	ज्येष्ठ, कार्त्तिक,	अप्रै. १५, १६, २०, २१, २२, २३, २४, २७; मई २, ३, ९, १०, ११, १२, १५, १८, २०, २१, २६, २७, ३१; जून १, ६, ८, १०, ११, २०, २१, २३, २४; जुला. ३, ४, ५, ७, ८, ९, १४, १८, १९, २०, २१, २३, २४, २५, ३०, ३१; अग. २, ३, ४, ९, १०, ११, १४, १५, १९, २०, २१, २८, २९, ३०, ३१; सितं. १, ४, ५, ७, ८; नवं. २८, २९; दिसं. २, ४, ७, ८, ९, १४; जन. १५, २२, २५, २६, २७, ३०, ३१; फर. ६, ७, ९, १०, १५, १६, २२, २३; मार्च ८, ९,	---
वृष	मई १५, १६, १७, २० (८/४५ बाद), २१, २६, २७, ३१; जून १, ८ (१०/३ बाद), १०, ११, १३, २०, २१, २३, २४; जुला. ५ (१६/५२ बाद), ७, ८, ९, १४, १८, १९, २०, २१, २३, २४, २५; अग. २, ३, ४, १० (१४/५८ बाद), ११, १४, १५; नवं. २८, २९; दिसं. २, ४, ७, ८, ९; जन. १५, २२, २५, २६, २७, ३०, ३१; फर. ९, १०, २२, २३; मार्च ८, ९,	ज्येष्ठ, आषाढ़, आश्विन, माघ,	अप्रै. १५, १६, १९, २२ (२५/५२ बाद), २३, २४, २७; मई २, ३, ११ (२५/३२ बाद), १२, १५, १६, १७, २० (८/४५ बाद), २१, २६, २७, ३१; जून १, ८ (१०/३ बाद), १०, ११, १३, २०, २१, २३, २४; जुला. ५ (१६/५२ बाद), ७, ८, ९, १४, १८, १९, २०, २१, २३, २४, २५; अग. २, ३, ४, १० (१४/५८ बाद), ११, १४, १५, १९, २०, २१, २९, ३०, ३१; सितं. १, ७, ८; नवं. २८, २९; दिसं. २, ४, ७, ८, ९; जन. १५, २२, २५, २६, २७, ३०, ३१; फर. ९, १०, २२, २३; मार्च ८, ९,	---

त्रिबल-शुद्धि कोष्ठक (सं. २०७९ वि.) (२ अप्रैल सन् २०२२ ई. से २१ मार्च सन् २०२३ ई. तक)

(कोष्ठकों में दिया गया काल भा. स्टैं. टा. है।)

नाम/ जन्म-राशि	लड़का	सौर मास, जिनमें लड़के के लिए सूर्य पूज्य है-	लड़की	इस वर्ष, जिस राशि में स्थित गुरु लड़की के लिए पूज्य है-
मिथुन	अप्रै. १६ (२०/१ बाद), १९, २०, २१, २२ (२५/५२ तक), २७; मई २, ३, ९, १०, ११ (२५/३२ तक); जून २०, २१, २३, २४; जुला. ३, ४, ५ (१६/५२ तक), ७ (२४/२१ बाद), ८, ९, १८, १९, २०, २१, २३, २४, २५, ३०, ३१; अग. ४, ९, १० (१४/५८ तक), १४, १५, १९, २०, २१, २८, ३१; सितं १, ४, ५; दिसं. २, ४, ७, ८, ९, १४; फर. १५, १६, २२, २३	आषाढ़, कार्त्तिक, फाल्गुन,	अप्रै. १६ (२०/१ बाद), १९, २०, २१, २२ (२५/५२ तक), २७; मई २, ३, ९, १०, ११ (२५/३२ तक), १५, १६, १७, १८, २० (८/४५ तक), २६, २७, ३१; जून १, ६, ८ (१०/३ तक), ११, १३, २०, २१, २३, २४; जुला. ३, ४, ५ (१६/५२ तक), ७ (२४/२१ बाद), ८, ९, १८, १९, २०, २१, २३, २४, २५, ३०, ३१; अग. ४, ९, १० (१४/५८ तक), १४, १५, १९, २०, २१, २८, ३१; सितं. १, ४, ५; दिसं. २, ४, ७, ८, ९, १४; जन. १५, २५, २६, २७, ३०, ३१; फर. ६, ७, १५, १६, २२, २३,	---
कर्क	अप्रै. १५, १६ (२०/१ तक), १९, २०, २१, २२, २३, २४, २७; मई २, ३, ९, १०, ११, १२, १६, १७, १८, २०, २१, २६, २७, ३१; जून १, ६, ८, १०, १३; जुला. १८, १९, २०, २१, २३, २४, २५, ३०, ३१; अग. २, ३, ९, १०, ११, १४, १५, १९, २०, २१, २८, १९, ३०; सितं. ४, ५, ७, ८; नवं. २८, २९; दिसं. २, ४, ७, ८, ९, १४; जन. २२, २५, २६, २७, ३०, ३१; फर. ६, ७, ९, १०,	माघ,	अप्रै. १५, १६ (२०/१ तक), १९, २०, २१, २२, २३, २४, २७; मई २, ३, ९, १०, ११, १२, १६, १७, १८, २०, २१, २६, २७, ३१; जून १, ६, ८, १०, १३, २०, २१, २३, २४; जुला. ३, ४, ५, ७ (२४/२१ तक), १४, १८, १९, २०, २१, २३, २४, २५, ३०, ३१; अग. २, ३, ९, १०, ११, १४, १५, १९, २०, २१, २८, २९, ३०; सितं. ४, ५, ७, ८; नवं. २८, २९; दिसं. २, ४, ७, ८, ९, १४; जन. २२, २५, २६, २७, ३०, ३१; फर. ६, ७, ९, १०, १५, १६, २२, २३; मार्च ८, ९,	---
सिंह	अप्रै. १५, १६, २०, २१, २२, २३, २४; मई २, ३, ९, १०, ११, १२, १५, १८, २०, २१, २७, ३१; जून १, ६, ८, १०, ११, २३, २४; जुला. ३, ४, ५, ७, ८, ९, १४; अग. १९, २०, २१, २८, २९, ३०, ३१; सितं. १, ४, ५, ७, ८; जन. १५, २२, २७ (१८/३६ बाद), ३०, ३१; फर. ६, ७, ८, १०, १५, १६; मार्च ८, ९,	आश्विन, फाल्गुन,	अप्रै. १५, १६, २०, २१, २२, २३, २४; मई २, ३, ९, १०, ११, १२, १५, १८, २०, २१, २७, ३१; जून १, ६, ८, १०, ११, २३, २४; जुला. ३, ४, ५, ७, ८, ९, १४, २० (१२/५० बाद), २१, २३, २४, २५, ३०, ३१; अग. २, ३, ४, ९, १०, ११, १९, २०, २१, २८, २९, ३०, ३१; सितं. १, ४, ५, ७, ८; नवं. २८, २९; दिसं. ४, ७, ८, ९, १४; जन. १५, २२, २७ (१८/३६ बाद), ३०, ३१; फर. ६, ७, ८, १०, १५, १६; मार्च ८, ९,	---
कन्या	मई १५, १६, १७, २० (८/४५ बाद), २१, २६, ३१; जून १, ६, ८, १०, ११, १३, २०, २१; जुला. ३, ४, ५, ७, ८, ९, १४, १८, १९, २० (१२/५० तक), २३, २४, २५, ३०, ३१; अग. २, ३, ४, १० (१४/५८ बाद), ११, १४, १५; नवं. २८, २९; दिसं. २, ७, ८, ९, १४; जन. १५, २२, २५, २६, २७ (१८/३६ तक), ३०, ३१; फर. ६, ७, ९, १०, २२, २३; मार्च ८, ९,	ज्येष्ठ, आश्विन, कार्त्तिक, माघ,	अप्रै. १५, १६, १९, २२ (२५/५२ बाद), २३, २४, २७; मई २, ३, ९, १०, ११, १२, १५, १६, १७, २० (८/४५ बाद), २१, २६, ३१; जून १, ६, ८, १०, ११, १३, २०, २१; जुला. ३, ४, ५, ७, ८, ९, १४, १८, १९, २० (१२/५० तक), २३, २४, २५, ३०, ३१; अग. २, ३, ४, १० (१४/५८ बाद), ११, १४, १५, १९, २०, २१, २८, २९, ३०, ३१; सितं. १, ७, ८; नवं. २८, २९; दिसं. २, ७, ८, ९, १४; जन. १५, २२, २५, २६, २७ (१८/३६ तक), ३०, ३१; फर. ६, ७, ९, १०, २२, २३; मार्च ८, ९,	---
तुला	अप्रै. १५, १६, १९, २०, २१, २२ (२५/५२ तक), २७; मई ९, १०, ११, १२; जून २०, २१, २३, २४; जुला. ३, ४, ५, ७, ८, ९, १८, १९, २०, २१, २५ (११/३२ बाद), ३०, ३१; अग. २, ३, ४, ९, १० (१४/५८ तक), १४, १५, २८, २९, ३०, ३१; सितं. १, ४, ५; दिसं. २, ४, ८ (२५/४३ बाद), ९, १४; फर. १५, १६, २२, २३; मार्च ८, ९,	आषाढ़, कार्त्तिक, फाल्गुन,	अप्रै. १५, १६, १९, २०, २१, २२ (२५/५२ तक), २७; मई ९, १०, ११, १२, १५, १६, १७, १८, २० (८/४५ तक), २६, २७, ३१ (२३/२९ बाद); जून १, ६, ८, १०, ११, १३, २०, २१, २३, २४; जुला. ३, ४, ५, ७, ८, ९, १८, १९, २०, २१, २५ (११/३२ बाद), ३०, ३१; अग. २, ३, ४, ९, १० (१४/५८ तक), १४, १५, २८, २९, ३०, ३१; सितं. १, ४, ५; दिसं. २, ४, ८ (२५/४३ बाद), ९, १४; जन. १५, २५, २६, २७; फर. ६, ७, ९, १०, १५, १६, २२, २३; मार्च ८, ९,	---

त्रिबल-शुद्धि कोष्ठक (सं. २०७९ वि.) (२ अप्रैल सन् २०२२ ई. से २१ मार्च सन् २०२३ ई. तक)

(कोष्ठकों में दिया गया काल भा. स्टैं. टा. है।)

नाम/ जन्म-राशि	लड़का	सौर मास, जिनमें लड़के के लिए सूर्य पूज्य है-	लड़की	इस वर्ष जिस राशि में स्थित गुरु लड़की के लिए पूज्य है।
वृश्चिक	अप्रै. १५, १६, १९, २०, २१, २२, २३, २४, २७; मई २, ३, ९, १०, ११, १२, १५, १६, १७, १८, २०, २१, २६, २७, ३१ (२३/२९ तक); जून ६, ८, १०, ११, १३; जुला. १८, १९, २०, २१, २३, २४, २५ (११/३२ तक), ३०, ३१; अग. २, ३, ४, ९, १०, ११, १४, १५, १९, २०, २१, २८, २९, ३०, ३१; सितं. १, ४, ५, ७, ८; नवं. २८, २९; दिसं. २, ४, ७, ८ (२५/४३ तक); जन. १५, २२, २५, २६, २७, ३०, ३१, फर. ६, ७, ९, १०,	ज्येष्ठ,	अप्रै. १५, १६, १९, २०, २१, २२, २३, २४, २७; मई २, ३, ९, १०, ११, १२, १५, १६, १७, १८, २०, २१, २६, २७, ३१ (२३/२९ तक); जून ६, ८, १०, ११, १३, २०, २१, २३, २४; जुला. ३, ४, ५, ७, ८, ९, १४, १८, १९, २०, २१, २३, २४, २५ (११/३२ तक), ३०, ३१; अग. २, ३, ४, ९, १०, ११, १४, १५, १९, २०, २१, २८, २९, ३०, ३१; सितं. १, ४, ५, ७, ८; नवं. २८, २९; दिसं. २, ४, ७, ८ (२५/४३ तक), १४; जन. १५, २२, २५, २६, २७, ३०, ३१; फर. ६, ७, ९, १०, १५, १६, २२, २३; मार्च ८, ९,	---
धनु	अप्रै. १५, १६, १९, २०, २१, २२, २३, २४; मई २, ३, ९, १०, ११, १२, १५, १६, १७, १८, २०, २१, २७, ३१; जून १, ६, ८, १०, ११, १३, २३, २४; जुला. ३, ४, ५, ७, ८, ९, १४; अग. १९, २०, २१, २८, २९, ३०, ३१; सितं. १, ४, ५, ७, ८; जन. १५, २२, २७ (१८/३६ बाद), ३०, ३१; फर. ६, ७, ९, १०, १५, १६; मार्च ८, ९,	आषाढ़, माघ,	अप्रै. १५, १६, १९, २०, २१, २२, २३, २४; मई २, ३, ९, १०, ११, १२, १५, १६, १७, १८, २०, २१, २७, ३१; जून १, ६, ८, १०, ११, १३, २३, २४; जुला. ३, ४, ५, ७, ८, ९, १४, २० (१२/५० बाद), २१, २३, २४, २५, ३०, ३१; अग. २, ३, ४, ९, १०, ११, १९, २०, २१, २८, २९, ३०, ३१; सितं. १, ४, ५, ७, ८; नवं. २८, २९; दिसं. ४, ७, ८, ९, १४; जन. १५, २२, २७ (१८/३६ बाद), ३०, ३१; फर. ६, ७, ९, १०, १५, १६; मार्च ८, ९,	---
मकर	मई १५, १६, १७, १८, २०, २१, २६, ३१; जून १, ८ (१०/३ बाद), १०, ११, १३, २०, २१; जुला. ५ (१६/५२ बाद), ७, ८, ९, १४, १८, १९, २० (१२/५० तक), २३, २४, २५; अग. २, ३, ४, ९, १०, ११, १४, १५; नवं. २८, २९; दिसं. २, ७, ८, ९; जन. १५, २२, २५, २६, २७ (१८/३६ तक), ३०, ३१; फर. ९, १०, १५, १६, २२, २३; मार्च ८, ९,	ज्येष्ठ, आश्विन, माघ, फाल्गुन,	अप्रै. १५, १६, १९, २०, २१, २२, २३, २४, २७; मई २, ३, ११ (२५/३२ बाद), १२, १५, १६, १७, १८, २०, २१, २६, ३१; जुन १, ८ (१०/३ बाद), १०, ११, १३, २०, २१; जुला. ५ (१६/५२ बाद), ७, ८, ९, १४, १८, १९, २० (१२/५० तक), २३, २४, २५; अग. २, ३, ४, ९, १०, ११, १४, १५, १९, २०, २१, २९, ३०, ३१; सितं. १, ४, ५, ७, ८; नवं. २८, २९; दिसं. २, ७, ८, ९; जन. १५, २२, २५, २६, २७ (१८/३६ तक), ३०, ३१; फर. ९, १०, १५, १६, २२, २३; मार्च ८, ९,	---
कुम्भ	अप्रै. १६ (२०/०१ बाद), १९, २०, २१, २२, २३, २४, २७; मई ९, १०, ११ (२५/३२ तक); जून २०, २१, २३, २४; जुला. ३, ४, ५ (१६/५२ तक), ७ (२४/२१ बाद), ८, ९, १४, १८, १९, २०, २१, २५ (११/३२ बाद), ३०, ३१; अग. ४, ९, १०, ११, १४, १५, २८, ३१; सितं. १, ४, ५, ७, ८; नवं. २८, २९; दिसं. २, ४, ८ (२५/४३ बाद), ९, १४; फर. १५, १६, २२, २३,	आषाढ़, कार्त्तिक, फाल्गुन,	अप्रै. १६ (२०/१ बाद), १९, २०, २१, २२, २३, २४, २७; मई ९, १०, ११ (२५/३२ तक), १५, १६, १७, १८, २०, २१, २६, २७, ३१ (२३/२९ बाद); जून १, ६, ८ (१०/३ तक), ११, १३, २०, २१, २३, २४; जुला. ३, ४, ५ (१६/५२ तक), ७ (२४/२१ बाद), ८, ९, १४, १८, १९, २०, २१, २५ (११/३२ बाद), ३०, ३१; अग. ४, ९, १०, ११, १४, १५, २८, ३१; सितं. १, ४, ५, ७, ८; नवं. २८, २९; दिसं. २, ४, ८ (२५/४३ बाद), ९, १४; जन. १५, २२, २५, २६, २७; फर. ६, ७, १५, १६, २२, २३,	---
मीन	अप्रै. १५, १६ (२०/१ तक), १९, २०, २१, २२, २३, २४, २७; मई २, ३, ९, १०, ११, १२, १६, १७, १८, २०, २१, २६, २७, ३१ (२३/२९ तक); जून ६, ८, १०, १३; जुला. १८, १९, २०, २१, २३, २४, २५ (११/३२ तक), ३०, ३१; अग. २, ३, ९, १०, ११, १४, १५, १९, २०, २१, २८, २९, ३०; सितं. ४, ५, ७, ८; नवं. २८, २९; दिसं. २, ४, ७, ८ (२५/४३ तक), १४; जन. २२, २५, २६, २७, ३०, ३१; फर. ६, ७, ९, १०,	आश्विन,	अप्रै. १५, १६ (२०/१ तक), १९, २०, २१, २२, २३, २४, २७; मई २, ३, ९, १०, ११, १२, १६, १७, १८, २०, २१, २६, २७, ३१ (२३/२९ तक); जून ६, ८, १०, १३, २०, २१, २३, २४; जुला. ३, ४, ५, ७ (२४/२१ तक), १४, १८, १९, २०, २१, २३, २४, २५ (११/३२ तक), ३०, ३१; अग. २, ३, ९, १०, ११, १४, १५, १९, २०, २१, २८, २९, ३०; सितं. ४, ५, ७, ८; नवं. २८, २९; दिसं. २, ४, ७, ८ (२५/४३ तक), १४; जन. २२, २५, २६, २७, ३०, ३१; फर. ६, ७, ९, १०, १५, १६, २२, २३; मार्च ८, ९,	---

अशुद्ध विवाह-मुहूर्त्त (सं. २०७९ वि.)

प्रतिवर्ष हमें ज्योतिषियों एवं अन्य लोगों के ऐसे अनेकों पत्र एवम् फोन कॉल्ज उपलब्ध होते हैं, जिनमें वे ऐसे अनेक विवाहमुहूर्त्तों के बारे में हमसे स्पष्टीकरण चाहते हैं, जिन्हें हमने अपने पंचांग में तो अशुद्ध विवाहमुहूर्त्तों की कोटि में रखा होता है, लेकिन किसी अन्य पंचांग में उन्हें शुद्ध विवाहमुहूर्त्त मानकर, उनमें विवाहलग्न लगाए होते हैं। इस समस्या को दृष्टि में रखकर अशुद्ध विवाहमुहूर्त्तों का स्पष्टीकरण हम इस स्तम्भ में दिया करते हैं। यह स्तम्भ ज्योतिषियों को शुद्ध और अशुद्ध विवाहमुहूर्त्त-सम्बन्धी दुविधा से मुक्त कराने में काफी हद तक समर्थ सिद्ध हुआ है और इससे ज्योतिषी लोग स्वयं यह भलीभांति जान सकते हैं कि-अमुक नक्षत्र, अमुक दिन, अमुक समय या अमुक लग्न में विवाह करना शास्त्रविरुद्ध क्यों है ? यहां साथ-साथ उन दोषों का निर्देश भी किया गया है, जिनके कारण विवाहनक्षत्र होते हुए भी, वहां विवाह नहीं किया जा सकता। जहां भद्रा, व्यतीपात, क्रूरग्रहवेध आदि दोषों से रहित होने से विवाहनक्षत्र का काल शुद्ध होने पर भी लग्नभंग-परिहार नहीं हो सका, वहां 'लग्नाभाव' दोष लिखा गया है। ध्यान रहे-यहां जिन युति, वेध आदि दोषों का निर्देश किया गया है, वे सभी ऐसे हैं, जिनका कोई परिहार नहीं है। नीचे सं. २०७९ वि. के अशुद्ध विवाहमुहूर्त्त दिए जा रहे हैं। - प्रियव्रत शर्मा।

तिथि-वार	तारीख २०२२ ई.	विवाह नक्षत्र	दोष
मीनस्थ रवि-वर्षारम्भ से चैत्र शु. १२ बु. (२ से १३ अप्रैल, २०२२ ई.) तक।			
चैत्र शु. १३ गु.	अप्रै. १४	उ.फा.	संक्रान्ति,
चैत्र शु. १५ श.	अप्रै. १६	हस्त	भद्रा,
वैशा. कृ. १ र.	अप्रै. १७	चित्रा	लग्नाभाव,
वैशा. कृ. १ र.	अप्रै. १७	स्वा.	भौमवेध,
वैशा. कृ. २ चं.	अप्रै. १८	अनु.	व्यतीपात,
वैशा. कृ. ९ र.	अप्रै. २४	धनि.	शनियुति अपरिहार्य,
वैशा. कृ. १० चं.	अप्रै. २५	धनि.	शनियुति अपरिहार्य,
वैशा. शु. ३ बु.	मई ४	मृग.	मृत्युबाण,
वैशा. शु. ४ गु.	मई ५	मृग.	भद्रा,
वैशा. शु. १२ शु.	मई १३	हस्त	मासान्त,
वैशा. शु. १२ शु.	मई १३	चित्रा	मासान्त,
वैशा. शु. १३ श.	मई १४	चित्रा	संक्रान्ति,
वैशा शु. १३ श.	मई १४	स्वा.	संक्रान्ति,
ज्ये. कृ. ४ गु.	मई १९	मूल	कालाल्पता,
ज्ये. कृ. ४ गु.	मई १९	उ.षा.	लग्नाभाव,
ज्ये. कृ. ५ श.	मई २०	श्रव.	लग्नाभाव,

तिथि-वार	तारीख २०२२ ई.	विवाह नक्षत्र	दोष
ज्ये. कृ. ६ श.	मई २१	धनि.	शनियुति अपरिहार्य,
ज्ये. कृ. ७ र.	मई २२	धनि.	शनियुति अपरिहार्य,
ज्ये. कृ. ९ मं.	मई २४	उ.भा.	भद्रा,
ज्ये. कृ. १० बु.	मई २५	उ.भा.	भौमयुति अपरिहार्य,
ज्ये. कृ. १० बु.	मई २५	रेव.	मृत्युबाण,
ज्ये. कृ. ११ गु.	मई २६	अश्वि.	लग्नाभाव,
ज्ये. शु. १ मं.	मई ३१	रोहि.	क्षीणचन्द्र,
ज्ये. शु. ६ र.	जून ५	मघा	लग्नाभाव,
ज्ये. शु. ७ मं.	जून ७	उ.फा.	लग्नाभाव,
ज्ये. शु. ८ बु.	जून ८	हस्त	व्यतीपात,
ज्ये. शु. ९ गु.	जून ९	हस्त	लग्नाभाव,
ज्ये. शु. ९ गु.	जून ९	चित्रा	लग्नाभाव,
ज्ये. शु. १० शु.	जून १०	स्वा.	भद्रा, परिघार्ध,
ज्ये. शु. १३ र.	जून १२	अनु.	शुक्र-पादवेध,
ज्ये. शु. १५ मं.	जून १४	मूल	मासान्त,
आषा. कृ. १ बु.	जून १५	मूल	संक्रान्ति,
आषा. कृ. २ गु.	जून १६	उ.षा.	सूर्यवेध,
आषा. कृ. ३ शु.	जून १७	उ.षा.	सूर्यवेध,

तिथि-वार	तारीख २०२२ ई.	विवाह नक्षत्र	दोष
आषा. कृ. ३ शु.	जून १७	श्रव.	लग्नाभाव, क्रां.सा.,
आषा. कृ. ५ श.	जून १८	श्रव.	वैधृति,
आषा. कृ. ५ श.	जून १८	धनि.	शनियुति अपरिहार्य,
आषा. कृ. ६ र.	जून १९	धनि.	शनियुति अपरिहार्य,
आषा. कृ. ८ मं.	जून २१	रेव.	भौमयुति अपरिहार्य,
आषा. कृ. ९ बु.	जून २२	रेव.	भौमयुति अपरिहार्य,
आषा. कृ. १० गु.	जून २३	रेव.	अतिगण्ड, लग्नाभाव,
आषा. शु. ७ बु.	जुला. ६	उ.फा.	मृत्युबाण,
आषा. शु. ७ बु.	जुला. ६	हस्त	परिघार्ध, भद्रा,
आषा. शु. ११ र.	जुला. १०	अनु.	राहुवेध,
आषा. शु. १२ चं.	जुला. ११	अनु.	राहुवेध,
आषा. शु. १२ चं.	जुला. ११	मूल	सूर्यवेध,
आषा. शु. १३ मं.	जुला. १२	मूल	सूर्यवेध,
आषा. शु. १५ बु.	जुला. १३	उ.षा.	वैधृति,
श्राव. कृ. २ शु.	जुला. १५	श्रव.	मासान्त,
श्राव. कृ. २ शु.	जुला. १५	धनि.	मासान्त, भद्रा,
श्राव. कृ. ३ श.	जुला. १६	धनि.	भद्रा, संक्रान्ति,
श्राव. कृ. ६ मं.	जुला. १९	उ.भा.	लग्नाभाव,

अशुद्ध विवाह-मुहूर्त्त (सं. २०७९ वि.)

तिथि-वार	तारीख २०२२ ई.	विवाह नक्षत्र	दोष
श्राव. शु. ४ चं.	अग. १	उ.फा.	लग्नाभाव,
श्राव. शु. ८ शु.	अग. ५	स्वा.	लग्नाभाव,
श्राव. शु. ९ श.	अग. ६	अनु.	राहुवेध,
श्राव. शु. १० र.	अग. ७	अनु.	राहुवेध,
श्राव. शु. ११ चं.	अग. ८	मूल	लग्नाभाव,
श्राव. शु. १४ गु.	अग. ११	धनि.	शनियुति अपरिहार्य,
श्राव. शु. १५ शु.	अग. १२	धनि.	शनियुति अपरिहार्य,
भाद्र. कृ. ५ मं.	अग. १६	रेव.	मासान्त,
भाद्र. कृ. ५ मं.	अग. १६	अश्वि.	मासान्त, भुजंगपात,
भाद्र. कृ. ६ बु.	अग. १७	अश्वि.	संक्रान्ति, भुजंगपात,
भाद्र. कृ. ९ श.	अग. २०	मृग.	लग्नाभाव,
भाद्र. कृ. ११ चं.	अग. २२	मृग.	लग्नाभाव,
भाद्र. शु. ६ शु.	सितं. २	अनु.	वैधृति,
भाद्र. शु. ७ श.	सितं. ३	अनु.	वैधृति, भद्रा,
भाद्र. शु. ११ मं.	सितं. ६	उ.षा.	लग्नाभाव,
भाद्र. शु. १३ गु.	सितं. ८	धनि.	शनियुति अपरिहार्य,
भाद्र. शु. १४ शु.	सितं. ९	धनि.	शनियुति अपरिहार्य,

आश्विन कृष्ण (महालय श्राद्ध) पक्ष- (१० से २५ सितं., २०२२ ई. तक)

तिथि-वार	तारीख	विवाह नक्षत्र	दोष
आश्वि. शु. १ चं.	सितं. २६	हस्त	क्षीणचन्द्र, लग्नाभाव,

शुक्रास्त-दोष-आश्वि. शु. २ मं. से मार्ग. शु. ५ चं. (२७ सितं. से २८ नवं. २०२२ ई.) तक शुक्र-वार्धक्य, अस्त एवम् बाल्यदोष।

तिथि-वार	तारीख २०२२-२३ ई.	विवाह नक्षत्र	दोष
मार्ग. शु. ६ मं.	नवं. २९	धनि.	शनियुति अपरिहार्य,
मार्ग. शु. ७ बु.	नवं. ३०	धनि.	शनियुति अपरिहार्य,
मार्ग. शु. ८ गु.	दिसं. १	उ.भा.	लग्नाभाव,
मार्ग. शु. १० शु.	दिसं. २	रेव.	व्यतीपात,
मार्ग. शु. ११ श.	दिसं. ३	रेव.	लग्नाभाव,
मार्ग. शु. ११ श.	दिसं. ३	अश्वि.	लग्नाभाव,
मार्ग. शु. १३ चं.	दिसं. ५	अश्वि.	परिघार्ध,
पौष. कृ. ५ मं.	दिसं. १३	मघा	वैधृति, विष्कंभ,

धनुःस्थ रवि-पौष कृ. ८ शु. से माघ कृ. ६ शु. (१६ दिसं., २०२२ ई. से १३ जन., २०२३ ई.) तक सूर्य धनुःस्थ रहेगा।

तिथि-वार	तारीख	विवाह नक्षत्र	दोष
माघ कृ. ७ श.	जन. १४	हस्त	संक्रान्ति,
माघ कृ. ७ श.	जन. १४	चित्रा	संक्रान्ति,
माघ कृ. ८ र.	जन. १५	स्वा.	सूर्यग्रहण नक्षत्र, केतुयुति अपरिहार्य,
माघ कृ. ९ चं.	जन. १६	स्वा.	सूर्यग्रहण नक्षत्र, केतुयुति अपरिहार्य,
माघ कृ. १० मं.	जन. १७	अनु.	राहुवेध,
माघ कृ. ११ बु.	जन. १८	अनु.	राहुवेध,
माघ कृ. १२ गु.	जन. १९	मूल	क्षीणचन्द्र, व्याघात,
माघ शु. १ र.	जन. २२	धनि.	शनियुति अपरिहार्य,
माघ शु. २ चं.	जन. २३	धनि.	व्यतीपात, शनियुति अपरिहार्य,
माघ शु. ७ श.	जन. २८	अश्वि.	लग्नाभाव,

तिथि-वार	तारीख २०२३ ई.	विवाह नक्षत्र	दोष
माघ शु. १० मं.	जन. ३१	मृग.	लग्नाभाव,
माघ शु. ११ बु.	फर. १	मृग.	भद्रा, वैधृति,
फाल्गु. कृ. ३ बु.	फर. ८	उ.फा.	लग्नाभाव,
फाल्गु. कृ. ४ शु.	फर. १०	चित्रा	भुजंगपात,
फाल्गु. कृ. ५ श.	फर. ११	चित्रा	भुजंगपात,
फाल्गु. कृ. ५ श.	फर. ११	स्वा.	सूर्यग्रहण-नक्षत्र,
फाल्गु. कृ. ६ र.	फर. १२	स्वा.	सूर्यग्रहण-नक्षत्र,
फाल्गु. कृ. ७ चं.	फर. १३	अनु.	संक्रान्ति, राहुवेध,
फाल्गु. कृ. ८ मं.	फर. १४	अनु.	राहुवेध,
फाल्गु. कृ. १२ शु.	फर. १७	उ.षा.	लग्नाभाव,
फाल्गु. शु. १ मं.	फर. २१	उ.भा.	लग्नाभाव,
फाल्गु. शु. ४ गु.	फर. २३	अश्वि.	राहुयुति अपरिहार्य,
फाल्गु. शु. ५ शु.	फर. २४	अश्वि.	राहुयुति अपरिहार्य,
फाल्गु. शु. ७ र.	फर. २६	रोहि.	भद्रा, वैधृति, होलाष्टक,

होलाष्टक-२७ फर. से ७ मार्च, २०२३ ई. तक।

तिथि-वार	तारीख	विवाह नक्षत्र	दोष
चैत्र कृ. १ बु.	मार्च ८	उ.फा.	भुजंगपात,
चैत्र कृ. २ गु.	मार्च ९	चित्रा	सुर्यवेध,
चैत्र कृ. ३ शु.	मार्च १०	चित्रा	सुर्यवेध,
चैत्र कृ. ४ श.	मार्च ११	चित्रा	सुर्यवेध,
चैत्र कृ. ४ श.	मार्च ११	स्वा.	केतुयुति अपरिहार्य,
चैत्र कृ. ५ र.	मार्च १२	स्वा.	केतुयुति अपरिहार्य,
चैत्र कृ. ६ चं.	मार्च १३	अनु.	मासान्त, भद्रा,

मीनस्थ रवि-चैत्र कृ. ७ मं. (१४ मार्च, २०२३ ई.) से वर्षान्त तक।

मुण्डनादि अन्य मुहूर्त्त (सं. २०७९ वि.) (सर्वत्र भा.स्टैं. टा. दिया गया है।)

(मुण्डन, उपनयन, गृहारम्भ, गृहप्रवेश आदि के शुद्ध मुहूर्त्त प्रतिवर्ष इतने कम क्यों होते हैं ?)

मुण्डनादि इन मुहूर्त्तों के शोधन में भी हम भद्रा, क्रूरग्रहयुति, क्रूरग्रहवेध, क्रान्तिसाम्य, कलशचक्रदोष, वृषवास्तुचक्रदोष, व्यतीपात, अतिगण्ड आदि योग तथा अन्य मुहूर्त्तशास्त्रोक्त निरवशेष निषिद्ध पदार्थों का पूरी तरह विचार कर शुद्धकाल का निर्णय करते हैं, जिससे कई बार तो इनके शुद्ध मुहूर्त्त वर्ष में असह्यरूप से कम (एक-एक या दो-दो भी) हो जाते हैं। सर्वथा दोषमुक्त शास्त्रीय मुहूर्त्तसाधन के आग्रह के कारण इन मुहूर्त्तों की संख्या हमारे पंचांग में अन्य पंचांगों से, जिनके सम्पादक इन विचार्य विषयों की उपेक्षा करके मुहूर्त्तों की संख्या बढ़ाने की शास्त्रविरुद्ध प्रवृत्ति लिए हैं; काफी कम होती है। विश्वास रखिए, हमारे 'मार्त्तण्ड पंचांग' में दिए गए शुद्ध मुहूर्त्तों के अतिरिक्त जो मुहूर्त्त अन्य पंचांगों में आपको मिलते हैं; उनकी मुहूर्त्तशास्त्रीय शुद्धता वस्तुतः विचारणीय है। ध्यान रहे-मुण्डनादि इन मुहूर्त्तों के शोधन में हमने केवल शुद्धकाल का निर्णय किया है, शुद्ध लग्नों का नहीं। अतः दैवज्ञों को चाहिए कि-आवश्यक मुहूर्त्त के लिए दिये गये शुद्धकाल की अवधि में गुरु, शुक्र, बुध, सूर्य एवं लग्नेश आदि की शुभस्थानों में स्थिति को ध्यान में रखते हुए बलवान् लग्न का वे स्वयं निर्णय करें। यदि शुद्ध काल के समय 'अभिजित्-मुहूर्त्त' भी उपलब्ध हो तो शुभकार्य के लिए लग्न के स्थान पर 'अभिजित्-मुहूर्त्त' का प्रयोग करना चाहिए, क्योंकि 'अभिजित्-मुहूर्त्त' में बलवान् लग्न की शक्ति मानी गयी है।

मुण्डन-मुहूर्त्त (सन् २०२२-२३ ई.)

तिथि-वार				तारीख		नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा.)
वैशा.	शु.	३	बु.	मई	४	मृग.	७/३३ तक,
वैशा.	शु.	५	शु.	मई	६	पुन.	९/२० से १२/३३ तक,
ज्ये.	कृ.	३	बु.	मई	१८	ज्ये.	८/९ तक,
ज्ये.	कृ.	११	गु.	मई	२६	रेव.	१०/५४ तक,
ज्ये.	कृ.	१२	शु.	मई	२७	अश्वि.	११/४८ बाद,
ज्ये.	शु.	२	बु.	जून	१	मृग.	१३/० तक,
ज्ये.	शु.	३	गु.	जून	२	पुन.	१६/४ बाद,
ज्ये.	शु.	१०	शु.	जून	१०	चित्रा	१८/३६ तक,
माघ	कृ.	१२	गु.	जन.	१९	ज्ये.	१३/१८ से १५/१७ तक,
माघ	शु.	६	शु.	जन.	२७	रेव.	९/१० बाद,
माघ	शु.	१३	शु.	फर.	३	पुन.	
फाल्गु.	कृ.	४	शु.	फर.	१०	हस्त	७/५८ से १६/४३ तक, (गुरु-पादवेध विचार्य)
फाल्गु.	कृ.	९	बु.	फर.	१५	ज्ये.	७/३९ बाद,
चैत्र	कृ.	२	गु.	मार्च	९	हस्त	

मुण्डन में विशेष:- किसी देवस्थल/तीर्थ पर बिना मुहूर्त्त के भी मुण्डन करवाना शुभ माना गया है। नवरात्रों के दिनों में भी शक्तिपीठों (देवी-मन्दिरों) के समीप मुण्डन करवाने की पंजाब, हिमाचल आदि प्रदेशों में पुरानी परम्परा है।

अक्षरारम्भ-मुहूर्त्त (सन् २०२२-२३ ई.)

तिथि-वार				तारीख		नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा.)
वैशा.	शु.	५	शु.	मई	६	आर्द्रा	९/२० तक,
वैशा.	शु.	५	शु.	मई	६	पुन.	९/२० बाद,
ज्ये.	कृ.	३	बु.	मई	१८	ज्ये.	८/९ तक,
ज्ये.	कृ.	११	गु.	मई	२६	रेव.	
ज्ये.	कृ.	१२	शु.	मई	२७	अश्वि.	११/४८ तक,
ज्ये.	शु.	३	गु.	जून	२	आर्द्रा	१६/४ तक,
ज्ये.	शु.	१०	शु.	जून	१०	चित्रा	
माघ	कृ.	११	बु.	जन.	१८	अनु.	
माघ	कृ.	१२	गु.	जन.	१९	ज्ये.	१३/१८ तक,
माघ	शु.	६	शु.	जन.	२७	रेव.	९/१० तक,
फाल्गु.	कृ.	४	शु.	फर.	१०	हस्त	७/५८ बाद, (गुरु-पादवेध विचार्य),
फाल्गु.	कृ.	९	बु.	फर.	१५	ज्ये.	७/३९ बाद,
चैत्र	कृ.	२	गु.	मार्च	९	हस्त	

अक्षरारम्भ और विद्यारम्भ के मुहूर्त्तों का प्रयोग :- बच्चे को वर्णमाला का ज्ञान करवाने के लिए अक्षरारम्भ के और संस्कृत, अंग्रेजी, गणित, रसायन आदि विषयों का अध्ययन प्रारम्भ करने के लिए विद्यारम्भ के मुहूर्त्तों का प्रयोग करना चाहिए।

विद्यारम्भ-मुहूर्त्त (सन् २०२२ ई.)

तिथि-वार				तारीख		नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा.)
वैशा.	कृ.	५	गु.	अप्रै.	२१	मूल	
वैशा.	कृ.	६	शु.	अप्रै.	२२	पू.षा.	८/४३ तक,
वैशा.	कृ.	१२	बु.	अप्रै.	२७	पू.भा.	१७/५ तक,
वैशा.	शु.	३	बु.	मई	४	मृग.	७/३३ तक,
वैशा.	शु.	४	गु.	मई	५	आर्द्रा	१०/१ बाद,
वैशा.	शु.	५	शु.	मई	६	आर्द्रा	९/२० तक,
वैशा.	शु.	५	शु.	मई	६	पुन.	९/२० बाद,
वैशा.	शु.	१०	बु.	मई	११	पू.फा.	
वैशा.	शु.	११	गु.	मई	१२	उ.फा.	७/११ तक,
ज्ये.	कृ.	३	बु.	मई	१८	मूल	८/९ से १३/१८ तक,
ज्ये.	कृ.	५	शु.	मई	२०	उ.षा.	
ज्ये.	कृ.	११	गु.	मई	२६	रेव.	
ज्ये.	कृ.	१२	शु.	मई	२७	अश्वि.	११/४८ तक,
ज्ये.	शु.	२	बु.	जून	१	मृग.	१३/० तक,
ज्ये.	शु.	२	बु.	जून	१	आर्द्रा	१३/० बाद,
ज्ये.	शु.	३	गु.	जून	२	आर्द्रा	१६/४ तक,
ज्ये.	शु.	६	र.	जून	५	आश्ले.	७/५४ बाद,

विद्यारम्भ-मुहूर्त्त (सन् २०२२-२३ ई.)

तिथि-वार			तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा.)
ज्ये. शु.	१०	शु.	जून १०	चित्रा	१८/३६ तक,
आषा. कृ.	२	गु.	जून १६	पू.षा.	१२/३७ तक,
आषा. कृ.	६	र.	जून १९	शत.	५/५६ बाद,
माघ कृ.	११	बु.	जन. १८	अनु.	१७/२२ तक,
माघ शु.	४	बु.	जन. २५	पू.भा.	१२/३४ बाद,
माघ शु.	५	गु.	जन. २६	उ.भा.	
माघ शु.	६	शु.	जन. २७	रेव.	९/१० तक,
माघ शु.	१२	गु.	फर. २	आर्द्रा	१३/२३ से १६/२६ तक,
फाल्गु. कृ.	३	बु.	फर. ८	पू.फा.	१७/२५ तक,
फाल्गु. कृ.	४	शु.	फर. १०	हस्त	७/५८ से १६/४३ तक, (गुरु-पादवेध विचार्य),
फाल्गु. कृ.	११	गु.	फर. १६	मूल	८/१४ बाद,
फाल्गु. कृ.	१२	शु.	फर. १७	पू.षा.	
फाल्गु. शु.	३	बु.	फर. २२	उ.भा.	
चैत्र कृ.	२	गु.	मार्च ९	हस्त	

द्विरागमन मुहूर्त्त (सन् २०२२-२३ ई.)

तिथि-वार			तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल
वैशा. शु.	३	बु.	मई ४	मृग.	७/३३ तक,
वैशा. शु.	५	शु.	मई ६	पुन.	९/२० से १९/५ तक,
वैशा. शु.	११	गु.	मई १२	उ.फा.	७/११ तक,
मार्ग. शु.	१०	शु.	दिस. २	उ.भा.	
फाल्गु. शु.	३	बु.	फर. २२	उ.भा.	

द्विरागमन में विशेष-विवाह के दिन से १६ दिन के भीतर द्विरागमन के इन मुहूर्त्तों के बिना भी द्विरागमन हो सकता है। यदि नव-विवाहिता वधू का द्विरागमन दिवाली के दिन प्रदोष के समय दीपकों के प्रकाश में हो तो अच्छा माना जाता है।

उपनयन-मुहूर्त्त (सन् २०२२-२३ ई.)

तिथि-वार			तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा.)
वैशा. कृ.	५	गु.	अप्रै. २१	मूल	११/१३ तक,
वैशा. शु.	४	गु.	मई ५	आर्द्रा	१०/१ बाद,
वैशा. शु.	५	शु.	मई ६	आर्द्रा	९/२० तक,
वैशा. शु.	५	शु.	मई ६	पुन.	९/२० से १२/३३ तक,
वैशा. शु.	११	गु.	मई १२	उ.फा.	७/११ तक,
ज्ये. कृ.	१	मं.	मई १७	अनु.	६/२६ से १०/४६ तक,
ज्ये. कृ.	५	शु.	मई २०	उ.षा.	
ज्ये. शु.	१०	शु.	जून १०	चित्रा	
आषा. कृ.	२	गु.	जून १६	पू.षा.	१२/३७ तक,
माघ शु.	५	गु.	जन. २६	उ.भा.	१०/२८ तक,
माघ शु.	१०	मं.	जन. ३१	रोहि.	१३/४६ तक, (भौमयुति-परिहार),
फाल्गु. कृ.	३	बु.	फर. ८	पू.फा.	
फाल्गु. कृ.	४	शु.	फर. १०	हस्त	१०/३४ बाद, (गुरु-पादवेध विचार्य),
फाल्गु. शु.	३	बु.	फर. २२	उ.भा.	७/४१ बाद, (७/४१ तक रोगबाण),
चैत्र कृ.	२	गु.	मार्च ९	हस्त	

उपनयन संस्कार पूर्वाह्णकाल में ही करने की शास्त्राज्ञा है। मध्याह्णकाल इसके लिए सामान्य माना जाता है। अपराह्णकाल में उपनयन संस्कार करने का निषेध है। ''त्रेधाविभक्तदिनमानस्य प्रथमोभागः पूर्वाह्णः।''

गृहारम्भ-मुहूर्त्त (सन् २०२२-२३ ई.)

तिथि-वार			तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा.)
*वैशा.कृ.	७	श.	अप्रै. २३	उ.षा.	
*वैशा.शु.	३	बु.	मई ४	मृग.	७/३३ तक,
वैशा.शु.	११	गु.	मई १२	उ.फा.	७/११ तक,
वैशा.शु.	१५	चं.	मई १६	अनु.	१६/२३ बाद,
श्राव.कृ.	१	गु.	जुला. १४	उ.षा.	९/३९ बाद,
*श्राव.कृ.	५	चं.	जुला. १८	उ.भा.	१२/२३ से १५/२५ तक,
*श्राव.कृ.	७	बु.	जुला. २०	रेव.	१२/५० तक,
*श्राव.कृ.	१२	चं.	जुला. २५	मृग.	१५/२ तक,
*श्राव.शु.	६	बु.	अग. ३	हस्त	९/३७ तक, (९/३७ बाद भूशयन), (गुरु-पादवेध विचार्य),
*श्राव.शु.	७	गु.	अग. ४	चित्रा	
श्राव.शु.	१३	बु.	अग. १०	उ.षा.	९/३९ से १४/१६ तक,
मार्ग. शु.	१०	शु.	दिसं. २	उ.भा.	
मार्ग. शु.	१५	गु.	दिसं. ८	रोहि.	१२/३२ तक, (भौमयुति-परिहार),
मार्ग. शु.	१५	गु.	दिसं. ८	मृग.	१२/३२ बाद,
पौष कृ.	१	शु.	दिसं. ९	मृग.	१४/५९ तक,
*माघ कृ.	११	बु.	जन. १८	अनु.	१७/२२ तक,
*माघ शु.	६	शु.	जन. २७	रेव.	
फाल्गु.कृ.	४	शु.	फर. १०	हस्त	७/५८ से १६/४३ तक, (गुरु-पादवेध विचार्य),
*फाल्गु.शु.	३	बु.	फर. २२	उ.भा.	

* (तारा) अंकित मुहूर्त्तों में केवल वृष-वास्तुचक्र-शुद्धि नहीं है, अन्यथा ये मुहूर्त्त सर्वथा शुद्ध हैं।

नूतन गृहप्रवेश-मुहूर्त्त (सन् २०२२-२३ ई.)

तिथि-वार			तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा.)
*वैशा. कृ.	७	श.	अप्रै. २३	उ.षा.	१८/५३ तक,
*वैशा. शु.	३	बु.	मई ४	मृग.	७/३३ तक,
वैशा. शु.	११	गु.	मई १२	उ.फा.	७/११ तक,
*वैशा. शु.	१५	चं.	मई १६	अनु.	१६/२३ बाद,
*ज्ये. कृ.	५	शु.	मई २०	उ.षा.	
ज्ये. कृ.	११	गु.	मई २६	रेव.	
*ज्ये. शु.	२	बु.	जून १	मृग.	१३/० तक,
ज्ये. शु.	८	बु.	जून ८	उ.फा.	८/३० तक,
ज्ये. शु.	१०	शु.	जून १०	चित्रा	१८/३६ तक,
मार्ग. शु.	१०	शु.	दिसं. २	उ.भा.	
*मार्ग. शु.	१५	गु.	दिसं. ८	रोहि.	९/३८ तक, (भौमयुति-परिहार),
माघ कृ.	११	बु.	जन. १८	अनु.	१७/२२ तक,
*माघ शु.	५	गु.	जन. २६	उ.भा.	
माघ शु.	६	शु.	जन. २७	रेव.	
*फाल्गु. कृ.	५	श.	फर. ११	चित्रा	१६/२१ तक, (शुक्र-पादवेध विचार्य),

* (तारा) अंकित मुहूर्त्तों में कलशचक्र-शुद्धि नहीं है, अन्यथा ये निर्दोष हैं।

सर्वदेव प्रतिष्ठा-मुहूर्त्त (सन् २०२२ ई.)

(उत्तरायणकाल)

तिथि-वार			तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा.)
वैशा. कृ.	१	र.	अप्रै. १७	चित्रा	७/१६ तक, (गुरु-पादवेध विचार्य),
वैशा. कृ.	१	र.	अप्रै. १७	स्वा.	७/१६ बाद, (शुक्र-पादवेध विचार्य),
वैशा. कृ.	७	श.	अप्रै. २३	उ.षा.	

सर्वदेव प्रतिष्ठा-मुहूर्त्त (सन् २०२२-२३ ई.)

तिथि-वार			तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा.)
(उत्तरायणकाल)					
वैशा. शु.	३	बु.	मई ४	मृग.	७/३३ तक,
वैशा. शु.	५	शु.	मई ६	पुन.	९/२० बाद,
वैशा. शु.	६	श.	मई ७	पुन.	
वैशा. शु.	७	र.	मई ८	पुष्य	
वैशा. शु.	११	गु.	मई १२	उ.फा.	७/११ तक,
ज्ये. कृ.	५	शु.	मई २०	उ.षा.	
ज्ये. कृ.	११	गु.	मई २६	रेव.	
ज्ये. कृ.	१२	शु.	मई २७	अश्वि.	
ज्ये. शु.	२	बु.	जून १	मृग.	
ज्ये. शु.	५	श.	जून ४	पुष्य	
ज्ये. शु.	८	बु.	जून ८	उ.फा.	
ज्ये. शु.	१०	शु.	जून १०	चित्रा	
आषा. कृ.	६	र.	जून. १९	शत.	५/५६ बाद,
माघ कृ.	८	र.	जन. १५	चित्रा	
माघ कृ.	११	बु.	जन. १८	अनु.	
माघ शु.	१	र.	जन. २२	श्रव.	
माघ शु.	५	गु.	जन. २६	उ.भा.	
माघ शु.	६	शु.	जन. २७	रेव.	
माघ शु.	७	श.	जन. २८	अश्वि.	८/४३ तक,
माघ शु.	१३	शु.	फर. ३	पुन.	
फाल्गु. कृ.	४	शु.	फर. १०	हस्त	७/५८ बाद, (गुरु-पादवेध विचार्य),
फाल्गु. कृ.	५	श.	फर. ११	चित्रा	(शुक्र-पादवेध विचार्य),
फाल्गु. शु.	३	बु.	फर. २२	उ.भा.	
चैत्र कृ.	१	बु.	मार्च ८	उ.फा.	(गुरु-शुक्र-पादवेध विचार्य),
चैत्र कृ.	२	गु.	मार्च ९	हस्त	

तामसदेव प्रतिष्ठा-मुहूर्त्त (सन् २०२२ ई.)

तिथि-वार			तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा.)
(दक्षिणायनकाल)					
आषा. कृ.	१०	गु.	जून २३	अश्वि.	७/११ से ९/१३ तक,
आषा. कृ.	११	शु.	जून २४	अश्वि.	८/३ तक,
आषा. शु.	१	गु.	जून ३०	पुन.	९/५० तक,
आषा. शु.	२	शु.	जुला. १	पुष्य	
आषा. शु.	७	बु.	जुला. ६	उ.फा.	
आषा. शु.	८	गु.	जुला. ७	हस्त	७/३१ बाद, (गुरु-पादवेध विचार्य),
आषा. शु.	१०	श.	जुला. ९	स्वा.	
मार्ग. शु.	१०	शु.	दिसं. २	उ.भा.	
मार्ग. शु.	१२	र.	दिसं. ४	अश्वि.	
मार्ग. शु.	१५	गु.	दिसं. ८	रोहि.	(भौमयुति-परिहार)
पौष कृ.	१	शु.	दिसं. ९	मृग.	

देवप्रतिष्ठा के विशेष मुहूर्त्तों के बारे में स्पष्टीकरण

श्री विष्णु, राम, कृष्ण, शिव, गणेश, गौरी आदि सात्त्विक देवता हैं, इसलिए इनकी प्रतिष्ठा यद्यपि उपरोक्त ''सात्त्विक देवप्रतिष्ठा'' वाले मुहूर्त्तों में हो सकती है, फिर भी मुहूर्त्तशास्त्रों में इनकी प्रतिष्ठा के लिए विशेष मुहूर्त्तकाल बताए गए हैं, जिनका निर्देश हमने यहां आगे अलग से किया है। यहां यह समझ लेना चाहिए कि-सात्त्विक देवप्रतिष्ठा वाले मुहूर्त्त श्री विष्णु, राम, कृष्ण, गणेश, शिव, सरस्वती आदि सभी सत्त्वप्रधान प्रकृति वाले देवी-देवताओं के लिए समानरूप से प्रयोग में लाये जा सकते हैं, जबकि आगे पृथक् रूप से दिए गए श्री गणेश, दुर्गा, गौरी, शिव आदि देवी-देवताओं की प्रतिष्ठा के मुहूर्त्त केवल इन्हीं देवताओं के लिए हैं।

ध्यान रहे-दक्षिणायनकाल में पड़ने वाले ''तामसदेव प्रतिष्ठा-मुहूर्त्त'' तो केवल काली, भैरव आदि तामसदेवों के लिए ही प्रयोग में लाए जा सकते हैं, अन्य के लिए नहीं। सभी देवताओं की प्रतिष्ठा पूर्वाह्णकाल में (मध्याह्न से पूर्व) ही की जाती है-''पूर्वाह्ण एव प्रतिष्ठाकालः।''

विपणि-मुहूर्त्त (सन् २०२२-२३ ई.)

तिथि-वार				तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा.)
चैत्र	शु.	१५	श.	अप्रै. १६	चित्रा	१३/२५ बाद, (गुरु-पादवेध विचार्य),
वैशा.	कृ.	१	र.	अप्रै. १७	चित्रा	७/१६ तक, (गुरु-पादवेध विचार्य),
वैशा.	कृ.	७	श.	अप्रै. २३	उ.षा.	
वैशा.	शु.	३	बु.	मई ४	मृग.	७/३३ तक,
वैशा.	शु.	६	श.	मई ७	पुष्य	१२/१७ बाद,
वैशा.	शु.	७	र.	मई ८	पुष्य	१४/५७ तक,
वैशा.	शु.	११	गु.	मई १२	उ.फा.	१७/५० तक, (शुक्र-पादवेध विचार्य),
वैशा.	शु.	१५	चं.	मई १६	अनु.	७/११ तक,
ज्ये.	कृ.	५	शु.	मई २०	उ.षा.	
ज्ये.	कृ.	११	गु.	मई २६	रेव.	
ज्ये.	कृ.	१२	शु.	मई २७	अश्वि.	
ज्ये.	शु.	२	बु.	जून १	मृग.	१३/० तक,
ज्ये.	शु.	५	श.	जून ४	पुष्य	१७/४५ तक,
ज्ये.	शु.	८	बु.	जून ८	उ.फा.	८/३० तक,
ज्ये.	शु.	१०	शु.	जून १०	चित्रा	
आषा.	कृ.	१०	गु.	जून २३	अश्वि.	६/१४ से ९/१३ तक,
आषा.	कृ.	११	शु.	जून २४	अश्वि.	८/३ तक,
आषा.	शु.	२	शु.	जुला. १	पुष्य	
आषा.	शु.	७	बु.	जुला. ६	उ.फा.	११/४१ तक,
आषा.	शु.	८	गु.	जुला. ७	हस्त	७/३९ से १२/१९ तक, (गुरु-पादवेध विचार्य),
आषा.	शु.	११	र.	जुला. १०	अनु.	१४/१४ से १८/१६ तक,
आषा.	शु.	१२	चं.	जुला. ११	अनु.	७/४९ तक,
श्राव.	कृ.	१	गु.	जुला. १४	उ.षा.	८/२७ बाद, (शुक्र-पादवेध विचार्य),
श्राव.	कृ.	५	चं.	जुला. १८	उ.भा.	१२/२३ से १५/२५ तक,
श्राव.	कृ.	७	बु.	जुला. २०	रेव.	१२/५० तक,
श्राव.	कृ.	७	बु.	जुला. २०	अश्वि.	१२/५० बाद,
श्राव.	कृ.	८	गु.	जुला. २१	अश्वि.	१२/१९ तक,
श्राव.	कृ.	११	र.	जुला. २४	रोहि.	

तिथि-वार				तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा.)
श्राव.	कृ.	१२	चं.	जुला. २५	मृग.	१५/२ तक,
श्राव.	शु.	१	शु.	जुला. २९	पुष्य	९/४८ तक, (सूर्ययुति-परिहार)
श्राव.	शु.	६	बु.	अग. ३	हस्त	१८/२३ तक, (गुरु-पादवेध विचार्य),
श्राव.	शु.	७	गु.	अग. ४	चित्रा	१८/४७ तक,
भाद्र.	कृ.	१०	र.	अग. २१	मृग.	१४/२२ तक,
भाद्र.	कृ.	११	चं.	अग. २२	मृग.	७/४० तक,
भाद्र.	कृ.	१३	गु.	अग. २५	पुष्य	१०/३८ तक,
भाद्र.	शु.	२	चं.	अग. २९	उ.फा.	
भाद्र.	शु.	१२	बु.	सितं. ७	उ.षा.	१६/० तक,
आश्वि.	शु.	१	चं.	सितं. २६	हस्त	(गुरु-पादवेध विचार्य),
मार्ग.	शु.	१०	शु.	दिसं. २	उ.भा.	
मार्ग.	शु.	१२	र.	दिसं. ४	अश्वि.	
मार्ग.	शु.	१५	गु.	दिसं. ८	रोहि.	१२/३२ तक, (भोमयुति-परिहार),
मार्ग.	शु.	१५	गु.	दिसं. ८	मृग.	१२/३२ बाद,
पौष	कृ.	१	शु.	दिसं. ९	मृग.	१४/५९ तक,
माघ	कृ.	८	र.	जन. १५	चित्रा	
माघ	कृ.	११	बु.	जन. १८	अनु.	१७/२२ तक,
माघ	शु.	५	गु.	जन. २६	उ.भा.	
माघ	शु.	६	शु.	जन. २७	रेव.	
माघ	शु.	७	श.	जन. २८	अश्वि.	
माघ	शु.	१५	र.	फर. ५	पुष्य	१०/४५ से १२/१२ तक,
फाल्गु.	कृ.	४	शु.	फर. १०	हस्त	७/५८ से १६/४३ तक, (गुरु-पादवेध विचार्य),
फाल्गु.	कृ.	५	श.	फर. ११	चित्रा	१६/२१ तक, (शुक्र-पादवेध विचार्य),
फाल्गु.	शु.	३	बु.	फर. २२	उ.भा.	
चैत्र	कृ.	१	बु.	मार्च ८	उ.फा.	(गुरु-शुक्र-पादवेध विचार्य),
चैत्र	कृ.	२	गु.	मार्च ९	हस्त	

अभिजित् मुहूर्त्त

स्थानीय दिनमानार्ध के घं.मि. को स्थानीय सूर्योदयकाल में जोड़ने पर 'स्पष्ट दिनार्ध' होता है। दिनमान का 30वां भाग 'मुहूर्त्तार्ध' कहलाता है। मुहूर्त्तार्ध को स्पष्ट दिनार्ध में से घटाने और जोड़ने पर अभिजित् मुहूर्त्त का क्रमशः प्रारम्भ और समाप्तिकाल ज्ञात हो जाता है। इस काल में लगभग सभी दोषों को समाप्त कर डालने की अद्भुत शक्ति मानी गयी है। जब मुण्डन, अक्षराम्भ आदि मुहूर्त्तों में शुद्ध लग्न न मिल रहा हो, तब 'अभिजित् मुहूर्त्त' को प्रयोग में लाना चाहिए।

स्वयंसिद्ध मुहूर्त्त

चैत्र शुक्ल प्रतिपदा, अक्षय तृतीया, विजयादशमी, धनत्रयोदशी, दीपावली और वसन्त पंचमी-ये स्वयंसिद्ध मुहूर्त्त कहलाते हैं। 'स्वयंसिद्ध मुहूर्त्तों' में भद्रा, व्यतीपात, क्षीणचन्द्र, गुरु-शुक्र अस्तादि दोषों का विचार नहीं किया जाता। ये मुहूर्त्त मुहूर्त्तशास्त्रीय विधि-निषेधों के बन्धन से सर्वथा मुक्त हैं। इनमें कोई भी शुभकृत्य किसी शास्त्रोक्त गुण-दोष को विचारे बिना यथेच्छकाल में करने की परम्परा है।

ध्यान रहे-'गोधूलि लग्न' भी मूलतः 'स्वयंसिद्ध मुहूर्त्त' ही है। 'ज्योतिर्विदाभरण' और 'विवाह पटल' आदि ग्रन्थों में इसके लिए तिथि, नक्षत्र, योग, लग्नादि सभी पदार्थों के विचार को सर्वथा उपेक्ष्य बतलाया गया है। 'सर्वार्थसिद्धि' आदि योग भी स्वयंसिद्ध मुहूर्त्तों की कोटि में आते हैं।

श्रीगणेश, शिव, गौरी, दुर्गा, विष्णु, कृष्ण, राम, भैरव, हनुमान्, स्कन्द, नाग और परशुराम की मूर्ति-प्रतिष्ठा के विशेष मुहूर्त्त (सं. २०७९ वि.) (सन् २०२२-२३ ई.) (सर्वत्र भा.स्टैं.टा. दिया गया है।)

पिछले पृष्ठों पर सर्वदेव एवं तामसदेवों की प्रतिष्ठा के मुहूर्त्त दिये गये हैं। यद्यपि इन श्रीगणेश आदि 12 देवों की प्रतिष्ठा उन मुहूर्त्तों में निःशंक की जा सकती है, पुनरपि मुहूर्त्तशास्त्र में इन देवों की प्रतिष्ठा इनकी अपनी-अपनी तिथियों, नक्षत्रों एवं वारों में भी करने का विशेष निर्देश है। तदनुसार यहां इन गणेशादि देवों की प्रतिष्ठा के मुहूर्त्त इनकी अपनी-अपनी तिथियों, नक्षत्रों, वारों के अनुसार भी साधित कर निर्दिष्ट करना हमने विगत वर्षों से प्रारम्भ किया है। श्रद्धालु लोग इन 12 देवों के इन अतिरिक्त प्रतिष्ठा-मुहूर्त्तों को भी अपेक्षानुसार उपयोग में ला सकते हैं। जान लीजिये-गणेश की तिथि कृ. चतुर्थी, शिव की तिथि कृ. चतुर्दशी और नक्षत्र आर्द्रा, गौरी की तिथि शु. तृतीया, दुर्गा की तिथि शु. नवमी और नक्षत्र मूल, विष्णु की तिथि शु. द्वादशी और नक्षत्र श्रवण, कृष्ण की तिथि कृ. अष्टमी, राम की तिथि शु. नवमी, हनुमान् की तिथि कृ. चतुर्दशी और वार मंगल, स्कन्द की तिथि शु. षष्ठी, नाग की तिथि शु. पंचमी, भैरव की तिथि कृ. अष्टमी तथा परशुराम की तिथि शु. तृतीया है। ध्यान दें-यहां इन सभी देवताओं की अपनी-अपनी तिथियां तो हैं, लेकिन अपना नक्षत्र कुछ ही देवताओं का है। किञ्च-अपना वार श्री हनुमान् जी का ही है। शेष देवताओं का कोई अपना वार भी नहीं है। ध्यान दें-कुछ नक्षत्र ऐसे भी हैं, जिनमें किसी भी देवता की प्रतिष्ठा की जा सकती है, जिनका प्रयोग हमने गत पृष्ठों पर ''सर्वदेव प्रतिष्ठा मुहूर्त्तों'' में किया है। यदि कहीं उन नक्षत्रों में से कोई नक्षत्र हमें इन गणेशादि देवों के मुहूर्त्तकाल में प्राप्त हुआ है, उसका भी यहां हमने निर्देश नक्षत्र वाले कॉलम में किया है, अर्थात् उस नक्षत्र का वहां प्रयोग किया गया है।

यहां यह भी स्पष्ट कर देना आवश्यक है कि-इन 12 देवताओं की प्रतिष्ठा के ये मुहूर्त्तकाल गत पृष्ठ पर दिये सर्वदेव और तामसदेवों के प्रतिष्ठा-मुहूर्त्तकालों की ही तरह युति, वेध, क्रान्तिसाम्य, गुरु-शुक्रास्त, भद्रा आदि सभी दोषों से सर्वथा मुक्त हैं। ये सर्वथा शुद्ध हैं। इन्हें निःशंक प्रयोग में लाइये। अपि च-दैवज्ञ को यह भी जान लेना चाहिए कि-देवताओं की प्रतिष्ठा पूर्वाह्ण (दिन के पूर्वार्ध) में ही की जाती है। यहां ''शुद्धकाल'' वाले कॉलम में अनेकत्र शुद्धकाल नहीं दिया गया है। ऐसे स्थलों पर समझना चाहिए कि वहां प्रतिष्ठा के लिए पूरा पूर्वाह्ण काल दोषमुक्त है।

श्रीगणेश-प्रतिष्ठा मुहूर्त्त (तिथि कृ. चतुर्थी)

तिथि-वार			तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा.)
वैशा. कृ.	४	बु.	अप्रै. २०		
ज्ये. कृ.	४	गु.	मई १९		
आषा. कृ.	३	शु.	जून १७	श्रव.	९/५५ से १०/४७ तक, (बुध-शुक्र-पादवेध विचार्य),
फाल्गु. कृ.	४	गु.	फर. ९	उ.फा.	

श्रीगौरी-प्रतिष्ठा मुहूर्त्त (तिथि शु. ३)

तिथि-वार			तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल
वैशा. शु.	३	मं.	मई ३	रोहि.	
वैशा. शु.	३	बु.	मई ४	मृग.	७/३३ तक,
ज्ये. शु.	३	गु.	जून २		
फाल्गु. शु.	३	बु.	फर. २२	उ.भा.	

श्रीशिव-प्रतिष्ठा मुहूर्त्त (तिथि कृ. १४, आर्द्रा)

तिथि-वार			तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल
फाल्गु. कृ.	१४	र.	फर. १९	श्रव.	

श्रीस्कन्द-प्रतिष्ठा मुहूर्त्त (तिथि शु. ६)

तिथि-वार			तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल
वैशा. शु.	६	श.	मई ७	पुन.	
ज्ये. शु.	६	र.	जून ५		७/५४ बाद,
ज्ये. शु.	६	चं.	जून ६		६/४० तक, (शुक्र-पादवेध विचार्य),
माघ शु.	६	शु.	जन. २७	रेव.	९/१० तक,
फाल्गु. शु.	६	श.	फर. २५		

श्रीराम-प्रतिष्ठा मुहूर्त्त (तिथि शु. ९)

तिथि-वार			तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा.)
ज्ये. शु.	८	बु.	जून ८	उ.फा.	८/३० बाद,
माघ शु.	९	चं.	जन. ३०		१०/१२ तक,

श्रीहनुमान्-प्रतिष्ठा मुहूर्त्त (तिथि कृ. १४, मंगल)

तिथि-वार			तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल
फाल्गु. कृ.	१४	र.	फर. १९	श्रव.	

श्रीदुर्गा-प्रतिष्ठा मुहूर्त्त (तिथि शु. ९, मूल)

तिथि-वार			तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल
ज्ये. शु.	८	बु.	जून ८	उ.फा.	८/३० बाद,
माघ शु.	९	चं.	जन. ३०		१०/१२ तक,

श्रीभैरव-प्रतिष्ठा मुहूर्त्त (तिथि कृ. ८)

तिथि-वार			तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल
वैशा. कृ.	७	श.	अप्रै. २३	उ.षा.	६/२७ बाद,
आषा. कृ.	८	मं.	जून. २१	उ.भा.	
माघ कृ.	८	र.	जन. १५	चित्रा	
फाल्गु. कृ.	८	मं.	फर. १४	अनु.	९/४ तक,

श्रीनाग-प्रतिष्ठा मुहूर्त्त (तिथि शु. ५)

तिथि-वार			तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा.)
वैशा. शु.	५	शु.	मई ६	पुन.	९/२० बाद,
ज्ये. शु.	५	श.	जून ४	पुष्य	
माघ शु.	५	गु.	जन. २६	उ.भा.	

श्रीपरशुराम-प्रतिष्ठा मुहूर्त्त (तिथि शु. ३)

तिथि-वार			तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल
वैशा. शु.	३	मं.	मई ३	रोहि.	
वैशा. शु.	३	बु.	मई ४	मृग.	७/३३ तक,
ज्ये. शु.	३	गु.	जून २		
फाल्गु. शु.	३	बु.	फर. २२	उ.भा.	

श्रीकृष्ण-प्रतिष्ठा मुहूर्त्त (तिथि कृ. ८)

तिथि-वार			तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल
वैशा. कृ.	७	श.	अप्रै. २३	उ.षा.	६/२७ बाद,
आषा. कृ.	८	मं.	जून २१	उ.भा.	
माघ कृ.	८	र.	जन. १५	चित्रा	
फाल्गु. कृ.	८	मं.	फर. १४	अनु.	९/४ तक,

श्रीविष्णु-प्रतिष्ठा मुहूर्त्त (तिथि शु. १२, श्रवण)

तिथि-वार			तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल
-----	-	-	------	---	------ ---

सर्वार्थसिद्धि आदि योग (सं. २०७९ वि.) (भा. स्टैं. टा.)

इन सर्वार्थसिद्धि योग, रवियोग आदि के प्रारम्भ-समाप्तिकालों के साधन में **श्रीमार्त्तण्ड ज्योतिष कार्यालय-कुराली (पं.) के सुयोग्य कार्यकर्त्ता श्रीकृष्ण शर्मा, शास्त्री, M.A., साहित्याचार्य, वेदाचार्य** द्वारा पूर्ण सहयोग प्राप्त हुआ है। तदर्थ मेरा इन्हें सधन्यवाद आशीर्वाद है। - **प्रियव्रत शर्मा**

इस स्तम्भ के अन्तर्गत हम पाठकों की सुविधा के लिए सर्वार्थसिद्धि, अमृतसिद्धि, सिद्धि, द्विपुष्कर, त्रिपुष्कर एवं रवि - इन तिथि-भ-वार से बनने वाले एवं सूर्य और चन्द्र के नक्षत्र-संयोग से उत्पन्न सुयोगों के शास्त्रोक्त काल का सूक्ष्म निर्णय करते हैं। अत्यन्त शीघ्रता की स्थिति में किसी भी शुभकार्य को सम्पन्न करने के लिए यदि गुरु-शुक्रास्त आदि दोषों के कारण शुभ (शुद्ध) समय न मिल पा रहा हो तो वहां इन शुभ (सवार्थसिद्धि आदि) योगों का प्रश्रय लेना चाहिए-ऐसी शास्त्राज्ञा है। अतः इन सुयोगों के काल में आप किसी भी शुभकार्य को निःसंकोच सज्पन्न कर सकते हैं। ध्यान रहे-इन सुयोगों के कालनिर्णय में भद्रा, गुरु-शुक्रास्तादि दोषों का विचार नहीं होता।

सर्वार्थसिद्धि एवं अमृतसिद्धि योग-जैसाकि-इनके नाम से ही स्पष्ट है-इन योगों के समय कोई भी शुभ कार्य किया जाए तो वह सफल होता है। यात्रा गृहप्रवेश, नूतन-कार्यारम्भ आदि सभी कार्यों के लिए शीघ्रता या अन्य किसी अपरिहार्य कारणवश गुरु-शुक्रास्त आदि का विचार असंभव होने पर इन सर्वार्थसिद्धि आदि योगों का आश्रय लेना चाहिए। इस स्तम्भ के अन्त में ब्रैकेटों (Brackets) में दिए गए अमृतसिद्धि योग (जो सामान्यतः सर्वार्थसिद्धि योगों की श्रेणी मे भी आते हैं) विशेष वारों और नक्षत्रों से संपर्क के कारण विशेष शुभ फलदायक माने जाते हैं। ये योग जिन-जिन वारों में घटित हुए हैं, उनका निर्देश भी यहा हमने साथ-साथ कर दिया है। **ध्यान रहे**-गुरुवार वाले अमृतसिद्धि योग (जिन्हें गुरुपुष्यामृत योग भी कहा जाता है) के समय विवाह, मंगलवार वाले अमृतसिद्धि योग के समय नए घर में प्रवेश तथा शनिवार वाले अमृतसिद्धि योग के समय यात्रा नहीं करनी चाहिए। शेष सभी कार्यों के लिए इन्हें निःसंकोच प्रयोग में लाइए।

रवियोग - रवियोग भी सर्वार्थसिद्धि योगों की भान्ति ही सभी कार्यों के लिए शुभ माने जाते हैं। रवियोग सभी बुरे योगों को नष्ट करने की अद्‌भुत शक्ति रखता है-**''कुयोगविध्वंस-कराः शुभेषु।''**

सिद्धियोग - सिद्धियोग भी सर्वार्थसिद्धि और रवियोगों की भान्ति ही प्रत्येक कार्य के लिए शुभ एवं महत्त्वशाली माने गए हैं। सिद्धियोग में यमघण्ट, विष आदि कुयोगों का प्रभाव प्रायः समाप्त हो जाता है-ऐसा शास्त्रनिर्देश है।

त्रिपुष्करयोग-मुहूर्त्तविदों का कथन है कि-इस योग में सम्पन्न किया गया या घटित कोई शुभकार्य अथवा कोई शुभाशुभ घटना कालान्तर में त्रिगुणित हो जाती है। इसमें बहुमूल्य वस्तुओं (आभूषण, भूमि, गाड़ी आदि) का क्रय (खरीदना) त्रिगुणकारी माना जाता है।

द्विपुष्करयोग - ये योग त्रिपुष्करयोगों की ही भान्ति शुभाशुभ सभी घटनाओं को द्विगुणित करते हैं। त्रिपुष्कर एवं द्विपुष्कर-इन सुयोगों का सत्यापक शास्त्रवचन इस तरह है-**''त्रिपुष्करस्त्रिगुणदो द्विगुणो यमलांघ्रिभे।''**

सर्वार्थसिद्धि योग (सं. २०७९ वि.) (भा. स्टैं. टा.)

प्रारम्भ			समाप्त			प्रारम्भ			समाप्त			प्रारम्भ			समाप्त			प्रारम्भ			समाप्त		
२०२२ ई.	घं.	मि.	२०२२ ई.	घं.	मि.	२०२२ ई.	घं.	मि.	२०२२ ई.	घं.	मि.	२०२२ ई.	घं.	मि.	२०२२ ई.	घं.	मि.	२०२२ ई.	घं.	मि.	२०२२ ई.	घं.	मि.
अप्रै. ३	सू.	उ.	अप्रै. ३	१२	३७	अप्रै. १९	३	३८	अप्रै. १९	सू.	उ.	मई ८	सू.	उ.	मई ८	१४	५७	जून ९	४	३०	जून ९	सू.	उ.
अप्रै. ५	सू.	उ.	अप्रै. ५	१६	५१	अप्रै. २३	१८	५३	अप्रै. २४	सू.	उ.	मई १४	१७	२७	मई १५	सू.	उ.	जून ११	सू.	उ.	जून १२	२	०५
अप्रै. ६	सू.	उ.	अप्रै. ७	सू.	उ.	अप्रै. २८	१७	४०	अप्रै. ३०	सू.	उ.	मई १६	१८	१७	मई १७	सू.	उ.	जून १३	सू.	उ.	जून १३	२१	२४
अप्रै. ९	१	४३	अप्रै. ९	सू.	उ.	मई ३	०	३३	मई ३	सू.	उ.	मई २१	१	१८	मई २१	२३	४६	जून १७	९	५६	जून १८	७	३९
अप्रै. १०	सू.	उ.	अप्रै. ११	६	५१	मई ४	सू.	उ.	मई ५	सू.	उ.	जून १	सू.	उ.	जून १	१३	००	जून २१	सू.	उ.	जून २२	५	०३
अप्रै. १२	सू.	उ.	अप्रै. १२	८	३४	मई ६	९	२०	मई ७	सू.	उ.	जून २	१६	०४	जून ३	१९	०५	जून २३	सू.	उ.	जून २४	८	०३

सर्वार्थसिद्धि योग (सन् २०२२-२३ ई.) (भा. स्टैं. टा.)

प्रारम्भ २०२२ ई.	घं.	मि.	समाप्त २०२२ ई.	घं.	मि.
जून २७	सू.	उ.	जून २८	सू.	उ.
जून ३०	सू.	उ.	जुला. १	सू.	उ.
जुला. ६	११	४४	जुला. ७	सू.	उ.
जुला. ९	सू.	उ.	जुला. ९	११	२४
जुला. ११	सू.	उ.	जुला. ११	७	४९
जुला. १५	सू.	उ.	जुला. १५	१७	३१
जुला. १९	सू.	उ.	जुला. १९	१२	११
जुला. २१	सू.	उ.	जुला. २१	१४	१७
जुला. २५	सू.	उ.	जुला. २६	१	०५
जुला. २८	सू.	उ.	जुला. २९	सू.	उ.
अग. ३	सू.	उ.	अग. ३	१८	२३
अग. १४	२१	५५	अग. १५	सू.	उ.
अग. १६	२१	०६	अग. १७	सू.	उ.
अग. २०	सू.	उ.	अग. २१	४	३९
अग. २२	सू.	उ.	अग. २२	७	४०
अग. २५	सू.	उ.	अग. २५	१६	१६
अग. २८	२१	५६	अग. २९	सू.	उ.
सितं. २	२३	४७	सितं. ३	सू.	उ.
सितं. ४	२१	४२	सितं. ५	सू.	उ.
सितं. ११	८	०२	सितं. १२	सू.	उ.
सितं. १३	६	३५	सितं. १४	सू.	उ.
सितं. १७	सू.	उ.	सितं. १७	१२	२१
सितं. २५	सू.	उ.	सितं. २६	सू.	उ.
सितं. ३०	५	१३	अक्तू. १	४	१८
अक्तू. २	सू.	उ.	अक्तू. ३	१	५२
अक्तू. ९	सू.	उ.	अक्तू. ९	१६	२०
अक्तू. ११	सू.	उ.	अक्तू. ११	१६	१७
अक्तू. १२	१७	०९	अक्तू. १३	सू.	उ.
अक्तू. १८	५	१२	अक्तू. १८	सू.	उ.
अक्तू. २३	सू.	उ.	अक्तू. २४	सू.	उ.
अक्तू. २७	१२	१०	अक्तू. २८	१०	४२
अक्तू. ३०	सू.	उ.	अक्तू. ३०	७	२५

प्रारम्भ २०२२ ई.	घं.	मि.	समाप्त २०२२ ई.	घं.	मि.
अक्तू. ३१	५	४७	अक्तू. ३१	सू.	उ.
नवं. १	४	१५	नवं. १	सू.	उ.
नवं. ६	०	०३	नवं. ७	सू.	उ.
नवं. ९	१	३८	नवं. ९	सू.	उ.
नवं. १४	१३	१४	नवं. १५	सू.	उ.
नवं. १५	१६	१२	नवं. १६	सू.	उ.
नवं. २०	सू.	उ.	नवं. २१	०	३६
नवं. २३	२१	३७	नवं. २४	१९	३७
नवं. २७	१२	३८	नवं. २८	सू.	उ.
नवं. २८	१०	२९	नवं. २९	सू.	उ.
दिसं. ३	५	४५	दिसं. ३	सू.	उ.
दिसं. ४	सू.	उ.	दिसं. ५	सू.	उ.
दिसं. ६	८	३८	दिसं. ८	सू.	उ.
दिसं. ११	२०	३६	दिसं. १२	२३	३५
दिसं. १३	सू.	उ.	दिसं. १४	२	३२
दिसं. १८	सू.	उ.	दिसं. १८	१०	१८
दिसं. २१	८	३३	दिसं. २२	६	३३
दिसं. २५	सू.	उ.	दिसं. २५	१९	२१
दिसं. २६	सू.	उ.	दिसं. २६	१६	४१
दिसं. ३०	११	२४	दिसं. ३१	सू.	उ.
(सन् २०२३ ई.)					
जन. १	सू.	उ.	जन. १	१२	४८
जन. ३	सू.	उ.	जन. ३	१६	२५
जन. ४	सू.	उ.	जन. ५	सू.	उ.
जन. ६	०	१३	जन. ७	सू.	उ.
जन. ८	सू.	उ.	जन. ९	६	०५
जन. १०	सू.	उ.	जन. १०	९	०१
जन. १८	सू.	उ.	जन. १८	१७	२२
जन. २२	६	३०	जन. २२	सू.	उ.
जन. २६	१८	५६	जन. २८	सू.	उ.
जन. ३०	२२	१५	जन. ३१	सू.	उ.
फर. १	सू.	उ.	फर. २	३	२३

प्रारम्भ २०२३ ई.	घं.	मि.	समाप्त २०२३ ई.	घं.	मि.
फर. ३	६	१८	फर. ४	सू.	उ.
फर. ५	सू.	उ.	फर. ५	१२	१२
फर. १२	१	३९	फर. १२	सू.	उ.
फर. १४	२	३५	फर. १४	सू.	उ.
फर. १८	१७	४२	फर. १९	सू.	उ.
फर. २२	६	३८	फर. २२	सू.	उ.
फर. २३	सू.	उ.	फर. २५	३	२६
फर. २७	सू.	उ.	फर. २८	सू.	उ.
मार्च १	सू.	उ.	मार्च १	९	५१
मार्च २	१२	४३	मार्च ३	१५	४३
मार्च ९	४	१९	मार्च ९	सू.	उ.
मार्च ११	७	१०	मार्च १२	सू.	उ.
मार्च १३	८	२१	मार्च १४	८	१२
मार्च १८	२	४६	मार्च १९	०	२९
मार्च २१	१७	२५	मार्च २४	१३	२२
मार्च २७	सू.	उ.	मार्च २८	सू.	उ.
मार्च ३०	सू.	उ.	मार्च ३१	सू.	उ.

रवियोग (सन् २०२२ ई.)

प्रारम्भ २०२२ ई.	घं.	मि.	समाप्त २०२२ ई.	घं.	मि.
अप्रै. ४	१४	२८	अप्रै. ५	१६	५१
अप्रै. ६	१९	३९	अप्रै. ७	२२	४१
अप्रै. १०	४	३०	अप्रै. १२	८	३४
अप्रै. १५	९	३५	अप्रै. १६	८	३९
अप्रै. २१	२१	५१	अप्रै. २२	२०	१४
मई ४	३	१७	मई ५	६	१७
मई ६	९	२०	मई ७	१२	१७
मई ९	१७	०७	मई १२	१९	३०
मई १४	१७	२७	मई १५	१५	३४
मई २१	१	१८	मई २१	२३	४६
जून २	१६	०४	जून ३	१९	०५
जून ४	२१	५४	जून ६	०	२४
जून ८	३	४९	जून ८	१२	३६
जून ९	४	३०	जून ११	३	३६

रवियोग (सन् २०२२ ई.)

प्रारम्भ २०२२ ई.	घं.	मि.	समाप्त २०२२ ई.	घं.	मि.
जून १२	२३	५८	जून १३	२१	२४
जून १९	५	५६	जून २०	४	५३
जुला. २	३	५६	जुला. ३	६	३०
जुला. ४	८	४३	जुला. ५	१०	३०
जुला. ६	११	०९	जुला. ६	११	४४
जुला. ८	१२	१३	जुला. १०	९	५५
जुला. १२	५	१५	जुला. १३	२	२१
जुला. १८	१२	२३	जुला. १९	१२	११
जुला. २०	१०	४७	जुला. २०	१२	५०
जुला. ३१	१४	२०	अग. १	१६	०६
अग. २	१७	२८	अग. ३	९	३६
अग. ३	१८	२३	अग. ४	१८	४७
अग. ६	१७	५१	अग. ८	१४	३७
अग. १६	२१	०६	अग. १७	७	२१
अग. १७	२१	५७	अग. १८	२३	३५
अग. २९	२३	०४	अग. ३०	२३	४९
अग. ३१	३	१६	सितं. २	२३	४७
सितं. ४	२१	४२	सितं. ६	१८	०९
सितं. ८	१३	४५	सितं. ९	११	३४
सितं. १६	९	५५	सितं. १७	१२	२१
सितं. २९	५	५२	सितं. ३०	५	१३
अक्तू. १	४	१८	अक्तू. २	३	११
अक्तू. ४	०	२४	अक्तू. ५	२१	१५
अक्तू. ७	१८	१७	अक्तू. ८	१७	०७
अक्तू. १५	२३	२१	अक्तू. १७	२	१४
अक्तू. २८	१०	४२	अक्तू. २९	९	०५
अक्तू. ३०	७	२५	अक्तू. ३१	५	४७
नवं. २	२	५२	नवं. ४	०	४८
नवं. ५	२३	५६	नवं. ६	२०	२६
नवं. ७	०	०३	नवं. ८	०	३७
नवं. १४	१३	१४	नवं. १५	१६	१२
नवं. २६	१४	५८	नवं. २७	१२	३८

रवियोग (सन् २०२२ ई.)

प्रारम्भ २०२२ ई.	घं. मि.	समाप्त २०२२ ई.	घं. मि.
नवं. २८	१० २९	नवं. २९	८ ३८
दिसं. १	६ १२	दिसं. ३	५ ४५
दिसं. ३	६ ४९	दिसं. ४	६ १६
दिसं. ६	८ ३८	दिसं. ७	१० २५
दिसं. १४	२ ३२	दिसं. १५	५ १५
दिसं. २५	१९ २१	दिसं. २६	१६ ४१
दिसं. २७	१४ २७	दिसं. २८	१२ ४५
(सन् २०२३ ई.)			
जन. १	सू. उ.	जन. २	१४ २३
जन. ४	१८ ४८	जन. ५	२१ २६
जन. १३	१६ ३५	जन. १४	१८ १३
जन. २४	० २६	जन. २४	१६ २६
जन. २४	२१ ५७	जन. २५	२० ०५
जन. २६	१८ ५६	जन. २७	१८ ३६
जन. २९	२० २१	फर. १	० ३९
फर. ३	६ १८	फर. ४	९ १६
फर. १२	१ ३९	फर. १३	२ २७
फर. २३	४ ४९	फर. २४	३ ४४
फर. २५	३ २६	फर. २६	३ ५८
फर. २८	१९ ०१	मार्च २	१२ ४३
मार्च ४	१८ ४१	मार्च ५	२१ ३०
मार्च ६	६ ४१	मार्च ७	० ०४
मार्च १३	८ २१	मार्च १४	८ १२
मार्च २४	१३ २२	मार्च २५	१३ १८
मार्च २६	१४ ००	मार्च २७	१५ २७
मार्च २९	२० ०६	मार्च ३०	६ १४

सिद्धियोग (सन् २०२२ ई.)

प्रारम्भ २०२२ ई.	घं. मि.	समाप्त २०२२ ई.	घं. मि.
मई १४	१७ २७	मई १५	सू. उ.
मई २४	२२ ३३	मई २५	सू. उ.
जून २	१६ ०४	जून ३	सू. उ.
जून ११	सू. उ.	जून १२	२ ०५
जून २१	सू. उ.	जून २२	५ ०३
जून ३०	सू. उ.	जुला. १	१ ०७
जुला. ९	सू. उ.	जुला. ९	११ २४
जुला. १९	सू. उ.	जुला. १९	१२ ११
जुला. २८	७ ०४	जुला. २९	सू. उ.
सितं. २४	३ ५०	सितं. २४	सू. उ.
अक्तू. २	सू. उ.	अक्तू. ३	१ ५२
अक्तू. २१	१२ २८	अक्तू. २२	सू. उ.
अक्तू. ३०	सू. उ.	अक्तू. ३०	७ २५
अक्तू. ३१	४ १५	अक्तू. ३१	सू. उ.
नवं. ९	सू. उ.	नवं. १०	३ ०८
नवं. १८	सू. उ.	नवं. १८	२३ ०८
नवं. २९	१० २९	नवं. ३०	सू. उ.
दिसं. ७	सू. उ.	दिसं. ७	१० २५
दिसं. १६	सू. उ.	दिसं. १६	७ ३४
दिसं. २६	सू. उ.	दिसं. २६	१६ ४१
(सन् २०२३ ई.)			
फर. ३	६ १८	फर. ३	सू. उ.
फर. १२	१ ३९	फर. १२	सू. उ.
मार्च २	१२ ४३	मार्च ३	सू. उ.
मार्च ११	७ १०	मार्च १२	सू. उ.
मार्च २१	१७ २५	मार्च २२	सू. उ.
मार्च ३०	सू. उ.	मार्च ३०	२२ ५९

द्विपुष्कर योग (सन् २०२२ ई.)

प्रारम्भ २०२२ ई.	घं. मि.	समाप्त २०२२ ई.	घं. मि.
मई २१	२३ ४६	मई २२	१३ ००
मई ३१	११ १९	जून १	सू. उ.
सितं. १७	१२ २१	सितं. १७	१४ १४
सितं. २७	६ १७	सितं. २८	२ २८
नवं. २१	० ३६	नवं. २१	सू. उ.
नवं. २९	११ ०४	नवं. ३०	सू. उ.
(सन् २०२३ ई.)			
जन. १४	१८ १३	जन. १४	१९ २३
जन. २३	३ २१	जन. २३	सू. उ.

द्विपुष्कर योग (सन् २०२३ ई.)

प्रारम्भ २०२३ ई.	घं. मि.	समाप्त २०२३ ई.	घं. मि.
मार्च १९	० २९	मार्च १९	८ ०७
मार्च २८	सू. उ.	मार्च २८	१७ ३२

त्रिपुष्कर योग (सन् २०२२ ई.)

प्रारम्भ २०२२ ई.	घं. मि.	समाप्त २०२२ ई.	घं. मि.
अप्रै. १८	५ ३४	अप्रै. १८	सू. उ.
अप्रै. २३	सू. उ.	अप्रै. २३	६ २७
अप्रै. २७	० ४८	अप्रै. २७	सू. उ.
मई १	३ २५	मई १	सू. उ.
जून १२	२ ०५	जून १२	सू. उ.
जून २०	४ ५३	जून २०	सू. उ.
जून २५	१० २३	जून २६	१ १०
जुला. ५	११ २९	जुला. ६	सू. उ.
अग. १३	२३ २८	अग. १४	० ५४
अग. २३	१० ४४	अग. २४	सू. उ.
अग. २८	२१ ५६	अग. २९	सू. उ.
सितं. ७	३ ०५	सितं. ७	सू. उ.
अक्तू. १६	२ १४	अक्तू. १७	सू. उ.
अक्तू. २२	१३ ५०	अक्तू. २२	१८ ०३
अक्तू. ३१	५ ४७	अक्तू. ३१	सू. उ.
दिसं. २०	९ ५४	दिसं. २१	० ४६
दिसं. २४	२२ १५	दिसं. २५	८ २५
(सन् २०२३ ई.)			
जन. ३	सू. उ.	जन. ३	१६ २५
फर. १३	२ २७	फर. १३	सू. उ.
फर. २१	९ ०५	फर. २२	५ ५८
फर. २६	३ ५८	फर. २७	० ५९

अमृतसिद्धि योग (सन् २०२२ ई.)

प्रारम्भ २०२२ ई.	घं. मि.	समाप्त २०२२ ई.	घं. मि.
(अप्रै. १	१० ४०	अप्रै. २	सू. उ.)शु.
(अप्रै. २९	सू. उ.	अप्रै. २९	१८ ४२)शु.
(जून २७	१६ ०२	जून २८	सू. उ.)चं.
(जुला. १	१ ०७	जुला. १	सू. उ.)गु.
(जुला. २५	सू. उ.	जुला. २६	१ ०५)चं.
(जुला. २८	७ ०४	जुला. २९	सू. उ.)गु.
(अग. १६	२१ ०६	अग. १७	सू. उ.)मं.
(अग. २०	सू. उ.	अग. २१	४ ३९)श.
(अग. २२	सू. उ.	अग. २२	७ ४०)चं.
(अग. २५	सू. उ.	अग. २५	१६ १६)गु.
(सितं. १३	६ ३५	सितं. १४	सू. उ.)मं.
(सितं. १७	सू. उ.	सितं. १७	१२ २१)श.
(सितं. २६	५ ५५	सितं. २६	सू. उ.)र.
(अक्तू. ११	सू. उ.	अक्तू. ११	१६ १७)मं.
(अक्तू. २३	१४ ३४	अक्तू. २४	सू. उ.)र.
(नवं. २०	सू. उ.	नवं. २१	० ३६)र.
(नवं. २३	२१ ३७	नवं. २४	सू. उ.)बु.
(दिसं. ३	५ ४५	दिसं. ३	सू. उ.)शु.
(दिसं. १८	सू. उ.	दिसं. १८	१० १८)र.
(दिसं. २१	८ ३३	दिसं. २२	६ ३३)बु.
(दिसं. ३०	११ २४	दिसं. ३१	सू. उ.)शु.
(सन् २०२३ ई.)			
(जन. १८	सू. उ.	जन. १८	१७ २२)बु.
(जन. २७	सू. उ.	जन. २७	१८ ३६)शु.
(मार्च २७	१७ २९	मार्च २८	सू. उ.)चं.
(मार्च ३०	२३ ३१	मार्च ३१	सू. उ.)गु.

श्रीमार्त्तण्ड पञ्चाङ्ग (सं. 2079 वि.) का 'शोधनिबन्ध' विशेषांक

(लेखक एवं सम्पादक–इन्दुशेखर शर्मा)

इस विशेषांक के विषय :-

विषय — पृष्ठ

(i) स्वर्णादि धातुओं से नवग्रह-शान्तिविधान 289-290

(ii) भारत में लग्नों का प्रारम्भकाल 291-303

स्वर्णादि धातुओं से नवग्रहजन्य रोगों का शान्तिविधान

किस ग्रह से जातक परेशान है ?–यह जानने के लिए भविष्यकथन किंवा जन्मपत्र-फलादेश-कथन में इस लेख से विशेष सुविधा मिलेगी। शान्त्यर्थ उपाय भी बहुत लाभप्रद हैं–अनुभव करें।

शार्ङ्गधर-संहिता के अनुसार–

"ताम्र-तारार-नागश्च हेम-बंगौ च तीक्ष्णकम्।
कांस्यकं कान्त-लौहं च धातवो नव ये स्मृताः।।
सूर्यादीनां ग्रहाणामेते कथिता नामभिः क्रमात्।।"

तांबा, चांदी, पीतल, सीसा, सोना, बंग, लौह, कांसी, कान्तलौह–ये नौ ग्रहों की धातुएं क्रम से अंकित हैं।

ताम्र का सूर्य से, रजत का चन्द्र से, पीतल या तांबा का मंगल से, सीसे का बुध से, सोने का बृहस्पति से, बंग का शुक्र से, लोहे का शनि, कांसे का राहु एवं अयस्कान्त का केतु से सम्बन्ध है।

ग्रहों की प्रतिकूलता किंवा नेष्टफलप्रदस्थिति में किन परेशानियों (रोगों) का सामना करना पड़ता है, यह इस लेख में स्पष्ट किया गया है। ग्रह-प्रतिकूलता की स्थिति में क्या करना चाहिए–यह भी निर्देश किया गया है।

सूर्य–यदि ग्रहाधिपति सूर्य जन्माङ्ग या गोचर में अनुकूल न हो, तो जातक को पित्तज्वर-प्लीहा, सुजाक, गर्मी, अतिसार, सूखा रोग, यकृत् विकार, सिर व नेत्रपीड़ा, प्रमेह, आन्त्रशूल, हृदयरोग, निसूचिका एवं दाहक ज्वर, विषज-व्याधियां एवं हिक्का (हिचकी) आदि कष्टों का सामना करना पड़ता है।

उपाय–सूर्य नेष्टफलप्रद हो तो जातक को माणक नग 5/7 रत्ती इतवार वाले दिन सोने की अंगूठी में धारण करना चाहिए। इतवार के 11 व्रत (बिना नमक खाए) एवं इतवार को अन्नदान करना चाहिए एवं विद्वान् पण्डित से **'आदित्य-हृदय'** स्तोत्र का पाठ करायें।

चन्द्र–चन्द्रमा जन्माङ्ग या गोचर में नीच या क्रूर ग्रहों की सन्निधि में हो तो जातक शीत-प्रकोप, मोतीझारा, कफ-विकार, कुत्ता-खांसी, सूखी-खांसी, दमा, अन्य श्वास रोग, निमोनिया, मधुमेह, जलघात, जलगण्ड, गण्डमाला, वमन, क्षयरोग (T.B.), कफशूल, जलोदर, आमदोष, आमातिसार आदि रोगों से कष्ट होता है।

उपाय–सोमवार वाले दिन सफेद मोती 8 रत्ती चांदी की अंगूठी में गंगाजल-दूध से धोकर धारण करें। या सोमवार को चान्द्र की होरा में चांदी की अंगूठी धारण करें। **चन्द्रमन्त्र का जाप** अवश्य करावें।

मंगल–भौम नीच व पाप ग्रहों के प्रभाव में हो तो कुष्ठ रोग, रक्तविकार, दाद आदि चर्मरोग, खाज, खुजली, मस्सा, छाजन, स्त्रियों को रक्त किंवा श्वेत प्रदर, अग्निकाण्ड से हानि, अचानक दुर्घटना से कष्ट, रक्त-पित्तविकार, भगन्दर, नासूर, प्रमेह, अस्थिविकार व हड्डियों की विकृति, बवासीर किंवा रक्तातिसार आदि रोग होते हैं।

उपाय–मंगल ग्रह-शान्त्यर्थ मूंगा नग 4 से 8 रत्ती पीतल की अंगूठी में मंगलवार को धारण करें। विद्वान् पण्डित जी से **भौम ग्रह-शान्ति-पाठ** कराएं एवं गुड़ आदि गाय को 11 मंगलवार तक खिलाएं।

बुध–बुध-ग्रह नेष्टफलप्रद हो तो मानसिक विकार, शीतप्रकोप, हृद्रोग, पागलपन, मिर्गी (अपस्मार), जलोदर, पेशाबसम्बन्धित परेशानी, वायुविकार, जिह्वारोग, वमन, कफरोग व सन्निपात आदि से परेशानी संभव है।

उपाय–बुधवार को पन्ना नग 3/6 रत्ती सोने या सीसे की अंगूठी में विधिपूर्वक धारण करें। किसी विद्वान् से बुधमन्त्र-जाप करायें एवं हरा घास प्रत्येक बुधवार को गायों को डालें।

गुरु–देवगुरु बृहस्पति नेष्टस्थिति में हो तो गठिया, वायुरोग, उदरविकार, अनावश्यक चर्बी-वृद्धि (मोटापा), आन्त्ररोग, राजयक्ष्मा, श्वास, कास, हृदयरोग, पीलिया, वायुरोग, आमवात-रोग आदि से व्यक्ति परेशान रहता है।

उपाय–सोने की अंगूठी में पीला पुखराज 3 से 5 रत्ती वीरवार के विधिवत् धारण करें। पीले फल किंवा पीले चावल दान करें। गुरु का मन्त्रजाप करना विशेष फलप्रद रहेगा।

शुक्र–दैत्याचार्य शुक्र के नेष्टफलप्रद होने से हृदयगति-अवरोध, नेत्रकष्ट, वीर्य(शुक्राणु)दोष, प्रदर, पौरुष-निर्बलता, कुण्ठितबुद्धि, मानसिक परेशानियां, कफ-श्वास-दमा-गुदारोग, प्रमेहादि गुप्त रोग, सुजाक, शोथ, वीर्यक्षय, गुल्म, गर्भाशय-शूलादि रोगों से जातक परेशान रहता है।

उपाय–शुक्रदोष-शान्त्यर्थ हीरा या बंग 3 से 5 रत्ती की अंगूठी शुक्रवार को विधिपूर्वक धारण करें। दूध, अन्न किंवा श्वेत-वस्तु का दान एवं शुक्र-मन्त्रजाप अवश्य करावें।

शनि–शनि लम्बी अवधि तक परेशान करता है। यदि शनि ग्रह मंगल या सूर्य के साथ मेल करे तो विशेष सावधान रहें। शनिनेष्टफलप्रद हो तो गठिया व अन्य पैरालाईसिस, उदरविकार, ऑपरेशन, कैंसर, विषबाधा, सर्पदंश, राजयक्ष्मा, जलोदर, मूर्छा, स्नायु-विकार, प्लीहोदर, कृमिरोग, हाथ-सिर आदि का काँपना आदि से जातक कष्ट पाता है।

उपाय–शनिवार को तेल में मुँह देखकर दान करें। **काले घोड़े के दाएं पावं की नाल की अंगूठी शनिवार को मध्यमा अंगुली में धारण करें या नीलम नग 3/5 रत्ती सोना में शनिवार को पहनें।** शनि का मन्त्रजाप अवश्य कराएं।

राहु–राहु का मेल शनि-मंगल के साथ विशेष कष्टप्रद होता है। ऐसी स्थिति में जातक को मृगी (अपस्मार), अस्थिरोग, T.B., कुष्ठरोग, कैंसर, गठिया, रीढ़ की हड्डी व उदरविकार, कफ़रोग, त्वचारोग, हैजा आदि से परेशानी होती है।

उपाय–इस कष्ट में कांसे की अंगूठी बुधवार सायंकाल में या शनिवार को दिन में धारण करें। राहुग्रह-शान्त्यर्थ मन्त्रजाप कराना न भूलें।

केतु–केतुग्रह की विषमता के कारण रक्त-पित्तविकार, पित्तरोग, पाण्डुरोग, प्रसवपीड़ा में परेशानी, निमोनिया, श्वासरोग, कफ़, खांसी, मुखरोग, बवासीर आदि रोगों से परेशानी होती है।

उपाय–शनिवार एवं बुधवार को सायंकाल तेलदान करें एवं केतु-मन्त्रजाप कराएं अयस्कान्त या लौहनिर्मित अंगूठी शनिवार को दूध से धोकर मध्यमा अंगुली में धारण करें।

विशेष विचारार्थ प्रत्यक्ष दर्शन दें।

भारत में लग्नों का प्रारम्भकाल

एक ही समय ग्रहों के भोगांश स्थानभेद से बदलते नहीं हैं। वे भूगोल पर सर्वत्र एक-से ही रहते हैं, लेकिन लग्न स्थानभेद से प्रतिक्षण बदलता रहता है। अतः दैवज्ञ के लिए किसी स्थान पर अभीष्ट समय में लग्न जानना एक समस्या है। इस समस्या के समाधान के लिए मेरी एक पुस्तक 'भारतीय लग्ननिर्णय' है,* जो भारतीय दैवज्ञों की इस समस्या का अत्यन्त सरलता से त्वरित समाधान करती है। यहां उसी पुस्तक के दो 'कोष्ठक' आगे दिए जा रहे हैं, जिनके आधार पर भारत के प्रसिद्ध लगभग 225 नगरों में अभीष्ट लग्न का प्रारम्भकाल दो मिनट से भी कम समय में दैवज्ञ मात्र दो साधारण जोड़-घटाव द्वारा ही निम्न प्रकार से तुरन्त ज्ञात कर सकता है-

कोष्ठक (1) [लग्नसाधन-कोष्ठक (1)] से अभीष्ट तारीख के आगे लिखे अपने अभीष्ट लग्न के घं. मि. लेकर उनमें **कोष्ठक (2)** से अपने नगर के आगे अभीष्ट लग्न के नीचे लिखे मिनटों को चिह्नानुसार जोड़ने या घटाने पर आपके अभीष्ट नगर में अभीष्ट तारीख को अभीष्ट लग्न का प्रारम्भकाल (भा. स्टैं. टा.) ज्ञात हो जाएगा। यहां यह ध्यान रखें- यदि **कोष्ठक (1)** से प्राप्त घं. मि. में **कोष्ठक (2)** से प्राप्त धन (+) मिनट जोड़ने पर घण्टे 24 या 24 से अधिक हो जाएं तो उनमें से 24 घण्टा घटा दें। इसी तरह यदि कोष्ठक (1) से प्राप्त घं. मि. **कोष्ठक (2)** से प्राप्त ऋण (−) मिनट से कम हों तो उनमें 24 घं. जोड़कर घटाव करना चाहिए। **स्पष्टता के लिए नीचे दिए गए उदाहरण देखिए-**

उदाहरण (i) − 11 अक्तूबर, 1986 ई. को मुम्बई में धनु लग्न का प्रारम्भकाल ऐसे ज्ञात किया जाएगा-

घं.	मि.	
10	14	[कोष्ठक (1), 11 अक्तू., धनु लग्न]
+	72	[कोष्ठक (2), मुम्बई; धनु लग्न]
11	**26**	**[11 अक्तूबर, 1986 को मुम्बई में धनुलग्न का प्रारम्भकाल (भा. स्टैं. टा.)]**

ध्यान दें − यदि लीप इयर हो तो केवल फरवरी के बाद के महीनों (मार्च से दिसम्बर तक के महीनों) की तारीखों में एक जोड़कर कोष्ठक (1) को प्रयोग में लाना चाहिए। **इसके लिए यह उदाहरण देखिए −**

उदाहरण (ii) − 11 सितम्बर, 1980 ई. को अहमदाबाद (गुजरात) में तुलालग्न का प्रारम्भकाल (भा. स्टैं. टा.) इस प्रकार ज्ञात किया जाएगा −

घं.	मि.	
8	04	[कोष्ठक (1), 12 (= 11 + 1) सितं.; तुलालग्न]
	+55	[कोष्ठक (2), अहमदाबाद; तुलालग्न]
8	**59**	**[11 सितंबर, 1980 को अहमदाबाद में तुलालग्न का प्रारम्भकाल(भा. स्टैं. टा.)]**

ध्यान रहे − लीपइयर में जनवरी और फरवरी मासों की तारीखों में कोष्ठक (1) के प्रयोग के लिए एक नहीं जोड़ना चाहिए। इससे सम्बद्ध यह उदाहरण देखिए −

उदाहरण (iii) − 10 फरवरी, 1980 ई. को अहमदाबाद में तुलालग्न का प्रारम्भकाल (भा. स्टैं. टा.) ऐसे मालूम कीजिए −

घं.	मि.	
22	05	[कोष्ठक (1), 10 फरवरी, तुलालग्न]
	+55	[कोष्ठक (2), अहमदाबाद, तुलालग्न]
23	**00**	**[10 फरवरी, 1980 ई. को अहमदाबाद में तुलालग्न का प्रारम्भकाल(भा. स्टैं. टा.)]**

* इस पुस्तक का विज्ञापन पृष्ठ 188 पर देखिए।

यह भी ध्यान में रखिए– कोष्ठक (1) में दिए गए घं. मि. लग्नों का 'अस्पष्ट प्रारम्भकाल' है। अस्पष्ट प्रारम्भकाल के इन घं. मि. में कोष्ठक (2) से प्राप्त मिनटों का जोड़ – घटाव कर देने पर जो लग्न का प्रारम्भकाल (भा. स्टैं. टा.) प्राप्त होता है, वह लग्न का '**स्पष्ट प्रारम्भकाल**' है। यदि लग्न का 'अस्पष्ट प्रारम्भकाल' [कोष्ठक (1) से प्राप्त काल] अर्धरात्रि से पहले का (यानी P.M.) और लग्न का स्पष्ट प्रारम्भकाल अर्धरात्रि के बाद का (यानी A.M.) हो तो लग्न के स्पष्ट प्रारम्भकाल में 4 मि. जोड़कर, उसे लग्न का वास्तविक स्पष्टकाल समझना चाहिए। इसी प्रकार यदि लग्न का अस्पष्ट प्रारम्भकाल अर्धरात्रि के बाद का (यानी A.M.) और स्पष्ट प्रारम्भकाल अर्धरात्रि से पहले का (यानी P.M.) हो तो स्पष्ट प्रारम्भकाल में से 4 मि. घटाकर उसे लग्न का वास्तविक प्रारम्भकाल समझना चाहिए। इस तरह के दो उदाहरण नीचे **दिए जा रहे हैं** –

उदाहरण (i) – 24 मार्च, 1965 ई. को अमृतसर में धनुलग्न का प्रारम्भकाल इस प्रकार जाना जाएगा–

घं.	मि.	
23	23	[कोष्ठक (1), 24 मार्च; धनुलग्न का अस्पष्ट प्रारम्भकाल]
+	92	[कोष्ठक (2), अमृतसर; धनुलग्न]
00	55	[धनुलग्न का स्पष्ट प्रारम्भकाल (भा. स्टैं. टा.)]
	+ 4	
00	**59**	**[24 मार्च,1965 ई. को अमृतसर में धनुलग्न का वास्तविक प्रारम्भकाल (भा. स्टैं. टा.)]**

क्योंकि, यहां कोष्ठक (1) से प्राप्त धनुलग्न का अस्पष्ट प्रारम्भकाल (23 घं. 23 मि.) अर्धरात्रि से पहले का (P.M.) और स्पष्ट प्रारम्भकाल (00 घं. 55 मि.) अर्धरात्रि से बाद का (A.M.) है, अतः पूर्वोक्त निर्देशानुसार इस स्पष्ट प्रारम्भकाल (00 घं. 55 मि.) में 4 मिनट जोड़कर प्राप्त काल 00 घं. 59 मि. को धनुलग्न का वास्तविक प्रारम्भकाल (भा. स्टैं. टा.) माना गया है।

अब इसके साथ वाला दूसरा उदाहरण भी लेते हैं –

उदाहरण (ii) – 2 नवम्बर, 1984 ई. को गुवाहाटी (आसाम) में सिंहलग्न का प्रारम्भकाल हम इसप्रकार ज्ञात करेंगे–

घं.	मि.	
0	56	[कोष्ठक (1), 3 (= 2 + 1) नवंबर, सिंहलग्न का अस्पष्ट प्रारम्भकाल]
–	64	[कोष्ठक (2), गुवाहाटी, सिंहलग्न]
23	52	[सिंहलग्न का स्पष्ट प्रारम्भकाल (भा. स्टैं. टा.)]
	– 4	
23	**48**	**[2 नवम्बर, 1984 को गुवाहाटी में सिंहलग्न का वास्तविक प्रारम्भकाल(भा. स्टैं. टा.)]**

यहां अस्पष्ट प्रारम्भकाल A.M. और स्पष्ट प्रारम्भकाल P.M. है, अतः पूर्वोक्त निर्देशानुसार लग्न के स्पष्ट प्रारम्भकाल में से 4 मिनट घटाकर, उसे ही सिंहलग्न का वास्तविक प्रारम्भकाल माना गया है।

इन कोष्ठकों से जाना गया लग्नारम्भकाल चित्रापक्षीय निरयणानुसारी होगा–यह भी जान लेना चाहिए।

लग्नसाधन कोष्ठक (1)

(लीप इयर हो तो केवल फरवरी के बाद के महीनों में अभीष्ट तारीख में एक जोड़कर इस कोष्ठक का प्रयोग करें।)

(भाग 1)

तारीख	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
जन. 1	-- --	-- --	-- --	-- --	-- --	-- --	00 46	02 43	04 50	07 00	09 01	10 54
1/2	12 44	14 41	16 48	18 58	20 59	22 52	00 42	02 39	04 46	06 56	08 57	10 50
2/3	12 40	14 37	16 44	18 54	20 55	22 48	00 38	02 35	04 42	06 52	08 53	10 46
3/4	12 36	14 33	16 40	18 50	20 51	22 44	00 34	02 31	04 38	06 48	08 49	10 42
4/5	12 32	14 29	16 36	18 46	20 47	22 40	00 30	02 27	04 34	06 44	08 45	10 38
5/6	12 28	14 25	16 32	18 42	20 43	22 36	00 26	02 23	04 30	06 40	08 41	10 34
6/7	12 24	14 21	16 28	18 38	20 39	22 32	00 22	02 19	04 26	06 36	08 37	10 30
7/8	12 20	14 17	16 24	18 34	20 35	22 28	00 18	02 15	04 22	06 32	08 33	10 26
8/9	12 16	14 13	16 20	18 30	20 31	22 24	00 14	02 11	04 18	06 28	08 29	10 22
9/10	12 12	14 09	16 16	18 26	20 27	22 20	00 10	02 07	04 14	06 24	08 25	10 18
10/11	12 09	14 06	16 13	18 23	20 24	22 17	00 07	02 04	04 11	06 21	08 22	10 15
11/12	12 05	14 02	16 09	18 19	20 20	22 13	00 03	02 00	04 07	06 17	08 18	10 11
12/13	12 01	13 58	16 05	18 15	20 16	22 09	23 59	01 56	04 03	06 13	08 14	10 07
13/14	11 57	13 54	16 01	18 11	20 12	22 05	23 55	01 52	03 59	06 09	08 10	10 03
14/15	11 53	13 50	15 57	18 07	20 08	22 01	23 51	01 48	03 55	06 05	08 06	09 59
15/16	11 49	13 46	15 53	18 03	20 04	21 57	23 47	01 44	03 51	06 01	08 02	09 55
16/17	11 45	13 42	15 49	17 59	20 00	21 53	23 43	01 40	03 47	05 57	07 58	09 51
17/18	11 41	13 38	15 45	17 55	19 56	21 49	23 39	01 36	03 43	05 53	07 54	09 47
18/19	11 37	13 34	15 41	17 51	19 52	21 45	23 35	01 32	03 39	05 49	07 50	09 43
19/20	11 33	13 30	15 37	17 47	19 48	21 41	23 31	01 28	03 35	05 45	07 46	09 39
20/21	11 29	13 26	15 33	17 43	19 44	21 37	23 27	01 24	03 31	05 41	07 42	09 35
21/22	11 25	13 22	15 29	17 39	19 40	21 33	23 23	01 20	03 27	05 37	07 38	09 31
22/23	11 21	13 18	15 25	17 35	19 36	21 29	23 19	01 16	03 23	05 33	07 34	09 27
23/24	11 17	13 14	15 21	17 31	19 32	21 25	23 15	01 12	03 19	05 29	07 30	09 23
24/25	11 13	13 10	15 17	17 27	19 28	21 21	23 11	01 08	03 15	05 25	07 26	09 19
25/26	11 09	13 06	15 13	17 23	19 24	21 17	23 07	01 04	03 11	05 21	07 22	09 15
26/27	11 06	13 03	15 10	17 20	19 21	21 14	23 04	01 01	03 08	05 18	07 19	09 12
27/28	11 02	12 59	15 06	17 16	19 17	21 10	23 00	00 57	03 04	05 14	07 15	09 08
28/29	10 58	12 55	15 02	17 12	19 13	21 06	22 56	00 53	03 00	05 10	07 11	09 04
29/30	10 54	12 51	14 58	17 08	19 09	21 02	22 52	00 49	02 56	05 06	07 07	09 00
30/31	10 50	12 47	14 54	17 04	19 05	20 58	22 48	00 45	02 52	05 02	07 03	08 56
31	10 46	12 43	14 50	17 00	19 01	20 54	22 44	-- --	-- --	-- --	-- --	-- --
फर. 1	-- --	-- --	-- --	-- --	-- --	-- --	-- --	00 41	02 48	04 58	06 59	08 52
1/2	10 42	12 39	14 46	16 56	18 57	20 50	22 40	00 37	02 44	04 54	06 55	08 48
2/3	10 38	12 35	14 42	16 52	18 53	20 46	22 36	00 33	02 40	04 50	06 51	08 44
3/4	10 34	12 31	14 38	16 48	18 49	20 42	22 32	00 29	02 36	04 46	06 47	08 40
4/5	10 30	12 27	14 34	16 44	18 45	20 38	22 28	00 25	02 32	04 42	06 43	08 36
5/6	10 26	12 23	14 30	16 40	18 41	20 34	22 24	00 21	02 28	04 38	06 39	08 32
6/7	10 22	12 19	14 26	16 36	18 37	20 30	22 20	00 17	02 24	04 34	06 35	08 28
7/8	10 18	12 15	14 22	16 32	18 33	20 26	22 16	00 13	02 20	04 30	06 31	08 24
8/9	10 14	12 11	14 18	16 28	18 29	20 22	22 12	00 09	02 16	04 26	06 27	08 20
9/10	10 10	12 07	14 14	16 24	18 25	20 18	22 08	00 05	02 12	04 22	06 23	08 16
10/11	10 07	12 04	14 11	16 21	18 22	20 15	22 05	00 02	02 09	04 19	06 20	08 13
11/12	10 03	12 00	14 07	16 17	18 18	20 11	22 01	23 58	02 05	04 15	06 16	08 09
12/13	09 59	11 56	14 03	16 13	18 14	20 07	21 57	23 54	02 01	04 11	06 12	08 05
13/14	09 55	11 52	13 59	16 09	18 10	20 03	21 53	23 50	01 57	04 07	06 08	08 01
14/15	09 51	11 48	13 55	16 05	18 06	19 59	21 49	23 46	01 53	04 03	06 04	07 57
15/16	09 47	11 44	13 51	16 01	18 02	19 55	21 45	23 42	01 49	03 59	06 00	07 53
16/17	09 43	11 40	13 47	15 57	17 58	19 51	21 41	23 38	01 45	03 55	05 56	07 49
17/18	09 39	11 36	13 43	15 53	17 54	19 47	21 37	23 34	01 41	03 51	05 52	07 45
18/19	09 35	11 32	13 39	15 49	17 50	19 43	21 33	23 30	01 37	03 47	05 48	07 41
19/20	09 31	11 28	13 35	15 45	17 46	19 39	21 29	23 26	01 33	03 43	05 44	07 37
20/21	09 27	11 24	13 31	15 41	17 42	19 35	21 25	23 22	01 29	03 39	05 40	07 33
21/22	09 23	11 20	13 27	15 37	17 38	19 31	21 21	23 18	01 25	03 35	05 36	07 29
22/23	09 19	11 16	13 23	15 33	17 34	19 27	21 17	23 14	01 21	03 31	05 32	07 25
23/24	09 15	11 12	13 19	15 29	17 30	19 23	21 13	23 10	01 17	03 27	05 28	07 21
24/25	09 11	11 08	13 15	15 25	17 26	19 19	21 09	23 06	01 13	03 23	05 24	07 17
25/26	09 07	11 04	13 11	15 21	17 22	19 15	21 05	23 02	01 09	03 19	05 20	07 13
26/27	09 03	11 00	13 07	15 17	17 18	19 11	21 01	22 58	01 05	03 15	05 16	07 09
27/28	09 00	10 57	13 04	15 14	17 15	19 08	20 58	22 55	01 02	03 12	05 13	07 06
28/29	08 56	10 53	13 00	15 10	17 11	19 04	20 54	22 51	00 58	03 08	05 09	07 02
29	08 52	10 49	12 56	15 06	17 07	19 00	20 50	22 47	-- --	-- --	-- --	-- --

लग्नसाधन कोष्ठक (1)

(लीप इयर हो तो केवल फरवरी के बाद के महीनों में अभीष्ट तारीख में एक जोड़कर इस कोष्ठक का प्रयोग करें।)

तारीख	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
मार्च 1	-- --	-- --	-- --	-- --	--- ---	-- --	-- --	-- --	00 58	03 08	05 09	07 02
1/2	08 52	10 49	12 56	15 06	17 07	19 00	20 50	22 47	00 54	03 04	05 05	06 58
2/3	08 48	10 45	12 52	15 02	17 03	18 56	20 46	22 43	00 50	03 00	05 01	06 54
3/4	08 44	10 41	12 48	14 58	16 59	18 52	20 42	22 39	00 46	02 56	04 57	06 50
4/5	08 40	10 37	12 44	14 54	16 55	18 48	20 38	22 35	00 42	02 52	04 53	06 46
5/6	08 36	10 33	12 40	14 50	16 51	18 44	20 34	22 31	00 38	02 48	04 49	06 42
6/7	08 32	10 29	12 36	14 46	16 47	18 40	20 30	22 27	00 34	02 44	04 45	06 38
7/8	08 28	10 25	12 32	14 42	16 43	18 36	20 26	22 23	00 30	02 40	04 41	06 34
8/9	08 24	10 21	12 28	14 38	16 39	18 32	20 22	22 19	00 26	02 36	04 37	06 30
9/10	08 20	10 17	12 24	14 34	16 35	18 28	20 18	22 15	00 22	02 32	04 33	06 26
10/11	08 17	10 14	12 21	14 31	16 32	18 25	20 15	22 12	00 19	02 29	04 30	06 23
11/12	08 13	10 10	12 17	14 27	16 28	18 21	20 11	22 08	00 15	02 25	04 26	06 19
12/13	08 09	10 06	12 13	14 23	16 24	18 17	20 07	22 04	00 11	02 21	04 22	06 15
13/14	08 05	10 02	12 09	14 19	16 20	18 13	20 03	22 00	00 07	02 17	04 18	06 11
14/15	08 01	09 58	12 05	14 15	16 16	18 09	19 59	21 56	00 03	02 13	04 14	06 07
15/16	07 57	09 54	12 01	14 11	16 12	18 05	19 55	21 52	23 59	02 09	04 10	06 03
16/17	07 53	09 50	11 57	14 07	16 08	18 01	19 51	21 48	23 55	02 05	04 06	05 59
17/18	07 49	09 46	11 53	14 03	16 04	17 57	19 47	21 44	23 51	02 01	04 02	05 55
18/19	07 45	09 42	11 49	13 59	16 00	17 53	19 43	21 40	23 47	01 57	03 58	05 51
19/20	07 41	09 38	11 45	13 55	15 56	17 49	19 39	21 36	23 43	01 53	03 54	05 47
20/21	07 37	09 34	11 41	13 51	15 52	17 45	19 35	21 32	23 39	01 49	03 50	05 43
21/22	07 33	09 30	11 37	13 47	15 48	17 41	19 31	21 28	23 35	01 45	03 46	05 39
22/23	07 29	09 26	11 33	13 43	15 44	17 37	19 27	21 24	23 31	01 41	03 42	05 35
23/24	07 25	09 22	11 29	13 39	15 40	17 33	19 23	21 20	23 27	01 37	03 38	05 31
24/25	07 21	09 18	11 25	13 35	15 36	17 29	19 19	21 16	23 23	01 33	03 34	05 27
25/26	07 17	09 14	11 21	13 31	15 32	17 25	19 15	21 12	23 19	01 29	03 30	05 23
26/27	07 13	09 10	11 17	13 27	15 28	17 21	19 11	21 08	23 15	01 25	03 26	05 19
27/28	07 10	09 07	11 14	13 24	15 25	17 18	19 08	21 05	23 12	01 22	03 23	05 16
28/29	07 06	09 03	11 10	13 20	15 21	17 14	19 04	21 01	23 08	01 18	03 19	05 12
29/30	07 02	08 59	11 06	13 16	15 17	17 10	19 00	20 57	23 04	01 14	03 15	05 08
30/31	06 58	08 55	11 02	13 12	15 13	17 06	18 56	20 53	23 00	01 10	03 11	05 04
31	06 54	08 51	10 58	13 08	15 09	17 02	18 52	20 49	22 56	— —	— —	- -
अप्रैल 1	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	01 06	03 07	05 00
1/2	06 50	08 47	10 54	13 04	15 05	16 58	18 48	20 46	22 52	01 02	03 03	04 56
2/3	06 46	08 43	10 50	13 00	15 01	16 54	18 44	20 42	22 48	00 58	02 59	04 52
3/4	06 42	08 39	10 46	12 56	14 57	16 50	18 40	20 38	22 44	00 54	02 55	04 48
4/5	06 38	08 35	10 42	12 52	14 53	16 46	18 36	20 34	22 40	00 50	02 51	04 44
5/6	06 34	08 31	10 38	12 48	14 49	16 42	18 32	20 30	22 36	00 46	02 47	04 40
6/7	06 30	08 27	10 34	12 44	14 45	16 38	18 28	20 26	22 32	00 42	02 43	04 36
7/8	06 26	08 23	10 30	12 40	14 41	16 34	18 24	20 22	22 28	00 38	02 39	04 32
8/9	06 22	08 19	10 26	12 36	14 37	16 30	18 20	20 18	22 24	00 34	02 35	04 28
9/10	06 18	08 15	10 22	12 32	14 33	16 26	18 16	20 14	22 20	00 30	02 31	04 24
10/11	06 15	08 12	10 19	12 29	14 30	16 23	18 13	20 11	22 17	00 27	02 28	04 21
11/12	06 11	08 08	10 15	12 25	14 26	16 19	18 09	20 07	22 13	00 23	02 24	04 17
12/13	06 07	08 04	10 11	12 21	14 22	16 15	18 05	20 03	22 09	00 19	02 20	04 13
13/14	06 03	08 00	10 07	12 17	14 18	16 11	18 01	19 59	22 05	00 15	02 16	04 09
14/15	05 59	07 56	10 03	12 13	14 14	16 07	17 57	19 55	22 01	00 11	02 12	04 05
15/16	05 55	07 52	09 59	12 09	14 10	16 03	17 53	19 51	21 57	00 07	02 08	04 01
16/17	05 51	07 48	09 55	12 05	14 06	15 59	17 49	19 47	21 53	00 03	02 04	03 57
17/18	05 47	07 44	09 51	12 01	14 02	15 55	17 45	19 43	21 49	23 59	02 00	03 53
18/19	05 43	07 40	09 47	11 57	13 58	15 51	17 41	19 39	21 45	23 55	01 56	03 49
19/20	05 39	07 36	09 43	11 53	13 54	15 47	17 37	19 35	21 41	23 51	01 52	03 45
20/21	05 35	07 32	09 39	11 49	13 50	15 43	17 33	19 31	21 37	23 47	01 48	03 41
21/22	05 31	07 28	09 35	11 45	13 46	15 39	17 29	19 27	21 33	23 43	01 44	03 37
22/23	05 27	07 24	09 31	11 41	13 42	15 35	17 25	19 23	21 29	23 39	01 40	03 33
23/24	05 23	07 20	09 27	11 37	13 38	15 31	17 21	19 19	21 25	23 35	01 36	03 29
24/25	05 19	07 16	09 23	11 33	13 34	15 27	17 17	19 15	21 21	23 31	01 32	03 25
25/26	05 15	07 12	09 19	11 29	13 30	15 23	17 13	19 11	21 17	23 27	01 28	03 21
26/27	05 11	07 08	09 15	11 25	13 26	15 19	17 09	19 07	21 13	23 23	01 24	03 17
27/28	05 08	07 05	09 12	11 22	13 23	15 16	17 06	19 04	21 10	23 20	01 21	03 14
28/29	05 04	07 01	09 08	11 18	13 19	15 12	17 02	19 00	21 06	23 16	01 17	03 10
29/30	05 00	06 57	09 04	11 14	13 15	15 08	16 58	18 56	21 02	23 12	01 13	03 06
30	04 56	06 53	09 00	11 10	13 11	15 04	16 54	18 52	20 58	23 08	— —	- -

लग्नसाधन कोष्ठक (1)

(लीप इयर हो तो केवल फरवरी के बाद के महीनों में अभीष्ट तारीख में एक जोड़कर इस कोष्ठक का प्रयोग करें।)

तारीख	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
मई 1	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	01 09	03 02
1/2	04 52	06 50	08 56	11 06	13 07	15 00	16 50	18 48	20 55	23 04	01 05	02 58
2/3	04 48	06 46	08 52	11 02	13 03	14 56	16 46	18 44	20 51	23 00	01 01	02 54
3/4	04 44	06 42	08 48	10 58	12 59	14 52	16 42	18 40	20 47	22 56	00 57	02 50
4/5	04 40	06 38	08 44	10 54	12 55	14 48	16 38	18 36	20 43	22 52	00 53	02 46
5/6	04 36	06 34	08 40	10 50	12 51	14 44	16 34	18 32	20 39	22 48	00 49	02 42
6/7	04 32	06 30	08 36	10 46	12 47	14 40	16 30	18 28	20 35	22 44	00 45	02 38
7/8	04 28	06 26	08 32	10 42	12 43	14 36	16 26	18 24	20 31	22 40	00 41	02 34
8/9	04 24	06 22	08 28	10 38	12 39	14 32	16 22	18 20	20 27	22 36	00 37	02 30
9/10	04 20	06 18	08 24	10 34	12 35	14 28	16 18	18 16	20 23	22 32	00 33	02 26
10/11	04 17	06 15	08 21	10 31	12 32	14 25	16 15	18 13	20 20	22 29	00 30	02 23
11/12	04 13	06 11	08 17	10 27	12 28	14 21	16 11	18 09	20 16	22 25	00 26	02 19
12/13	04 09	06 07	08 13	10 23	12 24	14 17	16 07	18 05	20 12	22 21	00 22	02 15
13/14	04 05	06 03	08 09	10 19	12 20	14 13	16 03	18 01	20 08	22 17	00 18	02 11
14/15	04 01	05 59	08 05	10 15	12 16	14 09	15 59	17 57	20 04	22 13	00 14	02 07
15/16	03 57	05 55	08 01	10 11	12 12	14 05	15 55	17 53	20 00	22 09	00 10	02 03
16/17	03 53	05 51	07 57	10 07	12 08	14 01	15 51	17 49	19 56	22 05	00 06	01 59
17/18	03 49	05 47	07 53	10 03	12 04	13 57	15 47	17 45	19 52	22 01	00 02	01 55
18/19	03 45	05 43	07 49	09 59	12 00	13 53	15 43	17 41	19 48	21 57	23 58	01 51
19/20	03 41	05 39	07 45	09 55	11 56	13 49	15 39	17 37	19 44	21 53	23 54	01 47
20/21	03 37	05 35	07 41	09 51	11 52	13 45	15 35	17 33	19 40	21 49	23 50	01 43
21/22	03 33	05 31	07 37	09 47	11 48	13 41	15 31	17 29	19 36	21 45	23 46	01 39
22/23	03 29	05 27	07 33	09 43	11 44	13 37	15 27	17 25	19 32	21 41	23 42	01 35
23/24	03 25	05 23	07 29	09 39	11 40	13 33	15 23	17 21	19 28	21 37	23 38	01 31
24/25	03 21	05 19	07 25	09 35	11 36	13 29	15 19	17 17	19 24	21 33	23 34	01 27
25/26	03 17	05 15	07 21	09 31	11 32	13 25	15 15	17 13	19 20	21 29	23 30	01 23
26/27	03 13	05 11	07 17	09 27	11 28	13 21	15 11	17 09	19 16	21 25	23 26	01 19
27/28	03 10	05 08	07 14	09 24	11 25	13 18	15 08	17 06	19 13	21 22	23 23	01 16
28/29	03 06	05 04	07 10	09 20	11 21	13 14	15 04	17 02	19 09	21 18	23 19	01 12
29/30	03 02	05 00	07 06	09 16	11 17	13 10	15 00	16 58	19 05	21 14	23 15	01 08
30/31	02 58	04 56	07 02	09 12	11 13	13 06	14 56	16 54	19 01	21 10	23 11	01 04
31	02 54	04 52	06 58	09 08	11 09	13 02	14 52	16 50	18 57	21 06	23 07	— —
जून 1	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	01 00
1/2	02 50	04 48	06 55	09 04	11 05	12 58	14 48	16 46	18 53	21 02	23 03	00 56
2/3	02 46	04 44	06 51	09 00	11 01	12 54	14 44	16 42	18 49	20 58	22 59	00 52
3/4	02 42	04 40	06 47	08 56	10 57	12 50	14 40	16 38	18 45	20 54	22 55	00 48
4/5	02 38	04 36	06 43	08 52	10 53	12 46	14 36	16 34	18 41	20 50	22 51	00 44
5/6	02 34	04 32	06 39	08 48	10 49	12 42	14 32	16 30	18 37	20 46	22 47	00 40
6/7	02 30	04 28	06 35	08 44	10 45	12 38	14 28	16 26	18 33	20 42	22 43	00 36
7/8	02 26	04 24	06 31	08 40	10 41	12 34	14 24	16 22	18 29	20 38	22 39	00 32
8/9	02 22	04 20	06 27	08 36	10 37	12 30	14 20	16 18	18 25	20 34	22 35	00 28
9/10	02 18	04 16	06 23	08 32	10 33	12 26	14 16	16 14	18 21	20 30	22 31	00 24
10/11	02 15	04 13	06 20	08 29	10 30	12 23	14 13	16 11	18 18	20 27	22 28	00 21
11/12	02 11	04 09	06 16	08 25	10 26	12 19	14 09	16 07	18 14	20 23	22 24	00 17
12/13	02 07	04 05	06 12	08 21	10 22	12 15	14 05	16 03	18 10	20 19	22 20	00 13
13/14	02 03	04 01	06 08	08 17	10 18	12 11	14 01	15 59	18 06	20 15	22 16	00 09
14/15	01 59	03 57	06 04	08 13	10 14	12 07	13 57	15 55	18 02	20 11	22 12	00 05
15/16	01 55	03 53	06 00	08 09	10 10	12 03	13 53	15 51	17 58	20 07	22 08	00 01
16	01 51	03 49	05 56	08 05	10 06	11 59	13 49	15 47	17 54	20 03	22 04	23 57
17	01 47	03 45	05 52	08 01	10 02	11 55	13 45	15 43	17 50	19 59	22 00	23 53
18	01 43	03 41	05 48	07 57	09 58	11 51	13 41	15 39	17 46	19 55	21 56	23 49
19	01 39	03 37	05 44	07 53	09 54	11 47	13 37	15 35	17 42	19 51	21 52	23 45
20	01 35	03 33	05 40	07 49	09 50	11 43	13 33	15 31	17 38	19 47	21 48	23 41
21	01 31	03 29	05 36	07 45	09 46	11 39	13 29	15 27	17 34	19 43	21 44	23 37
22	01 27	03 25	05 32	07 41	09 42	11 35	13 25	15 23	17 30	19 39	21 40	23 33
23	01 23	03 21	05 28	07 37	09 38	11 31	13 21	15 19	17 26	19 35	21 36	23 29
24	01 19	03 17	05 24	07 33	09 34	11 27	13 17	15 15	17 22	19 31	21 32	23 25
25	01 15	03 13	05 20	07 29	09 30	11 23	13 13	15 11	17 18	19 27	21 28	23 21
26	01 11	03 09	05 16	07 25	09 26	11 19	13 09	15 07	17 14	19 23	21 24	23 17
27	01 08	03 06	05 13	07 22	09 23	11 16	13 06	15 04	17 11	19 20	21 21	23 14
28	01 04	03 02	05 09	07 18	09 19	11 12	13 02	15 00	17 07	19 16	21 17	23 10
29	01 00	02 58	05 05	07 14	09 15	11 08	12 58	14 56	17 03	19 12	21 13	23 06
30	00 56	02 54	05 01	07 10	09 11	11 04	12 54	14 52	16 59	19 08	21 09	23 02

लग्नसाधन कोष्ठक (1)

(लीप इयर हो तो केवल फरवरी के बाद के महीनों में अभीष्ट तारीख में एक जोड़कर इस कोष्ठक का प्रयोग करें।)

तारीख	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
जुलाई 1	00 52	02 50	04 57	07 06	09 07	11 00	12 51	14 48	16 55	19 04	21 05	22 58
2	00 48	02 46	04 53	07 02	09 03	10 56	12 47	14 44	16 51	19 00	21 01	22 54
3	00 44	02 42	04 49	06 58	08 59	10 52	12 43	14 40	16 47	18 56	20 57	22 50
4	00 40	02 38	04 45	06 54	08 55	10 48	12 39	14 36	16 43	18 52	20 53	22 46
5	00 36	02 34	04 41	06 50	08 51	10 44	12 35	14 32	16 39	18 48	20 49	22 42
6	00 32	02 30	04 37	06 46	08 47	10 40	12 31	14 28	16 35	18 44	20 45	22 38
7	00 28	02 26	04 33	06 42	08 43	10 36	12 27	14 24	16 31	18 40	20 41	22 34
8	00 24	02 22	04 29	06 38	08 39	10 32	12 23	14 20	16 27	18 36	20 37	22 30
9	00 20	02 18	04 25	06 34	08 35	10 28	12 19	14 16	16 23	18 32	20 33	22 26
10	00 17	02 15	04 22	06 31	08 32	10 25	12 16	14 13	16 20	18 29	20 30	22 23
11	00 13	02 11	04 18	06 27	08 28	10 21	12 12	14 09	16 16	18 25	20 26	22 19
12	00 09	02 07	04 14	06 23	08 24	10 17	12 08	14 05	16 12	18 21	20 22	22 15
13	00 05	02 03	04 10	06 19	08 20	10 13	12 04	14 01	16 08	18 17	20 18	22 11
14	00 01	01 59	04 06	06 15	08 16	10 09	12 00	13 57	16 04	18 13	20 14	22 07
14/15	23 57	01 55	04 02	06 11	08 12	10 05	11 56	13 53	16 00	18 09	20 10	22 03
15/16	23 53	01 51	03 58	06 07	08 08	10 01	11 52	13 49	15 56	18 05	20 06	21 59
16/17	23 49	01 47	03 54	06 03	08 04	09 57	11 48	13 45	15 52	18 01	20 02	21 55
17/18	23 45	01 43	03 50	05 59	08 00	09 53	11 44	13 41	15 48	17 57	19 58	21 51
18/19	23 41	01 39	03 46	05 55	07 56	09 49	11 40	13 37	15 44	17 53	19 54	21 47
19/20	23 37	01 35	03 42	05 51	07 52	09 45	11 36	13 33	15 40	17 49	19 50	21 43
20/21	23 33	01 31	03 38	05 47	07 48	09 41	11 32	13 29	15 36	17 45	19 46	21 39
21/22	23 29	01 27	03 34	05 43	07 44	09 37	11 28	13 25	15 32	17 41	19 42	21 35
22/23	23 25	01 23	03 30	05 39	07 40	09 33	11 24	13 21	15 28	17 37	19 38	21 31
23/24	23 21	01 19	03 26	05 35	07 36	09 29	11 20	13 17	15 24	17 33	19 34	21 27
24/25	23 17	01 15	03 22	05 31	07 32	09 25	11 16	13 13	15 20	17 29	19 30	21 23
25/26	23 13	01 11	03 18	05 27	07 28	09 21	11 12	13 09	15 16	17 25	19 26	21 19
26/27	23 09	01 07	03 14	05 23	07 24	09 17	11 08	13 05	15 12	17 21	19 22	21 15
27/28	23 06	01 04	03 11	05 20	07 21	09 14	11 05	13 02	15 09	17 18	19 19	21 12
28/29	23 02	01 00	03 07	05 16	07 17	09 10	11 01	12 58	15 05	17 14	19 15	21 08
29/30	22 58	00 56	03 03	05 12	07 13	09 06	10 57	12 54	15 01	17 10	19 11	21 04
30/31	22 54	00 52	02 59	05 08	07 09	09 02	10 53	12 50	14 57	17 06	19 07	21 00
31	22 50	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —
अग. 1	— —	00 48	02 55	05 04	07 06	08 58	10 49	12 46	14 53	17 02	19 04	20 56
1/2	22 47	00 44	02 51	05 00	07 02	08 54	10 45	12 42	14 49	16 58	19 00	20 52
2/3	22 43	00 40	02 47	04 56	06 58	08 50	10 41	12 38	14 45	16 54	18 56	20 48
3/4	22 39	00 36	02 43	04 52	06 54	08 46	10 37	12 34	14 41	16 50	18 52	20 44
4/5	22 35	00 32	02 39	04 48	06 50	08 42	10 33	12 30	14 37	16 46	18 48	20 40
5/6	22 31	00 28	02 35	04 44	06 46	08 38	10 29	12 26	14 33	16 42	18 44	20 36
6/7	22 27	00 24	02 31	04 40	06 42	08 34	10 25	12 22	14 29	16 38	18 40	20 32
7/8	22 23	00 20	02 27	04 36	06 38	08 30	10 21	12 18	14 25	16 34	18 36	20 28
8/9	22 19	00 16	02 23	04 32	06 34	08 26	10 17	12 14	14 21	16 30	18 32	20 24
9/10	22 15	00 12	02 19	04 28	06 30	08 22	10 14	12 10	14 17	16 26	18 28	20 20
10/11	22 12	00 09	02 16	04 25	06 27	08 19	10 10	12 07	14 14	16 23	18 25	20 17
11/12	22 08	00 05	02 12	04 21	06 23	08 15	10 06	12 03	14 10	16 19	18 21	20 13
12/13	22 04	00 01	02 08	04 17	06 19	08 11	10 02	11 59	14 06	16 15	18 17	20 09
13/14	22 00	23 57	02 04	04 13	06 15	08 07	09 58	11 55	14 02	16 11	18 13	20 05
14/15	21 56	23 53	02 00	04 09	06 11	08 03	09 54	11 51	13 58	16 07	18 09	20 01
15/16	21 52	23 49	01 56	04 05	06 07	07 59	09 50	11 47	13 54	16 03	18 05	19 57
16/17	21 48	23 45	01 52	04 01	06 03	07 55	09 46	11 43	13 50	15 59	18 01	19 53
17/18	21 44	23 41	01 48	03 57	05 59	07 51	09 42	11 39	13 46	15 55	17 57	19 49
18/19	21 40	23 37	01 44	03 53	05 55	07 47	09 38	11 35	13 42	15 51	17 53	19 45
19/20	21 36	23 33	01 40	03 49	05 51	07 43	09 34	11 31	13 38	15 47	17 49	19 41
20/21	21 32	23 29	01 36	03 45	05 47	07 39	09 30	11 27	13 34	15 43	17 45	19 37
21/22	21 28	23 25	01 32	03 41	05 43	07 35	09 26	11 23	13 30	15 39	17 41	19 33
22/23	21 24	23 21	01 28	03 37	05 39	07 31	09 22	11 19	13 26	15 35	17 37	19 29
23/24	21 20	23 17	01 24	03 33	05 35	07 27	09 18	11 15	13 22	15 31	17 33	19 25
24/25	21 16	23 13	01 20	03 29	05 31	07 23	09 14	11 11	13 18	15 27	17 29	19 21
25/26	21 12	23 09	01 16	03 25	05 27	07 19	09 10	11 07	13 14	15 23	17 25	19 17
26/27	21 08	23 05	01 12	03 21	05 23	07 15	09 06	11 03	13 10	15 19	17 21	19 13
27/28	21 05	23 02	01 09	03 18	05 20	07 12	09 03	11 00	13 07	15 16	17 18	19 10
28/29	21 01	22 58	01 05	03 14	05 16	07 08	08 59	10 56	13 03	15 12	17 14	19 06
29/30	20 57	22 54	01 01	03 10	05 12	07 04	08 55	10 52	12 59	15 08	17 10	19 02
30/31	20 53	22 50	00 57	03 06	05 08	07 00	08 51	10 48	12 55	15 04	17 06	18 58
31	20 49	22 46	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —

लग्नसाधन कोष्ठक (1)

(लीप इयर हो तो केवल फरवरी के बाद के महीनों में अभीष्ट तारीख में एक जोड़कर इस कोष्ठक का प्रयोग करें।)

तारीख	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
सितं. 1	-- --	-- --	00 53	03 02	05 04	06 56	08 47	10 44	12 51	15 00	17 02	18 54
1/2	20 45	22 42	00 49	02 58	05 00	06 52	08 43	10 40	12 47	14 56	16 58	18 50
2/3	20 41	22 38	00 45	02 54	04 56	06 48	08 39	10 36	12 43	14 52	16 54	18 46
3/4	20 37	22 34	00 41	02 50	04 52	06 44	08 35	10 32	12 39	14 48	16 50	18 42
4/5	20 33	22 30	00 37	02 46	04 48	06 40	08 31	10 28	12 35	14 44	16 46	18 38
5/6	20 29	22 26	00 33	02 42	04 44	06 36	08 27	10 24	12 31	14 40	16 42	18 34
6/7	20 25	22 22	00 29	02 38	04 40	06 32	08 23	10 20	12 27	14 36	16 38	18 30
7/8	20 21	22 18	00 25	02 34	04 36	06 28	08 19	10 16	12 23	14 32	16 34	18 26
8/9	20 17	22 14	00 21	02 30	04 32	06 24	08 15	10 12	12 19	14 28	16 30	18 22
9/10	20 13	22 10	00 17	02 26	04 28	06 20	08 11	10 08	12 15	14 24	16 26	18 18
10/11	20 10	22 07	00 14	02 23	04 25	06 17	08 08	10 05	12 12	14 21	16 23	18 15
11/12	20 06	22 03	00 10	02 19	04 21	06 13	08 04	10 01	12 08	14 17	16 19	18 11
12/13	20 02	21 59	00 06	02 15	04 17	06 09	08 00	09 57	12 04	14 13	16 15	18 07
13/14	19 58	21 55	00 02	02 11	04 13	06 05	07 56	09 53	12 00	14 09	16 11	18 03
14/15	19 54	21 51	23 58	02 07	04 09	06 01	07 52	09 49	11 56	14 05	16 07	17 59
15/16	19 50	21 47	23 54	02 03	04 05	05 57	07 48	09 45	11 52	14 01	16 03	17 55
16/17	19 46	21 43	23 50	01 59	04 01	05 53	07 44	09 41	11 48	13 57	15 59	17 51
17/18	19 42	21 39	23 46	01 55	03 57	05 49	07 40	09 37	11 44	13 53	15 55	17 47
18/19	19 38	21 35	23 42	01 51	03 53	05 45	07 36	09 33	11 40	13 49	15 51	17 43
19/20	19 34	21 31	23 38	01 47	03 49	05 41	07 32	09 29	11 36	13 45	15 47	17 39
20/21	19 30	21 27	23 34	01 43	03 45	05 37	07 28	09 25	11 32	13 41	15 43	17 35
21/22	19 26	21 23	23 30	01 39	03 41	05 33	07 24	09 21	11 28	13 37	15 39	17 31
22/23	19 22	21 19	23 26	01 35	03 37	05 29	07 20	09 17	11 24	13 33	15 35	17 27
23/24	19 18	21 15	23 22	01 31	03 33	05 25	07 16	09 13	11 20	13 29	15 31	17 23
24/25	19 14	21 11	23 18	01 27	03 29	05 21	07 12	09 09	11 16	13 25	15 27	17 19
25/26	19 10	21 07	23 14	01 23	03 25	05 17	07 08	09 05	11 12	13 21	15 23	17 15
26/27	19 06	21 03	23 10	01 19	03 21	05 13	07 04	09 01	11 08	13 17	15 19	17 11
27/28	19 03	21 00	23 07	01 16	03 18	05 10	07 01	08 58	11 05	13 14	15 16	17 08
28/29	18 59	20 56	23 03	01 12	03 14	05 06	06 57	08 54	11 01	13 10	15 12	17 04
29/30	18 55	20 52	22 59	01 08	03 10	05 02	06 53	08 50	10 57	13 06	15 08	17 00
30	18 51	20 48	22 55	-- --	-- --	-- --	-- --	-- --	-- --	-- --	-- --	-- --
अक्तू. 1	-- --	-- --	-- --	01 04	03 06	04 58	06 49	08 46	10 53	13 02	15 04	16 56
1/2	18 47	20 44	22 51	01 00	03 02	04 54	06 45	08 42	10 49	12 58	15 00	16 52
2/3	18 43	20 40	22 47	00 56	02 58	04 50	06 41	08 38	10 45	12 54	14 56	16 48
3/4	18 39	20 36	22 43	00 52	02 54	04 46	06 37	08 34	10 41	12 50	14 52	16 44
4/5	18 35	20 32	22 39	00 48	02 50	04 42	06 33	08 30	10 37	12 46	14 48	16 40
5/6	18 31	20 28	22 35	00 44	02 46	04 38	06 29	08 26	10 33	12 42	14 44	16 36
6/7	18 27	20 24	22 31	00 40	02 42	04 34	06 25	08 22	10 29	12 38	14 40	16 32
7/8	18 23	20 20	22 27	00 36	02 38	04 30	06 21	08 18	10 25	12 34	14 36	16 28
8/9	18 19	20 16	22 23	00 32	02 34	04 26	06 17	08 14	10 21	12 30	14 32	16 24
9/10	18 15	20 12	22 19	00 28	02 30	04 22	06 13	08 10	10 17	12 26	14 28	16 20
10/11	18 12	20 09	22 16	00 25	02 27	04 19	06 10	08 07	10 14	12 23	14 25	16 17
11/12	18 08	20 05	22 12	00 21	02 23	04 15	06 06	08 03	10 10	12 19	14 21	16 13
12/13	18 04	20 01	22 08	00 17	02 19	04 11	06 02	07 59	10 06	12 15	14 17	16 09
13/14	18 00	19 57	22 04	00 13	02 15	04 07	05 58	07 55	10 02	12 11	14 13	16 05
14/15	17 56	19 53	22 00	00 09	02 11	04 03	05 54	07 51	09 58	12 07	14 09	16 01
15/16	17 52	19 49	21 56	00 05	02 07	03 59	05 50	07 47	09 54	12 03	14 05	15 57
16/17	17 48	19 45	21 52	00 01	02 03	03 55	05 46	07 43	09 50	11 59	14 01	15 53
17/18	17 44	19 41	21 48	23 57	01 59	03 51	05 42	07 39	09 46	11 55	13 57	15 49
18/19	17 40	19 37	21 44	23 53	01 55	03 47	05 38	07 35	09 42	11 51	13 53	15 45
19/20	17 36	19 33	21 40	23 49	01 51	03 43	05 34	07 31	09 38	11 47	13 49	15 41
20/21	17 32	19 29	21 36	23 45	01 47	03 39	05 30	07 27	09 34	11 43	13 45	15 37
21/22	17 28	19 25	21 32	23 41	01 43	03 35	05 26	07 23	09 30	11 39	13 41	15 33
22/23	17 24	19 21	21 28	23 37	01 39	03 31	05 22	07 19	09 26	11 35	13 37	15 29
23/24	17 20	19 17	21 24	23 33	01 35	03 27	05 18	07 15	09 22	11 31	13 33	15 25
24/25	17 16	19 13	21 20	23 29	01 31	03 23	05 14	07 11	09 18	11 27	13 29	15 21
25/26	17 12	19 09	21 16	23 25	01 27	03 19	05 10	07 07	09 14	11 23	13 25	15 17
26/27	17 08	19 05	21 12	23 21	01 23	03 15	05 06	07 03	09 10	11 19	13 21	15 13
27/28	17 05	19 02	21 09	23 18	01 20	03 12	05 03	07 00	09 07	11 16	13 18	15 10
28/29	17 01	18 58	21 05	23 14	01 16	03 08	04 59	06 56	09 03	11 12	13 14	15 06
29/30	16 57	18 54	21 01	23 10	01 12	03 04	04 55	06 52	08 59	11 08	13 10	15 02
30/31	16 53	18 50	20 57	23 06	01 08	03 00	04 51	06 48	08 55	11 04	13 06	14 58
31	16 49	18 46	20 53	23 02	-- --	-- --	-- --	-- --	-- --	-- --	-- --	-- --

लग्नसाधन कोष्ठक (1)

(लीप इयर हो तो केवल फरवरी के बाद के महीनों में अभीष्ट तारीख में एक जोड़कर इस कोष्ठक का प्रयोग करें।)

तारीख	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
नवं. 1	— —	— —	— —	— —	01 04	02 56	04 47	06 44	08 51	11 00	13 02	14 54
1/2	16 45	18 42	20 49	22 58	01 00	02 52	04 43	06 40	08 47	10 56	12 58	14 50
2/3	16 41	18 38	20 45	22 54	00 56	02 48	04 39	06 36	08 43	10 52	12 54	14 46
3/4	16 37	18 34	20 41	22 50	00 52	02 44	04 35	06 32	08 39	10 48	12 50	14 42
4/5	16 33	18 30	20 37	22 46	00 48	02 40	04 31	06 28	08 35	10 44	12 46	14 38
5/6	16 29	18 26	20 33	22 42	00 44	02 36	04 27	06 24	08 31	10 40	12 42	14 34
6/7	16 25	18 22	20 29	22 38	00 40	02 32	04 23	06 20	08 27	10 36	12 38	14 30
7/8	16 21	18 18	20 25	22 34	00 36	02 28	04 19	06 16	08 23	10 32	12 34	14 26
8/9	16 17	18 14	20 21	22 30	00 32	02 24	04 15	06 12	08 19	10 28	12 30	14 22
9/10	16 14	18 11	20 18	22 26	00 29	02 21	04 12	06 09	08 16	10 25	12 27	14 19
10/11	16 10	18 07	20 14	22 23	00 25	02 17	04 08	06 05	08 12	10 21	12 23	14 15
11/12	16 06	18 03	20 10	22 19	00 21	02 13	04 04	06 01	08 08	10 17	12 19	14 11
12/13	16 02	17 59	20 06	22 15	00 17	02 09	04 00	05 57	08 04	10 13	12 15	14 07
13/14	15 58	17 55	20 02	22 11	00 13	02 05	03 56	05 53	08 00	10 09	12 11	14 03
14/15	15 54	17 51	19 58	22 07	00 09	02 01	03 52	05 49	07 56	10 05	12 07	13 59
15/16	15 50	17 47	19 54	22 03	00 05	01 57	03 48	05 45	07 52	10 01	12 03	13 55
16/17	15 46	17 43	19 50	21 59	00 01	01 53	03 44	05 41	07 48	09 57	11 59	13 51
17/18	15 42	17 39	19 46	21 55	23 57	01 49	03 40	05 37	07 44	09 53	11 55	13 47
18/19	15 38	17 35	19 42	21 51	23 53	01 45	03 36	05 33	07 40	09 49	11 51	13 43
19/20	15 34	17 31	19 38	21 47	23 49	01 41	03 32	05 29	07 36	09 45	11 47	13 39
20/21	15 30	17 27	19 34	21 43	23 45	01 37	03 28	05 25	07 32	09 41	11 43	13 35
21/22	15 26	17 23	19 30	21 39	23 41	01 33	03 24	05 21	07 28	09 37	11 39	13 31
22/23	15 22	17 19	19 26	21 35	23 37	01 29	03 20	05 17	07 24	09 33	11 35	13 27
23/24	15 18	17 15	19 22	21 31	23 33	01 25	03 16	05 13	07 20	09 29	11 31	13 23
24/25	15 14	17 11	19 18	21 27	23 29	01 21	03 12	05 09	07 16	09 25	11 27	13 19
25/26	15 10	17 07	19 14	21 23	23 25	01 17	03 08	05 05	07 12	09 21	11 23	13 15
26/27	15 07	17 04	19 11	21 19	23 22	01 14	03 05	05 02	07 09	09 18	11 20	13 12
27/28	15 03	17 00	19 07	21 16	23 18	01 10	03 01	04 58	07 05	09 14	11 16	13 08
28/29	14 59	16 56	19 03	21 12	23 14	01 06	02 57	04 54	07 01	09 10	11 12	13 04
29/30	14 55	16 52	18 59	21 08	23 10	01 02	02 53	04 50	06 57	09 06	11 08	13 00
30	14 51	16 48	18 55	21 04	23 06	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —
दिसं. 1	— —	— —	— —	— —	— —	00 58	02 49	04 46	06 53	09 02	11 04	12 56
1/2	14 47	16 44	18 51	21 00	23 02	00 54	02 45	04 42	06 49	08 58	11 00	12 52
2/3	14 43	16 40	18 47	20 56	22 58	00 50	02 41	04 38	06 45	08 54	10 56	12 48
3/4	14 39	16 36	18 43	20 52	22 54	00 46	02 37	04 34	06 41	08 50	10 52	12 44
4/5	14 35	16 32	18 39	20 48	22 50	00 42	02 33	04 30	06 37	08 46	10 48	12 40
5/6	14 31	16 28	18 35	20 44	22 46	00 38	02 29	04 26	06 33	08 42	10 44	12 36
6/7	14 27	16 24	18 31	20 40	22 42	00 34	02 25	04 22	06 29	08 38	10 40	12 32
7/8	14 23	16 20	18 27	20 36	22 38	00 30	02 21	04 18	06 25	08 34	10 36	12 28
8/9	14 19	16 16	18 23	20 32	22 34	00 26	02 17	04 14	06 21	08 30	10 32	12 24
9/10	14 15	16 12	18 19	20 28	22 31	00 22	02 13	04 10	06 17	08 26	10 28	12 20
10/11	14 12	16 09	18 16	20 25	22 27	00 19	02 10	04 07	06 14	08 23	10 25	12 17
11/12	14 08	16 05	18 12	20 21	22 23	00 15	02 06	04 03	06 10	08 19	10 21	12 13
12/13	14 04	16 01	18 08	20 17	22 19	00 11	02 02	03 59	06 06	08 15	10 17	12 09
13/14	14 00	15 57	18 04	20 13	22 15	00 07	01 58	03 55	06 02	08 11	10 13	12 05
14/15	13 56	15 53	18 00	20 09	22 11	00 03	01 54	03 51	05 58	08 07	10 09	12 01
15/16	13 52	15 49	17 56	20 05	22 07	23 59	01 50	03 47	05 54	08 03	10 05	11 57
16/17	13 48	15 45	17 52	20 01	22 03	23 55	01 46	03 43	05 50	07 59	10 01	11 53
17/18	13 44	15 41	17 48	19 57	21 59	23 51	01 42	03 39	05 46	07 55	09 57	11 49
18/19	13 40	15 37	17 44	19 53	21 55	23 47	01 38	03 35	05 42	07 51	09 53	11 45
19/20	13 36	15 33	17 40	19 49	21 51	23 43	01 34	03 31	05 38	07 47	09 49	11 41
20/21	13 32	15 29	17 36	19 45	21 47	23 39	01 30	03 27	05 34	07 43	09 45	11 37
21/22	13 28	15 25	17 32	19 41	21 43	23 35	01 26	03 23	05 30	07 39	09 41	11 33
22/23	13 24	15 21	17 28	19 37	21 39	23 31	01 22	03 19	05 26	07 35	09 37	11 29
23/24	13 20	15 17	17 24	19 33	21 35	23 27	01 18	03 15	05 22	07 31	09 33	11 25
24/25	13 16	15 13	17 20	19 29	21 31	23 23	01 14	03 11	05 18	07 27	09 29	11 21
25/26	13 12	15 09	17 16	19 25	21 27	23 19	01 10	03 07	05 14	07 23	09 25	11 17
26/27	13 08	15 05	17 12	19 21	21 24	23 15	01 06	03 03	05 10	07 19	09 21	11 13
27/28	13 05	15 02	17 09	19 18	21 20	23 12	01 03	03 00	05 07	07 16	09 18	11 10
28/29	13 01	14 58	17 05	19 14	21 16	23 08	00 59	02 56	05 03	07 12	09 14	11 06
29/30	12 57	14 54	17 01	19 10	21 12	23 04	00 55	02 52	04 59	07 08	09 10	11 02
30/31	12 53	14 50	16 57	19 06	21 08	23 00	00 51	02 48	04 55	07 04	09 06	10 [illegible]
31/32	12 49	14 46	16 53	19 02	21 04	22 56	00 47	02 44	04 51	07 00	09 02	10 [illegible]
32	12 45	14 42	16 49	18 58	21 00	22 52				— —	— —	— —

लग्नसाधन कोष्ठक (2)

नगर	मेष मि. से.	वृष मि. से.	मिथुन मि. से.	कर्क मि. से.	सिंह मि. से.	कन्या मि. से.	तुला मि. से.	वृश्चिक मि. से.	धनु मि. से.	मकर मि. से.	कुम्भ मि. से.	मीन मि. से.
अकोला (म.)	+ 07 38	− 07 42	− 15 43	− 12 16	+ 00 44	+ 17 56	+ 35 42	+ 51 02	+ 59 03	+ 55 36	+ 42 36	+ 25 24
अगरतला (त्रि.)	− 51 26	− 69 25	− 78 52	− 74 48	− 59 32	− 39 23	− 18 34	− 00 35	+ 08 52	+ 04 48	− 10 28	− 30 37
अजमेर (रा.)	+ 12 43	− 07 33	− 18 12	− 13 37	+ 03 36	+ 26 16	+ 49 41	+ 69 57	+ 80 36	+ 76 01	+ 58 48	+ 36 08
अनन्तनाग (का.)	+ 04 27	− 33 00	− 37 33	− 31 16	− 07 52	+ 22 42	+ 54 13	+ 81 40	+ 98 13	+ 89 56	+ 66 32	+ 35 56
अनूपशहर (उ.प्र.)	− 03 08	− 25 10	− 36 46	− 31 46	− 13 02	+ 11 35	+ 37 00	+ 59 02	+ 70 38	+ 65 38	+ 46 54	+ 22 17
अमरावती (म.)	+ 04 47	− 10 45	− 18 53	− 15 23	− 02 13	+ 15 13	+ 33 13	+ 48 45	+ 56 53	+ 53 23	+ 40 13	+ 22 47
अमरोहा (उ.प्र.)	− 04 30	− 27 04	− 38 59	− 33 51	− 14 39	+ 10 35	+ 36 38	+ 59 12	+ 71 07	+ 65 59	+ 46 47	+ 21 33
अमृतसर (पं.)	+ 07 26	− 17 45	− 31 04	− 25 20	− 03 52	+ 24 14	+ 53 14	+ 78 25	+ 91 44	+ 86 00	+ 64 32	+ 36 26
अमेठी (उ.प्र.)	− 15 37	− 35 39	− 46 11	− 41 39	− 24 38	− 02 14	+ 20 57	+ 40 59	+ 51 31	+ 46 59	+ 29 58	+ 07 33
अम्बाला (ह.)	+ 00 45	− 23 12	− 35 51	− 30 24	− 10 01	+ 16 44	+ 44 19	+ 68 16	+ 80 55	+ 75 28	+ 55 05	+ 28 20
अयोध्या (उ.प्र.)	− 17 38	− 38 16	− 49 08	− 44 27	− 26 55	− 03 49	+ 20 02	+ 40 40	+ 51 32	+ 46 51	+ 29 19	+ 06 13
अर्की (हि.)	− 00 23	− 25 09	− 36 15	− 32 36	− 11 31	+ 16 08	+ 44 39	+ 69 25	+ 82 31	+ 78 52	+ 55 47	+ 28 08
अल्मोड़ा (उ.आं.)	− 09 48	− 33 01	− 45 16	− 39 59	− 20 14	+ 05 42	+ 32 28	+ 55 41	+ 67 56	+ 62 39	+ 42 54	+ 16 58
अलवर (रा.)	+ 04 01	− 17 18	− 28 32	− 23 42	− 05 34	+ 18 17	+ 42 55	+ 64 14	+ 75 28	+ 70 38	+ 52 30	+ 28 39
अलीगढ़ (उ.प्र.)	− 02 03	− 23 41	− 35 05	− 30 11	− 11 47	+ 17 24	+ 37 23	+ 59 01	+ 70 25	+ 65 31	+ 47 07	+ 22 56
अहमदाबाद (गु.)	+ 23 29	+ 06 08	− 02 58	+ 00 57	+ 15 40	+ 35 06	+ 55 11	+ 72 32	+ 81 38	+ 77 43	+ 63 00	+ 43 34
आगरा (उ.प्र.)	− 01 10	− 22 07	− 33 08	− 28 23	− 10 35	+12 50	+ 37 02	+ 57 59	+ 69 00	+ 64 15	+ 46 27	+ 23 02
आजमगढ़ (उ.प्र.)	− 20 57	− 40 55	− 51 25	− 46 53	− 29 56	− 07 35	+ 15 29	+ 35 27	+ 45 57	+ 41 25	+ 24 28	+ 02 07
आबू (रा.)	+ 21 55	+ 03 12	− 06 37	− 02 24	+ 13 30	+ 34 27	+ 56 05	+ 74 48	+ 84 37	+ 80 24	+ 64 30	+ 43 33
आरा (बि.)	− 26 29	− 46 00	− 56 15	− 51 50	− 35 16	− 13 25	+ 09 09	+ 28 40	+ 38 55	+ 34 30	+ 17 56	− 03 55
इटारसी (म.प्र.)	+ 03 32	− 13 24	− 22 16	− 18 27	− 04 05	+ 14 52	+ 34 28	+ 51 24	+ 60 22	+ 56 32	+ 42 11	+ 23 09
इटावा (उ.प्र.)	− 04 53	− 25 27	− 36 16	− 31 37	− 14 08	+ 08 52	+ 32 37	+ 53 11	+ 64 00	+ 59 21	+ 41 52	+ 18 52
इन्दौर (म.प्र.)	+ 11 04	− 06 00	− 14 57	− 11 06	+ 03 23	+ 22 30	+ 42 16	+ 59 20	+ 68 17	+ 64 26	+ 49 57	+ 30 50
इम्फाल (मणि.)	− 62 57	− 81 04	− 91 36	− 87 21	− 71 24	− 50 22	− 28 39	− 09 52	00 00	− 04 15	− 20 12	− 41 14
उज्जैन (म.प्र.)	+ 11 13	− 06 12	− 15 20	− 11 24	− 03 22	+ 22 53	+ 43 03	+ 60 28	+ 69 36	+ 65 40	+ 50 54	+ 31 23
उदयपुर (रा.)	+ 18 15	− 00 24	− 10 11	− 05 58	+ 09 51	+ 30 44	+ 52 17	+ 70 56	+ 80 43	+ 76 30	+ 60 41	+ 39 48
उन्नाव (उ.प्र.)	− 10 33	− 30 54	− 41 35	− 36 59	− 19 42	+ 03 03	+ 26 33	+ 46 54	+ 57 35	+ 52 59	+ 35 42	+ 12 57
ऊधमपुर (का.)	+ 05 29	− 21 04	− 35 09	− 29 04	− 06 26	+ 23 10	+ 53 43	+ 80 16	+ 94 21	+ 88 16	+ 65 38	+ 36 02
ऊना (हि.)	+ 02 03	− 23 03	− 34 20	− 30 37	− 09 14	+ 18 47	+ 47 01	+ 72 47	+ 86 04	+ 80 21	+ 58 58	+ 30 57
एटा (उ.प्र.)	− 04 11	− 25 35	− 36 51	− 32 00	− 13 48	+ 10 08	+ 34 51	+ 56 15	+ 67 31	+ 62 40	+ 44 28	+ 20 32
कटक (उ.)	− 27 35	− 42 42	− 50 37	− 47 13	− 34 23	− 17 25	+ 00 07	+ 15 14	+ 23 09	+ 19 45	+ 06 55	− 10 03
कटनी (म.प्र.)	− 08 10	− 26 05	− 35 29	− 31 26	− 16 14	+ 04 50	+ 24 34	+ 42 29	+ 51 53	+ 47 50	+ 32 38	+ 12 34
कठुआ (का.)	+ 04 18	− 21 40	− 35 24	− 29 29	− 07 22	+ 21 35	+ 51 26	+ 77 24	+ 91 08	+ 85 13	+ 63 06	+ 34 10
कन्नौज (उ.प्र.)	− 08 42	− 29 34	− 40 33	− 35 49	− 18 05	+ 05 16	+ 29 22	+ 50 14	+ 61 13	+ 56 29	+ 38 45	+ 15 24
कपूरथला (पं.)	+ 05 43	− 19 18	− 32 32	− 26 50	− 05 31	+ 22 24	+ 51 13	+ 76 14	+ 89 28	+ 83 46	+ 62 27	+ 34 32
करनाल (ह.)	+ 00 40	− 22 38	− 34 56	− 29 58	− 09 49	+ 16 13	+ 43 04	+ 66 22	+ 78 51	+ 73 22	+ 53 33	+ 27 31
कांगड़ा (हि.)	+ 01 27	− 24 15	− 37 51	− 31 59	− 10 05	+ 18 35	+ 48 09	+ 73 51	+ 87 27	+ 81 35	+ 59 01	+ 31 01
कांचीपुरम् (ता.)	+ 02 36	− 06 38	− 11 27	− 09 23	− 01 34	+ 08 49	+ 19 32	+ 28 46	+ 33 35	+ 31 31	+ 23 47	+ 13 19
काठियावाड़ (गु.)	+ 30 58	+ 14 32	+ 05 56	+ 09 38	+ 23 34	+ 42 00	+ 61 02	+ 77 28	+ 86 04	+ 82 22	+ 68 26	+ 50 00
कानपुर (उ.प्र.)	− 09 27	− 30 18	− 40 59	− 36 23	− 19 06	+ 03 39	+ 27 09	+ 47 30	+ 58 11	+ 53 35	+ 36 18	+ 13 33
कारगिल (का.)	− 00 28	− 28 43	− 43 44	− 37 15	− 13 09	+ 18 19	+ 50 44	+ 78 59	+ 94 00	+ 87 31	+ 63 25	+ 31 57
कालका (ह.)	+ 00 03	− 24 24	− 37 19	− 31 45	− 10 56	+ 16 20	+ 44 29	+ 68 56	+ 81 51	+ 76 17	+ 55 28	+ 28 12
किशनगढ़ (रा.)	+ 11 55	− 08 30	− 19 14	− 14 37	+ 02 44	+ 25 34	+ 49 09	+ 69 34	+ 80 18	+ 75 41	+ 58 20	+ 35 30

लग्नसाधन कोष्ठक (2)

नगर	मेष मि. से.	वृष मि. से.	मिथुन मि. से.	कर्क मि. से.	सिंह मि. से.	कन्या मि. से.	तुला मि. से.	वृश्चिक मि. से.	धनु मि. से.	मकर मि. से.	कुम्भ मि. से.	मीन मि. से.
कुराली (पं.)	+ 01 27	– 23 00	– 35 55	– 30 21	– 09 32	+ 17 44	+ 45 53	+ 70 30	+ 83 15	+ 77 41	+ 56 52	+ 29 38
कुरुक्षेत्र (ह.)	+ 01 10	– 22 27	– 34 55	– 29 33	–09 26	+ 16 56	+ 44 10	+ 67 47	+ 80 15	+ 74 53	+ 54 46	+ 28 24
कुल्लू (हि.)	– 01 40	– 27 17	– 40 50	– 35 00	– 13 10	+ 15 24	+ 44 52	+ 70 29	+ 84 02	+ 78 12	+ 56 22	+ 27 48
कैथल (ह.)	+ 02 55	– 20 32	– 32 55	– 27 35	– 07 37	+ 18 34	+ 45 37	+ 69 04	+ 81 27	+ 76 07	+ 56 09	+ 29 58
कोटखाई (हि.)	– 02 55	– 27 41	– 40 47	– 35 08	– 14 03	+ 13 36	+ 42 07	+ 66 53	+ 79 59	+ 74 20	+ 53 15	+ 25 38
कोटा (रा.)	+ 09 03	– 10 06	– 20 09	– 15 50	+ 00 26	+ 21 52	+ 44 01	+ 63 10	+ 73 13	+ 68 54	+ 52 38	+ 31 12
कोलकाता (बं.)	– 39 04	– 56 00	– 64 52	– 61 03	– 46 41	– 27 44	– 08 08	+ 08 48	+ 17 40	+ 13 51	– 00 31	– 19 28
कोहिमा (नागा.)	– 64 25	– 84 00	– 94 18	– 89 52	– 73 14	– 51 18	– 28 39	– 09 04	+ 01 14	– 03 12	– 19 50	– 41 46
खन्ना (पं.)	+ 03 03	– 21 13	– 34 02	– 28 31	– 07 51	+ 19 15	+ 47 13	+ 71 29	+ 84 18	+ 78 47	+ 58 07	+ 31 01
खुर्जा (उ.प्र.)	– 01 20	– 23 17	– 34 51	– 29 52	– 11 12	+ 13 20	+ 38 40	+ 60 37	+ 72 11	+ 67 12	+ 48 32	+ 24 00
गंगटोक (सि.)	– 43 38	– 64 44	– 75 50	– 71 03	– 53 08	– 29 32	– 05 10	+ 15 58	+ 27 02	+ 22 15	+ 04 20	– 19 16
गया (बि.)	– 27 17	– 46 08	– 56 03	– 51 47	– 35 46	– 14 40	+ 07 05	+ 26 00	+ 35 55	+ 31 39	+ 15 38	– 05 28
गाजियाबाद (उ.प्र.)	– 00 05	– 22 25	– 34 12	– 29 08	– 10 08	+ 14 50	+ 40 37	+ 62 57	+ 74 44	+ 69 40	+ 50 40	+ 25 42
गुड़गांव (ह.)	+ 01 36	– 20 31	– 32 10	– 27 09	– 08 21	+ 16 22	+ 41 52	+ 63 59	+ 75 38	+ 70 37	+ 51 49	+ 27 06
गुरदासपुर (पं.)	+ 04 56	– 20 41	– 34 14	– 28 24	– 06 34	+ 22 00	+ 51 28	+ 77 05	+ 90 38	+ 84 48	+ 62 58	+ 34 24
गुवाहाटी (आसा.)	– 55 17	– 75 19	– 85 51	– 81 19	– 64 18	– 41 53	– 18 43	+ 01 19	+ 11 51	+ 07 19	– 09 42	– 32 07
गोरखपुर (उ.प्र.)	– 22 13	– 42 47	– 53 36	– 48 57	– 31 28	– 08 26	+ 15 17	+ 35 51	+ 46 40	+ 42 01	+ 24 32	+ 01 32
ग्वालियर (म.प्र.)	– 01 01	– 21 08	– 31 42	– 27 09	– 10 04	+ 12 26	+ 35 41	+ 55 48	+ 66 22	+ 61 49	+ 44 44	+ 22 14
चण्डीगढ़ (यू.टी.)	+ 00 31	– 23 50	– 36 43	– 31 10	– 10 26	+ 16 46	+ 44 49	+ 69 10	+ 82 03	+ 76 30	+ 55 46	+ 28 34
चम्बा (हि.)	+ 01 40	– 24 33	– 28 26	– 32 27	– 10 06	+ 19 07	+ 49 16	+ 75 29	+ 89 22	+ 83 23	+ 61 02	+ 31 49
चित्तौड़गढ़ (रा.)	+ 14 03	– 04 53	– 14 49	– 10 33	+ 05 32	+ 26 44	+ 48 33	+ 67 33	+ 77 19	+ 73 13	+ 57 02	+ 35 56
चूरू (रा.)	+ 09 52	– 12 10	– 23 46	– 18 46	– 00 02	+ 24 35	+ 50 00	+ 72 02	+ 83 38	+ 78 38	+ 59 54	+ 35 17
चेन्नई (ता.)	+ 00 10	– 09 15	– 14 10	– 12 03	– 04 05	+ 06 30	+ 17 26	+ 26 51	+ 31 46	+ 29 39	+ 21 41	+ 11 06
चेरापूंजी (मे.)	– 54 21	– 73 34	– 83 40	– 79 19	– 63 00	– 41 29	– 19 15	– 00 02	+ 10 04	+ 05 43	– 10 36	– 32 07
छतरपुर (म.प्र.)	– 05 49	– 24 46	– 34 41	– 30 25	– 14 20	+ 06 51	+ 28 45	+ 47 41	+ 57 37	+ 53 21	+ 37 16	+ 16 04
छपरा (बि.)	– 26 57	– 46 37	– 56 57	– 52 30	– 35 48	– 13 47	+ 08 57	+ 28 37	+ 38 57	+ 34 30	+ 17 48	– 04 13
जबलपुर (म.प्र.)	– 05 51	– 23 16	– 32 24	– 28 28	– 13 42	+ 05 49	+ 25 59	+ 43 24	+ 52 32	+ 48 36	+ 33 50	+ 14 19
जम्मू (का.)	+ 06 27	– 19 56	– 33 55	– 27 53	– 05 24	+ 24 01	+ 54 21	+ 80 44	+ 94 43	+ 88 41	+ 66 12	+ 36 47
जयपुर (रा.)	+ 07 38	– 13 05	– 23 59	– 19 17	– 01 41	+ 21 30	+ 45 26	+ 66 09	+ 77 03	+ 72 21	+ 54 45	+ 31 34
जामनगर (गु.)	+ 34 12	+ 17 20	+ 08 30	+ 12 18	+ 26 36	+ 45 29	+ 65 00	+ 81 52	+ 90 42	+ 86 54	+ 72 36	+ 53 43
जालन्धर (पं.)	+ 05 04	– 19 52	– 33 04	– 27 23	– 06 08	+ 21 41	+ 50 24	+ 75 20	+ 88 32	+ 82 51	+ 61 36	+ 33 47
जालोर (रा.)	+ 21 51	+ 02 33	– 07 35	– 03 13	+ 13 10	+ 34 46	+ 57 05	+ 76 23	+ 86 31	+ 82 09	+ 65 56	+ 44 10
जींद (ह.)	+ 03 49	– 19 10	– 31 17	– 26 03	– 06 31	+ 19 09	+ 45 39	+ 68 38	+ 80 45	+ 75 31	+ 55 59	+ 30 19
जैसलमेर (रा.)	+ 27 30	+ 06 47	– 04 07	+ 00 35	+ 18 11	+ 41 22	+ 65 18	+ 86 01	+ 96 55	+ 92 13	+ 74 37	+ 51 28
जोधपुर (रा.)	+ 19 19	– 00 52	– 11 29	– 06 55	+ 10 14	+ 32 49	+ 56 09	+ 76 20	+ 86 57	+ 82 23	+ 65 08	+ 42 38
जोरहाट (आसा.)	– 65 33	– 86 07	– 96 56	– 92 17	– 74 48	– 51 48	– 28 03	– 07 29	+ 03 20	– 01 19	– 18 48	– 41 48
झरिया (झा.खं.)	– 31 58	– 49 53	– 59 17	– 55 14	– 40 02	– 19 58	+ 00 46	+ 18 41	+ 28 05	+ 24 02	+ 08 50	– 11 14
झांसी (उ.प्र.)	– 02 01	– 21 23	– 31 34	– 27 11	– 10 44	+ 10 57	+ 33 21	+ 52 43	+ 62 54	+ 58 31	+ 41 54	+ 20 23
झालरापाटन (रा.)	+ 08 19	– 10 20	– 20 07	– 15 54	– 00 05	+ 20 48	+ 42 21	+ 61 00	+ 70 47	+ 66 34	+ 50 45	+ 29 53
झालावाड़ (रा.)	+ 08 23	– 10 16	– 20 03	– 15 50	– 00 01	+ 20 52	+ 42 25	+ 61 04	+ 70 51	+ 66 38	+ 50 49	+ 29 58
झुंझुनू (रा.)	+ 08 28	– 13 19	– 24 48	– 19 51	– 01 20	+ 23 02	+ 48 12	+ 69 59	+ 81 28	+ 76 31	+ 58 00	+ 33 38
टोंक (रा.)	+ 08 23	– 11 39	– 22 11	– 17 39	– 00 38	+ 21 47	+ 44 57	+ 64 59	+ 75 31	+ 70 59	+ 53 58	+ 31 38
डिब्रूगढ़ (आसा.)	– 69 06	– 90 22	–101 33	– 96 44	– 78 40	– 54 54	– 30 22	– 09 06	+ 02 05	– 02 44	– 20 48	– 44 34

लग्नसाधन कोष्ठक (2)

नगर	मेष मि. से.	वृष मि. से.	मिथुन मि. से.	कर्क मि. से.	सिंह मि. से.	कन्या मि. से.	तुला मि. से.	वृश्चिक मि. से.	धनु मि. से.	मकर मि. से.	कुम्भ मि. से.	मीन मि. से.
डीडवाना (रा.)	+ 12 26	− 08 45	− 19 54	− 15 06	+ 02 54	+ 26 35	+ 51 02	+ 72 13	+ 83 22	+ 78 34	+ 60 34	+ 36 53
डूंगरपुर (रा.)	+ 18 42	+ 00 43	− 08 44	− 04 40	+ 10 36	+ 30 45	+ 51 34	+ 69 33	+ 79 00	+ 74 56	+ 59 40	+ 39 31
त्रिवेन्द्रम् (के.)	+ 16 35	+ 10 32	+ 07 23	+ 08 44	+ 13 51	+ 20 39	+ 27 41	+ 33 44	+ 36 53	+ 35 32	+ 30 25	+ 23 37
तिरुपति (आं.)	+ 03 18	− 06 34	− 11 42	− 09 30	− 01 09	+ 09 55	+ 21 22	+ 31 14	+ 36 22	+ 34 10	+ 25 49	+ 14 45
थानेसर (ह.)	+ 00 51	− 22 52	− 35 20	− 29 46	− 09 44	+ 16 33	+ 43 41	+ 67 14	+ 79 50	+ 74 29	+ 54 16	+ 27 59
दतिया (म.प्र.)	− 01 41	− 21 16	− 31 34	− 27 08	− 10 30	+ 11 26	+ 34 05	+ 53 40	+ 63 58	+ 59 32	+ 42 54	+ 20 58
दरभंगा (बि.)	− 32 05	− 52 07	− 62 39	− 58 07	− 41 06	− 18 41	+ 04 29	+ 24 31	+ 35 03	+ 30 31	+ 13 30	− 08 55
दार्जिलिंग (बं.)	− 42 02	− 62 49	− 73 46	− 69 03	− 51 23	− 28 07	− 04 06	+ 16 41	+ 27 38	+ 22 55	+ 05 15	− 18 01
दिल्ली	+ 00 51	− 21 29	− 33 16	− 28 12	− 09 12	+ 15 46	+ 41 33	+ 63 33	+ 75 40	+ 70 36	+ 51 36	+ 26 38
देवप्रयाग (उ.आं.)	− 06 06	− 29 53	− 42 27	− 37 02	− 16 48	+ 09 46	+ 37 10	+ 60 57	+ 73 31	+ 68 06	+ 47 52	+ 21 48
देवबन्द (उ.प्र.)	− 01 56	− 25 14	− 37 32	− 32 14	− 12 25	+ 13 37	+ 40 28	+ 63 46	+ 76 04	+ 70 46	+ 50 57	+ 24 55
देवरिया (उ.प्र.)	− 23 41	− 44 02	− 54 43	− 50 07	− 32 50	− 10 05	+ 13 25	+ 33 46	+ 44 27	+ 39 51	+ 22 34	− 00 11
देवास (म.प्र.)	+ 09 49	− 07 28	− 16 21	− 12 28	+ 02 08	+ 21 24	+ 41 20	+ 58 32	+ 67 33	+ 63 40	+ 49 09	+ 29 48
देहरादून (उ.आं.)	− 03 55	− 27 52	− 40 31	− 35 04	− 14 41	+ 12 04	+ 39 33	+ 63 36	+ 76 15	+ 70 48	+ 50 25	+ 23 40
द्वारिका (गु.)	+ 38 55	+ 22 16	+ 13 33	+ 17 18	+ 31 25	+ 50 05	+ 69 21	+ 86 00	+ 94 53	+ 90 58	+ 76 51	+ 58 11
धनबाद (झा.खं.)	− 32 22	− 50 17	− 59 41	− 55 38	− 40 26	− 20 23	+ 00 22	+ 18 17	+ 27 41	+ 23 38	+ 51 26	− 11 38
धर्मशाला (हि.)	+ 00 58	− 24 54	− 38 36	− 32 41	− 10 39	+ 18 12	+ 47 58	+ 73 50	+ 87 32	+ 81 37	+ 59 35	+ 30 44
नरैना (रा.)	+ 14 26	− 06 12	− 17 04	− 12 23	+ 05 09	+ 28 15	+ 52 06	+ 72 44	+ 83 36	+ 78 55	+ 61 23	+ 38 17
नवलगढ़ (रा.)	+ 09 09	− 12 25	− 23 48	− 18 53	− 00 33	+ 23 34	+48 27	+ 70 01	+ 81 22	+ 76 29	+ 58 09	+ 34 02
नागपुर (म.)	− 01 04	− 16 49	− 25 03	− 21 31	− 08 10	+ 09 30	+ 27 44	+ 43 29	+ 51 43	+ 48 11	+ 34 50	+ 17 10
नागौर (रा.)	+ 15 58	− 04 59	− 16 00	− 11 15	+ 06 33	+ 29 58	+ 54 10	+ 75 07	+ 86 08	+ 81 23	+ 63 35	+ 40 10
नाथद्वारा (रा.)	+ 17 23	− 01 33	− 11 29	− 07 13	+ 08 52	+ 30 03	+ 51 57	+ 70 53	+ 80 49	+ 76 33	+ 60 28	+ 39 17
नाभा (पं.)	+ 03 41	− 20 16	− 32 55	− 27 20	− 07 05	+ 19 40	+ 47 15	+ 71 12	+ 83 51	+ 78 24	+ 58 01	+ 31 16
नारनौल (ह.)	+ 05 12	− 16 35	− 28 04	− 23 07	− 04 36	+ 19 56	+ 44 56	+ 66 43	+ 78 12	+ 73 15	+ 54 44	+ 30 22
नालागढ़ (हि.)	+ 00 45	− 23 56	− 36 57	− 31 21	− 10 20	+ 17 13	+ 45 39	+ 70 20	+ 83 23	+ 77 45	+ 56 44	+ 29 11
नासिक (म.)	+ 21 00	+ 06 12	− 01 32	+ 01 48	+ 14 20	+ 39 55	+ 48 04	+ 62 52	+ 70 36	+ 67 16	+ 54 44	+ 38 09
नाहन (हि.)	− 01 24	− 25 36	− 38 22	− 32 52	− 12 16	+ 14 44	+ 42 36	+ 66 48	+ 79 34	+ 74 04	+ 53 28	+ 26 28
नीमच (म.प्र.)	+ 13 39	− 04 51	− 14 33	− 10 23	+ 05 19	+ 26 02	+ 47 25	+ 65 55	+ 75 37	+ 71 27	+ 55 45	+ 35 02
नैनीताल (उ.आं.)	− 08 47	− 31 51	− 44 00	− 38 46	− 19 02	+ 06 36	+ 33 11	+ 56 15	+ 68 24	+ 63 10	+ 43 33	+ 17 48
पंचकूला (ह.)	+ 00 27	− 23 49	− 36 38	− 31 07	− 10 27	+ 16 39	+ 44 37	+ 68 53	+ 81 42	+ 76 11	+ 55 31	+ 28 25
पंजिम (गोवा)	+ 24 22	+ 13 07	+ 07 14	+ 09 46	+ 19 17	+ 31 55	+ 44 58	+ 56 13	+ 62 16	+ 59 34	+ 50 03	+ 37 25
पटना (बि.)	− 28 41	− 48 12	− 58 27	− 54 02	− 37 25	− 15 31	+ 06 57	+ 26 28	+ 36 43	+ 32 18	+ 15 44	− 06 07
पटियाला (पं.)	+ 02 33	− 21 24	− 34 03	− 28 36	− 08 13	+ 18 32	+ 46 07	+ 70 04	+ 62 43	+ 77 16	+ 56 53	+ 30 08
पठानकोट (पं.)	+ 03 42	− 22 10	− 35 52	− 29 57	− 07 55	+ 20 56	+ 50 42	+ 76 34	+ 90 16	+ 84 21	+ 62 19	+ 33 28
पाण्डिचेरी (पां.)	+ 02 34	− 06 00	− 10 37	− 08 40	− 01 18	+ 08 19	+ 18 14	+ 26 58	+ 31 25	+ 29 20	+ 22 06	+ 12 29
पानीपत (ह.)	+ 01 01	− 22 03	− 34 12	− 28 58	− 09 21	+ 16 24	+ 42 59	+ 66 03	+ 78 12	+ 72 58	+ 53 21	+ 27 36
पालमपुर (हि.)	+ 00 27	− 25 15	− 38 51	− 32 59	− 11 05	+ 17 35	+ 47 09	+ 72 51	+ 86 27	+ 80 35	+ 58 41	+ 30 01
पाली (रा.)	+ 18 43	− 00 57	− 11 17	− 06 50	+ 09 52	+ 31 53	+ 54 37	+ 74 17	+ 84 37	+ 80 10	+ 63 28	+ 41 27
पुंछ (का.)	+ 08 38	− 18 54	− 33 30	− 27 12	− 03 43	+ 20 57	+ 58 34	+ 86 06	+100 42	+ 94 24	+ 70 55	+ 40 15
पुरनिया (बि.)	− 38 05	− 57 49	− 68 12	− 63 44	− 46 58	− 24 52	− 02 03	+ 17 41	+ 28 04	+ 23 36	+ 06 50	− 15 16
पुरी (उ.)	− 26 53	− 41 32	− 49 12	− 45 54	− 33 29	− 17 03	− 00 03	+ 14 36	+ 22 16	+ 18 58	+ 06 33	− 09 53
पूना (म.)	+ 21 58	+ 08 19	+ 01 10	+ 04 15	+ 15 59	+ 31 08	+ 46 58	+ 60 37	+ 67 46	+ 64 41	+ 53 07	+ 37 48
पोरबन्दर (गु.)	+ 36 49	+ 20 40	+ 12 12	+ 15 51	+ 29 33	+ 47 40	+ 66 23	+ 82 32	+ 91 00	+ 87 21	+ 73 39	+ 55 32

लग्नसाधन कोष्ठक (2)

नगर	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.
पोर्टब्लेयर (अं.नि.)	− 48 32	− 56 54	− 81 16	− 59 24	− 52 19	− 42 55	− 33 12	− 24 50	− 20 28	− 22 20	− 29 25	− 38 49
प्रतापगढ़ (उ.प्र.)	− 15 57	− 35 41	− 46 04	− 41 36	− 24 50	− 02 44	+ 20 05	+ 39 49	+ 50 12	+ 45 44	+ 28 58	+ 06 52
प्रयाग (उ.प्र.)	− 15 21	− 34 47	− 45 00	− 40 37	+ 24 06	− 02 20	+ 20 09	+ 39 35	+ 49 48	+ 45 25	+ 28 54	+ 07 08
फरीदकोट (पं.)	+ 09 15	− 15 01	− 27 50	− 22 19	+ 01 39	+ 25 27	+ 53 25	+ 77 41	+ 90 30	+ 84 59	+ 64 19	+ 37 13
फरीदाबाद (ह.)	+ 00 36	− 21 31	− 33 10	− 28 09	− 09 21	+ 15 22	+ 40 52	+ 62 59	+ 74 38	+ 69 37	+ 50 49	+ 26 06
फाज़िल्का (पं.)	+ 11 53	− 12 09	− 24 50	− 19 22	+ 01 05	+ 27 54	+ 55 35	+ 79 37	+ 92 18	+ 86 50	+ 66 23	+ 39 34
फिरोज़पुर (पं.)	+ 09 02	− 15 29	− 28 27	− 22 52	− 01 59	+ 25 23	+ 53 38	+ 78 09	+ 91 07	+ 85 32	+ 64 39	+ 37 17
फुलेरा (रा.)	+ 10 06	− 10 32	− 21 24	− 16 43	+ 00 49	+ 23 55	+ 47 46	+ 68 24	+ 79 16	+ 74 35	+ 57 03	+ 33 57
बंगलौर (क.)	+ 11 05	+ 01 44	− 03 09	− 01 03	+ 06 52	+ 17 23	+ 28 15	+ 37 36	+ 42 29	+ 40 23	+ 32 28	+ 21 57
बठिण्डा (पं.)	+ 08 22	− 15 25	− 27 59	− 22 34	− 02 20	+ 24 14	+ 51 38	+ 75 25	+ 87 59	+ 82 34	+ 62 20	+ 35 46
बदायूं (उ.प्र.)	− 06 20	− 28 07	− 39 36	− 34 39	− 16 08	+ 08 14	+ 33 24	+ 55 11	+ 66 40	+ 61 43	+ 43 12	+ 18 50
बलिया (उ.प्र.)	− 24 37	− 44 17	− 54 37	− 50 10	− 33 28	− 11 17	+ 11 17	+ 30 57	+ 41 17	+ 36 50	+ 20 08	+ 01 53
बाड़मेर (रा.)	+ 26 23	+ 06 43	− 03 37	+ 00 50	+ 17 32	+ 39 33	+ 62 17	+ 81 57	+ 92 17	+ 87 50	+ 71 08	+ 49 07
बांसवाड़ा (रा.)	+ 16 14	− 01 29	− 10 46	− 06 46	+ 08 15	+ 28 05	+ 48 34	+ 66 17	+ 75 34	+ 71 34	+ 56 33	+ 36 43
बिजनौर (उ.प्र.)	− 03 27	− 26 26	− 38 33	− 33 19	− 13 47	+ 11 53	+ 38 23	+ 61 22	+ 73 29	+ 68 15	+ 48 43	+ 23 03
बिलासपुर (छ.ग.)	− 13 41	− 30 12	− 38 51	− 35 07	− 21 07	− 02 37	+ 16 29	+ 33 00	+ 41 39	+ 37 55	+ 23 55	+ 06 25
बिलासपुर (हि.)	+ 00 12	− 24 44	− 37 56	− 32 15	− 11 00	+ 16 49	+ 45 32	+ 70 28	+ 83 40	+ 77 59	+ 56 04	+ 28 55
बीकानेर (रा.)	+ 16 53	− 04 50	− 16 17	− 11 21	+ 07 07	+ 31 23	+ 56 27	+ 78 10	+ 89 37	+ 84 41	+ 66 13	+ 41 57
बीजापुर (क.)	+ 15 45	+ 03 28	− 02 56	− 00 11	+ 10 13	+ 24 00	+ 38 15	+ 50 32	+ 56 56	+ 54 11	+ 43 47	+ 30 00
बुलन्दशहर (उ.प्र.)	− 01 32	− 23 39	− 35 18	− 30 17	− 11 29	+ 13 14	+ 38 44	+ 60 51	+ 72 30	+ 67 29	+ 48 11	+ 23 58
बूंदी (रा.)	+ 09 39	− 09 43	− 19 54	− 15 31	+ 00 56	+ 22 37	+ 45 01	+ 64 23	+ 74 34	+ 70 11	+ 53 44	+ 32 03
बृन्दावन (उ.प्र.)	− 00 23	− 21 42	− 32 56	− 28 06	− 09 58	+ 13 53	+ 38 31	+ 59 50	+ 71 04	+ 66 14	+ 48 06	+ 24 15
भरतपुर (रा.)	+ 00 50	− 20 11	− 31 15	− 26 29	− 08 37	+ 14 53	+ 39 10	+ 60 11	+ 71 15	+ 66 29	+ 48 37	+ 25 07
भागलपुर (बि.)	− 35 33	− 54 46	− 64 52	− 60 31	− 44 12	− 22 11	− 00 27	+ 18 46	+ 28 52	+ 24 31	+ 08 12	− 13 19
भिवानी (ह.)	+ 04 59	− 17 31	− 29 23	− 24 17	− 05 08	+ 20 00	+ 45 57	+ 68 27	+ 80 19	+ 75 13	+ 56 04	+ 30 56
भीनमाल (रा.)	+ 23 23	+ 04 23	− 05 36	− 01 18	+ 14 50	+ 36 06	+ 58 05	+ 77 05	+ 87 04	+ 82 46	+ 66 38	+ 45 22
भुज (गु.)	+ 35 21	+ 17 52	+ 08 41	+ 12 38	+ 27 29	+ 47 04	+ 67 19	+ 84 48	+ 93 59	+ 90 02	+ 75 11	+ 55 36
भुवनेश्वर (उ.)	− 27 03	− 42 03	− 49 54	− 46 31	− 33 48	− 17 00	+ 00 23	+ 15 23	+ 23 14	+ 19 51	+ 07 08	− 09 40
भोपाल (म.प्र.)	+ 04 25	− 13 04	− 22 15	− 18 18	− 03 27	+ 16 08	+ 36 23	+ 53 52	+ 63 03	+ 59 06	+ 44 15	+ 24 40
मण्डी (हि.)	− 00 55	− 26 16	− 39 41	− 33 54	− 12 18	+ 15 59	+ 45 11	+ 70 32	+ 83 57	+ 78 10	+ 56 34	+ 28 17
मथुरा (उ.प्र.)	− 00 06	− 21 22	− 32 33	− 27 44	− 09 40	+ 14 06	+ 38 38	+ 59 54	+ 71 06	+ 66 16	+ 48 12	+ 24 26
मदुरै (ता.)	+ 10 50	+ 03 46	+ 00 04	+ 01 39	+ 07 39	+ 15 36	+ 23 50	+ 31 05	+ 34 46	+ 33 01	+ 27 01	+ 19 04
मन्दसोर (म.प्र.)	+ 12 58	− 05 14	− 14 47	− 10 41	+ 04 47	+ 25 10	+ 46 14	+ 64 26	+ 73 59	+ 69 53	+ 54 25	+ 34 02
मन्सूरी (उ.आं.)	− 04 19	− 28 21	− 41 02	− 35 34	− 15 07	+ 11 42	+ 39 23	+ 63 25	+ 76 06	+ 70 38	+ 50 11	+ 23 22
महेन्द्रगढ़ (ह.)	+ 05 24	− 16 33	− 28 07	− 23 08	− 04 28	+ 20 04	+ 45 24	+ 67 21	+ 78 55	+ 73 56	+ 55 26	+ 30 44
मारवाड़ जं. (रा.)	+ 17 39	− 02 01	− 12 21	− .7 54	+ 08 48	+ 30 49	+ 53 33	+ 73 13	+ 83 33	+ 79 06	+ 62 24	+ 40 23
मालेरकोटला (पं.)	+ 04 35	− 19 30	− 32 14	− 26 45	− 06 14	+ 20 41	+ 48 28	+ 72 34	+ 85 16	+ 79 49	+ 59 18	+ 32 23
मिर्जापुर (उ.प्र.)	− 17 49	− 36 58	− 47 01	− 42 42	− 26 26	− 05 00	+ 17 09	+ 36 18	+ 46 21	+ 42 02	+ 25 46	+ 04 20
मुंगेर (बि.)	− 33 41	− 53 03	− 63 14	− 58 51	− 42 24	− 20 43	+ 01 41	+ 21 03	+ 31 14	+ 26 51	+ 10 24	− 11 17
मुजफ्फरनगर (उ.प्र.)	− 01 48	− 24 56	− 37 08	− 31 53	− 12 12	+ 13 39	+ 40 20	+ 63 28	+ 75 40	+ 70 25	+ 50 44	+ 24 53
मुम्बई (म.)	+ 25 36	+ 11 37	+ 04 18	+ 07 26	+ 19 18	+ 34 59	+ 51 12	+ 65 11	+ 72 30	+ 69 22	+ 57 30	+ 41 49
मुरादाबाद (उ.प्र.)	− 05 37	− 28 07	− 39 59	− 34 53	− 15 44	+ 09 24	+ 35 21	+ 57 11	+ 69 43	+ 64 37	+ 45 28	+ 20 20
मेरठ (उ.प्र.)	− 01 26	− 24 06	− 36 02	− 30 53	− 11 32	+ 13 42	+ 39 59	[illegible]	+ 74 26	+ 69 17	+ 50 01	+ 24 42

लग्नसाधन कोष्ठक (2)

नगर	मेष मि. से.	वृष मि. से.	मिथुन मि. से.	कर्क मि. से.	सिंह मि. से.	कन्या मि. से.	तुला मि. से.	वृश्चिक मि. से.	धनु मि. से.	मकर मि. से.	कुम्भ मि. से.	मीन मि. से.
मैसूर (क.)	+ 15 25	+ 06 33	+ 01 56	+ 03 55	+ 11 25	+ 21 22	+ 31 39	+ 40 31	+ 45 08	+ 43 09	+ 35 39	+ 25 42
मोगा (पं.)	+ 07 07	− 17 20	− 30 15	− 24 41	− 03 52	+ 23 24	+ 51 33	+ 76 00	+ 88 55	+ 83 21	+ 62 32	+ 35 16
रतलाम (म.प्र.)	+ 13 29	− 04 04	− 13 17	− 09 19	+ 05 35	+ 25 15	+ 45 35	+ 63 08	+ 72 21	+ 68 23	+ 53 29	+ 33 48
रतनगढ़ (रा.)	+ 11 32	− 10 15	− 21 44	− 16 47	+ 01 44	+ 26 06	+ 51 16	+ 73 03	+ 84 32	+ 79 35	+ 61 04	+ 36 42
रांची (झा.खं.)	− 27 39	− 45 17	− 54 31	− 50 33	− 35 35	− 15 50	+ 04 35	+ 22 13	+ 31 27	+ 27 29	+ 12 31	− 07 14
राजकोट (गु.)	+ 31 11	+ 14 28	+ 05 43	+ 09 29	+ 23 40	+ 42 23	+ 61 45	+ 68 28	+ 87 13	+ 83 27	+ 69 16	+ 50 33
रामपुरबुशहर (हि.)	− 03 17	− 28 18	− 41 32	− 35 50	− 14 31	+ 13 24	+ 42 13	+ 67 14	+ 80 28	+ 74 46	+ 53 27	+ 25 32
रामेश्वरम् (ता.)	+ 06 38	− 00 02	− 03 30	− 02 00	+ 03 38	+ 11 06	+ 18 50	+ 25 30	+ 28 58	+ 27 28	+ 21 50	+ 14 22
रायपुर (छ.ग.)	− 11 12	− 27 01	− 35 17	− 31 44	− 18 19	− 00 35	+ 17 44	+ 33 33	+ 41 49	+ 38 16	+ 24 51	+ 07 07
रिवाड़ी (ह.)	− 03 24	− 18 28	− 29 59	− 25 02	− 06 26	+ 18 01	+ 43 16	+ 65 06	+ 76 39	+ 71 42	+ 53 06	+ 28 39
रीवां (म.प्र.)	− 12 13	− 30 47	− 40 32	− 36 20	− 20 35	+ 00 13	+ 21 01	+ 40 15	+ 50 00	+ 45 48	+ 30 03	+ 09 15
रोपड़ (पं.)	+ 01 34	− 22 57	− 35 55	− 30 20	− 09 27	+ 17 55	+ 46 10	+ 70 41	+ 83 39	+ 78 04	+ 57 11	+ 29 49
रोहतक (ह.)	+ 02 54	− 19 40	− 31 35	− 26 27	− 07 15	+ 17 59	+ 44 02	+ 66 36	+ 78 31	+ 73 23	+ 54 11	+ 28 57
लखनऊ (उ.प्र.)	− 12 30	− 33 08	− 44 00	− 39 19	− 21 47	+ 01 19	+ 25 10	+ 45 48	+ 56 40	+ 51 59	+ 34 27	+ 11 21
लुधियाना (पं.)	+ 04 06	− 20 25	− 33 23	− 27 48	− 06 55	+ 20 27	+ 48 42	+ 73 13	+ 86 11	+ 80 36	+ 59 43	+ 32 21
वडोदरा (गु.)	+ 21 51	+ 05 08	− 03 37	+ 00 09	+ 14 20	+ 33 03	+ 52 25	+ 69 08	+ 77 53	+ 74 07	+ 59 56	+ 41 13
वाराणसी (उ.प्र.)	− 19 37	− 38 55	− 49 03	− 44 41	− 28 18	− 06 42	+ 15 37	+ 34 55	+ 45 03	+ 40 41	+ 24 18	+ 02 42
विजयवाड़ा (आं.)	− 03 37	− 15 38	− 21 54	− 19 13	− 09 02	+ 04 28	+ 18 25	+ 30 26	+ 36 42	+ 34 01	+ 23 50	+ 10 20
विशाखापट्टनम् (आं.)	− 15 02	− 27 58	− 34 44	− 31 49	− 20 52	− 06 21	+ 08 38	+ 21 34	+ 28 20	+ 25 25	+ 14 28	− 00 03
शाहदरा (दिल्ली)	+ 00 31	− 21 49	− 33 36	− 28 32	− 09 32	+ 15 26	+ 41 13	+ 63 33	+ 75 20	+ 70 16	+ 51 16	+ 26 18
शिमला (हि.)	− 01 07	− 25 48	− 38 51	− 33 13	− 12 12	+ 15 22	+ 43 47	+ 68 28	+ 81 31	+ 75 53	+ 54 52	+ 27 19
शिलांग (मे.)	− 55 21	− 74 52	− 85 07	− 80 42	− 64 08	− 42 17	− 19 43	− 00 12	+ 10 03	+ 05 38	− 10 56	− 32 47
श्रीनगर (का.)	+ 05 28	− 22 20	− 37 06	− 30 43	− 07 01	+ 23 57	+ 55 52	+ 83 40	+ 98 26	+ 92 03	+ 68 21	+ 37 23
संगरूर (पं.)	+ 04 50	− 18 57	− 31 31	− 26 06	− 05 52	+ 20 42	+ 48 06	+ 71 53	+ 84 27	+ 79 02	+ 58 48	+ 32 14
सरहिंद (पं.)	+ 02 27	− 21 49	− 34 38	− 29 07	− 08 27	+ 18 39	+ 46 37	+ 70 53	+ 83 42	+ 78 11	+ 57 31	+ 30 25
सहारनपुर (उ.प्र.)	− 01 42	− 25 19	− 37 47	− 32 25	− 12 18	+ 14 04	+ 41 18	+ 64 55	+ 77 23	+ 72 01	+ 51 54	+ 25 32
सागर (म.प्र.)	− 01 46	− 19 45	− 29 12	− 25 08	− 09 52	+ 10 17	+ 31 06	+ 49 05	+ 58 32	+ 54 28	+ 39 12	+ 19 03
सांगानेर (रा.)	+ 07 54	− 12 44	− 23 36	− 18 55	− 01 23	+ 21 43	+ 45 34	+ 66 12	+ 77 04	+ 72 23	+ 54 51	+ 31 45
सिरसा (ह.)	+ 08 40	− 14 28	− 26 40	− 21 25	− 01 44	+ 24 07	+ 50 48	+ 73 56	+ 86 08	+ 80 53	+ 61 12	+ 35 21
सीकर (रा.)	+ 09 57	− 11 22	− 22 36	− 17 46	+ 00 22	+ 24 13	+ 48 51	+ 70 10	+ 81 24	+ 76 34	+ 58 24	+ 34 35
सूरत (गु.)	+ 24 16	+ 08 31	+ 00 17	+ 03 49	+ 17 10	+ 34 50	+ 53 04	+ 68 49	+ 77 03	+ 73 31	+ 60 10	+ 42 30
सूरतगढ़ (रा.)	+ 13 17	− 09 42	− 21 49	− 16 35	+ 02 57	+ 28 37	+ 55 07	+ 78 06	+ 90 13	+ 84 59	+ 65 27	+ 39 47
सोलन (हि.)	− 00 54	− 25 25	− 38 23	− 32 48	− 11 55	+ 15 27	+ 43 42	+ 68 13	+ 81 11	+ 75 36	+ 54 43	+ 27 21
हमीरपुर (उ.प्र.)	− 08 41	− 28 30	− 38 55	− 34 26	− 17 36	+ 04 35	+ 27 29	+ 47 18	+ 57 43	+ 53 14	+ 36 24	+ 14 13
हमीरपुर (हि.)	+ 00 58	− 24 19	− 37 41	− 31 55	− 10 23	+ 17 49	+ 46 14	+ 72 11	+ 85 33	+ 79 47	+ 58 15	+ 30 03
हरिद्वार (उ.आं.)	− 04 22	− 28 00	− 40 27	− 35 05	− 15 00	+ 11 24	+ 38 38	+ 62 15	+ 74 43	+ 69 21	+ 49 14	+ 22 52
हाथरस (उ.प्र.)	− 01 37	− 23 00	− 34 12	− 29 22	− 11 14	+ 12 37	+ 37 15	+ 58 34	+ 69 48	+ 64 58	+ 46 50	+ 22 59
हापुड़ (उ.प्र.)	− 01 33	− 24 00	− 35 48	− 30 42	− 11 38	+ 13 25	+ 39 17	+ 61 42	+ 73 32	+ 68 26	+ 49 22	+ 24 19
हांसी (ह.)	+ 05 18	− 17 26	− 29 26	− 24 16	− 04 55	+ 20 30	+ 46 42	+ 69 26	+ 81 26	+ 76 16	+ 56 55	+ 31 31
हिसार (ह.)	+ 06 09	− 16 39	− 28 41	− 23 30	− 04 06	+ 21 24	+ 47 43	+ 70 31	+ 82 33	+ 77 22	+ 57 58	+ 32 28
हैदराबाद (आं.)	+ 04 24	− 08 16	− 14 53	− 12 03	− 01 19	+ 12 54	+ 27 36	+ 40 16	+ 46 53	+ 44 03	+ 33 19	+ 19 06
होशंगाबाद (म.प्र.)	+ 03 24	− 13 40	− 22 37	− 18 46	− 04 17	+ 14 50	+ 34 36	+ 51 40	+ 60 37	+ 56 46	+ 42 17	+ 23 10
होशियारपुर (पं.)	+ 03 23	− 21 43	− 35 00	− 29 17	− 07 54	+ 20 07	+ 49 01	+ 74 07	+ 87 24	+ 81 41	+ 60 18	+ 32 17

व्रतपर्व-विवेक

[व्रतपर्वों की तिथियों (तारीखों) के निर्णायक नियमों पर सरल-सुबोध भाषा-शैली में लिखा एक प्रामाणिक अपूर्व प्रकाशन]

[सन् 2001 से 2050 ई. तक के रामनवमी, दशहरा, दीपावली आदि सभी हिन्दु व्रतपर्वों की तारीखों की तैयार लम्बी सूची।]

इस पुस्तक में हिन्दुओं के चैत्र आदि 12 मासों के व्रतपर्वों के निर्णय का विशद विवेचन, निर्णयसिन्धु, धर्मसिन्धु आदि धर्मशास्त्रीय ग्रन्थों के प्रमाण-वाक्यों के आधार पर ऐसी सरल भाषा-शैली में किया गया है कि- हिन्दी जानने वाला कोई भी इसे पढ़कर, रामनवमी आदि किसी भी व्रतपर्व की तारीख का निर्णय आसानी से कर सकता है। विभिन्न पंचांगों में किसी व्रतपर्व की तारीख के बारे में मतभेद होने पर इस पुस्तक में दिए गए नियमों के अनुसार यह निर्णय आप अधिकारपूर्वक कर सकते हैं कि- किस पंचांग की तारीख शुद्ध है।

व्रतपर्वो की तारीख का निर्णय पञ्चांङ्गकार किन नियमों के आधार पर करते हैं- यह सब शास्त्रीय प्रमाणों द्वारा विस्तारपूर्वक हिन्दी मे समझाया गया है। व्रतपर्वो के निर्णायक धर्मशास्त्रीय सैकड़ों संस्कृतवाक्य, श्लोक हिन्दी-अनुवादसहित उद्धृत किए गए हैं। प्रातः, संगव, मध्याह्न, अपराह्न, सायं, प्रदोष, अरुणोदय, निशीथ, पूर्वविद्धा-परविद्धा तिथि आदि सभी पारिभाषिक कठिन शब्दों की (जिनका प्रयोग व्रतपर्व-निर्णय के प्रसंग में बार-बार आता है) सुस्पष्ट व्याख्या की गई है और इन्हें जानने की गणितप्रक्रिया से मुक्ति दिलाने वाले अनेक कोष्ठक आपको यहां मिलेंगे।

इस पुस्तक में दिए गए अनेक महत्वपूर्ण विषयों में से कुछेक की ओर हम पाठकों का ध्यान यहां आकृष्ट करते हैं:-

(i) हिन्दु व्रतपर्वों के निर्णायक नियमों-सिद्धान्तों की सरल व्याख्या दी गई है।

(ii) हिन्दु व्रतपर्वों मे यदा-कदा पैदा होने वाले मतभेद के कारण और उनके प्रतिकार बतलाए गए हैं।

(iii) चैत्रादि 12 चान्द्रमासों के 24 पक्षों में मनाए जाने वाले नवरात्रारम्भ, श्रीरामनवमी, अक्षयतृतीया, श्रीकृष्ण जन्माष्टमी, श्राद्धारम्भ-समाप्ति, दीपावली आदि सभी व्रतपर्वों के निर्णायक नियमों का विस्तृत विवेचन तथा धर्मशास्त्रों के सभी अपेक्षित व्रतपर्वनिर्धारक संस्कृत-प्रमाणवाक्यों को उद्धृत कर, इन व्रतपर्वो की तिथि (तारीख़) का निर्धारण-प्रकार सोदाहरण स्पष्ट किया गया है।

(iv) किस व्रतपर्व के मनाने का शास्त्रीय-विधान क्या है ? व्रतदिन की चर्या कैसी हो ? व्रतदिन में पूजा-पाठ कैसे किया जाए ? व्रतदेवता की पञ्चोपचार या षोडशोपचार पूजा कैसे, किस मन्त्र से, किन उपकरणों (सामग्री) से की जाए, व्रत में देवता का ध्यानमन्त्र क्या है ? व्रत में क्या खाएं, क्या न खाएं ? व्रती के लिए क्या विधि-निषेध है ? व्रतपारणा (व्रत के अन्त में किए जाने वाले भोजन) का समय क्या है ? पारणा में कौन-कौन से पदार्थ भक्ष्य और कौन से वर्ज्य हैं ? सूतक-पातक में व्रत कैसे किया जाए ? रजस्वला स्त्री व्रत के दिन क्या करे ? व्रतभंग होने पर क्या प्रायश्चित्त है ? सूर्य-चन्द्रग्रहण के समय स्नान-दान-जपादि का क्या विधान है ? - इत्यादि पचासों ज्ञातव्य विषयों पर सप्रमाण पूर्ण प्रकाश डाला गया है।

(v) आधुनिक युग के व्यस्त जीवन को दृष्टि में रखते हुए व्रतदेवता की पूजादि का सारगर्भ संक्षिप्त विधान दिया गया है, जिसे 10-15 मिनटों में ही कोई भी व्यक्ति स्वयं कर्मकाण्डी विद्वान् की सहायता के बिना ही कर सकता है। नवरात्र-घटस्थापन, रामनवमी-पूजा, श्राद्ध-तर्पण, दीपावली पर महालक्ष्मी पूजनादि सभी व्रतपर्वसम्बन्धी अनुष्ठानों को आप स्वयं कर सकें- ऐसी बालबोध शैली में समझाया गया है। लगभग सभी व्रतदेवताओं के संस्कृत-स्तोत्र भी दिए गए हैं।

(vi) करवाचौथ आदि व्रतपर्वो के उद्यापन की सरल प्रक्रिया बिना किसी विशेषज्ञ की मदद के कोई भी गृहिणी स्वयं कर सके-ऐसा सरल विधानसहित निर्देश है।

(vii) सन् 2001 से 2050 ई. तक के नवरात्रारम्भ, प्रदोषव्रत, एकादशीव्रत, दशहरा, दीपावली आदि लगभग सभी हिन्दु-व्रतपर्वों की अंग्रेजी तारीखों की लम्बी सूची दी गई है।

(viii) सन् 2001 से 2050 ई. तक के सूर्य-चन्द्रग्रहणों, हरिद्वार, प्रयाग, नासिक, उज्जैन के कुम्भपर्वों की तारीखें।

(ix) सन् 2001 से 2050 ई. तक के गुरु-शुक्रास्तकाल, गजच्छाया, अर्धोदय आदि पर्व।

(x) सन् 2001 से 2050 ई. तक के प्रमुख-प्रमुख जैन-पर्वो की तारीखें।

(xi) सन् 2001 से 2050 ई. तक के चैत्रादि मासों के चन्द्रदर्शन की तारीखें, तदनुसार मुहर्रम आदि मुस्लिम मासों की प्रारम्भ-तारीखें एवम् मुहर्रम, ईद-उल-फित्र आदि मुस्लिम त्योहारों की तारीखों का ज्ञानप्रकार।

(xii) सन् 2001 से 2050 ई. तक के सिक्ख-गुरुपर्वो की तारीखें।

(xiii) सन् 2001 से 2050 ई. तक के ईस्टर सण्डे, गुडफ्राईडे की तारीखें और तदनुसार अन्य क्रिश्चियन पर्वो की तारीखों का तुरन्त निर्णय करने वाली अद्भुत तालिका।

(xiv) सभी प्रमुख व्रतों की माहात्म्य कथाएं।

(xv) सभी प्रमुख व्रतों के देवी-देवताओं की आरतियां एवं स्तोत्र।

इन उपरोक्त विषयों के अलावा व्रतपर्वों से सम्बद्ध अन्य बीसों विषय आपको इस पुस्तक में मिलेंगे। इसे खरीद लीजिए। बस, आगामी 43 वर्षों तक (सन 2050 ई. तक) व्रतपर्वों की तारीखें जानने के लिए पंचांग, डायरी या कैलेण्डर खरीदने की आपको ज़रुरत नहीं होगी।

हमारी पुस्तकें केवल "अभिजित् प्रकाशन, कोठी नं. 59/6, पंचकूला से ही मिलेंगी। इन्हें बेचने का अधिकार अन्य किसी भी बुकसेलर को नहीं दिया गया है।

मूल्य Rs. 525/- + Rs. 50/- डाकव्यय

सम्पर्कसूत्र- श्रीमती वीना चतुर्वेदी, M.A., M.Phil., 'अभिजित् प्रकाशन,' कोठी नं. 59, सैक्टर-6, P.O. पंचकूला (हरियाणा) - 134 109, Phone 0172-2565 303

ग्रहयोग एवम् दाम्पत्य जीवन

[मेलापकसम्बन्धी प्रत्येक समस्या का परिपूर्ण समाधान करने वाला अद्वितीय प्रकाशन]

[दूसरा संस्करण]

विवाह–सम्बन्ध के निर्णय के लिए वर और कन्या के अष्टकूटों के गुणों की गणना और उनकी कुण्डलियों के मिलान पर आज तक कोई प्रमाणिक पुस्तक नहीं लिखी गई है। " ग्रहयोग एवम् दाम्पत्य जीवन " पुस्तक इस अभाव की शतप्रति पूर्ति करती है। यह पुस्तक छः अध्यायों में विभाजित है– प्रथम अध्याय में अष्टकूट का सांगोपांग विस्तृत विवेचन, द्वितीय अध्याय में कुज (मङ्गली) दोष पर विस्तृत विमर्श, तृतीय अध्याय में विवाहमुहूर्त्त के साधन की सुबोध प्रक्रिया दी गई है। चतुर्थ अध्याय में भारत के 800 प्रसिद्ध नगरों के अक्षांश, रेखांश तथा ऐसे अनेक मौलिक कोष्ठक दिए गए हैं, जिनकी मदद से सन् 1971 ई. से 2000 ई. तक (30 वर्षो मे) पैदा हुए वर–कन्याओं का जन्मलग्न, जन्मनक्षत्र, जन्मनवांश और जन्मकुण्डली बिना पुराने पंचांगों की सहायता के 10–15 मिनटों में ही जानकर दैवज्ञ उनकी ग्रहस्थितियों का मिलान तथा अष्टकूटों के गुण आदि का निर्णय सरलता से कर सकता है। पंचम और छठे अध्याय मे फलित एवं सिद्धान्त ज्योतिषसम्बन्धी शोधपूर्ण ज्ञानवर्धक ग्यारह (11) मौलिक निबन्ध दिए गए हैं, जो ज्योतिष के चौंका देने वाले अज्ञात रहस्य उद्घाटित करते हैं।

इस पुस्तक में दिए गए अनेक महत्वपूर्ण विषयों में से इन कुछेक विषयों पर दृष्टिपात कीजिए:-

(1) वर-कन्या के नक्षत्रचरणों के आधार पर बनाई गई विस्तृत गुणमिलान-सारणी36 बड़े पृष्ठों पर फैली है, जिसमें सभी अष्टकूटों के गुण और दोष तथा उनके परिहार एक ही दृष्टि में तुरन्त देखे जा सकते हैं। इस प्रकार की परमोपयोगी विलक्षण महान् मिलानसारणी का निर्माण सचमुच एक अपूर्व ऐतिहासिक प्रयास है। नितान्त श्रमसाध्य इस विशाल सारणी के निर्माण के लिए कम्प्यूटर का प्रयोग किया गया है। इस मिलानसारणी के अलावा दो और भिन्न प्रकार की मिलानसारणियां भी इस पुस्तक में दी गई हैं।

(2) वर्ण, गण, षडष्टक, नाड़ी आदि दोषपूर्ण कूटों के बारे में उपलब्ध अनेक परिहारवाक्यों का सोपपत्तिक सप्रमाण विवेचन तथा उनका तार्किक विश्लेषण एवं "नाड़ीदोषस्तु विप्राणाम्" और " एक नक्षत्रजातानां नाड़ीदोषो न विद्यते" आदि बीसों निराधार परिहारवाक्यों का सप्रमाण निराकरण किया गया है।

(3) मंगलदोष के बारे में प्रचलित "द्वितीये भौमदोषस्तु युग्म-कन्यकयोर्विना" और "गुरु-मंगल संयोगे भौमदोषो न विद्यते" - आदि अनेक परिहारवाक्यों की प्रामाणिकता पर विस्तृत सप्रपञ्च विचार-विमर्श एवं इन परिहार-वाक्यों का विश्लेषण-पूर्वक सप्रमाण खण्डन-मण्डन किया गया है।

(4) कुज (मंगल) दोष की मात्रा का सूक्ष्मतापूर्वक यथार्थ निर्णय दैवज्ञों की भारी समस्या है। इसके लिए इस पुस्तक में सात 'कुजदोष कोष्ठक' दिए गए हैं, जिनकी सहायता से जोड़-घटावमात्र जानने वाला कोई भी दैवज्ञ मौखिक गणित द्वारा ही वर-कन्या के कुजदोष की मात्राओं के आंकिकमान (Numerical Values) 20-25 मिनटों में ही सरलतापूर्वक ज्ञात कर सकता है और उनकी तुलना द्वारा वह वर-कन्या के विवाहसम्बन्ध की औचित्यता का निर्णय प्रामाणिक रूप में कर सकता है। कुजदोषमात्रा का आंकिक मान ज्ञात करने की प्रक्रिया को अनेक उदाहरणों द्वारा स्पष्ट किया गया है।

(5) मिलान में उपयोगी अन्य बीसो मौलिक सारणियां दी गई हैं, जो लेखक के विस्तृत, गम्भीर अध्ययन एवं अथक परिश्रम का परिणाम हैं।

(6) मिलान पर मिलने वाले विभिन्न मत–मतान्तरों का विश्लेषण विस्तारपूर्वक किया गया है। प्रतिपाद्य विषयों के खण्डन–मण्डन के समर्थन में लगभग 90 मूल ग्रन्थों (संहिता, होरा, मुहूर्त आदि) से सैकड़ों प्रमाणवाक्य (श्लोक) पदे–पदे उद्धृत किए गए हैं।

इसके अलावा इस पुस्तक में अनेक ऐसे विषय आपको मिलेंगे, जो गुणमिलान और कुण्डलीमिलान पर आपकी विशेष ज्ञानवृद्धि करेंगे। " नाडीदोष होने पर भी सम्बन्ध किया जा सकता है", " वर–कन्या की कुण्डलियों का मिलान न होने पर भी सम्बन्ध करने का ज्योतिषशास्त्र में निर्दिष्ट शास्त्रीय विधान क्या है?" – इस प्रकार की अनेक मिलान–सम्बन्धी समस्याओं का शास्त्रप्रतिपादित समाधान विस्तारपूर्वक इस पुस्तक में सप्रमाण प्रस्तुत किया गया है। विषकन्या योग और मंगलीक दोष के उद्गम तथा विकास पर विशेष ऐतिहासिक विवेचन दिया गया है।

यह पुस्तक आपको वह सब कुछ बतलाएगी, जो मिलान के लिए अपेक्षित है। इसे पढ़कर आपको आश्चर्य होगा कि– मिलान में अनेक मूर्धन्य दैवज्ञ भी कितनी अक्षम्य त्रुटियां करते हैं और इस विषय में उनका ज्ञान कितना अधूरा है।

मूल्य Rs. 500/– + डाकव्यय Rs. 50/–

पुस्तक मिलने का पताः– श्रीमती वीना चतुर्वेदी, M.A., M.Phil., 'अभिजित् प्रकाशन,' कोठी नं. 59, सैक्टर–6, P.O. पंचकूला (हरियाणा) – 134 109, Phone: 0172.2565 303

श्री मार्त्तण्ड पंचांग एवं ज्योतिष कार्यालय

यह शताब्दी-पुराना उत्तर भारत का एकमात्र ऐसा ज्योतिष कार्यालय है, जिसने लोगों की जटिल से जटिलतर समस्याओं का फलितशास्त्रीय चमत्कृतिपूर्ण समाधान प्रस्तुत कर भारी अक्षुण्ण यश अर्जित किया है। इस कार्यालय के अधिष्ठाता

विश्वविख्यात ज्योतिषाचार्य पं. श्री इन्दुशेखर शर्मा

एवं श्री संयमी शर्मा एम.ए., ज्योतिषाचार्य, धर्मशास्त्राचार्य हैं।

त्रिस्कन्ध ज्योतिष के पारदृश्वा आप द्वारा विगत वर्षों की गरिमामय अवधि में ऐसा शोधपूर्ण चिन्तन पाठकों को दिया गया है, जिससे इस शास्त्र में परम्परागत विचारधारा से अपने आप में एक विलग क्रान्तिकारी दर्शन भारतीय ज्योतिष जगत् में प्रतिष्ठापित हुआ है। आप भारतीय आर्ष ज्योतिष विद्या के सुपरीक्षित गूढ़ दिव्य सिद्धान्तों के आधार पर आपकी समस्याओं को निरस्त कर खोई हुई शान्ति लौटाने की अद्‌भुत क्षमता रखते हैं।

गुरुवार को कार्यालय में अवकाश रहता है।

ध्यान दें–बाहर से आने वाले महानुभाव टेलीफोन द्वारा पण्डित जी से मिलने का दिन व समय निश्चित अवश्य कर लें, अन्यथा सम्भव है–आपको कार्यालय पहुंचने पर समय न मिल पाये और निराश लौटना पड़े। प्रात: कार्यालय में आकर अपना क्रमांक (Token No.) कार्यकर्ता से प्राप्त कीजिये। इसी क्रमांक के अनुसार आप पण्डित जी से मिल सकेंगे। क्रमांक निकल जाने पर कार्यकर्ता से सम्पर्क करें। आप कार्यालय में आकर व हमारे लैंड-लाईन नं. 0160-2641277 पर 7:30 A.M. के बाद फोन कर अपना क्रमांक (Token No.) प्राप्त कर सकते हैं।

यदि आप कार्यालय आने में किसी भी तरह से असमर्थ हैं तो अपने किसी भी कार्य की फीस 9988407010 नंबर पर 'Google Pay' कर सकते हैं। और अपने कार्य का विवरण भी इसी नंबर पर Phone/WhatsApp अवश्य करें।

हमारे यहां से चित्रापक्षीय निरयण गणनापद्धति द्वारा क्षेत्रीय (Zonal) जन्मसमय, जन्मतारीख और जन्मस्थान के शुद्ध अक्षांश आदि के आधार पर सूर्योदयास्त आदि में सभी अपेक्षित संस्कार देकर भारतीय/विदेशी जन्मपत्र, टेवा और निवासस्थानीय अक्षांश आदि से वर्षफल बनाये जाते हैं। व्यापारिक मशवरे (सोना-चांदी आदि धातुओं एवं चना, ग्वार आदि अनाजों की तेजी-मन्दी) तथा किसी भी ग्रह किंवा राशि के रत्न/उपरत्न के लिए प्रत्यक्ष मिलें अथवा फोन से सम्पर्क करें। श्री नवग्रहयन्त्र, सिद्ध श्री महालक्ष्मी आदि यन्त्र प्रत्यक्ष आकर प्राप्त करें। यदि आप प्रत्यक्ष प्राप्त करने में असमर्थ हों, तो मनिऑर्डर भेजकर रजिस्ट्री द्वारा प्राप्त कर सकते हैं।

''ईश्वरेच्छा से भूत-भविष्य में जो कुछ ग्रहगोचरवश अनुभव किया है, वह आपके समक्ष रख दिया है। जो घटित हो चुका है, उसके आप प्रत्यक्षदर्शी हैं। जो भविष्य है, उस पर आप भूतानुसंधान के आधार पर विश्वास करें।''

"By God's grace whatever has been experienced with regard to Past, Present and Future has been highlighted and shared with you. Whatever has so far occured has also been witnessed by the masses. Therefore, you can trust and have faith on the basis of our research, experience, expertise and level of accomplishment in the past."

Sanyami Sharma

श्री मार्त्तण्ड पंचांग एवं ज्योतिष कार्यालय

नजदीक-रेलवे स्टेशन, मु.पो. कुराली (मोहाली) पंजाब, पिन-140 103, भारत।

For Appointment - Inquiry Contact : 0160-2641277

www.shrimartand.com +91 9988407010

अपनी मनपसन्द पुस्तकें घर बैठे डाक (By Post) में मंगवाएं किताब की कीमत + 60